Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Bibl. Ind. II. 7

= Z.A 248 a

# BIBLIOTHECA INDICA;

A

## COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED UNDER THE PATRONAGE OF THE

**Hon. Court of Directors of the East India Company,**

AND THE SUPERINTENDENCE OF THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

BIBLIOTHECA BODLEIANA

الاتقان في علوم القرآن للسيوطي

---

SOYUTY'S ITQA'N ON THE EXEGETIC SCIENCES OF THE QORA'N.

EDITED BY

MOWLAWIES SADEEDOOD-DEEN KHA'N AND BASHEEROOD-DEEN

PROFESSORS OF THE

CALCUTTA MADRESAH, AND DR. A. SPRENGER.

CALCUTTA:

PRINTED BY J. THOMAS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1857.

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ۹۱۸ | ۶ | الرافضة | الرفضة |
| ۹۱۹ | ۸ | راته | رایته |
| ۹۲۳ | ۱۹ | مثل | مثل |
| — | — | افرع | اقرع |
| — | — | زیتبان | زیبتان |
| — | — | یلهزمیته | بلهزمیته |
| ۹۲۶ | ۳ | فهن | فمن |
| — | ۲۲ | بغالکم | نعالکم |
| ۹۳۰ | ۱ | حریمه | خزیمة |
| ۹۳۴ | ۱۳ | علم | عام |
| ۹۳۸ | ۱۴ | ضلی | صلی |
| ۹۳۹ | ۹ | ضجیحا | ضجیجا |
| — | ۱۲ | اجبت | احببت |
| ۹۴۱ | ۱ | قال | قالت |
| — | ۲ | یحذفون | یخذفون |
| — | ۱۱ | فیام | قیام |
| ۹۴۸ | ۲ | انت | اتت |
| — | ۴ | یبکی | تبکی |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ٨٦٤ | ١٧ | اولیؤدهم | اولبؤهم |
| ٨٦٥ | ١٠ | منوه | منوة |
| ٨٦٧ | ٥ | ایمانکم | ایمٰنکم |
| — | ٦ | الاولسن | الاولیٰن |
| — | ٧ | حرام | حرم |
| ٨٧٢ | ١٣ | تص | نص |
| ٨٧٧ | ١٠ | تقدیر | تقریر |
| — | ١٥ | من شرح غیرله | من شرح غیره له |
| ٨٧٨ | ٥ | الغرض | العرض و |
| — | ١٠ | تفسیره | تفسیر |
| ٨٨٣ | ١٣ | قلیل | قلیلا |
| ٨٨٥ | ١٨ | احدثکم | حدثکم |
| ٨٩٠ | ١٦ | علیه و بیانه | عنه بیانه |
| ٨٩١ | ٤ | القرآن ان | القران |
| — | ٥ | اصابته | اصابة |
| — | ١٢ | مخطور | محظور |
| — | ١٥ | فمخطور | فمحظور |
| ٨٩٤ | ١ | وضعه | وصفه |
| — | ٢ | وصغها | وصفها |
| ٨٩٦ | ١٣ | والتبین | والبیتین |
| ٩٠١ | ٨ | الحر | الحرکة |
| ٩٠٨ | ٤ | بنیة | بینة |
| ٩٠٩ | ١١ | لاتیة | لاتیته |
| — | ١٤ | انه | اته |
| — | ١٩ | عنده | وعنده |
| ٩١٢ | ٦ | هجر | حجر |
| ٩١٧ | ١٠ | والواعدي | والواحدي |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٨٥٢ | ١٩ | لم | لمم |
| ٨٥٣ | ١١ | ما | اما |
| ٨٥٤ | ١٣ | ياتيا | تاتيا |
| — | — | فيقرأ | فتقرءا |
| — | — | يعوذ | تعوذا |
| — | ١٥ | اركبوا | اكبوا |
| ٨٥٥ | ١٤ | لا اعلم | لاعلم |
| — | ١٨ | امحسبتم | افحسبتم |
| ٨٥٩ | ١١ | بينه | بنيه |
| ٨٦٠ | ١٢ | هلولاء | هولاء |
| — | — | نافع | ناع |
| — | ١٤ | سبحن | سبحان |
| — | ١٩ | رجلان بعلمان | رجلن بعملن |
| ٨٦١ | ٦ | فالغاه | فابقائه |
| — | ٨ | بكل | لكل |
| — | ١٤ | باع | باغ |
| — | ٢٢ | وعيدي والجواري بالوادي | وعبد والجوار و بالواد |
| ٨٦٢ | ١ | والمهتدي | والمهتد |
| — | ٢ | اذا | اذ |
| — | ٥ | ضعافا | ضعفا |
| — | ٧ | جددا | جذذا |
| — | ٨ | فرغا | فرغا |
| ٨٦٣ | ٧ | مفردا | مفرد |
| — | ٨ | و جمع | او جمع |
| — | ١١ | لاذ بحنه ولاوضعوا ولالى | لاذ بحنه الا او ضعوا ولا الى |
| ٨٦٤ | — | جزأ | جزاوه |
| — | ١٢ | اشئمزت | اشمئزت |

| سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|
| ١٢ | القرطنى | القرطبي |
| ٤ | فضمه | قصمه |
| ٦ | يزيع | تزيغ |
| ٧ | يخلف | يخلق |
| — | تقتضى | تنقضي |
| ٢٠ | يفزع | يفرغ |
| ٢١ | من | بها |
| — | صلوة | صلوته |
| ١٤ | يتتبع | يتتعتع |
| ١٣ | خله | خلعه |
| ١٠ | سوداء وان | سودا وان |
| ٣ | عنه به | عنه |
| ٢١ | بن | من |
| ١٠ | ابن مالك | اين لك |
| ١٠ | واسه | و راسه |
| ١٣ | لله | الله |
| ١٤ | صفة | الي صفة |
| ١٧ | اخذ | احد |
| ١٥ | وحدانية | وحدانيته |
| ١٨ | بتعظيمها | بتنظيمها |
| ١٤ | بابها | بائها |
| ٩ | تقول | نقول |
| ٢ | انعم | الغم |
| ٢٠ | مصرف | مطرف |
| ١٠ | فقال | فقام |
| ١١ | يدريه | يدريك |
| ١٣ | تغلا | تغلا |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ٧٧٥ | ١٧ | غایر | غابر |
| ٧٧٧ | ٩ | کان من | کامِنُ |
| — | ١٥ | و ضوءه | ضوءه |
| ٧٧٩ | ١٥ | یجزیه | یجزبه |
| ٧٨٠ | ١٥ | لانبئنک | لاینبئنک |
| ٧٨٣ | ٤ | فلته | قلته |
| ٧٨٦ | ١١ | تتبع | یتبع |
| — | ١٨ | بالحصب | بالخصب |
| ٧٨٩ | ١٤ | یغرض | یفرض |
| ٧٩٠ | ٦ | الجلیل | الخلیل |
| — | ٢٠ | تنکره | ننکره |
| ٧٩٢ | ١١ | حیان | حبان |
| ٧٩٣ | ٥ | مسکوبه | مسکویه |
| ٧٩٥ | ١٩ | تکاو | تکاد |
| ٧٩٨ | ١٥ | للذیغ | للدیغ |
| ٨٠٣ | ٧ | اجتدبت | اجتذبت |
| — | ١٩ | بالشرب | بالثرب |
| ٨٠٨ | ٣ | الکثرة | لکثرة |
| ٨٠٩ | ١٥ | مرجعة | مرجعه |
| ٨١١ | ١٨ | یعف | نعف |
| — | ١٩ | ثعلة | ثعلبة |
| — | ٢١ | خزام | حزام |
| ٨١٢ | ٢٢ | ایکم | ابکم |
| ٨١٥ | ١٢ | القریتین | القریتیدن |
| ٨١٦ | ٢٢ | حرصله | جزملة |
| ٨١٧ | ١ | حرصلة | جرملة |
| ٨١٩ | ٩ | یسئلوک | یسئلونک |

| | غلط | صحيح |
|---|---|---|
| | اندر | انذر |
| | الشعر | الشعر |
| | ادنى | ادنى |
| | قبل | قيل |
| | آتينانكم | آتيناكم |
| | بالدين | بالذين |
| | قرايته | قراتيه |
| | وجديه | وجدتيه |
| | عمه من عمه | عميه من عميه |
| | النالة | الذاله |
| | حينذ | حنيذ |
| | مخصة | مخصت |
| | ثلثة | ثلثه |
| | ثلاثة | ثلثه |
| | فتنة | فتنته |
| | — | — |
| | النصير | النصر |
| | زواجه | ازوزجه |
| | رواح | ارواح |
| | خروج | و خروج |
| | اخرس | آخرين |
| | الغزالى | الغزالي |
| | غير | غيره |
| | اوالثواب | اولثواب |
| | جاهروا | هاجروا |
| | لحيته | لخيبة |
| | قبض | قيض |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٧٤٣ | ٧ | انفقه | انفة |
| ٧٤٦ | ١٠ | ينظمه | بنظمه |
| ٧٤٩ | ١٠ | مكاتبه | مكاتبة |
| — | ٢٠ | قالواحد | فالواحد |
| ٧٥٠ | ٧ | النعم | النغم |
| — | ١٤ | لمجادلة | لمجادله |
| — | — | الاحاطه | الاحاطة |
| ٧٥١ | ٤ | يتوكل | نبوّكل |
| — | ١٠ | بعض | ببعض |
| — | ١٤ | تلاوما | تلاوتا |
| — | ٢٢ | المعروف | بالمعروف |
| ٧٥٢ | ١ | جزر | زجر |
| — | — | اضغاء | ايضاع |
| — | ٤ | الآتيه | الآتية |
| — | ١٤ | اكتبتها | اكتتبها |
| — | ٢٠ | هذه | هذا |
| ٧٥٣ | ٣ | معشارة | معشاره |
| — | ٢٠ | السنته | السنة |
| ٧٥٤ | ٤ | توقر | توفر |
| ٧٥٦ | ٤ | فيليعتمد | فليعتمد |
| — | ٦ | الاتيان | الآيتان |
| — | ١٧ | بقوله | يقوله |
| ٧٥٧ | ١٥ | ربته | رتبته |
| ٧٥٩ | ١ | بعضهه | بعضه |
| ٧٦٠ | ٨ | تلقي | نلقي |
| ٧٦٠ | ١٤ | معاينهم | معانيهم |
| ٧٦١ | ٧ | الثقلة | للثقلة |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٧٢٦ | ٥ | الرافضة | الرفضة |
| — | ٩ | يجمع | نجمع |
| — | ١٨ | ليصنع | ليصغ |
| ٧٢٧ | ٩ | وجيه | وحيه |
| — | ١٢ | نقلته | تفلته |
| — | ١٣ | تكمله | تكملة |
| ٧٢٩ | ٤ | وقيل | وقيل |
| ٧٣٠ | ٢٠ | المواريث | والمواريث |
| ٧٣١ | ١٠ | المدنيات | المدنيات |
| — | ١٩ | موضع ن | ن |
| ٧٣٢ | ١٣ | وسلم | والسلام |
| ٧٣٣ | ١٦ | حرف اصلاح | حرفا صلاح |
| ٧٣٤ | ٦ | حرف | حرفي |
| — | ٨ | الدين | الذين |
| ٧٣٦ | ٩ | عزة | غرة |
| ٧٣٧ | ١٦ | يجزمها | يجرمها |
| ٧٣٨ | ٧ | سنريد | ستريد |
| — | ١١ | ستزيد | سنزيد |
| — | ١٨ | ايحسب | انبجست |
| ٧٣٩ | ٨ | عندك | عند |
| — | ١٦ | الام | الامم |
| — | ١٧ | نعتدوها | تعتدوها |
| ٧٤٠ | ٦ | تزوغ | نزوغ |
| ٧٤١ | ٦ | بالمعيذات | بالمغيبات |
| ٧٤١ | ١٥ | سماعة | سماعه |
| — | ١٦ | سماعة | سماعه |
| ٧٤٣ | ١٥ | يعرف | تعرف |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٧٠٣ | ٥ | بينة | بنية |
| — | ٢١ | مريته | مرئية |
| ٧٠٤ | ١ | قولو | قوله |
| — | ٦ | على | علي |
| ٧٠٦ | ٦ | يجب | يحب |
| — | — | خيانه | خيانة |
| ٧٠٧ | ٨ | النخل | النحل |
| — | ١٣ | اجاري | اجازي |
| ٧١١ | ١٥ | والتفقية | والتقفية |
| — | ١٨ | نحوان | نحو |
| — | ١٩ | اياهم | ايابهم |
| ٧١٣ | ٢ | الاولى | الاول |
| — | ٤ | الثانية | الثانية |
| ٧١٤ | ٦ | فقال | فقال |
| ٧١٦ | ١٣ | ولوكان | ولوكان |
| — | ١٦ | اوالذي | اوالذي |
| ٧١٩ | ١٦ | من | ممن |
| — | — | تقول | تقولون |
| ٧٢١ | ٢ | ببض | ببعض |
| ٧٢٢ | ٢١ | الغير | العير |
| ٧٢٣ | ١٦ | السوات | السوأت |
| — | ١٨ | الشر | الستر |
| — | ١٩ | والملائكة | ولا الملائكة |
| ٧٢٤ | ٦ | قال | قال |
| ٧٢٤ | ١٤ | تحزني | تخزني |
| ٧٢٥ | ٢١ | عنا | عناء |
| ٧٢٦ | ٤ | غير | عسير |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٦٦٥ | ١١ | بعثه | بعثة |
| — | ١٩ | نقل | هو نقل |
| ٦٦٦ | ٢٢ | ليغفرلك | لتغفر لك |
| ٦٦٩ | ٨ | تفاديا | تادبا |
| ٦٧٢ | ٢ | المنسوخ | المنسرح |
| — | ٨ | لقوله | كقوله |
| ٦٧٤ | ٤ | قطيعا | فظيعا |
| — | ٥ | الاشارة | للاشارة |
| ٦٧٥ | ٢٠ | فجا سوا | فحا سوا |
| — | ٢١ | الخليل | الخيل |
| ٦٧٧ | ٦ | السابقوّن | السابقون |
| — | ١٦ | الواضع | الواضح |
| — | ٢١ | والبياض | هو البياض |
| — | ٢٢ | والسواد | هوا لسواد |
| ٦٨٤ | ٢ | عتاب المرء | عتاب المرء |
| — | ٨ | حل لهم | لاهن حل لهم |
| ٦٨٥ | ٢١ | فيخلف | فيحلف |
| ٦٨٦ | ١٢ | ثبوت | لثبوت |
| ٦٨٧ | ٢٠ | سئيته | سئة |
| ٦٨٩ | ٣ | تحسب | بحسب |
| ٦٩٢ | ١٠ | النزاهة | النزاهة |
| ٧٠١ | ٣ | جائزة | جائرة |
| — | ٥ | اختاص | اختصاص |
| — | ٦ | المشركين | المشتركين |
| ٧٠١ | ١٧ | قدرا | فدار |
| ٧٠٢ | ٥ | ساجدون | ساجدين |
| — | ١٤ | ماتيا | مأتيا |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٦٢٩ | ٢١ | نجوان | نجران |
| — | ٢٢ | و ترد | تزد |
| ٦٣٤ | ١٢ | تفصيلا | تفضيلا |
| ٦٣٥ | ١٣ | يتهم | تبهم |
| ٢٣٦ | ٢ | شهر | شهرا |
| ٦٣٩ | ٣ | لم يقل | لم يقل انها |
| ٦٤٠ | ٥ | الفراء | الغراء |
| — | ٧ | احسن | احسن من |
| ٦٤٣ | ٤ | يعتصر | يقتصر |
| ٦٤٤ | ٣ | فيتوسطه | فبتوسطه |
| ٦٤٥ | ١١ | يجد | يحد |
| ٦٤٧ | ١٥ | يدله | بدله |
| ٦٤٨ | ١١ | الخوي | النحوي |
| ٦٤١ | ١١ | فتنفعم | فتنفعهم |
| — | ١٩ | يبقى | ينفي |
| ٦٥٠ | ٩ | رد | ورد |
| ٦٥١ | ١٢ | للكثيرة | للكثرة |
| — | ١٩ | رود | ورد |
| ٦٥٤ | ٦ | نحوا | نحو |
| — | ٢١ | التخصيص | التحضيض |
| ٦٥٩ | ٨ | نسوكم | تسؤكم |
| ٦٦٠ | ١٠ | القراء | الفراء |
| ٦٦١ | ٢٢ | القراء فى الاجماع | الفراء فى الفروق |
| ٦٦٢ | ١٤ | التعريف | التفويف |
| — | ١٦ | الفوايد | الفرايد |
| ٦٦٢ | ١٧ | الموازنة | المواربة |
| ٦٦٣ | ١٨ | البيان | البناء |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ٥٧٩ | ١٩ | الفقه | العفة |
| ٥٨٠ | ١٥ | لازمة | لازمه |
| — | ١٦ | تحویل | تحویل |
| — | ٢٠ | سبق | سیق |
| ٥٨٧ | ٣ | افادة | افاده |
| — | ١٤ | لانه | لان |
| — | ١٥ | فعلوت | فلعوت |
| ٥٨٩ | ٢٢ | بفیهم | نفیهم |
| ٥٩٢ | ٧ | یحمل | یجمل |
| — | ١٧ | تادیته | تادیة |
| ٥٩٣ | ١٠ | تنببه | تنبیه |
| — | ١٣ | بمنی | بمعنی |
| ٥٩٥ | ١٥ | یترفون | ینزفون |
| ٥٩٦ | ٧ | حقوق الله | حقوق |
| ٦٠٠ | ١٠ | القراء | الفراء |
| ٦٠١ | ١ | التفخیم | التفخیم |
| — | ٥ | التعجب | التعجب |
| — | ٧ | فتحت | فتحت |
| ٦٠٦ | ١٥ | القراء | الفراء |
| ٦٠٨ | ٤ | تعلیل | تقلیل |
| ٦١٣ | ٢ | فالجواب | فاء الجواب |
| ٦١٥ | ٣ | آدم | اذم |
| ٦١٨ | ١ | تحزن | تحزن |
| — | ١١ | والتحذیر | والتحذیر |
| ٦١٩ | ١٤ | حملته | جملته |
| ٦٢٣ | ١٤ | السیب | السبب |
| ٦٢٧ | ٢٠ | ایها | اتدها |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٥٤٥ | ١٣ | بالندا لا دلالة | بالنداء لا دلالة |
| — | ١٨ | الشفا | الشقا |
| ٥٥١ | ٢ | الملابسة | للملا بسة |
| ٥٥٢ | ٥ | لكلمة | لكله |
| ٥٥٣ | ٢٢ | تسمية | تسميته |
| ٥٥٤ | ٨ | فاليدع | فليدع |
| ٥٥٥ | ٩ | فاذ | فاذا |
| — | ٢٠ | تولى | تول |
| — | ٢١ | تولى | تول |
| ٥٥٧ | ١٢ | فاداراتهم | فادارأتم |
| ٥٥٨ | ١٣ | وعن | ونحن |
| ٥٥٩ | ١٧ | التقليب | التغليب |
| ٥٦١ | ٢٢ | القراء | الفراء |
| ٥٦٥ | ٨ | صحر | سحر |
| ٥٦٦ | ٨ | فى الامس | بالامس |
| — | ١٠ | ما | ماء |
| ٥٦٧ | ١٠ | الايمان | الاعمال |
| ٥٦٨ | ٢ | امهاتهم | امهاتكم |
| — | ٣ | الثاني نزل | الثاني |
| ٥٧٠ | ١ | بالدل | بالذل |
| ٥٧١ | ٢٢ | بمعنا | بمعناه |
| ٥٧٢ | ١٢ | تنقسم | وتنقسم |
| ٥٧٣ | ١١ | بقابله | يقابله |
| ٥٧٤ | ٨ | التمليحية | التلميحية |
| — | ١٣ | اي | الى |
| ٥٧٥ | ٥ | على | اعلى |
| ٥٧٩ | ٤ | قبضة | قبضته |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٥١٧ | ٧ | وضعات | رضعات |
| — | ١٦ | اكثر | كثر |
| ٥٢٠ | ٢ | اشهر | الشهر |
| ٥٢١ | ١٣ | فتركت | فلم نترك |
| ٥٢٢ | ١٢ | بدعاء | بدعا |
| — | ١٧ | ابة | ابت |
| — | ٢٠ | حق | حتى |
| ٥٢٥ | ٢ | على ابي | علي |
| — | ١٠ | الثاني | الثاني |
| — | ١٢ | ابي كم | الحاكم |
| ٥٢٦ | ١٣ | يكتبنا | تكتبا |
| ٥٣١ | ٩ | وحى | دحى |
| — | ١٦ | و ابن | ابن |
| — | ٢١ | ينسب | بنسب |
| ٥٣٣ | ١٨ | يوم | و يوم |
| — | ٢٢ | كل يوم | يوم |
| ٥٣٤ | ٣ | كل يوم | يوم |
| ٥٣٦ | ٥ | قالوا بعث | قالوا ابعث |
| ٥٣٧ | ١ | فيها | قيها |
| — | ٥ | الاقترانية | افترائية |
| — | ٢١ و ٢٢ | فلوكان لتعلقوا مناقضة هذا عندهم به | فلوكان هذا عندهم مناقضة لتعلقوا به |
| ٥٤١ | ١١ | معينة | معنيية |
| — | ١٣ | يضاررو | يضارر |
| ٥٤٣ | ٤ | المستبط | المستنبط |
| ٥٤٤ | ٢ | حثيمة | خيثمه |
| — | ٥ | عادفها | فاوعها |
| — | ١١ | تجد | نجد |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٤٨٣ | ٨ | اليه | اليد |
| ٤٨٥ | ٢١ | يديه | بدئه |
| ٤٨٨ | ١٦ | ينيغي | ينبغي |
| ٤٩٠ | ١٣ | الا الله | الاء الله |
| — | ١٩ | ابن | عن ابن |
| — | — | عداي | عذابي |
| — | ٢٠ | جاءن | جاد |
| ٤٩١ | ١ | احد | احدا |
| ٤٩٥ | ١٧ | ينج | ينج |
| ٤٩٨ | ١١ | به | ربه |
| — | — | قالهم | فالهم |
| ٥٠٠ | ٢٠ | لمن نشاء | فمن شاء |
| ٥٠٢ | ١٠ | اموال | اموالا |
| ٥٠٧ | ٩ | الايمة | الامة |
| ٥٠٨ | ٧ | يسبق | يسق |
| — | ٨ | يسبق | يسق |
| — | ١٤ | يسبق | يسق |
| ٥٠٩ | ١٩ | الاجمال | للاجمال |
| — | ٢٠ | ادير | ادبر |
| ٥١٠ | ٨ | تفضلو هن | تعضلو هن |
| ٥١١ | ٣ | بن طريق | عن طريق |
| — | ٩ | ظلما | ظلمنا |
| ٥١٢ | ٢ | ينطلق | يطلق |
| ٥١٤ | ١٠ | الغربي | العربي |
| ٥١٥ | ١٣ | سنه | سنة |
| — | ٢٢ | حمليا | حلميا |
| ٥١٧ | ٢ | الجنس | الحبس |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٤٥٥ | ٨ | الا لفاظ | الا لفظ |
| ٤٥٦ | ٥ | والدين | والذين |
| ٤٥٧ | ٢ | يعلمه | بعلمه |
| — | ٨ | جاراتي | جاء واتى |
| ٤٥٩ | ٢ | يبذي | ينبئ |
| — | ١٣ | ايتناك | اتيناك |
| ٤٦١ | ٧ | اباد | ابعد |
| — | — | يكثر | بكثير |
| ٤٦٥ | ٨ | نعبد | تعيد |
| — | ٩ | اخدون | اخذون |
| — | ١٤ | حقيقته | حقيقية |
| — | — | مجازيته | مجازية |
| ٤٦٧ | ١٢ | عمرو الا انه | عمرا لانه |
| — | ١٣ | هذاا | هذا |
| ٤٦٩ | ٦ | بكل | بل |
| — | ١٠ | كل | قل |
| ٤٧١ | ٨ | كاعداو | كاعداد |
| — | ٢٠ | فاخته | فاختة |
| ٤٧٢ | ٥ | منها منهه | منه |
| — | ٧ | قتاده | قتادة |
| ٤٧٤ | ١ | رسول | رسول الله |
| ٤٧٧ | ٢١ | تحسبه | تحسه |
| ٤٧٨ | ١١ | الغربية | العربية |
| — | ١٨ | على | عن |
| ٤٨٠ | ١٥ | العيد | العبد |
| ٤٨١ | ١ | استقراء | استقرار |
| — | ١٩ | تعدية | تعديته |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ۴۴۲ | ۳ | ضمیرالشان | غیر ضمیرالشان |
| ۴۴۳ | ۱ | منعی | معنی |
| — | ۲۰ | وجد | وحد |
| ۴۴۴ | ۱۹ | والحدف | والحذف |
| ۴۴۵ | ۲۲ | اي ظنا | ظنا اي ظنا |
| ۴۴۶ | ۱۴ | اوالاتیان | اوالاثبات |
| — | ۲۲ | هدا | هذا |
| ۴۴۷ | ۱۵ | للاختصار | وللاختصار |
| — | ۱۶ | اذو | آدر |
| — | ۲۱ | لعبادة | لعبادة |
| ۴۴۸ | ۱۱ | خبرتان | ثان |
| — | ۱۹ | الذین | الدین |
| — | ۲۰ | و فهم | وقهم |
| — | — | تتق | تق |
| ۴۴۹ | ۱۱ | فعصی | فعصی فرعون |
| — | ۲۰ | محررة | محرزة |
| ۴۵۰ | ۸ | بینهما | بینهما صلحا |
| — | ۱۰ | فیهما | فیها |
| — | — | الانتقاض | لاانتقاض |
| — | ۱۱ | لفظ یظهر شاید بعد کلمه ذلک باشد | |
| ۴۵۱ | ۷ | تکونا | یکونا |
| ۴۵۴ | ۱۴ | جمع | جمعة |
| — | ۱۸ | جمع | جمع و |
| — | — | الا | الا |
| — | ۲۱ | الاریك | الارائک |
| — | ۲۲ | کحضي وحضیان | کخصي و خصیان |
| ۴۵۵ | ۷ | واحدة | واحده |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ۴۰۸ | ۴ | للتخصیص | للتحضیض |
| — | ۱۲ | ای آمنت | ای مآ امنت |
| ۴۰۹ | ۳ | بالفا | بانفاء |
| ۴۰۹ | ۴ | للتخصیص | للتحضیض |
| — | ۱۱ | ما | مآ |
| ۴۱۰ | ۱۷ | کانما | کانما |
| ۴۱۲ | ۲ | وهی فی | وهی |
| — | ۷ | بالعلم | به العلم |
| ۴۱۳ | ۱۰ | افئدة من | افئدة |
| ۴۱۵ | ۱۵ | قری | قریٰ |
| ۴۱۶ | ۱۶ | ذکریا | زکریا |
| ۴۱۸ | ۱۸ | کثیرا | کثیر |
| ۴۲۲ | ۲۰ | اعزالان اعزاء | اغراءلان اغراء |
| — | ۲۱ | اعزا | اغراء |
| ۴۲۳ | ۸ | بروسکم | رؤسکم |
| — | ۱۱ | قبل | قیل |
| ۴۲۴ | ۸ | المعني | المغني |
| ۴۲۵ | ۷ | مواعدا | موعدا |
| ۴۲۸ | ۷ | ابن | و ابن |
| — | ۸ | عبد | عن عبد |
| — | ۱۲ | یلحنون | لا یلحنون |
| ۴۳۱ | ۳ | قیه | فیه |
| ۴۳۲ | ۱۳ | یومنین | یؤمنون |
| ۴۳۵ | ۲۲ | الذین | الذي |
| ۴۳۶ | ۷ | اولجز | والخبر |
| ۴۳۷ | ۱۸ | لهدا | لهذا |
| ۴۴۱ | ۱۶ | ثابة | ثابقة |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| ٣٧٣ | ١٢ | غیر | غیره |
| ٣٧٥ | ٩ | حتی | حتی یرجع |
| ٣٧٦ | ١٦ | یبینها | یبنیها |
| — | ١٨ | حیث | حیث |
| ٣٧٧ | ٨ | واي | اي |
| ٣٧٩ | ١٦ | لیستد | لیستبد |
| ٣٨٠ | ٦ | لاینصرف | لایتصرف |
| — | ١٧ | الفرق | للفرق |
| ٣٨٣ | ١٣ | الله | الله علیه |
| — | ١٥ | قال | قال |
| ٣٨٥ | ٥ | آبْن | اِبْن |
| ٣٨٦ | ٣ | حالان | حالا ان |
| — | ٢٢ | هوا | هو |
| ٣٨٧ | ١٣ | قساء | فساء |
| ٣٨٨ | ١ | من کتاب | کتاب من |
| ٣٩٠ | ١ | ارسلنا | ارسالنا |
| — | — | فاذکرولی و اذ کروه | و اذ کروه |
| ٣٩٣ | ٧ | المعرف | المنکر |
| — | ٢٠ | یانین | یاتین |
| ٣٩٥ | ١٧ | لزجاج | الزجاج |
| ٤٠٢ | ٥ | ان | وان |
| ٤٠٤ | ٢ | حاءته | جاءته |
| — | ١٥ | وافقة | وافقه |
| ٤٠٦ | ١٤ | طرف | ظرف |
| ٤٠٧ | ٣ | تشاء | نشاء |
| — | ١٠ | مکسر | مکسو |
| — | ١٣ | یترک | بترک |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٢٩٦ | ٢ | يغترون | يفترون |
| ٢٩٧ | ١١ | خامدين | خامدين قال |
| ٢٩٩ | ٢ | زيدا | ربذا |
| ٣١٢ | ١ | تجنبا | تجبنا |
| — | ٢١ | بئس | بئيس |
| ٣١٨ | ١٥ | از در دية | از در دية |
| — | ١٨ | المعرب | المغرب |
| ٣٢٣ | ١٤ | قوم | فوم |
| ٣٢٩ | ٥ | المتدون | المهتدون |
| ٣٣٤ | ٣ | المحتطر | المحتظر |
| ٣٣٦ | ١٧ | حافظوا | حافظوا |
| ٣٣٧ | ١٨ | للمتصدق | للتصدق |
| ٣٣٩ | ٢١ | جاء فى | جاء ني |
| ٣٤١ | ٢ | اخرج | اخرجه |
| ٣٤٢ | ٦ | وهل | وهل |
| — | ١٠ | طرفين | ظرفين |
| — | ١١ | معمول | معمول |
| ٣٤٧ | ٧ | ان | اذا |
| — | ٩ | بخلاف ان وفي ان | بخلاف اذا وفي اذا |
| ٣٥٠ | ١ | جنج | جنح |
| — | ١٣ | مجاهد | عن مجاهد |
| ٣٥٧ | ١ | سبيل على | على سبيل |
| ٣٥٩ | ٩ | اللاسمنه | الاسمية |
| ٣٦٠ | ٦ | المتهييج | للتهيج |
| ٣٦٣ | ٧ | المخل | المنحل |
| ٣٦٨ | ١٦ | الى | ان |
| ٣٦٩ | ١٩ | الاعراض | الاعواض |

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٢٤٧ | ٤ | منجس | متنجس |
| — | ٧ | مذهينا | مذهبنا |
| — | ١٠ | فطهيرا | تطهيرا |
| ٢٤٨ | ٢١ | آية | اليه |
| ٢٥٠ | ١٦ | اذا | واذا |
| ٢٦٢ | ١٧ | بعض | او بعض |
| ٢٦٩ | ٧ | اخلافا | اخلاء |
| ٢٧٠ | ١٧ | بناً | نبأ |
| ٢٧١ | ١٧ | ترهقكم | ترهقهم |
| — | ١٩ | حينئذ | حنيذ |
| ٢٧٢ | ٢ | تحزنون | تخزنون |
| — | ١٤ | يحري | يجري |
| — | ٢١ | سزيا | سريا |
| — | ٢٢ | وهجرني | واهجرني |
| ٢٧٣ | ١٤ | تقدر | نقدر |
| ٢٧٥ | ١ | تصاغر | تصاعر |
| — | ٢١ | عامر | غافر |
| ٢٧٦ | ٩ | الطور ذنوبا دلوا | ذنوبا دلوا الطور |
| — | ١٣ | اللحم | النجم |
| — | ١٧ | تنفدون | تنفذون |
| ٢٧٧ | ٤ | بعدا | بعدا ن |
| — | ١١ | يوم عسير شديد المدثر | المدثر يوم عسير شديد |
| ٢٨١ | ١٧ | معجمة | معجمه |
| ٢٨٤ | ١٠ | الزي | الري |
| ٢٨٥ | ٤ | وينت | ونيث |
| — | ٦ | اعطى | اعطي |
| — | ٨ | يعتريهم | يعتريهم |

| صفحه | سطر | غلط | صحیح |
|---|---|---|---|
| — | ١٩ | سبعة | تبعه |
| ١٧٢ | ١٥ | امم | امم |
| ١٧٧ | ٨ | جوه | وجوه |
| ١٧٨ | ١٩ | ثبيتت | ثبتت |
| ١٨٩ | ١٤ | اضح | اوضح |
| ٢٠٢ | ٦ | يختم | بختم |
| — | ٧ | ابن | ابن الله |
| ٢٠٦ | ١٧ | يدعو | يدعوا |
| ٢٠٧ | ١٢ | الدين | الذين |
| — | ١٣ | الدين | الذين |
| ٢١٣ | ١٨ | غز | غزا |
| ٢١٨ | ٢١ | حسرتا | حسرتى |
| ٢٢٣ | ٢ | فحت | فتحت |
| ٢٢٩ | ٨ | اله | اله الا |
| — | ١٨ | لحمزة | الحمزة |
| ٢٣٠ | ٢٢ | ذكريا | زكريا |
| ٢٣٣ | ١٨ | نزل من | نزل |
| ٢٣٦ | ٧ | المستقله | المستفلة |
| ٢٣٧ | ٩ | الصغير | الصفير |
| — | ١٧ | الياء | والياء |
| ٢٣٨ | ٤ | ولزاء | والزاء |
| — | ٥ | صغير | صفيرا |
| — | ١٣ | التجويد | التجويد |
| — | ١٤ | — | — |
| ٢٤٤ | ١٥ | من | بن |
| ٢٤٦ | ١٥ | الهدرمة | الهذرمة |
| — | ١٧ | ذبدا | ذنبا |

This table of Errata has been sent to me by Mowlawee Yar Alee of Purneah, with whom I have not the pleasure of being personally acquainted. The trouble which he has taken, is a proof how much this publication is appreciated by the Musalmans.

A. SPRENGER.

*August 5th*, 1856.

غلطنامهٔ اتقان في علم القران تصحيح كردهٔ
مولوي يار علي مفتي عدالت ضلع پورنيه

| صفحه | سطر | غلط | صحيح |
|---|---|---|---|
| ٢٢ | ٨ | قسم | اقسم |
| ٢٧ | ٣ | قتاده | قتادة |
| ١٣٢ | ١٦ | المبين | الميين |
| ١٤١ | ١٦ | المبين | الميين |
| ١٤٧ | ١٢ | الله | الله صلى الله |
| ١٤٨ | ١٣ | القران | القرأة |
| ١٥٧ | ١٣ | حوفان | حرفا |
| ١٥٩ | ٩ | طسم | طسم |
| — | ١١ | الم | الم |
| — | — | البقرة | البصرة |
| ١٦٧ | ٣ | يبير | ببئر |
| — | ٤ | غيرهما | غيرهم |
| ١٦٨ | ٩ | الدبر | الدير |

افسر الدين • و ذى الفضل المتين مولوي وحيد الدين اصلح الله تعالى سبحانه حالهم و انجح جدهم و بلغ ما مولهم امين امين ثم امين و اخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين • و الصلوة والسلام على سيد المرسلين •

---

قد وقع الفراغ من طبع هذا الكتاب المستطاب المسمى بالاتقان * في علوم القرآن * من مؤلفات الشيخ العلامه * العالم الحبر الفهامه * المحقق المدقق * شيخ الاسلام و المسلمين * وارث علوم سيد المرسلين * جلال الدين السيوطى الشافعي تغمده الله تعالى بغفرانه * و اسكنه بحبوحة جنانه * في شهر صفر ختم الله له بالفتح و الظفر بلدة كلكته في عهد حكومة الامير الافخم * الرئيس الخضم حامى البلاد * ماحى الفساد * النواب لارڈ دلهوسى گورنر جنرل بهادر دامت دولته سنة احدى و سبعين بعد الالف و المائتين من سنين الهجرة النبويه * على صاحبها الف الف السلام و التحية * مطابقا لشهر اكتوبر سنة اربعة و خمسين بعد الالف و ثمانمائة من الاعوام المسيحية * باهتمام العالم الماهر فى العلوم العربيه * ڈاكٹر اسفرنجر * حماه الله من الحوادث و الشر * و تصحيح العالم النحرير و الفاضل الصنديد * سامى الشان * المولوي محمد سديد الدين خان * امين المدرسة العاليه * و المعتصم بحبل لطف الله المتين * الراجي الى شفاعة سيد المرسلين * صلى الله عليه وعلى اله و اصحابه اجمعين * المولوي محمد بشير الدين * و الفاضل اللوذعي و البارع الا لمعي الذي هو بالتبجيل احق * المولوي الحاج محمد نور الحق * و العالم الكامل الواقف بالسر الخفي والجلي * المولوي جواد علي * مدرسي المدرسة المرقومه * و اعانة الطلبة المحصلين * المولوي حافظ محمد حاتم و المولوي عبد المجيد البرداني و المولوي عثمان علي و المولوي عبد الحق و المولوي

شعر

اداب على جمع الفضائل جاحدا و ادم لها تعب القريحة و الحسد
و اقصد بها وجه الاله و نفع من بلغته ممن جد فيها و اجتهد
و اترك كلام الحاسدين و بغيهم هملا فبعد الموت ينقطع الحسد

وانا اضرع الى الله جل جلاله وعز سلطانه كما من باهتمام هذا الكتاب ان يتم النعمة بقبوله * و ان يجعلنا من السابقين الاولين من اتباع رسوله * و ان لا يخيب سعينا فهو الجواد الذى لا يخيب من امله * ولا يخذل من انقطع عمن سواه وام له * آخر الكتاب قال مولفه فسح الله في قبره * ونفعنا والمسلمين بعلومه وسره * و فرغت من تاليفه يوم السبت ثالث عشر شوال سنة ثمان وسبعين و ثمانمائة سوى اشياً الحقتها بعد ذلك والحمد لله وحده وصلى الله على سيدنا محمد و آله صحبه وسلم تسليما كثيرا دائما ابدا الى يوم الدين *

شعر

ان تجد عيبا فسد الخللا
جل من لاعيب فيه وعلا

على كثرة عددها * واقتطفت ثمرها وزهرها * وغصت بحار فنون القرآن فاستخرجت جواهرها ودررها * و نقرت عن معادن كنوزه فخلصت سبا يكها وسبكت نقرها * فلهذا تحصل فيه من البدايع ما تبت عنده الاعناق تبا * و تجمع في كل نوع منه ما تفرق في مؤلفات شتى * على اني لا ابيعه بشرط البراة من كل عيب * ولا ادعى انه جمع سلامة كيف و البشر محل النقص بلاريب * هذا و اني في زمان ملا الله قلوب اهليه من الحسد * و غلب عليهم اللوم * حتى جرى منهم مجرى الدم من الجسد * واذا اراد الله نشر فضيلة طويت اناح لها لسان حسود * لولا اشتعال النار في ما جاورت ما كان يعرف طيب عرف العود * قوم غلب عليهم الجهل و طمسهم و اعماهم حب الرياسة و اصمهم * قد نكبوا عن علم الشريعة و نسوه * و اكبوا على علم الفلاسفة و تدارسوه * يريد الانسان منهم ان يتقدم و يابي الله الا ان يزيده تاخيرا * و يبغى العزة ولا علم عنده ولا يجد له و ليا ولا نصيرا * شعر

تمشى القوافي تحت غير لوائنا و نحن على قوالها امرأ

ومع ذلك فلانرى الا انوفا مشمرة * وقلوبا عن الحق مستكبرة واقوالا تصدر عنهم مفتراة مزورة كلما هديتهم الى الحق كان اعم واعمى لهم كان الله لم يوكل بهم حافظين يضبطون اقوالهم و اعمالهم فالعالم بينهم مرجوم * تتلاعب به الجهال و الصبيان * والكامل عنده مذموم * داخل في كفة النقصان * و ايم الله ان هذا لهو الزمان الذي يلزم فيه السكوت * و المصير جلساء من اجلاس البيوت * و رد العلم الى العمل لولا ماورد في صحيح الاخبار * من علم علما فكتمه الجمه الله بلجام من نار ولله در القائل *

و تفسير ايات كثيرة من سورشتى في ذلك وقد اخرجه ابن جرير و البيهقي فى الشعب و ابو يعلى و مداره على اسماعيل بن رافع قاضي المدينه وقد تكلم فيه بسببه و في بعض سياقه نكارة و قيل انه جمعه من طرق و اماكن متفرقة و ساقه سياقا واحدا وقد صرح ابن تيميه فيما تقدم و غيره بان النبي صلى الله عليه و سلم بين لاصحابه تفسير جميع القرآن او غالبه و يؤيد هذا ما اخرجه احمد و ابن ماجه عن عمرانه قال من آخر ما انزل آية الربوا و ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قبض قبل ان يفسرها دل فحوى الكلام على انه كان يفسر لهم كل ما نزل و انه انما لم يفسر هذه الآية لسرعة موته بعد نزولها و الا لم يكن للتخصيص بها وجه و اما ما اخرجه البزار عن عايشة رضي الله تعالى عنها قالت ما كان رسول الله صلى الله عليه و سلم يفسر شئاً من القرآن الا آيا بعدد علمه اياهن جبريل عليه الصلوة و السلام فهو حديث منكر كما قاله ابن كثير و اوله ابن جرير و غيره على انها اشارة الى آيات مشكلات اشكلن عليه فسأل الله علمهن فانزله الله على لسان جبريل عليه السلام وقد من الله تعالى باتمام هذا الكتاب البديع المثال * المنيع المنال * الفائق بحسن نظامه * على عقود اللآل * الجامع لفوائد ومحاسن لم تجتمع في كتاب قبله فى العصر الخوال * اسست فيه قواعد معينة على الكتاب المنزل * و بينت فيه مصاعد يرتقى فيها للاشراف على مقاصد ويتوصل * و اركزت فيه مراصد يفتح من كنوزه كل باب مقفل * فيه لباب المعقول * وعباب المنقول * و صواب كل قول مقبول * مخضت فيه كتب العلوم على تنوعها * واخذت زبدها ودرها ومررت على رياض التفاسير

الذي لاجوف له الفلق اخرج ابن جرير عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الفلق جب في جهنم مغطى قال ابن كثير غريب لا يصح رفعه واخرج احمد والترمذي وصححه النسائي عن عايشة رضي الله عنها قالت اخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم بيدي فارانى القمر حين طلع وقال تعوذى بالله من شر هذا الغاسق اذا وقب واخرج ابن جرير عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم ومن شر غاسق اذا وقب قال النجم الغاسق قال ابن كثير لا يصح رفعه الناس اخرج ابو يعلى قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الشيطان واضع خطمه على قلب بني آدم فان ذكر خنس وان نسى التقم قلبه فذلك الوسواس الخناس فهذا ما حضرني من التفاسير المرفوعة المصرح برفعها صحيحها وحسنها وضعيفها ومرسلها ومعضلها ولم اعول على الموضوعات والاباطيل وقد ورد من المرفوع فى التفسير ثلاثة احاديث طوال تركتها احدها الحديث في قصة موسى مع الخضر عليهما الصلاة والسلام وفيه تفسير آيات من الكهف وهو في صحيح البخاري وغيره الثاني حديث الفتون طويل جدا في نصف كراس يتضمن شرح قصة موسى عليه الصلوة والسلام وتفسير آيات كثيرة تتعلق به وقد اخرجه النسائي وغيره لكن نبه الحفاظ منهم المزى وابن كثير على انه موقوف من كلام ابن عباس رضي الله عنهما وان المرفوع منه قليل صرح بعزوه الى النبي صلى الله عليه وسلم قال ابن كثير وكان ابن عباس تلقاه من الاسرائيليات الثالث حديث الصور وهو اطول من حديث الفتون يتضمن شرح حال القيامة

قال قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم هذه الآية يومئذ تحدث اخبارها قالوا الله ورسوله اعلم قال ان تشهد على كل عبداو امة بما عمل على ظهرها ان تقول عمل كذا وكذا في يوم كذا وكذا العاديات اخرج ابن ابي حاتم بسند ضعيف عن ابي امامة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان الانسان لربه لكنود قال الكنود الذي يأكل وحده ويضرب عبده ويمنع رفده الهاكم اخرج ابن ابي حاتم عن زيد بن اسلم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الهاكم التكاثر عن الطاعة حتى زرتم المقابر حتى يأتيكم الموت واخرج احمد عن جابر بن عبد الله قال اكل رسول الله صلى الله عليه وسلم وابوبكر وعمر رطبا وشربوا ماء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هذا من النعيم الذي تسألون عنه واخرج ابن ابي حاتم عن ابن مسعود عن النبي صلى الله عليه وسلم ثم لتسئلن يومئذ عن النعيم قال الامن والصحة الهمزة اخرج ابن مردويه عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم انها عليهم موصدة قال مطبقة ارأيت اخرج ابن جرير وابو يعلى عن سعد بن ابي وقاص قال سألت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن الذين هم عن صلاتهم ساهون قال هم الذين يؤخرون الصلوة عن وقتها الكوثر اخرج احمد ومسلم عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الكوثر نهر اعطانيه ربي في الجنة له طرق لا تحصى النصر اخرج احمد عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال انزلت اذا جاء نصر الله والفتح قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نعيت الى نفسي الصمد اخرج ابن جرير عن بريدة لا اعلمه الا قد رفعه قال الصمد

و سلم قد افلح من تزكى قال من شهد ان لا اله الا الله و خلع الا نداد وشهد اني رسول الله و ذكر اسم ربه فصلى قال هى الصلوات الخمس و المحافظة عليها و الاهتمام بها و اخرج البزار عن ابن عباس رضي الله عنهما قال لما نزلت ان هذا لفى الصحف الاولى قال النبي صلى الله عليه و سلم كان هذا اوكل هذا في صحف ابراهيم و موسى الفجر اخرج احمد و النسائي عن جابر عن النبي صلى الله عليه و سلم قال ان العشر عشر الاضحي و الوتر يوم عرفة و الشفع يوم النحر قال ابن كثير رجاله لاباس بهم و في رفعه نكارة و اخرج ابن جرير عن جابر مرفوعا الشفع اليومان و الوتر اليوم الثالث و اخرج احمد و الترمذي عن عمران بن حصين ان رسول الله صلى الله عليه و سلم سئل عن الشفع و الوتر فقال الصلاة بعضها شفع و بعضها وتر البلد اخرج احمد عن البراء قال جاء اعرابي الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال علمني عملا يدخلني الجنة قال اعتق النسمة وفك الرقبة قال اوليستا بواحدة قال لا ان اعتق النسمة ان تفرد بعتقها وفك الرقبة ان تعين في عتقها الشمس اخرج ابن ابي حاتم من طريق جويبر عن الضحاك عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول في قوله قد افلح من زكاها افلحت زكاها الم نشرح اخرج ابو يعلي و ابن حيان في صحيحه عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال اتاني جبريل عليه الصلاة و السلام فقال ان ربك يقول اتدري كيف رفعت ذكرك قلت الله اعلم قال اذا ذكرت ذكرت معى الزلزلة اخرج احمد عن ابي هريرة

سماهم الابرار لانهم بروا الاباء والابناء المطففين اخرج الشيخان عن ابن عمران النبي صلى الله عليه وسلم قال يقوم الناس لرب العالمين حتى يغيب احدهم في رشحه الى انصاف اذنيه واخرج احمد والترمذي والحاكم وصححه والنسائي عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان العبد اذا اذنب ذنبا كانت له نكتة سوداً في قلبه فان تاب منها صقل قلبه وان زاد زادت حتى تعلو قلبه فذلك الران الذي ذكر الله في القرآن كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون الانشقاق اخرج احمد والشيخان وغيرهم عن عايشة رضي الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نوقش الحساب عذب وفي لفظ عن ابن جرير ليس يحاسب احد الا عذب قلت اليس يقول الله فسوف يحاسب حسابا يسيرا قال ليس ذلك بالحساب ولكن ذاك العرض واخرج احمد عن عايشة رضي الله عنها قالت قلت يا رسول الله ما الحساب اليسير قال ان ينظر في كتابه فيتجاوز له عنه انه من نوقش الحساب يومئذ هلك البروج اخرج ابن جرير عن ابي مالك الاشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اليوم الموعود يوم القيامة وشاهد يوم الجمعة ومشهود يوم عرفة له شواهد واخرج الطبراني عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الله خلق لوحا محفوظا من درة بيضاء صفحاتها من ياقوتة حمراء قلمه نور وكتابه نور الله فيه في كل يوم ستون وثلاثمائة لحظة يخلق ويرزق ويميت ويحيي ويعز ويذل ويفعل مايشاء سبح اخرج البزار عن جابر بن عبد الله عن النبي صلى الله عليه

مائة آية قال ابن كثير غريب جدا المدثر اخرج احمد و الترمذي عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الصعود جبل من نار يتصعد فيه سبعين خريفا ثم يهوى به كذلك واخرج احمد و الترمذي و حسنه و النسائي عن انس قال قرأ رسول الله صلى الله عليه و سلم هو اهل التقوى و اهل المغفرة فقال قال ربكم انا اهل ان اتقى فلا يجعل معى اله فمن اتقى ان يجعل معى الها كان اهلا ان اغفر له عم اخرج البزار عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال و الله لايخرج من النار احد حتى يمكث فيها احقابا و الحقب بضع و ثمانون سنة كل سنة ثلاثمائة وستون يوما مما تعدون عبس اخر التكوير اخرج ابن ابي حاتم عن ابن يزيد بن ابي مريم عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا الشمس كورت قال كورت في جهنم واذا النجوم انكدرت قال في جهنم و اخرج عن النعمان بن بشير عن النبي صلى الله عليه وسلم و اذا النفوس زوجت قال الضربا كل رجل مع كل قوم كانوا يعملون عمله انفطرت اخرج ابن جرير و الطبراني بسند ضعيف من طريق موسى بن على بن رباح عن جده ان النبي صلى الله عليه وسلم قال له ما ولدك قال ما عسى ان يولد لى اما غلام او جارية قال فمن يشبه قال من عسى ان يشبه اما اباه و اما امه فقال النبي صلى الله عليه وسلم مه لا تقولن هذا ان النطفة اذا استقرت فى الرحم احضرها الله كل نسب بينهما وبين ادم اما قرات في اي صورة ماشاء ركبك قال سلكك و اخرج ابن عساكر في تاريخه عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال انما

سماهم الابرار لانهم بروا الاباء والابناء المطففين اخرج الشيخان عن ابن عمران النبي صلى الله عليه وسلم قال يقوم الناس لرب العالمين حتى يغيب احدهم في رشحه الى انصاف اذنيه واخرج احمد والترمذي والحاكم وصححه والنسائي عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان العبد اذا اذنب ذنبا كانت له نكتة سوداً في قلبه فان تاب منها صقل قلبه وان زاد زادت حتى تعلو قلبه فذلك الران الذي ذكر الله في القرآن كلا بل ران على قلوبهم ما كانوا يكسبون الانشقاق اخرج احمد والشيخان وغيرهم عن عايشة رضي الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نوقش الحساب عذب وفي لفظ عن ابن جرير ليس يحاسب احد الا عذب قلت اليس يقول الله فسوف يحاسب حسابا يسيرا قال ليس ذلك بالحساب ولكن ذاك العرض واخرج احمد عن عايشة رضي الله عنها قالت قلت يا رسول الله ما الحساب اليسير قال ان ينظر في كتابه فيتجاوز له عنه انه من نوقش الحساب يومئذ هلك البروج اخرج ابن جرير عن ابي مالك الاشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اليوم الموعود يوم القيامة وشاهد يوم الجمعة ومشهود يوم عرفة له شواهد واخرج الطبراني عن ابن عباس ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الله خلق لوحا محفوظا من درة بيضاء صفحاتها من ياقوتة حمراء قلمه نور وكتابه نور الله فيه في كل يوم ستون وثلاثمائة لحظة يخلق ويرزق ويميت ويحيى ويعز ويذل ويفعل مايشاء سبح اخرج البزار عن جابر بن عبد الله عن النبي صلى الله عليه

مائة آية قال ابن كثير غريب جدا المدثر اخرج احمد و الترمذي عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الصعود جبل من نار يتصعد فيه سبعين خريفا ثم يهوى به كذلك واخرج احمد و الترمذي و حسنه و النسائي عن انس قال قرأ رسول الله صلى الله عليه و سلم هو اهل التقوى و اهل المغفرة فقال قال ربكم انا اهل ان اتقى فلا يجعل معى اله فمن اتقى ان يجعل معى الها كان اهلا ان اغفر له عم اخرج البزار عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال و الله لايخرج من النار احد حتى يمكث فيها احقابا و الحقب بضع و ثمانون سنة كل سنة ثلاثمائة وستون يوما مما تعدون عبس اخر التكوير اخرج ابن ابي حاتم عن ابن يزيد بن ابي مريم عن ابيه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا الشمس كورت قال كورت في جهنم واذا النجوم انكدرت قال في جهنم و اخرج عن النعمان بن بشير عن النبي صلى الله عليه وسلم و اذا النفوس زوجت قال الضربا كل رجل مع كل قوم كانوا يعملون عمله انفطرت اخرج ابن جرير و الطبراني بسند ضعيف من طريق موسى بن على بن رباح عن جده ان النبي صلى الله عليه وسلم قال له ما ولدك قال ما عسى ان يولد لى اما غلام او جارية قال فمن يشبه قال من عسى ان يشبه اما اباه و اما امه فقال النبي صلى الله عليه وسلم مه لا تقولن هذا ان النطفة اذا استقرت فى الرحم احضرها الله كل نسب بينهما و بين ادم اما قرات في اي صورة ماشاء ركبك قال سلكك و اخرج ابن عساكر في تاريخه عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه وسلم قال انما

الطلاق اخرج الشيخان عن ابن عمر انه طلق امرأته وهي حايض فذكر ذلك عمر لرسول الله صلى الله عليه وسلم فتغيظ فيه ثم قال ليراجعها ثم يمسكها حتى تطهر ثم تحيض فتطهر فان بداله ان يطلقها طاهرا قبل ان يمسها فتلك العدة التي امر الله ان يطلق لها النساء ثم قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا طلقتم النساء فطلقوهن من قبل عدتهن ن اخرج الطبراني عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان اول ماخلق الله القلم والحوت قال اكتب قال ما اكتب قال كل شي كاين الى يوم القيامة ثم قرا ن والقلم فالنون الحوت والقلم القلم واخرج ابن جرير عن معاوية بن قرة عن ابيه قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ن والقلم وما يسطرون لوح من نور وقلم من نور يجري بما هو كاين الى يوم القيامة قال ابن كثير مرسل غريب واخرج ايضا عن زيد بن اسلم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم تبكى السماء من عبد اصح الله جسمه وارحب جوفه واعطاه من الدنيا معصما فكان للناس ظلوما قال فذلك العتل الزنيم مرسل له شواهد واخرج ابو يعلي وابن جرير بسند فيه مبهم عن ابي موسى عن النبي صلى الله عليه وسلم يوم يكشف عن ساق قال عن نور عظيم يخرون له سجدا سأل اخرج احمد عن ابي سعيد قال قيل لرسول الله صلى الله عليه وسلم يوم كان مقداره خمسين الف سنة ما اطول هذا اليوم فقال والذي نفسي بيده انه ليخفف عليه من صلاة مكتوبة يصليها فى الدنيا المزمل اخرج الطبراني عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه وسلم فاقرؤا ما تيسر منه قال

انا انشأناهن انشاء عجائز كن فى الدنيا عمشا رمصا و اخرج فى الشمايل عن الحسن قال انت عجوز فقالت يا رسول الله ادعو الله ان يدخلنى الجنة فقال يا ام فلان ان الجنة لا يدخلها عجوز فولت يبكي قال اخبروها انها لا يدخلها و هي عجوز ان الله يقول انا انشأناهن انشاء فجعلناهن ابكارا و اخرج ابن ابي حاتم عن جعفر بن محمد عن ابيه عن جده قال قال رسول الله صلعم عربا قال كلامهن عربي و اخرج الطبراني عن ام سلمة قال قلت يا رسول الله اخبرني عن قول الله حور عين قال حور بيض عين ضخام العيون شفر الحورا بمنزلة جناح النسر قلت اخبرني عن قوله كامثال اللؤلؤ المكنون قال صفاؤهن كصفاء الدر الذي فى الاصداف الذي لم تمسه الايدى قلت اخبرني عن قوله فيهن خيرات حسان قال خيرات الاخلاق حسان الوجوه قلت اخبرني عن قوله كانهن بيض مكنون قال رقتهن كرقة الجلد الذي رأيت فى داخل البيضة مما يلى القشر قلت اخبرني عن قوله عربا اترابا قال هن اللواتي قبضن في دار الدنيا عجائز رمصاً شمطاً خلقهن الله بعد الكبر فجعلهن عذاري عرباً متعشقات متحببات اترابا على ميلاد واحد و اخرج ابن جرير عن ابن عباس في قوله ثلة من الاولين و ثلة من الآخرين قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم هما جميعا من امتي و اخرج احمد و الترمذي عن علي قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم و تجعلون رزقكم يقول شكركم انكم تكذبون تقولون مطرنا بنوء كذا و كذا الممتحنة اخرج الترمذي و حسنه و ابن ماجه و ابن جرير عن ام سلمه عن رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله ولا يعصينك في معروف قال النوح

مثل حديث تفكروا فى مخلوقات الله ولا تفكروا في ذات الله الرحمن
اخرج ابن ابي حاتم عن ابى الدرداء عن النبي صلى الله عليه و سلم
في قوله تعالى كل يوم هو في شان قال من شانه انه يغفر ذنبا
و يفرج كربا و يرفع قوما و يضع اخرين و اخرج ابن جرير مثله من
حديث عبد الله بن منيب و البزار مثله من حديث ابن عمر
و اخرج الشيخان عن ابي موسى الاشعري ان رسول الله صلى الله
عليه و سلم قال جنتان من فضة انيتهما وما فيهما و جنتان من ذهب
انيتهما و ما فيهما و اخرج البغوي عن انس بن مالك قال قرأ رسول
الله صلى الله عليه و سلم هل جزاء الاحسان الا الاحسان و قال هل
تدرون ما قال ربكم قالوا الله و رسوله اعلم قال يقول هل جزاء من
انعمت عليه بالتوحيد الا الجنة الواقعة اخرج ابو بكر النجار عن مسلم
بن عامر قال اقبل اعرابي فقال يا رسول الله صلى الله عليه و سلم
ذكر الله فى الجنة شجرة توذي صاحبها قال و ما هي قال السدر
فان له شوكا موذيا فقال رسول الله صلى الله عليه و سلم اليس الله
يقول في سدر مخضود خضد الله شوكه فجعل مكان كل شوكه ثمرة
و له شاهد من حديث عتبه بن عبد السلمي اخرجه ابن ابي داؤد
فى البعث و اخرج الشيخان عن ابي هريرة عن النبي صلعم قال
ان فى الجنة شجرة يسير الراكب في ظلها ماية عام لا يقطعها اقرؤا
ان شئتم و ظل ممدود و اخرج الترمذي و النسائي عن ابي سعيد
الخدري عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و فرش مرفوعة
قال ارتفاعها كما بين السماء و الارض و مسيرة ما بينهما خمسماية عام
و اخرج الترمذي عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

الله صلى الله عليه و سلم يقول و الزمهم كلمة التقوى قال لا اله الا الله الحجرات اخرج ابو داؤد و الترمذي عن ابي هريرة قال قيل يا رسول الله ما الغيبة قال ذكرك اخاك بما يكره قيل افرايت ان كان في اخي ما اقول قال ان كان فيه ما تقول فقد اغتبته و ان لم تكن فيه ما تقول فقد بهته ق اخرج البخاري عن انس عن النبي صلى الله عليه و سلم قال تلقى في النار و تقول هل من مزيد حتى يضع قدمه فيها فتقول قط قط الذاريات اخرج البزار عن عمر بن الخطاب قال الذاريات ذرواهي الرياح فالجاريات يسراهي السفن فالمقسمات امرا هي الملائكة و لولا اني سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقوله ما قلته الطور اخرج عبد الله ابن احمد في زوائد المسند عن علي قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ان المؤمنين و اولادهم في الجنة و ان المشركين و اولادهم في النار ثم قرأ رسول الله صلى الله عليه و سلم و الذين آمنوا و اتبعناهم ذرياتهم بايمان الحقنابهم ذرياتهم الآية النجم اخرج ابن جرير و ابن ابي حاتم بسند ضعيف عن ابي امامة قال تلا رسول الله صلى الله عليه و سلم هذه الآية و ابراهيم الذي وفي ثم قال اتدري ما وفي قلت الله و رسوله اعلم قال وفي عمل يومه باربع ركعات من اول النهار و اخرجا عن معاذ بن انس عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال الا اخبركم لم سمي الله ابراهيم خليله الذي وفي انه كان يقول كلما اصبح و امسى فسبحان الله حين تمسون و حين تصبحون حتى ختم الآية و اخرج البغوي من طريق ابى العالية عن ابي بن كعب عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و ان الى ربك المنتهى قال لا فكرة في الرب قال البغوي و هو

كل اهل النار يرى منزله من الجنة حسرة فيقول لوان الله هداني لكنت من المتقين و كل اهل الجنة يرى منزله من النار فيقول و ما كنا لهتدي لولا ان هدانا الله فيكون له شكر قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ما من احد الا و له منزل فى الجنة و منزل في النار فالكافر يرث المؤمن منزله من النار والمؤمن يرث الكافر منزله من الجنة قوله وتلك الجنة التي اورثتموها بما كنتم تعملون الدخان اخرج الطبراني وابن جرير بسند جيد عن ابي مالك الاشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ان ربكم انذركم ثلاثا الدخان ياخذ المومن كالزكمة و ياخذ الكافر فينتفخ حتى يخرج من كل سمع منه و الثانية الدابة و الثالثة الدجال له شواهد و اخرج ابو يعلي و ابن ابي حاتم عن انس عن النبي صلى الله عليه و سلم قال ما من عبد الاوله فى السماء بابان باب يخرج منه رزقه و باب يدخل فيه عمله و كلامه فاذا مات فقداه و بكيا عليه و تلا هذه الآية فما بكت عليهم السماء و الارض و ذكر انهم لم يكونوا يعملوا على وجه الارض عملا صالحا تبكي عليهم و لم يصعد لهم الى السماء من كلامهم ولا من عملهم كلام طيب ولا عمل صالح فتفقد هم فتبكي عليهم واخرج ابن جرير عن شريح بن عبيدة الحضرمي قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مامات مومن في غربة غابت عنه فيها بواكيه الابكت عليه السماء و الارض ثم قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم فما بكت عليهم السماء و الارض ثم قال انهما لا يبكيان على كافر الاحقاف اخرج احمد عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم او اثارة من علم قال الخط الفتح اخرج الترمذي و ابن جرير عن ابيّ ابن كعب انه سمع رسول

استغفر الله ولا قوة الا بالله هو الاول و الآخر و الظاهر و الباطن بيده الخير يحيى و يميت الحديث غريب و فيه نكارة شديدة و اخرج ابن ابى الدنيا في صفة الجنة عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم انه سئل جبريل عن هذه الآية فصعق من فى السموات و من فى الارض الا من شاء الله ان يصعق قال هم الشهداء غافر اخرج احمد و اصحاب السنن و الحاكم و ابن حيان عن النعمان بن بشير قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ان الدعا هو العبادة ثم قرأ ادعوني استجب لكم ان الذين يستكبرون عن عبادتي سيدخلون جهنم داخرين فصلت اخرج النسائي و البزار وابو يعلي وغيرهم عن انس قال قرأ علينا رسول الله صلى الله عليه و سلم هذه الآية ان الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا قد قالها ناس من الناس ثم كفر اكثرهم فمن قالها حتى يموتوا فهو ممن استقام عليها شورى اخرج احمد و غيره عن علي قال الا اخبركم بافضل آية في كتاب الله و حدثنا به رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ما اصابكم من مصيبة فبما كسبت ايديكم و يعفو عن كثير وسافسرها لك يا علي ما اصابكم من مرض او عقوبة او بلاء فى الدنيا فبما كسبت ايديكم والله احلم من ان يثنى عليه العقوبة فى الآخرة وما عفا الله عنه فى الدنيا فالله اكرم من ان يعود بعد عفوه الزخرف اخرج احمد و الترمذي وغيرهما عن ابي امامة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ماضل قوم بعد هدى كانوا عليه الا اوتوا الجدل ثم تلا ما ضربوه لك الا جدلا بل هم قوم خصمون و اخرج ابن ابي حاتم عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

قلت الله و رسوله اعلم قال فانها تذهب حتى تسجد تحت العرش فذلك قوله و الشمس تجري لمستقر لها الصافات اخرج ابن جرير عن ام سلمة قالت قلت يا رسول الله اخبرني عن قول الله تعالى حور عين قال العين الضخام العيون شفر الحور أمثل جناح النسر قلت يا رسول الله اخبرني عن قول الله كانهن بيض مكنون قال رقتهن كرقة الجلدة التي في داخل البيضة التي تلى القشر قوله شفر هو بالفاء مضاف الى الحور أ وهو هدب العين و انما ضبطته و ان كان واضحا لاني رايت بعض المهملين من اهل عصرنا صحفه بالقاف و قال الحورا مثل جناح النسر مبتدا وخبر يعني فى الخفة و السرعة و هذا كذب و جهل محض و الحاد فى الدين و جرأة على الله و على رسوله و اخرج الترمذي و غيره عن سمرة عن النبي صلى الله عليه وسلم في قوله و جعلنا ذريته هم الباقين قال حام و سام و يافث و اخرج من وجه اخر قال سام ابو العرب و حام ابو الحبش و يافث ابو الروم و اخرج عن ابي ابن كعب قال سالت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن قول الله و ارسلناه الى ماية الف او يزيدون قال يزيدون عشرين الفا و اخرج ابن عساكر عن العلا ابن سعد ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يوما لجلسائه اطت السماء و حق لها ان تيط ليس منها موضع قدم الا عليه ملك راكع اوساجد ثم قرأوانا لنحن الصافون و انا لنحن المسبحون الزمر اخرج ابو يعلي و ابن ابي حاتم عن عثمان بن عفان انه سئل رسول الله صلى الله عليه وسلم عن تفسير له مقاليد السموات و الارض فقال تفسيرها لا اله الا الله و الله اكبر و سبحان الله و بحمده

بل هو رجل ولد عشرة فسكن اليمن منهم ستة و بالشام منهم اربعة
واخرج البخاري عن ابي هريرة رضي الله تعالى عنه قال اذا
قضى الله الامر في السماء ضربت الملائكة باجنحتها خضعانا لقوله
كانه سلسلة على صفوان فاذا فزع عن قلوبهم قالوا ما ذا قال ربكم قالوا
للذي قال الحق و هو العلي الكبير فاطرا اخرج احمد و الترمذي عن
ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه و سلم انه قال في
هذه الآية ثم اورثنا الكتاب الذين اصطفينا من عبادنا فمنهم ظالم
لنفسه و منهم مقتصد و منهم سابق بالخيرات قال هولاء كلهم بمنزلة
واحدة وكلهم في الجنة واخرج احمد و غيره عن ابي الدرداء سمعت
رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول قال الله ثم اورثنا الكتاب الذي
اصطفينا من عبادنا فمنهم ظالم لنفسه و منهم مقتصد و منهم سابق
بالخيرات باذن الله فاما الذين سبقوا فاولئك الذين يدخلون الجنة
بغير حساب و اما الذين اقتصدوا فاولئك الذين يحاسبون حسابا يسيرا
و اما الذين ظلموا انفسهم فاولئك الذين يحسبون في طول المحشر
ثم هم الذين تلاقاهم الله برحمته فهم الذين يقولون الحمد لله الذي
اذهب عنا الحزن الآية و اخرج الطبراني و ابن جرير عن ابن عباس
ان النبي صلى الله عليه و سلم قال اذا كان يوم القيامة قيل اين
ابنا الستين و هو العمر الذي قال الله اولم نعمركم ما يتذكر فيه من
تذكر يس اخرج الشيخان عن ابي ذر قال سالت رسول الله صلى الله
عليه و سلم عن قوله و الشمس تجري لمستقر لها قال مستقرها تحت
العرش و اخرجا عنه قال كنت مع النبي صلى الله عليه و سلم في
المسجد عند غروب الشمس فقال يا ابا ذر اتدري اين تعزب الشمس

و غيرهما عن ام هاني قال سالت رسول الله صلى الله عليه و سلم عن قوله و تاتون في ناديكم المنكر قال كانوا يحذفون اهل الطريق و يسخرون منهم فهو المنكر الذي كانوا ياتون لقمان اخرج الترمذي و غيره عن ابي امامة عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال لا تبيعوا القينات و لا تشتروهن و لا تعلموهن و لا خير في تجارة فيهن و ثمنهن حرام في مثل هذا انزلت و من الناس من يشترى لهو الحديث الآية اسناده ضعيف السجدة اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله احسن كل شئ خلقه قال اما ان است القردة ليست بحسنة و لكنه احكم خلقها و اخرج ابن جرير عن معاذ بن جبل عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله تتجا في جنوبهم عن المضاجع قال قيام العبد من الليل و اخرج الطبراني عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و جعلناه هدى لبني اسرائيل قال جعل موسى هدى لبني اسرائيل و في قوله فلا تكن في مرية من لقائه قال من لقاء موسى ربه الاحزاب اخرج الترمذي عن معاوية سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول طلحة ممن قضي نحبه و اخرج الترمذي و غيره عن عمر بن ابي سلمة و ابن جرير و غيره عن ام سلمة ان النبي صلى الله عليه و سلم دعا فاطمة و عليا و حسنا و حسينا لما نزلت انما يريد الله ليذهب عنكم الرجس الآية فجللهم بكسأ و قال اللهم هولاء اهل بيتي فاذهب عنهم الرجس و طهرهم تطهيرا سبا اخرج احمد و غيره عن ابن عباس ان رجلا سال رسول الله صلى الله عليه و سلم عن سبا ارجل هو ام امراة ام ارض فقال

الله عليه و سلم انما سمى البيت العتيق لانه لم يظهر عليه جبار
و اخرج احمد عن خزيم بن فاتك الاسدي عن النبي صلى الله
عليه و سلم قال عدلت شهادة الزور بالاشراك بالله ثم تلا فاجتنبوا
الرجس من الاوثان و اجتنبوا قول الزور قد افلح اخرج ابن ابي
حاتم عن مرة البهزي قال سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم
يقول لرجل انك تموت بالربوة فمات بالرملة قال ابن كثير غريب
جدا واخرج احمد عن عايشه رضي الله تعالى عنها انها قالت يا
رسول الله الذين يوتون ما اتوا و قلوبهم وجلة هو الذي يسرق ويزني
و يشرب الخمر و هو يخاف الله قال لايا بنت الصديق و لكنه الذي
يصوم و يصلي و يتصدق وهو يخاف الله و اخرج احمد والترمذي
عن ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه و سلم قال و هم فيها كالحون
قال تشويه النار فتقلص شفته العليا حتى تبلغ وسط راسه و تسترخي
شفته السفلي حتى تضرب سرته النور اخرج ابن ابي حاتم عن
ابي سورة بن اخي ابي ايوب قال قلت يا رسول الله هذا السلام
فما الاستيناس قال يتكلم الرجل بتسبيحه وتكبيره وتحميده ويَتَنَحْنَحُ
فيوذن اهل البيت الفرقان اخرج ابن ابي حاتم عن يحيى ابن اسيد
يرفع الحديث الى رسول الله صلى الله عليه و سلم انه سئل عن قوله
تعالى و اذا القوا منها مكانا ضيقا مقرنين قال و الذي نفسي بيده
انهم ليستكرهون فى النار كما يستكره الوتد فى الحايط القصص اخرج
البزار عن ابي ذر ان النبي صلى الله عليه و سلم سئل اى الاجلين
قضي موسى قال اوفاهما و ابرهما قال و ان سئلت اى المرأتين
تزوج فقل الصغرى منهما العنكبوت اخرج احمد و الترمذي وحسنه

رسول الله صلى الله عليه و سلم و انذرهم يوم الحسرة اذ قضى الامر و هم في غفلة و اشار بيده قال اهل الدنيا في غفلة و اخرج ابن جرير عن ابي امامة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال غي و اثام بيران في اسفل جهنم يسيل فيهما صديد اهل النار قال ابن كثير حديث منكر و اخرج احمد عن ابي سيمية قال اختلفنا فقال بعضنا لا يدخلها مومن و قال بعضهم يدخلونها جميعا ثم ينجى الذين اتقوا فلقيت جابر بن عبد الله فسألته فقال سمعت النبي صلى الله عليه و سلم يقول لا يبقى بر ولا فاجر الادخلها فتكون على المؤمن برد او سلاما كما كانت على ابراهيم حتى ان للنار ضجيجا من بردهم ثم ينجى الله الذين اتقوا و نذر الظالمين فيها جثيا و اخرج مسلم و الترمذي عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه و سلم قال اذا احب الله عبد انادي جبريل اني قد احببت فلانا فاحبه فينادي في السماء ثم ينزل له المحبة في الارض فذلك قوله سيجعل لهم الرحمن ودا طه اخرج ابن ابي حاتم و الترمذي عن جندب بن عبد الله النجلي قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم اذا وجدتم الساحر فاقتلوه ثم قرأ و لا يفلح الساحر حيث اتي قال لا يومن حيث وجد و اخرج البزار بسند جيد عن النبي صلى الله عليه و سلم فان له معيشة ضنكى قال عذاب القبر الانبياء اخرج احمد عن ابي هريرة قال قلت يا رسول الله انبئني عن كل شيء فقال كل شيء خلق من الماء الحج اخرج ابن ابي حاتم عن يعلي بن امية ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال احتكار الطعام بمكة الحاد و اخرج الترمذي و حسنه عن ابن الزبير قال قال رسول الله صلى

ولا اله الا الله و الله اكبر من الباقيات الصالحات و اخرج احمد عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ينصب الكافر مقدار خمسين الف سنة كما لم يعمل فى الدنيا و ان الكافر ليرى جهنم و يظن انها مواقعته من مسيرة اربعين سنة و اخرج البزار بسند ضعيف عن ابي ذر رفعه قال ان الكنز الذي ذكر الله في كتابه لوح من ذهب مصمت عجبت لمن ايقن بالقدر لم يصب وعجبت لمن ذكر النار كيف ضحك و عجبت لمن ذكر الموت ثم غفل لا اله الا الله محمد رسول الله و اخرج الشيخان عن ابي هريرة ان النبي صلى الله عليه وسلم قال اذا سألتم الله فاسئلوه الفردوس فانه اعلى الجنة و اوسط الجنة و منه تفجر انهار الجنة مريم اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابن عمر عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ان السري الذي قال الله لمريم قد جعل ربك تحتك سريا فيه نهر اخرجه الله لتشرب منه و اخرج مسلم و غيره عن المغيرة بن شعبة قال بعثني رسول الله صلى الله عليه و سلم الى نجران فقالوا ارايت ما تقرؤن يا اخت هرون و موسى قبل عيسى بكذا و كذا فرجعت فذكرت ذلك لرسول الله صلى الله عليه و سلم فقالوا الا اخبرتهم انهم كانوا يسمون بالانبياء والصالحين قبلهم و اخرج احمد والشيخان عن ابي سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم اذا دخل اهل الجنة الجنة و اهل النار النار يجاء بالموت كانه كبش املح فيوقف بين الجنة و النار فيقال يا اهل الجنة هل تعرفون هذا قال فيشرئبون فينظرون و يقولون نعم هذا الموت فيومر به فيذبح فيقال يا اهل الجنة خلود ولا موت و يا اهل النار خلود ولا موت ثم قرأ

عن النبي صلى الله عليه و سلم اقم الصلوة لدلوك الشمس قال لزوال الشمس و اخرج البزار و ابن مردويه بسند ضعيف عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم دلوك الشمس زوالها و اخرج احمد و الترمذي و صححه و النسائي عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله ان قرآن الفجر كان مشهودا قال يشهده ملائكة الليل و ملائكة النهار و اخرج احمد و غيره عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله عسى ان يبعثك ربك مقاما محمودا قال هو المقام الذي اشفع فيه لامتي و في لفظ هي الشفاعة و له طرق كثيرة مطولة و مختصرة في الصحاح و غيرها و اخرج الشيخان و غيرهما عن انس قال قيل يا رسول الله كيف يحشر الناس على وجوههم قال الذي امشاهم على ارجلهم قادر ان يمشيهم على وجوههم الكهف اخرج احمد و الترمذي عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال لسرادق النار اربعة اجدر كثافة كل جدار مثل مسافة اربعين سنة و اخرجا عنه ايضا عن رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله كالمهل قال كعكر الذيت فاذا قربه اليه سقطت فروة وجهه فيه و اخرج احمد عنه ايضا عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال الباقيات الصالحات التكبير والتهليل و التسبيح والحمد ولا حول ولا قوة الا بالله و اخرج احمد من حديث النعمان بن بشير مرفوعا سبحان الله و الحمد لله و لا اله الا الله و الله اكبر هن الباقيات الصالحات و اخرج الطبراني مثله من حديث سعيد بن جنادة و اخرج ابن جرير عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم سبحان الله والحمد لله

و علي و اخرج ابن مردويه عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله لكل باب منهم جزء مقسوم قال جزء اشركوا و جزء شكوا فى الله و جزء غفلوا عن الله واخرج البخاري والترمذي عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ام القرآن هى السبع المثاني و القرآن العظيم و اخرج الطبراني فى الاوسط عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال سال رجل رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ارايت قول الله تعالى كما انزلنا على المقتسمين قال اليهود والنصارى قال الذين جعلوا القرآن عضين ما عضين قال امنوا ببعض و كفروا ببعض واخرج الترمذي و ابن جرير و ابن ابي حاتم و ابن مردويه عن انس عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله فوربك لنسئلنهم اجمعين عما كانوا يعلمون قال عن قول لا اله الا الله النحل اخرج ابن مردويه عن البرا ان النبي صلى الله عليه و سلم سئل عن قول الله زدناهم عذابا فوق العذاب قال عقارب امثال النخل الطوال ينهشونهم في جهنم الاسرا اخرج البيهقي في الدلائل عن سعد المقري ان عبد الله بن سلام سال النبي صلى الله عليه و سلم السواد الذي فى القمر فقال كانا شمسين فقال الله و جعلنا الليل و النهار آيتين فمحونا آية الليل فالسواد الذي رأيت هو المحو و اخرج الحاكم فى التاريخ و الديلمي عن جابر ابن عبد الله قال رسول الله صلى الله عليه و سلم و لقد كرمنا بني آدم قال الكرامة الاكل بالاصابع و اخرج ابن مردويه عن على قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قول الله يوم ندعو كل اناس بامامهم قال يدعى كل قوم بامام لهم و كتاب ربهم و اخرج ابن مردويه عن عمر بن الخطاب

الا الله و ان محمدا رسول الله فذلك قوله يثبت الله الذين امنوا بالقول الثابت فى الحيوة الدنيا و فى الآخرة و اخرج مسلم عن ثوبان قال جاء حبر من اليهود الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اين يكون الناس يوم تبدل الارض غير الارض فقال رسول الله صلى الله عليه و سلم هم فى الظلمة دون الجسر واخرج مسلم و الترمذي و ابن ماجة وغيرهم عن عايشة قالت انا اول الناس سال رسول الله صلى الله عليه وسلم عن هذه الآية يوم تبدل الارض غير الارض قلت اين الناس يومئذ قال على الصراط و اخرج الطبراني فى الاوسط و البزار و ابن مردويه و البيهقي فى البعث عن ابن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قول الله يوم تبدل الارض غير الارض قال ارض بيضاً كانها فضة لم يسفك فيها دم حرام ولم يعمل فيها خطية الحجر اخرج الطبراني و ابن مردويه و ابن حبان عن ابي سعيد الخدري انه سئل هل سمعت من رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول في هذه الآية ربما يود الذين كفروا لوكانوا مسلمين قال نعم سمعته يقول يخرج الله ناسا من المؤمنين من النار بعد ما ياخذ نقمة منهم لما ادخلهم النار مع المشركين قال لهم المشركون تدعون انكم اولياء الله فى الدنيا فما بالكم معنا فى النار فاذا سمع الله ذلك منهم اذن فى الشفاعة لهم فيشفع الملائكة و النبيون و المومنون حتى يخرجوا باذن الله فاذا راى المشركون ذلك قالوا يا ليتنا كنا مثلهم فتدركنا الشفاعة فنخرج معهم فذلك قول الله ربما يود الذين كفروا لوكانوا مسلمين و له شاهد من حديث ابي موسى الاشعري و جابر بن عبد الله

بتفسيرها الصدقة على وجهها و برالو الدين و اصطناع المعروف يحول الشقأ سعادة و يزيد فى العمر ابراهيم اخرج ابن مردويه عن ابن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم من اعطى الشكر لم يحرم الزيادة لان الله تعالى يقول لئن شكرتم لازيدنكم واخرج احمد و الترمذي و النسائي والحاكم و صححه و غيرهم عن ابي امامة عن النبي صلى الله عليه و سلم فى قوله و يسقى من ماء صديد يتجرعه قال يقرب اليه فيتكرهه فاذا ادنى منه شوى وجهه و وقع فروة راسه فان اشربه قطع امعاءه حتى يخرج من دبره يقول الله وسقوا ماء حميما فقطع امعاهم و قال و ان يستغيثوا يغاثوا بماء كالمهل يشوى الوجوه و اخرج ابن ابي حاتم و الطبرانى و ابن مردويه عن كعب ابن مالك رفعه الى النبي صلى الله عليه و سلم فيما احسب في قوله سواء علينا اجزعنا ام صبرنا مالنا من محيص قال يقول اهل النار هلموا فلنصبر فيصبرون خمسائة عام فلما راوا ذلك لا ينفعهم قالوا هلموا فلنجزع فيكون خمسائة عام فلما راوا ذلك لا ينفعهم قالوا سواء علينا اجزعنا ام صبرنا مالنا من محيص و اخرج الترمذي و النسائي و الحاكم وابن حبان وغيرهم عن انس عن النبي صلى الله عليه وسلم في قوله مثل كلمة طيبة كشجرة طيبة قال هى النخلة و مثل كلمة خبيثة كشجرة خبيثة قال هى الحنظل و اخرج احمد و ابن مردويه بسند جيد عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله كشجرة طيبة قال هى التي لا ينقص ورقها هى النخلة و اخرج الايمة الستة عن البرا بن عازب ان النبي صلى الله عليه و سلم قال المسلم اذا سئل فى القبر يشهد ان لا اله

و الترمذي و صححه و النسائي عن ابن عباس قال اقبلت يهود الى النبي صلى الله عليه و سلم فقالوا اخبرنا عن الرعد ما هو قال ملك من ملائكة الله موكل بالسحاب بيده مخراق من نار يزجر به السحاب يسوقه حيث امره الله قالوا فما هذا الصوت الذي يسمع قال صوته و اخرج ابن مردويه عن عمر و ابن بحاد الاشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم الرعد ملك يزجر السحاب و البرق طرف ملك يقال له روفيل و اخرج ابن مردويه عن جابر بن عبد الله ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ان ملكا موكل بالسحاب يلم القاصيه و يلحم الرابية في يده مخراق فاذا رفع برقت و اذا زجر رعدت و اذا ضرب صعقت و اخرج احمد و ابن حبان عن ابي سعيد الخدري عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال طوبى شجرة في الجنة مسيرة مائة عام و اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابن عمر سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول يمحوا الله ما يشاء و يثبت الا الشقاوة و السعادة و الحياة و الموت و اخرج ابن مردويه عن جابر بن عبد الله بن رباب عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله يمحوا الله ما يشاء و يثبت قال يمحو من الرزق و يزيد فيه و يمحو من الاجل و يزيد فيه و اخرج ابن مردويه عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما ان النبي صلى الله عليه و سلم سئل عن قوله يمحو الله ما يشا و يثبت قال ذلك كل ليلة القدر يرفع و يجبر و يرزق غير الحياة و الموت و الشقاوة و السعادة فان ذلك لا يبدل و اخرج ابن مردويه عن علي انه سأل رسول الله صلى الله عليه و سلم عن هذه الآية فقال لا قرن عينك بتفسيرها و لا قرن عين امتي من بعدي

عقلا و احسنكم عقلا اورعكم عن محارم الله و اعملكم بطاعة الله و اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم لم ارشيئا احسن طلبا و لا اسرع ادراكا من حسنة حديثة لسيئة قديمة ان الحسنات يذهبن السيأت و اخرج احمد عن ابي ذر قال قلت يا رسول الله اوصني قال اذا عملت سيئة فاتبعها حسنة تمحوها قلت يا رسول الله امن الحسنات لا اله الا الله قال هي افضل الحسنات و اخرج الطبراني و ابو الشيخ عن جرير بن عبد الله قال لما نزلت و ما كان ربك ليهلك القرى بظلم و اهلها مصلحون قال رسول الله صلى الله عليه و سلم واهلها ينصف بعضهم بعضا يوسف اخرج سعيد ابن منصور و ابو يعلي و الحاكم و صححه و البيهقي فى الدلائل عن جابر بن عبد الله انه قال جاء يهودي الى النبي صلى الله عليه و سلم فقال يا محمد اخبرني عن النجوم التي رأها يوسف ساجدة له ما اسمأوها فلم يجبه بشئ حتى اتاه جبريل فاخبره فارسل الى اليهودي فقال خرتان و طارق و الذيال و ذوالكنعان و ذوالفرع و وثاب و عمود اوقابس و الضروح و المصبح و الفيلق و الضيا و النور يعني اباه و امه راها في افق السماء ساجدة له فلما قص رؤياه على ابيه قال ارى امرا مشتتا يجمعه الله و اخرج ابن مردويه عن انس عن النبي صلى الله عليه و سلم قال لما قال يوسف ذلك ليعلم اني لم اخنه بالغيب قال له جبريل يا يوسف اذكر همك قال و ما ابرى نفسى الرعد اخرج الترمذي وحسنه و الحاكم و صححه عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و نفضل بعضها على بعض فى الاكل قال الدقل و الفارسي و الحلو و الحامض و اخرج احمد

قال القرآن وبرحمته ان جعلكم من اهله و اخرج ابن مردويه عن ابي سعيد الخدري قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال اني اشتكى صدري قال اقرا القرآن يقول الله شفاً لما فى الصدور له شاهد من حديث واثلة بن الاسقع اخرجه البيهقي في شعب الايمان و اخرج ابو داود و غيره من عمر بن الخطاب رضي الله عنه و عنا به قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ان من عباد الله ناسا يغبطهم الانبياء و الشهداء قيل من هم يا رسول الله قال قوم تحابوا فى الله من غير اموال ولا انساب لا يفزعون اذا فرغ الناس ولا يحزنون اذا حزنوا ثم تلا رسول الله صلى الله عليه و سلم الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون و اخرج ابن مردويه عن ابي هريرة قال سئل النبي صلى الله عليه وسلم عن قول الله الا ان اولياء الله لا خوف عليهم قال الذين يتحابون فى الله و ورد مثله من حديث جابر بن عبد الله اخرجه ابن مردويه و اخرج احمد و سعيد بن منصور و الترمذي و غيرهم عن ابى الدرداء انه سئل عن هذه الآية لهم البشرى فى الحيوة الدنيا قال ما سالني عنها احد منذ سالت رسول الله صلى الله عليه و سلم فقال ما سالني عنها احد غيرك منذ انزلت هي الرويا الصالحة يرها المسلم اوترى له فهي بشراه فى الحياة الدنيا و بشراه فى الآخرة الجنة له طرق كثيرة و اخرج ابن مردويه عن عايشة رضي الله عنها عن النبي صلى الله عليه وسلم في قوله الاقوم يونس لما امنوا قال دعوا هود اخرج ابن مردويه بسند ضعيف عن ابن عمر قال تلا رسول الله صلى الله عليه و سلم هذه الآية ليبلوكم ايكم احسن عملا فقلت ما معني ذلك يا رسول الله قال ايكم احسن

سبعون بيتا من زمردة خضراً في كل بيت سرير على كل سرير سبعون فراشا من كل لون على كل فراش زوجة من الحور العين في كل بيت سبعون مائدة على كل مائدة سبعون لونا من الطعام في كل بيت سبعون وصيفا و وصيفة و يعطى المؤمن في كل غداة من القوة ما ياتي على ذلك كله اجمع و اخرج مسلم و غيره عن ابي سعيد قال اختلف رجلان فى المسجد الذي اسس على التقوى فقال احدهما هو مسجد رسول الله صلى الله عليه و سلم وقال الآخر هو مسجد قبا فاتيا رسول الله صلى الله عليه و سلم فسالاه عن ذلك فقال هو مسجدي و اخرج احمد مثله من حديث سهل ابن سعد و ابيّ بن كعب و اخرج احمد و ابن ماجه و ابن حريمة عن عويم ساعدة الانصاري ان النبي صلى الله عليه و سلم اتاهم في مسجد قبا فقال ان الله قد احسن عليكم الثنأ فى الطهور في قصة مسجدكم فما هذا الطهور قالوا ما نعلم شيئا الا انا نستنجي بالماء قال هو ذاك فعليكموه و اخرج ابن جرير عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم السايحون هم الصايمون يونس اخرج مسلم عن صهيب ان النبي صلى الله عليه و سلم قال في قوله للذين احسنوا الحسنى و زيادة الحسنى الجنة و الزيادة النظر الى ربهم و فى الباب عن ابيّ بن كعب و ابي موسى الاشعري و كعب بن عجرة وانس وابي هريرة و اخرج ابن مردويه عن ابن عمر عن رسول الله صلى الله عليه وسلم للذين احسنوا الحسنى و زيادة قال شهادة ان لا اله الا الله الحسنى الجنة و زيادة النظر الى الله و اخرج ابو الشيخ و غيره عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله قل بفضل الله

عن ابي موسى قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم انزل الله علىّ امانين لامتي و ماكان الله ليعذبهم و انت فيهم و ما كان الله معذبهم و هم يستغفرون فاذا مضيت تركت فيهم الاستغفار الى يوم القيامة و اخرج مسلم و غيره عن عقبة بن عامر قال سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول و هو على المنبر و اعدوا لهم ما استطعتم من قوة الا ان القوة الرمي و اخرج ابو الشيخ من طريق ابى المهدي عن ابيه عمن حدثه عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و آخرين من دونهم لا تعلمونهم قال هم الجن و اخرج الطبراني مثله من حديث يزيد بن عبد الله بن غريب عن ابيه عن جده مرفوعا برأة اخرج الترمذي عن علي قال سالت رسول الله صلى الله عليه وسلم عن يوم الحج الاكبر فقال يوم النحر و له شاهد عن ابن عمر عند ابن جرير و اخرج ابن ابي حاتم عن المسور بن مخرمة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال يوم عرفة هذا يوم الحج و اخرج احمد و الترمذي و ابن حبان و الحاكم عن ابي سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم قال يوم عرفه هذا يوم الحج الاكبر و اخرج احمد و الترمذي و ابن حبان و الحاكم عن ابي سعيد قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم اذا رأيتم الرجل يعتاد المسجد فاشهدوا له بالايمان قال الله انما يعمر مساجد الله من آمن بالله واليوم الآخر و اخرج ابن المبارك فى الزهد و الطبراني و البيهقي فى البعث عن عمران بن حصين و ابي هريرة قالا سئل رسول الله صلى الله عليه و سلم عن هذه الآية و مساكن طيبة في جنات عدن قال قصر من لولوة في ذلك القصر سبعون دارا من ياقوتة حمرأ في كل دار

موسى صعقا و اخرجه ابو الشيخ بلفظ و اشار بالخنصر فمن نورها جعله دكا و اخرج ابو الشيخ من طريق جعفر بن محمد عن ابيه عن جده عن النبي صلى الله عليه و سلم قال الالواح التي انزلت على موسى كانت من سدر الجنة كان طول اللوح اثنى عشر ذراعا و اخرج احمد و النسائي و الحاكم و صححه عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم قال ان الله اخذ الميثاق من ظهر آدم بنعمان يوم عرفة فاخرج من صلبه كل ذرية ذراها فنثرها بين يديه ثم كلمهم قبلا الست بربكم قالوا بلى و اخرج ابن جرير بسند ضعيف عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في هذه الآية اخذ من ظهره كما يوخذ بالمشط من الراس فقال لهم الست بربكم قالوا بلى قالت الملائكة شهدنا و اخرج احمد و الترمذي و حسنه و الحاكم و صححه عن سمرة عن النبي صلى الله عليه و سلم قال لما ولدت حواطاف بها ابليس و كان لا يعيش لها ولد فقال سميه عبد الحارث فانه يعيش فسمته عبد الحارث فعاش فكان ذلك من وحى الشيطان و امره و اخرج ابن ابي حاتم و ابو الشيخ عن الشعبي قال لما انزل الله خذ العفو الآية قال رسول الله صلى الله عليه و سلم ما هذا يا جبريل قال لا ادري حتى اسال العالم فذهب ثم رجع قال ان الله امرك ان تعفو عمن ظلمك و تعطي من حرمك وتصل من قطعك مرسل الانفال اخرج الشيخ عن ابن عباس رضي الله عنهما عن رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله و اذكروا اذ انتم قليل مستضعفون فى الارض تخافون ان يتخطفكم الناس قيل يا رسول الله و من الناس قال اهل فارس و اخرج الترمذي و ضعفه

ابي هريرة عند ابى الشيخ و اخرج احمد و ابو داود و الحاكم و غيرهم عن البرا ابن عازب ان رسول الله صلى الله عليه و سلم ذكر العبد الكافر اذا قبضت روحه قال فيصعدون بها فلا يمرون بها على ملأ من الملائكة الا قالوا ما هذا الروح الخبيث حتى ينتهى بها الى السماء الدنيا فيستفتح فلا يفتح له ثم قرا رسول الله صلى الله عليه و سلم لا تفتح لهم ابواب السماء فيقول الله اكتبوا كتابه في سجين فى الارض السفلى فتطرح روحه طرحا ثم قرا رسول الله صلى الله عليه و سلم و من يشرك بالله فكانما خرمن السماء فتخطفه الطير او تهوى به الريح في مكان سحيق و اخرج ابن مردويه عن جابر ابن عبد الله قال سئل رسول الله صلى الله عليه و سلم عن من استوت حسناته و سياته فقال اولئك اصحاب الاعراف له شواهد واخرج الطبراني و البيهقي و سعيد ابن منصور و غيرهم عن عبد الرحمن المزني قال سئل رسول الله صلى الله عليه و سلم عن اصحاب الاعراف فقال هم اناس قتلوا في سبيل الله بمعصية ابائهم فمنعهم من دخول الجنة معصية ابائهم و منعهم من النار قتلهم في سبيل الله له شاهد من حديث ابي هريرة عند البيهقي و من حديث ابي سعيد عند الطبراني و اخرج البيهقي بسند ضعيف عن انس مرفوعا انهم مومنوا الجن و اخرج ابن جرير عن عايشة رضي الله عنها قالت قال رسول الله صلى الله عليه و سلم الطوفان الموت و اخرج احمد و الترمذي و الحاكم و صححاه عن انس ان النبي صلى الله عليه و سلم قرأ فلما تجلى ربه للجبل جعله دكا قال هكذا و اشار بطرف ابهامه على انملة اصبعه اليمنى فساخ الجبل وخر

صفا واحدا ما احاطوا بالله ابدا واخرج الغرياني و غيره من طريق عمر بن مرة عن ابي جعفر قال سئل النبي صلى الله عليه و سلم عن هذه الآية فهن يرد الله ان يهديه يشرح صدره للاسلام قالوا كيف يشرح صدره قالوا نور يقذف به فينشرح له و ينفسح قالوا فهل لذلك من امارة يعرف بها قال الانابة الى دارالخلود و التجافي عن دار الغرور والاستعداد للموت قبل لقاء الموت مرسل له شواهد كثيرة متصلة و مرسلة يرتقى بها الى درجة الصحة اوالحسن و اخرج ابن مردويه و النحاس في ناسخه عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله واتوا حقه يوم حصاده قال ما سقط من السنبل و اخرج ابن مردويه بسند ضعيف من مرسل سعيد بن المسيب قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اوفوا الكيل والميزان بالقسط لا تكلف نفسا الا وسعها فقال من اوفى على يده فى الكيل والميزان و الله يعلم صحة نية بالوفاء فيهما لم يواخذ و ذلك تاويل وسعها و اخرج احمد و الترمذي عن ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه و سلم يوم ياتي بعض آيات ربك لا ينفع نفسا ايمانها قال طلوع الشمس من مغربها له طرق كثيرة فى الصحيحين و غيرهما من حديث ابي هريرة و غيره و اخرج الطبراني و غيره بسند جيد عن عمربن الخطاب رضي الله تعالى عنه ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال لعايشة يا عايشة ان الذين فرقوا دينهم وكانوا شيعاهم اصحاب البدع و الاهواء من هذه الامة الاعراف اخرج ابن مردويه و غيره بسند ضعيف عن انس عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله خذوا زينتكم عند كل مسجد قال صلوا في بغالكم له شاهد من حديث

هذا و اخرج الطبراني عن عايشة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم في قوله اوكسوتهم قال عباة لكل مسكين و اخرج الترمذي وصححه عن ابي امية الشعباني قال اتيت ابا ثعلبة الخشني فقلت له كيف تصنع في هذه الآية قال ايت اية قلت قوله يا ايها الذين آمنوا عليكم انفسكم لا يضركم من ضل اذا اهتديتم قال اما و لله لقد سالت عنها خبيرا سالت عنها رسول الله صلى الله عليه و سلم قال بل ايتمروا بالمعروف و تناهوا عن المنكر حتى اذا رايت شحا مطاعا و هوى متبعا و دينا موثرة و اعجاب كل ذي راى برايه فعليك بخاصة نفسك ودع العوام واخرج احمد والطبراني وغيرهما عن ابي عامر الاشعري قال سالت رسول الله صلى الله عليه و سلم عن هذه الآية فقال لا يضركم من ضل من الكفار اذا اهتديتم الانعام اخرج ابن مردويه و ابو الشيخ من طريق نهشل عن الضحاك عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم مع كل انسان ملك اذا نام ياخذ نفسه فان اذن الله في قبض روحه قبضه و الارد اليه فذلك قوله يتوفاكم بالليل نهشل كذاب و اخرج احمد و الشيخان و غيرهم عن ابن مسعود قال لما نزلت هذه الآية الذين امنوا و لم يلبسوا ايمانهم بظلم شق ذلك على الناس فقالوا يا رسول الله و اينا لا يظلم نفسه قال انه ليس الذي يعنون الم تسمعوا ما قال العبد الصالح ان الشرك لظلم عظيم انما هو الشرك و اخرج ابن ابي حاتم وغيره بسند ضعيف عن ابي سعيد الخدري عن رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله لا تدركه الابصار قال لو ان الجن و الانس و الشياطين و الملائكة منذ خلقوا الى ان فنوا صفوا

قوله تعالى ذلك ادنى ان لا تعولوا قال ان لا تجوزوا قال ابن ابي حاتم قال ابي هذا حديث خطا و الصحيح عن عايشة موقوف و اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابن عمر قال قرى عند عمر كلما نضجت جلودهم بدلناهم جلودا غيرها ليذوقوا العذاب فقال معاذ عندي تفسيرها تبدل في ساعة مائة مرة فقال عمر هكذا سمعت من رسول الله صلى الله عليه و سلم و اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و من يقتل مومنا متعمدا فجزاؤه جهنم قال ان جازاه و اخرج الطبراني و غيره بسند ضعيف عن ابن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله فيوفيهم اجورهم و يزيدهم من فضله الشفاعة فيمن وجبت له النار ممن منع اليهم المعروف في الدنيا و اخرج ابو داود في المراسيل عن ابي سلمة بن عبد الرحمن قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه و سلم فساله عن الكلالة فقال اما سمعت الآية التي انزلت في الصيف يستفتونك قل الله يفتيكم في الكلالة فمن لم يترك ولدا ولا والدا فورثته كلالة مرسل و اخرج ابو الشيخ في كتاب الفرائض عن البرا سالت رسول الله صلى الله عليه و سلم عن الكلالة فقال ماخلا الولد والوالد المائدة اخرج ابن ابي حاتم عن ابي سعيد الخدري عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال كانت بنو اسرائيل اذا كان لاحدهم خادم ودابة و امراة كتب ملكا له شاهد من مرسل زيد بن مسلم عند ابن جرير و اخرج الحاكم و صححه عن عياض الاشعري قال لما نزلت فسوف ياتي الله بقوم يحبهم و يحبونه قال رسول الله صلى الله عليه و سلم لابي موسى هم قوم

الزاد و الراحلة و اخرج الترمذي مثله من حديث ابن عمر و حسنه و اخرج عبد بن حميد في تفسيره عن نقيع قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم و لله على الناس حج البيت من استطاع اليه سبيلا و من كفر فان الله غني عن العالمين فقام رجل من هذيل فقال يا رسول الله من تركه فقد كفر قال من تركه لا يخاف عقوبته و لايرجو ثوابه نقيع تابعي فالاسناد مرسل و له شاهد موقوف على ابن عباس و اخرج الحاكم و صححه عن ابن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله اتقوا الله حق تقاته ان يطاع فلايعصى و يذكر فلا ينسى و اخرج ابن مردويه عن ابي جعفر الباقر قال قرأ رسول الله صلى الله عليه و سلم و لتكن منكم امة يدعون الى الخير ثم قال الخير اتباع القرآن و سنتي معضل و اخرج الديلمي في مسند الفردوس بسند ضعيف عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله يوم تبيض وجوه و تسود وجوه قال تبيض وجوه اهل السنة وتسود وجوه اهل البدع و اخرج الطبراني و ابن مردويه بسند ضعيف عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله مسومين قال معلمين و كانت سيماً الملائكة يوم بدر عمايم سود و يوم احد عمايم حمر و اخرج البخاري عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم من اتاه الله مالا فلم يود زكاته مثل له شجاع اقرع له زبيبتان يطوقه يوم القيامة فياخذ بلهزميته يقول انا مالك انا كنزك ثم تلا هذه الآية ولا تحسبن الذين يبخلون بما آتاهم الله من فضله الآية النساء اخرج ابن ابي حاتم و ابن حبان في صحيحه عن عايشة عن النبي صلى الله عليه و سلم في

ابي مالك الاشعري قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم الصلاة الوسطى صلاة العصر و له طرق اخرى و شواهد و اخرج الطبراني عن علي عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال السكينة ريح خجوج و اخرج ابن مردويه من طريق جويبر عن الضحاك عن ابن عباس مرفوعا في قوله يوت الحكمة من يشاء قال القرآن قال ابن عباس يعني تفسيره فانه قد قرأه البر و الفاجر آل عمران اخرج احمد وغيره عن ابي امامة عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله فاما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشا به منه ابتغاء تاويله قال هم الخوارج و في قوله يوم تبيض وجوه و تسود وجوه قال هم الخوارج و اخرج الطبراني و غيره عن ابى الدرداء ان رسول الله صلى الله عليه وسلم سئل عن الراسخين فى العلم فقال من برت يمينه و صدق لسانه و استقام قلبه و عف بطنه و فرجه فذلك من الراسخين فى العلم واخرج الحاكم و صححه عن انس قال سئل رسول الله صلى الله عليه و سلم عن قول الله و القناطير المقنطرة قال القنطار الف اوقية واخرج احمد و ابن ماجة عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم القنطار اثنى عشر الف اوقية و اخرج الطبراني بسند ضعيف عن ابن عباس عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و له اسلم من فى السموات و الارض طوعا و كرها قال اما من فى السموات فالملايكة و اما من فى الارض فمن ولد على الاسلام و اما كرها فمن اتى به من سبايا الامم فى السلاسل و الاغلال يقادون الى الجنة وهم كارهون و اخرج الحاكم و صححه عن انس ان رسول الله صلى الله عليه و سلم سئل عن قول الله من استطاع اليه سبيلا ما السبيل قال

قول الله و يلعنهم اللاعنون يعني دواب الارض و اخرج الطبراني عن ابي امامة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم في قوله الحج اشهر معلومات قال شوال و ذوالقعدة و ذوالحجة و اخرج الطبراني بسند لا باس به عن ابن عباس رضي الله عنهما قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في قوله فلا رفث ولا فسوق ولا جدال في الحج قال الرفث التعرض للنساء بالجماع و الفسوق المعاصي والجدال جدال الرجل صاحبه و اخرج ابو داؤد عن عطا انه سئل عن اللغو في اليمين فقال قالت عايشة رضي الله تعالى عنها ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال هو كلام الرجل في بيته كلا والله و بلى و الله اخرجه البخاري موقوفا عليها و اخرج احمد و غيره عن ابي رزين الاسدي قال قال رجل يا رسول الله ارايت قول الله الطلاق مرتان فاين الثالثة قال تسريح باحسان و اخرج ابن مردويه عن انس قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه و سلم فقال يا رسول الله ذكر الله الطلاق مرتان فاين الثالثه قال امساك بمعروف اوتسريح باحسان و اخرج الطبراني بسند لا باس به من طريق ابن لهيعة عن عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده عن النبي صلى الله عليه وسلم قال الذي بيده عقدة النكاح الزوج و اخرج الترمذي و ابن حبان في صحيحه عن ابن مسعود قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم صلاة الوسطى صلاة العصر و اخرج احمد و الترمذي و صححه عن سمرة ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال صلوة الوسطى صلاة العصر و اخرج ابن جرير عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم الصلاة الوسطى صلاة العصر و اخرج ايضا عن

اتباعه و اخرج ابن مردويه بسند ضعيف عن على ابن ابيطالب عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله لا ينال عهدى الظالمين قال لا طاعة الا فى المعروف له شاهد اخرجه ابن ابي حاتم عن ابن عباس موقوفا بلفظ ليس لظالم عليك عهد ان تطيعه في معصية الله واخرج احمد و الترمذي و الحاكم و صححاه عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله وكذلك جعلناكم امة وسطا قال عدلا و اخرج الشيخان وغيرهما عن ابي سعيدالخدري عن النبي صلى الله عليه وسلم قال يدعى نوح يوم القيامة فيقال له هل بلغت فيقول نعم فيدعى قومه فيقال لهم هل بلغكم فيقولون ما اتانا من نذير و ما اتانا من احد فيقال لنوح من يشهدلك فيقول محمد و امته قال فذلك قوله و كذلك جعلناكم امة وسطا قال و الوسط العدل فتدعون فتشهدون له بالبلاغ و اشهد عليكم قوله و الوسط العدل مرفوع غيرمدرج نبه على ذلك ابن حجر في شرح البخاري واخرج ابو الشيخ و الديلمي في مسند الفردوس من طريق جويبر عن الضحاك عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم في قوله فاذكروني اذكركم يقول اذكروني يا معشر العباد بطاعتي اذكركم بمغفرتي و اخرج الطبراني عن ابي امامة قال انقطع قال النبي صلى الله عليه وسلم فاسترجع فقالوا مصيبة يا رسول الله فقال ما اصاب المومن مما يكره فهو مصيبة له شواهد كثيرة و اخرج ابن ماجة و ابن ابي حاتم عن البرأ بن عازب قال كنا في جنازة مع النبي صلى الله عليه وسلم فقال ان الكافر يضرب ضربة بين عينيه فيسمعه كل دابة غير الثقلين فتلعنه كل دابة سمعت صوته فذلك

ان المغضوب عليهم هم اليهود و ان الضالين النصارى و اخرج ابن مردويه عن ابي ذر قال سالت النبي صلى الله عليه و سلم عن المغضوب عليهم قال اليهود قلت الضالين قال النصارى البقرة اخرج ابن مردويه و الحاكم في مستدركه و صححه من طريق ابي نضرة عن ابي سعيد الخدري عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله و لهم فيها ازواج مطهرة قال من الحيض و الغايط و النخامة و البزاق قال ابن كثير في تفسيره في اسناده الربعي قال فيه ابن حبان لا يجوز الاحتجاج به قال ففي تصحيح الحاكم له نظر ثم رأته في تاريخه قال انه حديث حسن و اخرج ابن جرير بسند رجاله ثقات عن عمرو بن قيس الملاى عن رجل من بني امية من اهل الشام احسن عليه الثنا قال قيل يا رسول الله ما العدل قال العدل الفدية مرسل جيد عضده اسناده متصل عن ابن عباس موقوفا و اخرج الشيخان عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه و سلم قال قيل لبني اسرائيل ادخلوا الباب سجدا و قولوا حطة فدخلوا يزحفون على استاههم وقالواحبة في شعرة فيه تفسير قوله قولا غير الذي قيل لهم و اخرج الترمذي و غيره بسند حسن عن ابي سعيد الخدري عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ويل واد في جهنم يهوي فيه الكافر اربعين خريفا قبل ان يبلغ قعره و اخرج احمد بهذا السند عن ابي سعيد عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال كل حرف من القرآن يذكر فيه القنوت فهو الطاعة و اخرج الخطيب في الرواة عن مالك بسند فيه مجاهيل عن مالك عن نافع عن ابن عمر عن النبي صلى الله عليه و سلم في قوله يتلونه حق تلاوته قال يتبعونه حق

اليه قال الباقيني استخرجت من الكشاف اعتزالا بالمنا قيش من قوله في تفسير فمن زحزح عن النار و ادخل الجنة فقد فاز واى فوز اعظم من دخول الجنة اشاربه الى عدم الروية و الملحد فلا تسال عن كفره و الحاده في آيات الله و افترائه على الله مالم يقله كقول بعضهم في ان هى الافتنتك ما على العباد اضر من ربهم و قوله في شجرة موسى ما قال و قول الرافضة في يأمركم ان تذبحوا بقرة ما قالوا وعلى هذا و امثاله يحمل ما اخرجه ابو يعلى وغيره عن حذيفة ان النبي صلى الله عليه وسلم قال ان في امتي قوما يقرؤن القرآن ينثرونه نثرالدقل يتاولونه على غير تاويله فان قلت فاى التفاسير ترشد اليه وتامر الناظر ان يعول عليه قلت تفسير الامام ابي جعفر ابن جرير الطبرى المدني اجمع العلماء المعتبرون على انه لم يولف فى التفسير مثله قال النووي في تهذيبه كتاب ابن جرير فى التفسير لم يصنف احد مثله و قد شرعت في تفسير جامع لجميع ما يحتاج اليه من التفاسير المنقولة و الاقوال المقولة و الاستنباطات و الاشارات و الاعاريب و اللغات و نكت البلاغة و محاسن البدائع و غير ذلك بحيث لا يحتاج معه الى غيره اصلا وسميته بمجمع البحرين و مطلع البدرين و هوالذي جعلت هذا الكتاب مقدمة له و الله اسال ان يعين على اكماله بمحمد و اله واذ قد انتهى بنا القول فيما اردناه من هذا الكتاب فلنختمه بما ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم من التفاسير المصرح برفعها اليه غير ما ورد من اسباب النزول لتستفاد فانها من المهمات الفاتحة اخرج احمد و الترمذي وحسنه و ابن حبان في صحيحه عن عدي بن حاتم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

يخطر بباله شئ يعتمده ثم ينقل ذلك عنه من يجئ بعده ظانا ان له اصلا غير ملتفت الى تحرير ما ورد عن السلف الصالح و من يرجع اليهم فى التفسير حتى رايت من حكى في تفسير قوله تعالى غير المغضوب عليهم ولاالضالين نحو عشرة اقوال و تفسيرها باليهود و النصارى هو الوارد عن النبي صلى الله عليه وسلم و جميع الصحابة و التابعين و اتباعهم حتى قال ابن ابي حاتم لا اعلم في ذلك اختلافا بين المفسرين ثم صنف بعد ذلك قوم برعوا في علوم فكان كل منهم يقتصر في تفسيره على الفن الذي يغلب عليه فالنحوي تراه ليس له هم الا الاعراب و تكثير الاوجه المحتملة فيه و نقل قواعد النحو و مسائله و فروعه و خلافياته كالزجاج و الواحدي فى البسيط و ابي حيان فى البحر و النهر و الاخباري ليس له شغل الا القصص و استيفاوها و الاخبار عن من سلف سواء كانت صحيحة او باطلة كالثعلبي و الفقيه يكاد يسرد فيه الفقه من باب الطهارة الى امهات الاولاد و ربما استطرد الى اقامة ادلة الفروع الفقهية التي لا تعلق بها بالآية اصلا و الجواب من ادلة المخالفين كالقرطبي وصاحب العلوم العقلية خصوصا الامام فخرالدين قد ملأ تفسيره باقوال الحكماء و الفلاسفة وشبهها وخرج من شئ الى شئ حتى يقضى الناظرالعجب من عدم مطابقة المورد للآية قال ابو حيان فى النحو جمع الامام الرازي في تفسيره اشياء كثيرة طويلة لا حاجة بها في علم التفسير و لذلك قال بعض العلماء فيه كل شئ الا التفسير و المبتدع ليس له قصد الا تحريف الآيات و تسويتها على مذهبه الفاسد بحيث انه متى لاح له شاردة من بعيد اقتنصها او وجد موضعاله فيه ادنى مجال سارع

بالسير و كان الحسن اعلمهم بالحلال و الحرام و منهم عكرمة مولى ابن عباس قال الشعبي ما بقى احد اعلم بكتاب الله من عكرمة و قال سماك بن حرب سمعت عكرمة يقول لقد فسرت ما بين اللوحين و قال عكرمة كان ابن عباس يجعل في رجل الكبل و يعلمني القرآن و السنن و اخرج ابن ابي حاتم عن سماك قال قال عكرمة كل شئ احدثكم فى القرآن فهو عن ابن عباس و منهم الحسن البصري وعطا بن ابي رباح و عطا بن ابي سلمة الخراساني و محمد بن كعب القرظي و ابو العالية و الضحاك بن مزاحم و عطية العوفي و قتادة و زيد بن اسلم و مرة الهمداني و ابو مالك و يليهم الربيع ابن انس و عبد الرحمن بن زيد بن اسلم في آخرين فهولاء قدماء المفسرين و غالب اقوالهم تلقوها من الصحابة ثم بعد هذه الطبقة الفت تفاسير تجمع اقوال الصحابه و التابعين كتفسير سفيان بن عيينة و وكيع بن الجراح و شعبة بن الحجاج و يزيد بن هارون و عبد الرزاق و آدم بن ابي اياس و اسحاق بن راهويه و روح بن عبادة و عبد بن حميد و سعيد و ابي بكر بن ابي شيبه و آخرين و بعدهم ابن جرير الطبري و كتابه اجل التفاسير و اعظمها ثم ابن ابي حاتم و ابن ماجة و الحاكم و ابن مردويه و ابو الشيخ ابن حيان و ابن المنذر في آخرين و كلها مسندة الى الصحابة و التابعين و اتباعهم و ليس فيها غير ذلك الا ابن جرير فانه يتعرض لتوجيه الاقوال و ترجيح بعضها على بعض و الاعراب و الاستنباط فهو يفوقها بذلك ثم الف فى التفسير خلايق فاختصروا الاسانيد و نقلوا الاقوال بترا فدخل من هذا الدخيل و التبس الصحيح بالعليل ثم صار كل من نسخ له قول يورده و من

جماعة من الصحابة غير هولاء اليسير من التفسير كانس و ابي هريرة و ابن عمر و جابر و ابي موسى الاشعري و ورد عن عبد الله ابن عمرو بن العاص اشياء تتعلق بالقصص و اخبار الفتن و الآخرة و ما اشبهها بان يكون مما تحمله عن اهل الكتاب كالذي ورد عنه في قوله تعالى في ظلل من الغمام و كتابنا الذي اشرنا اليه جامع بجميع ما ورد عن الصحابه من ذلك طبقة التابعين قال ابن تيمية اعلم الناس بالتفسير اهل مكة لانهم اصحاب ابن عباس رضي الله عنهما كمجاهد و عطا بن أبي رياح و عكرمة مولى ابن عباس و سعيد بن جبير و طاوس و غيرهم و كذلك في الكوفة اصحاب ابن مسعود و علماء اهل المدينة في التفسير مثل زيد بن اسلم الذي اخذ عنه ابنه عبد الرحمن بن زيد و مالك بن انس انتهى فمن المبرزين منهم مجاهد قال الفضل بن ميمون سمعت مجاهدا يقول عرضت القرآن على ابن عباس ثلاثين مرة و عنه ايضا قال عرضت المصحف على ابن عباس ثلاث عرضات اقف عند كل آية منه و اساله عنها فيما نزلت وكيف كانت و قال خصيف كان اعلمهم بالتفسير مجاهد و قال الثوري اذا جاءك التفسير عن مجاهد فحسبك به قال ابن تيمية و لهذا يعتمد على تفسيره الشافعي و البخاري و غيرهما من اهل العلم قلت و غالب ما اورده الفريابي في تفسيره عنه و ما اورده فيه عن ابن عباس او غيره قليل جدا و منهم سعيد بن جبير قال سفيان الثوري خذوا التفسير عن اربعة عن سعيد بن جبير و مجاهد و عكرمة و الضحاك و قال قتادة كان اعلم التابعين اربعة كان عطا بن ابي رياح اعلمهم بالمناسك و كان سعيد بن جبير اعلمهم بالتفسير و كان عكرمة اعلمهم

جرير و ابن ابي حاتم كثيرا و في معجم الطبراني الكبير منها اشياء و اوهى طرقه طريق الكلبي عن ابي صالح عن ابن عباس فان انضم الى ذلك رواية محمد بن مروان السدى الصغير فهي سلسلة الكذب و كثيرا ما يخرج منها الثعالبي و الواحدي و لكن قال ابن عدى فى الكامل للكلبي احاديث صالحة و خاصة عن ابي صالح و هو معروف بالتفسير و ليس لاحد تفسير اطول منه ولا اشبع و بعده مقاتل بن سليمان الا ان الكلبي يفضل عليه لما في مقاتل من المذاهب الردية و طريق الضحاك بن مزاحم عن ابن عباس منقطعة فان الضحاك لم يلقه فان انضم الى ذلك رواية بشر بن عمارة عن ابي روق عنه فضعيفة لضعف بشر و قد اخرج من هذه النسخة كثيرا ابن جرير و ابن ابي حاتم و ان كان من رواته جويبر عن الضحاك فاشد ضعفا لان جويبرا شديد الضعف متروك و لم يخرج ابن جرير ولا ابن ابي حاتم من هذا الطريق شيئا انما اخرجها ابن مردويه و ابو الشيخ ابن حيان و طريق العوفي عن ابن عباس اخرج منها ابن جرير و ابن ابي حاتم كثيرا و العوفي ضعيف ليس بواه وربما حسن له الترمذي و رايت عن فضائل الامام الشافعي لابي عبد الله محمد بن احمد بن شاكر القطان انه اخرج بسنده من طريق ابن عبد الحكم قال سمعت الشافعي يقول لم يثبت عن ابن عباس فى التفسير الا شبيه بماية حديث و اما ابي ابن كعب فعنه نسخة كبيرة يرويها ابو جعفر الرازي عن الربيع بن انس عن ابى العالية عنه وهذا اسناد صحيح وقد اخرج ابن جرير و ابن ابي حاتم منها كثيرا و كذا الحاكم في مستدركه و احمد في مسنده و قد ورد عن

جزء و ذلك صحيح متفق عليه و تفسير شبل بن عباد المكي عن ابن ابي نجيح عن مجاهد عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قريب الى الصحة و تفسير عطا بن دينار يكتب و يحتج به و تفسير ابي روق نحو جزء صحوه و تفسير اسماعيل السدي يورده باسانيد الى ابن مسعود و ابن عباس و روى عن السدي الايمة مثل الثوري و شعبة لكن التفسير الذي جمعه رواه عنه اسباط بن نصر و اسباط لم يتفقوا عليه غير ان امثل التفاسير تفسير السدي فاما ابن جريج فانه لم يقصد الصحة وانما روى ما ذكر في كل آية من الصحيح و السقيم و تفسير مقاتل بن سليمان فمقاتل في نفسه ضعفوه و قد ادرك الكبار من التابعين و الشافعي اشار الى ان تفسيره صالح انتهى كلام الارشاد و تفسير السدي الذي اشار اليه يورد منه ابن جرير كثيرا من طريق السدي عن ابي مالك و عن ابي صالح عن ابن عباس و عن مرة عن ابن مسعود و ناس من الصحابة هكذا و لم يورد منه ابن ابي حاتم شيئا لانه التزم ان يخرج اصح ما ورد و الحاكم يخرج منه في مستدركه اشياء و يصححه لكن من طريق مرة عن ابن مسعود و ناس فقط دون الطريق الاول وقد قال ابن كثير ان هذا الاسناد يروي به السدي اشياء فيها غرابة و من جيد الطرق عن ابن عباس طريق قيس عن عطا بن السايب عن سعيد بن جبير عنه و هذه الطريق صحيحة على شرط الشيخين و كثيرا ما يخرج منها الفريابي و الحاكم في مستدركه و من ذلك طريق ابن اسحاق عن محمد بن ابي محمد مولى ال زيد بن ثابت عن عكرمة او سعيد بن جبير عنه هكذا بالترديد و هي طريق جيدة و اسنادها حسن و قد اخرج منها ابن

رضي الله تعالى عنهما وقد ورد عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما فى التفسير ما لا تحصي كثرة و عنه روايات وطرق مختلفة فمن جيدها طريق على ابن ابي طلحة الهاشمي عنه قال احمد ابن حنبل بمصر صحيفة فى التفسير رواها على ابن ابي طلحة لو رحل رجل فيها الى مصر قاصدا ما كان كثيرا اسنده ابو جعفر النحاس في ناسخه قال ابن هجر و هذ النسخة كانت ابي صالح كاتب الليث رواها عن معاوية ابن صالح عن علي بن ابي طلحة عن ابن عباس رضي الله عنه و هي عند البخاري عن ابي صالح وقد اعتمد عليها في صحيحه كثيرا فيما تعلقه عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما و اخرج ابن جرير و ابن ابي حاتم و ابن المنذر كثير ابوسائط بينهم و بين ابي صالح و قال قوم لم يسمع ابن ابي طلحة من ابن عباس التفسير و انما اخذه عن مجاهد او سعيد ابن جبير قال ابن حجر بعد ان عرفت الواسطة و هي ثقة فلاضير في ذلك و قال الخليلي فى الارشاد تفسير معاوية بن صالح قاضى الاندلس عن علي ابن ابي طلحة رواه الكبار عن ابي صالح كاتب الليث عن معاوية و اجمع الحفاظ على ان ابن ابي طلحة لم يسمعه من ابن عباس قال و هذه التفاسير الطوال التي اسندوها الى ابن عباس غير مرضية و رواتها مجاهيل كتفسير جويبر عن الضحاك عن ابن عباس و عن ابن جريج فى التفسير جماعة رووا عنه و اطولها ما يرويه بكر ابن سهل الدمياطي عن عبد الغني ابن سعيد عن موسى بن محمد عن ابن جريج و فيه نظر و روى محمد بن ثور عن ابن جريج نحو ثلاثة اجزاء كبار و ذلك صحوه و روى الحجاج بن محمد عن ابن جريج نحو

ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال قال عمر بن الخطاب رضي الله تعالى عنه يوما لاصحاب النبي صلى الله عليه و سلم فيمن ترون هذه الآية نزلت ايود احدكم ان تكون له جنة من نخيل و اعناب قالوا الله اعلم فغضب عمر فقال قولوا نعلم اولا نعلم فقال ابن عباس رضي الله عنهما في نفسي منها شئ فقال يا ابن اخي قل ولا تحقر نفسك قال ابن عباس ضربت مثلا لعمل قال عمر اي عمل قال ابن عباس لعمل قال عمر لرجل غني يعمل بطاعة الله ثم بعث الله له الشيطان فعمل بالمعاصي حتى اغرق اعماله و اخرج ابو نعيم عن محمد ابن كعب القرظي عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما ان عمر بن الخطاب رضي الله تعالى عنه جلس في رهط من المهاجرين من الصحابة فذكروا ليلة القدر فتكلم كل بما عنده فقال عمر رضي الله تعالى عنه مالك يا ابن عباس صامت لا تتكلم تكلم ولا تمنعك الحداثة قال ابن عباس رضي الله تعالى عنهما فقلت يا امير المؤمنين ان الله وتر يحب الوتر فجعل ايام الدنيا تدور على سبع و خلق الانسان من سبع و خلق ارزاقنا من سبع و خلق فوقنا سموات سبعا و خلق تحتنا ارضين سبعا و اعطى من المثاني سبعا و نهي في كتابه عن نكاح الاقربين عن سبع و قسم الميراث في كتابه على سبع و نقع في السجود من اجسادنا على سبع و طاف رسول الله صلى الله عليه و سلم بالكعبة سبعا و بين الصفا و المروة سبعا و رمى الجمار لسبع فاراها في السبع الاواخر من شهر رمضان فتعجب عمر فقال ما وافقني فيها احد الا هذا الغلام الذي لم تستوشوون راسه ثم قال يا هولاء من يوديني في هذا كان ابن عباس

اخرج البيهقي فى الدلايل عن ابن مسعود قال نعم ترجمان القرآن عبد الله بن عباس و اخرج ابو نعيم عن مجاهد قال كان ابن عباس رضي الله عنهما و عنا يسمي البحر لكثرة علمه و اخرج عن ابن حنفية قال كان ابن عباس خير هذه الامة و اخرج عن الحسن قال ان ابن عباس كان من القرآن بمنزل كان عمر يقول ذلكم فتى الكهول ان له لسانا سؤولا و قلبا عقولا و اخرج من طريق عبد الله ابن دينار عن ابن عمران رجلا اتاه يسئله عن السموات و الارض كانتا رتقا ففتقناهما فقال اذهب الى ابن عباس فسله ثم تعال اخبرني فذهب فسأله فقال كانت السموات رتقا لا تمطرو و كانت الارض رتقا لا تنبت ففتق هذه بالمطر و هذه بالنبات فرجع الى ابن عمر فاخبره فقال قد كنت اقول ما يعجبني جرأة ابن عباس على تفسير القرآن فالآن قد علمت انه اوتي علما و اخرج البخاري من طريق سعيد ابن جبير عن ابن عباس قال كان عمر يدخلني مع اشياخ بدر فكان بعضهم وجد في نفسه فقال لم يدخل هذا معنا و ان لنا ابنا مثله فقال عمر انه ممن علمتم فدعاهم ذات يوم فادخله معهم فما ريت انه دعاني فيهم يومئذ الا ليريهم فقال ما تقولون في قول الله اذا جاء نصر الله و الفتح فقال بعضهم امرنا ان نحمد الله و نستغفره اذا نصرنا وفتح علينا وسكت بعضهم فلم يقل شيئا فقال لي اكذاك تقول يا ابن عباس فقلت لا فقال ما تقول فقلت هو اجل رسول الله صلى الله عليه و سلم اعلمه له فقال اذا جاء نصر الله و الفتح فذلك علامة اجلك فسبح بحمد ربك و استغفره انه كان توابا فقال عمر لا اعلم منها الا ما تقول و اخرج ايضا من طريق ابن ابي مليكة عن

اعلم ابليل نزلت ام بنهار ام في سهل ام في جبل و اخرج ابو نعيم فى الحلية عن ابن مسعود قال ان القرآن انزل على سبعة احرف ما منها حرف الاوله ظهر و بطن و ان علي بن ابي طالب عنده منه الظاهر و الباطن و اخرج ايضا من طريق ابي بكر بن عباس عن يصهر بن سليمان الاحمسي عن ابيه عن علي قال واناه ما نزلت آية الا وقد علمت في مَ انزلت و اين انزلت ان ربي وهب لي قلبا عقولا و لسانا سؤلا و اما ابن مسعود فروي عنه اكثر مما روى عن على وقد اخرج ابن جرير و غيره عنه انه قال والذي لا اله غيره ما نزلت آية من كتاب الله الا و انا اعلم فيمن نزلت و اين نزلت و لو اعلم مكان احد اعلم بكتاب الله مني تناله المطايا لاتية و اخرج ابو نعيم عن ابي البختري قال قالوا لعلي اخبرنا عن ابن مسعود قال علم القرآن و السنة ثم انتهى و كفى بذلك علما و اما ابن عباس فهو ترجمان القرآن الذي دعاله النبي صلى لله عليه و سلم اللهم فقهه فى الدين و علمه التاويل و قال له ايضا اللهم انه الحكمة و في رواية اللهم علمه الحكمة و اخرج ابو نعيم فى الحلية عن ابن عمر قال دعا رسول الله صلى الله عليه و سلم لعبد الله بن العباس فقال اللهم بارك فيه و انشر منه و اخرج من طريق عبد المومن ابن خالد عن عبد الله بن بريدة عن ابن عباس قال انتهيت الى النبي صلى الله عليه و سلم عنده جبريل فقال له جبريل انه كاين خير هذه الامة فاستوص به خيرا و اخرج من طريق عبد الله ابن خراش عن العوام ابن حوشب عن مجاهد عن ابن عباس قال قال لي رسول الله صلى الله عليه و سلم نعم ترجمان القرآن انت و

ذلك قول من قال في ولكم في القصاص حياة انه قصص واستدل بقرأة ابى الجوزاء ولكم فى القصص وهو بعيد بل هذه القرأة افادت معني غير معنى القرأة المشهورة وذلك من وجوه اعجاز القرآن كما بنية في اسرار التنزيل ومن ذلك ما ذكره ابن فورك في تفسيره في قوله ولكن ليطمين قلبي ان ابراهيم كان له صديق وصفه بانه قلبه اي ليسكن هذا الصديق الى هذه المشاهدة اذا راها عيانا قال الكرماني وهذا بعيد جدا ومن ذلك قول من قال في ربنا ولا تحملنا مالا طاقةلنا به انه الحب والعشق وقد حكاه الكواشي في تفسيره ومن ذلك قول من قال في ومن شرغاسق اذا وقب انه الذكر اذا قام ومن ذلك قول ابي معاذ النحوي في قوله الذي جعل لكم من الشجر الاخضر يعني ابراهيم نارا اي نورا وهو محمد صلى الله عليه وسلم فاذا انتم منه توقدون تقتبسون الدين

النوع الثمانون في طبقات المفسرين اشتهر بالتفسير من الصحابة عشرة الخلفاء الاربعة وابن مسعود وابن عباس وابي بن كعب وزيد بن ثابت وابو موسى الاشعري وعبد الله ابن الزبير اما الخلفاء فاكثرمن روى عنه منهم على بن ابي طالب والرواية عن الثلاثة ندرة جدا وكان السبب في ذلك تقدم وفاتهم كما ان ذلك هو السبب في قلة رواية ابي بكر للحديث ولا احفظ عن ابي بكر رضي الله عنه فى التفسير الا اثارا قليلة جدا لا تكاد تجاوز العشرة واما علي فروي عنه الكثير وقد روى معمر عن وهب بن عبد الله عن ابى الطفيل قال شهدت عليا يخطب وهو يقول سلوني فو الله لا تسئلوني عن شئ الا اخبرتكم وسلوني عن كتاب الله فو الله ما من آية الا وانا

الف عالم اربعمائة فى البر وستمائة فى البحر فيحتاج الى بيان ذلك كله فاذا قال الرحمن الرحيم يحتاج الى بيان الاسمين الجليلين و ما يتعلق بهما من الجلالة و ما معناهما ثم يحتاج الى بيان جميع الاسماء و الصفات ثم يحتاج الى بيان الحكمة في اختصاص هذا الموضع بهذين الاسمين دون غيرهما فاذا قال ملك يوم الدين يحتاج الى بيان ذلك اليوم و ما فيه من المواطن و الاهوال و كيفية مستقرة فاذا قال اياك نعبد و اياك نستعين يحتاج الى بيان المعبود و جلالته و العبادة و كيفتها و صفتها و ادابها على جميع انواعها و العابد في صفته و الاستعانة و ادابها و كيفيتها فاذا قال اهدنا الصراط المستقيم الى آخر السورة يحتاج الى بيان الهداية ما هي و الصراط المستقيم و اضداده و تبيين المغضوب عليهم و الضالين و صفاتهم و ما يتعلق بهذا النوع و تبيين المرضي عنهم و صفاتهم و طريقتهم فعلى هذه الوجوه يكون ما قاله علي رض من هذا القبيل النوع التاسع و السبعون في غرائب التفسير الف فيه محمود ابن حمزة الكرماني كتابا في مجلدين سماه العجائب و الغرايب ضمنه اقوالا ذكرت في معاني آيات منكرة لا يحل الاعتماد عليها ولا ذكرها الا للتحذير منها من ذلك قول من قال في حم عسق ان الحاحرب على و معوية و الميم ولاية المروانية و العين ولاية العباسية و السين ولاية السفيانية و القاف قدرة مهدى حكاه ابو مسلم ثم قال اردت بذلك ان يعلم ان فيمن يدعى العلم حمقى و من ذلك قول من قال في الم معني الف الف الله محمدا فبعثه نبيا و معني لام لامه الجاحدون و انكروه و معني ميم ميم الجاحدون المنكرون من الموم و هو البرسام و من

في نوع الاعراب و على المفسر ان يتجنب ادعاء التكرار ما امكنه قال بعضهم مما يدفع وهم التكرار في عطف المترادفين نحو لا تبقي ولا تذر صلوات من ربهم و رحمة و اشباه ذلك ان يعتقد ان مجموع المترادفين تحصل معني لا يوجد عند انفراد احدهما فان التركيب يحدث معني زايدا و اذا كانت كثرة الحروف تفيد زيادة المعني فكك كثرة الالفاظ انتهى و قال الزركشي فى البرهان ليكن محط نظر المفسر مراعاة نظم الكلام الذي سيق له و ان خالف اصل الوضع اللغوي لثبوت التجوز وقال في موضع آخر على المفسر مراعاة مجارى الاستعمالات فى الالفاظ الذي يظن بها الترادف و القطع بعدم الترادف ما امكن فان للتركيب معني غير معنى الافراد و لهذا منع كثير من الاصوليين وقوع احد المترادفين موقع الآخر فى التركيب و ان اتفقوا على جوازه فى الافراد انتهى و قال ابو حيان كثيرا ما يشحن المفسرون تفاسيرهم عند ذكر الاعراب بعالم النحو و دلايل مسايل اصول الفقه و دلايل مسائل الفقه و دلايل اصول الدين وكل ذلك مقرر في تواليف هذه العلوم و انما يوخذ ذلك مسلما في علم التفسير دون استدلال عليه و كذلك ايضا ذكر و اما لا يصح من اسباب النزول و احاديث فى الفضائل و حكايات لا تناسب و تواريخ اسرائيلية ولا ينبغي ذكر هذا في علم التفسير فائدة قال ابن ابي جمرة عن على رضي الله تعالى عنه انه قال لوشئت ان اوقر سبعين بعيرا من ام القرآن لفعلت و بيان ذلك انه اذا قال الحمد لله رب العالمين يحتاج الى تبيين معنى الحمد و ما يتعلق به الاسم الجليل الذي هو الله و ما يليق به ثم يحتاج الى بيان العالم و كيفية على جميع انواعه و اعداده وهي

الف عالم اربعمائة فى البر وستمائة فى البحر فيحتاج الى بيان ذلك كله فاذا قال الرحمن الرحيم يحتاج الى بيان الاسمين الجليلين و ما يتعلق بهما من الجلالة و ما معناهما ثم يحتاج الى بيان جميع الاسماء و الصفات ثم يحتاج الى بيان الحكمة في اختصاص هذا الموضع بهذين الاسمين دون غيرهما فاذا قال ملك يوم الدين يحتاج الى بيان ذلك اليوم و ما فيه من المواطن و الاهوال و كيفية مستقرة فاذا قال اياك نعبد و اياك نستعين يحتاج الى بيان المعبود و جلالته و العبادة و كيفتها و صفتها و ادابها على جميع انواعها و العابد في صفته و الاستعانة و ادابها و كيفيتها فاذا قال اهدنا الصراط المستقيم الى آخر السورة يحتاج الى بيان الهداية ما هي و الصراط المستقيم و اضداده و تبيين المغضوب عليهم و الضالين و صفاتهم و ما يتعلق بهذا النوع و تبيين المرضي عنهم و صفاتهم و طريقتهم فعلى هذه الوجوه يكون ما قاله علي رض من هذا القبيل النوع التاسع و السبعون في غرائب التفسير الف فيه محمود ابن حمزة الكرماني كتابا في مجلدين سماه العجائب و الغرايب ضمنه اقوالا ذكرت في معاني آيات منكرة لا يحل الاعتماد عليها ولا ذكرها الا للتحذير منها من ذلك قول من قال في حم عسق ان الحاحرب على و معوية و الميم ولاية المروانية و العين ولاية العباسية و السين ولاية السفيانية و القاف قدرة مهدى حكاه ابو مسلم ثم قال اردت بذلك ان يعلم ان فيمن يدعى العلم حمقى و من ذلك قول من قال في الم معني الف الف الله محمدا فبعثه نبيا و معني لام لامه الجاحدون و انكروه و معني ميم ميم الجاحدون المنكرون من الموم و هو البرسام و من

في نوع الاعراب و على المفسر ان يتجنب ادعاء التكرار ما امكنه قال بعضهم مما يدفع وهم التكرار في عطف المترادفين نحو لا تبقي ولا تذر صلوات من ربهم و رحمة و اشباه ذلك ان يعتقد ان مجموع المترادفين تحصل معني لا يوجد عند انفراد احدهما فان التركيب يحدث معني زايدا و اذا كانت كثرة الحروف تفيد زيادة المعني فكك كثرة الالفاظ انتهى و قال الزركشي فى البرهان ليكن محط نظر المفسر مراعاة نظم الكلام الذي سيق له و ان خالف اصل الوضع اللغوي لثبوت التجوز وقال في موضع آخر على المفسر مراعاة مجارى الاستعمالات فى الالفاظ الذي يظن بها الترادف و القطع بعدم الترادف ما امكن فان للتركيب معني غير معنى الافراد و لهذا منع كثير من الاصوليين وقوع احد المترادفين موقع الآخر فى التركيب و ان اتفقوا على جوازه فى الافراد انتهى و قال ابو حيان كثيرا ما يشحن المفسرون تفاسيرهم عند ذكر الاعراب بعالم النحو و دلايل مسايل اصول الفقه و دلايل مسائل الفقه و دلايل اصول الدين وكل ذلك مقرر في تواليف هذه العلوم وانما يوخذ ذلك مسلما في علم التفسير دون استدلال عليه و كذلك ايضا ذكر و اما لا يصح من اسباب النزول و احاديث فى الفضائل و حكايات لا تناسب و تواريخ اسرائيلية ولا ينبغي ذكر هذا في علم التفسير فائدة قال ابن ابي جمرة عن على رضي الله تعالى عنه انه قال لوشئت ان اوقر سبعين بعيرا من ام القرآن لفعلت و بيان ذلك انه اذا قال الحمد لله رب العالمين يحتاج الى تبيين معنى الحمد و ما يتعلق به الاسم الجليل الذي هو الله و ما يليق به ثم يحتاج الى بيان العالم و كيفية على جميع انواعه و اعداده وهي

التاليف و الغرض الذي سيق له الكلام و ان يواخي بين المفردات ويجب عليه البدأة بالعلوم اللفظية و اول ما تجب البدأة به منها تحقيق الالفاظ المفردة فيتكلم عليها من جهة اللغة ثم التصريف ثم الاشتقاق ثم يتكلم عليها بحسب التركيب فيبدأ بالاعراب ثم بما يتعلق بالمعاني ثم البيان ثم البديع ثم يبين المعنى المراد ثم الاستنباط ثم الاشارات و قال الزركشي في اوائل البرهان قد جرت عادة المفسرين ان يبدؤا بذكر سبب النزول و وقع البحث في انه ايما اولى البدأة به لتقدم السبب على المسبب او بالمناسبة لانها المصححة لنظم الكلام و هي سابقة على النزول قال و التحقيق التفصيل بين ان يكون وجه المناسبة متوقفا على سبب النزول كآية ان الله يأمركم ان تودوا الامانات فهذا ينبغي فيه تقديم ذكر السبب لانه ح من باب تقديم الوسايل على المقاصد و ان لم يتوقف على ذلك فالاولى تقديم وجه المناسبة و قال في موضع اخر جرت عادة المفسيرين ممن ذكر فضايل القرآن ان يذكرها في اول كل سورة لما فيها من الترغيب والحث على حفظها الا الزمخشري فانه يذكرها في اواخرها قال مجد الايمة عبد الرحيم بن عمر الكرماني سالت الزمخشري عن العلة في ذلك. فقال لانها صفات لها و الصفة تستدعي تقديم الموصوف و كثيرا ما يقع في كتب التفسير حكى الله كذا و ينبغي تجنبه قال الامام ابو نصر القشيري في المرشد قال معظم الئمتدا لا يقال كلام الله محكى ولا يقال حكى الله لان الحكاية الايتان بمثل الشئ و ليس لكلامه مثل و تساهل قوم فاطلقوا لفظ الحكاية بمعنى الاخبار و كثيرا ما يقع في كلامهم اطلاق الزايد على بعض الحروف وقد مر

و الآخرين فلينور القرآن قال و هذا الذي قالاه لا يحصل بمجرد تفسير الظاهر وقد قال بعض العلماء لكل آية ستون الف فهم فهذا يدل على ان في فهم معاني القرآن مجالا رحبا و متسعا بالغا و ان المنقول من ظاهر التفسير ليس ينتهى الادراك فيه بالنقل و السماع لابد منه في ظاهر التفسير ليتقى به مواضع الغلط ثم بعد ذلك يتسع الفهم و الاستنباط ولا يجوز التهاون في حفظ التفسير الظاهر بل لابد منه اولا اذلا يطمع فى الوصول الى الباطن قبل احكام الظاهر و من ادعى فهم اسرار القرآن و لم يحكم التفسير الظاهر فهو كمن ادعى البلوغ الى صدر البيت قبل ان يتجاوز الباب انتهى و قال الشيخ تاج الدين بن عطاء الله في كتابه لطائف المنن اعلم ان تفسير هذه الطائفة لكلام الله و كلام رسوله بالمعانى العربية ليس احالة للظاهر عن ظاهره ولكن ظاهر الآية مفهوم منه ما جبلت الآية و دلت عليه في عرف اللسان و ثم افهام باطنه تفهم عند الآية و الحديث لمن فتح الله قلبه و قد جاء فى الحديث لكل آية ظهر و بطن فلا يصدنك عن تلقي هذه المعاني منهم ان يقول لك ذو جدل و معارضة هذا احالة لكلام الله و كلام رسوله فليس ذلك باحالة و انما كان يكون احالة لو قالوا لا معني للآية الا هذا و هم لم يقولوا ذلك بل يقرون الظواهر على ظواهرها مرادابها موضوعاتها و يفهمون عن الله ما افهمهم

## فصل

قال العلماء يجب على المفسر ان يتحرى فى التفسير مطابقة المفسر و ان يتحرز في ذلك من نقص كما يحتاج اليه في ايضاح المعني او زيادة لا تليق بالغرض و من كون المفسر فيه زيغ عن المعني وعدول عن طريقه و عليه بمراعاة المعنى الحقيقي و المجازي و مراعاة

من آية الاعمل بها قوم و لها قوم سيعملون بها كما قاله ابن مسعود فيما اخرجه ابن ابي حاتم الثالث ان ظاهرها لفظها و باطنها تاويلها الرابع قال ابو عبيد و هو اشبهها بالصواب ان القصص التي قصها الله عن الامم الماضية و ما عاقبهم به ظاهرها الاخبار بهلاك الاولين انما هو حديث حدث به عن قوم و باطنها وعظ الآخرين و تحذير ان يفعلوا كفعلهم فيحل بهم مثل ماحل بهم و حكى ابن النقيب قولا خامسا ان ظهرها ما ظهر من معانيها من اهل العلم بالظاهر و بطنها ما تضمنه من الاسرار التي اطلع الله عليها ارباب الحقائق و معنى قوله و لكل حرف حداى منتهى في ما اراد الله من معناه وقيل لكل حكم مقدار من الثواب و العقاب و معني قوله لكل حد مطلع لكل غامض من المعاني و الاحكام مطلع يتوصل به الى معرفة ويوقف على المراد به و قيل كل ما يستحقه من الثواب و العقاب يطلع عليه فى الآخرة عند المجازاة و قال بعضهم الظاهر التلاوة و الباطن الفهم و الحد احكام الحلال و الحرام و المطلع الاشراف على الوعد و الوعيد قلت يريد هذا ما اخرجه ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال ان القرآن ذوشجون و فنون و ظهور و بطون لا تنقضي عجائبه ولا تبلغ غاية فمن اوغل فيه برفق نجا و من اوغل فيه بعنف هوى اخبار و امثال و حلال و حرام و ناسخ و منسوخ و محكم و متشابه و ظهر و بطن فظهره التلاوة و بطنه التاويل فجا لصوابه العلماء و جانبوا به السفهاء و قال ابن سبع في شفأ الصدور ورد عن ابى الدرداء انه قال لا يفقه الرجل كل الفقه حتى يجعل للقرآن و جوها و قال ابن مسعود من اراد علم الاولين

لم يتساهلوا بمثل ذلك لما فيه من الابهام و الالباس و قال النسفي في عقائده النصوص على ظواهرها و العدول عنها الى معان يدعيها اهل الباطن الحاد قال التفتازاني في شرحه سميت الملاحدة باطنية لادعائهم ان النصوص ليست على ظواهرها بل لها معان باطنة لا يعرفها الا المعلم و قصدهم بذلك نفي الشريعة بالكلية قال و اما ما ذهب اليه بعض المحققين من ان النصوص على ظواهرها و مع ذلك فيها اشارات خفية الى دقائق تنكشف على ارباب السلوك يمكن التطبيق بينها و بين الظواهر المرادة فهو من كمال الايمان و محض العرفان و سئل شيخ الاسلام سراج الدين البلقيني عن رجل قال في قوله تعالى من ذا الذي يشفع عنده ان معناه من ذل اى من الذل ذى اشارة الى النفس يشف من الشفا جواب من ع امر من الوعي فافتي بانه ملحد وقال تعالى ان الذين يلحدون في اياتنا لا يخفون علينا قال ابن عباس رضي الله عنهما هو ان يوضع الكلام على غير موضعه اخرجه ابن ابي حاتم فان قلت فقد قال الغريابي حدثنا سفيان عن يونس بن عبيد عن الحسن قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم لكل آية ظهر و بطن و لكل حرف حد و لكل حد مطلع و اخرج الديلمي من حديث عبد الرحمن ابن عوف مرفوعا القرآن تحت العرش له ظهر وبطن يحتاج العباد و اخرج الطبراني و ابو يعلى و البزار و غيرهم عن ابن مسعود موقوفا ان هذا القرآن ليس فيه حرف الا له حد و لكل حد مطلع قلت اما الظهر و البطن ففي معناه اوجه احدها انك اذا بحثت عن باطنها و قسته على ظاهرها وقفت على معناها و الثاني ان ما

اخذت ثم اخرج عن قتادة قال من قرا سكرت مشددة فانما يعني سدت و من طرق انها بمعني اخذت ثم اخرج عن قتادة قال من قرا سكرت مشددة فانما يعني سدت و من قرا سكرت مخففة فانه يعني سحرت و هذا الجمع من قتادة نفيس بديع و مثله قوله تعالى سرابيلهم من قطران اخرج ابن جرير عن الحسن انه الذي بمثابة الانك و اخرج من طرق عنه و عن غيره انه النحاس المذاب و ليسا بقولين و انما الثاني تفسير لقرأة من قطران بتنوين قطر و هو النحاس و انّ شديد الحر كما اخرجه ابن ابي حاتم هكذا عن سعيد ابن جبير و امثلة هذا النوع كثيرة و الكافل ببيانها كتابنا اسرار التنزيل وقد خرجت على هذا قديما الاختلاف الوارد عن ابن عباس رضي الله عنه و غيره في تفسير آية اولا مستم هل هو الجماع او الجس باليد فالاول تفسير لقرأة لامستم و الثاني لقرأة لمستم و لا اختلاف فائدة قال الشافعي رضي الله عنه في مختصر البويطي لا يحل تفسير المتشابه الا بسنة عن رسول الله صلى الله عليه و سلم او خبر عن احد من الصحابة او اجماع العلماء هذا نصه فصل و اما كلام الصوفية في القرآن فليس بتفسير قال ابن الصلاح في فتاويه وجدت عن الامام ابى الحسن الواحدى المفسر انه قال صنف ابو عبد الرحمن السلمي حقائق التفسير فان كان قد اعتقد ان ذلك تفسير فقد كفر قال ابن الصلاح و انا اقول الظن بمن يوثق به منهم اذا قال شيئًا من ذلك انه لم يذكره تفسيرا ولا ذهب به مذهب الشرح للكلمة فانه لوكان كذلك كانوا قد سلكوا مسلك الباطنية و انما ذلك مبهم لنظير ماورد به من القرآن فان النظير يذكر بالنظير و مع ذلك فياليتهم

و سلم او الصحابة او روس التابعين فالاول يبحث فيه عن صحة السند و الثاني ينظر في تفسير الصحابي فان فسره من حيث اللغة فهم اهل اللسان فلا شك في اعتماده اوبما شاهده من الاسباب و القرائن فلا شك فيه و حينئذ ان تعارضت اقوال جماعة من الصحابة فان امكن الجمع فذاك و ان تعذر قدم ابن عباس لان النبي صلى الله عليه وسلم بشره بذلك حيث قال اللهم علمه التاويل وقد رجح الشافعي رضي الله عنه قول زيد في الفرائض لحديث افرضكم زيد و اما ما ورد عن التابعين فحيث جاز الاعتماد فيما سبق فكذلك و الا وجب الاجتهاد و اما ما لم يرد فيه نقل فهو قليل و طريق التوصل الى فهمه النظر الى مفردات الالفاظ من لغة العرب و مدلولاتها و استعمالها بحسب السياق و هذا يعتني به الراغب كثيرا في كتاب المفردات فيذكر قيدا زائدا على اهل اللغة في تفسير مدلول اللفظ لانه اقتضاه السياق انتهى قلت و قد جمعت كتابا مسندا فيه تفاسير النبي صلى الله عليه و سلم و الصحابة فيه بضعة عشر الف حديث مابين مرفوع و موقوف و قدتم و لله الحمد في اربع مجلدات وسميته ترجمان القرآن و رايت و انا في اثنا تصنيفه النبي صلى الله عليه وسلم في قصة طويلة تحتوي على بشارة حسنة تنبيه من المهم معرفة التفاسير الواردة عن الصحابة بحسب قرأة مخصوصة و ذلك انه قد يرد عنهم تفسيران في الآية الواحدة مختلفان فيظن اختلافا وليس باختلاف و انما كل تفسير على قرأة و قد تعرض السلف لذلك فاخرج ابن جرير في قوله تعالى لقالوا انما سكرت ابصارنا من طرق عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما و غيره ان سكرت بمعني سدت و من طرق انها بمعني

من اسرار الكتاب و اختصه به و هذا لا يجوز الكلام فيه الا له صلى الله عليه
و سلم او لمن اذن له قال و اوايل السور من هذا القسم و قيل من
القسم الاول الثالث علوم علمها الله نبيّه مما اودع كتابه من المعاني
الجلية و الخفية و امره بتعليمها و هذا ينقسم الى قسمين منه ما لا يجوز
الكلام فيه الا بطريق السمع و هو اسباب النزول و الناسخ و المنسوخ
و القرأت و اللغات و قصص الامم الماضية و اخبار ما هو كائن من
الحوادث و الحشر و المعاد و منه ما يوخذ بطريق النظر و الاستدلال
و الاستنباط و الاستخراج من الالفاظ و هو قسمان قسم اختلفوا في جوازه
و هو تاويل الآيات المتشابهات فى الصفات و قسم اتفقوا عليه و هو
استنباط الاحكام الاصلية و الفرعية و الاعرابية لان مبناها على الاقيسة
و كذلك فنون البلاغة و ضروب المواعظ و الحكم و الاشارات لا تمتنع
استنباطها منه و استخراجها لمن له اهلية ذلك انتهى ملخصا وقال
ابوحيان ذهب بعض من عاصرناه الى ان علم التفسير مضطر الى
النقل في فهم معاني تركيبه بالاسناد الى مجاهد وطاووس وعكرمه
و اضرابهم و ان فهم الآيات يتوقف على ذلك قال و ليس كذلك وقال
الزركشي بعد حكاية ذلك الحق ان علم التفسير منه ما يتوقف
على النقل كسبب النزول و النسخ و تعيين المبهم و تبيين المجمل
و منه مالا يتوقف و يكفى في تحصيله الثقة على الوجه المعتبر قال
وكان السبب في اصطلاح كثير على التفرقة بين التفسير و التاويل
التمييز بين المنقول و المستنبط ليحيل على الاعتماد فى المنقول
و على النظر فى المستنبط قال و اعلم ان القرآن قسمان قسم ورد تفسيره
بالنقل و قسم لم يرد و الاول اما ان يرد عن النبي صلى الله عليه

عند المحققين و يكون ذلك ابلغ فى الاعجاز و الفصاحة الا ان يدل دليل على ارادة احدهما اذا عرف ذلك فينزل حديث من تكلم فى القرآن برايه على قسمين من هذه الاربعة احدهما تفسير اللفظ لاحتياج المفسر له الى التبحر في معرفة لسان العرب و الثاني حمل اللفظ المحتمل على احد معنييه لاحتياج ذلك الى معرفة انواع من العلوم التبحر فى العربية و اللغة و من الاصول ما يدرك به حدود الاشياء و صيغ الامر و النهي و الخبر و المجمل و المبين و العموم و الخصوص و المطلق و المقيد و المحكم و المتشابه و الظاهر و المأول و الحقيقة و المجاز و الصريح والكناية و من الفروع ما يدرك به الاستنباط هذا اقل ما يحتاج اليه و هو مع ذلك فهو على خطر فعليه ان يقول يحتمل كذا ولا يجزم الا في حكم اضطر الى الفتوى به فادى اجتهاده فيجزم مع تجويز خلافه انتهى و قال ابن النقيب جملة ما تحصل في معنى حديث التفسير بالرأى خمسة اقوال احدها التفسير من غير حصول العلوم التي يجوز معها التفسير الثاني تفسير المتشابه الذي لا يعلمه الا الله الثالث التفسير المقرر للمذهب الفاسد بان يجعل المذهب اصلا و التفسير تابعا له فيرد اليه باى طريق امكن و ان كان ضعيفا الرابع التفسير ان مراد الله كذا على القطع من غير دليل الخامس التفسير بالاستحسان و الهوى ثم قال و اعلم ان علوم القرآن ثلاثة اقسام الاول علم لم يطلع الله عليه احدا من خلقه و هو ما استاثر به من علوم اسرار كتابه من معرفة كنه ذاته و معرفة حقائق اسمائه و صفاته و تفاصيل علوم غيوبه التي لا يعلمها الا هو و هذا لا يجوز لاحد الكلام فيه بوجه من الوجوه اجماعا الثاني ما اطلع الله عليه نبيّه

فى اللغة للنفي و الا للاثبات و ان مقتضي هذه الكلمة الحصر و يعلم كل احد بالضرورة ان مقتضي اقيموا الصلوة و اتوا الزكوة و نحوه طلب ايجاد المامور به و ان لم يعلم ان صيغة افعل للوجوب فما كان من هذا القسم لا يعذر احد يدعى الجهل بمعانى الفاظه لانها معلومة لكل احد بالضرورة واما ما لا يعلمه الا الله فهو ما يجري مجرى الغيوب نحو الآى المتضمنة لقيام الساعة و تفسير الروح و الحروف المقطعة و كل متشابه فى القرآن عند اهل الحق فلا مساغ للاجتهاد في تفسيره ولا طريق الى ذلك الا بالتوقيف بنص من القرآن او الحديث او اجماع الامة على تاويله واما ما يعلمه العلماء و يرجع الى اجتهادهم فهو الذي يغلب عليه اطلاق التأويل وذلك استنباط الاحكام وبيان المجمل و تخصيص العلوم وكل لفظ احتمل معنيين فصاعدا فهو الذي لايجوز لغير العلماء الاجتهاد فيه و عليهم اعتماد الشواهد و الدلائل دون مجرد الراى فان كان احد المعنيين اظهر وجب الحمل عليه الا ان يقوم دليل على ان المراد هو الخفى و ان استويا و الا ستعمال فيهما حقيقه لكن في احدهما حقيقة لغوية او عرفية و فى الآخر شرعية فالحمل على الشرعية اولى الا ان يدل دليل على ارادة اللغوية كما في وصل عليهم ان صلواتك سكن لهم ولو كان في احدهما عرفية و الآخر لغوية فالحمل على العرفية اولى و ان اتفقا في ذلك ايضا فان تنافي اجتماعهما و لم يكن ارادتهما باللفظ الواحد كالقرء للحيض و الطهر اجتهد فى المراد منهما بالامارات الدالة عليه فما ظنه فهو مراد الله في حقه و ان يظهر له شئ فهل يتخير فى الحمل على ايهما شاء اوياخذ بالاغلظ حكما او بالاخف اقوال و ان لم يتنافيا وجب الحمل عليهما

بن عيينة يقول انزع عنهم فهم القرآن اخرجه ابن ابي حاتم و قد اخرج ابن جرير و غيره من طرق عن ابن عباس رضي الله عنهما قال التفسير اربعة اوجه وجه تعرفه العرب من كلامها و تفسير لا يعذر احد بجهالته و تفسير يعلمه العلماء و تفسير لا يعلمه الا الله ثم رواه مرفوعا بسند ضعيف بلفظ انزل القرآن على اربعة احرف حلال و حرام لا يعذر احد بجهالته و تفسير تفسره العرب و تفسير تفسره العلماء و متشابه لا يعلمه الا الله و من ادعى علمه سوى الله فهو كاذب قال الزركشي فى البرهان في قول ابن عباس رضي الله تعالى عنهما هذا التقسيم صحيح فاما الذي تعرفه العرب فهو الذي يرجع فيه الى لسانهم و ذلك اللغة و الاعراب فاما اللغة فعلى المفسر معرفة معانيها ومسمياة اسمائها ولا يلزم ذلك القاري ثم ان كان ما يتضمنه الفاظها يوجب العمل دون العلم كفى فيه خبر الواحد و الاثنين و الاستشهاد بالبيت و التبيين و ان كان يوجب العلم لم يكف ذلك بل لابد ان يستفيض ذلك اللفظ و تكثر شواهده من الشعر واما الاعراب فما كان اختلافها محيلا للمعني وجب على المفسر و القاري تعلمه ليوصل المفسر الى معرفة الحكم و يسلم القاري من اللحن و ان لم يكن محيلا للمعني وجب تعلمه على القاري ليسلم من اللحن ولا يجب على المفسر لوصوله الى المقصود بدونه و اما ما لا يعذر احد بجهله فهو ما يتبادر الافهام الى معرفة معناه من النصوص المتضمنة شرايع الاحكام و دلائل التوحيد وكل لفظ افاد معني واحد اجليا يعلم انه مراد الله فهذ القسم لا يلتبس تاويله اذ كل احد يدرك معنى التوحيد من قوله فاعلم انه لا اله الا الله و انه لا شريك له فى الالهية و ان لم يعلم ان لا موضوعة

على ما لا يجوز على الله فالاصولى يوول ذلك و يستدل على ما يستحيل و ما يجب و ما يجوز العاشر اصول الفقه اذبه يعرف وجه الاستدلال على الاحكام و الاستنباط الحادي عشر اسباب النزول و القصص اذ بسبب النزول يعرف معنى الآية المنزلة فيه بحسب ما انزلت فيه الثاني عشر الناسخ و المنسوخ ليعلم المحكم من غيره الثالث عشر الفقه الرابع عشر الاحاديث المبنية لتفسير المجمل و المبهم الخامس عشر علم الموهبة و هو علم يورثه الله لمن عمل بما علم و اليه الاشارة بحديث من عمل بما علم ورثه الله علم ما لم يعلم قال ابن ابى الدنيا و علوم القرآن و ما يستنبط منه بحر لاساحل له قال فهذه العلوم التي هي كالآلة للمفسر لا يكون مفسرا الا بتحصيلها فمن فسر بدونها كان مفسرا بالراى المنهي عنه و اذا فسر مع حصولها لم يكن مفسرا بالراى المنهي عنه قال و الصحابة و التابعون كان عندهم علوم العربية بالطبع لا بالاكتساب و استفادوا العلوم الاخرى من النبي صلى الله عليه وسلم قلت و لعلك تستشكل علم الموهبه و تقول هذا شئ ليس في قدرة الانسان تحصيله و ليس كما ظننت من الاشكال و الطريق في تحصيله ارتكاب الاسباب الموجبة له من العمل و الزهد قال فى البرهان اعلم انه لا يحصل للناظر فهم معانى الوحي ولا يظهر له اسراره و في قلبه بدعة او كبرا و هوي او حب الدنيا او وهو مصر على ذنب او غير متحقق بالايمان او ضعيف التحقيق او يعتمد على قول مفسر ليس عنده علم او راجع الى معقوله و هذه كلها حجب و موانع بعضها آكد من بعض قلت و في هذا المعني قوله تعالى ساصرف عن اياتى الذين يتكبرون فى الارض بغير الحق قال سفيان

ان شان الاعجاز عجيب يدرك ولا يمكن وصفه كاستقامة الوزن تدرك ولا يمكن وصفها و كالملاحة ولا طريق الى تحصيله لغير ذوى الفطرة السليمة الا التمرن في علمى المعاني والبيان و قال ابن ابى الحديد اعلم ان معرفة الفصيح و الافصح و الرشيق و الارشق من الكلام امر لا يدرك الا بالذوق ولا يمكن اقامة الدلالة عليه و هو بمنزلة جاريتين حدثهما بيضاً مشربة بحمرة دقيقه الشفتين نقية الثغر كحلاً العين اسيلة الخد دقيقة الانف معتدلة القامة والاخرى دونها في هذه الصفات والمحاسن لكنها اجلى فى العيون و القلوب منها ولا يدرى سبب ذلك و لكنه يعرف بالذوق والمشاهدة ولا يمكن تعليله و هكذا الكلام نعم يبقى الفرق بين الموضعين ان حسن الوجوه و ملاحتها و تفضيل بعضها على بعض يدركه كل من له عين صحيحة و اما الكلام فلايدرك الا بالذوق و ليس كل من اشتغل بالنحو اواللغة اوالفقه يكون من اهل الذوق و ممن يصلح لانتقاد الكلام و انما اهل الذوق هم الذين اشتغلوا بعلم البيان وراضوا انفسهم بالرسائل والخطب و الكتابة والشعر و صارت لهم بذلك دربة و ملكة تامة فالى اولئك ينبغي ان يرجع في معرفة الكلام و فضل بعضه على بعض و قال الزمخشري من حق مفسر كتاب الله الباهر و كلامه المعجز ان يتعاهد بقاء النظم على حسنه و البلاغة على كمالها و ما وقع به من التحدي سليما من القادح و قال غيرة معرفة هذه الصناعة باوضاعها هي عمدة التفسير المطلع على عجائب كلام الله وهي قاعدة الفصاحة و واسطة عقد البلاغة الثامن علم القرأت لانه به يعرف كيفية النطق بالقرآن و بالقرأت يرجح بعض الوجوه المحتملة على بعض التاسع اصول الدين لما فى القرآن من الآيات الدالة بظاهرها

يحتاج المفسر اليها و هي خمسة عشر علما احدها اللغة لان بها يعرف شرح مفردات الالفاظ ومدلولاتها بحسب الوضع قال مجاهد لا يحل لاحد يومن بالله و اليوم و الآخر ان يتكلم في كتاب الله اذا لم يكن عالما بلغات العرب وتقدم قول مالك في ذلك ولا يكفي في حقه معرفة اليسير منها فقد يكون اللفظ مشتركا و هو يعلم احد المعنيين و المراد الآخر الثاني النحو لان المعني يتغير و يختلف باختلاف الاعراب فلا بد من اعتباره اخرج ابو عبيد عن الحسن انه سئل عن الرجل يتعلم العربية يلتمس بها حسن المنطق و يقيم بها قراته فقال حسن فتعلمها فان الرجل يقرأ الآية فيعيي بوجهها فيهلك فيها الثالث التصريف لان به يعرف الابنية و الصيغ قال ابن فارس و من فاته علمه فاته المعظم لان وجد مثلا كلمة مبهمة فاذا صرفناها اتضحت بمصادرها و قال الزمخشري من بدع التفاسير قول من قال ان الامام في قوله تعالى يوم ندعوكل اناس بامامهم جمع ام و ان الناس يدعون يوم القيامة بامهاتهم دون آبائهم قال و هذا غلط اوجبه جهله بالتصريف فان اما لا يجمع على امام الرابع الاشتقاق لان الاسم اذا كان اشتقاقه من مادتين مختلفتين اختلف المعني باختلافهما كالمسيح هل هو من السياحة او من المسح الخامس والسادس والسابع المعاني و البيان و البديع لانه يعرف بالاول خواص تراكيب الكلام من جهة افادتها المعني و بالثاني خواصها من حيث اختلافها بحسب وضوح الدلالة و خفائها و بالثالث وجوه تحسين الكلام و هذه العلوم الثلاثة هي علوم البلاغة وهي من اعظم اركان المفسر لانه لابد له من مراعاة ما يقتضيه الاعجاز و انما يدرك بهذه العلوم قال السكاكي اعلم

فلا باس به و لو قال المراد كذا من غير ان يسمع فيه شيئًا فلا يحل و هوالذي نهي عنه و قال ابن الانباري فى الحديث الاول حمله بعض اهل العلم على ان الراى معني به الهوي فمن قال فى القرآن قولا يوافق هواه فلم ياخذه عن ايمة السلف و اصاب فقد اخطأ لحكمه على القرآن بما لا يعرف اصله ولا يقف على مذاهب اهل الاثر و النقل فيه و قال فى الحديث الثاني له معنان احدهما من قال في مشكل القرآن بما لا يعرف من مذاهب الاوايل من الصحابة و التابعين فهو متعرض بسخط الله و الآخر و هو الاصح من قال فى القرآن قولا يعلم ان الحق غيره فليتبوا مقعده من النار و قال البغوي و الكواشي و غيرهما التاويل صرف الآية الى معني موافق لما قبلها و بعدها تحتمله الآية غير مخالف للكتاب والسنة من طريق الاستنباط غير مخطور على العلماء بالتفسير كقوله تعالى انفروا خفافا و ثقالا قيل شبابا و شيوخا و قيل اغنياء و فقرأ و قيل عزابا و متاهلين و قيل نشاطا و غير نشاط و قيل اصحا و مرضى وكل ذلك سائغ و الآية تحتمله و اما التاويل المخالف للآية و الشرع فمخطور لانه تاويل الجاهلين مثل تاويل الروافض قوله تعالى مرج البحرين يلتقيان انهما على و فاطمه يخرج منهما اللولؤ و المرجان يعنى الحسن و الحسين و قال بعضهم اختلف الناس في تفسير القرآن هل يجوز لكل احد الخوض فيه فقال قوم لا يجوز لاحد ان يتعاطي تفسير شيء من القرآن و ان كان عالما اديبا متسعا في معرفة الادلة و الفقه و النحو و الاخبار و الاثار و ليس له الا ان ينتهي الى ما روى عن النبي صلى الله عليه و سلم في ذلك و منهم من قال يجوز تفسيره لمن كان جامعا للعلوم التي

النظر فى القرآن و استنباط الاحكام منه كما قال تعالى لعلمه الذين يستنبطونه منهم و لو صح ما ذهب اليه لم يعلم شئ بالاستنباط و لما فهم الاكثر من كتاب الله شيئا و ان صح الحديث فتاويله ان من تكلم فى القرآن ان بمجرد رايه ولم يعرج على سوى لفظه و اصاب الحق فقد اخطا الطريق و اصابة اتفاق اذ الغرض انه مجرد راى لاشاهد له و فى الحديث القرآن ذلول ذو وجوه فاحملوه على احسن وجوهه اخرجه ابو نعيم و غيره من حديث ابن عباس رضي الله تعالى عنهما فقوله ذلول يحتمل معنيين احدهما انه مطيع لحامليه ينطق به السنتهم و الثاني انه موضح لمعانيه حتى لا يقصر عنه افهام المجتهدين و قوله ذو وجوه يحتمل معنيين احدهما ان من الفاظه ما يحتمل وجوها من التاويل و الثاني انه قد جمع وجوها من الاوامر و النواهي و الترغيب و الترهيب و التحليل والتحريم و قوله فاحملوه على احسن وجوهه يحتمل معنيين احدهما الحمل على احسن معانيه و الثاني احسن ما فيه من العزايم دون الرخص و العفو دون الانتقام و فيه دلالة ظاهرة على جواز الاستنباط و الاجتهاد في كتاب الله تعالى انتهى و قال ابو الليث النهي انما انصرف الى المتشابه منه لا الى جميعه كما قال تعالى فاما الذين في قلوبهم زيغ فيتبعون ما تشابه منه لان القرآن انما نزل حجة على الخلق فلولم يجز التفسير لم تكن الحجة بالغة فاذا كان الامر كذلك جاز لمن عرف لغات العرب و اسباب النزول ان يفسره و اما من لم يعرف وجوه اللغة فلا يجوز ان يفسره الا بمقدار ما سمع فيكون ذلك على وجه الحكاية لا على وجه التفسير ولوانه يعلم التفسير فاراد ان يستخرج من الآية حكما او دليلا لحكم

الرجل فى القرآن و من هنا اختلف الصحابة في معنى الآية فاخذ كل برايه على منتهى نظره ولا يجوز تفسير القرآن بمجرد الراى والاجتهاد من غير اصل قال تعالى ولا تقف ما ليس لک به علم وقال و ان تقولوا على الله مالا تعلمون و قال لتبين للناس ما نزل اليهم اضاف البيان اليه و قال صلى الله عليه و سلم من تكلم فى القرآن برأيه فاصاب فقد اخطا اخرجه ابو داؤد و الترمذي و النسائي و قال من قال فى القرآن بغير علم فليتبوأ مقعده من النار اخرجه ابو داؤد و قال البيهقي فى الحديث الاول ان صح اراد و الله اعلم الراى الذي يغلب من غير دليل قام عليه و اما الذي يشده برهان فالقول به جائز و قال فى المدخل في هذا الحديث نظر و ان صح فانما اراد به و الله اعلم فقد اخطا الطريق فسبيله ان يرجع في تفسير الفاظه الى اهل اللغة و في معرفة ناسخه و منسوخه و سبب نزوله و ما يحتاج فيه الى بيانه الى اخبار الصحابة الذين شاهدوا تنزيله و ادوا الينا من السنن ما يكون بيانا لكتاب الله قال تعالى و انزلنا اليک الذكر لتبين للناس ما نزل اليهم و لعلهم يتفكرون فما ورد بيانه عن صاحب الشرع ففيه كفاية عن فكره من بعده و مالم يرد عليه و بيانه ففيه حث فكرة اهل العلم بعده ليستدلوا بما ورد بيانه على مالم يرد قال وقد يكون المراد به من قال فيه برايه من غير معرفة منه با صول العلم و فروعه فيكون موافقة للصواب ان وافقه من حيث لا يعرفه غير محمودة و قال الماوردي قد حمل بعض المتورعة هذا الحديث على ظاهره و امتنع من ان يستنبط معانى القرآن باجتهاده ولو صحبها الشواهد و لم يعارض شواهدها نص صريح و هذا عدول عما تعبدنا بمعرفة من

هنا و عمم فى المستدرك فاعتمد الاول و الله اعلم ثم قال الزركشي و فى الرجوع الى قول التابعي روايتان عن احمد و اختار ابن عقيل المنع و حكوه عن شعبة لكن عمل المفسرين على خلافه فقد حكوا في كتبهم اقوالهم لان غالبها تلقوها من الصحابة و ربما يحكى عنهم عبارات مختلفة الالفاظ فيظن من لا فهم عنده ان ذلك اختلاف محقق فيحكيه اقوالا و ليس كذلك بل يكون كل واحد منهم ذكر معني الآية لكونه اظهر عنده او اليق بحال السائل و قد يكون بعضهم يخبر عن الشى بلازمه و نظيره و الآخر لمقصوده و ثمرته و الكل يؤول الى معني واحد غالبا فان لم يمكن الجمع فالمتاخر من القولين عن الشخص الواحد مقدم ان استويا فى الصحة عنه و الا فالصحيح المقدم الثالث الاخذ بمطلق اللغة فان القرآن نزل بلسان عربي و هذا قد ذكره جماعة ونص عليه احمد في مواضع لكن نقل الفضل بن زياد عنه انه سئل عن القرآن يمثل له الرجل ببيت من الشعر فقال ما يعجبني ظاهره المنع و لهذا قال بعضهم في جواز تفسير القرآن بمقتضى اللغة روايتان عن احمد و قيل الكراهة تحمل على من صرف الآية عن ظاهرها الى معان خارجة محتملة يدل عليها القليل من كلام العرب ولا توجد غالبا الا فى الشعر و نحوه و يكون المتبادر خلافها و روى البيهقي فى الشعب عن مالك قال لا اوتى برجل غير عالم بلغة العرب يفسر كتاب الله الا جعلته نكالا الرابع التفسير بالمقتضي من معنى الكلام و المقتضب من قوة الشرع و هذا هو الذي دعا به النبي صلى الله عليه وسلم لابن عباس رضي الله تعالى عنهما حيث قال اللهم فَقِّهْهُ فى الدين و علّمه التاويل و الذي عناه علىّ بقوله الا فهما يوتاه

بعث الله به رسوله و اما الذين اخطاؤا فى الدليل لا فى المدلول فمثل كثير من الصوفية و الوعاظ و الفقهاء يفسرون القرآن بمعان صحيحة في نفسها لكن القرآن لا يدل عليها مثل كثير مما ذكره السلمي فى الحقايق فان كان في ما ذكروه معاني باطلة دخل فى القسم الاول انتهي كلام ابن يتميه ملخصا و هو نفيس جدا و قال الزركشي فى البرهان للناظر فى القرآن لطلب التفسير مآخذ كثيرة امهاتها اربعة الاول النقل عن النبي صلى الله عليه و سلم و هذا هوالطراز المعلم لكن يجب الحذر من الضعيف منه و الموضوع فانه كثير و لهذا قال احمد ثلاثة كتب لا اصل لها المغازي و الملاحم و التفسير قال المحققون من اصحابه مراده ان الغالب انه ليس لها اسانيد صحاح متصلة و الا فقد صح من ذلك كثير كتفسير الظلم بالشرك في آية الانعام و الحساب اليسير بالعرض و القوة بالرمي في قوله و اعدوا لهم ما استطعتم من قوة قلت الذي صح من ذلك قليل جدا بل اصل المرفوع منه في غاية القلة و ساسردها كلها آخر الكتاب ان شاء الله تعالى الثانى الاخذ بقول الصحابي فان تفسيره عندهم بمنزلة المرفوع الى النبي صلى الله عليه و سلم كما قاله الحاكم في مستدركه و قال ابو الخطاب من الحنابلة يحتمل ان لا يرجع اليه اذا قلنا ان قوله ليس بحجة و الصواب الاول لانه من باب الرواية لا الراى قلت ما قاله الحاكم نازعه فيه ابن الصلاح و غيره من المتاخرين بان ذلك مخصوص بما فيه سبب النزول او نحوه مما لا مدخل للراى فيه ثم رايت الحاكم نفسه صرح به في علوم الحديث فقال و من الموقوفات تفسير الصحابة و اما من يقول ان تفسير الصحابة مسند فانما يقول فيما فيه سبب النزول فقد خصص

نفيه و اثباته من المعني باطلا فيكون خطأ وهم فى الدليل و المدلول وقد يكون حقا فيكون خطاؤهم فيه فى الدليل لا فى المدلول فالذين اخطاؤا فيهما مثل طوائف من اهل البدع اعتقدوا مذاهب باطلة وعمدوا الى القرآن فتاولوه على رايهم و ليس لهم سلف من الصحابة و التابعين لا في رايهم ولا في تفسيرهم و قد صنفوا تفاسير على اصول مذاهبهم مثل تفسير عبد الرحمن ابن كيسان الاصم و الجبائي وعبد الجبار و الرماني و الزمخشري و امثالهم و من هولاء من يكون حسن العبارة يدس البدع في كلامه و اكثر الناس لا يعلمون كصاحب الكشاف و نحوه حتى انه يروج على خلق كثير من اهل السنة كثير من تفاسيرهم الباطلة و تفسير ابن عطية و امثاله اتبع للسنة و اسلم من البدعة و لو ذكر كلام السلف الماثور عنهم على وجهه لكان احسن فانه كثيرا ما ينقل من تفسير ابن جرير الطبري و هو من اجل التفاسير و اعظمها قدرا ثم انه يدع ما ينقله ابن جرير عن السلف و يذكر ما يزعم انه قول المحققين و انما يعني به طايفة من اهل الكلام الذين قرروا اصولهم بطريق من جنس ما قررت به المعتزلة اصولهم و ان كانوا اقرب الى السنة من المعتزلة لكن ينبغي ان يعطي كل ذي حق حقه فان الصحابة و التابعين و الائمة اذا كان لهم فى الآية تفسير وجاء قوم فسروا الآية بقول آخر لاجل مذهب اعتقدوه و ذلك المذهب ليس من مذهب الصحابة و التابعين صار مشاركا للمعتزلة و غيرهم من اهل البدع في مثل هذا و فى الجملة من عدل عن مذاهب الصحابة و التابعين و تفسير الى ما يخالف ذلك كان مخطيا في ذلك بل مبتدعا لانهم كانوا اعلم بتفسيره و معانيه كما انهم اعلم بالحق الذي

ان يكون سمعه من النبي صلى الله عليه وسلم او من بعض من سمعه منه اقوي ولان نقل الصحابة عن اهل الكتاب اقل من نقل التابعين و مع جزم الصحابي بمايقوله كيف يقال انه اخذه عن اهل الكتاب وقد نهوا عن تصديقهم و اما القسم الذي يمكن معرفة الصحيح منه فهذا موجود كثيرا ولله الحمد و ان قال الامام احمد ثلاثة ليس لها اصل التفسير و الملاحم و المغازي و ذلك لان الغالب عليها المراسيل و اما ما يعلم بالاستدلال لا بالنقل فهذا اكثر مما فيه الخطأمن جهتين حدثنا بعد تفسير الصحابة و التابعين و تا بعيهم باحسان فان التفاسير التي يذكر فيها كلام هولاء صرفا لا يكاد يوجد فيها شيء من هاتين الجهتين مثل تفسير عبدالرزاق و الفريابي و وكيع و اسحق و امثالهم اخذها قوم اعتقد و امعاني ثم اراد و احمل الفاظ القرآن عليها و الثاني قوم فسروا القرآن بمجرد ما يسوغ ان يريده من كان من الناطقين بلغة العرب من غير نظر الى المتكلم بالقرآن و المنزل عليه و المخاطب به فالاولون راعوا المعنى الذي راوه من غير نظر الى ما يستحقه الفاظ القرآن من الدلالة و البيان و الآخرون راعوا مجرد اللفظ و ما يجوز ان يريد به العربي من غير نظر الى ما يصلح للمتكلم و سياق الكلام ثم هولاء كثيرا ما يغلطون في احتمال اللفظ لذلك المعني فى اللغة كما يغلط في ذلك الذين قبلهم كما ان الاولين كثيرا ما يغلطون في صحة المعنى الذي فسروا به القرآن كما يغلط في ذلك الآخرون و ان كان نظر الاولين الى المعني اسبق و نظر الآخرين الى اللفظ اسبق و الاولون صنفان تارة يسلبون لفظ القرآن ما دل عليه و اريد به و تارة يحملونه على لم يدل عليه ولم يرد به و في كلا الامرين قد يكون ما قصدوا

و الشفع والوتر و ليال عشر و اشباه ذلك فمثل هذا قد يجوزان يراد به كل المعاني التي قالها السلف و قد لا يجوز ذلك فالاول اما لكون الآية نزلت مرتين فاريد بها هذا تارة و هذا تارة واما لكون اللفظ المشترك يجوز ان يراد به معنياه و اما لكون اللفظ متواطيا فيكون عام اذا لم يكن لمخصصه موجب فهذا النوع اذا صح فيه القولان كان من الصنف الثاني و من الاقوال الموجودة عنهم و يجهلها بعض الناس اختلافا ان يعبروا عن المعاني بالفاظ متقاربة كما اذا فسر بعضهم تبسل بتحبس و بعضهم بترتهن لان كلا منهما قرب من آخر ثم قال

فصـــل و الاختلاف في التفسير على نوعين منه ما مستنده النقل فقط و منه ما يعلم بغير ذلك و المنقول اما عن المعصوم او غيره و منه ما لا يمكن ذلك وهذا القسم الذي لا يمكن معرفة صحيحه من ضعيفه عامة مما لا فائدة فيه ولا حاجة بنا الى معرفته و ذلك كاختلافهم في لون كلب اصحاب الكهف و اسمه في البعض الذي ضرب به القتيل من البقرة وفي قدر سفينة نوح و خشبها وفي اسم الغلام الذي قتله الخضر عليه الصلوة و السلام و نحو ذلك فهذه الامور طريق العلم بها النقل فما كان منه منقولا نقلا صحيحا عن النبي صلى الله عليه و سلم قبل و مالا بان نقل عن اهل الكتاب ككعب و وهب وقف عن تصديقه و تكذيبه لقوله صلى الله عليه و سلم اذا احدثكم اهل الكتاب فلا تصدقوهم ولا تكذبوهم و كذا ما نقل عن بعض التابعين و ان لم يذكر انه اخذه عن اهل الكتاب فمتي اختلف التابعون لم يكن بعض اقوالهم حجة على بعض و ما نقل في ذلك عن الصحابة نقلا صحيحا فالنفس اليه اسكن مما ينقل عن التابعين لان احتمال

ان لفظ صراط يشعر بوصف ثالث و كذلك قول من قال هي السنة و الجماعة و قول من قال هو طريق العبودية و قول من قال هو طاعة الله و رسوله و امثال ذلك فهولاء كلهم اشاروا الى ذات واحدة لكن وصفها كل منهم بصفة من صفاتها الثاني ان يذكر كل منهم من الاسم العام بعض انواعه على سبيل التمثيل و تنبيه المستمع على النوع لا على سبيل الحد المطابق للمحدود في عمومه و خصوصه مثاله ما نقل في قوله تعالى ثم اورثنا الكتاب الذين اصطفينا الآية فمعلوم ان الظالم لنفسه يتناول المضيع للواجبات و المنتهك للمحرمات و المقتصد يتناول فاعل الواجبات و تارك المحرمات و السابق يدخل فيه من سبق فيقرب بالحسنات مع الواجبات فالمقتصدون اصحاب اليمين والسابقون السابقون اولئك المقربون ثم ان كلامنهم يذكر هذا في نوع من انواع الطاعات كقول القايل السابق الذي يصلي في اول الوقت والمقتصد الذي يصلي في اثنائه و الظالم لنفسه الذي يوخر العصر الى الاصفرار اويقول السابق المحسن بالصدقة مع الزكوة والمقتصد الذي يودى الزكاة المفروضة فقط و الظالم مانع الزكاة قال وهذ ان اللذان ذكرنا هما في تنوع التفسير تارة لتنوع الاسماء والصفات و تارة لذكر بعض انواع المسمي هو الغالب في تفسير سلف الامة الذي يظن انه مختلف و من التنازع الموجود عنهم ما يكون اللفظ فيه محتملا للامرين اما لكونه مشتركا في اللغة كلفظ قسورة الذي يراد به الرامي و يراد به الاسد و لفظ عسعس الذي يراد به اقبال الليل و ادباره و اما لكونه متواطيا في الاصل لكن المراد به احد النوعين او احد الشخصين كالضمائر في قوله ثم دني فتدلى الآيه و كلفظ الفجر

اليهم يتناول هذا و هذا وقد قال ابو عبد الرحمن السلمي حدثنا الذين كانوا يقرؤن القرآن كعثمان ابن عفان و عبد الله ابن مسعود و غيرهما انهم كانوا اذا تعلموا من النبي صلى الله عليه و سلم عشر آيات لم يتجاوزوها حتى يتعلموا ما فيها من العلم و العمل قالوا فيعلمنا القرآن و العلم و العمل جميعا و لهذا كانوا يبقون مدة في حفظ السورة و قال انس كان الرجل اذا قرأ البقرة و آل عمران جد في اعيننا رواه احمد في مسنده و اقام ابن عمر على حفظ البقرة ثمان سنين اخرجه في الموطا و ذلك ان الله قال كتاب انزلناه اليك مبارك ليدبروا آياته و قال افلا يتدبرون القرآن و تدبر الكلام بدون فهم معانيه لايمكن و ايضا فالعادة تمنع ان يقرا قوم كتابا في فن من العلم كالطب والحساب و لا يستشرحونه فكيف بكتاب الله الذي هو عصمتهم و به نجاتهم و سعادتهم و قيام دينهم و دنياهم و لهذا كان النزاع بين الصحابة في تفسير القرآن قليل جدا و هو ان كان بين التابعين اكثر منه بين الصحابة فهو قليل بالنسبة الى ما بعدهم و من التابعين من تلقي جميع التفسير عن الصحابة و ربما تكلموا في بعض ذلك بالاستنباط و الاستدلال و الخلاف بين السلف في التفسير قليل وغالب ما يصح عنهم من الخلاف يرجع الى اختلاف تنوع لا اختلاف تضاد و ذلك صنفان احدهما ان يعبر واحد منهم عن المراد بعبارة غير عبارة صاحبه تدل على معني في المسمى غير المعنى الآخر مع اتحاد المسمى كتفسيرهم الصراط المستقيم بعض بالقرآن اي اتباعه و بعض بالاسلام فالقولان متفقان لان دين الاسلام هو اتباع القرآن و لكن كل منهما نبه على وصف غير الوصف الآخر كما

اعتماده على النقل عن النبي صلى الله عليه وسلم وعن اصحابه
ومن عاصرهم ويتجنب المحدثات واذا تعارضت اقوالهم وامكن الجمع
بينها فعل نحو ان يتكلم على الصراط المستقيم واقوالهم فيه ترجع الى
شئ واحد فيا خذ منها ما يدخل فيه الجميع فلا تنا في بين القرآن
وطريق الانبياء وطريق السنة وطريق النبي صلى الله عليه وسلم
وطريق ابي بكر وعمر فاي هذه الاقوال افرده كان محسنا وان تعارضت
رد الامر الى ماثبت فيه السمع وان لم يجد سمعا وكان للاستدلال
طريق الى تقوية احدها رجح ما قوى الاستدلال فيه كاختلافهم في
معني حروف الهجا رجح قول من قال انها قسم وان تعارضت الادلة
في المراد علم انه قد اشتبه عليه فيؤمن بمراد الله منها ولا يتهجم
على تعيينه وينزله منزلة المجمل قبل تفصيله والمتشابه قبل تبيينه
ومن شرطه صحة المقصد فيما يقول لتلقى التسديد فقد قال تعالى
والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا وانما يخاص له المقصد اذا زهد
في الدنيا لانه اذا رغب فيها لم يؤمن ان يتوسل به الى غرض يصده
عن صواب قصده ويفسد عليه صحة عمله وتمام هذه الشرايط ان
يكون ممتليا من عدة الاعراب لا يلتبس عليه اختلاف وجوه الكلام
فانه اذا خرج بالبيان عن وضع اللسان اما حقيقة او مجازا فتاويله
تعطيله وقد رايت بعضهم يفسر قوله تعالى قل الله ثم ذرهم انه يلازمه
قول الله ولم يدرا المعني ان هذه جملة حذف منها الخبر والتقدير
الله انزله انتهى كلام ابي طالب وقال ابن تيمية في كتاب الفه في
هذا النوع يجب ان يعلم ان النبى صلى الله عليه وسلم بين لاصحابه
معانى القرآن كما بين لهم الفاظه فقوله تعالى لتبين للناس ما انزل

من اراد تفسيرالكتاب العزيزطلبه اولا من القرآن فما اجمل منه في مكان فقدفسر في موضع آخر وما اختصر في مكان فقد بسط في موضع آخر و قد الف ابن الجوزي كتابا في ما اجمل فى القرآن في موضع و فسرفي موضع آخر منه و اشرت الى امثلة منه في نوع المجمل فان اعياه ذلک طلبه من السنة فانها شارحة للقرآن و موضحة له وقد قال الشافعي رضي الله عنه كاما حكم به رسول الله صلى الله عليه و سلم فهو مما فهمه من القرآن قال تعالى انا انزلنا اليک الكتاب بالحق لتحكم بين الناس بما اراک الله في آيات آخر وقال صلى الله عليه و سلم الا اني او تيت القرآن و مثله معه يعنى السنة فان لم يجده فى السنة رجع الى قول الصحابة فانهم ادرى بذلک لما شاهدوه من القرآن و الاحوال عند نزوله ولما اختصوا به من الفهم التام و العلم الصحيح و العمل الصالح و قد قال الحاكم فى المستدرک ان تفسير الصحابى الذي شهد الوحي و التنزيل له حكم المرفوع و قال الامام ابو طالب الطبري في اوائل تفسيره القول في آداب المفسر اعلم ان من شروطه صحة الاعتقاد اولا ولزوم سنة الدين فان كان مغموصا عليه في دينه لا يؤتمن على الدنيا فكيف على الدين ثم لا يؤتمن من الدين على الاخبار عن عالم فكيف يؤتمن فى الاخبار عن اسرار الله ولانه لا يؤمن ان كان متهما بالالحاد ان تبغي الفتنة و يغر الناس بلية وخداعة كداب الباطنية و غلاة الرافضة و ان كان متهما بهوى لم يؤمن ان تحمله هواه على ما يوافق بدعته كداب القدرية فان احدهم يصنف الكتاب فى التفسير و مقصوده منه الايضاح خلال المساكين ليصدهم عن اتباع السلف و لزوم طريق الهدى و يجب ان يكون

ابن النقيب جنح الى ما ذكرته و قال و يجوز ان يكون المراد الاعراب الصناعي و فيه بعد و قد يستدل له بما اخرجه السلفي فى الطيوريات من حديث ابن عمر مرفوعا اعربوا القرآن يدلكم على تاويله و قد اجمع العلماء ان التفسير من فروض الكفايات و اجل العلوم الثلاثة الشرعية قال الاصبهاني اشرف صناعة يتعاطاها الانسان تفسير القرآن بيان ذلك ان شرف الصناعة اما بشرف موضوعها مثل الصياغة فانها اشرف من الدباغة لان موضوع الصياغة الذهب و الفضة و هما اشرف من موضوع الدباغة الذي هو جلد الميتة و اما بشرف غرضها مثل صناعة الطب فانها اشرف من صناعة الكناسة لان غرض الطب افادة الصحة و غرض الكناسة تنظيف المستراح و اما بشدة الحاجة اليها كالفقه فان الحاجة اليه اشد من الحاجة الى الطب اذ ما من واقعة فى الكون من احد من الخلق الا و هي مفتقرة الى الفقه لان به انتظام صلاح احوال الدنيا و الدين بخلاف الطب فانه يحتاج اليه بعض الناس في بعض الاوقات اذا عرف ذلك فصناعة التفسير قد حازت الشرف من الجهات الثلاث اما من جهة الموضوع فلان موضوعه كلام الله تعالى الذي هو ينبوع كل حكمة و معدن كل فضيلة فيه نبأ ما قبلكم وخبر ما بعدكم وحكم ما بينكم لا يخلق على كثرة الرد ولا تنقضي عجائبه و اما من جهة الغرض فلان الغرض منه هو الاعتصام بالعروة الوثقى و الوصول الى السعادة الحقيقة التي لا تفني و اما من جهة تشدد الحاجة فلان كل كمال ديني او دينوي عاجلي اواجلي مفتقر الى العلوم الشرعية و المعارف الدينية و هي متوقفة على العلم بكتاب الله النوع الثامن والسبعون معرفة شروط المفسر و ادابه قال العلماء

و متشابهه و مقدمه و موخره و حلاله و حرامه و امثاله و اخرج ابن مردويه من طريق جويبر عن الضحاك عن ابن عباس مرفوعا يوت الحكمة قال القرآن قال ابن عباس رضي الله عنهما يعني تفسيره فانه قد قرأه البر و الفاجر و اخرج ابن ابي حاتم عن ابى الدرداء يوت الحكمة قال قرأة القرآن و الفكرة فيه و اخرج ابن جرير مثله عن مجاهد و ابى العاليه و قتادة و قال الله تعالى و تلك الامثال نضربها للناس و ما يعقلها الاالعالمون اخرج ابن ابي حاتم عن عمرو ابن مرة قال ما مررت بآية في كتاب الله لا اعرفها الا احزنتني لاني سمعت الله يقول و تلك الامثال نضربها للناس و ما يعقلها الا العالمون و اخرج ابو عبيد عن الحسن قال ما انزل الله آية الا و هو يحب ان يعلم فيما انزلت و ما اراد بها و اخرج ابو ذرالهروي في فضائل القرآن من طريق سعيد ابن جبير عن ابن عباس قال الذي يقرأ القرآن ولا يحسن تفسيره كالاعرابي يهذ الشعر هذا و اخرج البيهقي و غيره من حديث ابي هريرة مرفوعا اعربوا القرآن و التمسوا غرائبه و اخرج ابن الانباري عن ابي بكر الصديق رضي الله تعالى عنه قال لان اعرب آية فى القرآن احب الىّ من ان احفظ آية و اخرج ايضا عن عبد الله ابن بريدة عن رجل من اصحاب النبي صلى الله عليه و سلم قال لواني اعلم اني سافرت اربعين ليلة اعربت آية من كتاب الله تعالى لفعلت و اخرج ايضا من طريق الشعبي قال قال عمر من قرأ القرآن فاعربه كان له عند الله اجر شديد قلت معني هذه الاثار ارادة البيان و التفسير لان اطلاق الاعراب على الحكم النحوي اصطلاح حادث و لانه كان في سليقتهم لا يحتاجون الى تعلمه ثم رايت

ظواهره و احكامه اما دقائق باطنه فانما كان يظهرلهم بعد البحث و النظرمع سوالهم النبي صلى الله عليه و سلم فى الاكثر كسوالهم لما نزل و لم يلبسوا ايمانهم بظلم فقالوا و ايذا لم يظلم نفسه ففسره النبي صلى الله عليه و سلم بالشرك و استدل عليه بقوله ان الشرك لظلم عظيم وكسوال عايشة رض عن الحساب اليسير فقال ذلك الغرض كقصة عدي ابن حاتم فى الخيط الابيض و الاسود و غير ذلك مما سالوا عن احاديثه و نحن محتاجون الى ما كانوا يحتاجون اليه و زيادة على ذلك مما لم يحتج اليه من احكام الظواهر لقصورنا عن مدارك احكام اللغة بغير تعلم فنحن اشد الناس احتياجا الى التفسير ومعلوم ان تفسيره بعضه يكون من قبل بسط الالفاظ الوجيزة و كشف معاينها و بعضه من قبل ترجيح بعض الاحتمالات على بعض انتهي و قال الخويني علم التفسير عسير يسيرا ما عسره فظاهر من وجوه اظهرها انه كلام متكلم لم يصل الناس الى مراده بالسماع منه ولا امكان للوصول اليه بخلاف الامثال و الاشعار و نحوها فان الانسان يمكن علمه منه اذا تكلم بان يسمع منه او ممن سمع منه و اما القرآن فتفسيره على وجه القطع لا يعلم الابان يسمع من الرسول صلى الله عليه و سلم و ذلك متعذر الا في آيات قلايل فالعلم بالمراد يستنبط بامارات و دلائل و الحكمة فيه ان الله اراد ان يتفكر عباده في كتابه فلم يامر نبيه بالتنصيص على المراد في جميع آياته فصل واما شرفه فلا يخفي قال يوت الحكمة من يشاء و من يوت الحكمة فقد اوتي خيرا كثيرا اخرج ابن ابي حاتم وغيره من طريق ابن ابي طلحه عن ابن عباس في قوله يوت الحكمة قال المعرفة بالقرآن نا سخه و منسوخه و محكمه

بظاهره شيئا و يصد عن الحمل عليه صاد فيحمل على غيره و هو المجاز و قولنا و تتمات لذلك هو مثل معرفة النسخ و سبب النزول و قصة توضح بعض ما ابهم فى القرآن و نحو ذلك و قال الزركشي التفسير علم يفهم به كتاب الله المنزل على نبيه محمد صلى الله عليه و سلم و بيان معانيه و استخراج احكامه و حكمه و استمداد ذلك من علم اللغة و النحو و التصريف و علم البيان و اصول الفقه و القرا أت و يحتاج لمعرفة اسباب النزول و الناسخ و المنسوخ فصـــل و اما وجه الحاجة اليه فقال بعضهم اعلم ان من المعلوم ان الله انما خاطب خلقه بما يفهمو نه و لذلك ارسل كل رسول بلسان قومه و انزل كتابه على لغتهم و انما احتيج الى التفسير لما سيذكر بعد تقدير قاعدة و هي ان كل من وضع من البشر كتابا فانما وضعه ليفهم بذاته من غير شرح و انما احتيج الى الشروح لامور ثلثة احدها كمال فضيلة المصنف فانه لقوته المعلمية يجمع المعانى الدقيقة فى اللفظ الوجيز فربما عسرفهم مراده يقصد بالشرح ظهور تلك المعانى الخفية و من ههنا كان شرح بعض الايمة تصنيفه ادل على المراد و من شرح غيرله و ثانيها اغفاله بعض تتمات المسألة اوشروط لها اعتمادا على و ضوحها اولانها من علم آخر فيحتاج الشارح لبيان المحذوف و مراتبه و ثالثها احتمال اللفظ لمعان كما فى المجاز و الاشتراك و دلالة الالتزام فيحتاج الشارح الى بيان غرض المصنف و ترجيحه و قد يقع فى التصانيف ما لا يخلوعنه لبشر من السهو و الغلط او تكرار الشيء او حذف المهم و غير ذلك فيحتاج الشارح للتنبيه على ذلك اذا تقرر هذا فنقول ان القرآن انما نزل بلسان عربي في زمن افصح العرب و كانوا يعلمون

واما في لفظ مشترك بين معان مختلفة نحو لفظ وجد المستعمل في الجدة والوجد والوجود وقال غيره التفسير يتعلق بالرواية والتاويل يتعلق بالدراية وقال ابو نصر القشيرى التفسير مقصور على الاتباع والسماع والاستنباط فيما يتعلق بالتاويل وقال قوم ما وقع مبينا في كتاب الله ومعينا في صحيح السنة سمي تفسيرا لان معناه قد ظهر وضح وليس لاحد ان يتعرض اليه باجتهاد ولا غيره بل يحمله على المعنى الذي ورد لا يتعداه والتاويل ما استنبطه العلماء العاملون لمعاني الخطاب الماهرون في آلات العلوم وقال قوم منهم البغوي والكواشي التاويل صرف الآية الى معني موافق لما قبلها وبعدها تحتمله الآية غير مخالف للكتاب والسنة من طريق الاستنباط وقال بعضهم التفسير في الاصطلاح علم نزول الآيات وشؤونها واقاصيصها والاسباب النازلة فيها ثم ترتيب مكيها ومدنيها ومحكمها ومتشابهها وناسخها ومنسوخها وخاصها وعامها ومطلقها ومقيدها ومجملها ومفسرها وحلالها وحرامها ووعدها ووعيدها وامرها ونهيها وغيرها وامثالها وقال ابو حيان التفسير علم يبحث فيه عن كيفية النطق بالفاظ القرآن ومدلولاتها واحكامها الافرادية والتركيبية ومعانيها التي تحمل عليها حالة التركيب وتتمات لذلك قال فقولنا علم جنس وقولنا يبحث فيه عن كيفية النطق بالفاظ القرآن هو علم القرأة وقولنا ومدلولاتها اي مدلولات تلك الالفاظ وهذا متن علم اللغة الذي يحتاج اليه في هذا العلم وقولنا واحكامها الافرادية والتركيبية هذا يشمل علم التصريف والبيان والبديع وقولنا ومعانيها التي يحمل عليها حالة التركيب يشمل ما دلالته بالحقيقة وما دلالته بالمجاز فان التركيب قد يقتضي

واحد منها بما ظهر من الادلة و قال الما تريدي التفسير القطع على ن المراد من اللفظ هذا و الشهادة على الله انه عنى باللفظ هذا فان قام دليل مقطوع به فصحيح و الافتفسير بالراي و هو المنهي عنه و التاويل ترجيح احد المحتملات بدون القطع و الشهادة على الله و قال ابو طالب الثعلبي التفسير بيان وضع اللفظ اما حقيقة او مجازا كتفسير الصراط بالطريق و الصيب بالمطر و التاويل تفسير باطن اللفظ ماخوذ من الاول و هو الرجوع لعا قبة الامر فالتاويل اخبار عن حقيقة المراد و التفسير اخبار عن دليل المراد لان اللفظ يكشف عن المراد و الكاشف دليل مثاله قوله تعالى ان ربك لبالمرصاد تفسيره انه من الرصد يقال رصدته رقبته و المرصاد مفعال منه و تاويله التحذير من التهاون بامرالله و الغفلة عن الاهبة و الاستعداد للعرض عليه و قواطع الادلة تقتضي بيان المراد منه على خلاف وضع اللفظ فى اللغة و قال الاصبهاني في تفسيره اعلم ان التفسير في عرف العلماء كشف معاني القرآن و بيان المراد اعم من ان يكون بحسب اللفظ المشكل وغيره بحسب المعنى الظاهر وغيره و التاويل اكثر فى الجمل و التفسير اما ان يستعمل في غريب الالفاظ نحو البحيرة و السايبة و الوصيلة او في و جيزيتين بشرح نحو اقيموا الصلاة و اتوا الزكوة و اما في كلام متضمن لقصة لا يمكن تصويره الا بمعرفتها كقولنا انما النسيء زيادة فى الكفر و قوله و ليس البربان تاتوا البيوت من ظهورها و اما التاويل فانه يستعمل مرة عاما و مرة خاصا نحو الكفر المستعمل تارة فى الجحود المطلق و تارة في جحود الباري خاصة و الايمان المستعمل فى التصديق المطلق تارة و في تصديق الحق اخرى

و يدفن و فيه وقفة لتعرضه بالوطى بالاقدام فرع اخرج ابن ابي داؤد عن ابن المسيب قال لا يقول احدكم مصيحف ولا مسيجد ما كان لله فهو عظيم فرع مذهبنا و مذهب جمهور العلماء رضي الله تعالى عنهم تحريم مس المصحف للمحدث سواء كان حدثا اصغر ام اكبر لقوله تعالى لا يمسه الا المطهرون و حديث الترمذي و غيره لا يمس القرآن الا طاهر خاتمة روى ابن ماجة و غيره عن انس مرفوعا سبع يجري للعبد اجرهن بعد موته و هو في قبره من علم علما او اجري نهرا او حفر بيرا او غرس نخلا او بني مسجدا او ترك ولدا يستغفرله بعد موته او ورث مصحفا و الله اعلم النوع السابع و السبعون في معرفة تفسيره و تاويله و بيان شرفه و الحاجة اليه التفسير تفعيل من الفسر و هو البيان و الكشف و يقال هو مقلوب السفر تقول اسفر الصبح اذا اضأ و قيل ماخوذ من التفسرة و هي اسم لما يعرف به الطبيب المرض و التاويل اصله من الاول و هو الرجوع فكانه صرف الآية الى ما يحتمله من المعاني و قيل من الايالة و هى السياسة كان الماول للكلام ساس الكلام و وضع المعني فيه موضعه و اختلف فى التفسير و التاويل فقال ابو عبيد و طائفة هما بمعني و قد انكر ذلك قوم حتى بالغ ابن حبيب النيسابوري فقال قد نبغ في زماننا مفسرون لوسئلوا عن الفرق بين التفسير و التاويل ما اهتدوا اليه و قال الراغب التفسير اعم من التاويل و اكثر استعماله فى الالفاظ و مفرداتها و اكثر استعمال التاويل فى المعاني و الجمل و اكثر ما استعمل فى الكتب الالهية و التفسير يستعمل فيها و في غيرها وقال غيره التفسير بيان لفظ لا يحتمل الا وجها واحدا و التاويل توجيه لفظ متوجه الى معان مختلفة الى

ولانه هدية من الله فشرع تقبيله كما يستحب تقبيل الولد الصغير
وعن احمد ثلاث روايات الجواز و الاستحباب و التوقف و ان كان فيه
رفعة و اكرام لانه لا يدخله قياس ولهذا قال عمر في الحجر لولا اني
رايت النبي صلى الله عليه وسلم يقبلك ما قبلتك فرع يستحب
تطييب المصحف و جعله على كرسي و يحرم توسده لان فيه اذلالا
و امتهانا قال الزركشي و كذا مد الرجلين اليه و اخرج ابن ابي داؤد
في المصاحف عن سفيان انه كره ان تعلق المصاحف و اخرج عن
الضحاك قال لا تتخذ و الحديث كراسي ككراسي المصحف فرع
يجوز تحليته بالفضة اكراما له على الصحيح اخرج البيهقي عن الوليد
بن مسلم قال سالت مالكا عن تفضيض المصاحف فاخرج الينا
مصحفا فقال حدثني ابي عن جدي انهم جمعوا القرآن في عهد
عثمان و انهم فضضوا المصاحف على هذا او نحوه و اما بالذهب
فالاصح جوازه للمرأة دون الرجل و خص بعضهم الجواز بنفس المصحف
دون غلافه المنفصل عنه و الاظهر التسوية فرع اذا احتيج الى تعطيل
بعض اوراق المصحف لبلأ و نحوه فلا يجوز وضعها في شق او غيره
لانه قد يسقط و يوطا ولا يجوز تمزيقها لما فيه من تقطيع الحروف و تفرقة
الكلم و في ذلك ازراء بالمكتوب كذا قاله الحليمي قال و له غسلها
بالماء و ان احرقها بالنار فلا باس احرق عثمان مصاحف كان فيها آيات
و قراآت منسوخة ولم ينكر عليه و ذكر غيره ان الاحراق اولى من
الغسل لان الغسالة قد تقع على الارض و جزم القاضي حسين في تعليقه
بامتناع الاحراق لانه خلاف الاحترام و النووي بالكراهة و في بعض
كتب الحنفية ان المصحف اذا بلي لا يحرق بل يحفر له في الارض

و اخرج عن ابن عمرو بن مسعود انهما كرها بيع المصاحف وشرائها
و اخرج عن محمد بن سيرين انه كره بيع المصاحف و شرأها و ان
يستاجر على كتابتها و اخرج عن مجاهد و ابن المسيب و الحسن
انهم قالوا لاباس بالثلاثة و اخرج عن سعيد بن جبير انه سئل عن
بيع المصاحف قال لا باس انما يبيع الورق و اخرج عن عبدالله بن
شقيق قال كان اصحاب رسول الله صلى الله عليه و سلم يشددون في
بيع المصاحف و اخرج عن النخعي قال المصحف لايباع ولا يورث
و اخرج عن ابن المسيب انه كره بيع المصاحف وقال ا عن اخاك
بالكتاب اوهب له و اخرج عن عطأ عن ابن عباس رضي الله تعالى
عنهما اشتر المصاحف ولا تبعها و اخرج عن مجاهد عنه انه نهي
عن بيع المصحف ورخص في شرائه وقد حصل من ذلك ثلاثة
اقوال للسلف ثالثها كراهة البيع دون الشراء و هو اصح الاوجه عندنا
كما صححه في شرح المهذب و نقله في زوايد الروضة عن نص الشافعي
قال الرافعي و قد قيل ان الثمن متوجه الى الدفتين لان كلام الله
لا يباع وقيل انه بدل من اجرة النسخ انتهي وقد تقدم اسناد
القولين الى ابن الحنفية و ابن جبيروفيه قول ثالث انه بدل منهما
معا اخرج ابن ابي داؤد عن الشعبي قال لا باس ببيع المصاحف
انما يبيع الورق و عمل يديه فرع قال الشيخ عزالدين بن عبد السلام
فى القواعد القيام للمصحف بدعة لم يعهد فى الصدر الاول و الصواب
ما قاله النووي فى التبيان من استحباب ذلك لما فيه من التعظيم
وعدم التهاون به فرع يستحب تقبيل المصحف لان عكرمة بن ابي
جهل كان يفعله و بالقياس على تقبيل الحجر الاسود ذكر بعضهم

بالوان مختلفة لانه من اعظم التخايط و التغيير للمرسوم وارى ان يكون الحركات و التنوين و التشديد و السكون و المد بالحمرة والهمزات بالصفرة و قال الجرجاني من اصحابنا فى الشافي من المذموم كتابة تفسير كلمات القرآن بين اسطره فائدة كان الشكل فى الصدر الاول نقطا فالفتحة نقطة على اول الحرف و الضمة على آخره و الكسرة تحت اوله و عليه مشى الداني و الذي اشتهر الآن الضبط بالحركات الماخوذة من الحروف وهو الذي اخرجه الخليل وهو اكثر و اوضح وعليه العمل فالفتح شكله مستطيله فوق الحرف و الكسر كذلك تحته و الضم و اوصغرى فوقه و التنوين زيادة مثلها فان كان مظهر او ذلك قبل حرف حلق ركبت فوقها والا تابعت بينهما و يكتب الالف المحذوفة و المبدل منها في محلها حمرا و الهمزة المحذوفة تكتب همزة بلا حرف حمرا ايضا و على النون و التنوين قبل الباء علامة الاقلاب م حمرا و قبل الحلق سكون و تعرى عند الادغام و الاخفا و يسكن كل مسكن و يعرى المدغم و يشدد ما بعده الا الطاء قبل التاء فيكتب عليها السكون نحو فرطت وسطه الممدود لا تجاوزه فائدة قال الحرني في غريب الحديث قول ابن مسعود جردوا القرآن يحتمل وجهين احدهما جردوه فى التلاوة لا تخلطوا به غيره و الثاني جردوه فى الخط من النقط و التعشير وقال البيهقي الا بين انه اراد لا تخلطوا به غيره من الكتب لان ما خلا القرآن من كتب الله انما يوخذ من اليهود و النصارى و ليسوبما مونين عليها فرع اخرج ابن ابي داؤد في كتاب المصاحف عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما انه كره اخذ الاجرة على كتابة المصحف و اخرج مثله عن ايوب السجستاني

رُوس الآيات اخرجه ابن ابي داؤد و قد اخرج ابو عبيد و غيره عن ابن مسعود رضي الله عنه قال جردوا القرآن ولا تخلطوه بشيء و اخرج عن النخعي انه كره نقط المصاحف و عن ابن سيرين انه كره النقط و الفواتح والخواتم و عن ابن مسعود ومجاهد انهما كرها التعشير و اخرج ابن ابي داؤد عن النخعي انه كان يكره العواشر و الفواتح و تصغير المصحف و ان يكتب فيه سورة كذا وكذا و اخرج عنه انه اتى المصحف مكتوب فيه سورة كذا كذا آية فقال اُمْحُ هذا فان ابن مسعود كان يكرهه و اخرج عن ابى العالية انه كان يكره الجمل فى المصحف و فاتحة سورة كذا و خاتمة سورة كذا و قال مالك لاباس بالنقط فى المصاحف التي يتعلم فيها الغلمان امها الامهات فلا و قال الحليمي يكره كتابة الاعشار و الاخماس و اسماء السور و عدد الآيات فيه لقوله جردوا القرآن و اما النقط فيجوز لانه ليس له صورة فيتوهم لاجلها ما ليس بقرآن قرآنا و انما هي دلالات على هيئة المقرو فلا يضر اثباتها لمن يحتاج اليها و قال البيهقي في اداب القرآن ان يفخم فيكتب مفرجا باحسن خط ولا يصغر ولا يقرمط حروفه ولا يخلط به ما ليس منه كعدد الآيات والسجدات و العشرات و الوقوف و اختلاف القرأت و معانى الآيات و قد اخرج ابن ابي داؤد عن الحسن و ابن سيرين انهما قالا لاباس بنقط المصاحف واخرج عن ربيعة بن ابي عبدالرحمن انه قال لاباس بشكلها وقال النووي نقط المصحف وشكله مستحب لانه صيانة له من اللحن و التحريف و قال ابن مجاهد ينبغي ان لا يشكل الا ما يشكل و قال الداني لا استجيز النقط بالسواد لما فيه من التغيير لصورة الرسم ولا استجيز جمع قرأت شتى في مصحف واحد

عن ابن سيرين انه كان يكره ان تمد الباء الى الميم حتى يكتب الصين و اخرج ابن ابي داؤد فى المصاحف عن ابن سيرين انه كره ان يكتب المصحف مشقا قيل لم قل لان فيه نقصا و يحرم كتابته بشئ نجس و اما بالذهب فهو حسن كما قاله الغزالي و اخرج ابو عبيد عن ابن عباس رضي الله عنهما و ابي ذر و ابى الدرداء انهم كرهوا ذلك واخرج عن ابن مسعود انه مر عليه بمصحف زين بالذهب فقال ان احسن ما زين به المصحف تلاوته بالحق قال اصحابنا ويكره كتابته على الحيطان والجدران وعلى السقوف اشد كراهة لانه يوطا و اخرج ابو عبيد عن عمر بن عبد العزيز قال لا تكتبوا القرآن حيث يوطا و هل يجوز كتابته بقلم غيرالعربي قال الزركشي لم ارفيه كلاما لاحد من العلماء قال و يحتمل الجواز لانه قد يحسنه من يقروه بالعربية و الاقرب المنع كما تحرم قرأته بغير لسان العرب و لقولهم القلم احد اللسانين و العرب لا تعرف قلما غيرالعربي و قد قال تعالى بلسان عربي مبين انتهى فائدة اخرج ابن ابي داؤد عن ابراهيم التيمي قال قال عبد الله لا يكتب المصاحف الا مصري قال ابن ابي داؤد معناها من اجل اللغات مسئلة اختلاف في لفظ المصحف و شكله و يقال اول من فعل ذلك ابو الاسود الدئلي بامر عبد الملك بن مروان و قيل الحسن البصري و يحيى بن يعمر و قيل نصر بن عاصم الليثي و اول من وضع الهمز و التشديد و الروم و الاشمام الخليل و قال قتادة بدئوا فنقطوا ثم خمسوا ثم عشروا و قال غيره اول ما احدثوا النقط عند آخرالآي ثم الفواتح و الخواتم و قال يحيى بن ابي كثير ما كانوا يعرفون شيئا مما احدث فى المصاحف الا النقط الثلاث على

فكتابته على نحو قرأته وكل ذلك وجد في مصاحف الامام فائدة كتبت فواتح السور على صورة الحروف انفسها لا على صورة النطق بها اكتفاء بشهرتها وقطعت حم عسق دون المص وكهيعص طردا للاولى باخواتها الستة فصل في اداب كتابته يستحب كتابة المصحف وتحسين كتابته وتبيينها وايضاحها وتحقيق الخط دون مشقه وتعليقه فيكره وكذا كتابته في الشئ الصغير اخرج ابو عبيد في فضائله عن عمرانه وجد مع رجل مصحفا قد كتبه بقلم دقيق فكره ذلك وضربه وقال عظموا كتاب الله قال وكان عمر اذا راى مصحفا عظيما سربه واخرج عبد الرزاق عن على انه كان يكره ان يتخذ المصاحف صغارا واخرج ابو عبيد عنه انه كره ان يكتب القرآن في الشئ الصغير واخرج هو والبيهقي في الشعب عن ابي حكيمة العبدي قال مربي علي وانا اكتب مصحفا فقال اجل قلمك فقضمت من قلمي قضمة ثم جعلت اكتب فقال نعم هكذا نوره كما نوره الله واخرج البيهقي عن على موقوفا قال تفرق رجل في بسم الله الرحمن الرحيم فغفراله واخرج ابو نعيم في تاريخ اصبهان وابن اشته في المصاحف من طريق ابان عن انس مرفوعا من كتب بسم الله الرحمن الرحيم فجوده غفرالله له واخرج ابن اشته عن عمر بن عبدالعزيز انه كتب الى عماله اذا كتب احدكم بسم الله الرحمن الرحيم فليمد الرحمن واخرج عن زيد بن ثابت انه كان يكره ان يكتب بسم الله الرحمن الرحيم ليس لها سين واخرج عن يزيد ابن ابي حبيب ان كاتب عمرو بن العاص كتب الى عمر فكتب بسم الله ولم يكتب لها سينا فضربه عمر فقيل له فيم ضربك اميرالمؤمنين قال ضربني في سين واخرج

و ابن ام الافي طه فتكتب الهمزة ح و اذا حذفت همزة ابن فصارت هكذا يبنؤم القاعدة السادسة في ما فيه قرأتان فكتب على احديهما و مرادنا غيرالشاذ من ذلك ملك يوم الدين يخدعون و وعدنا و الصعقة و الريح و تذدرهم و تظهرون ولا تقتلوهم و نحوهما ولولا دفع فرهن طيرا في آل عمران و المائدة مضعفة و نحو عقدت ايمانكم الاولسن لمستم قسية قيما للناس خطيئتكم فى الاعراف طيف حاش لله و سيعلم الكفر تزور زليه فلا تصحبني لا لتخذ مهد او حرام على قرية ان الله يدفع سكرى وماهم بسكرى النطفة عظما فكسونا العظم سرجابل ادرك ولا تصعر ربنا بعد اسوره بلا الف فى الكل وقد قريت بها وبحذفها و غيابت الجب و انزل عليه ايت فى العنكبوت و ثمرت من اكمامها في فصلت و جملت فهم على بينت وهم فى الغرفت بالتاء و قد قريت بالجمع و الافراد و بقيت بالياء ولاهب بالالف ونقص الحق بلا يأ و اتوني زبر الحديد بالف فقط ننجى من نشأنج المؤمنين بنون واحدة و الصراط كيف و بصطه فى الاعراف و المصيطرون ومصيطر بالصاد ولا غير و قد تكتب الكلمة صالحة للقراتين نحو فكهين بلا الف و هي قرأة و على قرأتها هي محذوفة رسماً لانه جمع تصحيح فرع في ما كتب موافقا لقرأة شاذة من ذلك ان البقر تشبه علينا عهدوا مابقى من الربو قرى بضم البا و سكون الواو فلقتلوكم انما طيرهم طيره في عنقه تسقط سمرا و فصله في عامين عليهم ثياب سندس ختمه مسك فادخلي في عبدي فرع و اما القرأة المختلفة المشهورة بزيادة لا يحتملها الرسم نحوها نحو اوصي و وصي و تجري تحتها و من تحتها و سيقولون الله ولله وما عملت ايديهم وما عملته

قدسمع ان شجرت الزقوم قرت عين وجنت نعيم بقيت الله ويا ابت
واللات ومرضات وهيهات وذات وابنت وفطرت القاعدة فى الوصل
والفصل توصل لا بالفتح الا عشرة ان لا اقول ان لا تقولوا فى الاعراف
ان لا ملجا وفي هود ان لا اله ان لا تعبدوا الا الله اني اخاف ان
لا تشرك فى الحج ان لا تعبد وا في يس ان لا تعلوا فى الدخان ان
لا يشركن فى الممتحنة ان لا يدخلنها في ن ومما الا من ما ملكت
فى النساء والروم من ما رزقناكم فى المنافقين وممن مطلقا وعما
الا عن ما نهوا ومما بالكسر الاوان ما نريك فى الرعد واما بالفتح
مطلقا وعمن الا ويصرفه عن من فى النور عن من تولى فى النجم
وامن الا ام من يكون فى النساء ام من اسس ام من خلقنا فى
الصافات ام من ياتي امنا والم بالكسر الا فان لم يستجيبوا فى القصص
وفيما الا احد عشر في ما فعلن الثاني فى البقرة ليبلوكم في ما فى
المائدة والانعام قل لا اجد في ما في ما اشتهت فى الانبيأ في ما
افضتم في ما ههنا فى الشعرأ في ما رزقناكم فى الروم في ما هم
فيه في ما كانوا فيه كلاهما فى الزمر وننشئكم في ما لا تعلمون وانما
الا ان ما توعدون لات في الانعام وانما بالفتح الا ان ماتوعدون فى
الحج وكلما الا كل ماردوا الى الفتنة من كل ما سئلتموه وبئسما
الا مع اللام ونعما ومهما وربما وكانما ويكان وتقطع حيث ما وان
لم بالفتح وان لن الا فى الكهف والقيامة واين ما الا فاينما تولوا اينما
يوجهه واختلف في اين ما تكونوا يدرككم اينما كنتم تعبدون فى
الشعرأ اينما ثقفوا فى الاحزاب ولكي لا الا في آل عمران والحج
والحديد والثاني فى الاحزاب ويوم هم ونحو فمال ولات حين

و ابن ام الافي طه فتكتب الهمزة ح و اذا حذفت همزة ابن فصارت هكذا يبنؤم القاعدة السادسة في ما فيه قرأتان فكتب على احدهما و مرادنا غيرالشاذ من ذلك ملك يوم الدين يخدعون و وعدنا و الصعقة و الريح و تذرهم و تظهرون ولا تقتلوهم و نحوهما و لولا دفع فرهن طيرا في آل عمران و المائدة مضعفة و نحو عقدت ايمانكم الاولسن لمستم قسية قيما للناس خطيئتكم فى الاعراف طيف حاش لله و سيعلم الكفر تزور زليه فلا تصحبني لا لتخذ مهد او حرام على قرية ان الله يدفع سكرى و ماهم بسكرى النطفة عظما فكسونا العظم سرجابل ادرك ولا تصعر ربنا بعد اسوره بلا الف فى الكل وقد قريت بها و بحذفها و غيابت الجب و انزل عليه ايت فى العنكبوت و ثمرت من اكمامها في فصلت و جملت فهم على بينت وهم فى الغرفت بالتاء و قد قريت بالجمع و الافراد و بقيت بالياء ولاهب بالالف و نقص الحق بلا يأ و اتوني زبر الحديد بالف فقط ننجى من نشأنج المؤمنين بنون واحدة و الصراط كيف و بصطه فى الاعراف و المصيطرون و مصيطر بالصاد ولا غير و قد تكتب الكلمة صالحة للقراتين نحو فكهين بلا الف و هي قرأة و على قرأتها هي محذوفة رسماً لانه جمع تصحيح فرع في ما كتب موافقا لقرأة شاذة من ذلك ان البقر تشبه علينا عهدوا مابقى من الربو قرى بضم البا و سكون الواو فلقتلوكم انما طيرهم طيره في عنقه تسقط سمرا و فصله في عامين عليهم ثياب سندس ختمه مسك فادخلي في عبدي فرع و اما القرأة المختلفة المشهورة بزيادة لا يحتملها الرسم نحوها نحو اوصي و وصي و تجري تحتها و من تحتها و سيقولون الله و لله و ما عملت ايديهم و ما عملته

قدسمع ان شجرت الزقوم قرت عين وجنت نعيم بقيت الله ويا ابت
و اللات ومرضات و هيهات و ذات و ابنت و فطرت القاعدة فى الوصل
و الفصل توصل لا بالفتح الا عشرة ان لا اقول ان لا تقولوا فى الاعراف
ان لا ملجا وفي هود ان لا اله ان لا تعبدوا الا الله اني اخاف ان
لا تشرك فى الحج ان لا تعبد وا في يس ان لا تعلوا فى الدخان ان
لا يشركن فى الممتحنة ان لا يدخلنها في ن و مما الا من ما ملكت
فى النساء و الروم من ما رزقناكم فى المنافقين و ممن مطلقا وعما
الا عن ما نهوا و مما بالكسر الاوان ما نريك فى الرعد و اما بالفتح
مطلقا و عمن الا و يصرفه عن من فى النور عن من تولى فى النجم
و امن الا ام من يكون فى النساء ام من اسس ام من خلقنا فى
الصافات ام من ياتي امنا و الم بالكسر الا فان لم يستجيبوا فى القصص
و فيما الا احد عشر في ما فعلن الثاني فى البقرة ليبلوكم في ما فى
المائدة و الانعام قل لا اجد في ما في ما اشتهت فى الانبيأ في ما
افضتم في ما ههنا فى الشعرأ في ما رزقناكم فى الروم في ما هم
فيه في ما كانوا فيه كلا هما فى الزمر و ننشئكم في ما لا تعلمون وانما
الا ان ما تو عدون لات في الانعام و انما بالفتح الا ان ماتو عدون فى
الحج وكلما الا كل ماردوا الى الفتنة من كل ما سئلتموه وبئسما
الا مع اللام و نعما و مهما وربما و كانما و ويكان و تقطع حيث ما و ان
لم بالفتح وان لن الا فى الكهف والقيامة و اين ما الا فاينما تولوا اينما
يوجهه و اختلف في اين ما تكونوا يدرككم اينما كنتم تعبدون فى
الشعرأ اينما ثقفوا فى الاحزاب ولكي لا الا في آل عمران و الحج
والحديد و الثاني في الاحزاب و يوم هم و نحو فمال و لات حين

واحد منها بما ظهر من الادلة و قال الما تريدي التفسير القطع على
ن المراد من اللفظ هذا و الشهادة على الله انه عنى باللفظ هذا فان
قام دليل مقطوع به فصحيح و الافتفسير بالراي و هو المنهي عنه
و التاويل ترجيح احد المحتملات بدون القطع و الشهادة على الله
و قال ابو طالب الثعلبى التفسير بيان وضع اللفظ اما حقيقة او مجازا
كتفسير الصراط بالطريق و الصيب بالمطر و التاويل تفسير باطن اللفظ
ماخوذ من الاول و هو الرجوع لعا قبة الامر فالتاويل اخبار عن حقيقة
المراد و التفسير اخبار عن دليل المراد لان اللفظ يكشف عن المراد
و الكاشف دليل مثاله قوله تعالى ان ربك لبالمرصاد تفسيره انه من
الرصد يقال رصدته رقبته و المرصاد مفعال منه و تاويله التحذير من
التهاون بامرالله و الغفلة عن الاهبة و الاستعداد للعرض عليه و قواطع
الادلة تقتضي بيان المراد منه على خلاف وضع اللفظ فى اللغة
و قال الاصبهاني في تفسيره اعلم ان التفسير في عرف العلماء كشف
معانى القرآن و بيان المراد اعم من ان يكون بحسب اللفظ المشكل
و غيره بحسب المعنى الظاهر و غيره و التاويل اكثر فى الجمل
و التفسير اما ان يستعمل في غريب الالفاظ نحو البحيرة و السايبة
و الوصيلة او في و جيزيتين بشرح نحو اقيموا الصلاة و اتوا الزكوة
و اما في كلام متضمن لقصة لا يمكن تصويره الا بمعرفتها كقولنا انما
النسي زيادة فى الكفر و قوله و ليس البربان تاتوا البيوت من ظهورها
و اما التاويل فانه يستعمل مرة عاما و مرة خاصا نحو الكفر المستعمل
تارة فى الجحود المطلق و تارة في جحود الباري خاصة و الايمان
المستعمل فى التصديق المطلق تارة و في تصديق الحق اخرى

و يدفن و فيه وقفة لتعرضه بالوطى بالاقدام فرع اخرج ابن ابي داؤد عن ابن المسيب قال لا يقول احدكم مصيحف ولا مسيجد ما كان لله فهو عظيم فرع مذهبنا و مذهب جمهور العلماء رضي الله تعالى عنهم تحريم مس المصحف للمحدث سواء كان حدثا اصغر ام اكبر لقوله تعالى لا يمسه الا المطهرون و حديث الترمذي و غيره لا يمس القرآن الا طاهر خاتمة روى ابن ماجة و غيره عن انس مرفوعا سبع يجري للعبد اجرهن بعد موته و هو في قبره من علم علما او اجري نهرا او حفر بيرا او غرس نخلا او بني مسجدا او ترك ولدا يستغفرله بعد موته او ورث مصحفا و الله اعلم النوع السابع و السبعون في معرفة تفسيره و تاويله و بيان شرفه و الحاجة اليه التفسير تفعيل من الفسر و هو البيان و الكشف و يقال هو مقلوب السفر تقول اسفر الصبح اذا اضأ و قيل ماخوذ من التفسرة و هي اسم لما يعرف به الطبيب المرض و التاويل اصله من الاول و هو الرجوع فكانه صرف الآية الى ما يحتمله من المعاني و قيل من الايالة و هى السياسة كان الماول للكلام ساس الكلام و وضع المعني فيه موضعه و اختلف فى التفسير و التاويل فقال ابو عبيد و طائفة هما بمعني و قد انكر ذلك قوم حتى بالغ ابن حبيب النيسابوري فقال قد نبغ في زماننا مفسرون لوسئلوا عن الفرق بين التفسير و التاويل ما اهتدوا اليه و قال الراغب التفسير اعم من التاويل و اكثر استعماله فى الالفاظ و مفرداتها و اكثر استعمال التاويل فى المعاني و الجمل و اكثر ما استعمل فى الكتب الالهية و التفسير يستعمل فيها و في غيرها وقال غيره التفسير بيان لفظ لا يحتمل الا وجها واحدا و التاويل توجيه لفظ متوجه الى معان مختلفة الى

ولانه هدية من الله فشرع تقبيله كما يستحب تقبيل الولد الصغير
و عن احمد ثلاث روايات الجواز و الاستحباب و التوقف و ان كان فيه
رفعة و اكرام لانه لا يدخله قياس و لهذا قال عمر في الحجر لولا اني
رايت النبي صلى الله عليه وسلم يقبلك ما قبلتك فرع يستحب
تطييب المصحف و جعله على كرسي و يحرم توسده لان فيه اذلالا
و امتهانا قال الزركشي و كذا مد الرجلين اليه و اخرج ابن ابي داؤد
في المصاحف عن سفيان انه كره ان تعلق المصاحف و اخرج عن
الضحاك قال لا تتخذ و الحديث كراسي ككراسي المصحف فرع
يجوز تحليته بالفضة اكراما له على الصحيح اخرج البيهقي عن الوليد
بن مسلم قال سالت ما لكا عن تفضيض المصاحف فاخرج الينا
مصحفا فقال حدثني ابي عن جدي انهم جمعوا القرآن في عهد
عثمان و انهم فضضوا المصاحف على هذا او نحوه و اما بالذهب
فالاصح جوازه للمرأة دون الرجل و خص بعضهم الجواز بنفس المصحف
دون غلافه المنفصل عنه و الاظهر التسوية فرع اذا احتيج الى تعطيل
بعض اوراق المصحف لبلاء و نحوه فلا يجوز وضعها في شق او غيره
لانه قد يسقط و يوطا ولا يجوز تمزيقها لما فيه من تقطيع الحروف و تفرقة
الكلم و في ذلك ازراء بالمكتوب كذا قاله الحليمي قال و له غسلها
بالماء و ان احرقها بالنار فلا باس احرق عثمان مصاحف كان فيها آيات
و قراآت منسوخة و لم ينكر عليه و ذكر غيره ان الاحراق اولى من
الغسل لان الغسالة قد تقع على الارض و جزم القاضي حسين في تعليقه
بامتناع الاحراق لانه خلاف الاحترام و النووي بالكراهة و في بعض
كتب الحنفية ان المصحف اذا بلي لا يحرق بل يحفر له في الارض

و اخرج عن ابن عمرو بن مسعود انهما كرها بيع المصاحف وشرائها
و اخرج عن محمد بن سيرين انه كره بيع المصاحف و شرأها و ان
يستاجر على كتابتها و اخرج عن مجاهد و ابن المسيب و الحسن
انهم قالوا لاباس بالثلاثة و اخرج عن سعيد بن جبير انه سئل عن
بيع المصاحف قال لا باس انما يبيع الورق و اخرج عن عبدالله بن
شقيق قال كان اصحاب رسول الله صلى الله عليه و سلم يشددون في
بيع المصاحف و اخرج عن النخعي قال المصحف لايباع ولا يورث
و اخرج عن ابن المسيب انه كره بيع المصاحف و قال ا عن اخاك
بالكتاب اوهب له و اخرج عن عطأ عن ابن عباس رضي الله تعالى
عنهما اشتر المصاحف ولا تبعها و اخرج عن مجاهد عنه انه نهي
عن بيع المصحف ورخص في شرائه وقد حصل من ذلك ثلاثة
اقوال للسلف ثالثها كراهة البيع دون الشراء و هو اصح الاوجه عندنا
كما صححه في شرح المهذب و نقله في زوايد الروضة عن نص الشافعي
قال الرافعي و قد قيل ان الثمن متوجه الى الدفتين لان كلام الله
لا يباع وقيل انه بدل من اجرة النسخ انتهي وقد تقدم اسناد
القولين الى ابن الحنفية و ابن جبيروفيه قول ثالث انه بدل منهما
معا اخرج ابن ابي داؤد عن الشعبي قال لا باس ببيع المصاحف
انما يبيع الورق و عمل يديه فرع قال الشيخ عزالدين بن عبد السلام
فى القواعد القيام للمصحف بدعة لم يعهد فى الصدر الاول و الصواب
ما قاله النووي فى التبيان من استحباب ذلك لما فيه من التعظيم
وعدم التهاون به فرع يستحب تقبيل المصحف لان عكرمة بن ابي
جهل كان يفعله و بالقياس على تقبيل الحجر الاسود ذكر بعضهم

بالوان مختلفة لانه من اعظم التخليط و التغيير للمرسوم وارى ان يكون الحركات و التنوين و التشديد و السكون و المد بالحمرة والهمزات بالصفرة و قال الجرجاني من اصحابنا فى الشافي من المذموم كتابة تفسير كلمات القرآن بين اسطره فائده كان الشكل فى الصدر الاول نقطا فالفتحة نقطة على اول الحرف و الضمة على آخره و الكسرة تحت اوله و عليه مشى الداني و الذي اشتهر الآن الضبط بالحركات الماخوذة من الحروف وهو الذي اخرجه الخليل وهو اكثر واوضح وعليه العمل فالفتح شكله مستطيله فوق الحرف والكسر كذلك تحته و الضم و اوصغرى فوقه و التنوين زيادة مثلها فان كان مظهر او ذلك قبل حرف حلق ركبت فوقها والا تابعت بينهما و يكتب الالف المحذوفة و المبدل منها في محلها حمرا و الهمزة المحذوفة تكتب همزة بلا حرف حمرا ايضا و على النون و التنوين قبل الباء علامة الاقلاب م حمرا وقبل الحلق سكون و تعرى عند الادغام و الاخفاء و يسكن كل مسكن و يعرى المدغم و يشدد ما بعده الا الطاء قبل التاء فيكتب عليها السكون نحو فرطت وسطه الممدود لا تجاوزه فائدة قال الحرني في غريب الحديث قول ابن مسعود جردوا القرآن يحتمل وجهين احدهما جردوه فى التلاوة لا تخلطوا به غيره و الثاني جردوه فى الخط من النقط و التعشير وقال البيهقي الا بين انه اراد لا تخلطوا به غيره من الكتب لان ما خلا القرآن من كتب الله انما يوخذ من اليهود و النصارى و ليسوبما مونين عليها فرع اخرج ابن ابي داؤد في كتاب المصاحف عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما انه كره اخذ الاجرة على كتابة المصحف و اخرج مثله عن ايوب السجستاني

رُوس الآيات اخرجه ابن ابي داؤد و قد اخرج ابو عبيد و غيره عن ابن مسعود رضي الله عنه قال جردوا القرآن ولا تخلطوه بشيء و اخرج عن النخعي انه كره نقط المصاحف و عن ابن سيرين انه كره النقط و الفواتح والخواتم و عن ابن مسعود ومجاهد انهما كرها التعشير و اخرج ابن ابي داؤد عن النخعي انه كان يكره العواشر و الفواتح و تصغير المصحف و ان يكتب فيه سورة كذا وكذا و اخرج عنه انه اتى المصحف مكتوب فيه سورة كذا كذا آية فقال اُمْحُ هذا فان ابن مسعود كان يكرهه و اخرج عن ابى العالية انه كان يكره الجمل فى المصحف و فاتحة سورة كذا و خاتمة سورة كذا و قال مالك لاباس بالنقط فى المصاحف التي يتعلم فيها الغلمان اما الامهات فلا و قال الحليمي يكره كتابة الاعشار و الاخماس و اسماء السور و عدد الآيات فيه لقوله جردوا القرآن و اما النقط فيجوز لانه ليس له صورة فيتوهم لاجلها ما ليس بقرآن قرآنا و انما هي دلالات على هيئة المقرو فلا يضر اثباتها لمن يحتاج اليها و قال البيهقي في اداب القرآن ان يفخم فيكتب مفرجا باحسن خط ولا يصغر ولا يقرمط حروفه ولا يخلط به ما ليس منه كعدد الآيات و السجدات و العشرات و الوقوف و اختلاف القرأت و معانى الآيات و قد اخرج ابن ابي داؤد عن الحسن و ابن سيرين انهما قالا لاباس بنقط المصاحف واخرج عن ربيعة بن ابي عبدالرحمن انه قال لا باس بشكلها وقال النووي نقط المصحف وشكله مستحب لانه صيانة له من اللحن و التحريف و قال ابن مجاهد ينبغي ان لا يشكل الا ما يشكل و قال الداني لا استجيز النقط بالسواد لما فيه من التغيير لصورة الرسم ولا استجيز جمع قرأت شتى في مصحف واحد

عن ابن سيرين انه كان يكره ان تمد الباء الى الميم حتى يكتب الصين و اخرج ابن ابي داؤد فى المصاحف عن ابن سيرين انه كره ان يكتب المصحف مشقا قيل لم قل لان فيه نقصا و يحرم كتابته بشئ نجس و اما بالذهب فهو حسن كما قاله الغزالي و اخرج ابو عبيد عن ابن عباس رضي الله عنهما و ابي ذر و ابى الدرداء انهم كرهوا ذلك واخرج عن ابن مسعود انه مر عليه بمصحف زين بالذهب فقال ان احسن ما زين به المصحف تلاوته بالحق قال اصحابنا ويكره كتابته على الحيطان والجدران وعلى السقوف اشد كراهة لانه يوطا و اخرج ابو عبيد عن عمر بن عبد العزيز قال لا تكتبوا القرآن حيث يوطا وهل يجوز كتابته بقلم غيرالعربي قال الزركشي لم ارفيه كلاما لاحد من العلماء قال و يحتمل الجواز لانه قد يحسنه من يقروه بالعربية و الاقرب المنع كما تحرم قرأته بغير لسان العرب و لقولهم القلم احد اللسانين و العرب لا تعرف قلما غيرالعربي و قد قال تعالى بلسان عربي مبين انتهى فائدة اخرج ابن ابي داؤد عن ابراهيم التيمي قال قال عبد الله لا يكتب المصاحف الا مصري قال ابن ابي داؤد معناها من اجل اللغات مسئلة اختلاف في لفظ المصحف و شكله و يقال اول من فعل ذلك ابو الاسود الدئلي بامر عبد الملك بن مروان و قيل الحسن البصري و يحيى بن يعمر و قيل نصر بن عاصم الليثي و اول من وضع الهمز و التشديد و الروم و الاشمام الخليل و قال قتادة بدؤا فنقطوا ثم خمسوا ثم عشروا و قال غيره اول ما احدثوا النقط عند آخرالآي ثم الفواتح و الخواتم و قال يحيى بن ابي كثير ما كانوا يعرفون شيئا مما احدث فى المصاحف الا النقط الثلاث على

فكتابته على نحو قرأته وكل ذلك وجد في مصاحف الامام فائدة كتبت فواتح السور على صورة الحروف انفسها لا على صورة النطق بها اكتفاء بشهرتها وقطعت حم عسق دون المص وكهيعص طردا للاولى باخواتها الستة فصل في اداب كتابته يستحب كتابة المصحف وتحسين كتابته وتبيينها وايضاحها وتحقيق الخط دون مشقه وتعليقه فيكره وكذا كتابته في الشئ الصغير اخرج ابو عبيد في فضائله عن عمرانه وجد مع رجل مصحفا قد كتبه بقلم دقيق فكره ذلك وضربه وقال عظموا كتاب الله قال وكان عمر اذا راى مصحفا عظيما سربه واخرج عبد الرزاق عن على انه كان يكره ان يتخذ المصاحف صغارا واخرج ابو عبيد عنه انه كره ان يكتب القرآن في الشئ الصغير واخرج هو والبيهقي في الشعب عن ابي حكيمة العبدي قال مربي علي وانا اكتب مصحفا فقال اجل قلمك فقضمت من قلمي قضمة ثم جعلت اكتب فقال نعم هكذا نوره كما نوره الله واخرج البيهقي عن على موقوفا قال تفرق رجل في بسم الله الرحمن الرحيم فغفراه واخرج ابو نعيم في تاريخ اصبهان وابن اشته في المصاحف من طريق ابان عن انس مرفوعا من كتب بسم الله الرحمن الرحيم فجوده غفرالله له واخرج ابن اشته عن عمر بن عبدالعزيز انه كتب الى عماله اذا كتب احدكم بسم الله الرحمن الرحيم فليمد الرحمن واخرج عن زيد بن ثابت انه كان يكره ان يكتب بسم الله الرحمن الرحيم ليس لها سين واخرج عن يزيد ابن ابي حبيب ان كاتب عمرو بن العاص كتب الى عمر فكتب بسم الله ولم يكتب لها سينا فضربه عمر فقيل له فيم ضربك اميرالمؤمنين قال ضربني في سين واخرج

و ابن ام الافي طه فتكتب الهمزة ح و اذا حذفت همزة ابن فصارت هكذا يبنؤم القاعدة السادسة في ما فيه قرأتان فكتب على احدهما و مرادنا غيرالشاذ من ذلك ملك يوم الدين يخدعون و وعدنا و الصعقة و الريح و تدرهم و تظهرون ولا تقتلوهم و نحوهما و لولا دفع فرهن طيرا في آل عمران و المائدة مضعفة و نحو عقدت ايمانكم الاولس لمستم قسية قيما للناس خطيئتكم فى الاعراف طيف حاش لله و سيعلم الكفر تزور زليه فلا تصحبني لا لتخذ مهد او حرام على قرية ان الله يدفع سكرى و ماهم بسكرى النطفة عظما فكسونا العظم سرجابل ادرك ولا تصعر ربنا بعد اسوره بلا الف فى الكل وقد قريت بها و بحذفها و غيابت الجب و انزل عليه ايت فى العنكبوت و ثمرت من اكمامها في فصلت و جملت فهم على بينت وهم فى الغرفت بالتاء و قد قريت بالجمع و الافراد و بقيت بالياء ولاهب بالالف و نقص الحق بلا يأ و اتوني زبر الحديد بالف فقط ننجى من نشأنج المؤمنين بنون واحدة و الصراط كيف و بصطه فى الاعراف و المصيطرون و مصيطر بالصاد ولا غير و قد تكتب الكلمة صالحة للقراتين نحو فكهين بلا الف و هي قرأة و على قرأتها هي محذوفة رسماً لانه جمع تصحيح فرع في ما كتب موافقا لقرأة شاذة من ذلك ان البقر تشبه علينا عهدوا مابقى من الربو قرى بضم البا و سكون الواو فلقتلوكم انما طيرهم طيره في عنقه تسقط سمرا و فصله في عامين عليهم ثياب سندس ختمه مسك فادخلي في عبدي فرع و اما القرأة المختلفة المشهورة بزيادة لا يحتملها الرسم نحوها نحو اومي و وصي و تجري تحتها و من تحتها و سيقولون الله و لله و ما عملت ايديهم و ما عملته

قدسمع ان شجرت الزقوم قرت عين وجنت نعيم بقيت الله و يا ابت
و اللات و مرضات و هيهات و ذات و ابنت و فطرت القاعدة فى الوصل
و الفصل توصل لا بالفتح الا عشرة ان لا اقول ان لا تقولوا فى الاعراف
ان لا ملجا و في هود ان لا اله ان لا تعبدوا الا الله اني اخاف ان
لا تشرك فى الحج ان لا تعبد وا في يس ان لا تعلوا فى الدخان ان
لا يشركن فى الممتحنة ان لا يدخلنها في ن و مما الا من ما ملكت
فى النساء و الروم من ما رزقناكم فى المنافقين و ممن مطلقا و عما
الا عن ما نهوا و مما بالكسر الاوان ما نريدك فى الرعد و اما بالفتح
مطلقا و عمن الا و يصرفه عن من فى النور عن من تولى فى النجم
و امن الا ام من يكون فى النساء ام من اسس ام من خلقنا فى
الصافات ام من ياتي امنا و الم بالكسر الا فان لم يستجيبوا فى القصص
و فيما الا احد عشر في ما فعلن الثاني فى البقرة ليبلوكم في ما فى
المائدة و الانعام قل لا اجد في ما في ما اشتهت فى الانبيأ في ما
افضتم في ما ههنا فى الشعرأ في ما رزقناكم فى الروم في ما هم
فيه في ما كانوا فيه كلا هما فى الزمر و ننشئكم في ما لا تعلمون وانما
الا ان ما تو عدون لات في الانعام و انما بالفتح الا ان ماتو عدون فى
الحج و كلما الا كل ماردوا الى الفتنة من كل ما سئلتموه و بئسما
الا مع اللام و نعما و مهما وربما و كانما و ويكان و تقطع حيث ما و ان
لم بالفتح و ان لن الا فى الكهف و القيامة و اين ما الا فاينما تولوا اينما
يوجهه و اختلف في اين ما تكونوا يدرككم اينما كنتم تعبدون فى
الشعرأ اينما ثقفوا فى الاحزاب و لكي لا الا في آل عمران و الحج
و الحديد و الثاني فى الاحزاب و يوم هم و نحو فمال و لات حين

آيتان فى المائدة و فى الزمر و شورى و الحشر شركؤا فى الانعام و شورى يا تيهم انبؤا فى الانعام و الشعر أعلموا فيه من عباده العلموا فيه من عباده العلموالضعفؤ في ابراهيم و غافر في اموالنا ما نشاؤ و ما دعوا في غافر شفعؤا فى الروم ان هذا لهو البلؤ بلؤا مبين فى الدخان براؤا منكم فكتب فى الكل بالوا وفان سكن ما قبله حذف هو ملؤ الارض دفء شوء الخبء ما الا لتنؤ و ان تبوا والسواى كذا استثناه القرأ قلت و عندي ان بهذه الثلاثة لا تستثنى لان الالف التي بعد الوا و ليست صورة الهمزة بل هى المزيدة بعد و او الفعل القاعدة الرابعة فى البدل يكتب بالوا و للتفخيم الف الصلوة والزكوة و الحيوة و الربو غير مضافات و الغدوة و مشكوة و النجوة و منوه و بالياء كل الف منقابة عنها نحو يتوفكم في اسم او فعل اتصل به ضمير ام لا لقي ساكنا ام لا و منه يا حسرتى يا اسفى الا تترا و كلتا و هداني و من عصاني و الاقصى و اقصى المدينة و من تولاه و طغا الماء سيماهم و الا ما قبلها ياء كالدنيا و الحوايا الا يحيى اسما وفعلا و يكتب بها الى وعلى و انى بمعني كيف ومتى و بلى وحتى و لدى الالدا الباب و يكتب بالالف الثلاثى الواوي اسما او فعلا نحو الصفا و عفا الاضحى كيف وقع و ما زكى منكم و دحها و تلها وضحها و سجى ويكتب بالالف نون التوكيد الخفيفة و اذا و بالنون كاين و بالهاء التانيث الا رحمت فى البقرة والاعراف و هود و مريم و الروم و الزخرف و نعمت فى البقرة و آل عمران و المائدة و ابراهيم و النحل و لقمان و فاطر و الطور و سنت فى الانفال و فاطر و ثاني غافر و امرات مع زوجها و تمت كلمت ربك الحسنى فنجعل لعنت الله والخامسة ان لعنت الله و معصيت في

ذى القربى بالياء مكان الكسرة و اولئك و نحوه بالواو مكان الضمة لقرب عهدهم بالخط الاول القاعدة الثالثة فى الهمزة يكتب الساكن بحرف حركة ما قبله اولا او وسطا او اخيرا نحو ايذن لي و اوتمن و الباسا و قرا و جئناك و هيئ و الموتون و تسوهم الافادرتم و ريا و الرويا وسطه فحذف فيها و كذا اول الامر بعد فا نحو فاتوا او وا و نحو و ايتمروا و المتحرك ان كان اولا او اتصل به حرف زائد فالالف مطلقا نحو ايوب اذا اولوا سا صرف فباى سا نزل الا مواضع اينكم لتشهدون اينكم لتاتون فى النمل و العنكبوت اينكم لتكفرون اينا لمخرجون فى النمل اينا لتاركوا اين لنا فى الشعرا ايذا متنا اين ذكرتم ايفكا ايمة ليلا لين يومئذ حينئذ فكتب فيها بالياقل او نبئكم و هولاء فكتب بالواو و ان كان وسطا فحرف حركته نحو سال سئل نقروه الا جزأ الثلاثه في يوسف ولا ملئن و امتلئت و اشئمزت و اطمئنوا فحذف فيها و الا ان فتح و كسر او ضم ما قبله فجرفه نحو الخاطية فوادك سنقرئك فان كان ما قبله ساكنا حذف هو نحو يسل لا تجروا الا النشاة و مويلا فى الكهف فان كان الفا و هو مفتوح فقد سبق انها تحذف لاجتماعها مع الف مثلها اذا لهمزج بصورتها نحو انبانا و حذف معها ايضا في ترنا في يوسف و الزخرف فان ضم اوكسر فلا نحو ابا وكم اباهم الا و قال او ليؤدهم الى اوليهم فى الانعام ان اوليوه فى الانفال نحو اوليوكم في فصلت وان كان بعده حرف يجانسه فقد سبق ايضا انه يحذف شنان خاسيين مستهزون و ان كان آخرا فحرف حركة ماقبله نحو سبا شاطي لولو الا مواضع تفتوأ تتفيوأ اتوكؤ لا تظموأ ما يعبوا يبدوا ينشوأ يذروأ وبنوا قال الملا الاول و قد افلح و الثلاثة فى النمل جزا وافي خمسة مواضع

على انه سهل عليه ويسارع فيه كما يسارع فى الخير بل اثبات الشر اليه من جهة ذاته اقرب اليه من الخير واما ويمح الله الباطل فللاشارة الى سرعة ذهابه واضمحلاله واما يدع الداع فللاشارة الى سرعة الدعا وسرعة اجابة المدعوين واما الاخيرة فللاشارة الى سرعة الفعل واجابة الزبانية وقوة البطش القاعدة الثانية فى الزيادة زيدت الف بعد الواو اخر اسم مجموع نحو بنوا اسرائيل ملاقوا ربهم اولوا الالباب بخلاف المفرد نحو لذ وعلم الا الربوا وان امروا اهلك واخر فعل مفردا وجمع مرفوع او منصوب الاجاوا وبا واحيث وقعا وعتو عتوا فان فاوا والذين تبوا الدار عسى الله ان يعفو عنهم فى النساء سعوا في آياتنا في سبا وبعد الهمزة المرسومة وا وا نحو تفتوا وفي مائة ومايتين والظنونا والرسولا والسبيلا ولا تقولن لشاى ولا ذبحنه ولا وضعوا ولالى الله ولا الى الجحيم ولا تياسوا انه لا تيأس افلم يأيس وبين الياء والجيم في جاى فى الزمر وكتب ابن بالهمزة مطلقا وزيدت يا في نباى المرسلين وملايه وملايهم ومن اناء الليل في طه من تلقاى نفسي من وراى حجاب في شوري وايتاى ذى القربى فى النحل بلقاى الآخرة فى الروم بايكم المفتون بذينها بايدا فاين مات افاين مت وزيدت واو في اولوا وفروعه ساوريكم قال المراكشي وانما زيدت هذه الاحرف في هذه الكلمات نحو جاى ونباى ونحوهما للتهويل والتفخيم والتهديد والوعيد كما زيدت في بايد تعظيما لقوة الله التي بنا بها السماء التي لا يشابهها قوة وقال الكرماني فى العجائب كانت صورة الفتحة فى الخطوط قبل الخط العربي الفا وصورة الضمة واوا وصورة الكسرة ياء فكتب لا اوضعوا بالالف مكان الفتحة وايتاى

و المهتدى الا فى الاعراف و تحذف الواو مع اخرى نحو لا يستون فاوا و اذا المودة يوسا و يحذف اللام مدغمة في مثلها نحو اليل والذي الا الله و اللهم و اللعنة و فروعه و اللهو واللغو واللؤلؤ و اللات و اللمم واللهب و اللطيف و اللوامة فرع فى الحذف الذي لم يدخل تحت القاعدة حذف الالف من مُلك الملك ذرية ضعافا مرغما خدعهم آكلون للسحت بلغ ليجدلوكم و بطل ما كانوا فى الاعراف و هود الميعد فى الانفال تربا فى الرعد و النمل وعم جددا يسرعون آيه المؤمنون آيه الساحر آيه الثقلان ام موسى فرغا و هل يجزي من كذب لقسية فى الزمر اثره عهد عليه الله ولا كذبا و خدفت الياء من ابراهيم فى البقرة و الداع اذا دعان و من اتبعن و سوف يوت الله و قد هدان و ننج المؤمنين فلا تسلن ما يوم يات لا تكلم حتى توتون موثقا تفندون المتعال متاب ماب عقاب فى الرعد و غافروص و فيها عذاب اشركتمون من قبل و تقبل و عالين اخرتن ان يهدين ان ترن ان يوتين ان تعلمن نبغ الحسنة فى الكهف ان لا تتبعن في طه و الباد و ان الله لهاد ان يحضرون رب ارجعون ولا تكلمون يسقين يشفين يحيين و دالنمل اتمدونن فما اتان تشهدون بهاد العمى كا لجواب ان يردن الرحمن لا ينقذون فاسمعون لتردين صال الجحيم التلاق التناد ترحمون فاعتزلون يناد المناد يعبدون يطعمون تغن الداع مرتين فى القمر ليسر اكرمن اهانن ولى دين و حذفت الواو من و يدع الانسان ويمح الله في شوري يوم يدع الداع سندع الزبانية قال المراكشي و السرفي حذفها من هذه الاربعة التنبيه على سرعة و قوع الفعل و سهولته على الفاعل و شدة قبول المنفعل المتاثريه فى الوجود اما و يدع الانسان فيدل

ولا ان تلاها همزة نحو الصائمين و الصائمات او تشديد نحو الضالين
و الصافات فان كان في كلمة الف ثانية حذفت ايضا الاسبع سموات
فى فصلت و من كل جمع على مفاعل او شبهه نحو المسجد و مسكن
و اليتمى و النصرى و المسكين و الخبيث و الملئكه و الثانية من
خطايا كيف وقع و من كل عدد كثلث و ثلث و سحر الا في آخر
الذاريات فان ثنى فالغاه و القيمة و الشيطن و سلطن و تعلى واللتي
و الليى و خلق و علم و بقدر و الاصحب و الانهر و الكتب و الثالثة
الاربعة مواضع بكل اجل كتاب كتاب معلوم كتاب ربك فى الكهف
كتاب مبين فى النمل و من البسملة وبسم الله مجراها و مرساها و من
اول الامر من سال و من كل ما اجتمع فيه الفان او ثلاثة نحوا آدم
اخرا اشفقتم انذرتهم غشا او من راكيف وقع الامارى و لقد راى
فى النجم و الاناى و الان الا فمن يستمع الآن والالفان من الملائكة الا
فى الحجروق و يحذف الياء من كل منقوص منون رفعا و جرا نحو
باع ولا عاد و المضاف لها اذا نودى الا يعبادى الذين اسرفوا يعبادى
الذين امنوا فى العنكبوت اولم ينادِ الاقل لعبادي اسربعبادي في
طه وحم فادخلي في عبادي وادخلي جنتي و مع مثلها نحو ولي
و الحواريين و متكيين الا عليين و يهيى و هيي و مكر السي و سييه
و السييه و افعيينا و يحيى مع ضمير لا مفردا وحيث وقع اطيعون
اتقون خافون ارهبون فارسلون وعبدون الافي يس واخشون الافي البقرة
و كيدون الافكيدوني جميعا و اتبعون الا في آل عمران و طه ولا تنظرون
ولا تستعجلون ولا تكفرون ولا تقربون ولا تخزون ولا تفضحون و يهدين
و سيهدين و كذبون يقتلون ان تكذبون و وعيدى و الجوارى و بالوادى

مالك عن الحروف فى القرآن مثل الواو والالف الاترى ان يغير اذا وجد فيه كذلك قال لا قال ابو عمرو يعني الواو والالف المزيدتين فى الرسم المعد ومتين فى اللفظ نحو اولوا وقال الامام احمد يحرم مخالفة خط مصحف عثمان في واو اويا او الف اوغير ذلك وقال البيهقي في شعب الايمان من كتب مصحفا فينبغي ان يحافظ على الهجاءالذي كتبوا فيه تلك المصاحف ولا يخالفهم فيه ولا يغير مما كتبوه شيئا فانهم كانوا اكثر علما واصدق قلبا ولسانا واعظم امانة منا فلا ينبغي ان نظن بانفسنا استدراكا عليهم قلت وينحصر امر الرسم فى الحذف والزيادة والهمز والبدل والوصل والفصل ومافيه قرأتان فكتب على احداهما انتهى القاعدة الاولى فى الحذف يحذف الالف من ياء النداء نحو يٰايها الناس يٰادم ويٰرب يٰعبادي وهاء التنبيه نحو هٰلولاء هٰانتم و نافع ضمير نحو انجيٰنٰكم اتيٰنٰه و من ذلك و اولٰئك ولٰكن و تبٰرك و فروع الاربعة و اللّٰه و الٰه كيف وقع و الرحمٰن و سبحٰن كيف وقع الاقل سبحٰن ربي و بعد لام نحو خليٰف خلٰف رسول الله سٰلم علٰم ايلٰف تلٰقو وبين لامين نحو الكلٰله الصلٰلة خلٰل للدارللذي ببكة و من كل علم زائد على ثلاثة كابرٰهيم و صٰلح و ميكٰل الا جالوت و طالوت و ياجوج و ماجوج و داوٰد لحذف و اوه و اسرائيل لحذف يائه و اختلف في هروت و مروت و هامان و قارون و من كل مثنى اسم او فعل ان لم يتطرف نحو رجلان يعلمان اضلٰنا ان هذان الا بما قدمت يداك و من كل جمع تصحيح لمذكر او مونث نحو اللٰعنون ملٰقوا ربهم الا طاغون فى الذاريات و الطور و كراما كاتبين و الا روضات في شورى و آيات للسائلين و مكر في آياتنا و آياتنا بينٰت في يونس

فى الخط بحسب اختلاف احوال معاني كلماتها و سا شيرهنا الى مقاصد ذلك ان شاء الله تعالى اخرج ابن اشته في كتاب المصاحف بسنده عن كعب الاحبار قال اول من وضع العربي و السرياني و الكتب كلها آدم صلى الله عليه و سلم قبل موته بثلاثمائة سنة كتبها فى الطين ثم طبخه فلما اصاب الارض الغرق اصاب كل قوم كتابهم فكتبوه فكان اسماعيل ابن ابراهيم عليهما الصلوة والسلام اصاب كتاب العرب ثم إخرج من طريق عكرمة عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال اول من وضع الكتاب العربي اسماعيل وضع الكتاب على لفظه و منطقه ثم جعله كتابا واحدا مثل الموصول حتى فرق بينه ولده يعني انه وصل فيه جميع الكلمات ليس بين الحروف فرق هكذا بسم الله الرحمن الرحيم ثم فرقه من بينه هميسع و قيذر ثم اخرج من طريق سعيد ابن جبير عن ابن عباس قال اول كتاب انزله الله من السماء ابو جاد و قال ابن فارس الذي نقوله ان الخط توقيفي لقوله علم بالقلم علم الانسان مالم يعلم و قال نٓ و القلم و ما يسطرون و ان هذه الحروف داخلة فى الاسماء التي اعلم الله آدم وقد ورد في امر ابي جاد و مبتداء الكتابة اخبار كثيرة ليس هذا محلها وقد بسطتها في تاليف مفرد فصـــل القاعدة العربية ان اللفظ يكتب بحروف هجائه مع مراعاة الابتدأ به و الوقف عليه وقد مهد النحاة له اصولا و قواعد وقد خالفها في بعض الحروف خط مصحف الامام و قال اشهب سئل مالك هل كتب المصحف على ما احدثه الناس من الهجاء فقال لا الا على الكتبة الاولى رواه الداني فى المقنع ثم قال و لا مخالف له من علماء الامة و قال في موضع آخر سئل

ام ينزل في القرآن ولا غيره من الكتب مثلها لتضمنها جميع معاني الكتاب فقد اشتملت على ذكر اصول اسماء الله و مجامعها و اثبات المعاد و ذكر التوحيد و الافتقار الى الرب في طلب الاعانة به و الهداية منه وذكر افضل الدعا و هوطلب الهداية الى الصراط المستقيم المتضمن كمال معرفته و توحيده وعبادته بفعل ما امربه و اجتناب ما نهي عنه و الاستقامة عليه و لتضمنها ذكر اوصاف الخلايق و قسمتهم الى منعم عليه لمعرفة بالحق و العمل به و مغضوب عليه لعدو له عن الحق بعد معرفة وضال بعدم معرفة له مع ما تضمنه من اثبات القدر و الشرع و الاسماء و المعاد و التوبة و تزكية النفس و اصلاح القلب و الرد على جميع اهل البدع و حقيق لسورة هذا بعض شانها ان يستشفي بها من كل داء انتهي مسئلة قال النووي في شرح المهذب لو كتب القرآن في اناء ثم غسله وسقاه المريض فقال الحسن البصري و مجاهد و ابو قلابة و الاوزاعي لا باس به و كرهه النخعي قال و مقتضى مذهبنا انه لا باس به فقد قال القاضي حسين و البغوي و غيرهما لو كتب قرانا على حلوى و طعام فلا باس باكله انتهى قال الزركشي و ممن صرح بالجواز في مسئلة الاناء للعماد البنهي مع تصريحه بانه لا يجوز ابتلاع و رقة فيها آية لكن افتي ابن عبد السلام بالمنع من الشرب ايضا لانه يلاقيه نجاسة الباطن و فيه نظر النوع السادس و السبعون في مرسوم الخط و آداب كتابة افرده بالتصنيف خلائق من المتقدمين و المتاخرين منهم ابو عمر و الداني و الف في توجيهه ما خالف قواعد الخط منه ابو العباس المراكشي كتابا سماه عنوان الدليل في مرسوم خط التنزيل بين فيه ان هذه الاحرف انما اختلف حالها

صلى الله عليه وسلم كان يكره الرقي الا بالمعوذات و اخرج الترمذي و النسائي عن ابي سعيد كان رسول الله صلى الله عليه و سلم يتعوذ من الجان و عين الانسان حتى نزلت المعوذات فاخذ بها وترك ما سواها فهذا ما وقفت عليه في الخواص من الاحاديث التي لم تصل الى حد الوضع و من الموقوفات عن الصحابة و التابعين و اماما لم يرد به اثر فقد ذكر الناس من ذلك كثيرا جدا الله اعلم بصحته ومن لطيفة ما حكاه ابن الجوزي عن ابن ناصر عن شيوخه عن ميمونة بنت شا قول البغدادية قالت اذا نا جارلنا فصليت ركعتين و قرأت من فاتحة كل سورة آية حتى ختمت القرآن وقلت اللهم اكفنا امره ثم نمت وفتحت عيني و اذا به قد نزل وقت السحر فزلت قدمه فسقط و مات تنبيه قال ابن التين الرقى بالمعوذات و غيرها من اسماء الله هو الطب الروحاني اذا كان على لسان الابرار من الخلق حصل الشفا باذن الله فلما عز هذا النوع فزع الناس الى الطب الجسماني قلت و يشير الى هذا قوله صلى الله عليه و سلم لوان رجلا موقنا قرأبها على جبل لزال و قال القرطبي تجوز الرقية بكلام الله واسمائه فان كان ما ثورا استحب و قال الربيع سالت الشافعي عن الرقية فقال لا باس ان يرقي بكتاب الله وبما يعرف من ذكر الله و قال ابن بطال في المعوذات سر ليس في غيرها من القرآن لما اشتملت عليه من جوامع الدعاء التي تعم اكثر المكروهات من السحر و الحسد وشر الشيطان و وسوسته و غير ذلك فلهذا كان صلى الله عليه و سلم يكتفي بها و قال ابن القيم في حديث الرقية بالفاتحة اذا ثبت ان لبعض الكلام خواص و منافع فما الظن بكلام رب العالمين ثم بالفاتحة التي

شاهد مرسل عند الدارمي و في المستدرك عن ابي جعفر محمد ابن علي قال من وجد في قلبه قسوة فليكتب يس بجام بزعفران ثم يشربه و اخرج ابن الضريس عن سعيد بن جبيرانه قرأ على رجل مجنون سورة يس فبراء و اخرج ايضا عن يحيى ابن ابي كثير قال من قرايس اذا اصبح لم يزل في فرح حتى يمسي و من قرأها اذا امسى لم يزل فرح حتى يصبح اخبرنا من جرب ذاك و اخرج الترمذي عن ابي هريرة من قرأ الدخان و اول غافر الى اليه المصير و آية الكرسي حين يمسي حفظ بها حتى يصبح و من قرأها حين يصبح حفظ بها حتى يمسي و رواه الدارمي بلفظ لم يرشيأ يكرهه و اخرج البيهقي و الحارث ابن ابي اسامة و ابو عبيد عن ابن مسعود مرفوعا من قرأ كل ليلة سورة الواقعة لم تصبه فاقة ابدا و اخرج البيهقي في الدعوات عن ابن عباس مرفوعا في المرأة يعسره عليها قال يكتب في قرطاس ثم تسقى بسم الله الذي لا اله الا هو الحليم الكريم سبحان الله و تعالى رب العرش العظيم الحمد لله رب العالمين كانهم يوم يرونها لم يلبثوا الا عشية اوضحاها كانهم يوم يرون ما يوعدون لم يلبثوا الاساعة من نهار بلاغ فهل يهلك الا القوم الفاسقون و اخرج ابو داود عن ابن عباس رضي الله عنهما و قال اذا وجدت في نفسك شيئا يعنى الوسوسة فقل هو الاول و الآخر والظاهر و الباطن و هو بكل شيء عليم و اخرج الطبراني عن علي قال لدغت النبي صلى الله عليه و سلم عقرب فدعا بماء و ملح و جعل يمسح عليها و يقرأ قل يايها الكافرون و قل اعوذ برب الفلق و قل اعوذ برب الناس و اخرج ابو داؤد و النسائي و ابن حبان و الحاكم عن ابن مسعود ان النبي

امر الا تمثل لي جبريل عليه الصلاة و السلام فقال يا محمد قل توكلت على الحي الذي لا يموت و الحمد لله الذي لم يتخذ ولدا و لم يكن له شريك فى الملك و لم يكن له ولي من الذل و كبره تكبيرا و اخرج الصابوني فى المأتين من حديث ابن عباس مرفوعا هذه الآية امان من السرق قل ادعوا الله او ادعوا الرحمن الى آخر السورة و اخرج البيهقي فى الدعوات من حديث انس ما انعم الله على عبد نعمة في اهل و مال او ولد فيقول ما شاء الله لا قوة الا بالله فيرى فيه افة دون الموت و اخرج الدارمي و غيره من طريق عبدة ابن ابي لبابه عن زرين بن حبش قال من قراء آخر سورة الكهف لساعة يريد ان يقومها من الليل قامها قال عبدة فجربناه فوجدناه كذلك و اخرج الترمذي و الحاكم من حديث سعد ابن ابي وقاص دعوة ذى النون اذا دعا و هو في بطن الحوت لا اله الا انت سبحانك اني كنت من الظالمين لم يدع بها رجل مسلم في شى قط الا استجاب الله له و عند ابن السني اني لا اعلم كلمة لا يقولها مكروب الافرج عنه كلمة اخي يونس فنادي فى الظلمات ان لا اله الا انت سبحانك اني كنت من الظالمين و اخرج البيهقي و ابن السني و ابو عبيد عن ابن مسعود انه قرأ في اذن مبتلى فافاق فقال رسول الله صلى الله عليه و سلم ما قرات في اذنه قال افحسبتم انما خلقناكم عبثا الى آخر السورة فقال لو ان رجلا موقنا قرأبها على جبل لزال و اخرج الديلمي و ابو الشيخ ابن حيان في فضائله من حديث ابي ذر ما من ميت يموت فيقرأ عنده يس الاهون الله عليه و اخرج المحاملي في اماليه من حديث عبد الله ابن الزبير من جعل يس امام حاجة قضيت له و له

مما يحبهما الله الآتيان من آخر سورة البقرة و اخرج الطبراني عن معاذ ان النبي صلى الله عليه و سلم قال له الا اعلمك دعاء تدعوبه لو كان عليك من الدين صبر اداه الله عنك قل اللهم مالك الملك توتى الملك من تشاء الى قوله بغير حساب رحمان الدنيا و رحيم الآخرة تعطي من تشاء منهما و تمنع من تشاء ارحمني رحمة تغنني بها عن رحمة من سواك و اخرج البيهقي فى الدعوات عن ابن عباس اذا استصعبت دابة احدكم او كانت شموسا فليقرأ هذه الآية في اذنيها افغير دين الله يبغون و له اسلم من فى السموات و الارض طوعا و كرها و اليه ترجعون و اخرج البيهقي فى الشعب بسند فيه من لا يعرف عن علي موقوفا سورة الانعام ما قرئت على عليل الاشفاه الله و اخرج ابن السني عن فاطمة رضي الله عنها ان رسول الله صلى الله عليه و سلم لما دنى اولادها امر ام سلمة و زينب بنت جحش ان ياتيا فيقرأ عندها آية الكرسي و ان ربكم الله الآية و يعوذ لها بالمعوذتين و اخرج ابن السني ايضا من حديث الحسين ابن علي رضي الله تعالى عنهما امان لامتي من الغرق اذا اركبوا ان يقولوا بسم الله مجراها و مرساها ان ربي لغفور رحيم و ما قدروا الله حق قدره الآية و اخرج ابن ابي حاتم عن ليث قال بلغني ان هولاء الآيات شفاء من السحر يقرأ في اناء فيه ماء ثم يصب على راس المسحور الآية التي في سورة يونس عليه الصلوة و السلام فلما القوا قال موسى ما جئتم به السحر الى قوله المجرمون و قوله فوقع الحق وبطل ما كانوا يعملون الى آخر اربع آيات و قوله انما صنعوا كيد ساحر الآية و اخرج الحاكم و غيره من حديث ابي هريرة ماكربني

لا اله الا هو و آية من الاعراف ان ربكم الله و آخر سورة المؤمنين فتعالى الله الملك الحق و آية من سورة الجن و انه تعالى جد ربنا و عشر آيات من سورة الصافات و ثلاث آيات من آخر سورة الحشر و قل هو الله احد و المعوذتين فقال الرجل كانه لم يشك قط و اخرج الدارمي عن ابن مسعود موقوفا من قرأ اربع آيات من اول سورة البقرة و آية الكرسي وآيتين بعد آية الكرسي و ثلاثا من آخر سورة البقرة لم يقربه ولا اهله يومئذ شيطان ولا شي يكرهه ولا تقرأ على مجنون الا افاق و اخرج البخاري عن ابي هريرة رضي الله عنه و في قصة الصدقة ان الجنى قال له اذا اويت الى فراشك فاقرا آية الكرسي فانك لن تزال عليك من الله حافظ ولا يقربك شيطان حتى تصبح فقال النبي صلى الله عليه وسلم ما انه صدقك و هو كذوب و اخرج المحاملي في فوائده عن ابن مسعود قال قال رجل يا رسول الله علمني شيئا ينفعني الله به قال اقرأ آية الكرسي فانه يحفظك وذريتك و يحفظ دارك حتى الدويرات حول دارك و اخرج الدينوري في المجالسة عن الحسن ان النبي صلى الله عليه وسلم قال ان جبريل عليه الصلوة و السلام اتاني فقال ان عفريتا من الجن يكيدك فاذا اويت الى فراشك فاقرأ آية الكرسي وفي الفردوس من حديث ابي قتادة من قرأ آية الكرسي عند الكرب اغاثه الله و اخرج الدارمي عن المغيرة ابن سبيع و كان من اصحاب عبد الله قال من قرأ عشر آيات من البقرة عند منامه لم ينس القرآن اربعة من اولها و آية الكرسي و آيتان بعدها و ثلاث من آخرها و اخرج الديلمي من حديث ابي هريرة رضي الله تعالى عنه مرفوعا آيتان هما قرآن و هما يشفيان و هما

و اخرج ابن مردويه عن ابي سعيد الخدري قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال اني اشتكي صدري قال اقرأ القرآن يقول الله و شفاء لما فى الصدور و اخرج البيهقي و غيره من حديث عبد الله ابن جابر في فاتحة الكتاب شفاء من كل داء و اخرج الحافي في فوائده من حديث جابر ابن عبد الله فاتحة الكتاب شفاء من كل شئ الا السام و السام الموت و اخرج سعيد ابن منصور و البيهقي و غيرهما من حديث ابي سعيد الخدري فاتحة الكتاب شفاء من السم و اخرج البخاري من حديثه ايضا قال كنا في مسير لنا فنزلنا فجأت جارية فقالت ان سيد الحي سليم فهل معكم راق فقال معها رجل فرقاه بام الكتاب فبرأ فذكر للنبي صلى الله عليه وسلم فقال وما كان يدريه انها رقية و اخرج الطبراني فى الاوسط عن السائب ابن يزيد قال عوذني رسول الله صلى الله عليه وسلم بفاتحة الكتاب تفلا و اخرج البزار من حديث انس اذا وضعت جنبك على الفرش و قرأت فاتحة الكتاب و قل هو الله احد فقد امنت كل شيء الا الموت و اخرج مسلم من حديث ابي هريرة ان البيت الذي تقرا فيه البقرة لا يدخله الشيطان و اخرج عبد الله ابن احمد في زوائد المسند بسند حسن عن ابيّ ابن كعب قال كنت عند النبي صلى الله عليه وسلم فجاء اعرابي فقال يا نبي الله ان لي اخا به وجع قال وما وجعه قال به لم قال فأتني به فوضعه بين يديه فعوذه النبي صلى الله عليه و سلم بفاتحة الكتاب واربع آيات من اول آية من سورة البقرة وهاتين الآيتين والهكم اله واحد وآية الكرسي و ثلاث آيات من آخر سورة البقرة و آية من آل عمران شهد الله انه

القرآن آيتان جمعت كل منهما حروف المعجم ثم انزل عليكم من بعد انعم الآية محمد رسول الآية وليس فيه حاء بعد حابلا حاجز الا في موضعين عقدة النكاح حتى لا ابرح حتى ولا كا فان كذلك الا مناسككم ما سلككم ولا غيفان كذلك الا ومن يتبغ غير الاسلام دينا ولا آية فيها ثلاثة وعشرون كافا الا آية الدين ولا آيتان فيهما ثلاثة عشر وقفا الا آيتا المواريث ولا ثلاث آيات فيها عشروا وات الا والعصر الى آخرها ولا سورة احدي وخمسون آية فيها اثنان وخمسون وقفا الا سورة الرحمن ذكر ذلك ابن خالويه وقال ابو عبد الله الخبازى المقري اول ماوردت على السلطان محمود ابن ملكشاه سألني عن آية اولها غين فقلت ثلاثة غافر الذنب وآتيان بحلف غلبت الروم غير المغضوب عليهم ونقلت من خط شيخ الاسلام ابن حجر فى القرآن اربع شدات متوالية في قوله نسيا رب السموات في بحر لجي يغشاه قولا من رب رحيم ولقد زينا السماء الدنيا والله اعلم النوع الخامس والسبعون في خواص القرآن افرده بالتصنيف جماعة منهم التميمي وحجة الاسلام الغزالي ومن المتأخرين اليافعي وغالب ما يذكر في ذلك كان مستنده تجارب الصالحين وها انا ابدا بما ورد من ذلك فى الحديث ثم التقط عيونا مما ذكره السلف والصالحون اخرج ابن ماجة وغيره من حديث ابن مسعود عليكم بالشفائين العسل والقرآن واخرج ايضا من حديث علي خير الدواء القرآن واخرج ابو عبيد عن طلحة بن مصرف قال كان يقال اذا قرى القرآن عند المريض وجد لذلك خفة واخرج البيهقي فى الشعب عن واثلة ابن الاسقع ان رجلا شكى الى النبي صلى الله عليه وسلم وجع حلقه قال عليك بقرأة القرآن

اخرها و المدني من راس خمس عشرة الى راس الثلاثين و الليلي خمس آيات من اولها و النهاري من راس تسع آيات الى راس اثنتي عشرة و الحضري الى راس العشرين قلت و السفري اولها و الناسخ اذن للذين يقاتلون الآية و المنسوخ الله يحكم بينكم الآية نسخها آية السيف و قوله و ما ارسلنا من قبلك الآية نسخها سنقرؤك فلا تنسى و قال الكرماني ذكر المفسرون ان قوله تعالى يا ايها الذين آمنوا شهادة بينكم الآية من اشكل آية في القرآن حكما و اعرابا و معنى و قال غيره قوله تعالى يا بني آدم خذوا زينتكم الآية جمعت اصول احكام الشريعة كلها الامر و النهي و الاباحة و الخبر و قال الكرماني في العجائب في قوله تعالى نحن نقص عليك احسن القصص قيل هي قصة يوسف عليه الصلوة و السلام و سماها احسن القصص لاشتمالها على ذكر حاسد و محسود و مالك و مملوك و شاهد و مشهود و عاشق و معشوق و حبس و اطلاق و سجن و خلاص و خصب و جدب و غيرها مما يعجز عن بيانها طوق الخلق و قال ذكر ابو عبيدة عن روية ما في القرآن اعرب من قوله فاصدع بما تومر و قال ابن خالويه في كتاب ليس في كلام العرب لفظ جمع لغات ما النافية الا حرف واحد في القرآن جمع اللغات الثلاث و هو قوله ما هن امهاتهم قرأ الجمهور بالنصب وقرأ بعضهم بالرفع و قرأ ابن مسعود ما هن بامهاتهم بالباء قال و ليس في القرآن لفظ على افعوعل الا في قرأة ابن عباس رضي الله تعالى عنهما الا انهم يثنوني صدورهم و قال بعضهم اطول سورة في القرآن البقرة و اقصرها الكوثر و اطول آية فيه آية الدين و اقصر آية فيه و الضحى و الفجر و اطول الكلمة فيه رسما فاسقينا كموه وفي

فلن نزيدكم الا عذابا وفي صحيح البخاري عن سفيان قال ما فى القرآن آية اشد على من لستم على شئ حتى تقيموا التوراة و الانجيل وما انزل اليكم من ربكم و اخرج ابن جرير عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال ما فى القرآن اشد توبيخا من هذه الآية لولا ينهاهم الربانيون و الاحبار عن قولهم الاثم واكلهم السحت الآية و اخرج ابن المبارك في كتاب الزهد عن الضحاك ابن مزاحم في قوله لولا ينهاهم الربانيون و الاحبار عن قولهم الاثم و اكلهم السحت قال والله مافى القرآن آية اخوف عندي منها و اخرج ابن ابي حاتم عن الحسن قال ما نزلت على النبي صلى الله عليه وسلم آية كانت اشد عليه من قوله و تخفي في نفسك ما الله مبديه الآية و اخرج ابن المنذر عن ابن سيرين قال لم يكن عندهم شئ اخوف من هذه الآية و من الناس من يقول آمنا بالله و باليوم الآخر وماهم بمؤمنين و عن ابي حنيفة اخوف آية فى القرآن و اتقوا النار التي اعدت للكافرين و قال غيره سنفرغ لكم ايه الثقلان و لهذا قال بعضهم لو سمعت هذه الكلمة من حفير الحارة لم انم و فى النوادر لابن ابي زيد قال مالك اشد آية على اهل الاهواء قوله تعالى يوم تبيض وجوه وتسود وجوه الآية وتاولها على اهل الاهواء انتهى و اخرج ابن ابي حاتم عن ابى العالية قال آيتان في كتاب الله ما اشدهما على من يجادل فيه ما يجادل في آيات الله الا الذين كفروا و ان الذين اختلفوا فى الكتاب لفي شقاق بعيد و قال السعيدى سورة الحج من اعاجيب القرآن فيها مكي ومدني و حضري و سفري و ليلي و نهاري و حربي و سلمي و ناسخ ومنسوخ فالمكي من راس الثلاثين الى

نفسي بيده لقد اعطانا الله آية لهي احب اليّ من الدنيا و ما فيها
و الذين اذا فعلوا فاحشة الآية و ما اخرجه ابن ابى الدنيا في كتاب
التوبة عن ابن عباس رضي الله عنهما قال ثماني آيات نزلت في
سورة النساء خير لهذه الامة مما طلعت عليه الشمس و غربت او لهن
يريد الله ليبين لكم و يهديكم سنن الذين من قبلكم و يتوب عليكم
و الثانية و الله يريد ان يتوب عليكم و يريد الذين يتبعون الآية و الثالثة
يريد الله ان يخفف عنكم الآية و الرابعة ان تجتنبوا كباير ما تنهون
عنه الآية و الخامسة ان الله لايظلم مثقال ذرة الآية و السادسة و من
يعمل سوءا او يظلم نفسه ثم يستغفر الله الآية و السابعة ان الله لا يغفر
ان يشرك به الآية و الثامنة و الذين امنوا بالله و رسله و لم يفرقوا بين
احد منهم الاية و ما اخرجه ابن ابي حاتم عن عكرمة قال سئل ابن
عباس رضي الله تعالى عنهما اى آية ارخص في كتاب الله قال
قوله ان الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا على شهادة ان لا اله الا الله
اشداية اخرج ابن راهويه في مسنده ابنأنا ابو عمر العقدى حدثنا
عبد الجليل ابن عطية عن محمد ابن المنتشر قال قال رجل لعمر
ابن الخطاب رضي الله تعالى عنه اني لا اعرف اشد آية في كتاب
الله فاهوى عمر فضربه بالدرة و قال مالك نقيت عنها حتى علمتها
ماهي قال من يعمل سوء يجزبه فما منا احد يعمل سوءا الاجزي به
فقال عمر لبثنا حين نزلت ما ينفعنا طعام ولا شراب حتى انزل الله
بعد ذلك ورخص و من يعمل سوءا او يظلم نفسه ثم يستغفر الله يجد
الله غفورا رحيما و اخرج ان ابي حاتم عن الحسن قال سألت ابابرزة
الاسلمي عن اشد آية في كتاب الله على اهل النار فقال فذوقوا

قال سألت الشافعي ايّ آية ارجى قال قوله يتيما ذا مقربه او مسكينا ذا متربه قال وسألته عن ارجى حديث للمؤمن قال اذا كان يوم القيامة يدفع الى كل مسلم رجل من الكفار فداؤه العاشر قل كل يعمل على شاكلته الحادي عشر وهل نجازي الا الكفور الثاني عشر انا قد اوحى الينا ان العذاب على من كذب و تولى حكاه الكرماني في كتاب العجائب الثالث عشر وما اصابكم من مصيبة فبما كسبت ايديكم ويعفو عن كثير حكي هذه الاقوال الاربعة النووي في رؤس المسائل والاخير ثابت عن على ففي مسند احمد عنه قال الا اخبركم بافضل آية في كتاب الله حدثنا بها رسول الله صلى الله عليه وسلم وما اصابكم من مصيبة فبما كسبت ايديكم ويعفو عن كثير وسا فسرها لك يا عليّ ما اصابكم من مرض او عقوبة او بلاء في الدنيا فبما كسبت ايديكم والله اكرم من ان يثنى العقوبة وما عفا الله عنه في الدنيا فالله احلم من ان يعود بعد عفوه الرابع عشر قل للذين كفروا ان ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف قال الشبلي اذا كان الله اذن للكافر بدخول الباب اذا اتي بالتوحيد والشهادة افتراه يخرج الداخل فيها والمقيم عليها الخامس عشر آية الدين ووجهه ان الله ارشد عباده الى مصالحهم الدنيوية حتى انتهت العناية بمصالحهم الى امرهم بكتابة الدين الكثير والحقير فمقتضي ذلك ترجي عفوه عنهم لظهور العناية العظيمة بهم قلت ويلحق بهذا ما اخرجه ابن المنذر عن ابن مسعود انه ذكر عنده بنوا اسرائيل وما فضلهم الله به فقال كان بنوا اسرائيل اذا اذنب احدهم ذنبا اصبح وقد كتبت كفارته على اسكفة بابه وجعلت كفارة ذنوبكم قولا تقولونه تستغفرون الله فيغفرلكم والذي

ابن عباس و ابن عمرو فقال ابن عباس رضي الله عنهما ايّ آية في كتاب الله ارجى فقال عبد الله ابن عمرو قل يا عبادى الذين اسرفوا على انفسهم الاية فقال ابن عباس لكن قول الله و اذ قال ابراهيم رب ارني كيف تحيى الموتى قال اولم تومن قال بلى و لكن ليطمئن قلبي قال فرضي منه بقوله بلى قال فهذا لما يعترض فى الصدر مما يوسوس به الشيطان الثالث ما اخرجه ابو نعيم فى الحلية عن على ابن ابي طالب رضي الله عنه انه قال انكم يا معشر اهل العراق تقولون ارجى آية فى القرآن يا عبادى الذين اسرفوا الآية لكنا اهل البيت تقول ان ارجى آية في كتاب الله و لسوف يعطيك ربك فترضى وهى الشفاعة الرابع ما اخرجه الواحدي عن على بن الحسين قال اشد آية على اهل النار فذوقوا فلن نزيدكم الا عذابا و ارجى آية فى القرآن لاهل التوحيد ان الله لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء الآية الخامس ما اخرجه مسلم في صحيحه عن ابن المبارك ان ارجى آية فى القرآن قوله تعالى ولا ياتل اولوا الفضل منكم و السعة الى قوله الا تحبون ان يغفر الله لكم السادس ما اخرجه ابن ابى الدنيا في كتاب التوبة عن ابي عثمان الهندي قال ما فى القرآن اية ارجى عندي لهذه الامة من قوله و آخرون اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا و آخر سيئا السابع و الثامن قال ابو جعفر النحاس في قوله فهل يهلك الا القوم الفاسقون ان هذه الآية عندي ارجى آية فى القرآن الا ان ابن عباس قال ارجى آية فى القرآن و ان ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم و كذا حكاه عنه مكي ولم يقل على احسانهم التاسع روى الهروي في مناقب الشافعي عن ابن عبد الحكم

ایّ القرآن احکم فقال ابن مسعود ان الله یأمر بالعدل و الاحسان قال نادهم ایّ القرآن اجمع فقال فمن یعمل مثقال ذرة خیرایره و من یعمل مثقال ذرة شرایره فقال نادهم ایّ القرآن احزن فقال من یعمل سوء یجزبه فقال نادهم ایّ القرآن ارجی فقال قل یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسهم الآیة فقال افیکم ابن مسعود قالوا نعم اخرجه عبد الرزاق في تفسیره بنحوه و اخرج عبد الرزاق ایضا عن ابن مسعود رضي الله تعالی عنه قال اعدل آیة فی القرآن ان الله یأمر بالعدل و الاحسان و احکم آیة فمن یعمل مثقال ذرة الی آخرها و اخرج الحاکم عنه قال ان اجمع آیة فی القرآن للخیر و الشر ان الله یأمر بالعدل و الاحسان و اخرج الطبراني عنه قال ما فی القرآن آیة اعظم فرجا من آیة في سورة الغرف قل یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسهم الآیة و ما فی القرآن آیة اکثر تفویضا من آیة في سورة النساء القصری و من یتوکل علی الله فهو حسبه الآیة و اخرج ابوذر الهروي في فضائل القرآن من طریق یحیی ابن یعمر عن ابن عمر عن ابن مسعود قال سمعت رسول الله صلی الله علیه و سلم یقول ان اعظم آیة في کتاب الله الله لااله الا هوالحی القیوم و اعدل آیة فی القرآن ان الله یأمر بالعدل و الاحسان الی آخرها و اخوف آیة فی القرآن فمن یعمل مثقال ذرة خیرایره و من یعمل مثقال ذرة شرایره و ارجی آیة فی القرآن یا عبادی الذین اسرفوا علی انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله الی آخرها وقد اختلف في ارجی آیة فی القرآن علی بضعة عشر قولا احدها آیة الزمر و الثاني اولم تومن قال بلی و اخرج الحاکم فی المستدرک و ابوعبید عن صفوان ابن سلیم قال التقي

تعدل الف آية ان القرآن ستة آلاف آية و مايتا آية وكسر فاذا تركنا الكسر كان الالف سدس القرآن و هذه تشتمل على سدس مقاصد القرآن فان فيما ذكره الغزالي ستة ثلاثة مهمة و ثلاثة متمة وتقدمت واحدها معرفة الآخرة المشتمل عليه السورة و التعبير عن هذا المعني بالف آية افخم و اجل و اضخم من التعبير بالسدس و قال ايضا في سركون سورة الكافرين رُبعا و سورة الاخلاص ثُلثا مع ان كلا منهما يسمى الاخلاص ان سورة الاخلاص اشتملت من صفات الله على مالم تشتمل عليه الكافرون و ايضا فالتوحيد اثبات آلهية المعبود و تقديسه و نفي آلهية مما سواه و قد صرحت الاخلاص بالاثبات و التقديس و لوحت الى نفي عبادة غيره و الكافرون صرحت بالنفي و لوحت بالاثبات و التقديس فكان بين الرتبتين من التصريحين و التلويحين ما بين الثُلث و الربع انتهى تدنيب ذكر كثيرون في اثر ان الله جمع علوم الاولين و الآخرين فى الكتب الاربعة وعلومها فى القرآن وعلومه فى الفاتحة فزادوا علوم الفاتحة فى البسملة و علوم البسملة في بابها و وجه بان المقصود من كل العلوم و صول العبد الى الرب و هذه الباء باء الالصاق فهي تلصق العبد بجناب الرب و ذلك كمال المقصود ذكره الامام الرازي و ابن النقيب في تفسيريهما النوع الرابع و السبعون في مفردات القرآن اخرج السلفي فى المختار من الطيوريات عن الشعبي قال لقي عمر ابن الخطاب رضي الله تعالى عنه راكبا في سفر فيهم ابن مسعود فامر رجلا يناديهم من اين القوم قالوا اقبلنا من الفج العميق نريد البيت العتيق فقال عمر ان فيهم لعالما فامر رجلا ان يناديهم اى القرآن اعظم فاجابه عبد الله الله لا اله الا هو الحي القيوم قال نادهم

خبر وانشاء و الخبر قسمان خبر عن الخالق و خبر عن المخلوق فهذه ثلاثة اثلاث و سورة الاخلاص اخلصت الخبر عن الخالق فهي بهذه الاعتبار ثُلث و قيل تعدل في الثواب و هوالذي يشهدله ظاهرالحديث و الاحاديث الواردة في الزلزلة و النصر و الكافرين لكن ضعف ابن عقيل ذلك و قال لا يجوز ان يكون المعني فله اجر ثُلث القرآن لقوله من قرأ القرآن فله بكل حرف عشر حسنات و قال ابن عبد البرالسكوت في هذه المسئلة افضل من الكلام فيها و اسلم ثم اسند الى اسحاق ابن منصور قلت لاحمد ابن حنبل قوله صلى الله عليه وسلم قل هو الله احد تعدل ثُلث القرآن ما وجهه فلم يقم لي فيها على امر و قال لي اسحاق ابن راهوية معناه ان الله لما فضل كلامه على سائر الكلام جعل لبعضه ايضا في الثواب لمن قرأه تحريضا على تعليمه لا ان من قرأ قل هو الله احد ثلاث مرأت كان كمن قرأ القرآن جمعيه هذا لا يستقيم و لوقرأها ما يتي مرة قال ابن عبدالبر فهذ ان اما مان بالسنة ما قاما ولا قعداً في هذه المسئلة و قال ابن الميلق في حديث ان الزلزلة نصف القرآن لان احكام القرآن تنقسم الى احكام الدنيا و احكام الآخرة و هذه السورة تشتمل على احكام الآخرة كلها اجمالا و زادت على القارعة باخراج الاثقال و بحديث الاخبار و اما تسميتها في الحديث الآخر رُبعا فلان الايمان بالبعث ربع الايمان في الحديث الذي رواه الترمذي لا يؤمن عبد حي يؤمن باربع يشهد ان لا اله الا الله و اني رسول الله بعثني بالحق و يؤمن بالبعث بعد الموت و يؤمن بالقدر فاقتضي هذا الحديث ان الايمان بالبعث الذي حوته هذه السورة رُبع الايمان الكامل الذي دعا اليه القرآن و قال ايضا في سركون الهاكم

ان يقال ان هذه السورة ليس فيها الا تقدير الاصول الثلاثة الوحدانية و الرسالة و الحشر و هوالقدر الذي يتعلق بالقلب و الجنان و اما الذي باللسان و بالاركان ففي غير هذه السورة فاما كان فيها اعمال القلب لا غير سماها قلبا و لهذا امر بقرأتها عند المحتضر لانه في ذلك الوقت يكون اللسان ضعيف القوة و الاعضاء ساقطة لكن القلب قد اقبل على الله و رجع عما سواه فيقرأ عنده مايزداد به قوة في قلبه و يشتد تصديقه بالا صول الثلثة انتهى و اختلف الناس في معنى كون سورة الاخلاص تعدل ثُلث القرآن فقيل كانه صلى الله عليه و سلم سمع شخصا يكررها تكرار من يقرأ ثُلث القرآن فخرج الجواب على هذا وفيه بعد عن ظاهر الحديث و سائر طرق الحديث ترده و قيل لان القرآن يشتمل على قصص و شرائع و صفات و سورة الاخلاص فلها صفات فكانت ثُلثا بهذا الاعتبار و قال الغزالي في الجواهر معارف القرآن المهمة ثلاثة معرفة التوحيد و الصراط المستقيم و الآخرة و هي مشتملة على الاول فكانت ثُلثا و قال ايضا فيما نقله الرازى القرآن مشتمل على البراهين القاطعة على وجود الله و وحدانية و صفاته اما صفات الحقيقة و اما صفات الفعل و اما صفات الحكم فهذه ثلاثة امور و هذه السورة تشتمل على صفات الحقيقة فهي ثُلث و قال الجونيى المطالب التي في القرآن بتعظيمها الاصول الثلاثة التي لها يصح الاسلام و يحصل الايمان وهي معرفة الله و الاعتراف بصدق رسوله و اعتقاد القيام بين يدى الله فان من عرف ان الله واحد و ان النبي صادق و ان الدين واقع صار مؤمنا حقا و من انكرشيئا منها كفر قطعا و هذه السورة تفيد الاصل الاول فهي ثُلث القرآن من هذا الوجه و قال غيره القرآن قسمان

قدر مشيته و ارادته وسع كرسيه السموات والارض اشارة الى عظمة ملكه و كمال قدرته ولا يؤده حفظهما اشارة الى صفة القدرة و كما لها وتنزيهها عن الضعف و النقصان و هوالعلي العظيم اشارة الى اصلين عظيمين فى الصفات فاذا تاملت هذه المعاني ثم تلوت جميع آى القرآن لم تجد جملتها مجموعة في آية واحدة فان شهد الله ليس فيها الا التوحيد و سورة الاخلاص ليس فيها الا التوحيد و التقديس و قل اللهم مالك الملك ليس فيها الا الافعال و الفاتحة فيها الثلاثة لكن غير مشروحة بل مرموزة و الثلاثه مجموعة مشروحة في آية الكرسي و الذي يقرب منها في جمعها آخر الحشر و اول الحديد و لكنها آيات لا آية واحدة فاذا قابلت آية الكرسي باحد تلك الآيات وجدتها اجمع للمقاصد فلذلك استحقت السيادة على الآى كيف و فيها الحى القيوم و هو الاسم الاعظم كما ورد به الخبر انتهى كلام الغزالي ثم قال انما قال صلى الله عليه و سلم فى الفاتحه افضل وفي آية الكرسي سيدة لسر و هو ان الجامع بين فنون الفضل و انواعها الكثيرة تسمى افضل فان الفضل هو الزيادة و الافضل هو الازيد و اما السودد فهو رسوخ معنى الشرف الذي يقتضى الاستتباع و يابى التبعية و الفاتحة تتضمن التنبيه على معان كثيرة و معارف مختلفة فكانت افضل و آية الكرسي تشتمل على المعرفة العظمى التي هى المقصودة المتبوعة التي يتبعها سائر المعارف فكان اسم السيد بها اليق انتهى ثم قال في حديث قلب القرآن يس ان ذلك لان الايمان صحة بالاعتراف بالحشر و النشر و هو مقررة في هذه السورة بابلغ وجه فجعلت قلب القرآن لذلك واستحسنه الامام فخرالدين وقال النسفي يمكن

فى الاعجاز بوضع معنى يعبرعنه بخمسين حرفا ثم يعبر عنه بخمسة عشرو ذلك بيان لعظيم القدرة و الانفراد بالوحدانية و قال ابن المنير اشتملت آية الكرسي على مالم تشتمل عليه آية من اسماء الله تعالى و ذلك لانها مشتملة على سبعة عشر موضعا فيها اسم الله تعالى ظاهرا في بعضها و مستكنا في بعض وهي الله هو الحي القيوم ضمير لاتأخذه وله وعنده وباذنه ويعلم وعلمه وشاء وكرسيه ويوده ضمير حفظهما المستترالذي هو فاعل المصدر و هوالعلي العظيم و ان عددت الضمائر المتحملة فى الحى القيوم العلي العظيم والضميرالمقدر قبل الحي على احد الاعاريب صارت اثنين و عشرين و قال الغزالي انما كانت آية الكرسي سيدة الآيات لانها اشتملت على ذات الله وصفاته و افعاله فقط ليس فيها غيرذلك ومعرفة ذلك هي المقصد الاقصى فى العلوم وما عداه تابع له و السيد اسم للمتبوع المقدم فقوله لله اشارة الى الذات لا اله الا هو اشارة الى توحيد الذات الحي القيوم اشارة صفة الذات و جلاله فان معنى القيوم الذي يقوم بنفسه و يقوم به غيره و ذلك غاية الجلال و العظمة لاتأخذه سنة ولانوم تنزيه و تقديس له عما يستحيل عليه من اوصاف الحوادث و التقديس عما يستحيل اخذ اقسام المعرفة له ما فى السموات وما فى الارض اشارة الى الافعال كلها و ان جميعها منه و اليه من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه اشارة الى انفراده بالملك و الحكم و الامر و ان من يملك الشفاعة انما يملكها بتشريفه اياه و الاذن فيها و هذا نفي الشركة عنه فى الملك و الامر يعلم ما بين ايديهم الى قوله شاء اشارة الى صفة العلم وتفضيل بعض المعلومات و الانفراد بالعلم حتى لاعلم لغيره الا ما اعطاه و وهبه على

بقوله اياك نعبد و اياك نستعين انتهى ولا ينا في هذا وصفها في الحديث الآخر بكونها ثلثي القرآن لان بعضهم وجهه بان دلالات القرآن الكريم اما ان تكون بالمطابقة او بالتضمن او بالالتزام و هذه السورة تدل على جميع مقاصد القرآن بالتضمن و الالتزام دون المطابقة و الاثنان من الثلاثة ثلثان ذكره الزركشي في شرح التنبيه و ناصرالدين ابن المنيلق قال و ايضا الحقوق ثلاثة حق الله على عباده و حق العباد على الله و حق بعض العباد على بعض و قد اشتملت الفاتحة صريحا على الحقين الاولين فناسب كونها بصريحها ثُلثين وحديث قسمت الصلاة بيني و بين عبدي نصفين شاهد لذلك قلت ولا ينا في ايضا بين كون الفاتحة اعظم السور و بين الحديث الآخر ان البقرة اعظم السور لان المراد به ما عدا الفاتحة من السور التي فصلت فيها الاحكام وضربت الامثال و اقيمت الحجج اذلم تشتمل سورة على ما اشتملت عليه و لذلك سميت فسطاط القرآن قال ابن العربي في احكامه سمعت بعض اشياخي يقول فيها الف امر و الف نهي و الف حكم و الف خبر ولعظم فقهها اقام ابن عمر ثماني سنين على تعليمها اخرجه مالك في الموطا قال ابن العربي ايضا و انما صارت آية الكرسي اعظم الآيات لعظم مقتضاها فان الشئ انما يشرف بشرف ذاته و مقتضاه و متعلقاته وهي في آى القرآن كسورة الاخلاص في سورة الا ان سورة الاخلاص تفضلها بوجهين احدهما انها سورة و هذه آية و السورة اعظم لانه وقع التحدي بها فهي افضل من الآية التي لم يتحدى بها و الثاني ان سورة الاخلاص اقتضت التوحيد في خمسة عشر حرفا و آية الكرسي اقتضت التوحيد في خمسين حرفا فظهرت القدرة

الى آخر السورة يدل على اثبات قضاء الله و على النبوات فلما كان المقصد الاعظم من القرآن هذه المطالب الاربعة و هذه السورة مشتملة عليها سميت ام القرآن و قال البيضاوي هي مشتملة على الحكم النظرية و الاحكام العملية التي هي سلوك الطريق المستقيم و الاطلاع على مراتب السعداء و منازل الاشقياء و قال الطيبي هي مشتملة على اربعة انواع من العلوم التي هي مناط الدين احدها علم الاصول و معاقده معرفة الله و صفاته و اليها الاشارة بقوله لله رب العالمين الرحمن الرحيم و معرفة النبوات و هي المرادة بقوله انعمت عليهم و معرفة المعاد و هو المومى اليه بقوله مالك يوم الدين و ثانيها علم الفروع واسه العبادات و هو المراد بقوله اياك نعبد و ثالثها علم ما يحصل به الكمال و هو علم الاخلاق و اجله الوصول الى الحضرة الصمدانية و الالتجأ الى جناب الفردانية و السلوك بطريقة و الاستقامة فيها و اليه الاشارة فيها بقوله و اياك نستعين اهدنا الصراط المستقيم و رابعها علم القصص و الاخبار عن الامم السالفة و القرون الخالية السعداء منهم و الاشقياء و ما يتصل بها من وعد محسنهم و وعيد مسيهم و هو المراد بقوله انعمت عليهم غيرالمغضوب عليهم ولاالضالين و قال الغزالي مقاصد القرآن ستة ثلثة مهمة وثلاثة متمة الاولى تعريف المدعو اليه كما اشير اليه بصدرها و تعريف الصراط المستقيم وقد صرح به فيها و تعريف الحال عند الرجوع اليه تعالى و هو الآخرة كما اشير اليه بمالك يوم الدين و الاخرى تعريف احوال المطيعين كما اشير اليه بقوله الذين انعمت عليهم و حكاية اقوال الجاحدين و قد اشير اليها بالمغضوب عليهم ولا الضالين و تعريف منازل الطريق كما اشير اليه

المبعوث و تلك الكتب لم تكن معجزة ولا كانت حجج اولئك الانبياء بل كانت دعوتهم و الحجج غيرها لكان ذلك ايضا نظير ما مضى و قد يقال ان سورة افضل من سورة لان الله جعل قرأتها كقرأة اضعافها مما سواها و اوجب بها من الثواب مالم يوجب لغيرها و ان كان المعنى الذي لاجله باغ بها هذا المقدار لا يظهر لنا كما يقال ان يوما افضل من يوم و شهرا افضل من شهر بمعنى ان العبادة فيه تفضل على العبادة في غيره و الذنب فيه اعظم منه في غيره و كما يقال ان الحرم افضل من الحل لانه يتادى فيه من المناسك مالا يتادى في غيره و الصلاة فيه تكون كصلاة مضاعفة مما تقام في غيره انتهى كلام الحليمي و قال ابن التين في حديث البخاري لا علمنك سورة هي اعظم السور معناه ان ثوابها اعظم من غيرها و قال غيره انما كانت اعظم السور لانها جمعت جميع مقاصد القرآن ولذلك سميت ام القرآن و قال الحسن البصري ان الله اودع علوم الكتب السابقة فى القرآن ثم اودع علوم القرآن فى الفاتحة فمن علم تفسيرها كان كمن علم تفسير جميع الكتب المنزلة اخرجه البيهقي و بيان اشتمالها على علوم القرآن قرره الزمخشري باشتمالها على الثناء على الله بما هو اهله و على التعبد بالامر و النهي و على الوعد و الوعيد و آيات القرآن لا تخلو عن احد هذه الامور و قال الامام فخر الدين المقصود من القرآن كله تقرير امور اربعة الالهيات و المعاد و النبوات و اثبات القضاء و القدر لله تعالى فقوله الحمد لله رب العالمين يدل على الالهيات و قوله مالك يوم الدين يدل على المعاد و قوله اياك نعبد و اياك نستعين يدل على نفي الجبر و على اثبات ان الكل بقضاء الله و قدره وقوله اهدنا الصراط المستقيم

و تفكرها عند و رود اوصاف العلى و قيل بل يرجع لذات اللفظ و ان ماتضمنه قوله تعالى و الهكم اله واحد الآية و آية الكرسي و آخر سورة الحشر و سورة الاخلاص من الدلالات على وحدانيته و صفاته ليس موجودا مثلا في تبت يدا ابي لهب و ما كان مثلها فالتفضيل انما هو بالمعاني العجيبة و كثرتها و قال الحليمي و نقله عنه البيهقي معنى التفضيل يرجع الى اشياء احدها ان يكون العمل بآية اولى من العمل باخرى و اعود على الناس و على هذا يقال آيات الامر و النهي و الوعد و الوعيد خير من آيات القصص لانها انما اريد بها تاكيد الامر و النهي و الانذار و التبشير ولا غنى بالناس عن هذه الامور و قد يستغنون عن القصص فكان ما هو اعود عليهم و انفع لهم مما يجري مجرى الاصول خيرا لهم مما يجعل تبعا لما لا بد منه الثاني ان يقال الآيات التي تشتمل على تعديد اسماء الله و بيان صفاته و الدلالة على عظمته افضل ان مخبراتها اسنى و اجل قدرا الثالث ان يقال سورة خير من سورة او آية خير من آية بمعني ان القاري يتعجل له بقراتها فائدة سوى الثواب الآجل و يتادى منه بتلاوتها عبادة كقرأة آية الكرسي و الاخلاص و المعوذتين فان قاريها يتعجل بقراتها الاحتراز مما يخشي و الاعتصام بالله و يتادى بتلاوتها عبادة الله لما فيها من ذكره سبحانه بالصفات العلى على سبيل الاعتقاد لها و سكون النفس الى فضل ذلك الذكر و بركته فاما آيات الحكم فلا يقع بنفس تلاوتها اقامة حكم و انما يقع بها علم ثم لوقيل فى الجملة ان القرآن خير من التوراة و الانجيل و الزبور بمعنى ان التعبد بالتلاوة و العمل واقع به دونها و الثواب بحسب قرأته لا بقرأتها او انه من حيث الاعجاز حجة النبى

بالتقليد فقلد صاحب الرسالة صلى الله عليه و سلم فهوالذي انزل عليه القرآن و قال يس قلب القرآن و فاتحة الكتاب افضل سورالقرآن و آية الكرسي سيدة آي القرآن و قل هو الله احد تعدل ثُلث القرآن و الاخبار الواردة في فضائل القرآن و تخصيص بعض السور و الآيات بالفضل و كثرة الثواب في تلاوتها لاتحصى انتهى وقال ابن الحصار العجب ممن يذكر الاختلاف في ذلك مع النصوص الواردة بالتفضيل و قال الشيخ عزالدين ابن عبدالسلام كلام الله فى الله افضل من كلامه في غيره فقل هو الله احد افضل من تبت يدا ابي لهب و قال الجويني كلام الله كله ابلغ من كلام المخلوقين و هل يجوز ان يقال بعض كلامه ابلغ من بعض جوزه قوم لقصور نظرهم و ينبغي ان تعلم ان معنى قول القائل هذا الكلام ابلغ من هذا الكلام ان هذا في موضعه له حسن و لطف و ذلك في موضعه له حسن و لطف و هذا الحسن في موضعه اكمل من ذاك في موضعه فان من قال ان قل هو الله احد ابلغ من تبت يدا ابي لهب يجعل المقابلة بين ذكر الله و ذكر ابي لهب و بين التوحيد و الدعاء على الكافر و ذلك غير صحيح بل ينبغي ان يقال تبت يدا ابي لهب دعاء عليه بالخسران فهل توجد عبارة للدعاء بالخسران احسن من هذه و كذلك في قل هو الله احد لا توجد عبارة تدل على الوحد انية ابلغ منها فالعالم اذا نظر الى تبت يدا ابي لهب في باب الدعاء بالخسران و نظر الى قل هو الله احد في باب التوحيد لا يمكنه ان يقول احدهما ابلغ من الآخر انتهى وقال غيره اختلف القائلون بالتفضيل فقال بعضهم الفضل راجع الى عظم الاجر و مضاعفة الثواب بحسب انتقالات النفس و خشيتها وتدبرها

احد ولكنا رأينا الناس قد رغبوا عن القرآن فوضعنا لهم هذا الحديث ليصرفوا قلوبهم الى القرآن قال ابن الصلاح و لقد اخطأ الواحدى المفسر و من ذكره من المفسرين في ايداعه تفاسيرهم

النوع الثالث والسبعون في افضل القرآن و فاضله اختلف الناس هل فى القرآن شئ افضل من شئ فذهب الامام ابو الحسن الا شعري و القاضي ابو بكر الباقلاني و ابن حبان الى المنع لان الجميع كلام الله وليلا يوهم التفضيل نقص المفضل عليه و روى هذا القول عن مالك قال يحيى ابن يحيى تفضيل بعض القرآن على بعض خطأ و لذلك كره مالك ان تعاد سورة اوتردد دون غيرها و قال ابن حبان في حديث ابىّ ابن كعب ما انزل الله فى التوراة ولا فى الانجيل مثل ام القرآن ان الله لا يعطي لقارى التوراة و الانجيل من الثواب مثل ما يعطى لقارى ام القرآن اذ الله بفضله فضل هذه الامة على غيرها من الامم و اعطا ها من الفضل على قرأة كلامه اكثر مما اعطى غيرها من الفضل على قرأة كلامه قال و قوله اعظم سورة اراد به فى الاجر لان بعض القرآن افضل من بعض و ذهب آخرون الى التفضيل لظواهر الاحاديث منهم اسحاق ابن راهويه و ابو بكر ابن العربي والغزالي و قال القرطبي انه الحق و نقله عن جماعة من العلماء و المتكلمين و قال الغزالي في جواهر القرآن لعلك ان تقول قد اشرت الى تفضيل بعض ايات القرآن على بعض و الكلام كلام الله فكيف يفارق بعضها بعضا وكيف يكون بعضها اشرف من بعض فاعلم ان نور البصيرة ان كان لايرشدك الى الفرق بين آية الكرسي وآية المداينات و بين سورة الاخلاص وسورة تبتّ وترتاع على اعتقاد الفرق نفسك الخوارة المستغرقة

خبر وانشاء و الخبر قسمان خبر عن الخالق و خبر عن المخلوق فهذه ثلاثة اثلاث و سورة الاخلاص اخلصت الخبر عن الخالق فهي بهذه الاعتبار ثُلث و قيل تعدل في الثواب و هوالذي يشهدله ظاهرالحديث و الاحاديث الواردة في الزلزلة و النصر و الكافرين لكن ضعف ابن عقيل ذلك و قال لا يجوز ان يكون المعني فله اجر ثُلث القرآن لقوله من قرأ القرآن فله بكل حرف عشر حسنات و قال ابن عبد البرالسكوت في هذه المسئلة افضل من الكلام فيها و اسلم ثم اسند الى اسحاق ابن منصور قلت لاحمد ابن حنبل قوله صلى الله عليه وسلم قل هو الله احد تعدل ثُلث القرآن ما وجهه فلم يقم لي فيها على امر و قال لي اسحاق ابن راهوية معناه ان الله لما فضل كلامه على سائر الكلام جعل لبعضه ايضا في الثواب لمن قرأه تحريضا على تعليمه لا ان من قرأ قل هو الله احد ثلاث مرأت كان كمن قرأ القرآن جمعيه هذا لا يستقيم و لوقرأها ما يتي مرة قال ابن عبدالبر فهذ ان اما مان بالسنة ماقاما ولا قعداً في هذه المسئلة و قال ابن الميلق في حديث ان الزلزلة نصف القرآن لان احكام القرآن تنقسم الى احكام الدنيا و احكام الآخرة و هذه السورة تشتمل على احكام الآخرة كلها اجمالا و زادت على القارعة باخراج الاثقال و بحديث الاخبار و اما تسميتها في الحديث الآخر رُبعا فلان الايمان بالبعث ربع الايمان في الحديث الذي رواه الترمذي لا يؤمن عبد حي يؤمن باربع يشهد ان لا اله الا الله و اني رسول الله بعثني بالحق و يؤمن بالبعث بعد الموت و يؤمن بالقدر فاقتضي هذا الحديث ان الايمان بالبعث الذي حوته هذه السورة رُبع الايمان الكامل الذي دعا اليه القرآن و قال ايضا في سركون الهاكم

ان يقال ان هذه السورة ليس فيها الا تقدير الاصول الثلاثة الوحدانية و الرسالة و الحشر و هوالقدر الذي يتعلق بالقلب و الجنان و اما الذي باللسان و بالاركان ففي غير هذه السورة فاما كان فيها اعمال القلب لا غير سماها قلبا و لهذا امر بقرأتها عند المحتضر لانه في ذلك الوقت يكون اللسان ضعيف القوة و الاعضاء ساقطة لكن القلب قد اقبل على الله و رجع عما سواه فيقرأ عنده مايزداد به قوة في قلبه و يشتد تصديقه بالا صول الثلثة انتهى و اختلف الناس في معنى كون سورة الاخلاص تعدل ثُلث القرآن فقيل كانه صلى الله عليه و سلم سمع شخصا يكررها تكرار من يقرأ ثُلث القرآن فخرج الجواب على هذا وفيه بعد عن ظاهر الحديث و سائر طرق الحديث ترده و قيل لان القرآن يشتمل على قصص و شرائع و صفات و سورة الاخلاص لها صفات فكانت ثُلثا بهذا الاعتبار و قال الغزالي في الجواهر معارف القرآن المهمة ثلاثة معرفة التوحيد و الصراط المستقيم و الآخرة و هي مشتملة على الاول فكانت ثُلثا و قال ايضا فيما نقله الرازى القرآن مشتمل على البراهين القاطعة على وجود الله و وحدانية و صفاته اما صفات الحقيقة و اما صفات الفعل و اما صفات الحكم فهذه ثلاثة امور و هذه السورة تشتمل على صفات الحقيقة فهي ثُلث و قال الجونيى المطالب التي في القرآن بتعظيمها الاصول الثلاثة التي لها يصح الاسلام و يحصل الايمان وهي معرفة الله و الاعتراف بصدق رسوله و اعتقاد القيام بين يدى الله فان من عرف ان الله واحد و ان النبي صادق و ان الدين واقع صار مؤمنا حقا و من انكر شيئا منها كفر قطعا و هذه السورة تفيد الاصل الاول فهي ثُلث القرآن من هذا الوجه و قال غيره القرآن قسمان

قدر مشيته و ارادته وسع كرسيه السموات والارض اشارة الى عظمة ملكه و كمال قدرته ولا يؤده حفظهما اشارة الى صفة القدرة و كما لها وتنزيهها عن الضعف و النقصان و هوالعلي العظيم اشارة الى اصلين عظيمين فى الصفات فاذا تاملت هذه المعاني ثم تلوت جميع آى القرآن لم تجد جملتها مجموعة في آية واحدة فان شهد الله ليس فيها الا التوحيد و سورة الاخلاص ليس فيها الا التوحيد و التقديس و قل اللهم مالك الملك ليس فيها الا الافعال و الفاتحة فيها الثلاثة لكن غير مشروحة بل مرموزة و الثلاثه مجموعة مشروحة في آية الكرسي و الذي يقرب منها في جمعها آخر الحشر و اول الحديد و لكنها آيات لا آية واحدة فاذا قابلت آية الكرسي باحد تلك الآيات وجدتها اجمع للمقاصد فلذلك استحقت السيادة على الآى كيف و فيها الحى القيوم و هو الاسم الاعظم كما ورد به الخبر انتهى كلام الغزالي ثم قال انما قال صلى الله عليه و سلم فى الفاتحه افضل وفي آية الكرسي سيدة لسر و هو ان الجامع بين فنون الفضل و انواعها الكثيرة تسمى افضل فان الفضل هو الزيادة و الافضل هو الازيد و اما السودد فهو رسوخ معنى الشرف الذي يقتضى الاستتباع و يابى التبعية و الفاتحة تتضمن التنبيه على معان كثيرة و معارف مختلفة فكانت افضل و آية الكرسي تشتمل على المعرفة العظمى التي هى المقصودة المتبوعة التي يتبعها سائر المعارف فكان اسم السيد بها اليق انتهى ثم قال في حديث قلب القرآن يس ان ذلك لان الايمان صحة بالاعتراف بالحشر و النشر و هو مقررة في هذه السورة بابلغ وجه فجعلت قلب القرآن لذلك واستحسنه الامام فخرالدين وقال النسفي يمكن

فى الاعجاز بوضع معنى يعبرعنه بخمسين حرفا ثم يعبر عنه بخمسة عشرو ذلك بيان لعظيم القدرة و الانفراد بالوحدانية و قال ابن المنير اشتملت آية الكرسي على مالم تشتمل عليه آية من اسماء الله تعالى و ذلك لانها مشتملة على سبعة عشر موضعا فيها اسم الله تعالى ظاهرا في بعضها و مستكنا في بعض وهي الله هو الحي القيوم ضمير لاتأخذه وله وعنده وباذنه ويعلم وعلمه وشاء وكرسيه ويوده ضمير حفظهما المستترالذي هو فاعل المصدر وهوالعلي العظيم وان عددت الضمائر المتحملة فى الحى القيوم العلي العظيم والضميرالمقدر قبل الحي على احد الاعاريب صارت اثنين و عشرين و قال الغزالي انما كانت آية الكرسي سيدة الآيات لانها اشتملت على ذات الله وصفاته و افعاله فقط ليس فيها غيرذلك ومعرفة ذلك هي المقصد الاقصى فى العلوم وما عداه تابع له و السيد اسم للمتبوع المقدم فقوله لله اشارة الى الذات لا اله الا هو اشارة الى توحيد الذات الحي القيوم اشارة صفة الذات و جلاله فان معنى القيوم الذي يقوم بنفسه ويقوم به غيره و ذلك غاية الجلال و العظمة لاتأخذه سنة ولانوم تنزيه و تقديس له عما يستحيل عليه من اوصاف الحوادث و التقديس عما يستحيل اخذ اقسام المعرفة له ما فى السموات وما فى الارض اشارة الى الافعال كلها وان جميعها منه واليه من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه اشارة الى انفراده بالملك والحكم والامر وان من يملك الشفاعة انما يملكها بتشريفه اياه و الاذن فيها و هذا نفي الشركة عنه فى الملك و الامر يعلم ما بين ايديهم الى قوله شاء اشارة الى صفة العلم وتفضيل بعض المعلومات و الانفراد بالعلم حتى لاعلم لغيره الا ما اعطاه و وهبه على

بقوله اياك نعبد و اياك نستعين انتهى ولا يذا في هذا وصفها فى الحديث الآخر بكونها ثلثى القرآن لان بعضهم وجهه بان دلالات القرآن الكريم اما ان تكون بالمطابقة او بالتضمن او بالالتزام و هذه السورة تدل على جميع مقاصد القرآن بالتضمن و الالتزام دون المطابقة و الاثنان من الثلاثة ثلثان ذكره الزركشي في شرح التنبيه و ناصرالدين ابن الميلق قال و ايضا الحقوق ثلاثة حق الله على عباده و حق العباد على الله و حق بعض العباد على بعض و قد اشتملت الفاتحة صريحا على الحقين الاولين فناسب كونها بصريحها ثُلثين وحديث قسمت الصلاة بيني و بين عبدي نصفين شاهد لذلك قلت ولا ينا في ايضا بين كون الفاتحة اعظم السور و بين الحديث الآخر ان البقرة اعظم السور لان المراد به ما عدا الفاتحة من السور التي فصلت فيها الاحكام وضربت الامثال و اقيمت الحجج اذلم تشتمل سورة على ما اشتملت عليه و لذلك سميت فسطاط القرآن قال ابن العربي في احكامه سمعت بعض اشياخي يقول فيها الف امر و الف نهي و الف حكم و الف خبر ولعظم فقهها اقام ابن عمر ثماني سنين على تعليمها اخرجه مالك فى الموطا قال ابن العربي ايضا و انما صارت آية الكرسي اعظم الآيات لعظم مقتضاها فان الشئ انما يشرف بشرف ذاته و مقتضاه و متعلقاته وهي في آى القرآن كسورة الاخلاص في سورة الا ان سورة الاخلاص تفضلها بوجهين احدهما انها سورة و هذه آية و السورة اعظم لانه وقع التحدي بها فهي افضل من الآية التي لم يتحدى بها و الثاني ان سورة الاخلاص اقتضت التوحيد في خمسة عشر حرفا و آية الكرسي اقتضت التوحيد في خمسين حرفا فظهرت القدرة

الى آخر السورة يدل على اثبات قضاء الله و على النبوات فلما كان المقصد الاعظم من القرآن هذه المطالب الاربعة و هذه السورة مشتملة عليها سميت ام القرآن و قال البيضاوي هي مشتملة على الحكم النظرية و الاحكام العملية التي هي سلوك الطريق المستقيم و الاطلاع على مراتب السعداء و منازل الاشقياء و قال الطيبي هي مشتملة على اربعة انواع من العلوم التي هي مناط الدين احدها علم الاصول و معاقده معرفة الله و صفاته و اليها الاشارة بقوله لله رب العالمين الرحمن الرحيم و معرفة النبوات و هي المرادة بقوله انعمت عليهم و معرفة المعاد و هو المومى اليه بقوله مالك يوم الدين و ثانيها علم الفروع واسه العبادات و هو المراد بقوله اياك نعبد و ثالثها علم ما يحصل به الكمال و هو علم الا خلاق و اجله الوصول الى الحضرة الصمدانية و الالتجأ الى جناب الفردانية و السلوك بطريقة و الاستقامة فيها و اليه الاشارة فيها بقوله و اياك نستعين اهدنا الصراط المستقيم و رابعها علم القصص و الاخبار عن الامم السالفة و القرون الخالية السعداء منهم و الاشقياء و ما يتصل بها من وعد محسنهم و وعيد مسيهم و هو المراد بقوله انعمت عليهم غيرالمغضوب عليهم ولاالضالين و قال الغزالي مقاصد القرآن ستة ثلثة مهمة وثلاثة متمة الاولى تعريف المدعو اليه كما اشير اليه بصدرها و تعريف الصراطالمستقيم وقد صرح به فيها و تعريف الحال عند الرجوع اليه تعالى و هو الآخرة كما اشير اليه بمالك يوم الدين والاخرى تعريف احوال المطيعين كما اشير اليه بقوله الذين انعمت عليهم و حكاية اقوال الجاحدين و قد اشير اليها بالمغضوب عليهم ولا الضالين و تعريف منازل الطريق كما اشير اليه

المبعوث و تلك الكتب لم تكن معجزة ولا كانت حجج اولئك الانبياء بل كانت دعوتهم و الحجج غيرها لكان ذلك ايضا نظير ما مضى و قد يقال ان سورة افضل من سورة لان الله جعل قرأتها كقرأة اضعافها مما سواها و اوجب بها من الثواب مالم يوجب لغيرها و ان كان المعنى الذي لاجله بلغ بها هذا المقدار لا يظهر لنا كما يقال ان يوما افضل من يوم و شهرا افضل من شهر بمعنى ان العبادة فيه تفضل على العبادة في غيره و الذنب فيه اعظم منه في غيره و كما يقال ان الحرم افضل من الحل لانه يتادى فيه من المناسك مالا يتادى في غيره و الصلاة فيه تكون كصلاة مضاعفة مما تقام في غيره انتهى كلام الحليمي و قال ابن التين في حديث البخاري لا علمنك سورة هي اعظم السور معناه ان ثوابها اعظم من غيرها و قال غيره انما كانت اعظم السور لانها جمعت جميع مقاصد القرآن ولذلك سميت ام القرآن و قال الحسن البصري ان الله اودع علوم الكتب السابقة فى القرآن ثم اودع علوم القرآن فى الفاتحة فمن علم تفسيرها كان كمن علم تفسير جميع الكتب المنزلة اخرجه البيهقي و بيان اشتمالها على علوم القرآن قرره الزمخشري باشتمالها على الثناء على الله بما هو اهله و على التعبد بالامر و النهي و على الوعد و الوعيد و آيات القرآن لا تخلو عن احد هذه الامور و قال الامام فخر الدين المقصود من القرآن كله تقرير امور اربعة الالهيات و المعاد و النبوات و اثبات القضاء و القدر لله تعالى فقوله الحمد لله رب العالمين يدل على الالهيات و قوله مالك يوم الدين يدل على المعاد و قوله اياك نعبد و اياك نستعين يدل على نفي الجبر و على اثبات ان الكل بقضاء الله و قدره وقوله اهدنا الصراط المستقيم

و تفكرها عند و رود اوصاف العلى و قيل بل يرجع لذات اللفظ و ان ماتضمنه قوله تعالى و الهكم اله واحد الآية و آية الكرسي و آخر سورة الحشر و سورة الاخلاص من الدلالات على وحدانيته و صفاته ليس موجودا مثلا في تبت يدا ابي لهب و ما كان مثلها فالتفضيل انما هو بالمعاني العجيبة و كثرتها و قال الحليمي و نقله عنه البيهقي معنى التفضيل يرجع الى اشياء احدها ان يكون العمل بآية اولى من العمل باخرى و اعود على الناس و على هذا يقال آيات الامر و النهي و الوعد و الوعيد خير من آيات القصص لانها انما اريد بها تاكيد الامر و النهي و الانذار و التبشير ولا غنى بالناس عن هذه الامور و قد يستغنون عن القصص فكان ما هو اعود عليهم و انفع لهم مما يجري مجرى الاصول خيرا لهم مما يجعل تبعا لما لا بد منه الثاني ان يقال الآيات التي تشتمل على تعديد اسماء الله و بيان صفاته و الدلالة على عظمته افضل ان مخبراتها اسنى و اجل قدرا الثالث ان يقال سورة خير من سورة او آية خير من آية بمعني ان القاري يتعجل له بقراتها فائدة سوى الثواب الآجل و يتادى منه بتلاوتها عبادة كقرأة آية الكرسي و الاخلاص و المعوذتين فان قاريها يتعجل بقراتها الاحتراز مما يخشي و الاعتصام بالله و يتادى بتلاوتها عبادة الله لما فيها من ذكره سبحانه بالصفات العلى على سبيل الاعتقاد لها و سكون النفس الى فضل ذلك الذكر و بركته فاما آيات الحكم فلا يقع بنفس تلاوتها اقامة حكم و انما يقع بها علم ثم لوقيل فى الجملة ان القرآن خير من التوراة و الانجيل و الزبور بمعنى ان التعبد بالتلاوة و العمل واقع به دونها و الثواب بحسب قرأته لا بقرأتها او انه من حيث الاعجاز حجة النبى

بالتقليد فقلد صاحب الرسالة صلى الله عليه و سلم فهوالذي انزل عليه القرآن و قال يس قلب القرآن و فاتحة الكتاب افضل سورالقرآن و آية الكرسي سيدة آي القرآن و قل هو الله احد تعدل ثُلث القرآن و الاخبار الواردة في فضائل القرآن و تخصيص بعض السور و الآيات بالفضل و كثرة الثواب في تلاوتها لاتحصى انتهى وقال ابن الحصار العجب ممن يذكر الاختلاف في ذلك مع النصوص الواردة بالتفضيل و قال الشيخ عزالدين ابن عبدالسلام كلام الله فى الله افضل من كلامه في غيره فقل هو الله احد افضل من تبت يدا ابي لهب و قال الجويني كلام الله كله ابلغ من كلام المخلوقين و هل يجوز ان يقال بعض كلامه ابلغ من بعض جوزه قوم لقصور نظرهم و ينبغي ان تعلم ان معنى قول القائل هذا الكلام ابلغ من هذا الكلام ان هذا في موضعه له حسن و لطف و ذلك في موضعه له حسن و لطف و هذا الحسن في موضعه اكمل من ذاك في موضعه فان من قال ان قل هو الله احد ابلغ من تبت يدا ابي لهب يجعل المقابلة بين ذكر الله و ذكر ابي لهب و بين التوحيد و الدعاء على الكافر و ذلك غير صحيح بل ينبغي ان يقال تبت يدا ابي لهب دعاء عليه بالخسران فهل توجد عبارة للدعاء بالخسران احسن من هذه و كذلك في قل هو الله احد لا توجد عبارة تدل على الوحد انية ابلغ منها فالعالم اذا نظر الى تبت يدا ابي لهب في باب الدعاء بالخسران و نظر الى قل هو الله احد في باب التوحيد لا يمكنه ان يقول احدهما ابلغ من الآخر انتهى وقال غيره اختلف القائلون بالتفضيل فقال بعضهم الفضل راجع الى عظم الاجر و مضاعفة الثواب بحسب انتقالات النفس و خشيتها وتدبرها

احد ولكنا رأينا الناس قد رغبوا عن القرآن فوضعنا لهم هذا الحديث ليصرفوا قلوبهم الى القرآن قال ابن الصلاح و لقد اخطأ الواحدى المفسر و من ذكره من المفسرين في ايداعه تفاسيرهم النوع الثالث والسبعون في افضل القرآن و فاضله اختلف الناس هل فى القرآن شئ افضل من شئ فذهب الامام ابو الحسن الا شعري و القاضي ابو بكر الباقلاني و ابن حبان الى المنع لان الجميع كلام الله وليلا يوهم التفضيل نقص المفضل عليه و روى هذا القول عن مالك قال يحيى ابن يحيى تفضيل بعض القرآن على بعض خطأ و لذلك كره مالك ان تعاد سورة اوتردد دون غيرها و قال ابن حبان في حديث ابىّ ابن كعب ما انزل الله فى التوراة ولا فى الانجيل مثل ام القرآن ان الله لا يعطي لقارى التوراة و الانجيل من الثواب مثل ما يعطى لقارى ام القرآن اذ الله بفضله فضل هذه الامة على غيرها من الامم و اعطا ها من الفضل على قرأة كلامه اكثر مما اعطى غيرها من الفضل على قرأة كلامه قال و قوله اعظم سورة اراد به فى الاجر لان بعض القرآن افضل من بعض و ذهب آخرون الى التفضيل لظواهر الاحاديث منهم اسحاق ابن راهويه و ابو بكر ابن العربي والغزالي و قال القرطبي انه الحق و نقله عن جماعة من العلماء و المتكلمين و قال الغزالي في جواهر القرآن لعلك ان تقول قد اشرت الى تفضيل بعض ايات القرآن على بعض و الكلام كلام الله فكيف يفارق بعضها بعضا وكيف يكون بعضها اشرف من بعض فاعلم ان نور البصيرة ان كان لايرشدك الى الفرق بين آية الكرسي وآية المداينات و بين سورة الاخلاص وسورة تبتّ وترتاع على اعتقاد الفرق نفسك الخوارة المستغرقة

ابو داؤد و الترمذي عن عبد الله ابن حبيب قال قال لي رسول الله صلى الله عليه و سلم اقرأ قل هو الله احد و المعوذتين حين تمسي و حين تصبح ثلاث مرات تكفيك من كل شئ و اخرج ابن السني من حديث عايشة رضي الله عنها من قرأ بعد صلاة الجمعة قل هو الله احد و قل اعوذ برب الفلق و قل اعوذ برب الناس سبع مرات اعاذه الله من السوء الى الجمعة الاخرى و بقيت احاديث من هذا الفصل اخرتها الى انواع الخواص تنبيه اما الحديث الطويل في فضائل القرآن سورة سورة فانه موضوع كما اخرجه الحاكم في المدخل بسنده الى ابي عمار المروزي انه قيل لابي عصمة الجامع من ابن مالك عن عكرمة عن ابن عباس في فضائل القرآن سورة سورة و ليس عند اصحاب عكرمة هذا فقال اني رأيت الناس قد اعرضوا عن القرآن و اشتغلوا بفقه ابي حنيفه رضي الله تعالى عنه و مغازي ابن اسحق فوضعت هذا الحديث حسبة و روى ابن حبان في مقدمة تاريخ الضعفأ عن ابن مهدي قال قلت لميسرة ابن عبد ربه من اين جئت بهذه الا حاديث من قرأ كذا فله كذا قال وضعتها ارغب الناس فيها و روينا عن المؤمل ابن اسماعيل قال حدثني شيخ بحديث ابيّ ابن كعب في فضائل سور القرآن سورة سورة فقال حدثني رجل بالمدائن و هو حي فسرت اليه فقلت من حدثك قال حدثني شيخ بواسط و هو حي فسرت اليه فقال حدثني شيخ بالبصرة فسرت اليه فقال حدثني شيخ بعباد ان فسرت اليه فاخذ بيدي فادخلني بيتا فاذا فيه قوم من المتصوفة و معهم شيخ فقال هذا الشيخ حدثني فقلت يا شيخ من حدثك فقال لم يحدثني

مسلم و غيره من حديث ابي هريرة قل هو الله احد تعدل ثلث القرآن و فى الباب عن جماعة من الصحابة و اخرج الطبراني فى الاوسط من حديث عبد الله ابن الشخير من قرأ قل هو الله في مرضه الذي يموت فيه لم يفتن في قبره و امن من ضغطة القبر و حملته الملائكة يوم القيامة بأكفها حتى تجيزه الصراط الى الجنة و اخرج الترمذي من حديث انس من قرأ قل هو الله احد كل يوم مايتي مرة محي عنه ذنوب خمسين سنة الا ان يكون عليه دين و من اراد ان ينام على فراشه فنام على يمينه ثم قرأ قل هو الله احد مائة مرة فاذا كان يوم القيامة يقول له الرب يا عبدي ادخل عن يمينك الجنة و اخرج الطبراني من حديث ابن الديلمي من قرأ قل هو الله احد مائة مرة فى الصلاة اوفي غيرها كتب الله له برأة من النار و اخرج فى الاوسط من حديث ابي هريرة من قرأ قل هو الله احد عشر مرات بني له قصر فى الجنة و من قراها عشرين مرة بني له قصران و من قراها ثلاثين بني له ثلاث و اخرج فى الصغير من حديثه من قرأ قل هو الله احد بعد صلوة الصبح اثنى عشرة مرة فكانما قرأ القرآن اربع مرات و كان افضل اهل الارض اذا اتقى المعوذتان اخرج احمد من حديث عقبة ان النبي صلى الله عليه و سلم قال له الا اعلمك سورا ما انزل الله فى التوراة ولا فى الزبور ولا فى الانجيل ولا فى الفرقان مثلها قلت بلى قل هو الله احد و قل اعوذ برب الفلق و قل اعوذ برب الناس و اخرج ايضا من حديث ابن عباس ان النبي صلى الله عليه و سلم قال له الا اخبرك با فضل ما تعوذ به المتعوذون قال بلى قال اعوذ برب الفلق و اعوذ برب الناس و اخرج

و ددت انها في قلب كل مؤمن تبارك الذي بيده الملك و اخرج النسائي من حديث ابن مسعود من قرأ تبارك الذي بيده الملك منعه الله ايضا من عذاب القبر الا على اخرج ابو عبيد عن ابي تميم قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اني نسيت افضل المسبحات فقال ابيّ ابن كعب فلعلها سبح اسم ربك الاعلى قال نعم القيمة اخرج ابو نعيم فى الصحابة من حديث اسمعيل ابن ابي حكيم المزنى الصحابي مرفوعا ان الله يسمع قرأة لم يكن الذين كفروا فيقول ابشر عبدي فوعزتي لا مكنن لك فى الجنة حتى ترضى الزلزلة اخرج الترمذي من حديث انس من قرأ اذا زلزلت عدلت له بنصف القرآن العاديات اخرج ابو عبيد من مرسل الحسن اذا زلزلت تعدل بنصف القرآن والعاديات تعدل بنصف القرآن الهاكم اخرج الحاكم من حديث الحاكم من حديث ابن عمر مرفوعا الا يستطيع احدكم ان يقرأ الف آية في كل يوم قالوا و من يستطيع ان يقرأ الف آية قال اما يستطيع احدكم ان يقرأ الهاكم التكاثر الكافرون اخرج الترمذي من حديث انس قل يا ايها الكافرون ربع القرآن و اخرج ابو عبيد من حديث ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قل يا ايها الكافرون تعدل بربع القرآن و اخرج احمد و الحاكم من حديث نوفل ابن معاوية اقرأ قل يا ايها الكافرون ثم نم على خاتمتها فانها برأة من الشرك و اخرج ابو يعلي من حديث ابن عباس رضي الله تعالى عنهما الا ادلكم على كلمة تنجيكم من الاشراك بالله تقرؤن قل يا ايها الكافرون عند منامكم النصر اخرج الترمذي من حديث انس اذا جاء نصرالله و الفتح ربع القرآن الاخلاص اخرج

الحاكم عن ابن مسعود موقوفا الحواميم ديباج القرآن ما ورد في الدخان اخرج الترمذي و غيره من حديث ابي هريرة من قراحم الدخان في ليلة اصبح يستغفرله سبعون الف ملك انتهى ما ورد في المفصل اخرج الدارمي عن ابن مسعود موقوفا ان لكل شيء لبابا و ان لباب القرآن المفصل الرحمن اخرج البيهقي من حديث علي مرفوعا لكل شيء عروس و عروس القرآن الرحمن المسبحات اخرج احمد و ابو داؤد و الترمذي و النسائي عن عرباض ابن سارية ان النبي صلى الله عليه و سلم كان يقرأ المسبحات كل ليلة قبل ان يرقد و يقول فيهن آية خير من الف آية قال ابن كثير في تفسيره الاية المشار اليها قوله هو الاول و الآخر و الظاهر و الباطن و هو بكل شيء عليم و اخرج ابن السني عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم اوصى رجلا اذا اخذ مضجعه ان يقرأ سورة الحشر و قال ان مت مت شهيدا و اخرج الترمذي من حديث معقل ابن يسار من قرأ حين يصبح ثلاث آيات من آخر سورة الحشر و كل الله به سبعين الف ملك يصلون عليه حتى يمسي و ان مات في ذلك اليوم مات شهيدا و من قالها حين يمسي كان بتلك المنزلة و اخرج البيهقي من حديث ابي امامة من قرأ خواتيم الحشر في ليل اونهار فمات من يومه اوليلته فقد اوجب الله له الجنة تبارك اخرج الاربعة و ابن حبان و الحاكم من حديث ابي هريرة من القرآن سورة ثلاثون آية شفعت لرجل حتى غفرله تبارك الذي بيده الملك و اخرج الترمذي من حديث ابن عباس رضى الله تعالى عنه هي المانعة هي المنجية تنجي من عذاب القبر و اخرج الحاكم من حديثه

في الملك الى آخر السورة ما ورد في الكهف اخرج الحاكم من حديث ابي سعيد من قرأ سورة الكهف في يوم الجمعة اضاء له من النور ما بينه و بين الجمعتين و اخرج مسلم من حديث ابى الدرداء من حفظ عشر آيات من اول سورة الكهف عصم من الد جال و اخرج احمد من حديث معاذ ابن انس من قرأ اول سورة الكهف و آخرها كانت له نورا من قدمه الى راسه و من قرأ ها كلها كانت له نورا مابين الارض الى السماء و اخرج البزار من حديث عمر من قرأ في ليلة فمن كان يرجو لقاء ربه الآية كان له نور من عدن ابين الى مكة حشوه الملائكة ما ورد في الم السجدة اخرج ابو عبيد من مرسل المسيب ابن رافع تجي الم السجدة يوم القيامه لها جنا حان تظل صاحبها تقول لا سبيل عليك لا سبيل عليك و اخرج عن ابن عمر موقوفا قال في تنزيل السجدة و تبارك الملك فضل بستين درجة على غيرهما من سور القرآن ما ورد في يس اخرج ابو داؤد و النسائي و ابن حبان و غيرهم من حديث معقل بن يسار يس قلب القرآن لا يقرأها رجل يريد الله و الدار الآخرة الا غفر له اقرؤها على موتا كم و اخرج الترمذي و الدارمي من حديث انس ان لكل شيء قلبا و قلب القرآن يس و من قرأ يس كتب الله له بقرأتها قرأة القرآن عشر مرات و اخرج الدارمي و الطبراني من حديث ابي هريرة رضي الله تعالى عنه من قرأ يس في ليلة ابتغاء وجه الله غفر له و اخرج الطبراني من حديث انس من دام على قرأة يس كل ليلة ثم مات مات شهيدا ما ورد في الحواميم اخرج ابو عبيدة عن ابن عباس موقافا ان لكل شئ لبابا و لباب القرآن الحواميم و اخرج

اخرج مسلم من حديث ابيّ ابن كعب اعظم آية في كتاب الله آية الكرسي و اخرج الترمذي و الحاكم من حديث ابي هريرة رضي الله عنه به ان لكل شئ سنا ما و ان سنام القرآن البقرة و فيه آية هي سيدة آى القرآن آية الكرسي و اخرج الحارث ابن ابي اسامة عن الحسن مرسلا افضل القرآن سورة البقرة و اعظم آية فيه آية الكرسي و اخرج ابن حبان و النسائي من حديث ابي امامة من قرأ آية الكرسي دبر كل صلوة مكتوبة لم يمنعه من دخول الجنة الا ان يموت و اخرج احمد من حديث انس آية الكرسي ربع القرآن ما ورد في خواتيم البقرة اخرج الايمة الستة من حديث ابي مسعود من قرأ الآيتين من آخر سورة البقرة في ليلة كفتاه و اخرج الحاكم من حديث النعمان ابن بشير ان الله كتب كتابا قبل ان يخلق السموات و الارض بالفي عام و انزل منه آيتين ختم بهما سورة البقرة ولا يقرآن في دار فيقربها شيطان ثلث ليال ما ورد في آخر آل عمران اخرج البيهقي من حديث عثمان ابن عفان من قرأ آخر آل عمران في ليلة كتب له قيام ليلة ما ورد في الانعام اخرج الدارمي و غيره عن عمر ابن الخطاب رضي الله تعالى عنه موقوفا الانعام من نواجب القرآن ما ورد في السبع الطوال اخرج احمد و الحاكم من حديث عايشة رضي الله تعالى عنها من اخذ السبع الطوال فهو خير ما ورد في هود اخرج الطبراني في الاوسط بسندواه من حديث علي رضي الله تعالى عنه لا يحفظ منافق سورا براة و هود و يس و دخان وعم يتساءلون ما ورد في آخر الاسراء اخرج احمد بن حديث معاذ ابن انس آية العز و قل الحمدلله الذي لم يتخذ ولدا و لم يكن له شريك

رب العالمين و للبخاري من حديث ابي سعيد ابن المعلي اعظم سورة فى القرآن الحمد لله رب العالمين و اخرج عبيد في مسنده من حديث ابن عباس رضي الله تعالى عنه فاتحة القرآن تعدل بثلثى القرآن ما ورد فى البقرة و آل عمران اخرج ابو عبيد من حديث انس ان الشيطان يخرج من البيت اذا سمع سورة البقرة تقرأ فيه و فى الباب عن ابن مسعود و ابي هريرة وعبد الله ابن مغفل و اخرج مسلم و الترمذي من حديث النواس ابن سمعان يوتي بالقرآن يوم القيامة و اهله الذين كانوا يعملون به مقدمهم سورة البقرة و آل عمران و ضرب لهما رسول الله صلى الله عليه و سلم ثلاثة امثال ما نسيتهن بعد قال كانهما غما متان اوغيا بتان اوظلتان سوداء و ان بينهما شرق او كانهما فرقان من طير صواف يحاجان عن صاحبهما و اخرج احمد من حديث بريدة تعلموا سورة البقرة فان اخذها بركة و تركها حسرة ولا تستطيعها البطلة تعلموا سورة البقرة و آل عمران فانهما الزهرا و ان تظلان صاحبهما يوم القيامة كانهما عما متان اوغما متان او فرقان من طير صواف و اخرج ابن حبان و غيره من حديث سهل بن سعد ان لكل شئ سنامًا و سنام القرآن سورة البقرة من قرأها في بيته نهارا لم يد خله الشيطان ثلاثة ايام و من قرأها في بيته ليلا لم يد خله الشيطان ثلاث ليال و اخرج البيهقي فى الشعب من حديث الصلصال من قرأ سورة البقرة توج بتاج الجنة و اخرج ابو عبيد عن عمر بن الخطاب رضي الله تعالى عنه موقوفا من قرأ البقرة و آل عمران في ليلة كتب من القانتين و اخرج البيهقي من مرسل مكحول من قرأ سورة آل عمران يوم الجمعة صلت عليه الملائكة الى الليل ما ورد في آية الكرسي

تعلم القرآن و علمه زاد البيهقي فى الاسماء و فضل القرآن على سائر الكلام كفضل الله على خلقه و اخرج الترمذي و الحاكم من حديث ابن عباس ان الذي ليس في جوفه شيء من القرآن كالبيت الخراب و اخرج ابن ماجه من حديث ابي ذر لان تغذ و فتتعلم آية من كتاب الله خيرلك من ان تصلى مأية ركعة و اخرج الطبراني من حديث ابن عباس رضي الله تعالى عنه من تعلم كتاب الله ثم اتبع ما فيه هداه الله به من الضلالة و وقاه يوم القيامة سوء الحساب و اخرج ابن ابي شيبه من حديث ابن شريح الخزاعي ان هذا القرآن سبب طرفه بيد الله و طرفه بايديكم فتمسكوا به فانكم لن تضلوا ولن تهلكوا بعده ابدا و اخرج الديلمي من حديث على رض حملة القرآن في ظل الله يوم لا ظل الا ظله و اخرج الحاكم من حديث ابي هريرة رضي الله تعالى عنه يجيء صاحب القرآن يوم القيامة فيقول القرآن يارب خله فيلبس تاج الكرامة ثم يقول يارب زده ارض عنه فيرضى عنه و يقال له اقرأه و ارقه و يزاد بكل آية حسنة و اخرج من حديث عبد الله ابن عمرو الصيام و القرآن يشفعان للعبد و اخرج من حديث ابي ذر انكم لا ترجعون الى الله بشيء افضل مما خرج منه يعنى القرآن

الفصل الثاني

فيما ورد في فضل سور بعينها ما ورد فى الفاتحة اخرج الترمذي و النسائي و الحاكم من حديث ابيّ ابن كعب مرفوعا ما انزل الله فى التوراة ولا فى الانجيل مثل ام القرآن وهى السبع المثاني و اخرج احمد و غيره من حديث عبد الله ابن جابر خير سورة فى القرآن الحمد لله رب العالمين و البيهقي فى الشعب و الحاكم من حديث انس افضل القرآن الحمد لله

الله و اخرج احمد من حديث معاذ ابن انس من قرأ القرآن في سبيل الله كتب مع الصديقين و الشهداء و الصالحين و حسن اولئك رفيقا و اخرج الطبراني فى الاوسط من حديث ابي هريرة ما من رجل يعلم ولده القرآن الاتوج يوم القيامة بتاج فى الجنة و اخرج ابو داؤد و احمد و الحاكم من حديث معاذ ابن انس من قرأ القرآن فاكمله و عمل به البس والده تاجا يوم القيامة ضوءه احسن من ضوء الشمس في بيوت الدنيا لوكانت فيكم فما ظنكم بالذي عمل بهذا و اخرج الترمذي و ابن ماجه و احمد من حديث على من قرأ القرآن فاستظهره فاحل حلاله و حرم حرامه ادخله الله الجنة وشفعه في عشرة من اهل بيته كلهم قد وجبت له النار و اخرج الطبراني من حديث ابي امامة من تعلم آية من كتاب الله استقبلته يوم القيامة تضحك في وجهه و اخرج الشيخان وغيرهما من حديث عايشه رضي الله تعالى عنها الماهر بالقرآن مع السفرة الكرام البررة و الذي يقرأ القرآن و يتتبع فيه و هو عليه شاق له اجران و اخرج الطبراني فى الاوسط من حديث جابر من جمع القرآن كانت له عند الله دعوة مستجابة ان شاء عجلها فى الدنيا وان شاء ادخرها له فى الآخرة و اخرج الشيخان و غيرهما من حديث ابي موسى مثل المؤمن الذي يقرأ القرآن مثل الا ترجه طعمها طيب و ريحها طيب و مثل المؤمن الذي لا يقرأ القرآن كمثل التمرة طعمها طيب ولا ريح لها و مثل الفاجر الذي يقرأ القرآن كمثل الريحانة ريحها طيب و طعمها مر و مثل الفاجر الذي لا يقرأ القرآن كمثل الحنظلة طعمها مر ولا ريح لها و اخرج الشيخان من حيث عثمان خيركم و في لفظ افضلكم من

احمد و غيره من حديث عقبة ابن عامر لو كان القرآن في اهاب ما اكلته النار قال ابو عبيد اراد بالاهاب قلب المومن و جوفه الذي قد وعى القرآن و قال غيره معناه ان من جمع القرآن ثم دخل النار فهو شر من الخنزير و قال ابن الانباري معناه ان النار لا تبطله و تقلعه من الاسماع التي وعته والافهام التي حصلته كقوله فى الحديث الآخر و انزلت عليك كتابا لا يغسله الماء اي لا يبطله و لا تقلعه من اوعية الطيبة و مواضعه لانه و ان غسله الماء فى الظاهر لا يغسله بالقلع من القلوب و عند الطبراني من حديث عصمة ابن مالك لوجمع القرآن في اهاب ما احرقته النار و عنده من حديث سهل ابن سعد لو كان القرآن في اهاب ما مسه النار و اخرج الطبراني فى الصغير من حديث انس من قرأ القرآن يقوم به اناء الليل و النهار يحل حلاله و يحرم حرامه حرم الله لحمه و دمه على النار و جعله رفيق السفرة الكرام البررة حتى اذا كان يوم القيامة كان القرآن حجة له و اخرج ابو عبيد عن انس مرفوعا القرآن شافع مشفع و ماحل مصدق من جعله امامه قاده الى الجنة و من جعله خلفه ساقه الى النار و اخرج الطبراني من حديث انس حملة القرآن عرفاء اهل الجنة و اخرج النسائي و ابن ماجه و الحاكم من حديث انس اهل القرآن هم اهل الله وخاصته و اخرج مسلم وغيره من حديث ابي هريرة رضي الله تعالى عنه ان رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ايحب احدكم اذا رجع الى اهله ان يجد ثلاث خلفات عظام سمان قلنا نعم قال فثلث آيات يقرأ من احدكم في صلوة خيرله من ثلاث خلفات عظام سمان و اخرج مسلم من حديث جابر بن عبد الله خير الحديث كتاب

من طريق الحارث الاعور عن علي قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ستكون فتن قلت فما المخرج منها يا رسول الله قال كتاب الله فيه نبأ ما قبلكم و خبر ما بعدكم و حكم ما بينكم و هوا لفصل ليس بالهزل من تركه من جبار فضمه الله و من ابتغى الهدى من غيره اضله الله و هو حبل الله المتين وهوالذكرالحكيم و هوالصراط المستقيم و هو الذي لا يزيغ به الاهوا ولا تلبس به الالسنة ولا تشبع منه العلماء ولا يخلف على كثرة الرد ولا تقتضي عجائبه من قال به صدق و من عمل به اجر و من حكم به عدل و من دعى هدى الى صراط مستقيم و اخرج الدارمي من حديث عبد الله ابن عمرو مرفوعا القرآن احب الى الله من السموات و الارض و من فيهن و اخرج احمد و الترمذي من حديث شداد ابن اوس ما من مسلم ياخذ مضجعه فيقرأ سورة من كتاب الله الا وكل الله به ملكا فلا يقربه شئ يوذيه حتى يهب متى هب و اخرج الحاكم و غيره من حديث عبد الله ابن عمرو من قرأ القرآن فقد استدرج النبوة بين جنبيه غير انه لا يوحى اليه لا ينبغي لصاحب القرآن ان يجد مع من جد ولا يجهل مع من يجهل وفي جوفه كلام الله و اخرج البزاز من حديث انس ان البيت الذي يقرأ فيه القرآن يكثر خيره و البيت الذي لا يقرأ فيه القرآن يقل خيره و اخرج الطبراني من حديث ابن عمر ثلاثة لا يهولهم الفزع الاكبر و لا ينالهم الحساب هم على كثيب من مسك حتى يفزع من حساب الخلايق رجل قرأ القرآن ابتغاء وجه الله وام به قوما و هم به راضون الحديث و اخرج ابو يعلي و الطبراني من حديث ابي هريرة القرآن غني لا فقر بعده و لا غني دونه و اخرج

ابن المطلب و امية ابن خلف النفاثات بنات لبيد ابن الاعصم و اما مبهما الاقوام و الحيوانات و الامكنة و الازمنة و نحو ذلك فقد استوفيت الكلام عليها في تاليفنا المشار اليه النوع الحادي و السبعون في اسماء من نزل فيهم القرآن رأيت فيه تاليفا مفردا لبعض القدماء لكنه غير محرر و كتاب اسباب النزول و المبهمات يغنيان عن ذلك و قد قال ابن ابي حاتم ذكر عن الحسين ابن زيد الطحان حدثنا اسحق ابن منصور حدثنا قيس عن الاعمش عن المنهال عن عباد ابن عبد الله قال قال علي مافي قريش احد الا و قد نزلت فيه آية قيل له هما نزل فيك قال و يتلوه شاهد منه و من امثلة ما اخرجه احمد و البخاري في الادب عن سعد ابن ابي وقاص قال نزلت في اربع آيات يسئلونك عن الانفال و وصينا الانسان بوالديه حسنا و آية تحريم الخمر و آية الميراث و اخرج ابي حاتم عن رفاعة القرظي قال نزلت ولقد وصلنا لهم القول في عشرة انا احدهم و اخرج الطبراني عن ابي جمعة حنيد ابن سبع و قيل حبيب ابن سباع قال فينا نزلت و لولا رجال مؤمنون و نساء مؤمنات و كنا تسعة نفر سبعة رجال و امرأتين النوع الثاني و السبعون في فضائل القرآن افرده بالتصنيف ابو بكر ابن ابي شيبة و النسائي و ابو عبيد القاسم ابن سلام و ابن الضريس و اخرون و قد صح فيه احاديث باعتبار الجملة و في بعض السور على التعيين و وضع في فضائل السور احاديث كثيرة ولذلك صنفت كتابا سميته حمائل الزهر في فضائل السور جرات فيه ماليس بموضوع و انا اورد في هذا النوع فصلين الفصل الاول فيما ورد من فضله على الجملة اخرج الترمذي و الدارمي و غيرهما

ابن ابي امية و ذريته سمى من اولاد ابليس سيروا لا عور و النيور
و مسوط و داسم و قالوا ان نتبع الهدى معك سمى منهم ابن الحارث
ابن عامر ابن نوفل احسب الناس ان يتركواهم الموذون على الاسلام
بمكة منهم عمار ابن ياسر و قال الذين كفروا للذين امنوا اتبعوا
سبيلنا سمى منهم الوليد ابن المغيرة و من الناس من يشترى
لهوالحديث سمى منهم النضر ابن الحارث فمنهم من قضى نحبه
سمى منهم انس ابن النضر قالوا الحق اول من يقوله جبريل فيتبعونه
و انطلق الملا سمى منهم عقبة ابن ابي معيط و ابو جهل و العاص ابن
وايل و الاسود ابن المطلب و الاسود ابن يغوث و قالوا ما لنا لا نرى
رجالا سمى من القائلين ابو جهل و من الرجال عمار و بلال نفرا
من الجن سمى منهم زوبعة و حسى و مسى و ساص و ماص
و الارد و ايذان و الا حقم و سرق ان الذين ينادونك من و راء الحجرات
سمى منهم الاقرع ابن حابس و الزبرقان ابن بدر و عيينة ابن حصن
و عمرو ابن الاهتم الم تر الى الذين تولوا قوما قال السدي نزلت في
عبد الله ابن نبتل من المنافقين لا ينهاكم الله عن الذين لم يقاتلوكم
نزلت في قبيلة ام اسماء بنت ابي بكر و اذا جاءكم المومنات
سمى منهم ام كلثوم بنت عقبة ابن ابي معيط و اميمة بنت بشر
يقولون لا تنفقوا يقولون لئن رجعنا سمى منهم عبد الله ابن ابيّ
و يحمل عرش ربك الآية سمى من حملة العرش اسرافيل و لبنان
و رد فيل اصحاب الاخدود ذونواس زرعة ابن اسعد الحميري و اصحابه
اصحاب الفيل هم الحبشة قايدهم ابرهة الاشرم و دليلهم ابو رغال قل
يا ايها الكافرون نزلت فى الوليد ابن المغيرة و العاص ابن وايل و الاسود

المؤمنين لكا رهون سمى منهم ابو ايوب الانصاري و من الذين
لم يكرهوا المقداد ان تستفتحوا سمى منهم ابو جهل و اذ يمكربك
الذين كفروا و هم اهل دارالندوة سمى منهم عتبة و شيبة ابنا ربيعة
و ابوسفيان و ابو جهل وجبير ابن مطعم و طعيمة ابن عدى و الحارث
ابن عامر و النضر ابن الحارث و زمعه ابن الاسود و حكيم ابن حزام
و امية ابن خلف اذ قالوا اللهم ان كان هذا هوالحق الآية سمى منهم
ابو جهل و النضر ابن الحارث اذ يقول المنا فقون و الذين في قلوبهم
مرض غر هولاء سمى منهم عتبه ابن ربيعه و قيس ابن الوليد و ابو
قيس ابن الفاكه و الحارث ابن زمعه و العاص ابن منبه قل لمن في
ايديكم من الاساري كانوا سبعين منهم العباس و عقيل و نوفل ابن
الحارث و سهيل ابن بيضا و قالت اليهود عزير سمى منهم سلام بن
مشكم و نعمان ابن اوفى و محمد ابن دحية و شاس بن قيس و مالك
ابن الصنيف الذين يلمزون المطوعين سمى من المطوعين عبد الرحمن
ابن عوف و عاصم ابن عدى و من الذين لا يجدون الا جهدهم ابو
عقيل و رفاعة ابن سعد ولا على الذين اذا ما اتوك سمى منهم
العرياض ابن ساريه و عبد الله بن معقل المزني و عمرو المزني و عبد الله
ابن الازرق الانصاري و ابو ليلى الانصاري فيه رجال يحبون سمى
منهم عويم ابن ساعدة الا من اكره و قلبه مطمئن بالايمان نزلت في
جماعة منهم عمار ابن ياسر و عياش ابن ابي ربيعة بعثنا عليكم عبادالنا
هم جالوت و اصحابه و ان كادوا ليفتنونك قال ابن عباس نزلت
في رجال من قريش منهم ابو جهل و امية ابن خلف و قالوا
لن نؤمن لك حتى تفجر سمى ابن عباس من قائلي ذلك عبد الله

سمى منهم ابن عباس رضي الله عنه و امه ام الفضل و عياش ابن
ابي ربيعه وسلمة ابن هشام الذين يختانون انفسهم بنوا بيرق بشر
و بشير و مبشر لهمت طايفة منهم ان يضلوك هم اسير ابن عروقا
و اصحابه و يستفتونك فى النساء سمى من المستفتين خولة بنت
حكيم يسئلك اهل الكتاب سمى منهم ابن عسكر كعب ابن الاشرف
و فنحاصا لكن الراسخون فى العلم قال ابن عباس رضي الله عنه هم
عبد الله بن سلام و اصحابه يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة سمى
منهم جابر ابن عبد الله ولا امين البيت الحرام سمى منهم الحطم
ابن هند البكري يسئلوك ماذا احل لهم سمى منهم عدى ابن
حاتم و زيد ابن المهلهل الطامان و عاصم ابن عدى و سعد ابن حيثمه
و عويم ابن ساعدة اذهم قوم ان يبسطوا سمى منهم كعب ابن الاشرف
و حي ابن اخطب و لتجدن اقربهم مودة الآيات نزلت فى الوفد الذين
جاؤا من عند النجاشي و هم اثناعشر و قيل ثلاثون و قيل سبعون
و سمى منهم ادريس و ابراهيم و الاشرف و تميم و تمام وذريد و قالوا
لولا انزل عليه ملك سمى منهم زمعة بن الاسود و النضر ابن الحارث
ابن كلدة و ابيّ ابن خلف و العاصي ابن وايل ولا تطرد الذين يدعون
ربهم سمى منهم صهيب و بلال و عمار و جناب و سعد ابن ابي وقاص
و ابن مسعود و سلمان الفارسي اذ قالوا ما انزل الله على بشر سمى
منهم فنحاص و مالك ابن الضيف قالوا لن نؤمن حتى نؤتي مثل
ما اؤتي رسل الله سمى منهم ابو جهل و الوليد ابن المغيرة يسئلونك
عن الساعة سمى منهم حمل ابن قشير و شمويل ابن زيد يسئلونك
عن الانفال سمى منهم سعد ابن ابي وقاص و ان فريقا من

مسعود و حذيفه ابن اليماني و ابو عبيدة ابن الجراح الذين قال لهم الناس سمى من القائلين نعيم ابن مسعود الاشجعى الذين قالوا ان الله فقير و نحن اغنياء قال ذلك فنحاص و قيل حيى ابن اخطب و قيل كعب ابن الاشرف و ان من اهل الكتاب لمن يؤمن بالله نزلت فى النجاشي و قيل في عبد الله ابن سلام و اصحابه و بث منهما رجالا كثيرا و نساء قال ابن اسحاق اولاد آدم لصلبه اربعون في عشرين بطنا كل بطن ذكر و انثى و سمى من بنيه قابيل و هابيل و اياد و شبوبه و هند و جرابيس و مخور و سند و بارق و شيث و عبد المغيث و عبد الحارث و ودو سواع و يغوث و يعوق و نسر و من بناته اقليمه و انثوف و جزوزه و عزورا و امة المغيث الم تر الى الذين اوتوا نصيبا من الكتاب يشترون الضلالة قال عكرمة نزلت في رفاعه ابن زيد ابن التابوت و كردم ابن زيد و اسامه ابن حبيب و رافع ابن ابي رافع و مجري ابن عمرو و حيي ابن اخطب الم تر الى الذين يزعمون انهم امنوا نزلت فى الحلاس ابن الصامت و معتب ابن قشير و رافع ابن زيد و بشر الم تر الى الذين قيل لهم كفوا ايديكم سمى منهم عبد الرحمن ابن عوف الا الذين يصلون الى قوم قال ابن عباس رضي الله تعالى عنه نزلت في هلال ابن عويمر الاسلمي و سراقه ابن مالك المدلجي و في بني حزيمة ابن عامر ابن عبد مناف ستجدون اخرين قال السدي نزلت في جماعة منهم نعيم ابن مسعود الاشجعي ان الذين توفاهم الملائكة ظالمي انفسهم سمى عكرمه منهم علي ابن اميه ابن خلف و الحارث ابن زمعة و ابا قيس ابن الوليد ابن المغيرة و ابا العاص بن منبه ابن الحجاج و ابا قيس ابن الفاكه الا المستضعفين

و كعب ابن الاشرف و رافع ابن حرملة و الحجاج ابن عمرو و الربيع ابن ابي الحقيق و اذا قيل لهم اتبعوا الآية سمى منهم رافع و مالك ابن عوف يسئلونك عن الاهلة سمى منهم معاذ ابن جبل و ثعلبة ابن غنم يسئلونك ماذا ينفقون سمى منهم عمرو ابن الجموح يسئلونك عن الخمر سمى منهم عمرو معاذ و حمزة يسئلونك عن اليتامى سمى منهم عبد الله ابن رواحه و يسئلونك عن المحيض سمى منهم ثابت ابن الدحداح و عباد بن بشروا سيد بن الحضير الم تر الى الذين اوتوا نصيبا سمى منهم النعمان ابن عمرو والحارث بن زيد الحواريون سمى منهم بطرس ويعقوس و نجنس و اندرانس و فيلس و ابن تلما و متنا و توماس و يعقوب ابن حلقيا وندراسيس و ماتيا و نوس و اربا بوطا و جرجس و هوالذي القي عليه شبهه و قالت طايفة من اهل الكتاب امنوا هم اثني عشر من اليهود سمى منهم عبد الله ابن الضيف و عدي ابن زيد و الحارث ابن عمرو كيف يهدى الله قوما كفروا بعد ايمانهم قال عكرمه نزلت في اثنا عشر رجلا منهم ابو عامر الراهب و الحارث بن سويد ابن الصامت ووجوح ابن الاسلب زاد ابن عسكر و طعيمة ابن ابيرق يقولون هل لنا من الامر من شئ سمى من القائلين عبد الله ابن ابيّ يقولون لو كان لنا من الامر شيء ما قتلنا هاهنا سمى من القائلين عبد الله ابن ابيّ و معقب ابن بشير و قيل لهم تعالوا فاتلوا القائل ذلك عبد الله والد جابر ابن عبد الله الانصاري و المقول لهم عبد الله ابن ابيّ و اصحابه الذين استجابوا لله و للرسول هم سبعون منهم ابو بكر و عمر و عثمان و علي و الزبير و سعد و سعيد و طلحة و ابن عوف و ابن

تجادلك هي خولة بنت ثعلب في زوجها هو اوس بن الصامت لم تحرم ما احل الله لك هي سرية ماريه اسر النبي الى بعض ازواجه هي حفصه نبأت به اخبرت عايشة ان تتوبا وان تظاهرا هما عايشة و حفصه و صالح المومنين هما ابو بكر و عمرا خرجه الطبراني فى الاوسط امرأة نوح و اللغة امرأة لوط و آلهة و قيل و اهلة و لا تطع كل حلاف نزلت فى الاسود ابن عبد يغوث و قيل الاخنس بن شريق و قيل الوليد بن مغيرة سأل سائل هو النضر بن الحارث رب اغفرلي و لوالدي اسم ابيه لمك بن متوشلخ و امه شمني بنت انوش سفيهنا هو ابليس ذرني من خلقت و حيدا هو الوليد بن المغيرة فلا صدق ولا صلى الآيات نزلت في ابي جهل هل اتى على الانسان هو آدم و يقول الكافر ياليتني كنت ترابا هو ابليس ان جاءه الاعمى هو عبد الله بن ام مكتوم واما من استغنى هو اميه بن خلف و قيل عتبه بن ربيعه نقول رسول كريم قيل جبرئيل و محمد صلى الله عليه و سلم فاما الانسان اذا ما ابتلاه الآيات نزلت في اميه بن خلف و والد هو آدم فقال لهم رسول الله صلى الله عليه و سلم هو صالح و الاشقي هو امية بن خلف الاتقي ابو بكر الصديق الذي ينهي عبدا هو ابو جهل و العبد هو النبي صلى الله عليه و سلم ان شانيك هو العاص ابن وايل و قيل ابو جهل و قيل عقبة ابن ابي معيط و قيل هو ابو لهب و قيل كعب ابن الاشرف امرأة ابي لهب ام جميل العورا بنت حرب ابن امية القسم الثاني في مبهمات الجموع الذين عرف اسماء بعضهم و قال الذين لا يعلمون لولا يكلمنا الله يسمي منهم رافع ابن حرملة سيقول السفهاء سمي منهم رفاعة ابن قيس و قردم ابن عمرو

كلثوم اهل البيت قل صلى الله عليه و سلم هم علي و فاطمة و الحسن و الحسين للذي انعم الله عليه و انعمت عليه هو زيد ابن حارثة امسك عليك زوجك هي زينب بنت جحش و حملها الانسان و قال ابن عباس رضي الله عنهما هو آدم ارسلنا اليهما اثنين هما شمعون و يوحنا و الثالث يونس و قيل هم صادق و صدوق و شلوم و جاء رجل هو حبيب النجار اولم يرالانسان هو العاص ابن وايل و قيل ابي ابن خلف و قيل اميه ابن خلف فبشرناه بغلام هو اسمعيل و اسحق قولان شهيران بناء الخصم هما ملكان قيل انهما جبرئيل و ميكائيل جسدا هو شيطان يقال له اسد و قيل صخر و قيل حبقيق مسني الشيطان قال نون الشيطان الذي مسه يقال له مسعط والذي جاء بالصدق محمد و قيل جبرئيل وصدق به محمد صلعم و قيل ابو بكر الذين اضلانا ابليس و قابيل رجل من القريتين عنوا الوليد بن مغيره من مكة و مسعود بن عمرو الثقفي و قيل عروة بن مسعود بن الطايف و لما ضرب ابن مريم مثلا الضارب له عبد الله بن الزبعري طعام الاثيم قال ابن جبير هو ابو جهل و شهد شاهد من بني اسرائيل هو عبد الله بن سلام اولوالعزم من الرسل اصح الاقوال انهم نوح و ابراهيم و موسى و عيسى و محمد صلى الله على نبينا و عليهم السلام ينادي المنادي هو اسرافيل ضيف ابراهيم المكرمين قال عثمان بن محصن كانوا اربعة من الملائكة جبرئيل و ميكائيل و اسرافيل و رفائيل و بشروه بغلام قال الكرماني اجمع المفسرون على انه اسحاق الا مجاهد فانه قال هو اسمعيل شديد القوي جبرئيل افرأيت الذي تولى هو العاص بن وايل و قيل الوليد بن المغيره يدعو الداع هو اسرافيل قول التي

الظالم هو عقبة ابن ابي معيط لم اتخذ فلانا هو اميه بن خلف
و قيل ابي ابن خلف و كان الكافر قال الشعبي هو ابو جهل امرأة
تملكهم هي بلقيس بنت شراحيل فاما جاء سليمان اسم الجائي
منذر قال عفريت اسمه كوزن الذي عنده علم هو آصف ابن برخيا
كاتبه و قيل رجل يقال له ذو النور و قيل اسطوم و قيل مليخا و قيل
بلخ و قيل ضبه ابو القبيله و قيل جبرئيل و قيل ملك اخر و قيل
الخضر تسعة رهط هم زعمي و زعيم و هرمي و هريم و داب و صواب و رياب
و مسطع و قدار ابن سالف عاقر الناقة فالتقطه آل فرعون اسم الملتقط
طابوت امرأة فرعون آسيه بنت مزاحم ام موسى يحانذ بنت يصهر
ابن لاوي و قيل ياد وخا و قيل اباذخت و قالت لاخته اسمها مريم
و قيل كلثوم هذا من شيعته هو السامري و هذا من عدوه اسمه فاتون
و جاء رجل من اقصى المدينة هو مؤمن آل فرعون و اسمه شمعان
و قيل شمعون و قيل جبر و قيل حبيب و قيل حزقيل امرأتين
تذودان هما اليا و صعوريا و هي التي نكحها و ابو هما شعيب و قيل
يثرون ابن اخي شعيب قال لقمان لابنه اسمه باران بالموحدة و قيل
داران و قيل انعم و قيل مشكم ملك الموت اشتهر على الا لسنة ان اسمه
عزرائيل و رواه ابو الشيخ بن حيان عن وهب افمن كان مؤمنا كمن
كان فاسقا نزلت في علي بن ابي طالب والوليد ابن عقبه و يستاذن
فريق قال السدي هما رجلان من بني حارثة ابو عرابة ابن اوس
و اوس بن قبطي قل لازواجك قال عكرمة كان تحته يومئذ تسع
نسوة عايشه و حفصه و ام حبيبة و سوده و ام سلمه و صفية و ميمونه
و زينب بنت حجش و جويريه و بناته فاطمه و زينب و رقيه و ام

عفان كالتي نقضت غزلها هي ربطه بنت سعيد ابن زيد مناه ابن نميم انما يعلمه بشر عنوا عبد ابن الخضرمي و اسمه مقيس و قيل عبدين له يسار و جبر و قيل عنوا قينا بمكة اسمه بلعام و قيل سلمان الفارسي اصحاب الكهف تمليخا و هو رئيسهم و القائل فاروا الى الكهف و القائل ربكم اعلم بمالبثتم و تكسلمينا و هو القائل كم لبثتم ومرطوش و براشق و ايونس و اوسطابس و سلططيوش فابعثوا احدكم بورقكم هو تمليخا من اغفلنا قلبه هو عيينة بن حصين و اضرب لهم مثلا رجلين هما تمليخا و هو الخير و فرطوس و هما المذكوران في سورة الصافات قال موسى لفتاه هو يوشع ابن نون و قيل اخوه يثربي فوجدا عبدا هو الخضر و اسمه بليا لقيا غلاما اسمه جيسور بالجيم و قيل بالحاو راءهم ملك هو حدد ابن بدد و اما الغلام فكان ابواه اسم الاب كان برا و الام سهوي لغلامين يتيمين هما احرم و حريم فناداها من تحتها قيل عيسى و قيل جبرئيل و يقول الانسان هو ابيّ ابن خلف و قيل امية بن خلف و قيل الوليد بن المغيرة افرأيت الذي كفر هو العاص ابن وايل و قتلت نفسا هو القبطي و اسمه قاتون السامري اسمه موسى بن ظفر من اثر الرسول هو جبرئيل و من الناس من يجادل هو النضرا بن الحارث هذان خصمان اخرج الشيخان عن ابي ذر قال نزلت هذه الآية في حمزة و عبيدة ابن الحارث و علي ابن ابي طالب و عتبه بن شيبة والوليد ابن عتبه و من يرد فيه بالحاد قال ابن عباس نزلت في عبد الله ابن انيس الذين جاؤا بالافك هم حسان ابن ثابت و مسطح ابن اثاثة و حمنة بنت جحش و عبد الله ابن ابيّ و هو الذي تولى كبره بعض

ابن مالک وهم الثلاثة الذين خلفوا و الذين اتخذوا مسجدا قال ابن
اسحاق اثنا عشر من الانصار حذام بن خالد و ثعابه ابن خاطب و هزال
بن اميه و معيث ابن قشير و ابو حبيبه ابن الازعز و عباد ابن حنيف
و جارية ابن عامر و ابناه مجمع و زيد و نبتل بن الحارث و سجدج
و نجاد ابن عثمان و وديعة ابن ثابت لمن حارب الله و رسوله هو ابو
عامر الراهب افمن كان على بينة من ربه هو محمد و يتلوه شاهد منه
هو جبريل و قيل القرآن و قيل ابو بكر و قيل علي و نادي نوح ابنه
اسمه كنعان و قيل تامر و امرأته قائمة اسمها ساره من بنات لوط ريثا
و رغوثا ليوسف و اخوه هو بنيامين شقيقه قال قائل منهم هو روبيل
و قيل يهودا و قيل شمعون فارساوا و اردهم هو مالک ابن ذعر و قال
الذي اشتراه هو قطيفرا و اطيفير لامرأته هي راعيل و قيل زليخا و دخل
معه السجن فتيان هما مجاث و بنو و هو الساقي و قيل راشان و مرطاش
و قيل هم و سرهم الذي ظن انه ناج هو الساقي عند ربك هو الملک
ريان ابن المليک باخ لكم هو بنيامين و هو المتكرر في السورة فقد
سرق اخ له عنوا يوسف قال كبيرهم هو شمعون و قيل روبيل اوي
اليه ابويه هما ابوه و خالته ليا و قيل امه و اسمها راحيل و من
عنده علم الكتاب هو عبد الله ابن سلام و قيل جبريل اسكنت من
ذريتي هو اسمعيل و لوالدي اسم ابيه تارخ و قيل آزر و قيل يازر
و اسم امه شاني و قيل نوفا و قيل لبوثا انا كفيناک المستهزئين
قال سعيد بن جبير هم خمسة الوليد ابن المغيرة و العاص ابن وايل
بن ربيعه و الحارث ابن قيس و الاسود ابن عبد يغوث رجلين
احدهما ايكم هو اسيد ابن ابي العيص و من يأمر بالعدل عثمان ابن

العيص رجل من خزاعة و قيل ابو ضمرة ابن العيص و قيل اسمه سبرة
و قيل هو خالد ابن حزام وهو غريب جدا وبعثنا منهم اثنى عشر
نقيبا هو شمعون ابن زكور من سبط روئيل و شوقط ابن حوري من
سبط شمعون و كالب ابن نفوقنا من سبط يهوذا و نفورك ابن يوسف
من سبط اشاجرة و يوشع ابن نون من سبط افرائيم ابن يوسف و يلطي
ابن زوفوا من سبط بنيامين و كرابيل ابن سودي من سبط زيالون
و كدى ابن سوساس من سبط منشا ابن يوسف و عربيل ابن كسل من
سبط دان و ستور ابن ميخائيل من سبط عشير و تحني ابن وقوس
من سبط نفتال و لال ابن موخا من سبط كاذلو قال رجلان هما يوشع
و كالب ابنا ابني آدم هما قابيل و هابيل و هو المقتول الذي اتيناه
آياتنا فانسلخ منها بلعم و يقال بلعام ابن ابر و يقال باعر و يقال باعورا
و قيل هو امية ابن ابى الصلت و قيل صيفي ابن الراهب و قيل فرعون
و هوا عربها و اني جارلكم عني سراقة ابن جعشم فقاتلوا ائيمة الكفر
قال قتادة هم ابو سفيان و ابو جهل و اميه ابن خلف و سهيل ابن
عمرو و عتبة ابن ربيعه اذ يقول لصاحبه هو ابو بكر و فيكم سماعون
لهم قال مجاهد هم عبد الله ابن ابي سلول و رفاعه ابن القابوت و اوس
ابن قبطي و منهم من يقول ايذن لي هو الجد ابن قيس و منهم
من يلمزك فى الصدقات هو ذوالخو يصره ان يعف عن طائفة منكم
هو محمس ابن حميرو منهم من عاد الله هو ثعله ابن خاطب واخرون
اعترفوا بذنوبهم قال ابن عباس هو سبعة ابو لبابة و اصحابه و قال
قتادة سبعة من الانصار ابو لبابه و جد ابن قيس و خزام و اوس و كردم
و مرداس و اخرون مرجون هلال بن امية و مرارة بن الربيع و كعب

على قسمين الاول في ما ابهم من رجل او امرأة او ملك او جن
او مثني او مجموع عرف اسماء كلهم او من او الذي اذ لم يرد به العموم
قوله تعالى اني جاعل في الارض خليفه هو آدم و زوجه حواء بالمد
لانها خلقت من حي و اذا قتلتم نفسا اسمه عاميل و ابعث فيهم
رسولا منهم هو النبي صلى الله عليه و سلم و وصي بها ابراهيم بنيه
اسماعيل و اسحاق و مدين و زهوان و سرج و نفس و نفشان و اميم
و كيسان و سورج و لوطان و نافس الاسباط اولاد يعقوب اثني عشر رجلا
يوسف و روئيل و شمعون ولاوي و يهودا وداني و تفتاني بفاء و مثناة
و كاد و اسير و ايساجر و رايلون و بنيا مين و من الناس من يعجبك
قوله هو الاخفش ابن شريق و من الناس من يشري نفسه هو صهيب
اذ قالو النبي لهم هو شمويل و قيل شمعون و قيل يوشع منهم من
كلم الله قال مجاهد موسى و رفع بعضهم درجات قال محمد الذي
حاج ابراهيم نمرود ابن كنعان او كالذي مر على قرية عزير و قيل ارميا
و قيل حزقيل امرأة عمران حنه بنت فاقوذ و امراتي عاقر هي
اشياع او اشبع بنت فاقوذ مناديا ينادي للايمان هو محمد صلى الله
عليه و سلم الطاغوت قال ابن عباس هو كعب ابن الاشرف اخرجه
احمد و ان منكم لمن ليبطئين هو عبد الله بن ابيّ ولا تقولوا لمن القي
اليكم السلام هو عامر ابن الاضبط الاسجعي و قيل مرداس و القائل
ذلك نفر من المسلمين منهم ابو قتادة و محلم ابن جثامه و قيل
ان الذي باشر القول محلم و قيل انه الذي باشر قتله ايضا و قيل قتله
المقداد ابن الاسود و قيل اسامة ابن زيد و من يخرج من بيته مهاجرا
الى الله و رسوله ثم يدركه الموت هو ضمرة بن جندب و قيل ابن

التنبيه على العموم و انه غير خاص بخلاف مالوعين نحو و من يخرج من بية مهاجرا السادس تعظيمه بالوصف الكامل دون الاسم نحو ولا يأتل اولوا الفضل والذي جاء بالصدق و صدق به اذ يقول لصاحبه و المراد الصديق فى الكل السابع تحقيره بالوصف الناقص نحو ان شانيك هو الابتر تنبيه قال الزركشي فى البرهان لا يبحث عن مبهم اخبرالله باستتاره بعلمه كقوله و اخرين من دونهم لا تعلمو نهم الله يعلمهم قال و العجب ممن تجرا و قال انهم قريظة او من الجن قلت ليس فى الآية ما يدل على ان جنسهم لا يعلم و انما المنفي علم اعيانهم ولاينافيه العلم بكونهم من قريظة او من الجن و هو نظير قوله فى المنافقين و ممن حولكم من الاعراب منافقون و من اهل المدينة مردوا على النفاق لا تعلمهم نحن نعلمهم فان المنفي علم اعيانهم ثم القول في اولئك انهم قريظة اخرجه ابن ابي حاتم عن مجاهد و القول بانهم من الجن اخرجه ابن ابي حاتم من حديث عبد الله ابن غريب عن ابيه مرفوعا عن النبي صلى الله عليه و سلم فلا جراة

فصل اعلم ان المبهمات مرجعة النقل المحض لا مجال للرأى فيه ولما كانت الكتب المؤلفة فيه وساير التفاسير يذكر فيها اسماء المبهمات و الخلاف فيها دون بيان مستند يرجع اليه او عز و يعتمد عليه الفت الكتاب الذي الفته مذكورا فيه عز وكل قول الى قائله من الصحابة والتابعين و غيرهم معزوا الى اصحاب الكتب الذين خرجوا ذلك باسانيدهم مبينا فيه ماصح سنده و ما ضعف فجاء لذلك كتابا حافلا لا نظير له في نوعه و قد رتبته على ترتيب القرآن و انا الخص هنا مهماته باوجز عبارة تاركا العزو و التخريج غالبا اختصارا و احالة على الكتاب المذكور و ارتبه

ابو مرة و قيل ان فرعون لقب لكل من ملك مصرا خرجه ابن ابي حاتم عن مجاهد قال كان فرعون فارسيا من اهل اصطخر و منها تبع قيل كان اسمه اسعد ابن ملكي كرب و سمي تبعا لكثرة من تبعه و قيل انه لقب ملوك اليمن يسمى كل واحد منهم تبعا اي يتبع صاحبه كالخليفة يخلف غيره الذوع السبعون في المبهمات افرده بالتاليف السهيلي ثم ابن عساكر ثم القاضي بدرالدين ابن جماعة و لي فيه تاليف لطيف جمع فوائد الكتب المذكورة مع زوايد آخر على صغر حجمه جدا و كان من السلف من يعتني به كثيرا قال عكرمة طلبت الذي خرج من بيته مهاجرا الى الله و رسوله ثم ادركه الموت اربعة عشرة سنة والابهام في القرآن اسباب احدها الاستغناء ببيانه في موضع آخر كقوله صراط الذين انعمت عليهم فانه مبين في قوله مع الذين انعم الله عليهم من النبيين و الصديقين و الشهداء والصالحين الثاني ان يتعين لاشتهاره كقوله و قلنا يا آدم اسكن انت و زوجك الجنة ولم يقل حوا لانه ليس له غيرها الم تر الى الذي حاج ابراهيم في ربه و المراد نمرود لشهرة ذلك لانه المرسل اليه قيل وقد ذكر الله فرعون في القرآن باسمه ولم يسم نمرود لان فرعون كان اذكى منه كما يوخذ من اجوبته لموسى ونمرود كان بليدا و لهذا قال انا احيي واميت وفعل ما فعل من قتل شخص و العفو عن آخر و ذلك غاية البلادة الثالث قصد الستر عليه ليكون ابلغ في استعطافه نحو و من الناس من يعجبك قوله في الحيوة الدنيا الايه هو الاخنس ابن شريق وقد اسلم بعد وحسن اسلامه الرابع ان لا يكون في تعيينه كبير فائدة نحو او كالذي مر على قرية و اسئلهم عن القرية الخامس

القاويل و لما ذكر موهبة لابراهيم و تبشيره به قال يعقوب و كان اولى
من اسرائيل لانها موهبة بمعقب آخر فناسب ذكر اسم يشعر بالتعقيب
و منها المسيح لقب لعيسى و معناه قيل الصديق و قيل الذي
ليس لرجله اخمص و قيل الذي لا يمسح ذاعاهة الابرا وقيل الجميل
و قيل الذي يمسح الارض اي يقطعها و قيل غير ذلك و منها
الياس قيل انه لقب ادريس اخرج ابن ابي حاتم بسند حسن عن
ابن مسعود قال الياس هو ادريس و اسرائيل هو يعقوب و في قرأته
و ان ادريس لمن المرسلين سلام على ادراسين و في قرأة ابي و ان
ايليس سلام على ايليسين و منها ذوالكفل قيل انه لقب الياس و
قيل لقب اليسع و قيل لقب يوشع و قيل لقب زكريا و منها نوح
اسمه عبد الغفار و لقبه نوحا لكثرة نوحه على نفسه في طاعة ربه
كما اخرجه ابن ابي حاتم عن يزيد الرقاشي و منها ذوالقرنين و اسمه
اسكندر و قيل عبدالله ابن الضحاك ابن سعد و قيل هو المنذر ابن ماء
السماء و قيل الصعب ابن قرين ابن الهمال حكاهما ابن عسكر ولقب
ذا القرنين لانه بلغ قرنى الارض المشرق و المغرب و قيل لانه ملك
فارس و الروم و قيل كان على راسه قرنان اي ذوابتان و قيل كان له
قرنان من ذهب و قيل كان صفحتا راسه من نحاس و قيل كان على
راسه قرنان صغيران تواريهما العمامة و قيل لانه ضرب على قرنه فمات
ثم بعثه الله فضربوه على قرنه الآخر و قيل لانه كان كريم الطرفين وقيل
لانه انقرض في وقته قرنان من الناس و هو حى و قيل لانه اعطى
علم الظاهر و علم الباطن و قيل لانه دخل النور و الظلمة و منها فرعون
و اسمه الوليد بن مصعب و كنيته ابو العباس وقيل ابو الوليد و قيل

والعربي قيل منسوب الى عربه وهي ناحية دار اسماعيل عليه الصلاة
و السلام وانشد و عربه ارض ما يحل حرامها من الناس الا اللوذعى
الحلاحل • يعنى النبي صلى الله عليه وسلم و فيه من اسماء الكواكب
الشمس و القمر والطارق و الشعري فائدة قال بعضهم يسمى الله
فى القرآن عشرة اجناس من الطير السلوي و البعوض و الذباب والنحل
و العنكبوت و الجراد والهدهد و الغراب وابابيل و النمل فانه من الطير
لقوله في سليمان عليه الصلوة و السلام و علمنا منطق الطير و قد فهم
كلامها و اخرج ابن ابي حاتم عن الشعبي قال النملة التي فقه سليمان
كلامها كانت ذات جناحين فصـــل اما الكني فليس فى القرآن منها
غير ابي لهب و اسمه عبد العزى و لذلك لم يذكر باسمه لانه حرام
شرعا و قيل للاشارة الي انه جهنمي و اما الالقاب فمنها اسرائيل
لقب يعقوب و معناه عبد الله و قيل صفوة الله و قيل سرى الله لانه
اسرى لما هاجر اخرج ابن جرير من طريق عمير عن ابن عباس
ان اسرائيل كقولك عبد الله و اخرج عبد ابن حميد في تفسيره
عن ابن ابي مجلز قال كان يعقوب رجلا بطيشا فلقي ملكا فعالجه
فصرعه الملك فضرب على فخذيه فلما راى يعقوب ماصنع به بطش
به فقال ما انا بتاركك حتى تسميني اسما فسماه اسرائيل قال ابو
مجلز الاترى انه من اسماء الملائكة و فيه لغات اشهرها بيا بعد الهمزة
و لام و قرأ اسرائيل بلا همز قال بعضهم و لم يخاطب اليهود فى القرآن
الابيا بني اسرائيل دون يا بني يعقوب لنكتة و هو انهم خوطبوا بعبادة
الله و ذكروا بدين اسلامهم موعظة لهم و تنبيها من غفلتهم فسموا
بالاسم الذي فيه تذكرة بالله فان اسرائيل اسم مضاف الى الله فى

بها ثمود حكاهما الكرماني وفيه من اسماء الاماكن الاخروية الفردوس و هوا على مكان فى الجنة و عليين قيل اعلى مكان فى الجنة و قيل اسم لما دون فيه اعمال صلحاء الثقلين والكوثر نهر فى الجنة كما في الاحاديث المتواترة و سلسبيل و تسنيم عينان فى الجنة و سجين اسم لمكان ارواح الكفار وصعود جبل في جهنم كما اخرجه الترمذي من حديث ابي سعيد مرفوعا و غي و آثام و موبق و ويل و السعير و سايل و سحيق اودية في جهنم اخرج ابن ابي حاتم عن انس بن مالك في قوله و جعلنا بينهم موبقا قال واد في جهنم من قيح و اخرج عن عكرمة في قوله موبقا قال هو نهر فى النار و اخرج الحاكم في مستدركه عن ابن مسعود في قوله فسوف يلقون غيا قال واد في جهنم و اخرج الترمذي و غيره من حديث ابي سعيد الخدري عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال واد في جهنم يهوي فيه الكافر اربعين خريفا قبل ان يبلغ قعره و اخرج ابن المنذر عن ابن مسعود قال ويل واد في جهنم من قيح و اخرج ابن ابي حاتم عن كعب قال فى النار اربعة اودية يعذب الله بها اهلها غليظ و موبق و آثام و غي و اخرج عن سعيد بن جبير قال السعير واد من قيح في جهنم و سحيق و اد في جهنم و اخرج عن ابن زيد في قوله سأل سائل قال هو واد من اودية جهنم يقال له سايل والفلق جب في جهنم في حديث مرفوع اخرجه ابن جرير و يحموم و فيه من المنسوب الى الاماكن الامي قيل انه نسبه الى ام القرى مكه و عبقرى قيل انه منسوب الى عبقر موضع للجن ينسب اليه كل نادر و السامري و قيل منسوب الى ارض يقال لها سامرون و قيل سامرة

الصغرا و رافع هذا ليس بشيء انما هو اسم الموضع و اخرج عن الضحاك قال بدر مابين مكة و المدينة واحد قري شاذا اذ تصعدون ولا تلوون على احد و حنين وهي قرية قرب الطايف و جمع وهي مزدلفه و المشعر الحرام وهو جبل بها و نقع قيل اسم لمابين عرفات الى مزدلفة حكاه الكرماني و الايكة و ليكة بفتح اللام بلد قوم شعيب و الثاني اسم البلد والاول اسم الكورة و الحجر و الاحقاف وهي جبال الرمل بين عمان و حضر موت و اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس انها جبل بالشام و طور سينا و هو جبل و الجودي و هو جبل بالجزيرة و طوي اسم الوادي كما اخرجه ابن ابي حاتم عن ابن عباس واخرج من وجه اخر عنه انه سمي طوي لان موسى طواه ليلا و اخرج عن الحسن قال هو واد بفلستين قيل له طوي لانه قدس مرتين و اخرج عن بشر بن عبيد قال هو واد بايلة طوي بالبركة مرتين و الكهف وهو البيت المنقور فى الجبل و الرقيم اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال زعم كعب ان الرقيم القرية التي خرجوا منها و عن عطية قال الرقيم واد و عن سعيد ابن جبير مثله و اخرج من طريق العوفي عن ابن عباس قال الرقيم واد بين عضان وايلة دون فلسطين و عن قتادة قال الرقيم اسم الوادى الذي فيه الكهف و عن انس بن مالك قال الرقيم الكلب و العرم اخرج ابن ابي حاتم عن عطا قال العرم اسم الوادى و حرد قال السدي بلغنا ان اسم القرية حرد اخرجه ابن ابي حاتم و الصريم اخرج ابن جرير عن سعيد بن جبير انها ارض باليمن تسمي بذلك وق و هو جبل محيط بالارض و الجرز قيل هو اسم ارض و الطاغية قيل اسم البقعة التي اهلكت

باسمائهم ففعلوا فلم تعبد حتى اذا هلك اولئك وتنسخ العلم عبدت
واخرج ابن ابي حاتم عن عروة انهم اولاد آدم لصلبه واخرج البخاري
عن ابن عباس قال كان اللات رجلا يلت سويق الحاج وحكاه ابن
جني عنه انه قرأ اللات بتشديد التاء وفسره بذلك وكذا اخرجه ابن
ابي حاتم عن مجاهد وفيه من اسماء البلاد والبقاع والامكنة والجبال
بكة اسم لمكة فقيل الباء بدل من الميم وماخذه من تمككت العظم
اي اجتذبت مافيه من المخ وتمكك الفصيل مافي ضرع الناقة فكانها
تجتذب الى نفسها مافي البلاد من الاقوات وقيل لانها تمك الذنوب
اي تذهبها وقيل لقلة مائها وقيل لانها في بطن وادتمك الماء
من جبالها عند نزول المطر وتتجذب اليها السيول وقيل الباء اصل
وماخذه من البك لانها تبك اعناق الجبابرة اي تكسرهم فيذلون
لها ويخضعون وقيل من التباك وهو الازدحام لازدحام الناس فيها
في الطواف وقيل مكة الحرم وبكة المسجد خاصة وقيل مكة البلد
وبكة البيت وموضع الطواف وقيل البيت خاصة والمدينة وسميت
في الاحزاب بيثرب حكاية عن المنافقين وكان اسمها في الجاهلية
فقيل لانه اسم ارض هي في ناحيتها وقيل سميت بيثرب بن
وايل من بني ارم بن سام بن نوح لانه اول من نزلها وقد صح النهي
عن تسميتها به لانه صلى الله عليه وسلم كان يكره الاسم الخبيث وهو
يشعر بالشرب وهو الفساد او التثريب وهو التوبيخ وبدر وهي قرية
قرب المدينة اخرج ابن جرير عن الشعبي قال كانت بدر لرجل
من جهينة يسمي بدر افسميت به قال الواقدي فذكرت ذلك
لعبد الله بن جعفر ومحمد بن صالح فانكراه وقالا فلاي شئ سميت

قال كان ابليس اسمه عزازيل و اخرج ابن جرير عن السدي قال كان اسم ابليس الحارث قال بعضهم هو معني عزازيل و اخرج ابن جرير و غيره من طريق الضحاك عن ابن عباس قال انما سمي ابليس لان الله ابلسه من الخير كله ايسه منه و قال ابن عسكر قيل في اسمه فترة حكاه الخطابي وكنيته ابو كردوس و قيل ابو فترة و قيل ابو مرة و قيل ابو ليتني حكاه السهيلي فى الروض الانف وفيه من اسماء القبائل ياجوج و ما جوج و عاد و ثمود و مدين و قريش و الروم وفيه من الاقوام بالاضافة قوم نوح و قوم لوط و قوم تبع و قوم ابراهيم و اصحاب الايكة و قيل هم مدين و اصحاب الرس و قيل هم بقية من ثمود قاله ابن عباس و قال عكرمه هم اصحاب ياسين و قال قتادة هم قوم شعيب و قيل هم اصحاب الاخدود و اختاره ابن جرير وفيه من اسماء الاصنام التي كانت اسماء الاناس و دوسواع و يغوث و يعوق و نسر وهي اصنام قوم نوح واللات والعزى ومنات و هي اصنام قريش و كذا الرجز فيمن قرأه بضم الراء ذكر الاخفش في كتاب الواحد والجمع انه اسم صنم والجبت والطاغوت قال ابن جرير ذهب بعضهم الى انهما صنمان كان المشركون يعبدونهما ثم اخرج بن عكرمه قال الجبت والطاغوت صنمان و الرشاد في قوله في سورة غافر و ما اهديكم الاسبيل الرشاد قيل هو اسم صنم من اصنام فرعون حكاه الكرماني في عجائبه وبعل و هو صنم قوم الياس و آزر على انه اسم صنم روى البخاري عن ابن عباس قال و دوسواع و يغوث و يعوق ونسرا اسماء رجال صالحين من قوم نوح فلما هلكوا اوحى الشيطان الى قومهم ان انصبوا الى مجالسهم التي كانوا يجلسون انصابا و سموها

على خلافه اخرج ابن ابي حاتم و غيره من طريق عكرمة عن ابن عباس قال كان عبدا حبشيا نجارا ويوسف الذي في سورة غافر و يعقوب في اول سورة مريم على ما تقدم وتقى في قوله فيها اني اعوذ بالرحمن منك ان كنت تقيا قيل انه اسم رجل كان من امثل الناس اي ان كنت في الصلاح مثل تقي حكاه الثعلبي و قيل اسم رجل كان يتعرض للنساء وقيل انه ابن عمها اتاها جبريل في صورته حكاهما الكرماني في عجائبه و فيه من اسماء النساء مريم لا غير لنكتة تقدمت في نوع الكناية و معني مريم بالعبرانية الخادم و قيل المرأة التي تعازل الفتيان حكاهما الكرماني و قيل ان بعلا في قوله اتدعون بعلا اسم امرأة كانوا يعبدونها حكاه ابن عسكر و فيه من اسماء الكفار قارون و هو ابن يصهر بن عم موسى كما اخرجه ابن ابي حاتم عن ابن عباس و جالوت و هامان و بشرى الذي ناداه الوارد المذكور في سورة يوسف بقوله يا بشرى في قول السدي اخرجه ابن ابي حاتم و آزر ابو ابراهيم و قيل اسمه تارخ و آزر لقب اخرج ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس قال ان ابا ابراهيم لم يكن اسمه آزر انما كان اسمه تارخ و اخرج من طريق عكرمة عن ابن عباس قال يعني آزر الصنم و اخرج عن السدي قال اسم ابيه تارخ و اسم الصنم آزر و اخرج عن مجاهد قال ليس آزر ابا ابراهيم و منها النسي اخرج ابن ابي حاتم عن ابي وايل قال كان رجل يسمي النسي من بني كنانة كان يجعل المحرم صفرا يستحل به الغنايم و فيه من اسماء الجن ابو هم ابليس و كان اسمه اولا عزازيل اخرج ابن ابي حاتم وغيره من طريق سعيد ابن جبير عن ابن عباس

واخرج عن مجاهد انه سئل عن الرعد فقال هو ملك يسمى الرعد الم تر ان الله يقول ويسبح الرعد بحمده والبرق فقد اخرج ابن ابي حاتم عن محمد بن مسلم قال بلغنا ان البرق ملك له اربعة وجوه وجه انسان ووجه ثور ووجه نسر ووجه اسد فاذا مصع بذنبه فذلك البرق ومالك خازن جهنم والسجل اخرج ابن ابي حاتم عن ابي جعفر الباقر قال السجل ملك وكان هاروت وماروت من اعوانه واخرج عن ابن عمر قال السجل ملك واخرج عن السدي قال ملك موكل بالصحف وقعيد فقد ذكر مجاهد انه اسم كاتب السيأت اخرجه ابو نعيم في الحلية فهولاء تسعة واخرج ابن ابي حاتم من طرق مرفوعة وموقوفة ومقطوعة ان ذا القرنين ملك من الملائكة فان صح اكمل العشرة واخرج ابن ابي حاتم من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس في قوله يوم يقوم الروح قال هو ملك من اعظم الملائكة خلقا فصاروا احد عشر ثم رايت الراغب قال في مفرداته في قوله تعالى هو الذي انزل السكينة في قلوب المؤمنين قيل انه ملك يسكن قلب المؤمن ويؤمنه كما روي ان السكينة تنطق على لسان عمر وفيه من اسماء الصحابة زيد بن حارثة والسجل في قول من قال انه كاتب النبي صلى الله عليه وسلم اخرجه ابو داؤد والنسائي من طريق ابي الجوزا عن ابن عباس وفيه من اسماء المتقدمين غير الانبياء والرسل عمران ابو مريم وقيل وابو موسى ايضا واخوها هارون وليس باخي موسى كما في حديث اخرجه مسلم وسيأتي في آخر الكتاب وعزير وتبع وكان رجلا صالحا كما اخرج الحاكم وقيل نبي حكاه الكرماني في عجائبه ولقمان وقد قيل انه كان نبيا والاكثر

من له اسمان الا عيسى ومحمد صلى الله عليه وسلم سمي في القرآن باسماء كثيرة منها محمد و احمد فائدة اخرج ابن ابي حاتم عن عمرو بن مرة قال خمسة سموا قبل ان يكونوا محمد و مبشرا برسول ياتي من بعدي اسمه احمد ويحيى انا نبشرك بغلام ن اسمه يحيى و عيسى مصدقا بكلمة من الله واسحق ويعقوب فبشرناها باسحق و من وراء اسحق يعقوب قال الراغب و خص لفظ احمد فيما بشربه عيسى تنبيها على انه احمد منه و من الذين قبله و فيه من اسماء الملائكة جبريل و ميكائيل و فيهما لغات جبريل و الراء بلا همزة و جبريل بفتح الجيم و كسر الراء بلا همزة و جبرائيل بهمزة بعد الالف و جبراييل بيايين بلا همزة و جبرئيل بهمزة و ياء بلا الف و جبريل مشددة اللام وقري بها قال ابن جني و اصله كو ريال فغير بالتعريب وطول الاستعمال الى ما ترى و قرئي ميكائيل بلا همزة و ميكيل و ميكال اخرج ابن جرير من طريق عكرمة عن ابن عباس قال جبريل عبد الله و ميكائيل عبيد الله و كل اسم فيه ايل فهو معبد لله واخرج عن عبد الله بن الحارث قال ايل الله بالعبرانية و اخرج ابن ابي حاتم عن عبد العزيز بن عمير قال اسم جبريل في الملائكة خادم الله فائدة قرأ ابو حيوة فارسلنا اليها روحنا بالتشديد وفسره ابن مهران بانه اسم لجبريل حكاه الكرماني في عجائبه و هاروت و ماروت اخرج ابن ابي حاتم عن علي قال هاروت و ماروت ملكان من ملائكة السماء وقد افردت في قصتهما جزا والرعد ففي الترمذي من حديث ابن عباس ان اليهود قالوا للنبي صلى الله عليه وسلم اخبرنا عن الرعد فقال ملك من الملائكة موكل بالسحاب و اخرج ابن ابي حاتم عن عكرمة قال الرعد ملك يسبح

ياء و نون في قوله سلام على الياسين كما قالوا في ادريس ادراسين
و من قرأ آل ياسين فقيل المراد آل محمد اليسع قال ابن جبير هو
ابن اخطوب بن العجوز قال و العامة تقرؤه بلام واحدة مخففة و قرأ
بعضهم و الليسع بلامين و بالتشديد فعلى هذا هو عجمي و كذا على
الاول و قيل عربي منقول من الفعل من وسع يسع زكريا كان من ذرية
سليمان بن داؤد و قتل بعد قتل ولده و كان له يوم بشر بولده اثنتان
و تسعون سنة و قيل تسع و تسعون و قيل مائة و عشرون و زكريا اسم
اعجمي و فيه خمس لغات اشهرها المد والثانية القصر وقري بهما في
السبع و زكري بتشديد الياء و تخفيفها و ذكر كعلم يحيى ولد اول من
سمي يحيى بنص القرآن ولد قبل عيسى بستة اشهر ونبي صغير
و قتل ظلما وسلط الله على قاتليه بخت نصر وجيوشه و يحيى اسم
اعجمي و قيل عربي قال الواحدي و على القولين لا ينصرف قال
الكرماني وعلى الثاني انما سمي به لانه احياه الله بالايمان و قيل لانه
حيي به رحم امه وقيل لانه استشهد والشهداء احياء وقيل معناه
يموت كالمفازة للمهلكة والسليم للذيغ عيسى بن مريم بنت عمران
خلقه الله بلا اب و كانت مدة حمله ساعة وقيل ثلاث ساعات و قيل
ستة اشهر و قيل ثمانية وقيل تسعة ولها عشر سنين و قيل خمس
عشرة و رفع و له ثلاث وثلاثون سنة و في احاديث انه ينزل و يقتل
الدجال و يتزوج و يولد له ويحج و يمكث في الارض سبع سنين
و يدفن عند النبي صلى الله عليه وسلم و في الصحيح انه ربعة احمر
كانما خرج من ديماس يعني حماما و عيسى اسم عبراني او سرياني
فائدة اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال لم يكن من الانبياء

بالشام حتى مات وعمره خمس و سبعون سنة و في العجائب للكرماني قيل هو الياس و قيل هو يوشع ابن نون و قيل هو نبي اسمه ذوالكفل و قيل كان رجلا صالحا تكفل بامور توفي بها و قيل هو زكريا في قوله و كفلها زكريا انتهى و قال ابن عساكر قيل هو نبي تكفل الله له في عمله بضعف عمل غيره من الانبياء و قيل لم يكن نبيا و ان اليسع استخلفه فتكفل له ان يصوم النهار و يقوم الليل و قيل ان يصلي كل يوم مائة ركعة و قيل هواليسع و ان له اسمين يونس هو ابن متى بفتح الميم و تشديد التاء الفوقية مقصور و وقع في تفسير عبد الرزاق انه اسم امه قال ابن حجر و هو مردود بما في حديث ابن عباس في الصحيح و نسبه الى ابيه قال فهذا اصح قال ولم اقف في شئ من الاخبار على اتصال نسبه و قد قيل انه كان في زمن ملوك الطوائف من الفرس روي ابن ابي حاتم عن ابي مالك انه لبث في بطن الحوت اربعين يوما و عن جعفرالصادق سبعة ايام و عن قتادة ثلاثة و عن الشعبي قال التقمه ضحى ولفظه عشية وفي يونس ست لغات تثليث النون مع الياء والهمزة والقرأة المشهورة بضم النون مع الياء قال ابو حيان و قرأ طلحة بن مصرف بكسر يونس و يوسف ارادان يجعلهما عربيين مشتقين من انس واسف و هو شاذ الياس قال ابن اسحق في المبتدا هو ابن يا سين بن فنحاص بن العيزاربن هارون اخي موسى بن عمران و قال ابن عسكرحكى القتيبي انه من سبط يوشع و قال وهب انه عمر كما عمر الخضر وانه يبقي الى آخر الدنيا و عن ابن مسعود ان الياس هو ادريس و سياتي قريبا و الياس بهمزة قطع اسم عبراني و قد زيد في آخره

بوزن جعفر بمهملة و موحدة ابن باعر بموحدة و مهملة مفتوحة ابن سلمون بن تحشون ابن عمي بن يارب بتحتية واخره موحدة ابن رام بن حضرون بمهملة ثم معجمة ابن فارص بفاء واخره مهملة ابن يهوذا ابن يعقوب فى الترمذي انه كان اعبدالبشر قال كعب كان احمرالوجه سبط الراس ابيض الجسم طويل اللحية فيها جعودة حسن الصوت والخلق و جمع له النبوة والملك قال النووي قال اهل التاريخ عاش مائة سنة و مدة ملكه منها اربعون سنة و كان له اثني عشر ابنا سليمان ولده كعب كان ابيض جسيما و سيما و ضيعا جميلا خاشعا متواضعا وكان ابوه يشاوره في كثير من اموره مع صغر سنه لوفور عقله و علمه و اخرج ابن جبير عن ابن عباس قال ملك الارض مؤمنان سليمان و ذوالقرنين و كافران نمرود و بخت نصر قال اهل التاريخ ملك و هو ابن ثلاث عشرة سنة و ابتداء بيت المقدس بعد ملكه باربع سنين و مات وله ثلاث و خمسون سنة ايوب قال ابن اسحق الصحيح انه كان من بني اسرائيل ولم يصح في نسبه شيء الا ان اسم ابيه ابيض و قال ابن جرير هو ايوب بن موص بن روح بن عيص بن اسحق و حكي ابن عساكر ان امه بنت لوط و ان اباه ممن امن بابراهيم و على هذا فكان قبل موسى و قال ابن جرير كان بعد شعيب و قال ابن ابي خشيمة كان بعد سليمان و ابتلى و هو ابن سبعين سنة و كانت مدة بلائه سبع سنين و قيل ثلاث عشرة و قيل ثلاث سنين وروى الطبراني ان مدة عمره كانت ثلاثا و تسعين سنة ذوالكفل قيل هو ابن ايوب فى المستدرك عن وهب ان الله بعث بعد ايوب ابنه بشر بن ايوب نبيا وسماه ذا الكفل و امره بالدعاء الى توحيده فكان مقيما

الخايل كان يقال له خطيب الانبياء و بعث رسولا الى امتين مدين و اصحاب الايكة و كان كثير الصلاة و عمي في آخر عمره و اختار جماعة ان مدين و اصحاب الايكة امة واحدة قال ابن كثير و يدل لذلك ان كلا منهما وعظ بوفاء المكيال و الميزان فدل على انهما و احد و احتج الاول بما اخرجه عن السدي و عكرمة قالا ما بعث الله نبيا مرتين الا شعيبا مرة الى مدين فاخذهم الله بالصيحة و مرة الى اصحاب الايكة فاخذهم الله بعذاب يوم الظلة و اخرج ابن عساكر في تاريخه من حديث عبد الله بن عمر مرفوعا ان قوم مدين و اصحاب الايكة امتان بعث الله اليهما شعيبا قال ابن كثير و هو غريب و في رفعه نظر قال و منهم من زعم انه بعث الى ثلاث امم و الثالثة اصحاب الرس موسى هو ابن عمران بن يصهر بن قاهت بن لاوي بن يعقوب عليه السلام لا خلاف في نسبه و هو اسم سرياني و اخرج ابو الشيخ من طريق عكرمة عن ابن عباس قال انما سمي موسى لانه القي بين شجر و ماء فالماء بالقبطية مو و الشجر شا و في الصحيح وصفه بانه آدم طوال جعد كانه من رجال شنوة قال الثعلبي عاش مائة و عشرين سنة هارون اخوه شقيقه و قيل لامه فقط و قيل لابيه فقط حكاهما الكرماني في عجائبه كان اطول منه فصيحا جدا مات قبل موسى و كان ولد قبله بسنة و في بعض احاديث الاسراء صعدت الى السماء الخامسة فاذا انا بهارون و نصف لحيته بيضا و نصفها اسود تكاد لحيته تضرب سرته من طولها فقلت يا جبرئيل من هذا قال المجيب في قوله هارون بن عمران و ذكر ابن مسكويه ان معني هارون بالعبرانية المجيب داود هو ابن ايشا بكسر الهمزة و سكون التحتية و بالشين المعجمة ابن عويد

و ما حكاه ابن عسكران عمران المذكور في آل عمران هو والد موسى لا والد مريم وفي يوسف ست لغات بتثليث السين مع الياء والهمزة والصواب انه اعجمي لا اشتقاق له لوط قال ابن اسحق هو لوط بن هاران بن آزر وفي المستدرك عن ابن عباس قال لوط بن اخي ابراهيم هود قال كعب كان اشبه الناس بآدم وقال ابن مسعود كان رجلا جلدا اخرجهما في المستدرك و قال ابن هشام اسمه غابر بن ارفخشد بن سام بن نوح و قال غيره الراجح في نسبه انه هود بن عبد الله بن رياح بن حاور بن عاد بن عوص بن ارم بن سام بن نوح صالح قال وهب هو ابن عبيد بن حاير ابن ثمود ابن حاير بن سام بن نوح بعث الى قومه حين راهق الحلم وكان رجلا احمر الى البياض سبط الشعر فلبث فيهم اربعين عاما و قال نوف الشامي صالح من العرب لما اهلك الله عادا عمرت ثمود بعدها فبعث الله اليهم صالحا غلاما شابا فدعاهم الى الله حتى شمط و كبر ولم يكن بين نوح و ابراهيم نبي الا هود و صالح اخرجهما في المستدرك و قال ابن حجر و غيره القرآن يدل على ان ثمودا كان بعد عاد كما كان عاد بعد قوم نوح وقال الثعلبي ونقله عنه النووي في تهذيبه و من خطه نقلت هو صالح بن عبيد بن اسيف بن ماشج بن عبيد بن حاذر بن ثمود بن عاد ابن عوص بن ارم بن سام بن نوح بعثه الله الى قومه وهو شاب وكانوا عربا منازلهم بين الحجاز و الشام فاقام فيهم عشرين سنة و مات بمكة و هو ابن ثمان و خمسين سنة شعيب قال ابن إسحق هو ابن ميكائيل بن يسجن بن لاوي بن يعقوب و رأيت بخط النووي في تهذيبه ابن ميكيل بن يسجن بن مدين بن ابراهيم

عن ابي هريرة قال اختتن ابراهيم بعد عشرين و مائة سنة و مات ابن مائتي سنة و حكى النووي و غيره قولا بانه عاش ماية و خمسة وسبعين سنة اسمعيل قال الجواليقي و يقال بالنون آخره قال النووي و غيره هو اكبر ولد ابراهيم اسحق ولد بعد اسمعيل باربع عشرة سنة و عاش مائة وثمانين سنة و ذكر ابو علي ابن مسكويه في كتاب نديم الفريد ان معني اسحق بالعبرانية الضحاك يعقوب عاش مائة و سبعا و اربعين سنة يوسف في صحيح ابن حبان من حديث ابي هريرة مرفوعا ان الكريم بن الكريم بن الكريم بن الكريم يوسف بن يعقوب بن اسحق بن ابراهيم و فى المستدرك عن الحسن ان يوسف القي فى الجب و هو ابن ثنتي عشرة سنة و لقي اباه بعد الثمانين وتوفي وله مائة و عشرون سنة و فى الصحيح انه اعطى شطر الحسن قال بعضهم و هو مرسل لقوله تعالى و لقد جاءكم يوسف من قبل بالبينات و قيل ليس هو يوسف بن يعقوب بل يوسف بن افرايم بن يوسف بن يعقوب و يشبه هذا ما فى العجائب للكرماني في قوله و يرث من آل يعقوب ان الجمهور على انه يعقوب بن ماثان و ان امراة زكريا كانت اخت مريم بنت عمران بن ماثان قال و القول بانه يعقوب بن اسحق بن ابراهيم غريب انتهى وما ذكر انه غريب هو المشهور و الغريب الاول و نظيره فى الغرابة قول نوف البكالي ان موسى المذكور في سورة الكهف في قصة الخضر ليس هو موسى بن اسرائيل بل موسى بن منيشا بن يوسف و قيل ابن افرائيم بن يوسف و قد كذبه ابن عباس في ذلك و اشد من ذلك غرابة ما حكاه النقاش و الما وردي ان يوسف المذكور في سورة غافر من الجن بعثه الله رسولا اليهم

ادريس قيل انه قبل نوح قال ابن اسحق كان ادريس اول بني آدم اعطى النبوة و هو اخنوخ ابن برد بن مهلائيل بن انوش بن قنيان بن شيث بن آدم و قال وهب بن منبه ادريس جد نوح الذي يقال له خنوخ وهو اسم سرياني و قيل عربي مشتق من الدراسة لكثرة درسه الصحف و فى المستدرک بسندواه عن الحسن عن سمرة قال كان نبى الله ادريس ابيض طويلا ضخم البطن عريض الصدر قليل شعر الجسد كثير شعر الراس وكانت احدي عينيه اعظم من الآخر و في صدره نكتة بياض من غير مرض فلما راى الله من اهل الارض ما رأي من جورهم و اعتدائهم في امرالله رفعه الى السماء السادسة فهو حيث يقول و رفعناه مكانا عليا و ذكر ابن قتيبة انه رفع وهو ابن ثلثمائة و خمسين سنة و في صحيح ابن حيان انه كان نبيا رسولا فانه اول من خط بالقلم وفى المستدرک عن ابن عباس قال كان فيما بين نوح و ادريس الف سنة ابراهيم قال الجواليقي هو اسم قديم ليس بعربي وقد تكلمت به العرب على وجوه اشهرها ابراهيم و قالوا ابراهام و قري به فى السبع و ابراهيم بحذف الياء و ابرهم و هو اسم سرياني معناه اب رحيم و قيل مشتق من البرهمة وهي شدة النظر حكاه الكرماني في عجائبه و هو ابن ازر و اسمه تارخ بمثناة و راء مفتوحة وآخره خاء معجمة ابن ناصوربنون و مهملة مضمومة ابن شارخ بمعجمة و راء مضمومة وآخره خاء معجمة بن مرغوب لعين معجمة ابن فالخ بفاء ولام مفتوحة ومعجمة ابن عابر بمهملة و موحدة ابن شالخ بمعجمتين ابن ارفحشد ابن سام بن نوح قال الواقدي ولد ابراهيم على راس الفى سنة من خلق آدم وفى المستدرک من طريق ابن المسيب

و المرسلين خمس و عشرون هم مشاهيرهم آدم ابو البشر ذكر قوم انه افعل وصف مشتق من الادمة ولذا منع الصرف قال الجواليقي اسماء الانبياء كلها اعجمية الا اربعة آدم و صالح وشعيب و محمد و اخرج ابن ابي حاتم من طريق ابى الضحى عن ابن عباس قال انما سمى آدم لانه خلق من آديم الارض و قال قوم هو اسم سرياني اصله ادام بوزن ختام عرب بحذف الالف الثانية و قال الثعلبى التراب بالعبرانية ادام فسمى آدم به قال ابن ابي خيشمة عاش تسعماية سنة و ستين سنة و قال النووي في تهذيبه اشتهر في كتب التواريخ انه عاش الف سنة نوح قال الجواليقي اعجمي معرب زاد الكرماني و معناه بالسريانية الساكن و قال الحاكم فى المستدرك انما سمي نوحا لكثرة بكائه على نفسه و اسمه عبدالغفار قال و اكثر الصحابة على انه قبل ادريس و قال غيره هو نوح بن لمك بفتح اللام و سكون الميم بعدها كاف ابن متوشلخ بفتح الميم و تشديد المثناة المضمومة بعدها و او ساكنة و فتح الشين المعجمة و اللام بعدها معجمة ابن اخنوخ بفتح المعجمة و ضم النون الخفيفة بعدها و او ساكنة ثم معجمة و هو ادريس فيما يقال و روى الطبراني عن ابي ذر قال قلت يا رسول الله من اول الانبياء قال آدم قلت ثم من قال نوح و بينهما عشرة قرون وفى المستدرك عن ابن عباس قال كان بين آدم و نوح عشرة قرون وفيه عنه مرفوعا بعث الله نوحا الاربعين سنة فلبث في قومه الف سنة الا خمسين عاما يدعوهم وعاش بعد الطوفان ستين سنة حتى كثر الناس وفشوا و ذكر ابن جرير ان ولد نوح كان بعد وفاة آدم بمأية و ستة و عشرين عاما و فى التهذيب للنووي انه اطول الانبياء عمرا

وهو الاتيان بالفاظ سجل على المخاطب وقوع ما خوطب به نحو ربنا وآتنا ما وعدتنا على رسلك ربنا وادخلهم جنات عدن التي وعدتهم فان في ذلك اسجالا بالايتاء والادخال حيث وصفا بالوعد من الله الذي لا يخلف وعده ومنها الانتقال وهو ان ينتقل المستدل الى الاستدلال غير الذي كان اخذا فيه لكون الخصم لم يفهم وجه الدلالة من الاول كما جاء في مناظرة الجليل الجبار بما قال له ربي الذي يحيي ويميت فقال الجبار انا احيي واميت ثم دعا بمن وجب القتل فاعتقه ومن لا يجب عليه القتل فقتله فعلم الخليل انه لم يفهم معنى الاحياء والاماتة او علم ذلك وغالط بهذا الفعل فانتقل عليه السلام الى استدلال لا يجد الجبار له وجها يتخلص به منه فقال ان الله ياتي بالشمس من المشرق فأت بها من المغرب فانقطع الجبار وبهت ولم يمكنه ان يقول انا الاتي بها من المشرق لان من هو اسن منه يكذبه ومنها المناقضة وهي يتعلق امر على مستحيل اشارة استحالة وقوعه كقوله تعالى ولا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل في سم الخياط ومنها مجازاة الخصم ليعثر بان يسلم بعض مقدماته حيث يراد تبكيته والزامه كقوله تعالى قالوا ان انتم الا بشر مثلنا تريدون ان تصدونا عما كان يعبد اباؤنا فآتونا بسلطان مبين قالت لهم رسلهم ان نحن الا بشر مثلكم فيه اعتراف الرسل بكونهم مقصورين على البشرية وكانهم سلموا انتفاء الرسالة عنهم وليس مرادا بل هو من مجازاة الخصم ليعثر فكانهم قالوا ما ادعيتم من كوننا بشرا حق لا تنكره ولكن هذا لا ينافي ان يمن الله تعالى علينا بالرسالة النوع التاسع والستون فيما وقع في القرآن من الاسماء والكنى والالقاب من اسماء الانبياء

رسول قبل الرسول صلى الله عليه وسلم واذا بطل جميع ذلك ثبت المدعي وهو ان ما قالوه افترا على الله وضلال ومنها القول بالموجب قال ابن ابى الاصبع وحقيقة رد كلام الخصم من فحوي كلامه وقال غيره هوقسمان احدهما ان يقع صفة في كلام الغير كناية عن شئ اثبت له حكم فيثبتها لغير ذلك الشئ كقوله تعالى يقولون لين رجعنا الى المدينة ليخرجن الاعز منها الاذل ولله العزة الآية فالاعز وقعت في كلام المنافقين كناية عن فريقهم والاذل عن فريق المؤمنين واثبت المنافقون لفريقهم اخراج المؤمنين من المدينة فاثبت الله فى الرد عليهم صفة العزة لغير فريقهم وهوالله ورسوله والمؤمنون وكانه قيل صحيح ذلك ليخرجن الاعز منها الاذل لكن هم الاذل المخرج والله ورسوله الاعز المخرج والثاني حمل لفظ وقع من كلام الغير على خلاف مراده مما يحتمله بذكر متعلقه ولم ار من او رد له مثالا من القرآن وقد ظفرت بآية منه وهي قوله تعالى ومنهم الذين يوذون النبي ويقولون هو اذن قل اذن خيرلكم ومنها التسليم وهو ان يفرض المحال اما منفيا او مشروطا بحرف الامتناع ليكون المذكور ممتنع الوقوع لامتناع وقوع شرطه ثم نسلم وقوع ذلك تسليما جدليا ويدل على عدم فائدة ذلك على تقدير وقوعه كقوله تعالى ما اتخذ الله من ولد وما كان معه من اله اذ الذهب كل اله بما خلق ولعلى بعضهم على بعض المعني ليس مع الله من اله ولو سلم ان معه سبحانه الها لزم من ذلك التسليم ذهاب كل اله من الاثنين بما خلق وعلو بعضهم على بعض فلا يتم فى العالم امر ولا ينفذ حكم ولا تنتظم احواله والواقع خلاف ذلك ففرض آلهين فصاعدا محال لما يلزم منه المحال ومنها الاسجال

السيد و من ذلك الاستدلال على ان صانع العالم واحد بدلالة التمانع المشار اليهما في قوله لو كان فيهما الهة الا الله لفسدتا لانه لوكان للعالم صانعان لكان لا يجري تدبيرهما على نظام ولا يتسق على احكام ولكان العجز يلحقهما او احدهما و ذلك لانه لو اراد احدهما احياء جسم واراد الاخر اماتته فاما ان تنفذ ارادتهما فيتناقض لاستحالة تجزى الفعل ان فرض الاتفاق او الامتناع اجتماع الضدين ان فرض الاختلاف واما ان لا ينفذ ارادتهما فيودي الى عجزهما اولا ينفذ ارادة احدهما ويودي الى عجزه والاله لا يكون عاجزا

فصل من الانواع المصطلح عليها في علم الجدل السبر و التقسيم و من امثلته في القرآن قوله تعالى ثمانية ازواج من الضان اثنين ومن المعز اثنين الايتين فان الكفار لما حرموا ذكور الانعام تارة و اناثها اخرى رد تعالى ذلك عليهم بطريق السبر والتقسيم فقال ان الخلق لله خلق من كل زوج مما ذكر ذكرا و انثى فمم جاء تحريم ما ذكرتم اي ما علته لا يخلوا ما ان يكون من جهة الذكورة او الانوثة او اشتمال الرحم الشامل لهما ولا يدري له علة و هو التعبدي بان اخذ ذلك عن الله والاخذ عن الله اما بوحى و ارسال رسول او سماع كلامه و مشاهدة تلقي ذلك عنه وهو معني قوله ام كنتم شهداء اذ وصاكم الله بهذا فهذه وجوه التحريم لا تخرج عن واحد منها والاول يلزم عليه ان يكون جميع الذكور حراما و الثاني يلزم عليه ان يكون جميع الاناث حراما والثالث يلزم عليه تحريم الصنفين معا فبطل ما فعلوه من تحريم بعض في حالة وبعض في حالة لان العلة على ما ذكر تقتضى اطلاق التحريم والاخذ عن الله بلا واسطة باطل ولم يدعوه وبواسطة رسول كذلك لانه لم يات اليهم

غيره استدل سبحانه على المعاد الجسماني بضروب احدها قياس الاعادة على الابتداء قال كما بدأكم تعودون كما بدأنا اول خلق نعيده افعيينا بالخلق الاول ثانيها قياس الاعادة على خلق السموات والارض بطريق الاولى قال اوليس الذي خلق السموات والارض بقادر الآية ثالثها قياس الاعادة على احياء الارض بعد موتها بالمطر والنبات رابعها قياس الاعادة على اخراج النار من الشجر الاخضر وقد روي الحاكم وغيره ان ابي بن خلف جاء بعظم نفته فقال ايحيي الله هذا بعد ما بلي ورم فانزل الله قل يحييها الذي انشاها اول مرة فاستدل سبحانه برد النشاءة الاخرى الى الاولى والجمع بينهما بعلة الحدوث ثم زاد في الحجاج بقوله الذي جعل لكم من الشجر الاخضر نارا وهذه في غاية البيان في رد الشي الى نظيره والجمع بينهما من حيث تبديل الاعراض عليهما خامسها في قوله و اقسموا بالله جهد ايمانهم لا يبعث الله من يموت بلى الآيتين وتقريرها ان اختلاف المختلفين في الحق لا يوجب انقلاب الحق في نفسه و انما تختلف الطرق الموصلة اليه والحق في نفسه واحد فلما ثبت ان ههنا حقيقة موجودة لا محالة و كان لا سبيل لنا في حياتنا الى الوقوف عليها وقوفا يوجب الايتلاف و يرفع عنا الاختلاف اذا كان الاختلاف مركوزا في قطرنا و كان لا يمكن ارتفاعه و زواله الا بارتفاع هذه الحيلة و نقلها الى صورة غيرها صح ضرورة ان لنا حياة اخرى غير هذه الحياة فيها يرتفع الخلاف و العناد و هذه هي الحالة التي وعد الله بالمصير اليها فقال ونزعنا ما في صدورهم من غل فقد صار الخلاف الموجود كما ترى اوضح دليل على كون البعث الذي ينكره المنكرون كذا قرره ابن

هذا العلم ذكروا ان من اول سورة الحج الى قوله و ان الله يبعث من فى القبور خمس نتايج تستنتج من عشر مقدمات قوله ذلك بان الله هو الحق لانه قد ثبت عندنا بالخبر المتواتر انه تعالى اخبر بزلزلة الساعة معظما لها و ذلك مقطوع بصحته لانه خبر اخبر به من ثبت صدقه عمن ثبتت قدرته منقول الينا بالتواتر فهو حق ولا يخبر بالحق عما سيكون الا الحق فالله هو الحق واخبر تعالى انه يحيى الموتى لانه اخبر عن اهوال الساعة بما اخبر و حصول فائدة هذا الخبر موقوفة على احياء الموتى ليشاهد و اتلك الاهوال التي يقلها الله من اجلهم وقد ثبت انه قادر على كل شيء و من الا شياء احياء الموتى فهو يحيى الموتى و اخبر انه على كل شيء قدير لانه اخبر انه من تتبع الشياطين و من يجادل فيه بغير علم يذقه من عذاب السعير ولا يقدر على ذلك الا من هو على كل شيء قدير فهو على كل شيء قدير و اخبر ان الساعة آتية لاريب فيها لانه اخبر بالخبر الصادق انه خلق الانسان من تراب الى قوله لكيلا يعلم من بعد علم شيئا و ضرب لذلك مثلا بالارض الها مدة الذي ينزل عليها الماء فتهتز و تربوا و تنبت من كل زوج بهيج و من خلق الانسان على ما اخبر به فاوجده بالخلق ثم اعدمه بالموت ثم يعيده بالبعث و اوجد الارض بعد العدم فاحياها بالخلق ثم اماتها بالمحل ثم احياها بالخصب و صدق خبره في ذلك كله بدلالة الواقع المشاهد على المتوقع الغائب حتى انقلب الخبر عيانا صدق خبره فى الاتيان بالساعة ولا ياتى بالساعة الا من يبعث من فى القبور لانها عبارة عن مدة تقوم فيها الاموات للمجازاة فهي آتية لاريب فيها وهو سبحانه يبعث من فى القبور و قال

لتصديقه له فهو قسم على صحة نبوته و على جزائه فى الآخرة فهو قسم على النبوة والمعاد واقسم بآيتين عظيمتين من آياته تامل مطابقة هذا القسم وهو نور الضحى الذي يوافي بعد ظلام الليل للمقسم عليه و هو نور الوحى الذي وافاه بعد احتباسه عنه حتى قال اعداؤه ودع محمدا ربه فاقسم بضوء النهار بعد ظلمة الليل على ضوء الوحي ونوره بعد ظلمة احتباسه واحتجابه و الله اعلم النوع الثامن والستون في جدل القرآن افرده بالتصنيف نجم الدين الطوفي قال العلماء قد اشتمل القرآن العظيم على جميع انواع البراهين و الادلة وما من برهان و دلالة و تقسيم و تحديد شيء من الكليات المعلومات العقلية و السمعية الا وكتاب الله قد نطق به لكن اورده على عادة العرب دون دقائق طرق المتكلمين لامرين احدهما بسبب ما قاله وما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه ليبين لهم والثاني ان المائل الى دقيق الحاجة هو العاجز عن اقامة الحجج بالجليل من الكلام فان من استطاع ان يفهم بالاوضح الذي يفهمه الاكثرون لم ينحصر الى الاغمض الذي لا يعرفه الا الاقلون ولم يكن ملغزا فاخرج تعالى مخاطباته في محاجة خلقه في اجلي صورة لتفهم العامة من جليلها ما يقنعهم ويلزمهم الحجة و يفهم الخواص من اثنائها ما يربى على ما ادركه فهم الخطباء وقال ابن ابى الاصبع زعم الجاحظ ان المذهب الكلامي لا يوجد منه شئ فى القرآن وهو مشحون به وتعريفه انه اجتحاج المتكلم على ما يريد اثباته بحجة تقطع المعاند له فيه على طريقة ارباب الكلام و منه نوع منطقي يستنتج منه النتايج الصحيحة من المقدمات الصادقة فان الاسلاميين من اهل

فالاول كقوله والصافات صفا الى قوله ان آلهكم لواحد والثاني كقوله فلا اقسم بمواقع النجوم وانه لقسم لو تعلمون عظيم انه لقرآن كريم والثالث كقوله يس والقرآن الحكيم انك لمن المرسلين والنجم اذا هوى ماضل صاحبكم وماغوى الآيات والرابع كقوله والذاريات الى قوله انما توعدون لصادق وان الدين لواقع والمرسلات الى قوله انما توعدون لواقع والخامس كقوله والليل اذا يغشى الى قوله ان سعيكم لشتى الآيات والعاديات الى قوله ان الانسان لربه لكنود والعصر ان الانسان لفي خسر الى آخرها والتين الى قوله لقد خلقنا الانسان في احسن تقويم الآيات لا اقسم بهذا البلد الى قوله لقد خلقنا الانسان في كبد قال واكثر ما يحذف الجواب اذا كان في نفس المقسم به دلالة على المقسم عليه فان المقصود يحصل بذكره فيكون حذف المقسم عليه ابلغ واوجز كقوله ص والقرآن ذى الذكر فان في القسم به من تعظيم القرآن ووصفه بانه ذوالذكر المتضمن لتذكير العباد ما يحتاجون اليه والشرف والقدر ما يدل على المقسم عليه وهو كونه حقا من عند الله غير مفترى كما يقوله الكافرون ولهذا قال كثيرون ان تقدير الجواب ان القرآن لحق وهذا يطرد في كل ما شابه ذلك كقوله ق والقرآن المجيد وقوله لا اقسم بيوم القيمة فانه يتضمن اثبات المعاد وقوله والفجر الآيات فانها ازمان تتضمن افعالا معظمة من المناسك وشعائر الحج التي هي عبودية محضة لله وذل وخضوع لعظمته وفي ذلك تعظيم ما جاء به محمد وابراهيم عليهما الصلاة والسلام قال ومن لطائف القسم قوله والضحى والليل اذا سجى الآيات اقسم تعالى على انعامه على رسوله واكرامه له وذلك يتضمن

الاقسام فى القرآن المحذوفة للفعل لا يكون الا بالواو فاذا ذكرت الباء اتي بالفعل كقوله واقسموا بالله يحلفون بالله ولا تجد الباء مع حذف الفعل ومن ثم كان خطا من جعل قسما بالله ان الشرك لظلم عظيم بماعهد عندك بحق ان كنت قلته فقد علمته وقال ابن القيم اعلم انه سبحانه يقسم بامور علي امور وانما يقسم بنفسه المقدسة الموصوفة بصفاته او بآياته المستلزمة لذاته وصفاته واقسامه ببعض المخلوقات دليل على انه من عظيم آياته فالقسم اما على جملة خبرية و هوالغالب كقوله تعالى فورب السماء والارض انه لحق و اما على جملة طلبية كقوله تعالى فوربك لنسئلنهم اجمعين عما كانوا يعملون مع ان هذا القسم قد يراد به تحقيق المقسم عليه فيكون من باب الخبر وقد يراد به تحقيق القسم فالمقسم عليه يراد بالقسم توكيده و تحقيقه فلا بد ان يكون مما يحسن فيه وذلك كالامور الغائبة والخفية اذا اقسم على ثبوتها فاما الامور المشهورة الظاهرة كالشمس والقمر والليل والنهار والسماء والارض فهذه يقسم بها ولا يقسم عليها وما اقسم عليه الرب فهو من آياته فيجوز ان يكون مقسما به ولا ينعكس و هوسبحانه يذكر جواب القسم تارة و هوالغالب ويحذفه اخرى كما يحذف جواب لو كثير العلم به والقسم لما كان يكثر فى الكلام اختصر فصار فعل القسم يحذف ويكتفى بالباء ثم عوض من الباء الواو فى الاسماء الظاهرة والتاء في اسم الله كقوله وتالله لاكيدن اصنامكم قال ثم هوسبحانه يقسم على اصول الايمان التي يجب على الخلق معرفتها تارة يقسم على التوحيد وتارة يقسم على ان القرآن حق وتارة على ان الرسول حق وتارة على الجزاء و الوعد والوعيد وتارة يقسم على حال الانسان

في اسرار الفواتح القسم بالمصنوعات يستلزم القسم بالصانع لان ذكرالمفعول يستلزم ذكرالفاعل اذ يستحيل وجود مفعول بغير فاعل واخرج ابن ابي حاتم عن الحسن قال قال ان الله يقسم بماشاء من خلقه وليس لاحد ان يقسم الا بالله وقال العلماء اقسم الله تعالى بالنبي صلي الله عليه وسلم في قوله لعمرك ليعرف الناس عظمته عندالله و مكانته لديه اخرج ابن مردويه عن ابن عباس قال ما خلق الله ولا ذرا ولا برا نفسا اكرم عليه من محمد و ما سمعت الله اقسم بحياة احد غيره قال لعمرك انهم لفي سكرتهم يعمهون وقال ابوالقاسم القشيري القسم بالشي لا يخرج عن وجهين اما لفضيلة اولمنفعة فالفضيلة كقوله وطور سينين وهذا البلد الامين والمنفعة نحو والتين والزيتون وقال غيره اقسم الله تعالى بثلاثة اشياء بذاته كالآيات السابقة وبفعله نحو والسماء وما بناها والارض وما طحاها ونفس وما سواها وبمفعوله نحو والنجم اذا هوي والطور وكتاب مسطور والقسم اما ظاهر كالآيات السابقة واما مضمر وهو قسمان قسم دلت عليه اللام نحو لتبلون في اموالكم وقسم دل عليه المعني نحو وان منكم الا واردها تقديره والله وقال ابو على الفارسي الالفاظ الجارية مجري القسم ضربان احدهما ما يكون لغيرها من الاخبار التي ليست بقسم فلا يجاب بجوابه كقوله ولقد اخذ ميثاقكم ان كنتم و اذ اخذنا ميثاقكم و رفعنا فوقكم الطور خذوا فيحلفون له كما يحلفون لكم فهذا ونحوه يجوز ان يكون قسما و ان يكون حالا لخلوه من الجواب والثاني ما بجواب القسم كقوله واذ اخذ الله متياق الذين اوتوا الكتاب ليبينه واقسمو ابالله جهد ايما نهم لئن امرتهم ليخرجن وقال غيره اكثر

للخبر سمي قسما وقد قيل ما معنى القسم منه تعالى فانه ان كان لاجل المؤمن فالمؤمن يصدق بمجرد الاخبار من غير قسم وان كان لاجل الكافر فلا يفيده واجيب بان القرآن نزل بلغة العرب ومن عاداتها القسم اذا اردت ان توكد امرا واجاب ابو القاسم القشيري بان الله ذكر القسم لكمال الحجة وتاكيدها و ذلك ان الحكم يفصل باثنين اما بالشهادة واما بالقسم فذكر تعالى في كتابه النوعين حتى لا يبقي لهم حجة فقال شهد الله انه لا اله الا هو والملائكة و اولوا العلم قائما بالقسط و قال قل اي و ربي انه لحق و عن بعض الاعراب انه لما سمع قوله تعالى و فى السماء رزقكم وما توعدون فورب السماء والارض انه لحق صاح وقال من ذا الذي اغضب الجليل حتى الجاه الى اليمين ولا يكون القسم الا باسم معظم وقد اقسم الله تعالى بنفسه فى القرآن في سبعة مواضع الآية المذكورة بقوله قل اي و ربي قل بلي و ربي لتبعثن فوربك لنحشرنهم والشياطين فوربك لنسئلنهم اجمعين فلا و ربك لا يؤمنون فلا اقسم برب المشارق والمغارب والباقي كله قسم بمخلوقاته كقوله والتين والزيتون والصافات والشمس والليل والضحى فلا اقسم بالخنس فان قيل كيف اقسم بالخلق وقد ورد النهي عن القسم بغير الله قلنا اجيب عنه باوجه احدها انه على حذف مضاف اي و رب التين و رب الشمس وكذا الباقى الثاني ان العرب كانت تعظم هذه الاشياء وتقسم بها فنزل القرآن على مايعرفون الثالث ان الاقسام انما تكون بما يعظمه المقسم او يجله وهو فوقه والله تعالى ليس شئ فوقه فاقسم تارة بنفسه وتارة بمصنوعاته لانها تدل على بارئ و صانع قال ابن ابى الاصبع

مرزوق والعالم محروم قال من كان فى الضلالة فليمدد له الرحمن مدا قلت فهل تجد فيه الحلال لا يأتيك الا قوتا والحرام لا يأتيك الاجزافا قال ان تأتيهم حيتا نهم يوم سبتهم شرعا و يوم لا يسبتون لا تأتيهم فائدة عقد جعفر بن شمس الخلافة في كتاب الاداب بابا في الفاظ من القرآن جارية مجري المثل و هذا هوالنوع البديعى المسمي بأرسال المثل واورد من ذلك قوله سبحانه تعالى ليس لها من دون الله كاشفة لن تنالوا البر حتى تنفقوا مما تحبون الان حصحص الحق وضرب لنا مثلا ونسي خلقه ذلك بما قدمت يداك قضى الامرالذي فيه تستفتيان اليس الصبح بقريب وحيل بينهم و بين مايشتهون لكل بناء مستقر ولا يحيق المكر السيء الا باهله قل كل يعمل على شاكلته وعسى ان تكرهوا شيئا وهو خير لكم كل نفس بما كسبت رهينة ما على الرسول الا البلاغ ما على المحسنين من سبيل هل جزاء الاحسان الا الاحسان كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة الان وقد عصيت قبل تحسبهم جميعا وقلوبهم شتى ولا ننبئك مثل خبير كل حزب بمالديهم فرحون ولو علم الله فيهم خير الاسمعهم وقليل من عبادي الشكور لا يكلف الله نفسا الا وسعها لا يستوي الخبيث والطيب ظهرالفساد فى البر والبحر ضعف الطالب والمطلوب لمثل هذا فليعمل العالمون و قليل ما هم فاعتبروا يا اولى الابصار في الفاظ اخر النوع السابع والستون فى اقسام القرآن افرده ابن القيم بالتصنيف في مجلد سماه التبيان والقصد بالقسم تحقيق الخبر وتوكيده حتى جعلوا مثلا والله يشهد ان المنافقين لكاذبون قسما وان كان فيه اخبار بشهادة لانه لما جاء توكيدا

يقول سمعت ابي يقول ساءلت الحسين ابن الفضل فقلت انك تخرج امثال العرب والعجم من القرآن فهل تجد في كتاب الله خيرالامور اوسطها قال نعم في اربعة مواضع قوله لا فارض ولا بكر عوان بين ذلك و قوله والذين اذا انفقوا ولم يسرفوا ولم يقتروا وكان بين ذلك قواما و قوله ولا تجعل يدك مغلولة الى عنقك ولا تبسطها كل البسط و قوله ولا تجهر بصلاتك ولا تخافت بها وابتغ بين ذلك سبيلا قلت فهل تجد في كتاب الله من جهل شيأ عاداه قال نعم في موضعين بل كذبوا بما لم يحيطوا بعلمه و اذ لم يهتدوا به فسيقولون هذا افك قديم قلت فهل تجد في كتاب الله احذر شرمن احسنت اليه قال نعم وما نقموا الا ان اغناهم الله ورسوله من فضله قلت فهل تجد في كتاب الله ليس الخبر كالعيان قال في قوله اولم تؤمن قال بلي ولكن ليطمين قلبي قلت فهل تجد في كتاب الله تعالى في الحركات البركات قال في قوله ومن يهاجر في سبيل الله يجد في الارض مراغما كثيرا وسعة قلت فهل تجد فيه كما تدين تدان قال من يعمل سوء يجزيه قلت فهل تجد فيه قولهم حين تقلي تدري قال وسوف يعلمون حين يرون العذاب من اضل سبيلا قلت فهل تجد فيه لا يلدغ المؤمن من حجر مرتين قال هل امنتكم عليه الا كما امنتكم على اخيه من قبل قلت فهل تجد فيه من اعان ظالما سلط عليه قال كتب عليه انه من تولاه فانه يضله ويهديه الى عذاب السعير قلت فهل تجد فيه قولهم لا تلد الحية الا الحية قال ولا يلدوا الا فاجرا كفارا قلت فهل تجد فيه للحيطان آذان قال و فيكم سماعون لهم قلت فهل تجد فيه الجاهل

قال هذا مثل ضربه الله احتملت منه القلوب على قدر يقينها و شكها فاما الزبد فيذهب جفاء وهو الشك و اما ما ينفع الناس فيمكث فى الارض و هو اليقين كما يجعل الحلي فى النار فيوخذ خالصه ويترك خبثه فى النار كذلك يقبل الله اليقين ويترك الشك واخرج عن عطاء قال هذا مثل ضربه الله في مثل واحد يقول كما اضمحل هذا الزبد فصار جفاء لا ينتفع به ولا يرجي بركته كذلك يضمحل الباطل عن اهله ومكث هذا الماء فى الارض فامرعت و رتب بركته واخرجت نباتها وكذلك الذهب و الفضة حين ادخل فى النار وذهب خبثه كذلك يبقى الحق لاهله وكما اضمحل خبث هذا الذهب والفضة حين ادخل فى النار كك يضمحل الباطل عن اهله ومنها قوله تعالى والبلد الطيب الآية اخرج ابن ابي حاتم من طريق على عن ابن عباس قال هذا مثل ضربه الله للمؤمن يقول هو طيب و عمله طيب كما ان البلد الطيب ثمرها طيب و الذي خبث ضرب مثلا للكافر كالبلد السبخة المالحة و الكافر هو الخبيث و عمله خبيث ومنها قوله تعالى ايود احدكم ان تكون له جنة الآية اخرج البخاري عن ابن عباس قال قال عمر بن الخطاب يوما لاصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فيمن ترون هذه الآية نزلت ايود احدكم ان تكون له جنة من نخيل و اعناب قالوا الله اعلم فقال ابن عباس في نفسي منها شيء فقال يا ابن اخي قل ولا تحقر نفسك قال ابن عباس ضربت مثلا لعمل قال عمر اى عمل قال ابن عباس لعمل رجل غني يعمل بطاعة الله ثم بعث الله الشيطان فعمل بالمعاصى حتى اغرق اعماله واما الكامنة فقال الماوردي سمعت ابا اسحاق ابراهيم ابن مضارب بن ابراهيم

الامثال واستحضار العلماء المثال والنظائر شان ليس بالخفي في ابراز خفيات الدقايق ورفع الاستار عن الحقائق تريك المتخيل في صورة المتحقق والمتوهم في معرض المتيقن والغايب كانه مشاهد وفي ضرب الامثال تبكيت للخصم الشديد الخصومة وقمع صورة الجامح الآبي فانه يوثر في القلوب مالا يوثر وصف الشيء في نفسه ولذلك اكثر الله تعالى في كتابه وفي سائر كتبه الامثال ومن سورة الانجيل سورة تسمى سورة الامثال وفشت في كلام النبي صلى الله عليه وسلم وكلام الانبياء والحكماء فصل امثال القرآن قسمان ظاهر مصرح به وكان من لاذكر للمثل فيه فمن امثلة الاول قوله تعالى مثلهم كمثل الذي استوقد نارا الآيات ضرب فيها للمنافقين مثلين مثلا بالنار ومثلا بالمطر اخرج ابن ابي حاتم وغيره من طريق على بن ابي طلحة عن ابن عباس رض قال هذا مثل ضربه الله للمنافقين كانوا يعتزون بالاسلام فينا كحهم المسلمون ويوارثونهم ويقاسمونهم الفي فلما ماتوا سلبهم الله العز كما سلب صاحب النار وضوءه وتركهم في ظلمات بقوله في عذاب اوكصيب هو المطر ضرب مثله فى القرآن فيه ظلمات يقول ابتلاء ورعد وبرق تخويف يكاد البرق يخطف ابصارهم يقول يكاد محكم القرآن يدل على عورات المنافقين كلما اضاء لهم مشوا فيه يقول كلما اصاب المنافقون فى الاسلام عزا اطمأنوا فان اصاب الاسلام نكبة قاموا ليرجعوا الى الكفر كقوله ومن الناس من يعبد الله على حرف الآية ومنها قوله تعالى انزل من السماء ماء فسالت اودية بقدرها فاحتمل السيل زبدا رابيا الآية اخرج ابن ابي حاتم من طريق على عن ابن عباس

خمسة اوجه حلال و حرام و محكم و متشابه و امثال فاعملوا بالحلال و اجتنبوا الحرام و اتبعوا المحكم و امنوا بالمتشابه و اعتبروا بالامثال قال الماوردي من اعظم علم القرآن علم امثاله و الناس في غفلة عنه لاشتغالهم بالامثال و اغفالهم الممثلات و المثل بلا ممثل كالفرس بلا لجام و الناقة بلا زمام و قال غيره قد عده الشافعي رح مما يجب على المجتهد معرفة من علوم القرآن فقال ثم معرفة ما ضرب فيه من الامثال الدوال على طاعة المبينة لاجتناب معصيته و قال الشيخ عزالدين انما ضرب الله الامثال فى القرآن تذكير او وعظا مما اشتمل منها على تفاوت في ثواب او على احباط عمل او على مدح او ذم او نحوه فانه يدل على الاحكام و قال غيره ضرب الامثال فى القرآن يستفاد منه امور كثيرة التذكير و الوعظ و الحث و الزجر و الاعتبار و التقرير و تقريب المراد للعقل و تصويره بصورة المحسوس فان الامثال تصور المعاني بصورة الاشخاص لانها اثبت فى الاذهان لاستعانة الذهن فيها بالحواس و من ثم كان الغرض من المثل تشبيه الخفي بالجلي والغائب بالشاهد وتاتي امثال القرآن مشتمله على بيان تفاوت الاجر و على المدح والذم و على الثواب والعقاب وعلى تفخيم الامر او تحقيره و على تحقيق امرا و ابطاله قال الله تعالى و ضربنا لكم الامثال فامتن علينا بذلك لما تضمنه من الفوائد و قال الزركشي فى البرهان و من حكمته تعليم البيان و هو من خصائص هذه الشريعة وقال الزمخشري التمثيل انما يصار اليه لكشف المعاني و ادنا المتوهم من المشاهد فان كان المتمثل له عظيما كان المتمثل به مثله و ان كان حقيرا كان المتمثل به كذلك وقال الاصبهاني اضرب

واصحابه او جعل اجتنابه سببا للفلاح او جعله سببا لايقاع العداوة والبغضاء بين المسلمين او قيل هل انت منته اونهى الانبياء عن الدعاء لفاعله اورتب عليه ابعادا اوطردا اولفظة قتل من فعله او قاتله الله او اخبر ان فاعله لا يكلمه الله يوم القيمة ولا ينظر اليه ولا يزكيه ولا يصلح عمله ولا يهدي كيده ولا يفلح او قبض له الشيطان او جعل سببا لازاغة قلب فاعله او صرفه عن آيات الله وسواله عن علة الفعل فهو دليل على المنع من الفعل ودلالته على التحريم اظهر من دلالته على مجرد الكراهة وتستفاد الاباحة من لفظ الاحلال ونفى الجناح و الحرج والاثم والمواخذة و من الاذن فيه و العفوعنه و من الامتنان بما فى الاعيان من المنافع و من السكوت عن التحريم ومن الانكار على من حرم الشئ من الاخبار بانه خلق او جعل لنا والاخبار عن فعل من قبلنا غير ذام لهم عليه فان اقترن باخباره مدح دل على مشروعيته وجوبا واستحبابا انتهي كلام الشيخ عزالدين وقال غيره قد يستنبط من السكوت وقد استدل جماعة على ان القرآن غير مخلوق بان الله ذكر الانسان في ثمانية عشر موضعا وقال انه مخلوق وذكر القرآن في اربعة و خمسين موضعا ولم يقل انه مخلوق ولما جمع بينهما غاير فقال الرحمن علم القرآن خلق الانسان النوع السادس والستون في امثال القرآن افرده بالتصنيف الامام ابوالحسن الماوردي من كبار اصحابنا قال تعالى ولقد ضربنا للناس في هذا القرآن من كل مثل لعلهم يتذكرون وقال وتلك الامثال نضربها للناس وما يعقلها الا العالمون و اخرج البيهقي عن ابي هريرة رض قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان القرآن نزل على

او بصفة مدح كالحياة و النور و الشفا فهو دليل على مشروعيته المشتركة بين الوجوب و الندب وكل فعل طلب الشارع تركه او ذمه او ذم فاعله او عتب عليه او مقت فاعله اولعنه او نفي محبته او محبة فاعله او الرضي به او عن فاعله او شبه فاعله بالبهايم اوبالشياطين او جعله مانعا من الهدى او من القبول او وصفه بسوء اوكراهة او استعاذ الانبياء منه او ابغضوه او جعل سببا لنفى الفلاح اولعذاب عاجل اوآجل اولذم اولوم او ضلالة او معصية او وصف بخبث اورجس اونجس اوبكونه فسقا او اثما او سببا لاثم او رجس او لعن اوغضب اوزوال نعمة اوحلول نقمة اوحد من الحدود اوقسوة او خزى اوارتهان نفس اولعداوة الله و محاربته اولاستهزائه اوسخريته اوجعله الله سببا لنسيانه فاعله او وصف نفسه بالصبرعليه اوبالحلم اوبالصفح عنه او دعي الى التوبة منه اووصف بفاعله بخبث اواحتقار اونسبه الى عمل الشيطان اوتربيته او تولى الشيطان لفاعله اووصفه بصفة ذم ككونه ظلما او بغيا اوعدوانا او اثما اومرضا او تبرأ الانبياء منه او من فاعله او شكوا الى الله من فاعله او جاهروا فاعله بالعداوة او نهوا عن الاسي والحزن عليه او نصب سببا لحيته فاعله عاجلا اوآجلا اورتب عليه حرمان الجنة وما فيها او وصف فاعله بانه عدو الله او بان الله عدوه او اعلم فاعله بحرب من الله ورسوله او حمل فاعله اثم غيره او قيل فيه لاينبغي هذا اولايكون او امره بالتقوى عند السوال عنه او امر بفعل مضادة او بهجر فاعله اوتلا عن فاعلوه فى الآخرة او تبرا بعضهم من بعض او دعا بعضهم على بعض اووصف فاعله بالضلالة وانه ليس من الله في شيء اوليس من الرسول

وغير آيات الاحكام خمسماية آية وقال بعضهم ماية وخمسون قيل ولعل مرادهم المصرح به فان آيات القصص والامثال وغيرها يستنبط منها كثيرا من الاحكام قال الشيخ عزالدين بن عبد السلام في كتاب الامام في ادلة الاحكام معظم آى القرآن لا تخلو عن احكام مشتملة على اداب حسنة واخلاق جميلة ثم من الآيات ما صرح فيه بالاحكام ومنها ما يوخذ بطريق الاستنباط اما بلاضم الى آية اخرى كاستنباط صحة انكحة الكفار من قوله وامرأته حمالة الحطب وصحة صوم الجنب من قوله فالآن باشروهن الى قوله حتى يتبين لكم الآية واما به كاستنباط ان اقل الحمل ستة اشهر من قوله وحمله وفصاله ثلاثون شهرا مع قوله وفصاله في عامين قال ويستدل على الاحكام تارة بالصيغة وهو ظاهر تارة بالاخبار مثل احل لكم حرمت عليكم الميتة كتب عليكم الصيام وتارة بمارتب عليها فى العاجل او الآجل من خيرا وشرا ونفع او ضرر وقد نوع الشارع ذلك انواعا كثيرة ترغيبا لعباده وترهيبا وتقريبا الى افهامهم فكل فعل عظمه الشرع او مدحه او مدح فاعله لاجله او احبه او احب فاعله او رضي به او رضي عن فاعله او وصفه بالاستقامة او البركة او الطيب او اقسم به او بفاعله كالاقسام بالشفع والوتر وبخيل المجاهدين وبالنفس اللوامة او نصبه سببا لذكره لعبده او لمحبته او الثواب عاجل او آجل او لشكره له او لهدايته اياه او لارضاء فاعله او لمغفرة ذنبه وتكفير سيئاته او لقبوله او لنصرة فاعله او بشارته او وصف فاعله بالطيب او وصف الفعل بكونه معروفا او نفى الحزن والخوف عن فاعله او وعده بالامن او نصب سببا لولايته او اخبر عن دعاء الرسول بحصوله او وصفه بكونه قربة

والدخان ورفع القرآن والخسف وطلوع الشمس من مغربها وغلق باب التوبة واحوال البعث من النفخات الثلاث نفخة الفزع ونفخة الصعق ونفخة القيام والحشر والنشر واهوال الموقف وشدة حر الشمس وظل العرش والميزان والحوض والصراط والحساب لقوم ونجات آخرس منه وشهادة الاعضا وايتاء الكتب بالايمان والشمائل وخلف الظهر والشفاعة والمقام المحمود والجنة وابوابها وما فيها من الانهار والاشجار والثمار والحلي والا وآني والدرجات ورويته تعالى والنار وابوابها وما فيها من الاودية وانواع العقاب والوان العذاب والزقوم والحميم وفيه جميع اسمائه الحسنى كماورد في حديث ومن اسمائه مطلقا الف اسم ومن اسماء النبي صلى الله عليه وسلم جملة وفيه شعب الايمان البضع والسبعون وشرايع الاسلام الثلثمائة وخمسة عشر وفيه انواع الكبائر وكثير من الصغائر وفيه تصديق كل حديث ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم الى غير ذلك مما يحتاج شرحه الى مجلدات وقد افرد الناس كتبا فيما تضمنه القرآن من الاحكام كالقاضي اسمعيل وبكربن العلاني وابي بكر الرازي والكيا الهراسي وابي بكربن العربي وعبد المنعم بن الفرس وابن حويز متداد وافرد آخرون كتبا فيما تضمنه من علم الباطن وافرد ابن برجان كتابا فيما تضمنه من معاضدة الاحاديث وقد الفت كتابا سمية الا كليل في استنباط التنزيل ذكرت فيه كلما استنبط منه من مسألة فقهية او اصلية اواعتقادية وبعضا مما سوى ذلك كثير الفائدة جم العايدة يجرى مجرى الشرح لما اجملته في هذا النوع فليراجعه من اراد الوقوف عليه فصـــل قال الغزالى

وتزوجه بنت شعيب وكلامه تعالى بجانب الطور ومجيئه الى فرعون وخروجه واغراق عدوه وقصة العجل والقوم الذين خرج بهم واخذتهم الصعقة وقصة القتيل وذبح البقرة وقصة موسى مع الخضر وقصة في قتال الجبارين وقصة القوم الذين ساروا في سرب من الارض الى الصين وقصة طالوت وداوُد مع جالوت وفتنة وقصة سليمان وخبره مع ملكه سبا وفتنة وقصة القوم الذين خرجوا فرارا من الطاعون فاماتهم الله ثم احياهم وقصة ذى القرنين ومسيره الى مغرب الشمس ومطلعها وبنائه السد وقصة ايوب وذو الكفل والياس وقصة مريم وولادتها عيسى وارساله ورفعه وقصة زكريا وابنه يحيى وقصة اصحاب الكهف وقصة اصحاب الرقيم وقصة بخت نصر وقصة الرجلين اللذين لاحدهما الجنة وقصة اصحاب الجنة وقصة مومن آل يسن وقصة اصحاب الفيل وفيه من شان النبي صلى الله عليه وسلم دعوة ابراهيم به وبشارة عيسى وبعثه وهجرته ومن غزواته شريه بن الحضرمي فى البقرة وغزوة بدر في سورة الانفال واحد في آل عمران وبدر الصغرى فيها والخندق فى الاحزاب والحديبية فى الفتح والنصير وحنين وتبوك في براة وحجة الوداع فى المائدة ونكاحه زينب بنت حجش وتحريم سريته وتظاهر زواجه عليه وقصة الافك وقصة الاسراء وانشقاق القمر وسحر اليهود اياه وفيه بدا الخلق الانسان الى موته وكيفية الموت وقبض الروح وما يفعل بها بعد وصعودها الى السماء وفتح الباب للمومنة والقاء الكافرة وعذاب القبر والسوال فيه ومقررواح واشراط الساعة الكبرى وهي نزول عيسى خروج الدجال ويأجوج ومأجوج والدابة

ثلثة لاشتمالها على احد الاقسام الثلثة و هو التوحيد وقال ابن جرير القرآن يشتمل على ثلاثة اشياء التوحيد والاخبار والديانات ولهذا كانت سورة الاخلاص ثلاثة لانها تشمل التوحيد كله وقال على بن عيسى القرآن يشتمل على ثلاثين شيئًا الاعلام والتنبيه والامر والنهي والوعد والوعيد ووصف الجنة والنار وتعليم الاقرار باسم الله وصفاته وتعليم الاعتراف بانعامه والاحتجاج على المخالفين والرد على الملحدين والبيان عن الرغبة والرهبة والخير والشر والحسن والقبيح ونعت الحكمة وفضل المعرفة ومدح الابرار وذم الفجار والتسليم والتحسين والتوكيد والتفريع والبيان عن ذم الاخلاق وشرف الاداب قال سيد له وعلى التحقيق ان تلك الثلاثة التي قالها ابن جرير تشمل هذه كلها بل اضعافها فان القرآن لايستدرك ولاتحصى عجائبه وانا اقول قد اشتمل كتاب الله العزيز على كل شئ اما انواع العلوم فليس منها باب ولامسألة هي اصل الا وفى القرآن مايدل عليها وفي عجائب المخلوقات وملكوت السموات والارض ومافى الافق الاعلى وتحت الثرى وبدو الخلق واسماء مشاهير الرسل والملائكة وعيون اخبار الامم السالفة كقصة آدم مع ابليس في اخراجه من الجنة وفى الولد الذي سماه عبد الحارث ورفع ادريس واغراق قوم نوح وقصة عاد الاولى والثانية وثمود والناقة وقوم يونس وقوم شعيب الاولين والآخرين وقوم لوط وقوم تبع واصحاب الرس وقصة ابراهيم في مجادلة قومه ومناظرته نمرود ووضعه ابنه اسمعيل مع امه بمكة وبنائه البيت وقصة الذبيح وقصة يوسف وما ابسطها وقصة موسى في ولادته والقائه فى اليم وقتله القبطى ومسيره الى مدين

النبيين بنبينا صلى الله عليه وسلم مختمة و شرائعهم بشريعته من وجه منتسخة و من وجه مكملة متتمة جعل كتابه المنزل عليه متضمنا لثمرة كتبه التي اولا ها اولئك كمانبه عليه بقوله يتلوا صحفاً مطهرة فيها كتب قيمة وجعل معجزة هذا الكتاب انه مع قلة الحجم متضمن للمعني الجم بحيث تقصر الالباب البشرية عن احصائه و الآلات الدنيوية عن استيفائه كمانبه عليه بقوله ولو ان ما فى الارض من شجرة اقلام والبحر يمده من بعده سبعة ابحر ما نفدت كلمات الله فهو و ان كان لا يخلوا الناظر فيه من نور ما يريه و نفع ما يوليه

كالبدر من حيث التفت رأيته يهدي الى عينيك نوراثاقبا
كالشمس في كبد السماء وضوءها يغشى البلاد مشارقا ومغاربا

و اخرج ابونعيم وغيره عن عبد الرحمن بن زياد بن انعم قال قيل لموسى عليه السلام يا موسى انما مثل كتاب احمد فى الكتب بمنزلة وعاء فيه لبن كلما مخّصَةَ اخرجت زبدته وقال القاضي ابوبكر العربي في قانون التاويل علوم القرآن خمسون علما و اربع مائة علم وسبعة الاف علم وسبعون الف علم عدد كلم القرآن مضروبة في اربعة اذ لكل كلمة ظهر و بطن وحد و مقطع و هذا مطلق دون اعتبار تركيب و ما بينهما من روابط و هذا ما لا يحصى ولا يعلمه الا الله قال و ام علوم القرآن ثلاثة توحيد وتذكير واحكام فالتوحيد يدخل فيه معرفة المخلوقات ومعرفة الخالق باسمائه وصفاته و افعاله والتذكير منه الوعد و الوعيد و الجنة والنار و تصفية الظاهر و الباطن والاحكام منها التكاليف كلها و تبيين المنافع و المضار و الامر و النهي و الندب و لذلك كانت الفاتحة ام القرآن لان فيها الاقسام الثلاثة وسورة الاخلاص

بعض واما النجامة ففي قوله او اثارة من علم فقد فسره بذلك ابن عباس وفيه اصول الصنايع واسماء الالآت التي تدعوا الضرورة اليها كالخياطة في قوله وطفقا يخصفان والحدادة آتوني زبر الحديد والنالة الحديد والبنا في آيات والتجارة واصنع الفلك باعيننا والغزل نقضت غزلها والنسج كمثل العنكبوت اتخذت بيتا والفلاحة افرأيتم ما تحرثون الآيات والصيد في آيات والغوص كل بنا وغواص واستخرجوا منه حلية والصياغة واتخذ قوم موسى من بعده من حليتهم عجلا جسدا والزجاجة صرح ممرد من قوارير المصباح في زجاجة والفخار فاوقدلي يا هامان على الطين والملاحة اما السفينة الآية والكتابة علم بالقلم والخبز احمل فوق راسي خبزا والطبخ بعجل حينذ والغسل والقصارة وثيابك فطهر قال الحواريون وهم القصارون والجزارة الا ما ذكيتم والبيع والشراء في آيات والصبغ صبغة الله جدد بيض وحمر والحجارة وتنحتون من الجبال بيوتا والكيالة والوزن في آيات والرمي وما رميت اذ رميت واعدوا لهم ما استطعتم من قوة وفيه من اسماء الالآت وضروب الماكولات والمشروبات والمنكوحات وجميع ما وقع ويقع فى الكأينات ما تحقق معني قوله ما فرطنا فى الكتاب من شيء انتهي كلام المرسي ملخصا وقال ابن سراقة من بعض وجوه اعجاز القرآن ما ذكر الله فيه من اعداد الحساب والجمع والقسمة والضرب والموافقه والتاليف والمناسبة والتصنيف والمضاعفة ليعلم بذلك اهل العلم بالحساب انه صلعم صادق في قوله وان القرآن ليس من عنده اذلم يكن ممن خالط الفلاسفة ولا تلقى الحساب واهل الهندسة وقال الراغب ان الله تعالى كما جعل نبوة

وبديع النظم وحسن السياق والمبادي والمقاطع والمخالص والتلوين في الخطاب والاطناب والايجاز وغير ذلك فاستنبطوا منه المعاني والبيان والبديع ونظر فيه ارباب الاشارة واصحاب الحقيقة فلاح لهم من الفاظه معان ودقايق جعلوا لها اعلاما اصطلحوا عليها مثل الفنأ والبقأ والحضور والخوف والهيبة والانس والوحشة والقبض والبسط وما اشبه ذلك هذه الفنون الذي اخذتها الملة الاسلامية منه وقد احتوى على علوم اخرى من علوم الاوآيل مثل الطب والجدل والهيئة والهندسة والجبر والمقابلة والنجامة وغير ذلك اما الطب فمداره على حفظ نظام الصحة واستحكام القوة وذلك انما يكون باعتدال المزاج متفاعل الكيفيات المتضادة وقد جمع ذلك في آية واحدة وهي قوله وكان بين ذلك قواما وعرفنا فيه بما يفيد نظام الصحة بعد اختلاله وحدوث الشفا للبدن بعد اعتلاله في قوله شراب مختلف الوانه فيه شفاء للناس ثم زاد على طب الاجساد بطب القلوب وشفاء الصدور واما الهيئة ففي تضاعيف سورة من الآيات التي ذكر فيها ملكوت السموات والارض ومابث في العالم العلوي والسفلي من المخلوقات واما الهندسة ففي قوله انطلقوا الى ظل ذي ثلث شعب الآية واما الجدل فقد حوت آياته من البراهين والمقدمات والنتايج والقول بالموجب والمعارضة وغير ذلك شيئا كثيرا ومناظرة ابراهيم نمرود ومحاجة قومه اصل في ذلك عظيم واما الجبر والمقابلة فقد قيل ان آوايل السور فيها ذكر مُدد واعوام وايام لتواريخ امم سالفة وان فيها تاريخ بقاء هذه لامة وتاريخ مدة الدنيا وما مضى وما بقى مضروب بعضها في

النظر وصادق الفكر فيما فيه من الحلال والحرام وساير الاحكام فاستثبتوا اصوله و فرعوا فروعه و بسطوا القول في ذلك بسطا حسنا و سموه بعلم الفروع و بالفقه ايضا و تلمحت طايفة ما فيه من قصص القرون السالفة و الامم الخالية و نقلوا اخبارهم و دوّنوا آثارهم و وقايعهم حتى ذكروا بدو الدنيا و اول الاشياء و سموا ذلك بالتاريخ والقصص وتنبّه آخرون لما فيه من الحكم والامثال و المواعظ التي تقلقل قلوب الرجال وتكاد تدكدك الجبال فاستنبطوا مما فيه من الوعد و الوعيد و التحذير و التبشير و ذكر الموت و المعاد و النشر و الحشر و الحساب و العقاب و الجنة و النار فصولا من المواعظ و اصولا من الزواجر فسموا بذلك الخُطبأ والوعاظ و استنبط قوم مما فيه من اصول التعبير مثل ما ورد في قصة يوسف في البقرآت السمان و في منامي صاحبي السجن وفي رويا ه الشمس والقمر والنجوم ساجدة وسموه تعبير الرويا واستنبطوا تفسير كل رويا من الكتاب فان عز عليهم اخراجها منه فمن السنة التي هي شارحة للكتاب فان عسر فمن الحكم و الامثال ثم نظروا الى اصطلاح العوام في مخاطباتهم و عرف عاداتهم الذي اشار اليه القرآن بقوله و امر بالمعروف و اخذ قوم مما في آية المواريث من ذكر السهام و اربابها و غير ذلك علم الفرايض و استنبطوا منها من ذكر النصف و الثلث و الربع و السدس و الثمن حساب الفرايض ومسائل العول فاستخرجوا منه احكام الوصايا و نظر قوم الى ما فيه من الآيات الدالات على الحكم الباهرة في الليل و النهار و الشمس و القمر و منازله والنجم والبروج وغير ذلك فاستخرجوا منه علم المواقيت و نظر الكُتّاب والشُعراء الى ما فيه من جزالة اللفظ

مخارج حروفه وعددها و عد كلماته و آياته وسورة و اجزايه و انصافه وارباعه و عدد سجداته و التعليم عند كل عشر آيات الى غير ذلك من حصر الكلمات المتشابهة و الآيات المتماثلة من غير تعرض لمعانيه ولا تدبر لما اودع فيه فسموا القُرّأ واعتنى النحاة بالمعرب منه والمبني من الاسماء و الافعال و الحروف العاملة و غيرها و اوسعوا الكلام فى الاسماء وتوابعها وضربوا الافعال واللازم و المتعدي و رسوم خط الكلمات و جميع ما يتعلق به حتى ان بعضهم اعرب مشكلة وبعضهم اعرب كلمة كلمة و اعتنى المفسرون بالفاظه فوجدوا منه لفظا يدل على معني واحد ولفظا يدل على معنيين ولفظا يدل على اكثر فاخروا الاول على حكمه واوضحوا معني الخفي منه وخاضوا في ترجيح احد محتملات ذى المعنيين و المعاني واعمل كل منهم فكره وقال بما اقتضاه نظره واعتنى الاصوليون بما فيه من الادلة العقلية و الشواهد الاصلية و النظرية مثل قوله لوكان فيهما آلهة الا الله لفسدتا الى غير ذلك من الآيات الكثيرة فاستنبطوا منه ادلة على وحدانية الله تعالى ووجوده وبقائه وقدمه وقدرته وعلمه وتنزيهه عما لايليق به وسموا هذا العلم باصول الدين وتاملت طايفة منهم معاني خطابه فرأت منها ما يقتضى العموم ومنها ما يقتضى الخصوص الى غير ذلك فاستنبطوا منه احكام اللغات من الحقيقة و المجاز وتكلموا فى التخصيص و الاخبار والنص والظاهر والمجمل والمحكم و المتشابه والامر والنهي والنسخ الى غير ذلك من انواع الاقيسة واستصحاب الحال والاستقراء وسموا هذا الفن اصول الفقه واحكمت طايفة صحيح

اللوحين فما وجدت فيه كما تقول قال لئن كنت قرايته لقد وجديه امرا قرأت وما آتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا قالت بلي قال فانه قد نهي عنه وحكي ابن سراقه في كتاب الاعجاز عن ابي بكر بن مجاهد انه قال يوما ما من شئ فى العالم الا وهو في كتاب الله فقيل له فاين ذكر الخانات فقال في قوله ليس عليكم جناح ان تدخلو بيوتا غير مسكونة فيها متاع لكم فهي الخانات وقال ابن برجان ما قال النبي صلى الله عليه وسلم من شيء فهو فى القرآن او فيه اصل قرب او بعد فهمه من فهمه وعمه من عمه وكذا كل ما حكم اوقضى به وانما يدرك الطالب من ذلك بقدر اجتهاده وبذل وسعه ومقدار فهمه وقال غيره ما من شئ الا ويمكن استخراجه من القرآن لمن فهمه الله حتى ان بعضهم استنبط عمر النبي صلعم ثلاثا وستين من قوله في سورة المنافقين ولن يوخر الله نفسا اذا جاء اجلها فانها راس ثلاثا وستين سورة وعقبها بالتغابن ليظهر التغابن في فقده وقال ابن ابى الفضل المرسى جمع القرآن علوم الاولين والاخرين بحيث لم يحط بها علما حقيقة الا المتكلم بها ثم رسول الله صلى الله عليه وسلم خلا مااستاثر به سبحانه ثم ورث عنه معظم ذلك سادات الصحابة واعلامهم مثل الخلفاء الاربعة وابن مسعود وابن عباس حتى قال لوضاع لي عقال بعير لوجدته في كتاب الله ثم ورث عنهم التابعون باحسان ثم تقاصرت الهمم وفترت العزايم وتضال اهل العلم وضعفوا عن حمل ما حمله الصحابة والتابعون من علومه وساير فنونه فنوّعوا علومه وقامت كل طايفة بفن من فنونه فاعتني قوم بضبط لغاته وتحرير كلماته ومعرفة

من القرآن قلت ويؤيد هذا قوله صلى الله عليه وسلم اني لا احل الا ما احل الله في كتابه ولا احرم الا ما حرم الله في كتابه اخرجه بهذا اللفظ الشافعي في الام وقال سعيد بن جبير ما بلغني حديث عن رسول الله صلى الله عليه وسلم على وجهه الا وجدت مصداقه في كتاب الله وقال ابن مسعود اذا حدثتكم بحديث آتينانكم بتصديقه من كتاب الله اخرجهما ابن ابي حاتم وقال الشافعي ايضا ليست تنزل باحد في الدين نازلة الا في كتاب الله الدليل على سبيل الهدى فيها فان قيل من الاحكام ما ثبت ابتداءً بالسنة قلنا ذلك ماخوذ من كتاب الله في الحقيقة لان كتاب الله اوجب علينا اتباع الرسول صلى الله عليه وسلم وفرض علينا الاخذ بقوله وقال الشافعي مرة بمكة سلوني عماشيتُم اخبركم منه من كتاب الله فقيل له ما تقول في المحرم بقتل الزنبور فقال بسم الله الرحمن الرحيم وما اتاكم الرسول فخذوه وما نهاكم عنه فانتهوا وحدثنا سفيان بن عيينه عن عبد الملك بن عمير عن ربعي بن خراش عن حذيفة بن اليمان عن النبي صلى الله عليه وسلم انه قال اقتدوا بالذين من بعدى ابي بكر وعمر وحدثنا سفيان عن مشعر بن كرام عن قيس بن مسلم عن طارق ابن شهاب عن عمر بن الخطاب انه امر بقتل المحرم الزنبور واخرج البخاري عن ابن مسعود انه قال لعن الله الواشمات والمتوشمات والمتنمصات والمفلجات للحسن المغيرات خلق الله فبلغ ذلك امراة من بني اسد فقالت له انه بلغني انك لعنت كيت وكيت فقال ومالي لا العن من لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو في كتاب الله فقالت لقد قرأت ما بين

من قيل ان التحدي قد وقع بها فظهر العجز عنها في قوله فاتو بسورة فلم يخص بذلك الطوال دون القصار فان قال فانه يمكن في القصار ان تغير الفواصل فيجعل بدل كل كلمة ما يقوم مقامها فهل يكون ذلك معارضة قيل له لا من قبل ان المفحم يمكنه ان ينشئ بيتا واحدا ولا يفصل بطبعه بين مكسور وموزون فلو ان مفحما رام ان يجعل بدل قوا في قصيدة روية

وقاتم الاعماق حاوى المخترق مشتبه الاعلام لماع الخفق

بكل وقد الريح من حيث انخرق فجعل بدل المخترق المحرق

وبدل الخفق الشفق وبدل انخرق انطلق لامكنه ذلك ولم يثبت له به قول الشعر ولا معارضة رويه في هذه القصيدة عند احد له ادنى معرفة فكذلك سبيل من غير الفواصل النوع الخامس والستون في العلوم المستنبطة من القرآن قال الله تعالى ما فرطنا في الكتاب من شئ وقال ونزلنا عليك الكتاب تبيانا لكل شئ وقال صلى الله عليه وسلم ستكون فتن قيل وما المخرج منها قال كتاب الله فيه نباء ما قبلكم وخبر ما بعدكم وحكم ما بينكم اخرجه الترمذي وغيره واخرج سعيد ابن منصور عن ابن مسعود قال من اراد العلم فعليه بالقرآن فان فيه خيراً لاولين والآخرين قال البيهقي يعني اصول العلم واخرج البيهقي عن الحسن قال انزل الله ماية واربعة كتب اودع علومها اربعة منها التوراة والانجيل والزبور والفرقان ثم اودع علوم الثلاثة الفرقان وقال الامام الشافعي رضي الله عنه جميع ما تقوله الامة شرح للسنة وجميع السنة شرح للقرآن وقال ايضا جميع ما حكم به النبي صلى الله عليه وسلم فهو مما فهمه

حاصل في علم الله فلذلك كان القرآن احسن الحديث و افصحه و ان كان مشتملا على الفصيح و الافصح و المليح و الاملح و لذلك امثلة منها قوله تعالى و جنى الجنتين دان لو قال مكانه و ثمر الجنتين قريب لم يقم مقامه من جهة الجناس بين الجنى و الجنتين و من جهة ان الثمر لا يشعر بمصيره الى حال يجتنى فيها و من جهة مواخاة الفواصل و منها قوله و ما كنت تتلوا من قبله من كتاب احسن من التعبير بتقرء الثقلة بالهمزة و منها لاريب فيه احسن من لا شك فيه لثقل الادغام و لهذا اكثر ذكر الريب و منها ولا تهنوا احسن من لا تضعفوا لخفة و وهن العظم مني احسن من ضعف لان الفتحة اخف من الضمة و منها ا أ من اخف من صدق و لذا كان ذكره اكثر من ذكر التصديق و اترك الله اخف من فضلك و اتى اخف من اعطى و اندر اخف من خوف و خير لكم اخف من افضل لكم و المصدر في نحو هذا خلق الله يومنون بالغيب اخف من مخلوق والغايب و تنكح اخف من تتزوج لان فَعَلَ اخف من تفعّل و لهذا كان ذكر النكاح فيه اكثر و لاجل التخفيف و الاختصار استعمل لفظ الرحمة والغضب والرضي والحب والمقت في اوصاف الله مع انه لايوصف بها حقيقة لانه لو عبر عن ذلك بالفاظ الحقيقة لطال الكلام كان يقال يعامله معاملة المحب و الماقت فالمجاز في مثل هذا افضل من الحقيقة لخفته و اختصاره و ابتنايه على التشبيه البليغ فان قوله فلما اسفونا انتقمنا منهم احسن من فلما عاملونا معاملة المغضب او فلما اوتوا الينا ما ياتيه المغضب انتهى التاسع قال الروماني فان قال قائل فلعل السور القصار يمكن فيها المعارضة قيل لا يجوز فيها ذلك

كالتوراة و الانجيل قلنا ليس شئ من ذلك بمعجز فى النظم والتاليف و ان كان معجزا كالقرآن فيما يتضمن من الاخبار بالغيوب وانما لم يكن معجزا لان الله لم يصفه بما وصف به القرآن ولانا قد علمنا انه لم يقع التحدي اليه لما وقع فى القرآن ولان ذلك اللسان لايتاتي فيه من وجوه الفصاحة ما يقع به التفاضل الذي ينتهى الى حد الاعجاز وقد ذكر ابن جني فى الخاطريات في قوله يا موسى اما ان تلقي و اما ان تكون اول من القي ان العدول عن قوله و اما ان تلقي لغرضين احدهما لفظي و هو المزاوجة لروس الآي و الآخر معنوي وهو انه تعالى اراد ان يخبر عن قوة النفس السحرة واستطالتهم على موسى فجاء عنهم باللفظ اتم و اوفي منه في اسنادهم الفعل اليه ثم اورد سوالا وهو انا لا تعلم ان السحرة لم يكونوا اهل لسان فيذهب بهم هذا المذهب من صنعة الكلام و اجاب بان جميع ماورد فى القرآن حكاية عن غير اهل اللسان من القرون الخالية انما هو معرب عن معاينهم وليس بحقيقة الفاظهم ولهذا لا يشك ان في قوله تعالى قالوا ان هذان لساحران يريدان ان يخرجاكم من ارضكم بسحرهما ويذهبا بطريقتكم المثلى ان هذه الفصاحة لم تجر على لغة العجم الثامن قال البارزي في اول كتابه انوار التحصيل في اسرار التنزيل اعلم ان المعنى الواحد قد يخبر عنه بالفاظ بعضها احسن من بعض وكذلك كل واحد من جزى الجملة قد يعبر عنه بافصح ما يلايم الجزء الآخر ولابد من استحضار معاني الجمل واستحضار جميع ما يلايمها من الالفاظ ثم استعمال انسبها و افصحها واستحضار هذا متعذر على البشر في اكثر الاحوال وذلك عتيد

مخصوص فى الجزالة وبعضه على اسلوب يخالفه وكلام الله منزه عن هذه الاختلافات فانه على منهاج واحد فى النظم مناسب اوله آو آخره وعلى درجة واحدة في غاية الفصاحة فليس يشتمل على الغث والسمين ومسوق لمعني واحد وهو دعوة الخلق الى الله تعالى وصرفهم عن الدنيا الى الدين وكلام الآدميين يتطرق اليه هذه الاختلافات اذ كلام الشعرأ والمترسلين اذا قيس عليه وجد فيه اختلاف في منهاج النظم ثم اختلاف في درجات الفصاحة بل في اصل الفصاحة حتى يشتمل على الغث والسمين ولا تتساوي رسالتان ولا قصيدتان بل تشتمل قصيدة على ابيآت فصيحة وابيات سخيفة وكذلك تشتمل القصايد والاشعار على اغراض مختلفة لان الشعراء والفصحاء في كل واد يهيمون فتارة يمدحون الدنيا وتارة يذمونها وتارة يمدحون الجبن ويسمونه حزما وتارة يذمونه ويسمونه ضعفا وتارة يمدحون الشجاعة ويسمونها ضرامة وتارة يذمونها ويسمونها تهورا ولا ينفك كلام آدمي عن هذه الاختلافات لان منشأها اختلاف الاغراض والاحوال والانسان تختلف احواله فتساعده الفصاحة عند انبساط الطبع وفرحه وتتعذر عليه عند الانقباض ولذلك تختلف اغراضه فيميل الى الشيء مرة وتميل عنه أخرى فيوجب ذلك اختلافا في كلامه بالضرورة فلا يصادف انسان يتكلم في ثلاث وعشرين سنة وهي مدة نزول القرآن فيتكلم على غرض واحد ومنهاج واحد ولقد كان النبي صلى الله عليه وسلم بشرا تختلف احواله فلوكان هذا كلامه اوكلام غيره من البشر لوجد فيه اختلاف كثير السابع قال القاضي فان قيل هل يقولون ان غير القرآن من كلام الله معجز

شعر الكان كل من اتفق له في كلامه شيء موزون شاعرا فكان الناس كلهم شعراً لانه قل ان يخلو كلام احد عن ذلك و قد ورد ذلك على الفصحاء فلو اعتقدوه شعرا لبادروا الى معارضته و الطعن عليه لانهم كانوا احرص شيء على ذلك وانما يقع ذلك لبلوغ الكلام الغاية القصوى فى الانسجام وقيل البيت الواحد وماكان على وزنه لايسمى شعرا و اقل الشعر بيتان فصاعدا وقيل الرجز لا يسمى شعرا اصلا وقيل اقل مايكون من الرجز شعرا اربعة ابيآت وليس ذلك فى القرآن بحال الخامس قال بعضهم التحدي انما وقع للانس دون الجن لانهم ليسوا من اهل اللسان العربي الذي جاء القرآن على اساليبه وانما ذكروا في قوله قل لئن اجتمعت الانس والجن تعظيما لاعجازه لان للهيئة الاجتماعية من القوة ماليس للافراد فاذا فرض اجتماع الثقلين فيه وظاهر بعضهم بعضا وعجزوا عن المعارضة كان الفريق الواحد اعجز وقال غيره بل وقع للجن ايضا و الملائكة منويون فى الاية لانهم لايقدرون ايضا على الاتيان بمثل القرآن وقال الكرماني في غرايب التفسير انما اقتصر فى الآية على ذكر الانس و الجن لانه صلى الله عليه وسلم كان مبعوثا الى الثقلين دون الملائكة السادس سئل الغزالى عن معني قوله و لو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا فاجاب الاختلاف لفظ مشترك بين معان وليس المراد نفي اختلاف الناس فيه بل نفى الاختلاف عن ذات القرآن يقال هذا كلام مختلف اي لايشبه اوله آخره فى الفصاحة او هو مختلف اي بعضه يدعوا الى الدين وبعضه يدعوا الى الدنيا او هو مختلف النظم فبعضه على وزن الشعر وبعضه منزحف وبعضه على اسلوب

اعتدالا في افادة ذلك المعني منه فاختاره القاضي المنع وان كل كلمة فيه موصوفة بالذروة العليا وان كان بعض الناس احسن احساسا له من بعض واختار ابونصر القشيري وغيره التفاوت فقال لا ندعي ان كل ما في القرآن على ارفع الدرجات في الفصاحة وكذا قال غيره في القرآن الافصح والفصيح والى هذا نحى الشيخ عزالدين بن عبد السلام ثم اورد سوالا وهو انه لم يأت القرآن جميعه بالافصح واجاب عنه الصدر موهوب الجزري بما حاصله انه لوجاء القرآن على ذلك لكان على غير النمط المعتاد في كلام العرب من الجمع بين الافصح والفصيح فلاتتم الحجة في الاعجاز فجاء على نمط كلامهم المعتاد ليتم ظهور العجز عن معارضته ولايقولوا مثلا آتيت بما لا قدرة لنا على جنسه كما لا يصح من البصير ان يقول للاعمي قد غلبتك بنظري لانه يقول له انما تتم لك الغلبة لوكنت قادرا على النظر وكان نظرك اقوي من نظري فاما اذا فقد اصل النظر فكيف يصح من المعارضة الرابع قيل الحكمة في تنزيه القرآن من الشعر الموزون مع ان الموزون من الكلام ربته فوق رتبة غيره ان القرآن منبع الحق ومجمع الصدق وقصاري امر الشاعر التخيل بتصور الباطل في صورة الحق والافراط في الاطرأ والمبالغة في الذم والايذا دون اظهار الحق واثبات الصدق ولهذا نزه الله نبيه عنه ولاجل شهرة الشعر بالكذب سمي اصحاب البرهان القياسات المؤدية في اكثر الامر الى البطلان والكذب شعرية وقال بعض الحكماء لم ير متدين صادق اللهجة مغلق في شعره واما ماوجد في القرآن مما صورته صورة الموزون فالجواب عنه ان ذلك لا يسمى شعرا لان شرط الشعر القصد ولوكان

من الكتب ولا احاط بعلمها احد في كلمات قليلة و احرف معدودة قال و هذا الوجه داخل في باب بلاغته فلا يجب ان يعدفنا مفردا في اعجازه قال و الا وجه التي قبله تعد في خواصه و فضائله لا اعجازه و حقيقة الاعجاز الوجوه الاربعة الاول فيلعتمد عليها انتهى تنبيهات الاول اختلف في قدر المعجز من القرآن فذهب بعض المعتزلة الى انه يتعلق بجميع القرآن والاتيان السابقتان ترده وقال القاضي يتعلق الاعجاز بسورة طويلة كانت اوقصيرة تشبثا بظاهر قوله بسورة و قال في موضع آخر يتعلق بسورة اوقدرها من الكلام بحيث يتبين فيه تفاضل قوي البلاغة قال فاذا كانت آية بقدر حرف سورة و ان كانت كسورة الكوثر فذلك معجز قال ولم يقم دليل على عجزهم عن المعارضة في اقل من هذا القدر وقال قوم لا يحصل الاعجاز باية بل يشترط الايات الكثيرة و قال آخرون يتعلق بقليل القرآن و كثيره لقوله فلياتوا بحديث مثله قال القاضي ولا دلالة فى الآية لان الحديث التام لا يتحصل حكايته في اقل من كلمات سورة قصيرة الثاني اختلف في انه هل يعلم اعجاز القرآن ضرورة قال القاضي فذهب ابوالحسن الاشعري الى ان ظهور ذلك على النبي صلى الله عليه وسلم يعلم ضرورة و كونه معجزا لا يعلم باستدلال قال و الذي بقوله ان الاعجمي لا يمكنه ان يعلم اعجازه الا استدلالا وكذلك من ليس ببليغ فاما البليغ الذي قد احاط بمذاهب العرب و غرايب الصنعة فانه يعلم من نفسه ضرورة عجزه و عجز غيره عن الاتيان بمثله الثالث اختلف في تفاوت القرآن في مراتب الفصاحة بعد اتفاقهم على انه في اعلى مراتب البلاغة بحيث لا يوجد فى التراكيب ما هو اشد تناسبا ولا

واحد خارج عن قدرتها مبائن لفصاحتها و كلامها خلافا لمن زعم ان الاعجاز في مجموع البلاغة و الاسلوب الوجه الثالث ما انطوى عليه من الاخبار بالمغيبات و ما لم يكن فوجد كما ورد الرابع ما انبأبه من اخبار القرون السالفة و الامم البائدة و الشرايع الداثرة مما كان لا يعلم منه القصة الواحدة الا الفذ من اخبار اهل الكتاب الذي قطع عمره في تعلم ذلك فيورده صلى الله عليه وسلم على وجهه ويأتي به على نصه و هو امّي لا يقرأ ولا يكتب قال فهذه الوجوه الاربعة من اعجازه بينة لا نزاع فيها ومن الوجوه في اعجازه غير ذلك اى وردت بتعجيز قوم في قضايا و اعلامهم انهم لا يفعلونها فما فعلوا ولا قدروا على ذلك كقوله لليهود فتمنوا الموت ان كنتم صادقين و لن يتمنوه ابدا فما تمناه احد منهم و هذا الوجه داخل فى الوجه الثالث و منها الروعة التي تلحق قلوب سامعيه عند سماعهم و الهيبة التي تعتريهم عند تلاوته وقد اسلم جماعة عند سماع آيات منه كما وقع لجبير بن مطعم انه سمع النبي صلى الله عليه وسلم يقرء بالمغرب بالطور قال فلما بلغ هذه الآية ام خلقوا من غير شيء ام هم الخالقون و الى قوله المسيطرون كاد قلبي ان يطير قال وذلك اول ما وقر الاسلام في قلبي وقد مات جماعة عند سماع آيات منه افردوا بالتصنيف ثم قال و من وجوه اعجازه كونه آية باقية لا يعدم مابقيت الدنيا مع تكفل الله بحفظه ومنها ان قاريه لا يمله وسامعه لا يمجه بل الاكباب على تلاوته يزيده حلاوة و ترديده يوجب له محبة وغيره من الكلام يعادي اذا اعيد و يمل مع الترديد و لهذا وصف صلى الله عليه وسلم القرآن بانه لا يخلق على كثرة الرد و منها جمعه لعلوم ومعارف لم يجمعها كتاب

غيره من الكتب المتقدمة قد تحتاج الى بيان يرجع فيه اليه كما قال تعالى ان هذا القرآن يقص على بني اسرائيل اكثر الذي هم فيه يختلفون و قال الرماني وجوه اعجاز القرآن تظهر من جهات ترك المعارضة مع توفر الدواعي و شدة الحاجة و التحدى للكافة و الصرفة و البلاغة و الاخبار عن الامور المستقبلة و نقض العادة و قياسه بكل معجزة قال ونقض العادة هو ان العادة كانت جارية بضروب من انواع الكلام معروفة منها الشعر ومنها السجع و منها الخطب ومنها الرسايل ومنها المنثور الذي يدور بين الناس فى الحديث فاتي القرآن بطريقه مفردة خارجة عن العادة لها منزلة فى الحسن تفوق به كل طريقه و تفوق الموزون الذي هو احسن الكلام قال واما قياسه بكل معجزة فانه يظهر اعجازه من هذه الجهة اذ كان سبيل فلق البحر و قلب العصا حيّة و ماجري هذا المجري في ذلك سبيلا واحدا فى الاعجاز اذ خرج عن العادة و قصد الخلق فيه عن المعارضة و قال القاضي عياض فى الشفا اعلم ان القرآن منطو على وجوه من الاعجاز كثيرة وتحصيلها من جهة ضبط انواعها في اربعة وجوه اولها حسن تاليفه و التيام كلمة و فصاحته ووجوه اعجازه و بلاغته الخارقة عادة العرب الذين هم فرسان الكلام و ارباب هذا الشان والثاني صورة نظمه العجيب و الاسلوب الغريب المخالف لاساليب كلام العرب ومنهاج نظمها ونثرها الذي جاء عليه ووفقت عليه مقاطع آياته و انتهت اليه فواصل كلماته و لم يوجد قبله ولا بعده نظيرله قال وكل واحد من هذين النوعين الايجاز و البلاغة بذاتها والاسلوب الغريب بذاته نوع اعجاز على التحقيق لم يقدر العرب على الاتيان بواحد منها اذ كل

يخشون ربهم انتهى و قال ابن سراقه اختلف اهل العلم في وجه اعجاز القرآن فذكروا في ذلك وجوها كثيرة كلها حكمة و صواب و ما بلغوا في وجوه اعجازه جزا واحدا من عشر معشارة فقال قوم هو الايجاز مع البلاغة و قال آخرون هو البيان والفصاحة و قال آخرون هوالوصف والنظم و قال آخرون هو كونه خارجا عن جنس كلام العرب من النظم و النثر و الخطب و الشعر مع كون حروفه في كلامهم ومعانيه في خطابهم والفاظه من جنس كلماتهم و هو بذاته قبيل غير قبيل كلامهم و جنس آخر يتميز عن اجناس خطابهم حتى ان من اقتصر على معانيه و غير حروفه اذهب رونقه و من اقتصر على حروفه و غير معانيه ابطل فايدته فكان في ذلك ابلغ دلالة على اعجازه و قال آخرون هو كون قاريه لا يكل وسامعه لا يمل وان تكررت عليه تلاوته و قال آخرون هو مافيه من الاخبار عن الامور الماضية و قال آخرون هو ما فيه من علم الغيب والحكم على الامور بالقطع و قال آخرون هو كونه جامعا لامور يطول شرحها و يشق حصرها انتهى و قال الزركشي فى البرهان اهل التحقيق على ان الاعجاز وقع بجميع ما سبق من الاقوال لا بكل واحد على انفراده فانه جمع ذلك كله فلامعنى لنسبته الى واحد منها بمفرده مع اشتماله على الجميع بل و غير ذلك ممالم يسبق فمنها الروعة التي له في قلوب السامعين و اسماعهم سوى المقر و الجاحد و منها انه لم يزل ولا يزال غضا طريا في اسماع السامعين و على السنة القارئين و منها جمعه بين صفتى الجزالة والعذوبة و هما كالمتضادين لايجتمعان غالبا في كلام البشر و منها جعله آخر الكتب غنيا عن غيره و جعل

و جزر عن مساريها و اصغاء كل شيء منها موضعه الذي لا يري شيء اول منه ولا يتوهم في صورة العقل امر اليق به منه مودعا اخبار القرون الماضية و ما نزل من مثلات الله تعالى بمن مضى وعاند منهم منذبا عن الكوائن المستقبلة في الاعصار الآتيه من الزمان جامعا في ذلك بين الحجة والمحتج له والدليل والمدلول عليه ليكون ذلك اوكد للزوم ما دعا اليه وانبأ عن وجوب ما امر به و نهي عنه و معلوم ان الاتيان بمثل هذه الامور والجمع بين اشتاتها حتى تنتظم و تتنق امر تعجز عنه قوي البشر ولا تبلغه قدرتهم فانقطع الحق دونه وعجزوا عن معارضة بمثله او مناقضة في شكله ثم صار المعاندون له يقولون مرة انه شعر لما رأوه منظوما و مرة انه سحر لما رأوه معجوزا غير مقدور عليه وقد كانوا يجدون له وقعا في القلوب و فزعا في النفوس يريبهم و يحيرهم فلم يتمالكوا ان يعترفوا به نوعا من الاعتراف ولذلك قالوا ان له لحلاوة و ان عليه لطلاوة و كانوا مرة بجهلهم يقولون اساطير الاولين اكتتبها فهي تملى عليه بكرة و اصيلا مع علمهم ان صاحبهم امي وليس بحضرته من يملي اويكتب في نحو ذلك من الامور التي اوجبها العناد والجهل والعجز ثم قال وقد قلت في اعجاز القرآن وجها ذهب عنه الناس و هو صنيعة في القلوب و تاثيره في النفوس فانك لا تسمع كلاما غير القرآن منظوما ولا منثورا اذا قرع السمع خلص له الى القلب من اللذة والحلاوة في حال ذي الروعة والمهابة في حال آخر ما تخلص منه اليه قال تعالى لو انزلنا هذه القرآن على جبل لرائيته خاشعا متصدعا من خشية الله و قال نزل احسن الحديث كتابا متشابها مثاني تقشعر منه جلود الذين

شعبة فانتظم لها بانتظام هذه الاوصاف نمط من الكلام بجمع صفتي الفخامة و العذوبة وهما على الانفراد في نعوتهما كالمتضادين لان العذوبة نتاج السهولة و الجزالة و المتانة يعالجان نوعا من الزعورة فكان اجتماع الامرين في نظمه مع يتوكل واحد منهما على الآخر فضيلة خص بها القرآن ليكون آية بينة لنبيه صلى الله عليه وسلم وانما تعذر على البشر الاتيان بمثله لامور منها ان علمهم لايحيط بجميع اسماء اللغة العربية و اوضاعها التي هي ظروف المعاني ولا تدرك افهامهم جميع معاني الاشياء المحمولة على تلك الالفاظ ولا تكمل معرفتهم باستيفاء جميع وجوه المنظوم التي بها يكون ايتلافها و ارتباط بعضها بعض فيتوصلوا باختيار الافضل من الاحسن من وجوهها الى ان ياتوا بكلام مثله و انما يقوم الكلام بهذه الاشياء الثلاثة لفظ حاصل ومعنى به قايم و رباط لهما ناظم و اذا تاملت القرآن وجدت هذه الامور منه في غاية الشرف والفضيلة حتى لا ترى شيأ من الالفاظ افصح ولا اجزل ولا اعذب من الفاظه و لاترى نظما احسن تاليفا و اشد تلاوما و تشاكلا من نظمه و اما معانيه فكل ذي لب يشهد له بالتقدم في ابوابه والترقي الى اعلى درجاته وقد توجد هذه الفضايل الثلاث على التفرق في انواع الكلام فاما ان توجد مجموعة في نوع واحد منه فلم توجد الا في كلام العليم القدير فخرج من هذا القرآن انما صار معجزا لانه جاء بافصح الالفاظ في احسن نظوم التاليف مضمنا اصح المعاني من توحيد الله تعالى و تنزيه له في صفاته و دعاً الى طاعته و بيان لطريق عبادته في تحليل و تحريم وخطر و اباحة و من وعظ و تقويم و امر المعروف و نهي عن منكر و ارشاد الى محاسن الاخلاق

كل واد من المعاني بسلاطة لسانهم الى معارضة القرآن و عجزهم عن الاتيان بمثله و لم يتصدوا لمعارضة لم يخف على اولى الالباب ان صارفا آلهيا صرفهم عن ذلك واي اعجاز اعظم من ان يكون كافة البلغاء عجزة فى الظاهر عن معارضة مصروفة عنها فى الباطن انتهى وقال السكاكي فى المفتاح اعلم ان اعجاز القران يدرك ولا يمكن وصفه كاستقامة الوزن تدرك ولا يمكن وصفها و كالملاحة وكما يدرك طيب النعم العارض لهذا الصوت ولا يدرك تحصيله لغير ذوى الفطر السليمة الا باتقان علمى المعاني والبيان والتمرين فيها وقال ابوحيان التوحيدى سئل بندر الفارسي عن موضع الاعجاز من القرآن فقال هذه مسألة فيها حيف على المعنى و ذلك انه شبيه بقولك ما موضع الانسان من الانسان فليس للانسان موضع من الانسان بل متي اشرت الى جملته فقد حققته و دللت على ذاته كذلك القرآن لشرفه لايشار الى شئ منه الا و كان ذلك المعنى آية في نفسه ومعجزة لمجادلة و هدى لقايله و ليس في طاقة البشر الاحاطه باغراض الله في كلامه و اسراره في كتابه فلذلك حارت العقول و تاهت البصاير عنده وقال الخطابي ذهب الاكثرون من علماء النظر الى ان وجه الاعجاز فيه من جهة البلاغة لكن صعب عليهم تفصيلها و صفوا فيه الى حكم الذوق قال والتحقيق ان اجناس الكلام مختلفة و مراتبها في درجات البيان متفاوتة فمنها البليغ الرصين الجزل ومنها الفصيح القريب السهل ومنها الجايز الطلق الرسل وهذه اقسام الكلام الفاضل المحمود فالاول اعلاها والثاني اوسطها و الثالث ادناها و اقربها فجاءت بلاغات القرآن من كل قسم هذه الاقسام حصة و اخذت من كل نوع

نظم الكلام ثم بيان ان هذا النظم مخالف لنظم ما عداه فنقول مراتب تاليف الكلام خمس الاولى ضم الحروف المبسوطة بعضها الى بعض لتحصيل الكلمات الثلثة الاسم و الفعل و الحرف و الثانية تاليف هذه الكلمات بعضها الى بعض لتحصيل الجمل المفيدة و هو النوع الذي يتداوله الناس جميعا في مخاطباتهم و قضاء حوايجهم و يقال له المنثور من الكلام و الثالثة ضم بعض ذلك الى بعض ضما له مبادء و مقاطع و مداخل و مخارج و يقال له المنظوم و الرابعة ان يعتبر في آواخر الكلام مع ذلك تسجيع و يقال له المسجع و الخامسة ان يجعل له مع ذلك وزن و يقال له الشعر و المنظوم اما مجاورة و يقال له الخطابة و اما مكاتبة و يقال له الرسالة فانواع الكلام لا يخرج عن هذه الاقسام و لكل من ذلك نظم مخصوص و القرآن جامع لمحاسن الجميع على نظم غير نظم شئ منها يدل على ذلك انه لا يصح ان يقال له رسالة او خطابة او شعر او سجع كما يصح ان يقال هو كلام و البليغ اذا فرغ سمعه فصل بينه و بين ما عداه من النظم و لهذا قال تعالى و انه لكتاب عزيز لاياتيه الباطل من بين يديه و لا من خلفه تنبيها على ان تاليفه ليس على هيئة نظم يتعاطاه البشر فيمكن ان يغير بالزيادة و النقصان كحالة الكتب الآخر قال و اما الاعجاز المتعلق بصرف الناس عن معارضته فظاهر ايضا اذا اعتبر و ذلك انه ما من صناعة محمودة كانت او مذمومة الا و بينها و بين قوم مناسبات خفية و اتفاقات جميلة بدليل ان الواحد قالواحد توثر حرفة من الحرف فينشرح صدره بملابستها و تطيعه قواه في مباشرتها فيقبلها بانشراح صدر و بزوالها باتساع قلبه فلما دع الله اهل البلاغة و الخطابة الذين يهيمون في

الطباع و تضحك منه في احوال تركيبه و بها اي بتلك الاحوال اعجز البلغاء و اخرس الفصحاء فعلى اعجازه دليل اجمالي و هو ان العرب عجزت عنه و هو بلسانها فغيرها احرى و دليل تفصيلي مقدمته التفكر في خواص تراكيبه و نتيجته العلم بانه تنزيل من المحيط بكل شيء علما و قال الاصبهاني في تفسيره اعلم ان اعجاز القرآن ذكر من وجهين احدهما المجاز متعلق بنفسه و الثاني تصرف الناس عن معارضته فالاول اما ان يتعلق بفصاحته و بلاغته او بمعناه اما الاعجاز المتعلق بفصاحته و بلاغته فلا يتعلق بعنصره الذي هو اللفظ و المعنى فان الفاظه الفاظهم قال تعالى قرأنا عربيا بلسان عربي و لا بمعانيه فان كثيرا منها موجود في الكتب المقدمة قال تعالى و انه لفي زبر الاولين و ما هو في القرآن من المعارف الالهية و بيان المبداء و المعاد و الاخبار بالغيب فاعجازه ليس براجع الى القرآن من حيث هو قرآن بل لكونها حاصلة من غير سبق تعليم و تعلم و يكون الاخبار بالغيب اخبارا بالغيب سواء كان بهذا النظم او بغيره موردا بالعربية او بلغة اخرى بعبارة او اشارة فاذن بالنظم المخصوص صورة القرآن و اللفظ و المعنى عنصره و باختلاف الصور يختلف حكم الشيء و اسمه لا بعنصره كالخاتم و القرط و السوار فانه باختلاف صورها اختلفت اسماؤها لا بعنصرها الذي الذهب و الفضة و الحديد فان الخاتم المتخذ من الذهب و من الفضة و من الحديد يسمى خاتما و ان كان العنصر مختلفا و ان اتخذ خاتم و قرط و سوار من ذهب اختلفت اسماؤها باختلاف صورها و ان كان العنصر واحدا قال فظهر من هذا ان اعجاز المختص بالقرآن يتعلق بالنظم المخصوص و بيان كون النظم معجزا يتوقف على بيان

كما قامت الحجة في معجزة موسى بالسحرة و في معجزة عيسى بالاطباء فان الله انما جعل معجزات الانبياء بالوجه الشهير ابرع ما يكون في زمن النبي صلى الله عليه وسلم الذي اراد اظهاره فكان السحر قد انتهى في مدة موسى الى غايته و كذلك الطب في زمن عيسى و الفصاحة في زمن محمد صلى الله عليه وسلم و قال حازم في منهاج البلغا وجه الاعجاز في القرآن من حيث اشتهرت الفصاحة و البلاغة فيه من جميع انحائها في جميعه استمرارا لايوجد له فترة و لا يقدر عليه احد من البشر و كلام العرب و من تكلم بلغتهم لا تستمر الفصاحة و البلاغة في جميع انحائها في العالي منه الا في الشيء اليسير المعدود ثم تعرض الفترات الانسانية فينقطع طيب الكلام ورونقه فلا يستمر لذلك الفصاحة في جميعه بل توجد في تفاريق و اجزاء منه و قال المراكشي في شرح المصباح الجهة المعجزة في القرآن تعرف بالتفكر في علم البيان و هو كما اختاره جماعة في تعريفه ما يحترز به عن الخطأ في تادية المعني و عن تعقيده و تعرف به وجوه تحسين الكلام بعد رعاية تطبيقه لمقتضى الحال لانه جهة اعجازه ليست مفردات الفاظه و الا لكانت قبل نزوله معجزة و لا مجرد تاليفها و الا لكان كل تاليف معجزا و لا اعرابها و الا لكان كلام معرب معجزا و لا مجرد اسلوبه و الا لكان الابتداء باسلوب الشعر معجزا و الاسلوب الطريق و لكان هذيان مسيلمة معجزا و لان الاعجاز يوجد دونه اي الاسلوب في نحو فلما استياسوا منه خلصوا نجيا فاصدع بما تومر و لا بالصرف عن معارضتهم لان تعجبهم كان من فصاحته و لان مسيلمة و ابن المقفع و المغري و غيرهم قد تعاطوها فلم ياتوا الا بما تمجه الاسماع و تنفر منه

كقول الشعر و وصف الخطب و صناعة الرسالة و الحذق في البلاغة و له طرق تسلك فاما شاؤ نظم القرآن فليس له مثال يجتدى عليه و لا امام يقتدى به و لا يصح وقوع مثله اتفاقا و قال و نحن نعتقد ان الاعجاز في بعض القرآن اظهر و في بعضه ادق و اغمض و قال الامام فخر الدين وجه الاعجاز الفصاحة و غرابة الاسلوب و السلامة من جميع العيوب و قال الزملكاني وجه الاعجار راجع الى التاليف الخاص به لا مطلق التاليف بان اعتدلت مفرداته تركيبا وزنة و علت مركباته معنى بان يوقع كل فن في مرتبة العليا في اللفظ و المعنى و قال ابن عطية الصحيح و الذي عليه الجمهور و الحذاق في وجه اعجازه انه بنظمه و صحة معانيه و توالي فصاحة الفاظه و ذلك ان الله احاط بكل شيء علما و احاط بالكلام كله علما فاذا ترتبت اللفظة من القرآن علم باحاطة اي لفظة تصلح ان يلى الاول و تبين المعنى بعد المعنى ثم كذلك من اول القرآن الى آخره و البشر يعمهم الجهل و النسيان و الذهول و معلوم ضرورة ان احدا من البشر لا يحيط بذلك فبهذا جاء نظم القرآن في الغاية القصوى من الفصاحة فبهذا تبطل قول من قال ان العرب كان في قدرتها الاتيان بمثله فصرفوا عن ذلك و الصحيح انه لم يكن في قدرة احد قط و لهذا ترى البليغ ينقح القصيدة او الخطبة حولا ثم ينظر فيها فيغير فيها و هلم جرا و كتاب الله سبحانه لو نزعت منه لفظة ثم اديرلسان العرب على لفظه احسن منها لم يوجد و نحن نتبين لنا البراعة في اكثره و يخفى علينا وجهها في مواضع لقصورنا عن مرتبة العرب يومئذ في سلامة الذوق و جودة القريحة و قامت الحجة على العالم بالعرب اذا كانوا ارباب الفصاحة و منظنة المعارضة

منعقد على اضافة الاعجاز الى القرآن فكيف يكون معجزا وليس فيه صفة اعجاز بل المعجز هو الله حيث سلبهم القدرة على الاتيان بمثله و ايضا فيلزم من القول بالصرفة زوال الاعجاز بزوال زمان التحدى و خلو القرآن من الاعجاز و في ذلك خرق لاجماع الامة ان معجزة الرسول العظمى باقية و لا معجزة له باقية سوى القرآن قال القاضي ابو بكر و مما يبطل القول بالصرفة انه لو كانت المعارضة ممكنة و انما منع منها الصرفة لم يكن الكلام معجزا و انما يكون بالمنع معجزا فلا يتضمن الكلام فضيلة على غيره في نفسه قال وليس هذا باعجب من قول فريق منهم ان الكل قادرون على الاتيان بمثله و انما تاخروا عنه لعدم العلم بوجه ترتيب لو تعلموه لو صلوا اليه به و لا باعجب من قول آخرين ان العجز وقع منهم و اما من بعدهم ففي قدرة الاتيان بمثله و كل هذا لا يعتد به و قال قوم وجه اعجازه ما فيه من الاخبار عن الغيوب المستقبلة و لم يكن ذلك من شان العرب و قال آخرون ما تضمنه من الاخبار عن قصص الاولين و سائر المتقدمين حكاية من شاهدها و حضرها و قال آخرون ما تضمنه من الاخبار عن الضمائر من غير ان يظهر ذلك منهم بقول او فعل كقوله اذ همت طايفتان منكم ان تفشلا و يقولون في انفسهم لو لا يعذبنا الله و قال القاضي ابو بكر وجه اعجازه ما فيه من النظم و التاليف و الترصيف و انه خارج عن جميع وجوه النظم المعتاد في كلام العرب و مباين لاساليب خطاباتهم قال و لهذا لم يمكنهم معارضته قال و لا سبيل الى معرفة اعجاز القرآن من اصناف البديع التي اودعوها في الشعر لانه ليس مما تخرق العادة بل يمكن استدراكه بالعلم و التدريب و التصنع به

النفوس و الخروج من الاوطان و انفاق الاموال و هذا من جليل التدبير الذي لا يخفى على من هو دون قريش و العرب فى الراى و العقل بطبقات و لهم القصيد العجب و الرجز الفاخر و الخطب الطوال البليغة و القصار الموجزة ولهم الاشجاع و المزدوج و اللفظ المنثور ثم يتحدى به اقصاهم بعد ان اظهر عجز ادناهم فمحال اكرمك الله ان يجتمع هولاء كلهم على الغلط فى الامر الظاهر و الخطاء المكشوف البين مع التفريع بالنقض و التوقيف على العجز وهم اشد الخلق انفقه و اكثرهم مفاخرة والكلام سيد عملهم وقد احتاجوا اليه و الحاجة تبعث على الحيلة فى الامر الغامض فكيف بالظاهر و كما انه محال ان يطيقوا ثلاثا و عشرين سنة على الغلط فى الامر الجليل المنفعة فكذلك محال ان يتركوه وهم يعرفونه و يجدون السبيل اليه و هم يبذلون اكثر منه فصـــل لما ثبت كون القرآن معجزة نبينا صلى الله عليه و سلم وجب الاهتمام بمعرفة وجه الاعجاز و قد خاض الناس في ذلك كثيرا فبين محسن و مسي فزعم قوم ان التحدى وقع بالكلام القديم الذي هو صفة الذات و ان العرب تكلفت في ذلك ما لا يطاق وبه وقع عجزها و هو مردود لان ما لا يمكن الوقوف عليه لا يتصور التحدى به و الصواب ما قاله الجمهور انه وقع بالدال على القديم وهو الالفاظ ثم زعم النظام ان اعجازه بالصرفة اي ان الله صرف العرب عن معارضته و سلب عقولهم و كان مقدورا لهم لكن عاقهم امر خارجي فصار كسائر المعجزات و هذا قول فاسد بدليل قل لئن اجتمعت الانس و الجن الآية فانه يدل على عجزهم مع بقاء قدرتهم و لو سلبوا القدرة لم يبق فائدة لاجتماعهم لمنزلته منزلة اجتماع الموتى و ليس عجز الموتى مما يحتفل بذكره هذا مع ان الاجماع

و لا باشعار الجن و الله ما يشبه الذي يقول شيئا من هذا و والله ان لقوله الذي يقول حلاوة و ان عليه الحلاوة و انه لمثمر اعلاه مغدق اسفله و انه ليعلو و ما يعلي و انه ليحطم ما تحته قال لا يرضى عنك قومك حتى تقول فيه قال فدعني حتى افكر فلما فكر قال هذا سحر يؤثر يأثره عن غيره قال الجاحظ بعث الله محمدا صلى الله عليه و سلم اكثر ما كانت العرب شاعر او خطيبا و احكم ما كانت لغة و اشد ما كانت عدة فدعا اقصاها و ادناها الى توحيد الله و تصديق رسالته فدعاهم بالحجة فلما قطع العذر و ازال الشبهة و صار الذي يمنعهم من الاقرار الهوى و الحمية دون الجهل و الحيرة حملهم على خطهم بالسيف فنصب لهم الحرب و نصبوا له و قتل من عليتهم و اعلامهم و اعمامهم و بني اعمامهم و هو في ذلك يحتج عليهم بالقرآن و يدعوهم صباحا و مساء الى ان يعارضوه انكان كاذبا بسورة واحدة او بآيات يسيرة فكلما ازداد تحديا لهم بها و تفريقا لعجزهم عنها يكشف من بعضهم ما كان مستورا و ظهر منه ما كان خفيا فحين لم يجدوا حيلة و لا حجة قالوا له انت تعرف من اخبار الامم ما لا يعرف فاذلك يمكنك ما لا يمكننا قال فهاتوها مفتريات فلم يرم بذلك خطيب و لا طمع فيه شاعر و لا طبع فيه لتكلفه و لو تكلفه لظهر ذلك ولو ظهر لوجد من تستجيده و لا يحامى عليه و يكابر فيه و يزعم انه قد عارض و قابل و ناقض فدل ذلك العاقل على عجز القوم مع كثرة كلامهم و استحالة لغتهم و سهولة ذلك عليهم و كثرة شعرايهم و كثرة من هجاه منهم و عارض شعراء اصحابه و خطباء امته لان سورة واحدة و آيات يسيرة كانت انقض لقوله و افسد لامره و ابلغ في تكذيبه و اسرع في تفريق اتباعه من بذل

ان كانوا صادقين فمن ثم تحداهم بعشر سور منه في قوله ام يقولون افتراه قل فآتو بعشر سور مثله مفتريات و ادعوا من استطعتم من دون الله ان كنتم صادقين فان لم يستجيبولكم فاعلموا انما انزل بعلم الله ثم تحداهم بسورة في قوله ام يقولون افتراه قل فآتوا بسورة مثله الآية ثم كرره في قوله و ان كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا فآتوا بسورة من مثله الآية فلما عجزوا عن معارضة و الاتيان بسورة تشبهه على كثرة الخطبأ فيهم و البلغا نادى عليهم باظهار العجز و اعجاز القرآن فقال قل لئن اجتمعت الانس و الجن على ان ياتوا بمثل هذا القرآن لا ياتون بمثله و لو كان بعضهم لبعض ظهيرا و هم الفصحاء اللد و قد كانوا احرص شئ على اطفاء نوره و اخفاء امره فلو كان في مقدرتهم معارضة لعدلوا اليها قطعا للحجة و لم ينقل عن احد منهم انه حدث نفسه بشئ من ذلك و لارامه بل عدلوا الى العناد تارة و الى الاستهزاء اخرى فتارة قالوا سحر و تارة قالوا شعر و تارة قالوا اساطير الاولين كل ذلك من التحير و الانقطاع ثم رضوا بحكم السيف في اعناقهم وسبى ذراريهم و حرمهم و استباحة اموالهم و قد كانوا انف شئ و اشده حمية فلو علموا ان الاتيان بمثله في قدرتهم لبادروا اليه لانه كان اهون عليهم كيف و قد اخرج الحاكم عن ابن عباس قال جاء الوليد بن المغيرة الى النبي صلى الله عليه و سلم فقرأ عليه فكان رق له فبلغ ذلك ابا جهل فاتاه فقال يا عم ان قومك يريدون ان يجمعوا لك مالا ليعطوله فانك آتيت محمدا لتعرض لما قبله قال قد علمت قريش اني من اكثرها مالا قال فقل فيه قولا يبلغ قومك انك كاره له قال وماذا اقول فوالله ما فيكم رجل اعلم بالشعر مني ولا برجزه ولا بقصيده

ذو البصائر كما قال صلى الله عليه وسلم ما من الانبياء نبي الا اعطى ما مثله أمن عليه البشر و انما كان الذي اوتيته وحيا اوحاه الله الي فارجو ان اكون اكثرهم تابعا اخرجه البخاري قيل معناه ان معجزات الانبياء انقرضت بانقراض اعصارهم فلم يشاهدها الا من حضرها ومعجزة القرآن مستمرة الى يوم القيمة و خرقة العادة في اسلوبه و بلاغته و اخباره بالمغيبات فلا يمر عصر من الاعصار الا و يظهر فيه شئ مما اخبر انه سيكون يدل على صحة دعواه و قيل المعنى ان المعجزات الماضية كانت حسية تشاهد بالابصار كناقة صالح و عصى موسى و معجزة القرآن تشاهد بالبصيرة فيكون من يتبعه لاجلها اكثر لان الذي يشاهد بعين الراس ينقرض بانقراض مشاهدة و الذي يشاهد بعين العقل باق يشاهده كل من جاء بعد الاول مستمرا قال في فتح الباري و يمكن نظم القولين في كلام واحد فان محصلهما لا ينافي بعضه بعضا و لا خلاف بين العقلاء ان كتاب الله تعالى معجز لم يقدر احد على معارضة بعد تحديهم بذلك قال تعالى و ان احد من المشركين استجارك فاجره حتى يسمع كلام الله فلو لا ان سماعة حجة عليه لم يقف امره على سماعة ولا يكون حجة الا وهو معجزة و قال تعالى وقالوا لو لا انزل عليه آية من ربه قل انما الآيات عند الله و انما انا نذير مبين او لم يكفهم انا انزلنا عليك الكتاب يتلى عليهم فاخبر ان الكتاب آية من آياته كاف في الدلالة قايم مقام معجزات غيره و آيات من سواه من الانبياء و لما جاء به النبي صلى الله عليه وسلم اليهم وكانوا افصح الفصحاء و مصاقع الخطباء وتحداهم على ان ياتوا بمثله و امهلهم طول السنين فلم يقدروا كما قال تعالى فلياتوا بحديث مثله

اي لا تقتلوهم من فقر بكم فحسن نحن نرزقكم ما يزول به املاقكم ثم قال و اياهم اي نرزقكم جميعا و الثانية خطاب للاغنياء اي خشية فقرء يحصل لكم بسببهم و لذا حسن نرزقهم و اياكم قوله تعالى فاستعذ بالله انه سميع عليم و في فصلت انه هو السميع العليم قال ابن جماعة لان آية الاعراف نزلت اولا و آية فصلت نزلت ثانيا فحسن التعريف اي هو السميع العليم الذي تقدم ذكره اولا عند نزوع الشيطان قوله تعالى المنافقون و المنافقات بعضهم من بعض و قال في المومنين بعضهم اولياء بعض و في الكفار و الذين كفروا بعضهم اولياء بعض لان المتنافقين ليسوا متناصرين على دين معين و شريعة ظاهرة فكان بعضهم يهود و بعضهم مشركين فقال من بعض اي في الشك و النفاق و المومنون متناصرون على دين الاسلام و كذلك الكفار المعلنون بالكفر كلهم اعوان بعضهم و مجتمعون على التناصر بخلاف المنافقين كما قال تعالى تحسبهم جميعا و قلوبهم شتى فهذه امثلة يستضأ بها و قد تقدم منها كثير في نوع التقديم و التاخير و في نوع الفواصل و في انواع آخر النوع الرابع و الستون في اعجاز القرآن افرده بالتصنيف خلايق منهم الخطابي والرماني والزملكاني و الامام الرازي و ابن سراقه و القاضي ابو بكر الباقلاني قال ابن العربي و لم يصنف مثل كتابه اعلم ان المعجزة امر خارق للعادة مقرون بالتحدى سالم عن المعارضة و هي اما حسية و اما عقلية و اكثر معجزات بني اسرائيل كانت حسية لبلادتهم و قلة بصيرتهم و اكثر معجزات هذه الامة عقلية لفرط ذكائهم و كمال افهامهم و لان هذه الشريعة لما كانت باقية على صفحات الدهر الى يوم القيمة خصت بالمعجزة العقلية الباقية ليراها

عدة ايام عبادة آبائهم العجل فآية البقرة يحتمل قصة الفرقة الثانية حيث غير بجمع الكثرة و آل عمران الفرقة الاولى حيث اتى بجمع القلة و قال ابو عبد الله الرازي انه من باب التفنن قوله تعالى ان هدى الله هو الهدى و في آل عمران ان الهدى هدى الله لان الهدى في البقرة المراد به تحويل القبلة و في آل عمران المراد به الدين لتقدم قوله لمن تبع دينكم و معناه ان دين الله الاسلام قوله تعالى رب اجعل هذا بلدا آمنا و ابراهيم هذا البلد آمنا لان الاول دعا به قبل مصيره بلدا عندك ترك هاجر و اسمعيل به و هودا فدعا بان يصير بلدا و الثاني دعا به بعد عوده و سكنى جرهم به و مصيره بلدا فدعا بامنه قوله تعالى قولوا امنا بالله و ما انزل علينا لان الاول خطاب للمسلمين و الثانية خطاب للنبي صلى الله عليه و سلم و الى ينتهى بها من كل جهته و على لا ينتهى بها الا من جهة واحدة و هي العلو و القرآن ياتى المسلمين من كل جهته ياتي مبلغه اياهم منها و انما اتى النبي صلى الله عليه و سلم من جهة العلو خاصة فناسب قوله علينا و لهذا اكثرما جاء في جهة النبي صلى الله عليه و سلم بعلى و اكثرما جاء في جهة الام بالي قوله تعالى تلك حدود الله فلا تقربوها و قال بعد ذلك فلا تعتدوها لان الاولى وردت بعد نواه فناسب النهي عن قربانها و الثانية بعد اوامر فناسب النهي عن تعديها تجاوزها بان يوقف عندها قوله تعالى نزل عليك الكتاب و قال انزل التوراة و الانجيل لان الكتاب انزل منجما فناسب الاتيان بنزل الدال على التكرير بخلافهما فانهما انزلا دفعة قوله تعالى و لا تقتلوا اولادكم من املاق و في الاسراء خشية املاق لان الاولى خطاب للفقراء المقلين

من كلام موسى فعددها فى الاعراف يقتلون و هو من تنويع الالفاظ المسمى بالتفنن قوله تعالى و اذ قلنا ادخلوا هذه القرية الآية وفي آية الاعراف اختلاف الفاظ و نكته ان آية البقرة في معرض ذكر النعم عليهم حيث قال يا بني اسرائيل اذكروا نعمتي الى آخره فناسب نسبة القول اليه تعالى و ناسب قوله رغدا لان النعم به اتم و ناسب تقديم و ادخلوا الباب سجدا و ناسب خطاياكم لانه جمع كثرة و ناسب الواو في سنزيد لدلالتها على الجمع بينهما و ناسب الفاء في و كلوا لان الاكل مرتب على الدخول و آية الاعراف افتتحت بما فيه توبيخهم و هو قولهم اجعل لنا الها كما لهم الهة ثم اتخاذهم العجل فناسب ذلك و اذ قيل لهم و ناسب ترك رغدا و السكنى تجامع الاكل فقال و كلوا و ناسب تقديم ذكر مغفرة الخطايا و ترك الواو في ستزيد و لما كان فى الاعراف تقديم الهادين بقوله و من قوم موسى امة يهدون بالحق فناسب تبعيض الظالمين بقوله الذين ظلموا منهم و لم يتقدم فى البقرة مثله فترك و فى البقرة اشارة الى سلامة غير الذين ظلموا لتصريحه بالانزال على المتصفين بالظلم و الارسال اشد وقعا من الانزال فناسب سياق ذكر النعمة فى البقرة ذلك و ختم آية البقرة بيفسقون و لا يلزم منه الظلم و الظلم يلزم منه الفسق فناسب كل لفظة منها سياقه و كذا فى البقرة فانفجرت و فى الاعراف انبجست لان الانفجار ابلغ في كثرة الماء فناسب سياق ذكر النعم التعبير به قوله و قالوا لن تمسنا النار الا اياما معدودة و في آل عمران معدودات قال ابن جماعة لان قايلي ذلك فرقتان من اليهود احداهما قالت انما تعذب بالنار سبعة ايام عدد ايام الدنيا و الاخرى قالت انما تعذب اربعين

هدى و رحمة للمحسنين لانه لما ذكر هنا مجموع الايمان ناسب المتقين ولما ذكر ثم الرحمة ناسب المحسنين قوله تعالى و قلنا يا آدم اسكن انت و زوجك و كلا و فى الاعراف فكلا قيل لان السكنى فى البقرة الاقامة و فى الاعراف اتخاذ المسكن فلما نسب القول اليه تعالى و قلنا يا آدم ناسب زيادة الاكرام بالواو الدالة على الجمع بين السكنى و الاكل و لذا قال فيه رغدا و قال حيث شئتما لانه اعم و فى الاعراف و يا آدم فاتى بالفاء الدالة على ترتيب الاكل على السكنى المامور باتخاذها لان الاكل بعد الاتخاذ و من حيث لا يعطى عموم معنى حيث شئتما قوله تعالى و اتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا الآية و قال بعد ذلك ولا يقبل منها عدل ولا تنفعها شفاعة ففيه تقديم العدل وتاخيره و التعبير بقبول الشفاعة تارة و بالنفع اخرى و ذكر في حكمته ان الضمير في منها راجع فى الاولى الى النفس الاولى و فى الثانية الى النفس الثانية فتبين فى الاولى ان النفس الشافعة الجازية عن غيرها لا يقبل منها شفاعة و لا يوخذ منها عدل و قدمت الشفاعة لان الشافع يقدم الشفاعة على بدل العدل عنها و بين فى الثانية ان النفس المطلوبة يجزمها لا يقبل منها عدل عن نفسها و لا تنفعها شفاعة شافع منها و قدم العدل لان الحاجة الى الشفاعة انما تكون عند رده و لذلك قال فى الاولى لا يقبل منها شفاعة و فى الثانية و لا تنفعها شفاعة لان الشفاعة انما تقبل من الشافع و انما تنفع المشفوع له قوله تعالى و اذ نجيناكم من آل فرعون يسومونكم سوء العذاب يذبحون ابناءكم و في ابراهيم و يذبحون ابناءكم بالواو لان الاولى من كلامه تعالى لهم فلم يعدد عليهم المحن تكرما فى الخطاب و الثانية

جاء و اذا سالك عبادي عني فاني قريب و عادة السوال يجي
جوابه فى القرآن بقل قلنا حذفت للاشارة الى ان العبد في حال
الدعا في اشرف المقامات لا واسطة بينه و بين مولاه ورد فى القرآن
سورتان اولها يا ايها الناس في كل نصف سورة فالتي فى النصف
الاول يشتمل على شرح المبدأ و التي فى الثاني على شرح المعاد
النوع الثالث و الستون فى الآيات المشتبهات افرده بالتصنيف خلق 63
اولهم فيما احسب الكسائي و نظمه السخاوي و الف في توجيه
الكرماني كتابه البرهان في متشابه القرآن و احسن منه درة التنزيل
و غرة التاويل لابي عبد الله الرازي و احسن من هذا ملاك التاويل
لابي جعفر بن الزبير و لم اقف عليه و للقاضي بدر الدين بن جماعة
في ذلك كتاب لطيف سماه كشف المعاني عن متشابه المثاني
و في كتابي اسرار التنزيل المسمى قطف الازهار في كشف الاسرار
من ذلك الجم الغفير و القصد به ايراد القصة الواحدة في صور شتى
و فواصل مختلفة بان ياتي في موضع واحد مقدما و في آخر موخرا
كقوله فى البقرة و ادخلوا الباب سجدا و قولوا حطة و فى الاعراف
و قولوا حطة و ادخلوا الباب سجدا و فى البقرة و ما اهل به لغير الله
و ساير القرآن و ما اهل لغير الله به او في موضع بزيادة و في آخر
بدونها نحو سواء عليهم أ انذرتهم و في يس و سواء و يكون الدين لله
و فى الانفال ويكون الدين كله لله او في موضع معرفا و في آخر منكرا
او مفردا و في آخر جمعا او بحرف و في آخر بحرف آخر او مدغما
و في آخر مكفوفا و هذا النوع يتداخل مع نوع المناسبات و هذه
امثلة منه بتوجيهها قوله تعالى فى البقرة هدى للمتقين و في لقمان

بان التسبيح حيث جاء مقدم على التحميد نحو فسبح بحمد ربك سبحان الله و الحمد لله و اجاب ابن الزملكاني بان سورة سبحان لما اشتملت على الاسراء الذي كذب المشركون به النبي صلى الله عليه و سلم و تكذيبه تكذيب الله تعالى اتى بسبحان لتنزيه الله على ما نسب اليه نبيه من الكذب و سورة الكهف لما نزلت بعد سوال المشركين عن قصة اصحاب الكهف و تاخر الوحي نزلت مبنية ان الله لم يقطع نعمته عن نبيه و لا عن المومنين بل اتم عليهم النعمة بانزال الكتاب فناسب افتتاحها بالحمد على هذه النعمة في تفسير الخوتي ابتديت الفاتحة بقوله الحمد لله رب العالمين فوصف بانه مالك جميع المخلوقين و فى الانعام والكهف و سبا و فاطر لم يوصف بذلك بل يفرد من افراد صفاته و هو خلق السموات و الارض و جعل الظلمات و النور فى الانعام و انزل الكتاب فى الكهف و مالك ما فى السموات و ما فى الارض في سبا و خلقهما في فاطر لان الفاتحة ام القرآن و مطلعه فناسب الاتيان فيها بابلغ الصفات و اعمها و اشملها فى العجايب للكرماني ان قيل كيف جاء يسالونك اربع مرات بغير واو يسالونك عن الاهلة يسالونك ماذا ينفقون يسالونك عن الشهر الحرام يسالونك عن الخمر ثم جاء ثلاث مرات بالواو و يسالونك ماذا ينفقون و يسالونك عن اليتامى و يسالونك عن المحيض قلنا لان سوالهم عن الحوادث الاول وقع متفرقا و عن الحوادث الاخر وقع في وقت واحد فجي بحرف الجمع دلالة على ذلك فان قيل كيف جاء و يسالونك عن الجبال فقل و عادة القرآن مجي قل فى الجواب بلا فاء اجاب الكرماني بان التقدير لو سئلت عنها فقل فان قيل كيف

بالعجز و اصل هذين الحرفين فى الكتب المتقدمة كلها و تمامهما فى القرآن و يختص القرآن بالحرف السابع الجامع و هو حرف المثل المبين للمثل الاعلى و لما كان هذا الحرف هو الحمد افتتح الله به ام القرآن و جمع فيها جوامع الحروف السبعة التي بينها فى القرآن فالآية الاولى تشتمل على حرف الحمد السابع و الثانية تشتمل على حرف الحلال و الحرام الدين اقامت الرحمانية بهما الدنيا و الرحيمة الآخرة و الثالثة تشتمل على امر الملك القيم على حرف الامر والنهي الدين يبدأ امرهما فى الدين و الرابع يشتمل على حرفى المحكم في قوله اياك نعبد و المتشابه في قوله و اياك نستعين و لما افتتح ام القرآن بالسابع الجامع الموهوب ابتديت البقرة بالسادس المعجوز عنه و هو المتشابه انتهي كلام الحرالى و المقصود منه هو الاخير على اني اقول في مناسبة ابتداء البقرة بالم احسن مما قال و هو انه لما ابتديت الفاتحة بالحرف المحكم الظاهر لكل احد بحيث لا يعذر احد في فهمه ابتديت البقرة بمقابلة وهو الحرف المتشابه البعيد التاويل او المستحيله فصـــل و من هذا النوع مناسبة اسماء السور لمقاصدها و قد تقدم فى النوع السابع عشر الاشارة الى ذلك و في عجايب الكرماني انما سميت السور السبع حم على الاشتراك فى الاسم لما بينهن من التشاكل الذي اختصت به و هو ان كل واحدة منها استفتحت بالكتاب او صفة الكتاب مع تقارب المقادير فى الطول و القصر و يشاكل الكلام فى النظام فوائد منثورة فى المناسبات في تذكرة الشيخ تاج الدين السبكي و من خطه نقلت سأل الامام ما الحكمة في افتتاح سورة الاسراء بالتسبيح و الكهف بالتحميد و اجاب

على سبعة احرف زاجر و امر و حلال و حرام و محكم ومتشابه و امثال
اعلم ان القرآن منزل عند انتهاء الخلق و كمال كل الامر بدا فكان
المتجلي به جامعا لانتهاء كل خلق و كمال كل امر فلذلك هو صلى
الله عليه وسلم قسم الكون و هو الجامع الكامل و لذلك كان خاتما وكتابه
كذلك و بد المعاد من حين ظهوره فاستوفي ظهور صلاح هذه الجوامع
الثلاث التي قد خلت فى الاولين بداياتها و تمت عنده غاياتها
بعثت لا تمم مكارم الاخلاق و هي صلاح الدنيا و الدين و المعاد التي
جمعها قوله عليه السلام اللهم اصلح لي ديني الذي هو عصمة امري
و اصلح لي دنياى التي فيها معاشي و اصلح لي اخرتى التي اليها
معادي و في كل صلاح اقدام و احجام فتصير الجوامع الثلاثة ستة هي
حروف القرآن الستة ثم ذهب حرفا جامعا شايعا فرد الازواج له فتمت
سبعة فادنى تلك الحروف هو حرفا صلاح الدنيا فلها حرفان حرف
الحرام الذي لا تصلح النفس و البدن الا بالتطهر منه لبعده عن تقويمها
و الثاني حرف الحلال الذي يصلح النفس البدن عليه لموافقته
تقويمها و اصل هذين الحرفين فى التوراة و تمامهما فى القرآن و يلي
ذلك حرف اصلاح المعاد احدهما حرف الزجر و النهى الذي لا تصلح
الآخرة الا بالتطهر منه لبعده عن حسناها و الثاني حرف الامر الذي
يصلح الآخرة عليه لتقاضيه لحسناها و اصل هذين الحرفين فى الانجيل
و تمامهما فى القرآن و يلي ذلك حرفا صلاح الدين احدهما حرف
المحكم الذي بان للعبد فيه خطاب ربه و الثاني حرف المتشابه الذي
لا يتبيّن للعبد فيه خطاب ربه من جهة قصور عقله عن ادراكه
فالحروف الخمسة للاستعمال وهذا الحرف السادس للوقوف والاعتراف

و الرقيب و السابق و الالقا في جهنم و التقدم بالوعد و ذكر المتقين و القلب و القرون و التنقيب فى البلاد و تشقق الارض و حقوق الوعيد و غير ذلك و قد تكرر في سورة يونس من الكلم الواقع فى آلرا مايتا كلمة او اكثر فلهذا افتتحت بآلرا و اشتملت سورة ص على خصومات متعددة فاولها خصومة النبي صلى الله عليه وسلم مع الكفار و قولهم اجعل الالهة الها واحدا ثم اختصام الخصمين عند داؤد ثم تخاصم اهل النار ثم اختصام الملأ الاعلى ثم تخاصم ابليس في شان آدم ثم في شان بنيه و اغوائهم و آلم جمعت المخارج الثلاثة الحلق و اللسان و الشفتين على ترتيبها و ذلك اشارة الى البداية التي هي بدو الخلق و النهاية التي هى المعاد و الوسط الذي هو المعاش من التشريع بالاوامر و النواهي و كل سورة افتتحت بها فهي مشتملة على الامور الثلاثة و سورة الاعراف زيد فيها الصاد على آ لم لما فيها من شرح القصص قصة آدم فمن بعده من الانبياء عليهم الصلوة و سلم و لما فيها من ذكر فلا يكن في صدرك حرج و لهذا قال بعضهم معنى المص الم نشرح لك صدرك و زيد فى الرعد را لاجل قوله رفع السموات و لاجل ذكر الرعد و البرق و غيرهما و اعلم ان عادة القرآن العظيم في ذكر هذه الحروف ان يذكر بعدها ما يتعلق بالقرآن كقوله آ لم ذلك الكتاب نزل عليك الكتاب المص كتاب انزل اليك آ لم تلك آيات الكتاب طه ما انزلنا عليك القرآن لتشقى طسم تلك آيات الكتاب يس و القرآن ص و القرآن حم تنزيل الكتاب ق و القرآن الا ثلاث سور العنكبوت و الروم و ن ليس فيها ما يتعلق به و قد ذكرت حكمة ذلك في اسرار التنزيل وقال الحرالي في معني حيث انزل القرآن

بيان تمام الشرايع و مكملات الدين و الوفا بعهود الرسل و ما اخذ على الامة و بها تم الدين فهي سورة التكميل لان فيها تحريم الصيد على المحرم الذي هو من تمام الاحرام و تحريم الخمر الذي هو من تمام حفظ العقل و الدين و عقوبة المعتدين من السراق و المحاربين الذي هو من تمام حفظ الدماء و الاموال و احلال الطيبات الذي هو من تمام عبادة الله و لهذا ذكر فيها ما يختص بشريعة محمد صلى الله عليه وسلم كالوضوء و التيمم و الحكم بالقرآن على كل ذي دين و لهذا اكثر فيها من لفظ الاكمال و الاتمام و ذكر فيها ان من ارتد عوض الله بخير منه و لا يزال هذا الدين كاملا و لهذا ورد انها آخر ما نزل لما فيها من اشارة الختم و التمام و هذا الترتيب بين هذه السورة الاربع المدنيات من احسن الترتيب و قال ابو جعفر بن الزبير حكى الخطابي ان الصحابة لما اجتمعوا على القرآن و وضعوا سورة القدر عقب العلق استدلوا بذلك على ان المراد بها الكتابة في قوله انا انزلناه في ليلة القدر الاشارة الى قوله اقرأ قال القاضي ابو بكر بن العربي و هذا بديع جدا فصل قال في البرهان و من ذلك افتتاح السور بالحروف المقطعة و اختصاص كل واحدة بما بدئت به حتى لم يكن لترد آ لم في موضع آ لر و لا حم في موضع طسم قال و ذلك ان كل سورة بدئت بحرف منها فان اكثر كلماتها و حروفها مماثل له فحق لكل سورة منها ان لا يناسبها غير الوارد فيها فلو وضع موضع ق موضع ن لم يكن لعدم التناسب الواجب مراعاته في كلام الله و سورة ق بدئت به لما تكرر فيها من الكلمات بلفظ القاف من ذكر القرآن و الخلق و تكرير القول و مراجعته مرارا و القرب من ابن آدم و تلقى الملكين و قول العتيد

الاخرى كالضحى و الم نشرح قال بعض الائمة و سورة الفاتحة تضمنت الاقرار بالربوبية و الالتجاء اليه في دين الاسلام و الصيانة عن دين اليهودية و النصرانية و سورة البقرة تضمنت قواعد الدين و آل عمران مكملة لمقصودها فالبقرة بمنزلة اقامة الدليل على الحكم و آل عمران بمنزلة الجواب عن شبهات الخصوم و لهذا ورد فيها ذكر المتشابه لما تمسك به النصارى و اوجب الحج في آل عمران و اما فى البقرة فذكر انه مشروع و امر باتمامه بعد الشروع و كان خطاب النصارى في آل عمران اكثر كما ان خطاب اليهود فى البقرة اكثر لان التوراة اصل و الانجيل فرع لها و النبي صلى الله عليه و سلم لما هاجر الى المدينة دعى اليهود و جاهدهم و كان جهاده للنصارى في آخر الامر كما كان دعاوه لاهل الشرك قبل اهل الكتاب و لهذا كان السور المكية فيها الدين الذي اتفق عليه الانبياء فخوطب به جميع الناس و السور المدينة فيها خطاب من اقر بالانبياء من اهل الكتاب و المومنين فخوطبوا بيا اهل الكتاب يا بني اسرائيل يا ايها الذين آمنوا و اما سورة النساء فتضمنت احكام الاسباب التي بين الناس و هي نوعان مخلوقة لله تعالى و مقدورة لهم كالنسب و القهر و لهذا افتتحت بقوله ربكم الذي خلقكم من نفس واحدة و خلق منها زوجها ثم قال و اتقوا الله الذي تتساءلون به و الارحام فانظر هذه المناسبة العجيبة فى الافتتاح و براعة الاستهلال حيث تضمنت الآية المفتتح بها ما اكثر السورة في احكامه من نكاح النساء و محرماته المواريث المتعلقة بالارحام و ان ابتدا هذا الامر كان بخلق آدم ثم خلق زوجه منه ثم بثه منهما رجالا و نساء في غاية الكثرة و اما المائدة فسورة العقود تضمنت

يا ايها الذين امنوا اوفوا بالعقود و قال غيره اذا اعتبرت افتتاح كل سورة وجدته في غاية المناسبة لما ختم به السورة قبلها ثم هو يخفى تارة و يظهر اخرى كافتتاح سورة الانعام بالحمد فانه مناسب لختام المائدة من فصل القضاء كما قال الله تعالى وقضى بينهم بالحق و قيل الحمد لله رب العالمين و كافتتاح سورة فاطر بالحمد لله فانه مناسب لختام ماقبلها من قوله و حيل بينهم و بين ما يشتهون كما فعل باشياعهم من قبل كما قال تعالى فقطع دابرا لقوم الذين ظلموا و الحمد لله رب العالمين و كافتتاح سورة الحديد بالتسبيح فانه مناسب لختام سورة الواقعة بالامر به و كافتتاح سورة البقرة بقوله آ لم ذلك الكتاب لا ريب فيه فانه اشارة الى الصراط في قوله اهدنا الصراط المستقيم كانهم لما سالوا الهداية الى الصراط قيل لهم ذلك الصراط الذي سالتم الهداية اليه هو الكتاب و هذا معني حسن يظهر فيه ارتباط سورة البقرة بالفاتحة و من لطايف سورة الكوثر انها كالمقابلة للتي قبلها لان السابقة وصف الله فيها المنافق باربعة امور البخل وترك الصلوة والريا فيها و منع الزكاة فذكر فيها مقابلة البخل انا اعطيناك الكوثر اي الخير الكثير و في مقابلة ترك الصلوة فصل اي دم عليها و في مقابلة الريا لربك اي لرضاه لا للناس و في مقابلة منع الماعون وانحر واراد به التصدق بلحم الاضاحي وقال بعضهم لترتيب وضع السور فى المصحف اسباب يطلع على انه توقيفي صادر عن حكيم احدها بحسب الحروف كما فى الحواميم الثاني لموافقة اول السورة لاخر ما قبلها كاخر الحمد فى المعني و اول البقرة الثالث للوزان فى اللفظ كاخر تبت و اول الاخلاص الرابع لمشابهة جملة السورة لجملة

سبب نزولها ذكر معه من باب الزيادة في الجواب على ما في السوال على حد سئل عن ماء البحر فقال هو الطهور ماؤه الحل ميتة ومن ذلك قوله تعالى و لله المشرق و المغرب الآية فقد يقال ما وجه اتصاله بما قبله و هو قوله و من اظلم ممن منع مساجد الله الآية و قال الشيخ ابو محمد الجويني في تفسيره سمعت ابا الحسين الدهان يقول وجه اتصاله هو ان ذكر تخريب بيت المقدس قد سبق اي فلا يجرمنكم ذلك و استقبلوه فان لله المشرق و المغرب فصل من هذا النوع مناسبة فواتح السور و خواتمها و قد افردت فيه جزاء لطيفا سميته مراصد المطالع في تناسب المقاطع و المطالع و انظر الى سورة القصص كيف بدئت بامر موسى و نصرته و قوله فلن اكون ظهيرا للمجرمين و خروجه من وطنه و ختمت بامر النبي صلى الله عليه و سلم بان لا يكون ظهير اللكافرين و تسليته عن اخراجه من مكة و وعده بالعود اليها لقوله تعالى في اول السورة انا رادوه اليك قال الزمخشري و قد جعل الله فاتحة سورة قد افلح المومنون و اورد في خاتمها انه لا يفلح الكافرون فشان مابين الفاتحة و الخاتمة و ذكر الكرماني في العجائب مثله وقال في سورة ص بدأها بالذكر وختمها به في قوله ان هو الا ذكر للعالمين و في سورة ن بدأها بقوله ما انت بنعمة ربك بمجنون و ختمها بقوله و يقولون انه لمجنون و منه مناسبة فاتحة السورة لخاتمته الذي قبلها حتى ان منها ما يظهر تعلقها به لفظا كما في فجعلهم كعصف ماكول ليلاف قريش و قد قال الاخفش اتصالها بها من باب فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا و قال الكواشي في تفسير المائدة لما ختم سورة النساء امرا بالتوحيد و العدل بين العباد اكد ذلك بقوله

القرآن اذا ذكر الكتاب المشتمل على عمل العبد حيث يعرض يوم القيمة اردفه بذكر الكتاب المشتمل على الاحكام الدينية فى الدنيا التي ينشاء عنها المحاسبة عملا و تركا كما قال فى الكهف ووضع الكتاب فترى المجرمين مشفقين مما فيه الى ان قال و لقد صرفنا في هذا القرآن للناس من كل مثل الآية و قال في سبحان فمن اوتي كتابه بيمينه فاولئك يقرون كتابهم الى ان قال و لقد صرفنا للناس في هذا القرآن الآية و قال في طه يوم ينفخ فى الصور و نحشر المجرمين يومئذ زرقا الى ان قال فتعالى الله الملك الحق و لا تعجل بالقرآن من قبل ان يقضي اليك وحيه ومنها ان اول السورة لما نزل الى و لوالقي معاذيره صادف انه صلى الله عليه و سلم في تلك الحالة بادر الى تحفظ الذي نزل و حرك به لسانه من عجلته خشية من نقلته فنزل لا تحرك به لسانك لتعجل به الى قوله ثم ان علينا بيانه ثم عاد الكلام الى تكمله ما ابتدى به قال الفخر الرازي و نحوما لوالقى المدرس على الطالب مثلا مسألة فتشاغل الطالب بشيء عرض له فقال له الق الى بالك وتفهم ما اقول ثم كمل المسالة فمن لا يعرف السبب يقول ليس هذا الكلام مناسبة للمسالة بخلاف من عرف ذلك ومنها ان النفس لما تقدم ذكرها في اول السورة عدل الى ذكر نفس المصطفى كانه قيل هذا شان النفوس وانت يا محمد نفسك اشرف النفوس فلتاخذ باكمل الاحوال و من ذلك قوله تعالى يسالونك عن الاهلة الآية فقد يقال اي رابط بين احكام الاهلة و بين حكم اتيان البيوت و اجيب بانه من باب الاستطراد لما ذكر انها مواقيت للحج وكان هذا من افعالهم فى الحج كما ثبت في

تبين لك وجه النظم مفصلا بين كل آية و آيته في كل سورة و سورة انتهى تنبيه من الآيات ما اشكلت مناسبتها لما قبلها من ذلك قوله تعالى في سورة القيمة لا تحرك به لسانك الآيات فان وجه مناسبتها لاول السورة و آخرها غير جدا فان السورة كلها في احوال القيمة حتى زعم بعض الرافضة انه سقط من السورة شي و حتى ذهب القفال فيما حكاه الفخر الرازي انها نزلت فى الانسان المذكور قبل في قوله ينبأ الانسان يومئذ بما قدم و آخر قال يعرض عليه كتابه فاذا اخذ فى القرأة تلجلج خوفا فاسرع فى القرأة فيقال له لا تحرك به لسانك لتعجل به ان علينا ان يجمع عملك و ان نقرأ عليك فاذا قرأناه عليك فاتبع قرانه بالاقرار بانك فعلت ثم ان علينا بيان امر الانسان و ما يتعلق بعقوبته انتهى و هذا يخالف ما ثبت فى الصحيح انها نزلت في تحريك النبي صلى الله عليه وسلم لسانه حالة نزول الوحي عليه و قد ذكر الايمة لها مناسبات و منها انه تعالى لما ذكر القيمة و كان من شان من يقصر عن العمل لها حب العاجلة و كان من اصل الدين ان المبادرة الى افعال الخير مطلوبة فنبه على انه قد يعترض على هذا المطلوب ما هو اجل منه و هو الاصغاء الى الوحي و تفهم ما يرد منه و التشاغل بالحفظ قد يصد عن ذلك فامر بان لا يبادر الى التحفظ لان تحفيظه مضمون على ربه و ليصغ الى ما يرد عليه الى ان ينقضي فيتبع ما اشتمل عليه ثم لما انقضت الجملة المعترضة رجع الكلام الى ما يتعلق بالانسان المبداء بذكره و هو من جنسه فقال كلا و هي كلمة ردع كانه قال بل انتم يا بني آدم لكونكم خلقتم من عجل تعجلون في كل شي و من ثم تحبون العاجلة و منها ان عادة

ما في سورتى الاعراف و الشعراء من باب الاستطراد لا التخلص لعوده
فى الاعراف الى قصة موسى بقوله و من قوم موسى امة الى آخره
و فى الشعراء الى ذكر الانبياء و الامم و يقرب من حسن التخلص
الانتقال من حديث الى آخر تنشيطا للسامع مفصولا بهذا كقوله في
سورة صٓ بعد ذكر الانبياء هذا ذكر و ان للمتقين لحسن مآب فان هذا
القرآن نوع من الذكر لما انتهى ذكر الانبياء و هو نوع من التنزيل اراد ان
يذكر نوعا آخر و هو ذكر الجنة و اهلها ثم لما فرغ قال هذا و ان للطاغين
لشر مآب فذكر النار و اهلها قال ابن الاثير هذا في هذا المقام من
المفصل الذي هو احسن من الوصل و هي علاقة و كيدة بين الخروج
من كلام الى آخر و يقرب منه ايضا حسن الطلب قال الزنجاني
و الطيبي و هو ان يخرج الى الغرض تقدم الوسيلة كقوله اياك نعبد
و اياك نستعين قال الطيبي و ما اجتمع فيه حسن التخلص
و الطلب معا قاله تعالى حكاية عن ابراهيم فانهم عدو لي الا رب
العالمين الذي خلقني فهو يهدين الى قوله رب هب لي حكما
و الحقني بالصالحين قاعدة قال بعض المتاخرين الامر الكلى المفيد
لعرفان مناسبات الآيات في جميع القرآن هو انك تنظر الغرض الذي
سيقت له السورة و تنظر ما يحتاج اليه ذلك الغرض من المقدمات
و تنظر الى مراتب تلك المقدمات فى القرب و البعد من المطلوب
و تنظر عند انجرار الكلام فى المقدمات الى ما تستتبعه من استشراف
نسب السامع الى الاحكام و اللوازم التابعة له التي تقتضى البلاغة
شفاء العليل يدفع عنا الاستشراف الى الوقوف عليها فهذا هو الامر
الكلى المهيمن على حكم الربط بين جميع اجزاء القرآن فاذا فعلته

المقصود على وجه سهل يختلسه اختلاسا دقيق المعاني بحيث لا يشعر السامع بالانتقال من المعنى الاول الا و قد وقع عليه الثاني لشدة الالتيام بينهما و قد غلط ابو العلا محمد بن عاتم في قوله لم يقع منه في القرآن شئ لما فيه من التكلف و قال ان القرآن انما ورد على الاقتضاب الذي هو طريقة العرب من الانتقال الى غير ملائم و ليس كما قال ففيه من التخلصات العجيبة ما يحير العقول و انظر الى سورة الاعراف كيف ذكر فيها الانبياء و القرون الماضية و الامم السالفة ثم ذكر موسى الى ان قص حكاية السبعين رجلا و دعائة لهم و لسايرامته بقوله و اكتب لنا في هذه الدنيا حسنة و في الآخرة و جوابه تعالى عنه ثم تخلص بمناقب سيد المرسلين بعد تخلصه لامته بقوله قال عذابي اصيب به من اشأ و رحمتي وسعت كل شيء فساكبتها للذين من صفاتهم كيت وكيت و هم الذين يتبعون الرسول النبي الامي و اخذ من صفاته الكريمة و فضائله و في سورة الشعراء حكى قول ابراهيم و لا تخزني يوم يبعثون فتخلص منه الى وصف المعاد بقوله يوم لا ينفع مال و لا بنون الى آخره و في سورة الكهف حكى قول ذى القرنين في السد فاذا جاء وعد ربي جعله دكا و كان وعد ربي حقا فتخلص منه الى وصف حالهم بعد ذكر الذي هو من اشراط الساعة ثم النفخ في الصور و ذكر الحشر و وصف مال الكفار و المومنين و قال بعضهم الفرق بين التخلص و الاستطراد انك في التخلص تركت ما كنت فيه بالكلية و اقبلت على ما تحصلت اليه و في الاستطراد تمر بذكر الامر الذي استطردت اليه مرورا كالبرق الخاطف ثم تتركه و تعود الى ما كنت فيه كانك لم تقصده و انما عرض عروضا قال و بهذا يظهر ان

الخروج الخير من الظفر و النصر و الغنيمة و عز الاسلام فكذا يكون فيما فعله في القسمة فليطيعوا ما امروا به و يتركوا هوى انفسهم الثاني المضادة كقوله في سورة البقرة ان الذين كفروا سواء عليهم الآية فان اول السورة كان حديثا عن القرآن و ان من شانه الهداية للقوم الموصوفين بالايمان فلما اكمل وصف المومنين عقّب بحديث الكافرين فبينهما جامع وهمي بالتضاد من هذا الوجه و حكمته التشويق و الثبوت على الاول كما قيل و بضدها تبين الاشيا فان قيل هذا جامع بعيد لان كونه حديثا عن المومنين بالعرض لا بالذات و المقصود بالذات الذي هو مساق الكلام انما هو الحديث عن القرآن لانه مفتتح القول قيل لا يشترط في الجامع ذلك بل يكفي التعلق على ايّ وجه كان و يكفي في وجه الربط ما ذكرنا لان القصد تاكيد امر القرآن و العمل به و الحث على الايمان و لهذا لما فرغ من ذلك قال و ان كنتم في ريب مما نزلنا على عبدنا فرجع الى الاول الثالث الاستطراد كقوله تعالى يا بني آدم قد انزلنا عليكم لباسا يواري سواتكم و ريشا ولباس التقوى ذلك خير قال الزمخشري هذه الآية واردة على سبيل الاستطراد عقب ذكر بدو السوات و خصف الورق عليها اظهارا للمنة فيما خلق من اللباس و لما في العرى و كشف العورة من المهانة و الفضيحة و اشعارا بان الشر باب عظيم من ابواب التقوى و قد خرجت على الاستطراد قوله تعالى لن يستنكف المسيح ان يكون عبد الله و الملائكة المقربون فان اول الكلام ذكر للرد على النصارى الزاعمين بنوة المسيح ثم استطرد للرد على العرب الزاعمين بنوة الملائكة و يقرب من الاستطراد حتى لا يكاد ان يفترقان حسن التخلص و هو ان ينتقل مما ابتدى به الكلام الى

و يصير التاليف حاله حال البناء المحكم المتلائم الاجزاء فنقول ذكر الآية بعد الاخرى اما ان يكون ظاهر الارتباط لتعلق الكلام بعضه ببعض و عدم تمامه بالاولى فواضح وكك اذا كانت الثانية للاولى على وجه التاكيد او التفسير او الاعتراض او البدل و هذا القسم لا كلام فيه و اما ان لا يظهر الارتباط بل يظهر ان كل جملة مستقلة عن الاخرى و انها خلاف النوع المندوبة فاما ان تكون معطوفة على الاولى بحرف من حروف العطف المشتركة فى الحكم اولا فان كانت معطوفة فلابد ان يكون بينهما جهة جامعة على ما سبق تقسيمه كقوله تعالى يعلم ما يلج فى الارض و ما يخرج منها و ما ينزل من السماء وما يعرج فيها وقوله والله يقبض و يبسط و اليه ترجعون للتضاد بين القبض و البسط و الولوج و الخروج و النزول و العروج و شبه المتضاد بين السماء و الارض و مما العلاقة فيه التضاد ذكر الرحمة بعد ذكر العذاب و الرغبة بعد الرهبة و قد جرت عادة القرآن العظيم اذا ذكر احكاما ذكر بعدها وعدا و وعيدا ليكون باعثا على العمل بما سبق ثم يذكر آيات توحيد و تنزيه ليعلم عظم الامر و الناهي و تامل سورة البقرة و النساء و المائدة تجده كذلك و ان لم تكن معطوفة فلا بد من دعامة توذن باتصال الكلام و هي قرائن معنوية توذن بالربط و له اسباب احدها التنظير فان الحاق النظير بالنظير من شان العقلاء كقوله كما اخرجك ربك من بيتك بالحق عقب قوله اولئك هم المومنون حقا فانه تعالى امر رسوله ان يمضي لامره فى الغنايم على كره من اصحابه كما مضى لامره في خروجه من بيته لطلب الغير او للقتال و هم له كارهون و القصد ان كراهتهم لما فعله من قسمة الغنايم ككراهتهم للخروج و قد تبين فى

عن احسنه فان القرآن نزل في نيف و عشرين سنة في احكام مختلفة شرعت لاسباب مختلفة و ما كان كذلك لا يتاتى ربط بعضه ببض و قال الشيخ ولى الدين الملوي قدوهم من قال لا يطلب للآى الكريمة مناسبة لانها على حسب الوقايع المفرقة و فصل الخطاب انها على حسب الوقايع تنزيلا و على حسب الحكمة ترتيبا و تاصيلا فالمصحف على وفق ما فى اللوح المحفوظ مرتبه سوره كلها و آياته بالتوقيف كما انزل جمله الى بيت العزة و من المعجز البين اسلوبه و نظمه الباهر و الذي ينبغي في كل آية ان يبحث اول كل شئ عن كونها مكملة لما قبلها او مستقلة ثم المستقلة ما وجه مناسبتها لما قبلها ففي ذلك علم جم و هكذا فى السور بطلب وجه اتصالها بما قبلها و ما سيقت له انتهى و قال الامام الرازي في سورة البقرة و من تامل في لطايف نظم هذه السورة و في بدايع ترتيبها علم ان القرآن كما انه معجز بحسب فصاحة الفاظه و شرف معانيه فهو ايضا بسبب ترتيبه و نظم آياته و لعل الذين قالوا انه معجز بسبب اسلوبه ارادوا ذلك الا اني رايت جمهور المفسرين معرضعين عن هذ اللطايف غير متنبهين لهذه الاسرار و ليس الامر في هذا الباب الا كما قيل

و النجم تستبصر الابصار صورته و الذنب للطرف لا للنجم فى الصغر

فصـــل المناسبة فى اللغة المشاكلة و المقاربة و مرجعها فى الآيات و نحوها الى معني رابط بينهما عام او خاص عقلي او حسي او خيالي او غير ذلك من انواع العلاقات او التلازم الذهني كالسبب و المسبب و العلة و المعلول و النظيرين و الضدين و نحوه و فائدته جعل اجزاء الكلام بعضها اخذا باعناق بعض فيقوي بذلك الارتباط

في مناسبة الآيات و السور افرده بالتاليف العلامة ابو جعفر بن الزبير شيخ ابي حيان في كتاب سماه البرهان في مناسبة ترتيب سور القرآن و من اهل العصر الشيخ برهان الدين البقاعي في كتاب سماه نظم الدرر في تناسب الاى و السور و كتابى الذي صنفته في اسرار التنزيل كافل بذلك جامع لمناسبات السور و الآيات مع ما تضمنه من بيان جميع وجوه الاعجاز و اساليب البلاغة و قد لخصت منه مناسبات السور خاصة في جزء لطيف سميته تناسق الدرر في تناسب السور و علم المناسبة علم شريف قل اعتناء المفسرين به لدقته و ممن اكثر منه الامام فخر الدين فقال في تفسيره اكثر لطايف القرآن مودعة فى الترتيبات و الروابط و قال ابن العربي في سراج المريدين ارتباط آى القرآن بعضها ببعض حتى تكون كالكلمة الواحدة متسقة المعاني منتظمة المباني علم عظيم لم يتعرض له الا عالم واحد عمل فيه سورة البقرة ثم فتح الله لنا فيه فلما لم نجد له جملة و راينا الخلق باوصاف البطلة ختمنا عليه و جعلنا بيننا و بين الله و رددناه عليه و قال غيره اول من اظهر علم المناسبة الشيخ ابو بكر النيشابوري و كان عزيز العلم فى الشريعة و الادب و كان يقول على الكرسي اذا قرى عليه لم جعلت هذه الآية الى جنب هذه و ما الحكمة في جعل هذه السورة الى جنب هذه السورة وكان يزري على علماء بغداد لعدم علمهم بالمناسبة و قال الشيخ عز الدين بن عبد السلام المناسبة علم حسن لكن يشترط في حسن ارتباط الكلام ان يقع في امر متحد مرتبط اوله بآخره فان وقع على اسباب مختلفة لم يقع فيه ارتباط و من ربط ذلك فهو متكلف بما لا يقدر عليه الا بربط ركيك يصان عن مثله حسن الحديث فضلا

و مدحه و التهليل الذي ختمت به براة و تسليته عليه السلام التي ختم بها سورة يونس و مثلها خاتمة هود و وصف القرآن و مدحه الذي ختم به يوسف و الرد على من كذب الرسول الذي ختم به الرعد و من اوضح ما اذن بالختام خاتمة ابراهيم هذا بلاغ للناس الآية و مثلها خاتمة الاحقاف و كذا خاتمة الحجر بقوله و اعبد ربك حتى يا تيك اليقين و هو مفسر بالموت فانها في غاية البراعة و انظر الى سورة الزلزلة كيف بديت باهوال القيمة و ختمت بقوله فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره و من يعمل مثقال ذرة شرا يره و انظر الى براعاة اجزائه نزلت و هي قوله و اتقوا يوما ترجعون فيه الى الله و ما فيها من الاشعار بالآخرية المستلزمة للوفاة و كذا آخر سورة نزلت و هي سورة النصر فيها الاشعار بالوفاة كما اخرج البخاري من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس ان عمر سالهم عن قوله اذا جاء نصر الله و الفتح فقالوا فتح المداين و القصور قال ما تقول يا ابن عباس قال اجل ضرب لمحمد نعيت له نفسه و اخرج ايضا عنه قال كان عمر يدخلني مع اشياخ بدر فكان بعضهم وجد في نفسه فقال لم تدخل هذا معنا و لنا ابنأ مثله فقال عمر انه من قد علمتم ثم دعاهم ذات يوم فقال ماتقول في قول الله تعالى اذا جاء نصر الله و الفتح فقال بعضهم امرنا ان نحمد الله و نستغفره اذا جاء نصرنا و فتح علينا و سكت بعضهم فلم يقل شيئا فقال لي اكذلك تقول يا ابن عباس فقلت لا قال فما تقول قلت هو اجل رسول الله صلى الله عليه و سلم اعلمه له قال اذا جاء نصر الله و الفتح و ذلك علامة اجلك فسبح بحمد ربك و استغفره انه كان توابا فقال عمر لا اعلم الا ما تقول النوع الثاني والستون

ما يتعلق بالاخبار من قوله علم الانسان ما لم يعلم و لهذا قيل انها جديرة ان تسمى عنوان القرآن لان عنوان الكتاب يجمع مقاصده بعبارة وجيزة في اوله النوع الحادي و الستون في خواتم السور هي ايضا مثل الفواتح فى الحسن لانها آخر ما يقرع الاسماع فلهذا جاءت متضمنة للمعانى البديعة مع ايذان السامع بانتهاء الكلام حتى لا يبقى معه للنفوس تشوق الى ما يذكر بعد لانها بين ادعية و وصايا و فرايض و تحميد وتهليل و مواعظ و وعد و وعيد الى غير ذلك كتفصيل جملة المطلوب في خاتمة الفاتحة اذا المطلوب الاعلى الا يمان المحفوظ من المعاصى المسئية لغضب الله و الضلال ففصل جملة ذلك بقوله الذين انعمت عليهم و المراد المومنون و لذلك اطلق انعام ولم يقيده ليتناول كل انعام لان من انعم الله عليه بنعمة الا يمان فقد انعم الله عليه بكل نعمة لانها مستتبعة لجميع النعم ثم وصفهم بقوله غير المغضوب عليهم و لا الضالين يعنى انهم جمعوا بين النعم المطلقة و هي نعمة الايمان و بين السلامة من غضب الله و الضلال المستبين عن معاصيه و تعدي حدوده و كالدعاء الذي اشتملت عليه الاتيان من آخر سورة البقرة و كالوصايا التي ختمت بها سورة آل عمران و الفرائض التي ختمت بها سورة النساء و حسن الختم بها لما فيها من احكام الموت الذي هو آخر امر كل حي و لانها آخر ما نزل من الاحكام و كالتبجيل و التعظيم الذي ختمت به المائدة و كالوعد و الوعيد الذي ختمت به الانعام و كالتحريض على العبادة بوصف حال الملائكة الذي ختمت به الاعراف وكالحض على الجهاد وصلة الارحام الذي ختم به الانفال و كوصف الرسول

محمد بن صالح بن هاني ثنا الحسين بن فضل ثنا عفان بن مسلم عن الربيع بن صحيح عن الحسن قال انزل الله ماية و اربعة كتب اودع علومها في اربعة منها التوراة والانجيل والزبور والفرقان ثم اودع علوم التوراة والانجيل والزبور فى الفرقان ثم اودع علوم القرآن فى المفصل ثم اودع علوم المفصل في فاتحه الكتاب فمن علم تفسيرها كان كمن علم تفسير جميع الكتب المنزلة وقد وجه ذلك بان العلوم التي احتوى عليها القرآن و قامت بها الا ديان اربعة علم الاصول و مداره على معرفة الله و صفاته و اليه الاشارة برب العالمين الرحمن الرحيم و معرفة النبوات و اليه الاشارة بالذين انعمت عليهم و معرفة المعاد واليه الاشارة بمالك يوم الدين و علم العبادات واليه الاشارة باياك نعبد و علم السلوك و هو حمل النفس على الاداب الشرعية والانقياد لرب البرية واليه الاشارة باياك نستعين اهدنا الصراط المستقيم و علم القصص و هو الاطلاع على اخبار الامم السالفة و القرون الماضية ليعلم المطلع على ذلك سعادة من اطاع الله وشقاوة من عصاه واليه الاشارة بقوله صراط الذين انعمت عليهم غيرالمغضوب عليهم ولا الضالين فنبه فى الفاتحة على جميع مقاصد القرآن وهذا هو الغاية في براعة الاستهلال مع ما اشتملت عليه من الالفاظ الحسنة والمقاطع المستحسنة و انواع البلاغة و كذلك اول سورة اقرأ فانها مشتملة على نظير ما اشتملت عليه الفاتحة من براعة الاستهلال لكونها اول ما انزل من القرآن فان فيها الامر بالقراءة والبداة فيها باسم الله و فيه الاشارة الى علم الاحكام و فيها ما يتعلق بتوحيد الرب و اثبات ذاته و صفاته من صفة ذات و صفة فعل و في هذا الاشارة الى اصول الدين وفيها

و الانشقاق و الزلزلة و النصر السابع الامر في ست سور قل اوحي اقراء قل يا ايها الكافرون قل هو الله احد قل اعوذ المعوذتين الثامن الاستفهام في ست هل اتى عم يتساءلون هل اتاك الم نشرح الم تر ارايت التاسع الدعاء في ثلاث ويل للمطففين و ويل لكل همزة تبت العاشر التعليل في ليلاف قريش هكذا جمع ابو شامة قال و ما ذكرناه في قسم الدعاء يجوز ان يذكر مع الخبر و كذا الثناء كله خبر الاسبح فانه يدخل في قسم الامر و سبحان يتحمل الامر و الخبر ثم نظم ذلك في بيتين فقال

اثنى على نفسه سبحانه بثبو ت الحمد و السلب لما استفتح السورا
و الامر شرط الندا التعليل والقسم الدعاء حروف التهجي استفهم الخبرا

و قال اهل البيان من البلاغة حسن الابتدآء و هو ان يتانق في اول الكلام لانه اول ما يقرع السمع فان كان محررا اقبل السامع على الكلام و وعاه و الا اعرض عنه و لوكان الباقي في نهاية الحسن فينبغي ان يوتى فيه باعذب اللفظ و اجزله و ارقه و اسلسه و احسنه نظما و سبكا واضحة معني و اوضحه و اخلاه من التعقيد و التقديم و التاخير الملبس او الذي لا يناسب قالوا و قد اتت جميع فواتح السور على احسن الوجوه و ابلغها و اكملها كالتحميدات و حروف الهجاء و النداء و غير ذلك و من الابتداء الحسن نوع اخص منه يسمى براعة الاستهلال و هو ان يشتمل اول الكلام على ما يناسب الحال المتكلم فيه و يشير الى ما سيق الكلام لاجله و العلم الاسنى في ذلك سورة الفاتحة التي هي مطلع القرآن فانها مشتملة على جميع مقاصده كما قال البيهقي في شعب الايمان اخبرنا ابو القاسم بن حبيب ثنا

قال الكرماني في متشابه القرآن التسبيح كلمة استاثر الله بها فبدء بالمصدر في بني اسرائيل لانه الاصل ثم بالماضي في الحديد و الحشر لانه اسبق الزمانين ثم بالمضارع في الجمعة والتغابن ثم بالامر في الاعلى استيعابا لهذه الكلمة من جميع جهاتها الثاني حروف التهجي في تسع وعشرين سورة وقد مضى الكلام عليها مستوعبا في نوع المتشابه و ياتي الاتمام بمناسباتها في نوع المناسبات الثالث الندا في عشر سور خمس بنداء الرسول صلى الله عليه وسلم الاحزاب و الطلاق و التحريم و المزمل و المدثر وخمس بنداء الامة النساء و المائدة و الحج و الحجرات و الممتحنة الرابع الجمل الخبرية نحو يسالونك عن الانفال براءة من الله اتى امر الله اقترب للناس حسابهم قد افلح المومنون سورة انزلناها تنزيل الكتاب الذين كفروا انا فتحنا لك اقتربت الساعة الرحمن علم القرآن قد سمع الله الحاقة سال سائل انا ارسلنا نوحا لا اقسم في موضعين عبس انا انزلناه لم يكن القارعة الهاكم انا اعطيناك فتلك ثلاث و عشرون سورة الخامس القسم في خمس عشرة سورة اقسم فيها بالملائكة و هي و الصافات و سورتان بالافلاك البروج و الطارق و ست سور بلوازمها فالنجم قسم بالثريا و الفجر بمبدأ النهار و الشمس بآية النهار و الليل بشطر الزمان والضحى بشطر النهار و العصر بالشطر الآخر و بجملة الزمان و سورتان بالهوى الذي هو احد العناصر و الذاريات و المرسلات و سورة بالتربة التي هي منها ايضا و هي الطور و سورة بالنبات و هي و التين و سورة بالحيوان الناطق و هي و النازعات و سورة بالبهم و هي و العاديات السادس الشرط في سبع سور الواقعة و المنافقون و التكوير و الانفطار

ترنموا يلحقون الالف و الياء و النون لانهم ارادوا مد الصوت و يتركون ذلك اذا لم يترنموا و جاء القرآن على اسهل موقف و اعذب مقطع السادس حروف الفواصل اما متماثلة و اما متقاربة فالاولى مثل والطور و كتاب مسطور في رق منشور و البيت المعمور و الثاني مثل الرحمن الرحيم ملك يوم الدين قٓ و القرآن المجيد بل عجبوا ان جاء هم منذر منهم فقال الكافرون هذا شيء عجيب قال الامام فخرالدين وغيره و فواصل القرآن لا تخرج عن هذين القسمين بل تنحصر فى المتماثلة و المتقاربة قال و بهذا يترجح مذهب الشافعي على مذهب ابي حنيفة في عدة الفاتحة سبع آيات مع البسملة وجعل صراط الذين الى آخرها آية فان من جعل آخر الآية السادسة انعمت عليهم مردود بانه لا يشابه فواصل سائر آيات السورة لا بالمماثلة و لا بالمقاربة و رعاية التشابه فى الفواصل لازمة السابع كثر فى الفواصل التضمين و الايطاء لانهما ليسا بعيبين فى النثر و ان كانا بعيبين فى النظم فالتضمين ان يكون ما بعد الفاصلة متعلقا بها كقوله تعالى نحو و انكم لتمرون عليهم مصبحين و بالليل و الايطاء تكرار الفاصلة بلفظها كقوله تعالى فى الاسرا هل كنت الا بشرا رسولا و ختم بذلك الآيتين بعدها النوع الستون في فواتح السور افرده بالتاليف ابن ابى الاصبع في كتاب سماه الخواطر السوانح في اسرار الفواتح و انا الخص هنا ما ذكره مع زوائد من غيره اعلم ان الله سبحانه و تعالى افتتح سور القرآن بعشرة انواع من الكلام لا يخرج شئ من السور عنها الاول الثناء عليه تعالى والثناء قسمان اثباتٌ لصفات المدح ونفيٌ وتنزيه من صفات النقص فالاول التحميد في خمس سور و تبارك في سورتين والثاني التسبيح في سبع سور

فاذا هم مبصرون و اخوانهم يمدونهم فى الغي ثم لا يقصرون تنبيهات الاولى قال اهل البديع احسن السجع و نحوه ما تسارت قرائنه نحو في سدر مخضود و طلح منضود و ظل ممدود ويليه ما طالت قرينة الثانية نحو و النجم اذا هوى ما ضل صاحبكم و ما غوى و الثالثة نحو خذوه فغلوه ثم الجحيم صلوه ثم في سلسلة الآية و قال ابن الاثير الاحسن فى الثانية المساواة و الا فاطول قليلا و فى الثالثة ان يكون اطول و قال الخفاجي لا يجوز ان تكون الثانية اقصر من الاولى الثاني قالوا احسن السجع ما كان قصير الدلالته على قوة المنشي و اقله كلمتان نحو يا ايها المدثر قم فانذر الآيات و المرسلات عرفا الآيات و الداريات ذروًا الآيات و العاديات ضبحا الآيات و الطويل ما زاد عن العشر كغالب الآيات و بينهما متوسط كاية سورة القمر الثالث قال الزمخشري في كشافه القديم لا تحسن المحافظة على الفواصل لمجردها الا مع بقاء المعاني على سردها على المنهج الذي يقتضيه حسن النظم و التيامه فاما ان تهمل المعاني و يهتم بتحسين اللفظ وحده غير منظور فيه الى مواده فليس من قبيل البلاغة و بني على ذلك ان التقديم في و بالآخرة هم يوقنون ليس بمجرد الفاصلة بل لرعاية الاختصاص الرابع مبنى الفواصل على الوقف و لهذا ساغ مقابلة المرفوع بالمجرور و بالعكس كقوله انا خلقناهم من طين لازب مع قوله عذاب و اصب و شهاب ثاقب و قوله بماء منهمر مع قوله قد قدر و سحر مستمر و قوله و مالهم من دونه من وال مع قوله و ينشى السحاب الثقال الخامس كثير فى القرآن ختم الفواصل بحروف المد و اللين و الحاق النون و حكمته وجود التمكن من التطريب بذلك كما قال سيبويه انهم اذا

المستقيم فالكتاب و الصراط متوازنان و كذا المستبين و المستقيم و اختلفا
في الحرف الاخير فصـــل بقي نوعان بديعيان يتعلقان بالفواصل
احدهما التشريع و سماه ابن ابي الاصبع التوام و اصله ان يبني الشاعر
بيته على وزنين من أوزان العروض فاذا اسقط منها جزءا او جزءين
صار الباقي بيتا من وزن آخر ثم زعم قوم اختصاصه به و قال آخرون
بل يكون في النثر بان يبني على سجعتين لو اقتصر على الاولى
منهما كان الكلام تاما مفيدا و ان الحقت به السجعة الثانية كان في
التمام والافادة على حاله مع زيادة معنى ما زاد من اللفظ قال ابن ابي
الاصبع وقد جاء في هذا الباب معظم سورة الرحمن فان آياتها لو اقتصر
فيها على اولى الفاصلتين دون فبأيّ آلآء ربكما تكذبان لكان تاما
مفيدا و قد كمل بالثانية فافاد معنى زائدا من التقرير و التوبيخ قلت
التمثيل غير مطابق و الاولى ان يمثل بالآيات التي في اثنائها ما
يصلح ان تكون فاصلة كقوله لتعلموا ان الله على كل شئ قدير و ان
الله قد احاط بكل شئ علما و اشباه ذلك الثاني الاستلزام و يسمى
لزوم ما لا يلزم و هو ان يلتزم في الشعر او النثر حرف او حرفان فصاعدا
قبل الروي بشرط عدم الكلفة مثال التزام حرف فاما اليتيم فلا تقهر
و اما السائل فلا تنهر التزم الهاء قبل الراء و مثله الم نشرح لك
صدرك الآيات التزم فيها الراء قبل الكاف فلا اقسم بالخنس الجوار
الكنس التزم فيها النون المشددة قبل السين و الليل و ما وسق
و القمر اذا اتسق و مثال التزام حرفين و الطور و كتاب مسطور ما انت
بنعمة ربك بمجنون و ان لك لا جرا غير ممنون بلغت التراقي
و قيل من راق وظن انه الفراق و مثال التزام ثلثة احرف تذكروا

معنوية و ذلك لفظية كقوله تعالى ان الله اصطفى آدم الآية فان اصطفى يدل على ان الفاصلة العالمين لا باللفظ لان لفظ العالمين غير لفظ اصطفى و لكن بالمعنى لانه يعلم ان من لوازم اصطفى شيء ان يكون مختارا على جنسه و جنس هولاء المصطفين العالمون و كقوله و آية لهم الليل نسلخ الآية قال ابن ابى الاصبع فان من كان حافظا لهذه السورة متفطنا الى مقاطع ايها النون المردفة و سمع في صدر الآية انسلاخ النهار من الليل علم ان الفاصلة مظلمون لان من انسلخ النهار عن ليلة اظلم اي دخل فى الظلمة و لذلك سمى توشيحا لان الكلام لما دل اوله على آخره نزل المعنى منزلة الوشاح و نزل اول الكلام و آخره منزلة العاتق و الكشح اللذين يحول عليهما الوشاح و اما الايغال فتقدم في نوع الاطناب

فصل

قسّم البديعيون السجع و مثله الفواصل الى اقسام مطرف و متوازي و مرصع و متوازن و متماثل فالمطرف ان يختلف الفاصلتان فى الوزن و يتفقا في حروف السجع نحو ما لكم لا ترجون لله وقارا و قد خلقكم اطوارا و المتوازي ان يتفقا وزنا وتقفية ولم يكن فى الاولى متقابلا لما فى الثانية فى الوزن والتقفية نحو فيها سرر مرفوعة و اكواب موضوعة و المتوازن ان يتفقا فى الوزن دون التقفية نحو و نمارق مصفوفة و زرابي مبثوثة و المرصع ان يتفقا وزنا و تقفية و يكون ما فى الاولى مقابلا لما فى الثانية كك نحو ان ان الينا اياهم ثم ان علينا حسابهم ان الابرار لفي نعيم و ان الفجار لفي جحيم والمتماثل ان يتساويا فى الوزن دون التقفية و يكون افراد الاولى مقابلة لما فى الثانية فهو بالنسبة الى المرصع كالمتوازن بالنسبة الى المتوازي نحو و آتينا هما الكتاب المستبين و هدينا هما الصراط

و المغفرة عقب تسابيح الاشياء غير ظاهر في بادى الرأى و ذكر في حكمته انه لما كانت الاشياء كلها تسبح و لا عصيان في حقها و انتم تعصون ختم بها مراعاة للمقدر فى الآية و هو العصيان كما جاء فى الحديث لو لا بهائم رتع و شيوخ ركع و اطفال رضع لصب عليكم العذاب صبا و قيل التقدير حليما عن تفريط المسبحين غفورا لذنوبهم و قيل حليما عن المخاطبين الذين لا يفقهون التسبيح باهمالهم النظر فى الآية و العبر ليعرفوا حقه بالتامل فيما اودع في مخلوقاته مما يوجب تنزيهه التنبيه الثالث فى الفواصل ما لا نظير له فى القرآن كقوله عقب الامر بالغض في سورة النور ان الله خبير بما يصنعون و قوله عقب الامر بالدعاء و الاستجابة لعلهم يرشدون و قيل فيه تعريض بليلة القدر حيث ذكر ذلك عقب ذكر رمضان اي لعلهم يرشدون الى معرفتها و اما التصدير فهو ان يكون تلك اللفظة بعينها تقدمت في اول الآية و يسمى ايضا رد العجز على الصدر و قال ابن المعتز هو ثلثة اقسام الاول ان يوافق آخر الفاصلة آخر كلمة فى الصدر نحو انزله بعلمه و الملائكة يشهدون و كفى بالله شهيدا و الثاني ان يوافق اول كلمة منه نحو وهب لنا من لدنك رحمة انك انت الوهاب قال اني لعملكم من القالين الثالث ان يوافق بعض كلماته نحو و لقد استهزى برسل من قبلك فحاق بالذين سخروا منهم ما كانوا به يستهزؤن انظر كيف فضلنا بعضهم على بعض و للآخرة اكبر درجات و اكبر تفضيلا قال لهم موسى ويلكم لا تفتروا الى قوله و قد خاب من افترى فقلت استغفروا ربكم انه كان غفارا و اما التوشيح فهو ان يكون اول الكلام ما يستلزم القافية و الفرق بينه و بين التصدير ان هذا دلالة

و ليس كذلك فكان فى الوصف بالحكم احتراس حسن اي و ان تغفر لهم مع استحقاقهم العذاب فلا معترض عليك لاحد في ذلك و الحكمة فيما فعلته و نظير ذلك قوله في سورة التوبة اولئك سيرحمهم الله ان الله عزيز حكيم و في سورة الممتحنة و اغفر لنا ربنا انك انت العزيز الحكيم و في غافر ربنا و ادخلهم جنات عدن الى قوله انك انت العزيز الحكيم و فى النور و لو لا فضل الله عليكم و رحمته و ان الله تواب حكيم فان بادى الرأى يقتضي تواب رحيم لان الرحمة مناسبة للتوبة لكن عبر به اشارة الى فائدة مشروعية اللعان و حكمته و هى الستر عن هذه الفاحشة العظيمة و من خفي ذلك ايضا قوله في سورة البقرة هو الذي خلق لكم ما فى الارض جميعا ثم استوى الى السماء فسواهن سبع سموات و هو بكل شيء عليم وفي آل عمران قل ان تخفوا ما في صدوركم او تبدوه يعلمه الله و يعلم ما فى السموات و ما فى الارض و الله على كل شيء قدير فان المتبادر الى الذهن في آية البقرة الختم بالقدرة و في آية آل عمران الختم بالعلم و الجواب ان آية البقرة لما تضمنت الاخبار عن خلق الارض و ما فيها على حسب حاجات اهلها و منافعهم و مصالحهم و خلق السموات خلقا مستويا محكما من غير تفاوت و الخالق على الوصف المذكور يجب ان يكون عالما بما فعله كليا و جزئيا مجملا و مفصلا ناسب ختمها بصفة العلم و آية آل عمران لما كانت في سياق الوعيد على موالاة الكفار و كان التعبير بالعلم فيها كناية عن المجازاة بالعقاب و الثواب ناسب ختمها بصفة القدرة و من ذلك قوله تعالى و ان من شيء الا يسبح بحمده و لكن لا تفقهون تسبيحهم انه كان حليما غفورا فالختم بالحلم

لمن يشاء و من يشرك بالله فقد افترى اثما عظيما ثم اعادها و ختم بقوله و من يشرك بالله فقد ضل ضلالا بعيدا و نكتة ذلك ان الاولى نزلت فى اليهود وهم الذين افتروا على الله ما ليس في كتابه و الثانية نزلت فى المشركين ولا كتاب لهم و ضلالهم اشد و نظيره قوله فى المائدة و منه لم يحكم بما انزل الله فاولئك هم الكافرون ثم اعادها فقال فاولئك هم الظالمون ثم قال فى الثانية فاولئك هم الفاسقون و نكتته ان الاولى نزلت في احكام المسلمين و الثانية فى اليهود و الثالثة فى النصارى و قيل الاولى فيمن جحد ما انزل الله و الثانية فيمن خالفه مع علمه و لم ينكره و الثالثة فيمن خالفه جاهلا وقيل الكافر والظالم والفاسق كلها بمعنى واحد وهو الكفر عبر عنه بالفاظ مختلفة لزيادة الفائدة و اجتناب صورة التكرار و عكس هذا اتفاق الفاصلتين و المحدث عنه مختلف كقوله في سورة النور يا ايها الذين امنوا ليستأذنكم الذين ملكت ايمانكم الى قوله كذلك يبين الله لكم الآيات و الله عليم حكيم ثم قال و اذا بلغ الاطفال منكم الحلم فليستأذنوا كما استاذن الذين من قبلهم كذلك يبين الله لكم آياته و الله عليم حكيم التنبيه الثاني من مشكلات الفواصل قوله تعالى ان تعذبهم فانهم عبادك و ان تغفرلهم فانك انت العزيز الحكيم فان قوله و ان تغفر لهم يقتضي ان يكون الفاصلة الغفور الرحيم و كذا نقلت من مصحف ابي و بها قرأ ابن شنبوذ و ذكر في حكمته انه لا يغفر من استحق العذاب الا من ليس فوقه احد يرد عليه حكمه فهو العزيز اى الغالب و الحكيم هو الذي يضع الشئ في محله و قد يخفى وجه الحكمة على بعض الضعفاء في بعض الافعال فيتوهم انه خارج عنها

فناسب ختمه بقوله قليلا ما تؤمنون و اما مخالفة لنظم الكهان و الفاظ السجع فيحتاج الى تذكر و تدبر لان كلا منهما نثر فليست مخالفته له في وضوحها لكل احد كمخالفة الشعر و انما يظهر بتدبر ما فى القرآن من الفصاحة و البلاغة و البدائع و المعانى الانيقة فحسن ختمه بقوله قليلا ما تذكرون و من بديع هذا النوع اختلاف الفاصلتين في موضعين و المحدث عنه واحد لنكتة لطيفة كقوله تعالى في سورة ابراهيم وان تعدوا نعمة الله لا تحصوها ان الانسان لظلوم كفار ثم قال في سورة النحل و ان تعدوا نعمة الله لا تحصوها ان الله لغفور رحيم قال ابن المنير كانه يقول اذا حصلت النعم الكثيرة فانت اخذها و انا معطيها فحصل لك عند اخذها وصفان كونك ظلوما و كونك كفارا يعنى لعدم وفائك بشكرها و لي عند اعطائها وصفان و هما اني غفور رحيم اقابل ظلمك بغفراني و كفرك برحمتي فلا اقابل تقصيرك الا بالتوفير و لا اجارى جفاك الا بالوفاء و قال غيره انما خص سورة ابراهيم في مساق وصف الانسان و سورة النحل بوصف المنعم عليه و سورة النحل بوصف المنعم لان سورة ابراهيم في مساق صفات الله و اثبات الوهيته و نظيره قوله فى الجاثية من عمل صالحا فلنفسه و من اساء فعليها ثم الى ربكم ترجعون و في فصلت ختم بقوله و ما ربك بظلام للعبيد و نكتة ذلك ان قبل الآية الاولى قل للذين آمنوا يغفروا للذين لا يرجون ايام الله ليجزي قوما بما كانوا يكسبون فناسب الختام بفاصلة البعث لان قبله وصفهم بانكاره و اما الثانية فالختام بما فيها مناسب لانه لا يضيع عملا صالحا و لا يزيد على من عمل سيئا و قال في سورة النساء ان الله لا يغفر ان يشرك به و يغفر ما دون ذلك

من الاملاق مع وجود الرازق الحي الكريم و كذلك اتيان الفواحش لا يقتضيه عقل و كذا قتل النفس لغيظ او غضب فى القاتل فحسن بعد ذلك يعقلون و اما الثانية فلتعلقها بالحقوق المالية و القولية فان من علم ان له ايتاما يخلفهم من بعده لا يليق به ان يعامل ايتام غيره الا بما يجب ان يعامل به ايتامه و من يكتل او يزن او يشهد لغيره لو كان ذلك الامر له لم يجب ان يكون فيه خيانه و لا نجس و كذا من وعد او وعد لم يحب ان يخاف و من احب ذلك عامل الناس به ليعاملوه بمثله فترك ذلك انما يكون لغفلة عن تدبر ذلك و تامله فلذلك ناسب الختم بقوله لعلكم تذكرون و اما الثالثة فلان ترك اتباع شرائع الله الدينية مود الى غضبه و الى عقابه فحسن لعلكم تتقون اي عقاب الله بسببه و من ذلك قوله فى الانعام ايضا و هو الذي جعل لكم النجوم الآيات فانه ختم الاولى بقوله لقوم يعلمون و الثانية بقوله لقوم يفقهون و الثالثة بقوله يؤمنون و ذلك لان حساب النجوم والاهتداء بها يختص بالعلماء بذلك فناسب ختمه بيعلمون و انشاء الخلائق من نفس واحدة ونقلهم من صلب الى رحم ثم الي الدنيا ثم الى حيات و موت و النظر في ذلك و الفكر فيه ادق فناسب ختمه بيفقهون لان الفقه فهم الاشياء الدقيقة و لما ذكر ما انعم به على عباده من سعة الارزاق و الاقوات و الثمار و انواع ذلك ناسب ختمه بالايمان الداعي الى شكره تعالى على نعمه و من ذلك قوله تعالى و ما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون و لا بقول كاهن قليلا ما تذكرون حيث ختم الاولى بيؤمنون و الثانية بتذكرون و وجهه ان مخالفة القرآن لنظم الشعر ظاهرة واضحة لاتخفي على احد فقول من قال شعر كفر و عناد محض

تعالى عنه من وجهين احدهما ان تغيرات العالم السفلي مربوطة باحوال حركات الافلاك فتلك الحركات كيف حصلت فان كان حصولها بسبب افلاك اخرى لزم التسلسل و ان كان من الخالق الحكيم فذاك اقرار بوجود الآله تعالى و هذا هو المراد بقوله و سخر لكم الليل و النهار و الشمس و القمر و النجوم مسخرات بامره ان في ذلك لآيات لقوم يعقلون فجعل مقطع هذه الآية العقل و كانه قيل ان كنت عاقلا فاعلم ان التسلسل باطل فوجب انتهاء الحركات الى حركة يكون موجدها غير متحرك و هو الآله القادر المختار و الثاني ان نسبة الكواكب و الطبائع الى جميع اجزاء الورقة الواحدة و الجنة الواحدة واحدةٌ ثم انّا نرى الورقة الواحدة من الورد احد وجهيها في غاية الحمرة و الاخر في غاية السواد فلو كان المؤثر موجبا بالذات لا متنع حصول هذا التفاوت فى الآثار فعلمنا ان المؤثر قادر مختار و هذا هو المراد من قوله و ماذرا لكم فى الارض مختلفا الوانه ان في ذلك لآية لقوم يذكرون كانه قيل اذكر ما ترسخ في عقلك ان الواجب بالذات والطبع لا يختلف تاثيره فاذا نظرت حصول هذه الاختلاف علمت ان المؤثر ليس هو الطبائع بل الفاعل المختار فلهذا جعل مقطع الآية التذكر ومن ذلك قوله تعالى قل تعالوا اتل ما حرم ربكم عليكم الآيات فان الاولى ختمت بقوله لعلكم تعقلون و الثانية بقوله لعلكم تذكرون و الثالثة بقوله لعلكم تتقون لان الوصايا التي فى الآية الاولى انما تحمل على تركها عدم العقل الغالب على الهوى لان الاشراك بالله لعدم استكمال العقل الدال على توحيده و عظمته و كذلك عقوق الوالدين لا يقتضيه العقل لسبق احسانهما الى الولد بكل طريق و كذلك قتل الاولاد بالوأد

اللطف يناسب ما لا يدرك بالبصر و الخبر يناسب ما يدركه و قولو و لقد خلقنا الانسان من سلالة من طين الى قوله فتبارك الله احسن الخالقين فان هذه الفاصلة التمكين التام المناسب لما قبلها و قد بادر بعض الصحابة حين نزل اول الآية الى ختمها بها قبل ان يسمع آخرها فاخرج ابن ابي حاتم من طريق الشعبي عن زيد بن ثابت قال املي على رسول الله صلى الله عليه و سلم هذه الآية و لقد خلقنا الانسان من سلالة من طين الى قوله خلقا آخر قال معاذ بن جبل فتبارك احسن الخالقين فضحك رسول الله صلى الله عليه و سلم فقال له معاذ مم ضحكت يا رسول الله قال بها ختمت و حكى ان اعرابيا سمع قاريا يقرأ فان زللتم من بعد ما جاءتكم البينات فاعلموا ان الله عزيز حكيم و لم يكن يقرأ القرآن فقال ان كان هذا كلام الله فلا يقول كذا الحكيم لا يذكر الغفران عند الزلل لانه اعزاء عليه تنبيهات الاول قد تجتمع فواصل في موضع واحد و يخالف بينهما كاوايل النحل فانه تعالى بدأ بذكر الافلاك فقال خلق السموات و الارض بالحق ثم ذكر خلق الانسان من نطفة ثم خلق الانعام ثم عجائب النبات فقال هو الذي انزل من السماء ماء لكم منه شراب و منه شجر فيه تسيمون ينبت لكم به الزرع و الزيتون و النخيل و الاعناب و من كل الثمرات ان في ذلك لآية لقوم يتفكرون فجعل مقطع هذه الآية التفكر لانه استدلال بحدوث الانواع المختلفة من النبات على وجود الاله القادر المختار و لما كان هنا مظنة سوال و هو انه لم لا يجوز ان يكون المؤثر فيه طبائع الفصول و حركات الشمس و القمر و كان الدليل لا يتم الا بالجواب عن هذا السوال كان مجال التفكر و النظر التامل باقيا فاجاب

الثامن و الثلثون الجمع بين المجرورات نحو ثم لا تجد لک به علينا تبيعا فان الاحسن الفصل بينهما الا ان مراعاة الفاصلة اقتضت عدمه و تاخير تبيعا التاسع و الثلثون العدول عن صيغة المضى الى صيغة الاستقبال نحو فريق كذبتم و فريقا تقتلون و الاصل قتلتم الاربعون تغيير بينة الكلمة نحو وطور سينين و الاصل سيناء تنبيه قال ابن الصائغ لا يمتنع في توجيه الخروج عن الاصل الآيات المذكورة امور اخرى مع وجه المناسبة فان القرآن العظيم كما جاء فى الاثر لا تنقضي عجائبه

فصـــل قال ابن ابى الاصبع لا يخرج فواصل القرآن عن احد اربعة اشياء التمكين و التصدير و التوشيح و الايغال فالتمكين و يسمى ايتلاف القافية ان يمهد الناثر للقرينة او الشاعر للقافية تمهيدا تاتي به القافية او القرينة متمكنة في مكانها مستقرة في قرارها مطمينة في موضعها غير نافرة و لا قلقة متعلقا معناها بمعنى الكلام كله تعلقا تاما بحيث لو طرحت لاختل المعنى و اضطرب الفهم و بحيث لو سكت عنها كمله السامع بطبعه و من امثلة ذلك يا شعيب اصلواتك تأمرك ان نترك الآية فانه لما تقدم فى الآية ذكر العبادة و تلاه ذكر التصرف فى الاموال اقتضي ذلك ذكر الحلم و الرشد على الترتيب لان الحلم يناسب العبادات و الرشد يناسب الاموال و قوله او لم يهد لهم كم اهلكنا من قبلهم من القرون يمشون في مساكنهم ان في ذلک لآيات ا فلا يسمعون او لم يروا انا نسوق الماء الى قوله ا فلا يبصرون فاتى فى الآية الاولى بيهد لهم و ختمها بيسمعون لان الموعظة فيها مسموعة وهي اخبار القرون و فى الثانية بيروا و ختمها بيبصرون لانها مرئية و قوله لا تدركه الابصار و هو يدرک الابصار و هو اللطيف الخبير فان

لاجل الفاصلة ثم قال و هذا غير بعيد قال وانما عاد الضمير بعد ذلك بصيغة التثنية مراعاة للفظ و هذا هو الثالث والعشرون والرابع والعشرون الاستغنا بالجمع عن الافراد نحو لا بيع فيه و لا خلال اي و لا خلة كما في الآية الاخرى و جمع مراعاة للفاصلة الخامس و العشرون اجزاء غير العاقل مجرى العاقل نحو رأيتهم لي ساجدون كل في فلك يسبحون السادس و العشرون امالة ما لا يمال كآي طه و النجم السابع و العشرون الاتيان بصيغة المبالغة كقدير و عليم مع ترك ذلك في نحو هو القادر و عالم الغيب و منه ما كان ربك نسيا الثامن و العشرون ايثار بعض اوصاف المبالغة على بعض نحو ان هذا الشيء عجاب اوثر على عجيب لذلك التاسع و العشرون الفصل بين المعطوف والمعطوف عليه نحو و لولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما و اجل مسمى الثلثون ايقاع الظاهر موقع المضمر نحو و الذين يمسكون بالكتاب و اقاموا الصلوة انا لا نضيع اجر المصلحين و كذا آية الكهف الحادي و الثلثون وقوع مفعول موقع فاعل كقوله حجابا مستورا كان وعده ماتيا اي ساترا و آتيا الثاني والثلثون وقوع فاعل موقع مفعول نحو عيشة راضية ماء دافق الثالث و الثلثون الفصل بين الموصوف و الصفة نحو اخرج المرعى فجعله غثاء احوى ان اعرب احوى صفة المرعى اي حالا الرابع و الثلثون ايقاع حرف مكان غيره نحو بان ربك اوحى لها و الاصل اليها الخامس و الثلثون تاخير الوصف غير الابلغ عن الابلغ و منه الرحمن الرحيم رؤف رحيم لان الرأفة ابلغ من الرحمة السادس و الثلثون حذف الفاعل و نيابة المفعول نحو و ما لاحد عنده من نعمة تجزى السابع و الثلثون اثبات هاء السكت نحو ماليه سلطانيه ماهيه

غير الوجه الذي اورد نظيرها من الجملة الاخرى نحو اولئك الذين صدقوا و اولئك هم المتقون السابع عشر ايثار اعراب اللفظين نحو قسمة ضيزي ولم يقل جائزة لينبذن فى الحطمة و لم يقل جنهم او النار و قال فى المدثر ساصليه سقر و في سال انها لظى و فى القارعة فامه هاوية لمراعاة فواصل كل سورة الثامن عشر اختاص كل من المشركين بموضع نحو و ليذكر اولو الالباب و في سورة طه ان في ذلك لآيات لاولى النهي التاسع عشر حذف المفعول نحو فاما من اعطى واتقى ما ودعك ربك و ما قلى و منه حذف متعلق افعل التفضيل نحو يعلم السر و اخفى خير و ابقى العشرون الاستغناء بالافراد عن التثنية نحو فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى الحادي و العشرون الاستغناء به عن الجمع نحو و اجعلنا للمتقين اماما و لم يقل ائمة كما قال و جعلناهم ائمة يهدون ان المتقين في جنات و نهر اي انهار الثاني و العشرون الاستغناء بالتثنية عن الافراد نحو و لمن خاف مقام ربه جنتان قال الفراء اراد جنة كقوله فان الجنة هى الماوى فثنى لاجل الفاصلة قال و القوافي تحتمل من الزيادة و النقصان ما لا يحتمله سائر الكلام و نظير ذلك قول الفراء ايضا في قوله اذانبعث اشقاها انهما رجلان قدر اواخر معه و لم يقل اشقياها للفاصلة و قد انكر ذلك ابن قتيبة و اغلظ فيه و قال انما يجوز في رؤس الآى زيادة هاء السكت او الالف او حذف همز او صرف فاما ان يكون الله وعد جنتين فيجعلهما جنة واحدة لاجل رؤس الآى معاذ الله و كيف هذا و هو يصفهما بصفات الاثنين قال ذواتا افنان ثم قال فيهما فيهما و اما ابن الصائغ فانه نقل عن الفراء انه اراد جنات فاطلق الاثنين على الجمع

يوم القيمة كتابا يلقاه منشورا السادس حذف ياء المنقوص المعرف نحو الكبير المتعال يوم التناد السابع حذف ياء الفعل غير المجزوم نحو و الليل اذا يسر الثامن حذف ياء الاضافة نحو فكيف كان عذابي و نذر فكيف كان عقاب التاسع زيادة حرف المد نحو الظنونا و الرسولا والسبيلا و منه ابقاؤه مع الجازم نحو لا تخاف دركا ولا تخشى سنقرؤك فلا تنسى على القول بانه نهي العاشر صرف ما لا ينصرف نحو قواريرا قواريرا الحادي عشر ايثار تذكير اسم الجنس كقوله اعجاز نخل منقعر الثاني عشر ايثار تانيثه نحو اعجاز نخل خاوية ونظيره هذين قوله في القمر و كل صغير و كبير مستطر و في الكهف لا يغادر صغيرة و لا كبيرة الا احصاها الثالث عشر الاقتصار على احد الوجهين الجايزين اللذين قرئ بهما في السبع في غير ذلك كقوله فاولئك تحرّوا رشدا و لم يجئ رشدا في السبع و كذا و هئ لنا من امرنا رشدا لان الفواصل في الصورتين محركة الوسط و قد جاء في و ان يروا سبيل الرشد و بهذا يبطل ترجيح الفارسي قرأة التحريك بالاجماع عليه فيما تقدم و نظير ذلك قرأة تبت يدا ابي لهب بفتح الهاء و سكونها و لم يقرأ سيصلى نارا ذات لهب الا بالفتح لمراعاة الفاصلة الرابع عشر ايراد الجملة التي يرد بها ما قبلها على غير وجه المطابقة في الاسمية و الفعلية كقوله تعالى و من الناس من يقول آمنا بالله و باليوم الآخر و ما هم بمؤمنين لم يطابق بين قولهم آمنا و بين ما رد به فيقول و لم يؤمنوا او وما آمنوا لذلك الخامس عشر ايراد احد القسمين غير مطابق للآخر كذلك نحو و ليعلمن الله الذين صدقوا و ليعلمن الكاذبين و لم يقل الذين كذبوا السادس عشر ايراد احد جزئي الجملتين على

لا يستعمل في جملة الكلام وان لا يخلى الكلام منه جملة و انه يقبل منه ما اجتلبه الخاطر عفوا بلا تكلف قال و كيف يعاب السجع على الاطلاق و انما نزل القرآن على اساليب الفصيح من كلام العرب فوردت الفواصل فيه بازاء ورود الاسجاع في كلامهم و انما لم يجئ على اسلوب واحد لانه لا يحسن فى الكلام جميعا ان يكون مستمرا على نمط واحد لما فيه من التكلف و لما فى الطبع من الملل و لان الافتنان في ضروب الفصاحة اعلى من الاستمرار على ضرب واحد فلهذا وردت بعض آى القرآن متماثلة المقاطع و بعضها غير متماثل فصل الف الشيخ شمس الدين ابن الصائغ الحنفي كتابا سماه احكام الرأى في احكام الاى قال فيه اعلم ان المناسبة امر مطلوب فى اللغة العربية يرتكب لها امور من مخالفة الاصول قال و لهذا قد تتبعت الاحكام التي وقعت في آخر الاى مراعاة للمناسبة فعبرت منها على نيف عن الاربعين حكما احدها تقديم المعمول اما على العامل نحوا هولاء اياكم كانوا يعبدون قيل و منه اياك نستعين او على معمول آخر اصله التقديم نحو لنريك من آياتنا الكبرى اذا اعربنا الكبرى مفعول نرى او على الفاعل نحو و لقد جاء آل فرعون النذر و منه تقديم خبر كان على اسمها نحو ولم يكن له كفوا احد الثاني تقديم ما هو متاخر فى الزمان نحو فلله الآخرة و الاولى و لو لا مراعاة الفواصل لقدمت الاولى كقوله له الحمد فى الاولى و الآخرة الثالث تقديم الفاضل على الافضل نحو برب هارون و موسى و تقدم ما فيه الرابع تقديم الضمير على مايفسره نحو فاوجس في نفسه خيفة موسى الخامس تقديم الصفة الجملة على الصفة المفرد نحو و نخرج له

قول الرماني ان السجع عيب و الفواصل بلاغة غلطٌ فانه ان اراد بالسجع ما يتبع المعنى و هو غير مقصود فذلك بلاغة و الفواصل مثله و ان اراد به ما تقع المعاني تابعة له و هو مقصود بتكلف فذلك عيب و الفواصل مثله قال و اظن الذي دعاهم الى تسمية كل ما فى القرآن فواصل و لم يسموا ماتما ثلث حروفه سجعا رغبتهم في تنزيه القرآن عن الوصف اللاحق بغيره من الكلام المروي عن الكهنة و غيرهم و هذا غرض فى التسمية قريب و الحقيقة ما قلناه قال و التحرير ان الاسجاع حروف متماثلة في مقاطع الفواصل قال فان قيل اذا كان عندكم ان السجع محمود فهلا ورد القرآن كله مسجوعا و ما الوجه في ورود بعضه مسجوعا و بعضه غير مسجوع قلنا ان القرآن نزل بلغة العرب و على عرفهم و عادتهم و كان الفصيح منهم لا يكون كلامه كله مسجوعا لما فيه من امارات التكلف و الاستكراه لا سيما مع طول الكلام فلم يرد كله مسجوعا جريا منه على عرفهم فى اللطيفة الغالبة من كلامهم و لم يخل من السجع لانه يحسن في بعض الكلام على الصفة السابقة و قال ابن النفيس يكفى في حسن السجع ورود القرآن به قال و لا يقدح في ذلك خلوه في بعض الآيات لان الحسن قد يقضى المقام الانتقال الى احسن منه و قال حازم من الناس من يكره تقطيع الكلام الى مقادير متناسبة الاطراف غير متقاربة فى الطول و القصر لما فيه من التكلف الا ما يقع به الاتمام فى النادر من الكلام و منهم من يرى ان التناسب الواقع بافراغ الكلام في قوالب التقفية و تحليتها بمناسبات المقاطع اكيد جدا و منهم و هو الوسط من يرى ان السجع و ان كان زينة للكلام فقد يدعوا الى التكلف فرأى ان

قال و للسجع منهج محفوظ و طريق مضبوط من اخل به وقع الخلل في كلامه و نسب الى الخروج عن الفصاحة كما ان الشاعر اذا خرج عن الوزن المعهود كان مخطئا و انت ترى فواصل القرآن متفاوتة بعضها متداني المقاطع و بعضها تمتد حتى يتضاعف طوله عليه و ترد الفاصلة في ذلك الوزن الاول بعد كلام كثير و هذا في السجع غير مرضي و لا محمود و قال و اما ما ذكروه من تقديم موسى على هارون في موضع و تاخيره عنه في موضع لمكان السجع و تساوي مقاطع الكلام فليس بصحيح بل القاعدة فيه اعادة القصة الواحدة بالفاظ مختلفة تودى معني واحدا و ذلك من الامر الصعب الذي تظهر فيه الفصاحة و تبين فيه البلاغة و لهذا اعيدت كثير من القصص على ترتيبات متفاوته تنبيها بذلك على عجزهم عن الاتيان بمثله مبتدأ به ومتكررا ولو امكنتهم المعارضة لقصدوا تلك القصة وعبروا عنها بالفاظ لهم تودى الى تلك المعاني و نحوها فعلى هذا القصد بتقديم بعض الكلمات على بعض و تاخيرها اظهار الاعجاز دون السجع الى ان قال فبان ان الحروف الواقعة في الفواصل متناسبة موقع النظائر التي تقع في الاسجاع لا تخرجها عن حدها و لا تدخلها في باب السجع و قد بينا انهم يذمون كل سجع خرج عن اعتدال الاجزاء فكان بعض مصاريعه كلمتين و بعضها اربع كلمات و لا يرون ذلك فصاحة بل يرونه عجزا فلو فهموا اشتمال القرآن على السجع لقالوا نحن نعارضه بسجع معتدل فزيد في الفصاحة على طريقة القرآن انتهى كلام القاضي في كتاب الاعجاز و نقل صاحب عروس الافراح عنه انه ذهب في الانتصار الى جواز تسمية الفواصل سجعا و قال الخفاجي في سر الفصاحة

اقوى ما استدلوا به الاتفاق على ان موسى افضل من هارون و لمكان السجع قيل في موضع هارون و موسى و لما كانت الفواصل في موضع آخر بالواو و النون قيل موسى و هارون قالوا و هذا يفارق امر الشعر لانه لا يجوز ان يقع فى الخطاب الا مقصودا اليه و اذا وقع غير مقصود اليه كان دون القدر الذي نسميه شعرا و ذلك القدر مما يتفق وجوده من المفحم كما يتفق وجوده من الشاعر و اما ما جاء فى القرآن من السجع فهو كثير لا يصح ان يتفق كله غير مقصود اليه و بنوا الامر في ذلك على تحديد معنى السجع فقال اهل اللغة هو موالات الكلام على حد واحد و قال ابن ورید سجعت الحمامة معناه رددت صوتها قال القاضي و هذا غير صحيح و لو كان القرآن سجعا لكان غير خارج عن اساليب كلامهم و لو كان داخلا فيها لم يقع بذلك اعجاز و لو جاز ان يقال هو سجع معجز لجاز ان يقولوا شعر معجز و كيف و السجع مما كان يألفه الكهان من العرب و نفيه من القرآن اجدر بان يكون حجة من نفي الشعر لان الكهانة تنافى النبوات بخلاف الشعر و قد قال صلى الله عليه و سلم اسجع كسجع الكهان فجعله مذموما قال و ما توهموا انه سجع باطل لان مجيئه على صورته لا يقتضي كونه هو لان السجع يتبع المعنى فيه اللفظ الذي يودى السجع و ليس كذلك ما اتفق مما هو في معنى السجع من القرآن لان اللفظ وقع فيه تابعا للمعنى و فرق بين ان ينتظم الكلام في نفسه بالفاظه التي تودى المعنى المقصود منه و بين ان يكون المعنى منتظما دون اللفظ و متى ارتبط المعنى بالسجع كان افادة السجع كافادة غيره و متى انتظم المعنى بنفسه دون السجع كان مستجابا لتحسين الكلام دون تصحيح المعنى

لا يشاكل طرفيه و على ترك عد افغير دين الله يبغون افحكم الجاهلية يبغون وعدوا نظائرها للمناسبة نحو لاولى الالباب بآل عمران و على الله كذبا بالكهف و السلوى بطه و قال غيره تقع الفاصلة عند الاستراحة فى الخطاب لتحسين الكلام بها و هى الطريقة التي يبائن القرآن بها سائر الكلام و تسمى فواصل لانه ينفصل عنده الكلامان و ذلك ان آخر الآية فصل مابينها و بين ما بعدها و اخذا من قوله تعالى كتاب فصلت آياته ولا يجوز تسميتها قوافي اجماعا لان الله تعالى لما سلب عنه اسم الشعر وجب سلب القافية عنه ايضا لانها منه و خاصة به فى الاصطلاح و كما يمتنع استعمال القافية فيه يمتنع استعمال الفاصلة فى الشعر لانها صفة لكتاب الله فلا تتعداه و هل يجوز استعمال السجع فى القرآن خلاف الجمهور على المنع لان اصله من سجع الطير فشرف القرآن ان يستعار لشيء منه لفظ اصله مهمل ولاجل تشريفه عن مشاركة غيره من الكلام الحادث في وصفه بذلك و لان القرآن من صفاته تعالى فلا يجوز وصفه بصفة لم يرد الاذن بها و قال الرماني في اعجاز القرآن ذهب الاشعرية الى امتناع ان يقال فى القرآن سجع و فرقوا بان السجع هو الذي يقصد في نفسه ثم يحال المعنى عليه و الفواصل التي تتبع المعاني و لا يكون مقصودة في نفسها قال ولذلك كانت الفواصل بلاغه والسجع عيبا وتبعه على ذلك القاضي ابوبكر الباقلاني و نقله عن نص ابى الحسن الاشعري و اصحابنا كلهم قال و ذهب كثير من غير الاشاعرة الى اثبات السجع فى القرآن و زعموا ان ذلك مما يبين به فضل الكلام و انه من الاجناس التي تقع بها التفاضل فى البيان و الفصاحة كالجناس و الالتفات و نحو هما قال

يكون رأس آية و غير رأس و كذلك الفواصل يكون رؤس آى وغيرها
و كل رأس آية فاصلة و ليس كل فاصلة رأس آية قال و لاجل كون
معنى الفاصلة هذا ذكر سيبويه في تمثيل القوا في يوم يأت وما كنا
نبغ و ليسا رأس آية باجماع مع اذا يسر و هو رأس آية باتفاق وقال
الجعبري لمعرفة الفواصل طريقان توقيفي و قياسي اما التوقيفي فما
ثبت انه صلى الله عليه و سلم وقف عليه دائما تحققنا انه فاصلة
و ما وصله دائما تحققنا انه ليس بفاصلة و ما وقف عليه مرة و وصله
اخرى احتمل الوقف ان يكون لتعريف الفاصلة او لتعريف الوقف
التام او للاستراحة و الوصل ان يكون غير فاصلة او فاصلة وصلها لتقدم
تعريفها و اما القياسي فهو ما الحق من المحتمل غير المنصوص
بالمنصوص لمناسب ولا محذور في ذلك لانه لا زيادة فيه و لا نقصان
و انما غايته انه محل فصل او وصل و الوقف على كل كلمة جائز
و وصل القرآن كله جائز فاحتاج القياس الى طريق تعرفه فنقول
فاصلة الآية كقرينة السجعة فى النثر و قافية البيت فى الشعر و ما
يذكر من عيوب القافية من اختلاف الحد و الاشباع و التوجيه فليس
بعيب فى الفاصلة و جاز الانتقال فى الفاصلة و القرينة و قافية
الارجوزة من نوع الى آخر بخلاف قافية القصيدة و من ثم ترى يرجعون
مع عليم و الميعاد مع الثواب و الطارق مع الثاقب و الاصل فى الفاصلة
و القرينة المتجردة فى الآية و السجعة المساواة و من ثم اجمع العادون
على ترك عدو يأت بآخرين و لا الملائكة المقربون فى النساء و كذب
بها الاولون بسبحان و المبشر به المتقين بمريم و لعلهم يتقون بطه و من
الظلمات الى النور و ان الله على كل شئ قدير بالطلاق حيث

وغيض الماء فانه عبربه عن معان كثيرة لان الماء لا يغيض حتى يقلع مطر السماء و يبلع الارض ما يخرج منها من عيون الماء فينقص الحاصل على وجه الارض من الماء و الارداف في و استوت و التمثيل في و قضى الامر و التعليل فان غيض الماء علة الاستواء و صحة التقسيم فانه استوعب اقسام الماء حالة نقصه اذليس الا احتباس ماء السماء و الماء النابع من الارض و غيض الماء الذي على ظهرها و الاحتراس فى الدعاء لئلا يتوهم ان الغرق لعمومه شمل من لايستحق الهلاك فان عدله تعالى يمنع ان يدعو على غير مستحق و حسن النسق وايتلاف اللفظ مع المعنى والايجاز فانه تعالى قص القصة مستوعبة باخصر عبارة و التسهيم لان اول الآية يدل على آخرها و التهذيب لان مفرداتها موصوفة بصفات الحسن كل لفظة سهلة مخارج الحروف عليها رونق الفصاحة مع الخلو من البشاعة وعقادة التركيب و حسن البيان من جهة ان السامع لا يتوقف في فهم معنى الكلام ولا يشكل عليه شيء و التمكين لان الفاصلة مستقرة في محلها مطمينة في مكانها غير قلقلة ولا مستدعاة و الانسجام هذا ما ذكره ابن ابى الاصبع قلت و فيها ايضا الاعتراض النوع التاسع و الخمسون في فواصل الآى الفاصلة كلمة آخر الآية كقافية الشعر و قرينة السجع و قال الداني كلمة آخر الجملة قال الجعبري و هو خلاف المصطلح ولا دليل له في تمثيل سيبويه بيوم يأت وما كنا نبغ و ليسا رأس آية لان مراده الفواصل اللغوية لا الصناعية و قال القاضي ابو بكر الفواصل حروف متشاكلة فى المقاطع يقع بها افهام المعاني وفرق الداني بين الفواصل ورؤس الآى فقال الفاصلة هى الكلام المنفصل عما بعده و الكلام المنفصل قد

ان ابنک سرق فانه قرئي ان ابنك سرق ولم يسرق فاتي بالكلام على الصحة بابدال ضمة من فتحة و تشديد فى الراء و كثرتها المراجعة قال ابن ابي الاصبع هي ان يمكن المتكلم مراجعة فى القول جرت بينه و بين مجاوره باوجز عبارة و اعدل سک و اعذب الفاظ و منه قوله تعالى قال اني جاعلك للناس اما ما قال و من ذريتي قال لاينال عهدى الظالمين جمعت هذه القطعة وهي بعض آية ثلاث مراجعات فيها معانى الكلام من الخبر و الاستخبار و الامر و النهي و الوعد و الوعيد بالمنطوق والمفهوم قلت احسن من هذا ان يقال جمعت الخبر و الطلب و الاثبات و النفي و التاكيد و الحذف و البشارة و النذارة و الوعد و الوعيد النزاهة هي خلوس الفاظ الهجاء من الفحش حتى يكون كما قال ابو عمرو بن العلا و قد سئل عن احسن الهجاء هو الذي اذا انشدته العذراء في خدرها لا يقبح عليها و منه قوله تعالى و اذا دعوا الى الله و رسوله ليحكم بينهم اذا فريق منهم معرضون ثم قال آ في قلوبهم مرض ام ارتابوا ام يخافون ان يخيف الله عليهم و رسوله بل اولئك هم الظالمون فان الفاظ ذم هولاء المخبر عنهم بهذا الخبر اتت منزهة عما يقع فى الهجاء من الفحش و سائر هجاء القران كذلك الابداع بالباء الموحدة هو ان يشتمل الكلام على عدة ضروب من البديع قال ابن ابى الاصبع ولم ارفى الكلام مثل قوله تعالى وقيل يا ارض ابلعي ماءک الآية فان فيها عشرين ضربا من البديع و هي سبع عشرة لفظة و ذلک المناسبة التامة في ابلعي واقلعي والاستعارة فيهما والطباق بين الارض والسماء والمجاز في قوله يا سماء فان الحقيقة يامطر السماء و الاشارة في

و الاستغناء و التصديق و التكذيب و اليسرى و العسرى و لما جعل التيسير فى الاول مشتركا بين الاعطاء و الاتقاء و التصديق جعل ضده وهو التعسير مشتركا بين اضدادها وقال بعضهم المقابلة اما لواحد بواحد وذلك قليل جدا كقوله لا تأخذه سنة و لا نوم او اثنين باثنين كقوله فليضحكوا قليلا و ليبكوا كثيرا او ثلاثة بثلاثة كقوله يأمرهم بالمعروف و ينهاهم عن المنكر و يحل لهم الطيبات و يحرم عليهم الخبائث و اشكروا لي و لا تكفرون او اربعة باربعة كقوله فاما من اعطى الآيتين او خمسة بخمسة كقوله ان الله لا يستحيى الآيات قابل بين بعوضة فما فوقها و بين فاما الذين آمنوا و اما الذين كفروا و بين يضل و يهدى و بين ينقضون ميثاقه و بين يقطعون و ان يوصل او ستة بستة كقوله زين للناس حب الشهوات الآية ثم قال قل اؤنبئكم الآية قابل الجنات و الانهار و الخلد والازواج والتطهير و الرضوان بازاء النساء والبنين والذهب والفضة والخيل المسومة و الانعام و الحرث و قسم آخر المقابلة الى ثلاثة انواع نظيري و نقيضي و خلافي مثال الاول مقابل السنة بالنوم فى الآية الاولى فانهما جميعا من باب الرقاد المقابل باليقظة في آية و تحسبهم ايقاظا وهم رقود و هذا مثال الثاني فانهما نقيضان و مثال الثالث مقابلة الشر بالرشد في قوله و انا لا ندرى اشر اريد بمن فى الارض ام اراد بهم ربهم رشدا فانهما خلافان لا نقيضان فان نقيض الشر الخير و الرشد الغى

المواربة براء مهملة و باء موحدة ان يقول المتكلم قولا يتضمن ما ينكر عليه فاذا حصل الانكار استحضر بحذقه وجها من الوجوه يتخلص به اما بتحريف كلمة اوتصحيفها او زيادة او نقص قال ابن ابى الاصبع ومنه قوله تعالى حكاية عن اكبر اولاد يعقوب ارجعوا الى ابيكم فقولوا يا ابانا

فلا تخشو الناس و اخشوني و من امثلة المعنوي ان انتم الا تكذبون قالوا ربنا يعلم انا اليكم لمرسلون معناه ربنا يعلم انا لصادقون جعل لكم الارض فراشا و السماء بناء قال ابو على الفارسي لما كان البناء رفعا للمبني قوبل للفراش الذي هو خلاف البناء و منه نوع يسمى الطباق الخفي كقوله مما خطاياهم اغرقوا فادخلوا نارا لان الغرق من صفات الماء فكانه جمع بين الماء و النار قال ابن منقذ و هي اخفاء مطابقة فى القرآن و قال ابن المعتز من املح الطباق و اخفاه قوله تعالى ولكم فى القصاص حيوة لان معنى القصاص القتل فصار القتل سببا لحيوة و منه نوع يسمى ترصيع الكلام و هو اقتران الشيء بما يجتمع معه في قدر مشترك كقوله ان لك ان لا تجوع فيها و لا تعرى و انك لا تظمأ فيها و لا تضحى جاء بالجوع مع العرى و بابه ان يكون مع الظمأ و بالضحى مع الظمأ و بابه ان يكون مع العرى لكن الجوع و العرى اشتركا فى الخلو فالجوع خلو الباطن من لطعام و العرى خلو الظاهر من اللباس و الظمأ و الضحى اشتركا فى الاحتراق فالظمأ احتراق الباطن من العطش و الضحى احتراق الظاهر من حر الشمس و منه نوع يسمى المقابلة و هي ان يذكر لفظان فاكثر ثم اضدادها على الترتيب قال ابن ابى الاصبع و الفرق بين الطباق و المقابلة من وجهين احدهما ان الطباق لا يكون الا بين ضدين فقط و المقابلة لا تكون الا بما زاد من الاربعة الى العشرة و الثاني ان الطباق لا يكون الا بالاضداد و المقابلة بالاضداد و بغيرها قال السكاكي و من خواص المقابلة انه اذا شرط فى الاول امر شرط فى الثاني ضده كقوله تعالى فاما من اعطى و اتقى و صدق بالحسنى الآيتين قابل بين الاعطاء و البخل و الاتقاء

تكون في صفات تقبل الزيادة و النقصان و صفات الله منزهة عن ذلك و استحسنه الشيخ تقى الدين السبكي و قال الزركشي فى البرهان التحقيق ان صيغ المبالغة قسمان احدهما ما تحصل المبالغة فيه تحسب زيادة الفعل و الثاني بحسب تعدد المفعولات و لا شك ان تعددها لا يوجب للفعل زيادة اذ الفعل الواحد قد يقع على جماعة متعددين وعلى هذا القسم تنزل صفاته تعالى و يرتفع الاشكال و لهذا قال بعضهم في حكيم معنى المبالغة فيه تكرار حكمة بالنسبة الى الشرائع و قال فى الكشاف المبالغة فى الثواب للدلالة على كثرة من يتوب عليه من عباده او لانه بليغ في قبول التوبة نزل صاحبها منزلة من لم يذنب قط لسعة كرمه و قد اورد بعض الفضلاء سوالا على قوله والله على كل شئ قدير و هو ان قديرا من صيغ المبالغة فيستلزم الزيادة على معني قادر و الزيادة على معني قادر محال اذا لا يجاد من واحد لا يمكن فيه التفاضل باعتبار كل فرد فرد و اجيب بان المبالغة لما تعذر حملها على كل فرد وجب صرفها الى مجموع الافراد التي دل السياق عليها فهي بالنسبة الى كثرة المتعلق لا الوصف المطابقة و تسمى الطباق الجمع بين متضادين فى الجملة و هو قسمان حقيقي و مجازي و الثاني يسمى التكافؤ و كل منها اما لفظي او معنوي و اما طباق ايجاب او سلب فمن امثلة ذلك فليضحكوا قليلا و ليبكوا كثيرا و انه هو اضحك و ابكى و انه هو امات و احيى لكيلا تاسوا على مافاتكم و لا تفرحوا بما اتاكم و تحسبهم ايقاظا و هم رقود و من امثلة المجازي او من كان ميتا فاحييناه اي ضالا فهديناه و من امثلة طباق السلب تعلم ما في نفسي و لا اعلم ما في نفسك

يطهر النفوس و الاصل فيه ان النصارى كانوا يغمسون اولادهم في ماء اصفر يسمونه المعمودية و يقولون انه تطهير لهم فعبر عن الايمان بصبغة الله تعالى للمشاكلة بهذه القرينة المزاوجة ان يزاوج بين معنيين فى الشرط و الجزاء و ماجرى مجراهما كقوله شعر

اذا ما نهى الناهي فلج بى الهوى اصاحت الى الواشي فلج بها الهجر

و منه فى القرآن آتيناه آياتنا فانسلخ منها فاتبعه الشيطان فكان من الغاوين المبالغة ان يذكر المتكلم وصفا فيزيد فيه حتى يكون ابلغ فى المعنى الذي قصده و هي ضربان مبالغة بالوصف بان يخرج الى حد الاستحالة و منه يكاد زيتها يضى ولو لم تمسسه نار و لا يدخلون الجنة حتى يلج الجمل في سم الخياط و مبالغة بالصيغة و صيغ المبالغة فعلان كالرحمن و فعيل كالرحيم و فعال كالتواب و الغفار و القهار و فعول كغفور و شكور و ودود و فعل كحذر و اشر و فرح و فعال بالتخفيف كعجاب و بالتشديد ككبار و فعل كابد و كبر و فعلى كالعليا و الحسنى و شورى و السوآى فائدة الاكثر على ان فعلان ابلغ من فعيل و من ثم قيل الرحمن ابلغ من الرحيم و نصره السهيلي بانه ورد على صيغة التثنية و التثنية تضعيف فكان البناء تضاعفت فيه الصفة و ذهب ابن الانباري الى ان الرحيم ابلغ من الرحمن و رجحه ابن عسكر بتقدم الرحمن عليه و بانه جاء على صيغة الجمع كعبيد و هو ابلغ من صيغة التثنية و ذهب قطرب الى انهما سواء فائدة ذكر البرهان الرشيدي ان صفات الله التي على صيغة المبالغة كلها مجاز لانها موضوعة للمبالغة و لا مبالغة فيها لان المبالغة ان يثبت للشيء اكثر مما له و صفاته تعالى متناهية فى الكمال لا يمكن المبالغة فيها و ايضا فالمبالغة

راجع الى البخل و محسورا راجع الى الاسراف لان معناه منقطعا لا شئ عندك و قوله الم يجدك يتيما الآيات فان قوله فاما اليتيم فلا تقهر راجع الى قوله الم يجدك يتيما و اما السائل فلا تنهر راجع الى قوله و وجدك ضالا فان المراد السائل عن العلم كما فسره مجاهد و غيره و اما بنعمة ربك فحدث راجع الى قوله و وجدك عائلا فاغنى رأيت هذا المثال في شرح الوسيط للنووي المسمى بالتنقيح والثاني ان يكون على عكس ترتيبه كقوله تعالى يوم تبيض وجوه و تسود وجوه فاما الذين اسودت وجوههم الى آخره و جعل منه جماعة قوله تعالى حتى يقول الرسول و الذين آمنوا معه متى نصر الله الا ان نصر الله قريب قالوا متى نصر الله قول الذين آمنوا الا ان نصر الله قريب قول الرسول و ذكر الزمخشري له قسما آخر كقوله تعالى و من آياته منامكم بالليل و النهار و ابتغاؤكم من فضله قال هذا من باب اللف و تقديره و من آياته منامكم و ابتغاؤكم من فضله بالليل و النهار الا انه فصل بين منامكم و ابتغاؤكم بالليل و النهار لانهما زمانان و الزمان و الواقع فيه كشئ واحد مع اقامة اللف على الاتحاد المشاكلة ذكر الشئ بلفظ غيره لوقوعه في صحبة تحقيقا او تقديرا فالاول كقوله تعالى تعلم ما في نفسي و لا اعلم ما في نفسك و مكروا و مكر الله فان اطلاق النفس و المكر في جانب الباري تعالى انما هو لمشاكلة ما معه و كذا قوله و جزاء سيئة سيئة مثلها لان الجزاء حق لا يوصف بانه سيئة فمن اعتدى عليكم فاعتدوا عليه فاليوم ننساكم كما نسيتم و يسخرون منهم سخر الله منهم انما نحن مستهزؤن الله يستهزئ بهم و مثال التقديري قوله تعالى صبغة الله اي تطهير الله لان الايمان

مخرج الموعظة و الزهد كقوله تعالى فورب السماء و الارض انه لحق مثل ما انكم تنطقون اقسم سبحانه بقسم يوجب الفخر لتضمنه التمدح باعظم قدرة و اجل عظمة لعمرك انهم لفي سكرتهم يعمهون اقسم سبحانه بحياة نبيه صلى الله عليه و سلم تعظيما لشانه و تنويها لقدره و سياتي في نوع الاقسام اشياء تتعلق بذلك اللف و النشر هو ان يذكر شيئان او اشياء اما تفصيلا بالنص على كل واحد او اجمالا بان يوتى بلفظ يشتمل على متعدد ثم يذكر اشياء على عدد ذلك كل واحد يرجع الى واحد من المتقدم يفوض الى عقل السامع رد كل واحد الى ما يليق به فالاجمالي كقوله تعالى و قالوا لن يدخل الجنة الا من كان هودا او نصارى اي و قالت اليهود لن يدخل الجنة الا اليهود و قالت النصارى لن يدخل الجنة الا النصارى و انما سوغ الاجمال فى اللف ثبوت العناد بين اليهود و النصارى فلا يمكن ان يقول احد الفريقين بدخول الفريق الآخر الجنة فوثق بالفعل في انه يرد كل قول الى فريقه لا من اللبس و قائل ذلك يهود المدينة و نصارى نجران قلت و قد يكون الاجمال فى النشر لا فى اللف بان يوتى بمتعدد ثم بلفظ يشتمل على متعدد يصلح لهما كقوله تعالى حتى يتبين لكم الخيط الابيض من الخيط الاسود من الفجر على قول ابي عبيدة ان الخيط الاسود اريد به الفجر الكاذب لا الليل و قد بينته في اسرار التنزيل و التفصيلي قسمان احدهما ان يكون على ترتيب اللف كقوله تعالى جعل لكم الليل و النهار لتسكنوا فيه و لتبتغوا من فضله فالسكون راجع الى الليل و الابتغاء راجع الى النهار و قوله تعالى و لا تجعل يدك مغلولة الى عنقك و لا تبسطها كل البسط فتقعد ملوما محسورا فاللوم

الى آخرها كقوله تعالى كل في فلك يسبحون ربك فكبر ولا ثالث لهما في القرآن العنوان قال ابن ابى الاصبع هو ان يأخذ المتكلم في غرض فيأتي لقصد تكميله و تاكيده بامثلة في الفاظ يكون عنوانا لاخبار متقدمة و قصص سالفة و منه نوع عظيم جدا و هو عنوان العلوم بان يذكر في الكلام الفاظ تكون مفاتيح لعلوم و مداخل لها فمن الاول قوله تعالى و اتل عليهم نبأ الذي آتيناه آياتنا فانسلخ منها الآية فانه عنوان قصة بلعام و من الثاني قوله تعالى انطلقوا الى ظل ذي ثلاث شعب الآية فيها عنوان علم الهندسة فان الشكل المثلث اول الاشكال و اذا نصب في الشمس على اي ضلع من اضلاعه لايكون له ظل لتحديد رؤس زواياه فامر الله تعالى اهل جهنم بالانطلاق الى ظل هذا الشكل تهكما بهم و قوله و كذلك نرى ابراهيم ملكوت السموات و الارض الآيات فيها عنوان علم الكلام و علم الجدل و علم الهيئة الفرائد هو مختص بالفصاحة دون البلاغة لانه الاتيان بلفظة تنزل منزلة الفريدة من العقد و هى الجوهرة التي لا نظير لها تدل على عظم فصاحة الكلام و قوة عارضته و جزالة منطقه و اصالة عربيته بحيث لو اسقطت من الكلام عزت على الفصحاء و منه لفظ حصحص في قوله الآن حصحص الحق و الرفث في قوله احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم و لفظة فزع في قوله حتى اذا فزع عن قلوبهم و خائنة الاعين في قوله يعلم خائنة الاعين و الفاظ قوله فلما استيأسوا منه خلصوا نجيا و قوله فاذا نزل بساحتهم فساء صباح المنذرين القسم هو ان يريد المتكلم الحلف على شيء فيحلف بما يكون فيه فخر له او تعظيم لشانه او تنويه لقدره او ذم لغيره او جاريا مجرى الغزل و الترقق او خارجا

لافادة ان الغرق و ان عم الارض فلم يشمل الا من استحق العذاب لظلمة عتاب المرء نفسه منه ويوم يعض الظالم على يديه يقول ياليتني الآيات و قوله ان تقول نفس يا حسرتا على ما فرطت في جنب الله الآيات العكس هو ان يوتي بكلام يقدم فيه جزء و يؤخر آخر ثم تقدم الموخر و يؤخر المقدم نقوله تعالى ما عليك من حسابهم من شئ و ما من حسابك عليهم من شئ يولج الليل فى النهار ويولج النهار فى الليل و يخرج الحي من الميت و يخرج الميت من الحي هن لباس لكم و انتم لباس لهن حل لهم ولا هم يحلون لهن و قد سئل عن الحكمة في عكس هذا اللفظ فاجاب ابن المنير بان فائدته الاشارة الى ان الكفار مخاطبون بفروع الشريعة و قال الشيخ بدرالدين بن الصاحب الحق ان كل واحد من فعل المؤمنة والكافر منفي عنه الحل اما فعل المؤمنة فيحرم لانها مخاطبة و اما فعل الكافرة فنفي عنه الحل باعتبار ان هذا الوطي مشتمل على المفسدة فليس الكفار مورد الخطاب بل الائمة ومن قام مقامهم مخاطبون بمنع ذلك لان الشرع امر باخلاء الوجود من المفاسد فاتضح ان المؤمنة نفي عنها الحل باعتبار و الكافرة نفي عنها الحل باعتبار قال ابن ابى الاصبع و من غريب اسلوب هذا النوع قوله تعالى ومن يعمل من الصالحات من ذكر او انثى و هو مؤمن فاولئك يدخلون الجنة ولا يظلمون نقيرا و من احسن دينا ممن اسلم وجهه لله و هو محسن فان نظم الآية الثانية عكس نظم الاولى لتقديم العمل فى الاولى على الايمان و تاخيره فى الثانية عن الاسلام و منه نوع يسمى القلب و المقلوب المستوي وما لا يستحيل بالا نعكاس و هو ان تقرأ الكلمة من اولها

مقتصد و منهم سابق بالخيرات الجمع مع التفريق و التقسيم كقوله تعالى يوم ياتي لا تكلم نفس الا باذنه الآيات فالجمع في قوله تعالى لا تكلم نفس الا باذنه لانها متعددة معني اذا النكرة في سياق النفي تعم و التفريق قوله فمنهم شقي و سعيد و التقسيم قوله فاما الذين شقوا و اما الذين سعدوا جمع المؤتلف و المختلف هو ان يريد التسوية بين ممدوحين فياتي بمعاني مؤتلفة في مدحهما و يروم بعد ذلك ترجيح احدهما على الآخر بزيادة فضل لاينقص الآخر فياتي لاجل ذلك بمعان تخالف معنى التسوية كقوله تعالى و داؤد و سليمان اذ يحكمان الآية سوى فى الحكم و العلم و زاد فضل سليمان بالفهم حسن النسق هو ان يأتى المتكلم بكلمات متتاليات معطوفات متلاحمات تلاحما سليما مستحسنا بحيث اذا افردت كل جملة منه قامت بنفسها واستقل معناها بلفظها ومنه قوله تعالى و قيل يا ارض ابلعى ماءك الآية فان جملة معطوفة بعضها على بعض بواو النسق على الترتيب الذي تقتضيه البلاغة من الابتداء بالاهم الذي هو انحسار الماء عن الارض المتوقف عليه غاية مطلوب اهل السفينة من الاطلاق من سجنها ثم انقطاع مادة السماء المتوقف عليه تمام ذلك من دفع آداة بعد الخروج و منع اخلاف ما كان بالارض ثم الاخبار بذهاب الماء بعد انقطاع المادتين الذي هو متاخر عنه قطعا ثم بقضاء الامر الذي هو هلاك من قدر هلاكه و نجاة من سبق نجاته و آخر عما قبله لان علم ذلك لاهل السفينة بعد خروجهم منها و خروجهم موقوف على ما تقدم ثم اخبر باستواء السفينة و استقرارها المفيد ذهاب الخوف و حصول الامن من الاضطراب ثم ختم بالدعاء على الظالمين

التكليفات بل لاجل قوة المعاني و جزالة الالفاظ و اجاب غيره بان مراعاة المعاني اولى من مراعاة الالفاظ و لو قال اتدعون و تدعون لوقع الالتباس على القاري فيجعلها بمعنى واحد تصحيفا وهذا الجواب غير ناضج و اجاب ابن الزملكاني بان التجنيس تحسين وانما يستعمل في مقام الوعد و الاحسان لا في مقام التهويل و اجاب الخويني بان يدع اخص من يذر لانه بمعنى ترك الشيء مع اعتنائه بشهادة الاشتقاق نحوا لا يداع فانه عبارة عن ترك الوديعة مع الاعتناء بحالها و لهذا نختار لها من هو مؤتمن عليها و من ذلك الدعة بمعنى الراحة و اما يذر فمعناه الترك مطلقا او الترك مع الاعراض و الرفض الكلي قال الراغب يقال فلان يذر الشيء اي يقذفه لقلة الاعتداد به و منه الوذر قطعة من اللحم لقلة الاعتداد به و لا شك ان السياق انما يناسب هذا دون الاول فاريد هنا تشييع حالهم فى الاعراض عن ربهم و انهم بلغوا الغاية فى الاعراض انتهى الجمع هو ان يجمع بين شيئين او اشياء متعددة في حكم كقوله تعالى المال و البنون زينة الحيوة الدنيا جمع المال و البنون فى الزينة و كذا قوله الشمس و القمر بحسبان و النجم و الشجر يسجدان الجمع و التفريق هو ان يدخل شيئين في معنى و يفرق من جهتى الادخال و جعل منه الطيبي قوله تعالى الله يتوفى الانفس حين موتها الآية جمع النفسين في حكم التوفى ثم فرق بين جهتى التوفى بالحكم بالامساك و الارسال اي الله يتوفى الانفس التي تقبض و التي لم تقبض فيمسك الاولى و يرسل الاخرى الجمع و التقسيم و هو جمع متعدد تحت حكم ثم تقسيمه كقوله تعالى ثم اورثنا الكتاب الذين اصطفينا من عبادنا فمنهم ظالم لنفسه و منهم

و منها اللاحق بان يختلفا بحرف غير مقارب فيه كذلك كقوله ويل لكل همزة لمزة و انه على ذلك لشهيد و انه لحب الخير لشديد ذلكم بما كنتم تفرحون فى الارض بغير الحق و بما كنتم تمرحون و اذا جاءهم امر من الامن و منها المرفو و هو ما يتركب من كلمة و بعض اخرى كقوله جرف هارفا نهار و منها اللفظي بان يختلفا بحرف مناسب للآخر مناسبة لفظية كالضاد و الظا كقوله وجوه يومئذ ناضرة الى ربها ناظرة و منها تجنيس القلب بان يختلفا في ترتيب الحروف نحو فرقت بين بني اسرائيل و منها تجنيس الاشتقاق بان يجتمعا في اصل الاشتقاق و يسمى المقتضب نحو فروح و ريحان فاقم وجهك للدين القيم وجهت وجهي و منها تجنيس الاطلاق بان يجتمعا فى المشابهة فقط كقوله وجنى الجنتين قال اني لعملكم من القالين ليريه كيف يواري و ان يردك بخير فلا راداثا قلتم الى الارض ارضيتم و اذا انعمنا على الانسان اعرض الى قوله فذو دعاء عريض تنبيه لكون الجناس من المحاسن اللفظية لا المعنوية ترك عند قوة المعنى كقوله تعالى و ما انت بمؤمن لنا و لو كنا صادقين قيل ما الحكمة في كونه لم يقل و ما انت بمصدق فانه يودى معناه مع رعاية التجنيس و اجيب بان في مؤمن لنا من المعنى ما ليس في مصدق لان معنى قولك مثلا مصدق لي قال لي صدقت و اما مؤمن فمعناه مع التصديق اعطاء الامن و مقصودهم التصديق و زيادة و هو طلب الامن فلذلك عبر به و قد زل بعض الادباء فقال في قوله اتدعون بعلا و تذرون احسن الخالقين لو قال و تدعون لكان فيه مراعاة التجنيس و اجاب الامام فخر الدين بان فصاحة القرآن ليست لاجل رعاية هذه

الحروف و اعدادها و هياتها كقوله تعالى و يوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة قيل و لم يقع منه فى القرآن سواه و استنبط شيخ الاسلام بن حجر موضعا آخر و هو يكاد سنابرقه يذهب بالابصار يقلب الله الليل و النهار ان في ذلك لعبرة لاولى الابصار و انكر بعضهم كون الآية الاولى من الجناس وقال الساعة فى الموضعين بمعنى واحد و التجنيس ان يتفق اللفظ و يختلف المعنى و لا يكون احدهما حقيقة و الآخر مجازا بل يكونان حقيقيين و زمان القيامة و ان طال لكنه عند الله في حكم الساعة الواحدة فاطلاق الساعة على القيامة مجاز و على الآخر حقيقة و بذلك يخرج الكلام عن التجنيس كما لو قلت ركبت حمارا و لقيت حمارا يعنى بليدا ومنها المصحف و يسمى جناس الخط بان تختلف الحروف فى النقط كقوله والذي هو يطعمني و يسقين و اذا مرضت فهو يشفين ومنها المحرف بان يقع الاختلاف فى الحركات كقوله و لقد ارسلنا فيهم منذرين و انظر كيف كان عاقبة المنذرين و قد اجتمع التصحيف و التحريف في قوله و هم يحسبون انهم يحسنون صنعا ومنها الناقص بان يختلفا في عدد الحروف سواء كان الحرف المزيد اولا او وسطا اواخرا كقوله و التفت الساق بالساق الى ربك يومئذ المساق كلي من كل الثمرات ومنها المذيل بان يزيد احدهما اكثر من حرف فى الآخر او الاول وسمى بعضهم الثاني بالمتوج كقوله و انظر الى الهك و لكنا كنا مرسلين من آمن بالله ان ربهم بهم مذبذبين بين ذلك ومنها المضارع و هو ان يختلفا بحرف مقارب فى المخرج سواء كان فى الاول او الوسط او الآخر كقوله تعالى و هم ينهون عنه و ينأون عنه

الا هو الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن العزيز الجبار المتكبر وقوله التائبون العابدون الحامدون الآية و قوله مسلمات مؤمنات الآية الترتيب هو ان يورد اوصاف الموصوف على ترتيبها فى الخلقة الطبيعية و لا يدخل فيها وصفا زائدا و مثاله عبد الباقى اليمني بقوله و الله خلقكم من تراب ثم من نطفة ثم من علقة ثم يخرجكم طفلا ثم لتبلغوا اشدكم ثم لتكونوا شيوخا و بقوله فكذبوه فعقروها الآية الترقي و التدلي تقدما في نوع التقديم و التاخير التضمين يطلق على اشياء احدها ايقاع لفظ موقع غيره لتضمنه معناه و هو نوع من المجاز تقدم فيه الثاني حصول معني فيه من غير ذكر له باسم هو عبارة عنه و هذا نوع من الايجاز تقدم ايضا الثالث تعلق ما بعد الفاصلة بها و هذا مذكور في نوع الفواصل الرابع ادراج كلام الغير في اثناء الكلام لقصد تاكيد المعنى او ترتيب النظم و هذا هو النوع البديعي قال ابن ابى الاصبع و لم اظفر فى القرآن بشئ منه الا في موضعين تضمنا فصلين من التوراة و الانجيل قوله و كتبنا عليهم فيها ان النفس بالنفس الآية و مثله ابن النقيب و غيره بايداع حكايات المخلوقين فى القرآن كقوله تعالى حكاية عن الملائكة اتجعل فيها من يفسد فيها و عن المنافقين انؤمن كما آمن السفهاء و قالت اليهود و قالت النصارى قال و كذلك ما اودع فيه من اللغات الاعجمية الجناس هو تشابه اللفظين فى اللفظ قال في كنز البراعة و فائدته الميل الى الاصغاء اليه فان مناسبة الالفاظ تحدث ميلا و اصغاء اليها و لان اللفظ المشترك اذا حمل على معني ثم جاء و المراد به آخر كان للنفس تشوق اليه و انواع الجناس كثيرة منها التام بان يتفقا في انواع

الوان الجبال لا تخرج عن هذه الالوان الثلاثة و الهداية بكل علم نصب للهداية منقسمة هذه القسمة اتت الآية الكريمة منقسمة كذلك فحصل فيها التدبيج و صحة التقسيم التنكيت هو ان يقصد المتكلم الى شيء بالذكر دون غيره مما يسد مسده لاجل نكتة فى المذكور ترجح مجيئه على سواه كقوله تعالى و انه هو رب الشعري خص الشعري بالذكر دون غيرها من النجوم و هو تعالى رب كل شيء لان العرب كان ظهر فيهم رجل يعرف بابن ابي كبشة عبد الشعري و دعا خلقا على عبادتها فانزل الله تعالى و انه هو رب الشعري التي ادعيت فيها الربوبية التجريد هو ان ينتزع من امر ذي صفة آخر مثله مبالغة في كمالها فيه نحو لي من فلان صديق حميم جرد من الرجل الصديق آخر مثله متصفا بصفة الصداقة و نحو مررت بالرجل الكريم و النسمة المباركة جردوا من الرجل الكريم آخر مثله متصفا بصفة البركة و عطفوه عليه كانه غيره و هو هو و من امثلته فى القرآن لهم فيها دار الخلد ليس المعنى ان الجنة فيها دار خلد و غير دار خلد بل هي نفسها دار الخلد فكانه جرد من الدار دارا ذكره فى المحتسب و جعل منه يخرج الحي من الميت و يخرج الميت من الحي على ان المراد بالميت النطفة قال الزمخشري و قرأ عبيد بن عمير فكانت وردة كالدهان بالرفع بمعنى حصلت منها وردة قال و هو من التجريد و قرئ ايضا يرثني وارث من آل يعقوب قال ابن جني هذا هو التجريد و ذلك و انه يريد وهب لي من لدنك وليا يرثني منه وارث من آل يعقوب و هو الوارث نفسه فكانه جرد منه وارثا التعديد هو ايقاع الالفاظ المفردة على سياق واحد و اكثر ما توجد فى الصفات كقوله هو الذي لا اله

البرق الا الخوف من الصواعق و الطمع فى الامطار ولا ثالث لهذين القسمين و قوله فمنهم ظالم لنفسه و منهم مقتصد و منهم سابق بالخيرات فان العالم لا يخلوا من هذه الاقسام الثلاثة اما عاص ظالم لنفسه و اما سابق مبادر للخيرات و اما متوسط بينهما مقتصد فيها و نظيرها وكنتم ازواجا ثلاثة فاصحاب الميمنة ما اصحاب الميمنة و اصحاب المشئمة ما اصحاب المشأمة و السابقون السابقّون و كذا قوله تعالى له ما بين ايدينا وما خلفنا وما بين ذلك استوفي اقسام الزمان ولا رابع لها وقوله والله خلق كل دابة من ماء فمنهم من يمشي على بطنه و منهم يمشي على رجلين ومنهم من يمشي على اربع استوفي اقسام الخلق فى المشي وقوله الذين يذكرون الله قياما و قعودا و على جنوبهم استوفي جميع هيأت الذاكر وقوله يهب لمن يشاء اناثا ويهب لمن يشاء الذكوراو يزوجهم ذكرنا واناثنا و يجعل من يشاء عقيما استوفي جميع احوال المتزوجين ولا خامس لها التدبيج هو ان يذكر المتكلم الوانا يقصد التورية بها الكناية قال ابن ابي الاصبع كقوله تعالى و من الجبال جدد بيض و حمر مختلف الوانها و غرابيب سود قال المراد بذلك والله اعلم الكناية عن المشتبه و الواضح من الطرق لان الجادة البيضاء هى الطريق التي كثر السلوك عليها جدا و هي او ضح الطرق و ابينها و دونها الحمراء و دون الحمراء السوداء كانها فى الخفاء و الالتباس ضد البيضاء فى الظهور و الوضوح و لما كانت هذه الالوان الثلاثة فى الظهور للعين طرفين و واسطة فالطرف الاعلى فى الظهور و البياض و الطرف الادنى فى الخفاء و السواد و الاحمر بينهما على وضع الالوان فى التركيب و كانت

يشبه الذم قال ابن ابي الاصبع هو في غاية العزة فى القرآن قال ولم اجد منه الا واحدة و هي قوله قل يا اهل الكتاب هل تنقمون منا الا ان آمنا بالله الآية فان الاستثناء بعد الاستفهام الخارج مخرج التوبيخ على ما عابوا به المؤمنين من الايمان يوهم ان ما ياتي بعده مما يوجب ان ينقم على فاعله مما يذم به فلما اتي بعد الاستثناء ما يوجب مدح فاعله كان الكلام متضمنا تاكيد المدح بما يشبه الذم قلت و نظيرها قوله وما نقموا الا ان اغناهم الله و رسوله من فضله و قوله الذين اخرجوا من ديارهم بغير حق الا ان يقولوا ربنا الله فان ظاهر الاستثناء ان ما بعده حق يقتضى الاخراج فلما كان صفة مدح يقتضى الاكرام لا الاخراج كان تاكيد المدح بما يشبه الذم وجعل منه التنوخي فى الاقصى القريب لايسمعون فيها لغوا ولا تاثيما الا قيلا سلاما سلاما استثنى سلاما سلاما الذي هو ضداللغو و التاثيم فكان ذلك مؤكد الانتفاء اللغو و التاثيم انتهى التفويف هو اتيان المتكلم بمعان شتى من المدح و الوصف و غير ذلك من الفنون كل فن في جملة منفصلة عن اختها مع تساوى الجمل فى الزنة و يكون فى الجمل الطويلة و المتوسطة و القصيرة فمن الطويلة الذي خلقني فهو يهدين و الذي هو يطعمني و يسقين و اذا مرضت فهو يشفين والذي يميتني ثم يحيين و من المتوسطة يولج الليل فى النهار و يولج النهار فى الليل و يخرج الحي من الميت و يخرج الميت من الحي قال ابن ابي الاصبع ولم يأت المركب من القصيرة فى القرآن التقسيم هو استيفاء اقسام الشيء الموجودة لا الممكنة عقلا نحو هو الذي يريكم البرق خوفا و طمعا اذ ليس في رؤية

تمهد عذر نوح في دعائه على قومه بدعوة اهلاكهم عن آخرهم اذ لو قيل فلبث فيهم تسعمائة و خمسين عاما لم يكن فيه من التهويل ما فى الاول لان لفظ الالف فى الاول اول ما يطرق السمع فيشتغل بها عن سماع بقية الكلام و اذا جاء الاستثناء لم يبق له بعدما تقدمه وقع يزيل ما حَصَل عنده من ذكر الالف الاقتصاص ذكره ابن فارسي و هو ان يكون كلام في سورة مقتصا من كلام في سورة اخرى او في تلك السورة كقوله تعالى و آتيناه اجره فى الدنيا و انه فى الآخرة لمن الصالحين و الآخرة دار ثواب لا عمل فيها فهذا مقتص من قوله و من يأته مؤمنا قد عمل الصالحات فاولئك لهم الدرجات العلى و منه و لولا نعمة ربي لكنت من المحضرين ماخوذ من قوله فاولئك فى العذاب محضرون و قوله و يوم يقوم الاشهاد مقتص من اربع آيات لان الاشهاد اربعة الملائكة في قوله و جاءت كل نفس معها سائق و شهيد و الانبياء في قوله فكيف اذا جئنا من كل امة بشهيد و جئنا بك على هؤلاء شهيد او امة محمد في قوله لتكونوا شهداء على الناس و الاعضاء في قوله يوم تشهد عليهم السنتهم الآية و قوله التناد قرئ مخففا و مشددا فالاول ماخوذ من قوله و نادى اصحاب الجنة اصحاب النار و الثاني من قوله يوم يفر المرء من اخيه الابدال هو اقامة بعض الحروف مقام بعض و جعل منه ابن فارس فانفلق اي انفرق و لذا قال فكان كل فرق فالراء و اللام متعاقبان و عن الخليل في قوله فجاسوا خلال الديار انه اريد فجاسوا فقامت الجيم مقام الحاء و قد قرئ بالحاء ايضا و جعل منه الفارسي اني احببت حب الخير اى الخليل و جعل منه ابو عبيدة الامكاء و تصديه اي تصدده تاكيد المدح بما

بلفظ المس الذي هو دون الاحراق و الاصطلام و قوله لها ما كسبت و عليها ما اكتسبت اتى بلفظ الاكتساب المشعر بالكلفة و المبالغة في جانب السيئة لثقلها و كذا قوله فكبكبوا فيها فانه ابلغ من كبوا للاشارة الى انهم مكبون كبا عنيفا قطيعا و هم يصطرخون فانه ابلغ من يصرخون الاشارة الى انهم يصرخون صراخا منكرا خارجا عن الحد المعتاد اخذ عزيز مقتدر فانه ابلغ من قادر للاشارة الى زيادة التمكن فى القدرة و انه لاراد له و لا معقب و مثل ذلك و اصطبر فانه ابلغ من اصبر و الرحمن فانه ابلغ من الرحيم و الرحيم فانه يشعر باللطف و الرفق كما ان الرحمن مشعر بالفخامة و العظمة و منه الفرق بين سقى و اسقى فان سقى لما لا كلفة معه فى السقيا و لهذا اورده تعالى في شراب الجنة فقال و سقاهم ربهم شرابا طهورا و اسقى لما فيه كلفة و لهذا اورده في شراب الدنيا فقال و استقيناكم ماء فراتا لا سقيناهم ماء غدقا لان السقيا فى الدنيا لا تخلوا من الكلفة ابدا الاستدراك و الاستثناء شرط كونهما من البديع ان يتضمنا ضربا من المحاسن زائدا على ما يدل عليه المعنى اللغوى مثال الاستدراك قالت الاعراب آمنا قل لم تؤمنوا و لكن قولوا اسلمنا فانه لو اقتصر على قوله لم تؤمنوا لكان منفردا لهم لانهم اظنوا الاقرار بالشهادتين من غير اعتقاد ايمانا فاوجبت البلاغة ذكر الاستدراك ليعلم ان الايمان موافقة القلب اللسان و ان انفراد اللسان بذلك يسمى اسلاما و لا يسمى ايمانا و زاد ذلك ايضاحا بقوله و لما يدخل الايمان في قلوبكم فلما تضمن الاستدراك ايضاح ما عليه ظاهر الكلام من الاشكال عد من المحاسن و مثال الاستثناء فلبث فيهم الف سنة الا خمسين عاما فان الاخبار عن هذه المدة بهذه الصيغة

قوالب المعاني و الاغراض فتارة ياتي به في لفظ الاستعارة و تارة في صورة الارداف وحينا في مخرج الايجاز ومرة في قالب الحقيقة قال ابن ابى الاصبع و على هذا اتت جميع قصص القرآن فانك ترى القصة الواحدة التي لا تختلف معانيها تاتي في صور مختلفة وقوالب فى الالفاظ متعددة حتى لا يكاد تشبه في موضعين منه و لابد ان تجد الفرق بين صورها ظاهرا ايتلاف اللفظ مع اللفظ و ايتلافه مع المعنى الاول ان تكون لالفاظ تلائم بعضها بعضا بان يقرن الغريب بمثله و المتداول بمثله رعاية لحسن الجوار و المناسبة و الثاني ان تكون الفاظ الكلام ملائمة للمعنى المراد فان كان فخما فكانت الفاظه مفخمة او جزلا فجزلة او غريبا فغريبة او متداولا فمتداولة او متوسطا بين الغرابة و الاستعمال فكذا لك فالاول كقوله تعالى تالله تفتؤ تذكر يوسف حتى تكون حرضا اتى باغرب الفاظ القسم و هي التاء فانها اقل استعمالا و ابعد من افهام العامة بالنسبة الى الباء و الواو و باغرب صيغ الافعال التي ترفع الاسماء و تنصب الاخبار فان تزال اقرب الى الافهام و اكثر استعمالا منها و باغرب الفاظ الهلاك وهو الحرض فاقتضى حسن الوضع فى النظم ان تجاور كل لفظة بلفظة من جنسها فى الغرابة توخيا لحسن الجوار و رغبة في ايتلاف المعاني بالالفاظ ولتتعادل الالفاظ فى الوضع و تتناسب فى النظم و لما اراد غير ذلك قال و اقسموا بالله جهد ايمانهم فاتى بجميع الالفاظ متداولة لا غرابة فيها و من الثاني قوله تعالى ولا تركنوا الى الذين ظلموا فتمسكم النار و لما كان الركون الى الظالم و هو الميل اليه و الاعتماد عليه دون مشاركته فى الظلم وجب ان يكون العقاب عليه دون العقاب على الظلم فاتى

ظلالها و ذللت قطوفها تذليلا و من الرمل و جفان كالجواب و قدور راسيات و من السريع او كالذي مر على قرية و من المنسوخ انا خلقنا الانسان من نطفة و من الخفيف لا يكادون يفقهون حديثا و من المضارع يوم التناد يوم تولون مدبرين و من المقتضب في قلوبهم مرض و من المجتث نبئ عبادي اني انا الغفور الرحيم و من التقارب و املى لهم ان كيدى متين الادماج قال ابن ابى الاصبع و هو ان يدمج المتكلم غرضا في غرض او بديعا في بديع بحيث لا يظهر فى الكلام الا احد الغرضين او احد البديعين لقوله و له الحمد فى الاولى و الآخرة ادمجت المبالغة فى المطابقة لان انفراده تعالى بالحمد فى الآخرة و هي الوقت الذي لا يحمد فيه سواه مبالغة فى الوصف بالانفراد بالحمد و هو و ان خرج مخرج المبالغة فى الظاهر فالامر فيه حقيقة فى الباطن فانه رب الحمد و المنفرد به فى الدارين انتهى قلت و الاولى ان يقال في هذه الآية انها من ادماج غرض في غرض فان الغرض منها تفرده تعالى بوصف الحمد و ادمج فيه الاشارة الى البعث و الجزاء الاقتنان هو الاتيان في كلام بفنين مختلفين كالجمع بين الفخر و التعزية في قوله تعالى كل من عليها فان و يبقى وجه ربك ذو الجلال و الاكرام فانه تعالى عزى جميع المخلوقات من الجن و الانس و الملائكة و سائر اصناف ما هو قابل للحياة و يمدح بالبقاء بعد فناء الموجودات في عشر لفظات مع وصفه ذاته بعد انفراده بالبقاء بالجلال و الاكرام سبحانه و تعالى و منه ثم ننجى الذين اتقوا الآية جمع فيها بين هنا و عزا الاقتدار و هو ان يبرز المتكلم المعنى الواحد في عدة صور اقتدارا منه على نظم الكلام و تركيبه و على صياغة

عن سبيل الله و الى الامر قل امر ربي بالقسط و اقيموا وجوهكم و احلت لكم الانعام الا ما يتلى عليكم فاجتنبوا و من المضارع الى الماضي و يوم ينفخ فى الصور فصعق و يوم تسير الجبال و ترى الارض بارزة و حشرناهم و الى الامر قال اني اشهد الله و اشهدوا اني بريء و من الامر الى الماضي و اتخذوا من مقام ابراهيم مصلى و عهدنا و الى المضارع و ان اقيموا الصلاة و اتقوه و هو الذي اليه تحشرون الاطراد هو ان يذكر المتكلم اسما ابا الممدوح مرتبة على حكم ترتيبها فى الولادة قال ابن ابى الاصبع و منه فى القرآن قوله تعالى حكاية عن يوسف واتبعت ملة ابائى ابراهيم و اسحق و يعقوب قال و انما لم يأت به على الترتيب المالوف فان العادة الابتداء بالاب ثم الجد ثم الجد الاعلى لانه لم يرد هنا مجرد ذكر الاباء و انما ذكرهم ليذكر ملتهم التي اتبعها فبدأ بصاحب الملة ثم بمن اخذها عنه اولا فاولا على الترتيب و مثله قول اولاد يعقوب نعبد الهك واله آبائك ابراهيم واسحق و يعقوب الانسجام هو ان يكون الكلام لخلوه من العقادة منحدرا كتحدر الماء المنسجم و يكاد لسهولة تركيبه و عذوبة الفاظه ان يسيل رقة و القرآن كله كذلك قال اهل البديع و اذا قوى الانسجام فى النثر جاءت فقراته موزونة بلا قصد لقوة انسجامه و من ذلك ما وقع فى القرآن موزونا فمنه من بحر الطويل فمن شاء فليؤمن و من شاء فليكفر و من المديد واصنع الفلك باعيننا و من البسيط فاصبحوا لا ترى الا مساكنهم و من الوافر و يخزهم و ينصركم عليهم و يشف صدور قوم مؤمنين و من الكامل و الله يهدى من يشاء الى صراط مستقيم و من الهزج فالقوه على وجه ابي يأت بصيرا و من الرجز دانية عليهم

القريب و ابن الاثير و غيرهما نوعا غريبا من الالتفات و هو بناء الفعل للمفعول بعد خطاب فاعله او تكلمه كقوله غير المغضوب عليهم بعد انعمت فان المعنى غيرالذين غضبت عليهم و توقف فيه صاحب عروس الافراح الرابع قال ابن ابى الاصبع جاء فى القرآن من الالتفات قسم غريب جدا لم اظفر فى الشعر بمثاله و هو ان يقدم المتكلم في كلامه مذكورين مرتبين ثم يخبر عن الاول منهما و ينصرف عن الاخبار عنه الى الاخبار عن الثاني ثم يعود الى الاخبار عن الاول كقوله ان الانسان لربه لكنود و انه على ذلك لشهيد انصرف عن الاخبار عن الانسان الى الاخبار عن ربه تعالى ثم قال منصرفا عن الاخبار عن ربه الى الاخبار عن الانسان و انه لحب الخير لشديد قال و هذا يحسن ان يسمى التفات الضمائر الخامس يقرب من الالتفات نقل الكلام من خطاب الواحد او الاثنين او الجمع لخطاب الآخر ذكره التنوخي و ابن الاثير و هو ستة اقسام ايضا مثاله من الواحد الى الاثنين قالوا اجئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه اباءنا و تكون لكما الكبرياء فى الارض والى الجمع يا ايها النبي اذا طلقتم النساء و من الاثنين الى الواحد فمن ربكما يا موسى فلا يخرجنكما من الجنة فتشقي و الى الجمع و اوحينا الى موسى و اخيه ان تبوءا لقومكما بمصر بيوتا واجعلوا بيوتكم قبلة و من الجمع الى الواحد و اقيموا الصلاة و بشر المؤمنين و الى الاثنين يا معشر الجن والانس ان استطعتم الى قوله فباى الاء ربكما تكذبان السادس و يقرب منه ايضا الانتقال من الماضي و المضارع او الامر الى آخر مثاله من الماضي الى المضارع ارسل الرياح فتثير خر من السماء فتخطفه الطيران الذين كفروا ويصدون

اختير لفظ الغيبة للحمد و للعبادة الخطاب للاشارة الى ان الحمد دون العبادة فى الرتبة لانك تحمد نظيرك و لا تعبده فاستعمل لفظ الحمد مع الغيبة و لفظ العبادة مع الخطاب لينسب الى العظيم حال المخاطبة و المواجهة ما هو اعلى رتبة و ذلك على طريق التادب و على نحو من ذلك جاء آخر السورة فقال الذين انعمت عليهم مصرحا بذكر المنعم و اسناد الانعام اليه لفظا و لم يقل صراط المنعم عليهم فلما صار الى ذكر الغضب روى عنه لفظه فلم ينسبه اليه لفظا و جاء باللفظ منحرفا عن ذكر الغاضب فلم يقل غير الذين غضبت عليهم تفاديا عن نسبة الغضب اليه فى اللفظ حال المواجهة و قيل لانه لما ذكر الحقيق بالحمد و اجرى عليه الصفات العظيمة من كونه ربا للعالمين و رحمانا و رحيما و مالكا ليوم الدين تعلق العلم بمعلوم عظيم الشان حقيق بان يكون معبودا دون غيره مستعانا به فخوطب بذلك لتميزه بالصفات المذكورة تعظيما لشانه حتى كانه قيل اياك يا من هذه صفاته نخص بالعبادة و الاستعانة لا غيرك قيل و من لطائفه التنبيه على ان مبتداء الخلق الغيبة منهم عنه سبحانه و قصورهم عن محاضرته و مخاطبته و قيام حجاب العظمة عليهم فاذا عرفوا بما هو له و توسلوا للقرب بالثناء عليه و اقروا بالمحامد له و تعبدوا له بما يليق بهم تاهلوا لمخاطباته و مناجاته فقالوا اياك نعبد و اياك نستعين تنبيهات الاول شرط الالتفات ان يكون الضمير فى المنتقل اليه عائدا في نفس الامر الى المنتقل عنه و الا يلزم عليه ان يكون في انت صديقي التفات الثاني شرطه ايضا ان يكون في جملتين صرح به صاحب الكشاف و غيره و الا يلزم عليه ان يكون الثالث ذكر التنوخي فى الاقصى

لانهم خافوا الهلاك و غلبة الرياح فخاطبهم خطاب الحاضرين ثم لما جرت الرياح بما تشتهى السفن و امنوا الهلاك لم يبق حضورهم كما كان على عادة الانسان انه اذا امن غاب قلبه عن ربه فلما غابوا ذكرهم بصيغة الغيبة وهذه اشارة صوفية و من امثلته ايضا وما اتيتم من زكاة تريدون وجه الله فاولئك هم المضعفون و كره اليكم الكفر و الفسوق و العصيان اولئك هم الراشدون ادخلوا الجنة انتم و ازواجكم تحبرون يطاف عليهم و الاصل عليكم ثم قال و انتم فيها خالدون فقرر الالتفات و مثاله من الغيبة الى التكلم الله الذي يرسل الرياح فتثير سحابا فسقناه و اوحى في كل سماء امرها و زينا سبحان الذي اسرى بعبده الى قوله باركنا حوله لنريه من آياتنا ثم التفت ثانيا الى الغيبة فقال انه هو السميع البصير و على قرأة الحسن ليريه بالغيبة يكون التفاتا ثانيا في باركنا و في آياتنا التفات ثالث و فيه انه التفات رابع قال الزمخشري و فائدته في هذه الآيات و امثالها التنبيه على التخصيص بالقدرة و انه لا يدخل تحت قدرة احد و مثاله من الغيبة الى الخطاب و قالوا اتخذ الرحمن ولدا لقد جئتم شيئا ادا الم يروا كم اهلكنا قبلهم من قرن مكناهم فى الارض ما لم نمكن لكم و سقاهم ربهم شرابا طهورا ان هذا كان لكم جزاء ان اراد النبي ان يستنكحها خالصة لك و من محاسنه ما وقع في سورة الفاتحة فان العبد اذا ذكر الله تعالى وحده ثم ذكر صفاته التي كل صفة منها تبعث على شدة الاقبال و آخرها مالك يوم الدين المفيد انه مالك الامر كله في يوم الجزاء يجد من نفسه حاملا لا يقدر على دفعه على خطاب من هذه صفاته بتخصيصه بغاية الخضوع و الاستعانة فى المهمات و قيل انما

من عندنا انا كنا مرسلين رحمة من ربك و الاصل منا اني رسول الله اليكم جميعا الى قوله فامنوا بالله و رسوله و الاصل بي و عدل عنه لنكتتين احدٰهما دفع التهمة عن نفسه بالعصبية لها و الاخرى تنبيههم على استحقاقه الاتباع بما اتصف به من الصفات المذكورة و الخصائص المتلوة و مثاله من الخطاب الى التكلم لم يقع فى القرآن و مثل له بعضهم بقوله فاقض ما انت قاض ثم قال انا امنا بربنا و هذا المثال لا يصح لان شرط الالتفات ان يكون المراد به واحدا ومثاله من الخطاب الى الغيبة حتى اذا كنتم فى الفلك و جرين بهم و الاصل بكم ونكتة العدول عن خطابهم الى حكاية حالهم لغيرهم التعجب من كفرهم و فعلهم اذ لو استمر على خطابهم لفاتت تلك الفائدة و قيل لان الخطاب اولا كان مع الناس مؤمنهم و كافرهم بدليل هو الذي يسيركم فى البر و البحر فلو كان و جرين بكم للزم الذم للجميع فالتفت عن الاول للاشارة الى اختصاصه بهولاء الذين شانهم ما ذكره عنهم في آخر الآية عدولا من الخطاب العام الى الخاص قلت و رأيت عن بعض السلف في توجيهه عكس ذلك و هو ان الخطاب اوله خاص و آخره عام فاخرج ابن ابي حاتم عن عبد الرحمن بن زيد بن اسلم انه قال في قوله حتى اذا كنتم فى الفلك و جرين بهم قال ذكر الحديث عنهم ثم حدث عن غيرهم و لم يقل و جرين بكم لانه قصد ان يجمعهم و غيرهم و جرين بهولاء و غيرهم من الخلق هذه عبارته فلله در السلف ما كان اوقفهم على المعانى اللطيفة التي يدأب المتاخرين فيها زمانا طويلا و يفنون فيها اعمارهم ثم غايتهم ان يحوموا حول الحمى و مما ذكر في توجيهه ايضا انهم وقت الركوب حضروا

عن الضجر و الملال لما جبلت عليه النفوس من حب التنقلات و السأمة من الاستمرار على منوال واحد هذه فائدة العامة و يختص كل موقع بنكت و لطائف باختلاف محله كما سنبينه مثاله من التكلم الى الخطاب و وجهه حث السامع و بعثه على الاستماع حيث اقبل المتكلم عليه و اعطاه فضل غنائه و تخصيص بالمواجهة قوله تعالى و مالي لا اعبد الذي فطرني و اليه ترجعون الاصل و اليه ارجع فالتفت من التكلم الى الخطاب ونكتته انه اخرج الكلام في معرض مناصحته لنفسه و هو يريد نصح قومه تلطفا و اعلاما انه يريد لهم ما يريد لنفسه ثم التفت اليهم لكونهم في مقام تخويفهم ودعوتهم الى الله كذا جعلوا هذه الآية من الالتفات وفيه نظر لانه انما يكون منه اذا قصد الاخبار عن نفسه في كلا الجملتين و هنا ليس كذلك لجواز ان يريد بقوله ترجعون المخاطبين لانفسه و اجيب بانه لو كان المراد ذلك لما صح الاستفهام الانكاري لان رجوع العبد الى مولاه ليس بمستلزم ان يعبده غير ذلك الراجع فالمعنى كيف لا اعبد من اليه رجوعي و انما عدل عن و اليه ارجع الي و اليه ترجعون لانه داخل فيهم و مع ذلك افاد فائدة حسنة و هو تنبيههم على انه مثلهم في وجوب عبادة من اليه الرجوع و من امثلته ايضا قوله تعالى و امرنا لنسلم لرب العالمين و ان اقيموا الصلاة و مثاله من التكلم الى الغيبة و وجهه ان يفهم السامع ان هذا نمط المتكلم و قصده من السامع حضر او غاب و انه ليس في كلامه ممن يتلون و يتوجه و يبدي في الغيبة بخلاف ما يبديه في الحضور قوله تعالى انا فتحنا لك فتحا مبينا ليغفر لك الله و الاصل ليغفر لك الله انا اعطيناك الكوثر فصل لربك و الاصل لنا امرا

السكاكي و اتباعه و الاخرى ان يؤتى بلفظ مشترك ثم بلفظين يفهم من احدهما احد المعنيين و من الآخر الآخر و هذه طريقة بدرالدين بن مالك فى لمصباح و مشى عليها ابن ابى الاصبع و مثل له بقوله تعالى لكل اجل كتاب الآية فلفظ كتاب يحتمل الامر المحترم و الكتاب المكتوب فلفظ اجل يخدم المعنى الاول و يمحو يخدم الثاني و مثل غيره بقوله تعالى لا تقربوا الصلوٰة و انتم سكارى الآية فالصلاة يحتمل ان يراد بها فعلها و موضعها و قوله حتى تعلموا ما تقولون يخدم الاول و الاعابري سبيل يخدم الثاني قيل و لم يقع فى القرآن على طريقة السكاكي قلت وقد استخرجت بفكري آيات على طريقته منها قوله تعالى اتى امر الله فامر الله يراد به قيام الساعة و العذاب و بعثه النبي صلى الله عليه و سلم و قد اريد بلفظه الاخير كما اخرج ابن مردويه من طريق الضحاك عن ابن عباس في قوله تعالى اتى امر الله قال محمد و اعيد الضمير عليه في تستعجلوه مرادا به قيام الساعة و العذاب و منها و هي اظهرها قوله تعالى و لقد خلقنا الانسان من سلالة من طين فان المراد به آدم ثم اعاد الضمير عليه مرادا به ولده فقال ثم جعلناه نطفة في قرار مكين و منها قوله تعالى لا تسألوا عن اشياء ان تبدلكم تسوكم ثم قال قد سألها قوم من قبلكم اي اشياء آخر لان الاولين لم يسألوا عن الاشياء التي سألوا عنها الصحابة فنهوا عن سوالها الالتفات نقل الكلام من اسلوب الى آخر اعنى من التكلم او الخطاب او الغيبة الى آخر منها بعد التعبير بالاول هذا هو المشهور و قال السكاكي اما ذلك او التعبير باحدهما فيما حقه التعبير بغيره و له فوائد منها تطرية الكلام و صيانة السمع

و المراد البعيد و هو الجسد قال و من ذلك قوله بعد ذكر اهل الكتاب من اليهود و النصارى حيث قال و لين اتيت الذين اوتوا الكتاب بكل آية ما تبعوا قبلتك و ما انت بتابع قبلتهم و لما كان الخطاب لموسى من الجانب الغربي و توجهت اليه اليهود وتوجهت النصارى الى المشرق كانت قبلة الاسلام وسطا بين القبلتين قال الله تعالى و كذلك جعلناكم امة وسطا اي خيارا و ظاهرا للفظ يوم التوسط مع ما يعضده من توسط قبلة المسلمين صدق على لفظة وسط ههنا ان يسمى تعالى به لاحتمالها المعنيين و لما كان المراد ابعدهما و هو الخيار صلحت ان يكون من امثلة التورية قلت و هي مرشحة بلازم الموري عنه و هو قوله لتكونوا شهداء على الناس فانه من لوازم كونهم خيارا اي عدولا و الآتيان قبله من قسم المجردة و من ذلك قوله و النجم والشجر يسجدان فان النجم يطلق على الكوكب و يرشحه له ذكر الشمس و القمر و على ما لا ساق له من النبات و هو المعنى البعيد له و هو المقصود في الآية ونقلت من خط شيخ الاسلام بن حجران من التوراة في القرآن قوله تعالى و ما ارسلناك الا كافة للناس فان كافة بمعنى مانع اي تكفهم عن الكفر و المعصية و الهاء للمبالغة و هذا معني بعيد و المعنى القريب المتبادران المراد جامعة بمعنى جميعا لكن منع من حمله على ذلك ان التاكيد يتراخي عن المؤكد فكما لا تقول رأيت جميعا الناس لا تقول رأيت كافة الناس الاستخدام هو و التورية اشرف انواع البديع و هما سيان بل فضله بعضهم عليها و لهم فيه عبارتان احدهما ان يوتى بلفظ له معنيان فاكثر مرادا به احد معانيه ثم يوتى بضميره مرادا به المعنى الاخر و هذه طريقة

بعده فسياتي في نوع الجدل مع انواع آخر مزيدة و اما التمكين و الثمانية بعده فسياتي في نوع الفواصل و اما حسن التخلص و الاستطراد فسياتيان في نوع المناسبات و اما حسن الابتداء و براعة الختام فسياتيان في نوع الفواتح و الخواتم و ها انا اورد الباقي مع زوائد و نفائس لا توجد مجموعه في غير هذا الكتاب الابهام و يدعى التورية ان يذكر لفظ له معنيان اما بالاشتراك او التواطي او الحقيقة و المجاز احدهما قريب و الاخر بعيد و يقصد البعيد و يوري عنه بالقريب فيتوهمه السامع من اول وهلة قال الزمخشري لا ترى بابا في البيان ادق و لا الطف من التورية و لا انفع و لا اعون على تعاطي تاويل المتشابهات في كلام الله و رسوله قال و من امثلتها الرحمن على العرش استوى فان الاستواء على معنيين الاستقرار في المكان و هو المعنى القريب الموري به الذي هو غير مقصود لتنزيهه تعالى عنه و الثاني الاستيلاء و الملك و هو المعنى البعيد المقصود الذي ورى عنه بالقريب المذكور انتهى و هذه التورية تسمى مجردة لانها لم يذكر فيها شيء من لوازم الموري به و لا الموري عنه و منها ما يسمى مرشحة و هي التي ذكر فيها شيء من لوازم هذا او مدا كقوله تعالى و السماء بنيناها بايدي فانه تحتمل الجارحة و هو الموري به و قد ذكر من لوازمه على جهة الترشيح البيان و يحتمل القوة و القدرة و هو البعيد المقصود قال ابن ابى الاصبع في كتابه الاعجاز و منها قالوا تالله انك لفي ضلالك القديم فالضلال يحتمل الحب و ضد الهدى فاستعمل اولاد يعقوب ضد الهدى تورية عن الحب فاليوم ننجيك ببدنك على تفسيره بالدرع فان البدن يطلق عليه و على الجسد

و فائدته تاكيد الجملة الخبرية و تحقيقها عند السامع و سياتي بسط الكلام فيه فى النوع السابع و الستين فصـــل و من اقسامه الشرط و بيض له المصنف قدر ورقة النوع الثامن و الخمسون في بدائع القرآن افرده بالتصنيف ابن ابى الاصبع فاورد فيه نحو مائة نوع و هي المجاز و الاستعارة و الكناية و الارداف و التمثيل و التشبيه و الايجاز و الاتساع و الاشارة و المساواة و البسط و الايغال و التسجيع والتسريع و الايضاح و نفى الشئ بايجابه و التتميم والتكميل و الاحتراس و الاستقصاء و التذييل و الزيادة و الترديد و التكرار و التفسير و المذهب الكلامي و القول بالموجب و المناقضة و الانتقال و الاسجال و التسليم و التمكين و التوشيح و التسهيم و رد العجز على الصدر و تشابه الاطراف و لزوم ما لا يلزم و التخيير و الايهام و هو التورية و الاستخدام و الالتفات و الاستطراد و الاطراد و الانسجام و الادماج و الافتنان و الاقتدار و ايتلاف اللفظ مع اللفظ و ايتلاف اللفظ مع المعنى و الاستدراك و الاستثناء و تاكيد المدح مما يشبه الذم و التعريف و التغاير و التقسيم والتدبيج و التنكيت و التضمين و الجناس و جمع المؤتلف والمختلف و حسن النسق و عتاب المرء نفسه و العكس و العنوان و الفوائد و القسم و المبالغة و المطابقة و المقابلة و الموازنة و المراجعة و النزاهة والابداع و المقارنة و حسن الابتداء و حسن الختام و حسن التخلص و الاستطراد فاما المجاز و ما بعده الى الايضاح فقد تقدم بعضها في انواع مفرده و بعضها في نوع الايجاز و الاطناب مع نوع آخر كالتعريض و الاحتباك و الاكتفاء و الطرد و العكس و اما نفى الشئ بايجابه فقد تقدم فى النوع الذي قبل هذا و اما المذهب الكلامي و الخمسة

يا ايها الناس ضرب مثل فاستمعوا له يا قوم هذه ناقة الله لكم آية فذروها وقد لا تعقبها نحو يا عبادي لا خوف عليكم يا ايها الناس انتم الفقراء الى الله يا ابت هذا تاويل رويايي و قد تصحبه الاستفهامية نحو يا ابت لم تعبد ما لا يسمع و لا يبصر يا ايها النبي لم تحرم يا قوم مالي ادعوكم و قد ترد صورة النداء لغيره مجازا كالاغراء و التحذير و قد اجتمعا في قوله ناقة الله و سقياها و الاختصاص كقوله رحمة الله و بركاته عليكم اهل البيت و التنبيه كقوله الا يا اسجدوا و التعجب كقوله يا حسرة على العباد و التحسر كقوله يا ليتني كنت ترابا قاعدة اصل النداء بيا ان يكون للبعيد حقيقة او حكما و قد ينادي بها القريب لنكت منها اظهار الحرص في وقوعه على اقبال المدعو نحو يا موسى اقبل ومنها كون الخطاب المتلو معتنى به نحو يا ايها الناس اعبدوا ومنها قصد تعظيم شان المدعو نحو يا رب وقد قال الله تعالى اني قريب ومنها قصد انحطاطه كقول فرعون واني لاظنك يا موسى مسحورا فائدة قال الزمخشري و غيره كثر في القرآن النداء بيا ايها دون غيره لان فيه اوجها من التاكيد و اسبابا من المبالغة منها ما في يا من التاكيد والتنبيه و ما في ها من التنبيه و ما في التدرج من الابهام في اي الى التوضيح و المقام يناسب المبالغة والتاكيد لان كل ما نادى له عباده من اوامره و نواهيه و عظاته و زواجره و وعده و وعيده و من اقتصاص اخبار الامم الماضية و غير ذلك مما انطق الله به كتابه امور عظام و خطوب جسام و معان واجب عليهم ان يتيقظوا لها و يميلوا بقلوبهم و بصائرهم اليها و هم غافلون فاقتضى الحال ان ينادوا بالاكد الابلغ

فصـــل و من اقسامه القسم نقل القراء في الاجماع على انه انشاء

فهو اذن و اورد على ذلك الاعتقاد الذي هو ظن و هو خبر صحيح قال و ليس المعنى في قوله و انهم لكاذبون ان ما تمنوا ليس بواقع لانه ورد في معرض الذم لهم و ليس في ذلك المتمنى ذم بل التكذيب و رد على اخبارهم عن انفسهم انهم لا يكذبون و انهم يؤمنون و حروف التمنى الموضوع له ليت نحو يا ليتنا نرد يا ليت قومي يعلمون يا ليتني كنت معهم فافوز و قد يتمنى بهل حيث يعلم فقده نحو فهل لنا من شفعاء فيشفعوا لنا و بلو نحو فلو ان لنا كرة فنكون و لذا نصب الفعل في جوابها و قد يتمنى بلعل فى البعيد فيعطى حكم ليت في نصب الجواب نحو لعلى ابلغ الاسباب اسباب السموات فاطلع فصـــل و من اقسامه الترجي نقل القراء في الفروق الاجماع على انه انشاء و فرق بينه و بين التمنى بانه فى الممكن والتمنى فيه و فى المستحيل وبان الترجي فى القريب و التمني فى البعيد و بان الترجي فى المتوقع و التمني في غيره و بان التمنى فى المعشوق للنفس و الترجي في غيره و سمعت شيخنا العلامة الكافيجي يقول الفرق بين التمنى و بين العرض هو الفرق بينه و بين الترجي و حرف الترجي لعل و عسى و قد يرد مجاز التوقع محذور و يسمى الاشفاق نحو لعل الساعة قريب فصـــل ومن اقسامه النداء وهو طلب اقبال المدعو على الداعي بحرف نايب مناب ادعوا و يصحب فى الاكثر الامر و النهي و الغالب تقدمه نحو يا ايها الناس اعبدوا ربكم يا عبادي فاتقون يا ايها المزمل قم الليل يا قوم استغفروا ربكم يا ايها الذين آمنوا لا تقدموا و قد يتاخر نحو و توبوا الى الله جميعا ايها المؤمنون و قد يصحبه الجملة الخبرية فتعقبها جملة الامر نحو

كن فيكون و الانعام اي تذكير النعمة نحو كلوا مما رزقكم الله و التكذيب نحو قل فأتوا بالتوراة فاتلوها قل هلم شهداء كم الذين يشهدون ان الله حرم هذا و المشورة نحو فانظر ماذا ترى و الاعتبار نحو انظروا الى ثمره اذا اثمر و التعجب نحو اسمع بهم و ابصر ذكره السكاكي في استعمال الانشاء بمعنى الخبر فصل و من اقسامه النهي و هو طلب الكف عن فعل و صيغته لا تفعل و هي حقيقة فى التحريم و ترد مجازا لمعان منها الكراهة نحو فلا تمش فى الارض مرحا و الدعاء نحو ربنا لا تزغ قلوبنا و الارشاد نحو لا تسالوا عن اشياء ان تبدلكم نسوكم و التسوية نحو اصبروا او لا تصبروا و الاحتقار و التقليل نحو و لا تمدن عينيك الآية اي فهو قليل حقير و بيان العاقبة نحو و لا تحسبن الذين قتلوا في سبيل الله امواتا بل احياء اي عاقبة الجهاد الحياة لا الموت و اليأس نحو لا تعتذروا و الاهانة نحو اخسؤا فيها و لا تكلمون فصل و من اقسامه التمنى و هو طلب حصول شئ على سبيل المحبة ولا يشترط امكان التمنى بخلاف الترجي لكن نوزع في تسمية تمنى المحال طلبا بان ما لا يتوقع كيف يطلب قال في عروس الافراح فالاحسن ما ذكره الامام و اتباعه من ان التمنى و الترجي و النداء و القسم ليس فيها طلب بل هو تنبيه و لا نزاع في تسميته انشاء انتهى و قد بالغ قوم فجعلوا التمنى من قسم الخبر و ان معناه النفي و الزمخشري ممن جزم بخلافه ثم استشكل دخول التكذيب في جوابه في قوله يا ليتنا نرد و لا نكذب الى قوله و انهم لكاذبون و اجاب بتضمنه معنى العدة فتعلق به التكذيب و قال غيره التمنى لا يصح فيه الكذب و انما الكذب فى التمنى الذي يترجح عند صاحبه وقوعه

النسيان منكر مطلقا و لا يكون نسيان النفس حال الامر اشد منه حال عدم الامر لان المعصية لاتزداد بشاعتها بانضمامها الى الطاعة لان جمهور العلماء على ان الامر بالبر واجب و ان كان الانسان ناسيا لنفسه و امره لغيره بالبر كيف يضاعف معصيته نسيان النفس و لا ياتى الخير بالشر قال في عروس الافراح و يجاب بان فعل المعصية مع النهي عنها افحش لانها تجعل حال الانسان كالمتناقض و يجعل القول كالمخالف للفعل و لذلك كانت المعصية مع العلم افحش منها مع الجهل قال و لكن الجواب عن ان الطاعة الصرفة كيف تضاعف المعصية المقارنة لها من جنسها فيه دقة

## فصل

من اقسام الانشاء الامر و هو طلب فعل غير كف و صيغته افعل و ليفعل و هي حقيقة في الايجاب نحو اقيموا الصلوة فليصلوا معك و ترد مجازا لمعان آخر منها الندب نحو و اذا قرئ القرآن فاستمعوا له و انصتوا و الاباحة نحو و كاتبوهم نص الشافعي على ان الامر فيه للاباحة و منه و اذا حللتم فاصطادوا و الدعاء من السافل للعالي نحو رب اغفرلي و التهديد نحو اعملوا ما شئتم اذ ليس المراد الامر بكل عمل شاؤا و الاهانة نحو ذق انك انت العزيز الكريم و التسخير اي التذييل نحو كونوا قردة عبر به عن نقلهم من حالة الي حالة اذ لا لا لهم فهو اخص من الاهانة و التعجيز نحو فأتوا بسورة من مثله اذ ليس المراد طلب ذلك منهم بل اظهار عجزهم و الامتنان نحو كلوا من ثمره اذا اثمر و التعجب نحو انظر كيف ضربوا لك الامثال و التسوية نحو فاصبروا او لا تصبروا و الارشاد نحو و اشهدوا اذا تبايعتم و الاحتقار نحو القوا ما انتم ملقون و الانذار نحو قل تمتعوا و الاكرام نحو ادخلوها بسلام و التكوين و هو اعم من التسخير نحو

عن سببه و كانه يقول اي شيء عرض لي في حال عدد روية الهدهد و قد صرح في الكشاف ببقاء الاستفهام في هذه الآية و اما التنبيه على الضلال فالاستفهام فيه حقيقي لان معنى اين تذهب اخبرني الى اي مكان تذهب فاني لا اعرف ذلك و غاية الضلال لا يشعر بها الى اين تنتهي و اما التقرير فان قلنا المراد به الحكم بثبوته فهو خبر بان المذكور عقيب الاداة واقع او طلب اقرار المخاطب به مع كون السائل يعلم فهو استفهام يقرر المخاطب اي يطلب منه ان يكون مقرا به و في كلام اهل الفن ما يقتضي الاحتمالين و الثاني اظهر و في الايضاح تصريح به ولا يدع في صدور الاستفهام ممن يعلم المستفهم عنه لانه طلب الفهم اما طلب فهم المستفهم او وقوع فهم لمن لم يفهم كائنا من كان و بهذا تنحل اشكالات كثيرة في مواقع الاستفهام و يظهر بالتامل بقاء معنى الاستفهام مع كل امر من الامور المذكورة انتهى ملخصا الثاني القاعدة ان المنكر يجب ان يلي الهمزة و اشكل عليها قوله تعالى افاصفاكم ربكم بالبنين فان الذي يليها هنا الاصفاء بالبنين وليس هو المنكر انما المنكر قولهم انه اتخذ من الملائكة اناثا و اجيب بان لفظ الاصفاء يشعر بزعم ان البنات لغيرهم او بان المراد مجموع الجملتين و ينحل منهما كلام واحد و التقدير اجمع بين الاصفاء بالبنين و اتخاذ البنات و اشكل منه قوله اتأمرون الناس بالبر و تنسون انفسكم و وجه الاشكال انه لا جائز ان يكون المنكر امر الناس بالبر كما تقتضيه القاعدة المذكورة لان امر البر ليس مما ينكر ولا نسيان النفس فقط لانه يصير ذكرا من الناس بالبر لا مدخل له و لا مجموع الامرين لانه يلزم ان تكون العبادة جزء المنكر ولا نسيان النفس بشرط الامر لان

نحو من ذا الذي يشفع عنده الا باذنه السادس و العشرون التحقير نحو اهذا الذي يذكر الهتكم اهذا الذي بعث الله رسولا و يحتمله و ما قبله قرأة من فرعون السابع و العشرون الاكتفاء نحو اليس في جهنم مثوي للمتكبرين الثامن و العشرون الاستبعاد نحو اني لهم الذكرى التاسع و العشرون الايناس و ما تلك بيمينك يا موسى الثلاثون التهكم و الاستهزاء نحو اصلواتك تأمرك الا تأكلون ما لكم لا تنطقون الحادي و الثلاثون التأكيد لما سبق من معنى اداة الاستفهام قبله كقوله افمن حق عليه كلمة العذاب افانت تنقذ من في النار قال الموفق عبد اللطيف البغدادي اي من حقت عليه كلمة العذاب فانك لا تنقذه فمن للشرط و الفاء جواب الشرط و الهمزة في افانت دخلت معادة مؤكدة لطول الكلام و هذا نوع من انواعها و قال الزمخشري الهمزة الثانية هي الاولى كررت لتوكيد معنى الانكار و الاستبعاد الثاني و الثلاثون الاخبار نحوا في قلوبهم مرض ام ارتابوا هل اتى على الانسان تنبيهات الاول هل يقال ان معنى الاستفهام في هذه الاشياء موجود و انضم اليه معنى آخر او مجرد عن الاستفهام بالكلية قال في عروس الافراح محل نظر قال و الذي يظهر الاول قال و يساعده قول التنوخي في الاقصى القريب ان لعل تكون للاستفهام مع بقاء الترجي قال و مما يرجحه ان الاستبطاء في كقولك كم ادعوك معناه ان الدعاء وصل الى حد لا اعلم عدده فانا اطلب ان اعلم عدده و العادة تقضي بان الشخص انما يستفهم عن عدد ما صدر منه اذا كثر فلم يعلمه و في طلب فهم عدده ما يشعر بالاستبطاء و اما التعجب فالاستفهام معه مستمر فمن تعجب من شيء فهو بلسان الحال سائل

الافتخار نحو اليس لي ملك مصر الثامن التفجع نحو ما لهذا الكتاب لا يغادر صغيرة و لا كبيرة التاسع التهويل و التخويف نحو الحاقة ما الحاقة القارعة ما القارعة العاشر عكسه و هو التسهيل و التخفيف نحو و ما ذا عليهم لو آمنوا الحادي عشر التهديد والوعيد نحو الم نهلك الاولين الثاني عشر التكثير نحو و كم من قرية اهلكنا ها الثالث عشر التسوية و هو الاستفهام الداخل على جملة يصح حلول المصدر محلها نحو سواء عليهم أ انذرتهم ام لم تنذرهم الرابع عشر الامر نحو اسلمتم اي اسلموا فهل انتم منتهون اي انتهوا ا تصبرون اي اصبروا الخامس عشر التنبيه وهو من اقسام الامر نحو الم تر الى ربك كيف مد الظل اي انظر الم تر ان الله انزل من السماء ماء فتصبح الارض مخضرة ذكره صاحب الكشاف عن سيبويه ولذلك وقع الفعل في جوابه و جعل منه قوم فاين تذهبون للتنبيه على الضلال و كذا من يرغب عن ملة ابراهيم الا من سفه نفسه السادس عشر الترغيب نحو من ذا الذي يقرض الله قرضا حسنا هل ادلكم على تجارة تنجيكم السابع عشر النهي نحو اتخشونهم فالله احق ان تخشوه بدليل فلا تخشو الناس و اخشون ما غرك بربك الكريم اي لا تغتربه الثامن عشر الدعاء و هو كالنهي الا انه من الادنى الى الاعلى نحو اتهلكنا بما فعل السفهاء منا اي لا تهلكنا التاسع عشر الاسترشاد نحو اتجعل فيها من يفسد فيها العشرون التمني نحو فهل لنا من شفعاء الحادي و العشرون الاستبطاء نحو متى نصر الله الثاني و العشرون العرض نحو الا تحبون ان يغفر الله لكم الثالث و العشرون التخصيص نحو الا تقاتلون قوما نكثوا الرابع والعشرون التجاهل نحو أ انزل عليه الذكر من بيننا الخامس و العشرون التعظيم

ذلك من قبيل الانكار و نقل ابو حيان عن سيبويه ان استفهام التقرير لا يكون بهل انما تستعمل فيه الهمزة ثم نقل عن بعضهم ان هل تاتي تقريرا كما في قوله تعالى هل في ذلك قسم لذي حجر و الكلام مع التقرير موجب و لذلك يعطف عليه صريح الموجب فالاول كقوله تعالى الم نشرح لك صدرك و وضعنا عنك وزرك الم يجدك يتيما فاوى و وجدك الم يجعل كيدهم في تضليل و ارسل و الثاني نحوا اكذبتم بآياتي و لم تحيطوا بها علما على ما قرره الجرجاني من فعلها مثل و جحدوا بها و استيقنتها انفسهم ظلما و علوا و حقيقة استفهام التقرير انه استفهام انكار و الانكار نفي و قد دخل على النفي و نفى النفي اثبات و من امثلته اليس الله بكاف عبده الست بربكم و جعل منه الزمخشري الم تعلم ان الله على كل شيء قدير الرابع التعجب او التعجيب نحو كيف تكفرون بالله ما لي لا ارى الهدهد و قد اجتمع هذا القسم و سابقاه في قوله اتأمرون الناس بالبر قال الزمخشري الهمزة للتقرير مع التوبيخ و التعجب من حالهم و يحتمل التعجب و الاستفهام الحقيقي ما و لا هم عن قبلتهم الخامس العتاب كقوله الم يأن للذين امنوا ان تخشع قلوبهم لذكر الله قال ابن مسعود ما كان بين اسلامهم و بين ان عوتبوا بهذه الآية الا اربع سنين اخرجه الحاكم و من الطفه ما عاتب الله به خير خلقه بقوله عفا الله عنك لم اذنت لهم و لم يتادب الزمخشري بادب الله في هذه الآية على عادته في سوء الادب السادس التذكير و فيه نوع اختصار كقوله الم اعهد اليكم يا بني آدم ان لا تعبدوا الشيطان الم اقل لكم اني اعلم غيب السموات و الارض هل علمتم ما فعلتم بيوسف و اخيه السابع

او اشربته تلك المعاني و لا يختص التجوز في ذلك بالهمزة خلافا للصفار الاول الانكار و المعنى فيه على النفي وما بعده منفي و لذلك تصحبه الا كقوله فهل يهلك الا القوم الفاسقون و هل نجازي الا الكفور و عطف عليه المنفي في قوله فمن يهدي من اضل الله و مالهم من ناصرين اي لا يهدي و منه انؤمن لك و اتبعك الارذلون انؤمن لبشرين مثلنا اي لا نؤمن اله البنات و لكم البنون الكم الذكر و له الانثى اي لا يكون هذا ا شهدوا خلقهم اي ما شهدوا ذلك و كثيرا ما يصحبه التكذيب و هو في الماضي بمعنى لم يكن و في المستقبل بمعنى لا يكون نحوا فاصفا كم ربكم بالبنين الاية اي لم يفعل ذلك انلزمكموها و انتم لها كارهون اي لا يكون هذا الالزام الثاني التوبيخ و جعله بعضهم من قبيل الانكار الا ان الاول انكار ابطال و هذا انكار توبيخ و المعنى على انما بعده واقع جدير بان ينفي فالنفي هنا قصدي و الاثبات قصدي عكس ما تقدم و يعبر عن ذلك بالتفريع ايضا نحوا فعصيت امري ا تعبدون ما تنحتون ا تدعون بعلا و تذرون احسن الخالقين و اكثر ما يقع التوبيخ في امر ثابت و بخ على فعله كما ذكر و يقع على ترك فعل كان ينبغي ان يقع كقوله او لم نعمركم ما يتذكر فيه من تذكر الم تكن ارض الله واسعة فتهاجروا فيها الثالث التقرير و هو حمل المخاطب على الاقرار و الاعتراف بامر قد استقر عنده قال ابن جني و لا يستعمل ذلك بهل كما استعمل بغيرها من ادوات الاستفهام و قال الكندي ذهب كثير من العلماء في قوله هل يسمعونكم اذ تدعون او ينفعونكم الى ان هل تشارك الهمزة في معنى التقرير و التوبيخ الا اني رأيت ابا علي ابي ذلك و هو معذور فان

صيغة المبالغة و غيرها في صفات الله سواء فى الاثبات فجرى النفي على ذلك التاسع انه قصد التعريض بان ثم ظلاما للعبيد من ولاة الجور و يجاب عن الثانية بهذه الاجوبة و بعاشر و هو مناسبة رؤس الآى فائدة قال صاحب الياقوتة قال ثعلب و المبرد العرب اذا جاءت بين الكلام بجحدين كان الكلام اخبارا نحو و ما جعلناهم جسدا لا يأكلون الطعام المعنى انما جعلناهم جسدا يأكلون الطعام و اذا كان الجحد في اول الكلام كان جحدا حقيقيا نحو ما زيد بخارج و اذا كان في اول الكلام جحدان كان احدهما زائد او عليه في ما ان مكنا كم فيه في احد الاقوال

فصل من افسام الانشاء الاستفهام و هو طلب الفهم و هو بمعنى الاستخبار و قيل لاستخبار ما سبق اولا و لم يفهم حق الفهم فاذا سألت عنه ثانيا كان استفهاما حكاه ابن فارس في فقه اللغة و ادواته الهمزة و هل و ما و من و اى و كم و كيف و اين و انى و متى و ايان و مرت فى الادوات قال ابن مالك فى المصباح و ما عدا الهمزة نائب عنها و لكونه طلب ارتسام صورة ما فى الخارج فى الذهن لزم ان لا يكون حقيقة الا اذا صدر من شاك مصدق بامكان الاعلام فان غير الشاك اذا استفهم يلزم منه تحصيل الحاصل و اذا لم يصدق بامكان الاعلام انتفت عنه فائدة الاستفهام قال بعض الايمة و ما جاء فى القرآن على لفظ الاستفهام فانما يقع في خطاب الله على معنى ان المخاطب عنده علم ذلك الاثبات او النفي حاصل و قد تستعمل صيغة الاستفهام في غيره مجازا و الف في ذلك العلامة شمس الدين بن الصائغ كتابا سماه روض الافهام في اقسام الاستفهام و قال فيه قد توسعت العرب فاخرجت الاستفهام عن حقيقته لمعان

و انما يقال الضوء على النور الكثير و لذلك قال هو الذي جعل الشمس ضياء و القمر نورا نفى الضوء دلالة على النور فهو اخص منه فعدمه يوجب عدم الضوء بخلاف العكس و القصد ازالة النور عنهم اصلا و لذا قال عقبه و تركهم في ظلمات ومنه ليس بي ضلالة ولم يقل ضلال كما قالوا انا لفراك في ضلال لانها اعم منه فكان ابلغ في نفى الضلال و عبر عن هذا بان نفى الواحد يلزم منه نفى الجنس البتة و بان نفى الادنى يلزم منه نفى الاعلى و الثاني كقوله و جنة عرضها السموات و الارض و لم يقل طولها لان العرض اخص اذ كلما له عرض فله طول و لا ينعكس و نظير هذه القاعدة ان نفى المبالغة فى الفعل لا يستلزم نفي اصل الفعل و قد اشكل على هذا آيتان قوله تعالى و ما ربك بظلام للعبيد و قوله و ما كان ربك نسيا و اجيب عن الآية الاولى باجوبة احدها ان ظلاما و ان كان للكثيرة لكنه جئ به في مقابلة العبيد الذي هو جمع كثرة و يرشحه انه تعالى قال علام الغيوب فقابل صيغة فعال بالجمع و قال في آية اخرى عالم الغيب فقابل صيغة فاعل الدالة على اصل الفعل بالواحد الثاني انه نفى الظلم الكثير فينتفى القليل ضرورة لان الذي يظلم انما يظلم لانتفاعه بالظلم فاذا ترك الكثير مع زيادة نفعه فلان يترك القليل اولى الثالث انه على النسب اي بذي ظلم حكاه ابن مالك عن المحققين الرابع انه اتى بمعنى فاعل لا كثرة فيه الخامس ان اقل القليل لورود منه تعالى لكان كبيرا كما يقال زلة العالم كبيرة السادس انه اراد ليس بظالم تاكيدا للنفي فعبر عن ذلك بليس بظلام السابع انه ورد جوابا لمن قال ظلام و التكرار اذ اورد جوابا لكلام خاص لم يكن له مفهوم الثامن ان

لا يبصرون فان المعتزلة احتجوا بها على نفى الروية و ان النظر في قوله الى ربها ناظرة لا يستلزم الابصار و رد بان المعنى انها تنظر اليه باقبالها عليه و ليست تبصر شيئا و لقد علموا لمن اشتراه ماله فى الآخرة من خلاق و لبئس ما شروا به انفسهم لو كانوا يعلمون فانه وصفهم اولا بالعلم على سبيل التوكيد القسمى ثم نفاه اخرا عنهم لعدم جريهم على موجب العلم قاله السكاكي الرابع قالوا المجاز يصح نفيه بخلاف الحقيقة و اشكل على ذلك و ما رميت اذ رميت و لكن الله رمى فان المنفي فيه هو الحقيقة و اجيب بان المراد بالرمى هنا المترتب عليه وهو وصوله الى الكفار قالوا رد عليه النفي هنا مجازا لا حقيقة والتقدير وما رميت خلقا اذ رميت كسبا او ما رميت انتهاء اذ رميت ابتداء الخامس نفى الاستطاعة قد يراد به نفى القدرة والامكان وقد يراد به نفى الامتناع و قد يراد به الوقوع بمشقة و كلفة من الاول فلا يستطيعون توصية و لا يستطيعون ردها فما اسطاعوا ان يظهروه و ما استطاعوا له نقبا و من الثاني هل يستطيع ربك على القرأتين اى هل يفعل او تجيبنا الى ان تسأل فقد علموا ان الله قادر على الانزال و ان عيسى قادر على السوال و من الثالث انك لن تستطيع معي صبرا قاعدة نفى العام يدل على نفى الخاص و ثبوته لا يدل على ثبوته و ثبوت الخاص يدل على ثبوت العام و نفيه لا يدل على نفيه و لا شك ان زيادة المفهوم من اللفظ يوجب الالتذاذ به فلذلك كان نفى العام احسن من نفى الخاص و اثبات الخاص احسن من اثبات العام فالاول كقوله فلما اضاءت ما حوله ذهب الله بنورهم لم يقل بضوئهم بعد قوله اضاءت لان النور اعم من الضوء اذ يقال على القليل و الكثير

قال لم و ما لتوكيد معنى النفي فى الماضي و تفيد الاستقبال ايضا و لهذا تفيد لما الاستمرار تنبيهات الاول زعم بعضهم ان شرط صحة النفي عن الشيء صحة اتصاف المنفي عنه بذلك الشيء و هو مردود بقوله و ما ربك بغافل عما تعملون و ما كان ربك نسيا لا تأخذه سنة و لا نوم و نظائره و الصواب ان انتفاء الشيء عن الشيء قد يكون لكونه لا يمكن منه عقلا و قد يكون لكونه لا يقع منه مع امكانه الثاني نفى الذات الموصوفة قد يكون نفيا للصفة دون الذات و قد تكون نفيا للذات ايضا من الاول و ما جعلنا هم جسدا لا يأكلون الطعام اى بل هم جسد يأكلونه و من الثاني لا يسألون الناس الحافا اى لا سوال لهم اصلا فلا يحصل منهم الحاف ما للظالمين من حميم و لا شفيع يطاع اى لا شفيع لهم اصلا فما تنفعهم شفاعة الشافعين اى لا شافعين لهم فتنفعهم شفاعتهم بدليل فما لنا من شافعين و يسمى هذا النوع عند اهل البديع نفى الشيء بايجابه و عبارة ابن رشيق في تفسيره ان يكون الكلام ظاهره ايجاب الشيء وباطنه نفيه بان ينفى ما هو من سببه كوصفه و هو المنفي فى الباطن و عبارة غيره ان ينفى الشيء مقيدا و المراد نفيه مطلقا مبالغة فى النفي و تاكيدا له و منه و من يدع مع الله الها آخر لا برهان له به فان الاله مع الله لا يكون الا عن غير برهان و يقتلون النبيين بغير الحق فان قتلهم لا يكون الا بغير الحق رفع السموات بغير عمد ترونها فانها لا عمد لها اصلا الثالث قد يبقى الشيء رأسا لعدم كمال وصفه او انتفاء ثمرته كقوله في صفة اهل النار لا يموت فيها و لا يحيى فنفي عنه الموت لانه ليس بموت صريح و نفي عنه الحياة لانها ليست بحياة طيبة و لا نافعة و تراهم ينظرون اليك و هم

فرع من اقسام الخبر الوعد و الوعيد نحو سنريهم آياتنا فى الآفاق و سيعلم الذين ظلموا و في كلام ابن قتيبة ما يوهم انه انشاء فرع من اقسام الخبر النفي بل هو شطر الكلام كله و الفرق بينه و بين الجحد ان النافي ان كان صادقا سمى كلامه نفيا و لا يسمى جحدا و ان كان كاذبا سمى جحدا و نفيا ايضا فكل جحد نفي و ليس كل نفي جحدا ذكره ابو جعفر النحاس و ابن الشجري و غيرهما مثال النفي ما كان محمد ابا احد من رجالكم و مثال الجحد نفي فرعون و قومه آيات موسى قال الله تعالى فلما جاءتهم آياتنا مبصرة قالوا هذا سحر مبين و جحدوا بها و استيقنتها انفسهم و ادوات النفي لا ولات و ليس و ما و ان و لم و لما و قد تقدمت معانيها و ما افترقت منه في نوع الادوات و نورد هنا فائدة زائدة قال النحوي اصل ادوات النفي لا و ما لان النفي اما فى الماضي و اما فى المستقبل و الاستقبال اكثر من الماضي ابدا و لا اخف من ما فوضعوا الاخف للاكثر ثم ان النفي فى الماضي اما يكون نفيا واحدا او مستمرا او نفيا فيه احكام متعددة و كذلك النفي فى المستقبل فصار النفي على اربعة اقسام و اختاروا له اربع كلمات ما و لم و ان و لا و اما ان و لما فليستا باصلين فما و لا فى الماضي و المستقبل متقابلان و لم كانه ماخوذ من لا و ما لان ما نفي للاستقبال لفظا و المضى معنى فاخذ اللام من لاء التي هي لنفى المستقبل و الميم من ماء التي هي لنفى الماضي و جمع بينهما اشارة الى ان في لم اشارة الى المستقبل و الماضي و قدم اللام على الميم اشارة الى ان لا هي اصل النفي و لهذا ينفى بها في اثناء الكلام فيقال لم يفعل زيد و لا عمرو و اما لما فتركيب بعد تركيب كانه

و قال ابن الصائغ استعظام صفة خرج بها المتعجب منه عن نظائره
و قال الزمخشري معنى التعجب تعظيم الامر في قلوب السامعين
لان التعجب لا يكون الا من شيء خارج عن نظائره و اشكاله و قال
الرماني المطلوب فى التعجب الابهام لان من شان الناس ان يتعجبوا
مما لا يعرف سببه فكلما استبهم السبب كان التعجب احسن قال
و اصل التعجب انما هو للمعنى الخفي سببه و الصيغة الدالة عليه
تسمى تعجبا مجازا قال و من اجل الابهام لم تعمل نعم الا فى الجنس
من اجل التفخيم ليقع التفسير على نحو التفخيم بالاضمار قبل الذكر
ثم قد وضعوا للتعجب صيغا من لفظه و هي ما افعل و افعل به
و صيغا من غير لفظه نحو كبر كقوله كبرت كلمة تخرج من افواههم كبر
مقتا عند الله كيف تكفرون بالله قاعدة قال المحققون اذا ورد التعجب
من الله صرف الى المخاطب كقوله فما اصبرهم على النار اى هولاء
يجب ان يتعجب منهم و انما لا يوصف تعالى بالتعجب لانه استعظام
يصحبه الجهل و هو تعالى منزه عن ذلك ولهذا يعبر جماعة بالتعجيب
بدله اى انه تعجيب من الله للمخاطبين و نظير هذا مجئ الدعاء
و الترجي لله تعالى انما هو بالنظر الى ما تفهمه العرب اى هولاء
مما يجب ان يقال لهم عندكم هذا و لذلك قال سيبويه في قوله لعله
يتذكر او يخشى المعنى اذهبا على رجائكما و طمعكما و في قوله ويل
للمطففين ويل للمكذبين لا نقول هذا دعاء لان الكلام بهذا قبيح ولكن
العرب انما كلموا بكلامهم و جاء القرآن على لغتهم و على ما يعنون فكانه
قيل لهم ويل للمطففين اى هولاء ممن وجب هذا القول لهم لان هذا
الكلام انما يقال لصاحب الشر و الهلكة فقيل هولاء ممن دخل فى الهلكة

تحصيلها او الكف عنها و الاول الاستفهام و الثاني الامر و الثالث النهي و ان لم يفد طلبا بالوضع فان لم يحتمل الصدق و الكذب سمى تنبيها و انشاء لانك نبهت به على مقصودك و انشأته اى ابتكرته من غير ان يكون موجودا فى الخارج سواء افاد طلبا باللازم كالتمني و الترجي و النداء و القسم ام لا كانت طالق و ان احتملهما من حيث هو فهو الخبر فصـــل القصد بالخبر افادة المخاطب و قد يرد بمعنى الامر نحو و الوالدات يرضعن و المطلقات يتربصن و بمعنى النهي نحو لا يمسه الا المطهرون و بمعنى الدعاء نحو و اياك نستعين اى اعنا و منه تبت يدا ابي لهب و تب فانه دعاء عليه و كذا قاتلهم الله و غلت ايديهم و لعنوا بما قالوا و جعل منه قوم حصرت صدورهم قالوا هو دعاء عليهم بضيق صدورهم عن قتال احد و نازع ابن العربي في قولهم ان الخبر يرد بمعنى الامر او النهي فقال في قوله تعالى فلا رفث ليس نفيا لوجود الرفث بل نفي لمشروعيته فان الرفث يوجد من بعض الناس و اخبار الله لا يجوز ان تقع بخلاف مخبره و انما يرجع النفي الى وجوده مشروعا لا الى وجوده محسوسا كقوله و المطلقات يتربصن و معناه مشروعا لا محسوسا فانا نجد مطلقات لا يتربصن فعاد النفي الى الحكم الشرعي لا الى الوجود الحسي و كذا لا يمسه الا المطهرون اى لا يمسه احد منهم شرعا فان وجد المس فعلى خلاف حكم الشرعي قال و هذه الدقيقة التي فاتت العلماء فقالوا ان الخبر يكون بمعنى النهي و ما وجد ذلك قط و لا يصح ان يوجد فانهما يختلفان حقيقة و يتباينان وصفا انتهي فرع من اقسامه على الاصح التعجب قال ابن فارس و هو تفضيل الشئ على اضرابه

تسعة باسقاط الاستفهام لدخوله فى المسألة وقيل ثمانية باسقاط التشفع لدخوله فيها و قيل سبعة باسقاط الشك لانه من قسم الخبر و قال الاخفش هي ستة خبر و استخبار و امر و نهي و نداء و تمن و قال بعضهم خمسة خبر و امر و تصريح و طلب و نداء و قال قوم اربعة خبر و استخبار و طلب و نداء و قال كثيرون ثلاثة خبر و طلب و انشاء قالوا لان الكلام اما ان يحتمل التصديق او التكذيب اولا الاول الخبر و الثاني ان اقترن معناه بلفظه فهو الانشاء و ان لم يقترن بل تاخر عنه فهو الطلب و المحققون على دخول الطلب فى الانشاء و ان معنى اضرب مثلا و هو طلب الضرب مقترن بلفظه و اما الضرب الذي يوجد بعد ذلك فهو متعلق الطلب لا نفسه و قد اختلف الناس في حد الخبر فقيل لا يحد لغيره و قيل لانه ضروري لان الانسان يفرق بين الانشاء و الخبر ضرورة و رجحه الامام فى المحصول و الاكثر على حده فقال القاضي ابو بكر و المعتزلة الخبر الكلام الذي يدخله الصدق و الكذب فاورد عليه خبر الله تعالى فانه لا يكون الا صادقا فاجاب القاضي بانه يصح دخوله لغة و قيل الذي يدخله التصديق و التكذيب و هو سالم من الايراد المذكور و قال ابو الحسين البصري كلام يفيد بنفسه نسبة فاورد عليه نحو قم فانه يدخل فى الحد لان القيام منسوب و الطلب منسوب و قيل الكلام المفيد بنفسه اضافة امر من الامور الى امر من الامور نفيا و اثباتا و قيل القول المقتضي بصريحه نسبة معلوم الى معلوم بالنفي او الاثبات و قال بعض المتاخرين الانشاء ما يحصل مدلوله فى الخارج بالكلام و الخبر خلافه و قال بعض من جعل الاقسام ثلاثة الكلام ان افاد بالوضع طلبا فلا يخلو اما ان يطلب ذكر الماهية او

و استوت على الجودى قال فى الاقصى القريب و نكتة افادة ان هذا الامر واقع بين القولين لا محالة و لو اتى به آخرا لكان الظاهر تاخره فيتوسطه ظهر كونه غير متاخر ثم فيه اعتراض في اعتراض فان وقضى الامر معترض بين و غيض و استوت لان الاستواء يحصل عقب الغيض فقوله و لمن خاف مقام ربه جنتان الى قوله متكئين على فرش فيه اعتراض بسبع جمل اذا اعرب حالا منه و من وقوع اعتراض في اعتراض فلا اقسم بمواقع النجوم و انه لقسم لو تعلمون عظيم انه لقرآن كريم اعترض بين القسم و جوابه بقوله و انه لقسم الآية و بين القسم و صفته بقوله لو تعلمون تعظيما للمقسم به و تحقيقا لاجلاله و اعلاما لهم بان له عظمة لا يعلمونها قال الطيبي فى التبيان و وجه حسن الاعتراض حسن الافادة مع ان مجيئه مجئ ما لا يترقب فيكون كالحسنة تأتيك من حيث لا يحتسب النوع الحادي و العشرون التعليل و فائدته التقرير و الابلغية فان النفوس ابعث على قبول الاحكام المعللة من غيرها و غالب التعليل فى القرآن على تقدير جواب سوال اقتضته الجملة الاولى و حروفه اللام و لن و ان و اذا و الباء و كى و من و لعل وقد مضت امثلتها في نوع الادوات و مما يقتضى التعليل لفظ الحكمة كقوله حكمة بالغة و ذكر الغاية من الخلق نحو جعل لكم الارض فراشا و السماء بناء الم نجعل الارض مهادا و الجبال اوتادا النوع السابع و الخمسون فى الخبر و الانشاء اعلم ان الحذاق من النحاة و غيرهم و اهل البيان قاطبة على انحصار الكلام فيهما و انه ليس له قسم ثالث و ادعى قوم ان اقسام الكلام عشرة نداء و مسألة و امر و تشفع و تعجب و قسم و شرط و وضع و شك و استفهام و قيل

تعظيم المصاب بقوله بعد وصفه بالكبر و له ذرية و لم يقف عند ذلك حتى وصف الذرية بالضعفاء ثم ذكر استيصال الجنة التي ليس لهذا المصاب غيرها بالهلاك في اسرع وقت حيث قال فاصابها اعصار و لم يعتصر على ذكره للعلم بانه لا يحصل به سرعة الهلاك فقال فيه نار ثم لم يقف عند ذلك حتى اخبر باحتراقها لاحتمال ان تكون النار ضعيفة لا تفي باحتراقها لما فيها من الانهار و رطوبة الاشجار فاحترس عن هذا الاحتمال بقوله فاحترقت فهذا احسن استقصاء وقع في الكلام و اتمه و اكمله قال ابن ابي الاصبع و الفرق بين الاستقصاء و التتميم و التكميل ان التتميم يرد على المعنى الناقص ليتم و التكميل يرد على المعنى التام فيكمل اوصافه و الاستقصاء يرد على المعنى التام الكامل فيستقصي لوازمه و عوارضه و اوصافه و اسبابه حتى يستوعب جميع ما يقع الخواطر عليه فيه فلا يبقى لاحد فيه مساغ النوع العشرون الاعتراض و سماه قدامه التفاتا و هو الاتيان بجملة او اكثر لا محل لها من الاعراب في اثناء كلام او كلامين اتصلا معنى لنكتة غير دفع الابهام كقوله و يجعلون لله البنات سبحانه و لهم ما يشتهون فقوله سبحانه اعتراض لتنزيه الله سبحانه عن البنات و الشناعة على جاعلها و قوله لتدخلن المسجد الحرام ان شاء الله آمنين فجملة الاستثناء اعتراض للتبرك و من وقوعه بانثر من جملة فاتوهن من حيث امركم الله ان الله يحب التوابين و يحب المتطهرين نساؤكم حرث لكم فقوله نساءكم يتصل بقوله فاتوهن لانه بيان له و ما بينهما اعتراض للحث على الطهارة و تجنب الادبار و قوله و قيل يا ارض ابلعي الى قوله و قيل بعدا فيه اعتراض بثلاث جمل و هي و غيض الماء و قضى الامر

لو اقتصر على اشداء لتوهم انه لغاظهم تخرج بيضاء من غير سوء
لا يحطمنكم سليمان و جنوده و هم لا يشعرون فقوله و هم لا يشعرون
احتراس ليلا يتوهم نسبة الظلم الى سليمان و مثله فتصيبكم منهم
معرة بغير علم و كذا قوله نشهد انك لرسول الله و الله يعلم انك
لرسوله و الله يشهد ان المنافقين لكاذبون فالجملة الوسطى احتراس
ليلا يتوهم ان التكذيب بما في نفس الامر قال في عروس الافراح فان
قيل كل من ذلك افاد معنى جديدا فلا يكون اطنابا قلنا هو اطناب
لما قبله من حيث رفع توهم غيره وان كان له معنى في نفسه
النوع الثامن عشر التتميم و هو ان يوتى في كلام لا يوهم غير المراد
بلفظه بفضله تفيد نكتة كالمبالغة في قوله و يطعمون الطعام على حبه اى
مع حب الطعام اى اشتهائه فان الاطعام حينئذ ابلغ و اكثر اجرا
و مثله و آتى المال على حبه ومن يعمل من الصالحات وهو مؤمن
فلا يخاف فقوله و هو مؤمن تتميم في غاية الحسن النوع التاسع عشر
الاستقصاء و هو ان يتناول التكلم معنى فيستقصيه فياتى بجميع
عوارضه و لوازمه بعد ان يستقصى جميع اوصافه الذاتية بحيث
لا يترك لمن يتناوله بعده فيه مقالا كقوله تعالى ايود احدكم ان تكون
له جنة الآية فانه تعالى لو اقتصر على قوله جنة لكان كافيا فلم يقف
عند ذلك حتى قال في تفسيرها من نخيل و اعناب فان مصاب
صاحبها بها اعظم ثم زاد تجرى من تحتها الانهار متمما لوصفها بذلك
ثم كمل وصفها بعد التتميمين فقال له فيها من كل الثمرات فاتى بكل
ما يكون فى الجنات ليشتد الاسف على افسادها ثم قال في وصف
صاحبها و اصابه الكبر ثم استقصى المعنى في ذلك بما يوجب

اذا ولوا مدبرين فان قوله اذا ولو مدبرين زائد على المعنى مبالغة في عدم انتفاعهم و من احسن من الله حكما لقوم يوقنون فقوله لقوم يوقنون زائد على المعنى لمدح المومنين و التعريض بالذم لليهود و انهم يعبدون عن الايقان انه لحق مثل ما انكم تنطقون فقوله مثلما الى آخره ايغال زائد على المعنى لتحقيق هذا الوعد و انه واقع معلوم ضرورة لا يرتاب فيه احد النوع الخامس عشر التذييل و هو ان يؤتى بجملة عقب جملة و الثانية تشتمل على معنى الاولى لتاكيد منطوقه او مفهومه ليظهر المعنى لمن لم يفهمه و يتقرر عند من فهمه نحو ذلك جزيناهم بما كفروا و هل نجازي الا الكفور و قل جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا و ما جعلنا لبشر من قبلك الخلد ا فان مت فهم الخالدون كل نفس ذائقة الموت و يوم القيمة يكفرون بشرككم و لا ينبئك مثل خبير النوع السادس عشر الطرد و العكس قال الطيبي و هو ان يؤتي بكلامين يقرر الاول بمنطوقه مفهوم الثاني و بالعكس كقوله تعالى ليستأذنكم الذين ملكت ايمانكم و الذين لم يبلغوا الحلم منكم ثلاث مرات الى قوله ليس عليكم و لا عليهم جناح بعد هن فمنطوق الامر بالاستيذان في تلك الاوقات خاصة مقرر لمفهوم رفع الجناح فيما عداها و بالعكس و كذا قوله لا يعصون الله ما امرهم و يفعلون ما يؤمرون قلت و هذا النوع يقابله في الايجاز نوع الاحتباك النوع السابع عشر التكميل و يسمى بالاحتراس و هو ان يؤتى في كلام يوهم خلاف المقصود بما يدفع ذلك الوهم نحو اذلة على المومنين اعزة على الكافرين فانه لو اقتصر على اذلة توهم انه لضعفهم فدفعه بقوله عزة و مثله اشداء على الكفار رحماء بينهم

رأيت كتاب الله اكبر معجز لا فضل من يهدى به الثقلان
و من جملة الاعجاز كون اختصاره بايجاز الفاظ و بسط معان
و لكنني فى الكهف ابصرت آية بها الفكر في طول الزمان عنان
و ما هي الا استطعما اهلها فقد نرى استطعماهم مثله ببيان
فما الحكمة الغراء في وضع ظاهر مكان ضمير ان ذاك لشان
فارشدعلى عادات فضلك حيرتي فما لي بها عند البيان يدان

تنبيه اعادة الظاهر بمعناه احسن اعادته بلفظه كما مر في آيات انا لا نضيع اجر المصلحين اجر من احسن عملا و نحوها و منه مايود الذين كفروا من اهل الكتاب و لا المشركين ان ينزل عليكم من خير من ربكم و الله يختص برحمته من يشاء فان انزال الخير مناسب للربوبية و اعاده بلفظ الله لان تخصيص الناس بالخير دون غيرهم مناسب للالهية لان دائرة الربوبية اوسع و منه الحمد لله الذي خلق السموات و الارض الى قوله بربهم يعدلون و اعادته في جملة اخرى احسن منه فى الجملة الواحدة لانفصالها و بعد الطول احسن من الاضمار ليلا يبقى الذهن متشاغلا بسبب ما يعود عليه فيفوته ما شرع فيه كقوله و تلك حجتنا اتيناها ابراهيم على قومه بعد قوله و اذ قال ابراهيم لابيه آزر النوع الرابع عشر الايغال و هو الامعان و هو ختم الكلام بما يفيد نكتة يتم المعنى بدونها و زعم بعضهم انه خاص بالشعر و رد بانه وقع فى القرآن من ذلك قوله يا قوم اتبعوا المرسلين اتبعوا من لايسألكم اجرا و هم مهتدون ايغال لانه يتم المعنى بدونه اذ الرسول مهتد لا محالة لكن فيه زيادة مبالغة فى الحث على اتباع الرسل و الترغيب فيه و جعل ابن ابى الاصبع منه و لا تسمع الصم الدعاء

اجر المصلحين ان الذين امنوا وعملوا الصالحات انا لا نضيع اجر من احسن عملا ومنها قصد العموم نحو وما ابرئ نفسي ان النفس لامارة بالسوء لم يقل لئلا يفهم تخصيص ذلك بنفسه اولئك هم الكافرون حقا و اعتدنا للكافرين عذابا ومنها قصد الخصوص نحو وامرأة مومنة ان وهبت نفسها للنبي لم يقل لك تصريحا بانه خاص به ومنها الاشارة الى عدم دخول الجملة في حكم الاولى نحو فان يشاء الله يختم على قلبك و يمحوا الله الباطل فان و يمحوا الله استيناف لاداخل في حكم الشرط ومنها مراعاة الجناس و منه قل اعوذ برب الناس السورة ذكره الشيخ عزالدين و مثله ابن الصائغ بقوله خلق الانسان من علق ثم قال علم الانسان ما لم يعلم كلا ان الانسان ليطغى فان المراد بالانسان الاول الجنس و بالثاني آدم او من يعلم الكتابة او ادريس و بالثالث ابوجهل ومنها مراعاة الترصيع و توازن الالفاظ في التركيب ذكره بعضهم في قوله ان تضل احداهما فتذكر احداهما الاخرى ومنها ان يتحمل ضميرا لابد منه و منه اتيا اهل قرية استطعما اهلها لو قال استطعماها لم يصح لانهما لم يستطعما القرية او استطعماهم فكذلك لان جملة استطعما صفة لقرية النكرة لا لاهل فلابد ان يكون فيها ضمير يعود عليها و لا يمكن الا مع التصريح بالظاهر كذا حرره السبكي في جواب سوال سأله الصلاح الصفدي في ذلك قال الصفدي شعر

ا سيدنا قاضي القضاة و من اذا بدأ وجهه استحى له القمران
و من كفه يوم الندا و يراعه على طرسه بحران يلتقيان
ومن اذوجت في المشكلات مسائل جلاها بفكر دائم اللمعان

ليلا يتوهم عود الضمير الى الاخ فيصير كانه مباشر بطلب خروجها وليس كذلك لما فى المباشرة من الاذى الذي تأباه النفوس الابية فاعيد لفظ الظاهر لنفي هذا و لم يقل من وعائه ليلا يتوهم عود الضمير الى يوسف لانه العائد اليه ضمير استخرجها و منها قصد تربية المهابة و ادخال الروع على ضمير السامع بذكر الاسم المقتضي لذلك كما يقول الخليفة امير المؤمنين يأمرك بكذا و منه ان الله يأمركم ان تودوا الامانات الى اهلها ان الله يأمر بالعدل ومنها قصد تقويته داعية المامور و منه فاذا عزمت فتوكل على الله ان الله يحب المتوكلين و منها تعظيم الامر نحو او لم يروا كيف يبدؤ الله الخلق ثم يعيده ان ذلك على الله يسير قل سيروا فى الارض فانظروا كيف بدأ الخلق هل اتى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا انا خلقنا الانسان و منها الاستلذاذ بذكره و منه و اورثنا الارض نتبوؤ من الجنة لم يقل منها ولهذا عدل عن ذكر الارض الى الجنة و منها قصد التوسل بالظاهر الى الوصف و منه فآمنوا بالله و رسوله النبي الامي الذي يؤمن بالله بعد قوله اني رسول الله لم يقل فآمنوا بالله ربي ليتمكن من اجراء الصفات التي ذكرها ليعلم ان الذي وجب الايمان به و الاتباع له هو من وصف بهذه الصفات و لو اتى بالضمير لم يكن ذلك لانه لا يوصف و منها التنبيه على علية الحكم نحو فبدل الذين ظلموا قولا غير الذي قيل لهم فانزلنا على الذين ظلموا رجزا فان الله عدو للكافرين لم يقل لهم اعلاما بان من عادى هولاء فهو كافر و ان الله انما عاداه لكفره فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا او كذب بآياته انه لا يفلح المجرمون والذين يمسكون بالكتاب و اقاموا الصلوة انا لا نضيع

الاسماء الحسنى قوله لا تأخذه تفسير للقيوم يسومونكم سوء العذاب يذبحون الآية فيذبحون و ما بعده تفسير للسوم ان مثل عيسى عند الله كمثل آدم خلقه من تراب الآية فخلقه و ما بعده تفسير المثل لا تتخذوا عدوي و عدوكم اولياء تلقون اليهم بالمودة فتلقون الى آخره تفسيرا لاتخاذهم اولياء الصمد لم يلد و لم يولد الآية قال محمد بن كعب القرظى لم يلد الى آخره تفسير للصمد و هو فى القرآن كثير قال ابن جني و متى كانت الجملة تفسيرا لم يحسن الوقف على ما قبلها دونها لان تفسير الشئ لاحق به و متمم له و جار مجرى بعض اجزائه النوع الثالث عشر وضع الظاهر موضع المضمر و رأيت فيه تاليفا مفردا لابن الصائغ و له فوائد منها زيادة التقرير و التمكين نحو قل هو الله احد الله الصمد و الاصل هو الصمد و بالحق انزلناه و بالحق نزل ان الله لذو فضل على الناس و لكن اكثر الناس لا يشكرون لتحسبوه من الكتاب و ما هو من الكتاب و يقولون هو من عند الله و ما هو من عند الله و منها قصد التعظيم نحو و اتقوا الله و يعلمكم الله و الله بكل شئ عليم اولئك حزب الله الا ان حزب الله هم المفلحون و قرآن الفجر ان قرآن الفجر كان مشهودا و لباس التقوى ذلك خير ذلك و منها قصد الاهانة و التحقير و نحو اولئك حزب الشيطان الا ان حزب الشيطان ينزع بينهم و منها ازالة اللبس حيث يوهم الضمير انه عين الاول نحو قل اللهم مالك الملك تؤتى الملك لو قال تؤتيه لا وهم انه الاول قاله ابن الخشاب يظنون بالله ظن السوء عليهم دائرة السوء كرر السوء لانه لو قال عليهم دائرته لا وهم ان الضمير عائد الى الله فبدأ باوعيتهم قبل وعاء اخيه ثم استخرجها من وعاء اخيه لم يقل منه

و قضينا اليه ذلك الامر ان دابر هولاء مقطوع مصبحين و منه التفصيل بعد الاجمال نحو ان عدة الشهور عندالله اثنى عشر شهرا الى قوله و منها اربعة حرم و عكسه قوله ثلاثة ايام فى الحج و سبعة اذا رجعتم تلك عشرة كاملة اعيد ذكر العشرة لرفع توهم ان الواو في سبعة بمعنى او فتكون الثلاثة داخلة فيها كما في قوله خلق الارض في يومين قال و جعل فيها رواسي من فوقها و بارك فيها وقدر فيها اقواتها في اربعة ايام فان من جملتها اليومين المذكورين اولا وليست اربعة غيرهما و هذا احسن الاجوبة فى الآية و هو الذي اشار اليه الزمخشري و رجحه ابن عبد السلام و جزم به الزملكاني في اسرار التنزيل قال ونظيره ووعدنا موسى ثلثين ليلة واتممناها بعشر فتم ميقات ربه اربعين ليلة فانه رافع لاحتمال ان يكون تلك العشرة من غير مواعدة قال ابن عساكر و فائدة الوعد بثلاثين اولا ثم بعشر ليتجدد له قرب انقضاء المواعدة و يكون فيه متناهيا مجتمع الراى حاضر الذهن لانه لو وعدنا الاربعين اولا كانت متساوية فلما فصلت استشعرت النفس قرب التمام و تجدد بذلك عزم لم يتقدم و قال الكرماني فى العجائب في قوله تلك عشرة كاملة ثمانية اجوبة جوابان من التفسير و جواب من الفقه و جواب من النحو و جواب من اللغة و جواب من المعنى و جوابان من الحساب وقد سقتها في اسرار التنزيل النوع الثاني عشر التفسير قال اهل البيان و هو ان يكون فى الكلام لبس و خفاء فيوتى بما يزيله و يفسره ومن امثلته ان الانسان خلق هلوعا اذا مسه الشر جزوعا و اذا مسه الخير منوعا فقوله اذا مسه الى آخره تفسير للهلوع كما قال ابوا العالية و غيره القيوم لا تاخذه سنة و لا نوم قال البيهقي في شرح

سوءا او يظلم نفسه و من اظلم ممن افترى على الله كذبا او قال اوحى الى و لم يوح اليه شئ بناء على انه لا يختص بالواو كما هو رأى ابن مالك فيه و فيما قبله و خص المعطوف فى الثانية بالذكر تنبيها على زيادة قبحه تنبيه المراد بالخاص و العام هنا ما كان فيه الاول شاملا للثاني لا المصطلح عليه فى الاصول النوع العاشر عطف العام على الخاص و انكر بعضهم وجوده فاخطأ و الفائدة فيه و اضحة و هو التعميم و افرد الاول بالذكر اهتماما لشانه و من امثلته ان صلاتي ونسكي و النسك العبادة فهو اعم اتيناك سبعا من المثاني والقرآن العظيم رب اغفر لي و لوالدي و لمن دخل بيتي مؤمنا و للمؤمنين و المؤمنات فان الله هو مولاه و جبريل و صالح المؤمنين و الملائكة بعد ذلك ظهير و جعل منه الزمخشري و من يدبر الامر بعد قوله قل من يرزقكم النوع الحادي عشر الايضاح بعد الابهام قال اهل البيان اذا اردت ان يتهم ثم توضح فانك تطنب و فائدته اما روية المعنى في صورتين مختلفتين الابهام و الايضاح او ليتمكن المعنى فى النفس تمكنا زائدا لوقوعه بعد الطلب فانه اعز من المنساق بلا تعب او ليكمل لذة العلم به فان الشيء اذا علم من وجه ما تشوقت النفس للعلم به من باقي وجوهه و تاملت فاذا حصل العلم من بقية الوجوه كانت لذته اشد من علمه من جميع وجوهه دفعة واحدة و من امثلته رب اشرح لي صدري فان اشرح يفيد طلب شرح شئ ماله و صدري يفيد تفسيره و بيانه وكذلك و يسر لي امري والمقام يقتضى التاكيد للارسال الموذن بتلقى الشدائد وكذا الم نشرح لك صدرك فان المقام يقتضى التاكيد لانه مقام امتنان و تفخيم وكذا

بمعنى واحد سرهم و نجواهم شرعة و منهاجا لا تبقى و لا تذر الا دعاء و نداء اطعنا ساداتنا و كبراءنا لا يمسنا فيها نصب و لا يمسنا فيها لغوب فان نصب كلغب وزنا و معنى صلوات من ربهم و رحمة عذرا او نذرا قال ثعلب هما بمعنى و انكر المبرد وجود هذا النوع فى القرآن و اول ما سبق على اختلاف المعنيين و قال بعضهم المخلص في هذا ان يعتقد ان مجموع المترادفين يحصل معنى لا يوجد عند انفراد هما فان التركيب يحدث معنى زائدا و اذا كانت كثرة الحروف تفيد زيادة المعنى فكذلك كثرة الالفاظ النوع التاسع عطف الخاص على العام و فائدته التنبيه على فضله حتى كانه ليس من جنس العام تنزيلا للتغاير فى الوصف منزلة التغاير فى الذات و حكى ابو حيان عن شيخه ابي جعفر بن الزبير انه كان يقول هذا العطف يسمى بالتجريد كانه جرد من الجملة و افرد بالذكر تفصيلا و من امثلته حافظوا على الصلوات و الصلوة الوسطى من كان عدو الله و ملائكته و رسله و جبريل و ميكال و لتكن منكم امة يدعون الى الخير و يأمرون بالمعروف و ينهون عن المنكر و الذين يمسكون بالكتاب و اقاموا الصلاة فان اقامتها من جملة التمسك بالكتاب و خصت بالذكر اظهارا لمرتبتها لكونها عماد الدين و خص جبريل و ميكال بالذكر ردا على اليهود في دعوى عداوته و ضم اليه ميكائيل لانه ملك الرزق الذي هو حيوة الاجساد كما ان جبريل ملك الوحى الذي هو حياة القلوب و الارواح و قيل ان جبريل و ميكائيل لما كانا اميرى الملائكة لم يدخلا في لفظ الملائكة اولا كما كان الامير لا يدخل في مسمى الجند حكاه الكرماني فى العجائب و من ذلك و من يعمل

و ان كان ما قبله غنيا عنه كقوله و انك لتهدى الى صراط مستقيم صراط الله الا ترى انه لولم يذكر الصراط الثاني لم يشك احد في ان الصراط المستقيم هو صراط الله و قد نص سيبويه على ان من البدل ما الغرض منه التاكيد انتهى و جعل منه ابن عبد السلام و اذ قال ابراهيم لابيه آزر قال و لا بيان فيه لان الاب لا يلتبس بغيره ورد بانه يطلق على الجد فابدل لبيان ارادة الاب حقيقة النوع السابع عطف البيان و هو كالصفة فى الايضاح لكن يفارقها في انه وضع ليدل على الايضاح باسم مختص به بخلافها فانها وضعت لتدل على معنى حاصل في متبوعها و فرق ابن كيسان بينه و بين البدل بان البدل هو المقصود و كانك قررته في موضع المبدل منه و عطف البيان و ما عطف عليه كل منهما مقصود وقال ابن مالك في شرح الكافية عطف البيان يجري مجرى النعت في تكميل متبوعه و يفارقه في ان تكميله بشرح و تبيين لا بدلالة على معنى فى المتبوع او سببته و مجرى التوكيد في تقوية دلالته و يفارقه في انه لا يرفع توهم مجاز و مجرى البدل في صلاحيته للاستقلال و يفارقه في انه غير منوى الاطراح و من امثلته فيه آيات بينات مقام ابراهيم من شجرة مباركة زيتونة و قد ياتي لمجرد المدح بلا ايضاح و منه جعل الله الكعبة البيت الحرام فالبيت الحرام عطف بيان للمدح لا للايضاح النوع الثامن عطف احد المترادفين على الآخر والقصد منه التاكيد ايضا و جعل منه انما اشكو ابثي و حزني الى الله فما وهنوا لما اصابهم في سبيل الله و ما ضعفوا فلا يخاف ظلما و لا هضما لا تخاف دركا و لا تخشى لا ترى فيها عوجا و لا امتا قال الخليل العوج و الامت

يخالف في اعرابها لان المقام يقتضى الاطناب فاذا خولف فى الاعراب كان المقصود اكمل لان المعانى عند الاختلاف تتنوع و تتفنن و عند الاتحاد يكون نوعا واحدا مثاله فى المدح و المؤمنون يؤمنون بما انزل اليك و ما انزل من قبلك و المقيمين الصلاة و المؤتون الزكوة و لكن البر من آمن بالله الى قوله و الموفون بعهدهم اذا عاهدوا والصابرين و قرئ شاذا الحمد لله رب العالمين برفع رب و نصبه و مثاله فى الذم و امرأته حمالة الحطب النوع السادس البدل و القصد به الايضاح بعد الابهام و فائدته البيان و التاكيد اما الاول فواضح انك اذا قلت رأيت زيدا اخاك بينت انك تريد بزيد الاخ لا غير و اما التاكيد فلانه على نية تكرار العامل فكانه من جملتين و لانه دل على ما دل عليه الاول اما بالمطابقة في بدل الكل و اما بالتضمين في بدل البعض او بالالتزام في بدل الاشتمال مثال الاول اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم الى صراط العزيز الحميد الله لنسفعا بالناصية ناصية كاذبة خاطية و مثال الثاني ولله على الناس حج البيت من استطاع اليه سبيلا ولولا دفع الله الناس بعضهم ببعض و مثال الثالث و ما انسانيه الا الشيطان ان اذكره يسألونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير قتل اصحاب الاخدود النار لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم و زاد بعضهم بدل الكل من البعض و قد وجدت له مثالا في القرآن و هوقوله يدخلون الجنة ولا يظلمون شيئا جنات عدن فجنات عدن بدل من الجنة التي هي بعض و فائدته تقرير انها جنات كثيرة لا جنة واحدة قال ابن السيد و ليس كل بدل يقصد به رفع الاشكال الذي يعرض فى المبدل منه بل من البدل ما يراد به التاكيد

او غير ذلك من الصفات فلما قال اثنتين افهم ان فرض الثنتين تعلق بمجرد كونهما ثنتين فقط وهي فائدة لا تحصل من ضمير المثنى وقيل اراد فان كانتا اثنتين فصاعدا فعبر بالادنى عنه وعما فوقه اكتفاء ونظيره فان لم يكونا رجلين والاحسن فيه ان الضمير عائد على الشهيدين المطلقين ومن الصفات المؤكدة قوله ولا طائر يطير بجناحيه فقوله يطير لتاكيد ان المراد بالطائر حقيقته فقد يطلق مجازا على غيره وقوله بجناحيه لتاكيد حقيقة الطير ان لانه يطلق مجازا على شدة العدو والاسراع في المشي ونظيره يقولون بالسنتهم لان القول يطلق مجازا على غير اللسان بدليل ويقولون في انفسهم وكذا ولكن تعمى القلوب التي في الصدور لان القلب قد يطلق مجازا على العين كما اطلقت العين مجازا على القلب في قوله الذين كانت اعينهم في غطاء عن ذكرى قاعدة الصفة العامة لا تاتي بعد الخاصة لا يقال رجل فصيح متكلم بل متكلم فصيح واشكل على هذا قوله تعالى في اسماعيل وكان رسولا نبيا واجيب بانه حال لا صفة اى مرسلا في حال نبوتة وقد تقدم في نوع التقديم والتاخير امثلة من هذا قاعدة اذا وقعت الصفة بين متضايفين اولهما عدد جاز اجراوها على المضاف وعلى المضاف اليه فمن الاول سبع سموات طباقا ومن الثاني سبع بقرات سمان فائدة اذا تكررت النعوت لواحد فالاحسن ان تباعد معنى الصفات العطف نحو هو الاول والاخر والظاهر والباطن والا تركه نحو ولا تطع كل حلاف مهين هماز مشاء بنميم مناع للخير معتد اثيم عتل بعد ذلك زنيم فائدة قطع النعوت في مقام المدح والذم ابلغ من اجرائها قال الفارسي اذا ذكرت صفات في معرض المدح او الذم فالاحسن ان

احدها التخصيص فى النكرة نحو فتحرير رقبة مومنة الثاني التوضيح فى المعرفة اى زيادة البيان نحو و رسوله النبي الامي الثالث المدح و الثنا و منه صفات الله تعالى نحو بسم الله الرحمن الرحيم الحمد لله رب العالمين الرحمن الرحيم مالك يوم الدين هو الله الخالق البارئ المصور و منه يحكم بها النبيون الذين اسلموا فهذا الوصف للمدح و اظهار شرف الاسلام و التعريض باليهود و انهم بعداء من ملة المسلمين الذي هو دين الانبياء كلهم و انهم بمعزل عنها قاله الزمخشري الرابع الذم نحو فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم الخامس التاكيد لرفع الابهام نحو لا تتخذوا الهين اثنين فان الهين للتثنية فاثنين بعده صفة موكدة للنهي عن الاشراك و الافادة ان النهى عن اتخاذ الهين انما هو لمحض كونهما اثنين فقط لا لمعنى آخر من كونهما عاجزين او غير ذلك و لان الوحدة تطلق و يراد بها النوعية كقوله صلى الله عليه و سلم انما نحن و بنوا المطلب شئ واحد و يطلق و يراد بها نفى العدة فالتثنية باعتبارها فلو قيل لا تتخذوا الهين فقط لتوهم انه نهى عن اتخاذ جنسين الهة و ان جاز ان يتخذ من نوع واحد عددا الهة و لهذا اكد بالوحدة قوله انما هو اله واحد و مثله فاسلك فيها من كل زوجين اثنين على قراءة تنوين كل و قوله فاذا نفخ فى الصور نفخة واحدة فهو تاكيد لرفع توهم تعدد النفخة لان هذه الصيغة قد تدل على الكثرة بدليل و ان تعدوا نعمة الله لاتحصوها و من ذلك قوله فان كانتا اثنتين فان لفظ كانتا يفيد التثنية فتفسيره باثنتين لم يفد زيادة عليه و قد اجاب عن ذلك الاخفش و الفارسي فانه افاد العدد المحض مجردا عن الصفة لانه قد كان يجوز ان يقال فان كانا صغيرتين او كبيرتين او صالحتين

من القصص فان مالها الى الوبال كقصة ابليس و قوم نوح و هود و صالح و غيرهم فلما اختصت بذلك اتفقت الدواعي على نقلها لخروجها عن سمت القصص ثالثها قال الاستاذ ابو اسحق الاسفرايني انما كرر الله قصص الانبياء و ساق قصة يوسف مساقا واحدا اشارة الى عجز العرب كان النبي صلى الله عليه و سلم قال لهم ان كان من تلقاء نفسي فافعلوا في قصة يوسف ما فعلت في سائر القصص قلت و ظهر لي جواب رابع و هو ان سورة يوسف نزلت بسبب طلب الصحابة ان يقص عليهم كما رواه الحاكم في مستدركه فنزلت مبسوطة تامة ليحصل لهم مقصود القصص من استيعاب القصة و ترويح النفس لها و الاحاطة بطرفها و جواب خامس و هو اقوى ما يجاب به ان قصص الانبياء انما كررت لان المقصود بها افادة اهلاك من كذبوا رسلهم و الحاجة داعية الى ذلك لتكرير تكذيب الكفار للرسول صلى الله عليه و سلم فكلما كذبوا انزلت قصة منذرة بحلول العذاب كما حل على المكذبين و لهذا قال الله تعالى في آيات فقد مضت سنة الاولين او لم يروا كم اهلكنا من قبلهم من قرن و قصة يوسف لم يقصد منها ذلك و بهذا ايضا يحصل الجواب عن حكمة عدم تكرير قصة اصحاب الكهف و قصة ذى القرنين و قصة موسى مع الخضر و قصة الذبيح فان قلت قد تكررت قصة ولادة يحيى و ولادة عيسى مرتين و ليست من قبيل ما ذكرت قلت الاولى في سورة كهيعص و هي مكية انزلت خطابا لاهل مكة و الثانية في سورة آل عمران و هي مدنية انزلت خطابا لليهود و النصارى نجران حين قدموا و لهذا اتصل بها ذكر المحاجة و المباهلة النوع الخامس الصفة و ترد لاسباب

القصص فاراد الله اشتراك الجميع فيها فيكون فيه افادة لقوم و زيادة تاكيد لآخرين و منها ان في ابراز الكلام الواحد في فنون كثيرة و اساليب مختلفة ما لايخفى من الفصاحة و منها ان الدواعي لا تتوفر على نقلها لتوفرها على نقل الاحكام فلهذا كررت القصص دون الاحكام و منها انه تعالى انزل هذا القرآن و عجز القوم عن الاتيان بمثله ثم اوضح الامر في عجزهم بان كرر ذكر القصة في مواضع اعلاما بانهم عاجزون عن الاتيان بمثله باى نظم جاؤا و باى عبارة عبروا و منها انه لما تحداهم قال فأتوا بسورة من مثله فلو ذكرت القصة في موضع واحد و اكتفى بها لقال العربي أيتونا انتم بسورة من مثله فانزلها سبحانه في تعداد السور دفعا لحجتهم من كل وجه و منها ان القصة الواحدة لما كررت كان في الفاظها في كل موضع زيادة و نقصان و تقديم و تاخير و اتت على اسلوب غير اسلوب الاخرى فافاد ذلك ظهور الامر العجيب في اخراج المعنى الواحد في صور متباينة فى النظم و جذب النفوس الى سماعها لما جبلت عليه من حب التنقل فى الاشياء المتجددة و استلذاذها بها و اظهار خاصة القرآن حيث لم يحصل مع تكرير ذلك فيه هجنة فى اللفظ و لا ملل عند سماعه فباين لذلك كلام المخلوقين و قد سئل ما الحكمة في عدم تكرير قصة يوسف و سوقها مساقا واحدا في موضع واحد دون غيرها من القصص و اجيب بوجوه احدها ان فيها تشبيب النسوة به و حال امرأة و نسوة افتتنوا بابدع الناس جمالا فناسب عدم تكرارها لما فيها من اغضار و الستر و قد صحح الحاكم في مستدركه حديث النهي عن تعليم النساء سورة يوسف ثانيها انها اختصت بحصول الفرج بعد الشدة بخلاف غيرها

في قوله قالوا اضغاث احلام بل افتراه بل هو شاعر و قوله بل ادارك علمهم في الآخرة بل هم في شك منها بل هم عمون و منه قوله تعالى و متعوهن على الموسع قدره وعلى المقتر قدره متاعا بالمعروف حقا على المحسنين ثم قال و للمطلقات متاع بالمعروف حقا على المتقين فكرر الثاني ليعم كل مطلقة فان الآية الاولى في المطلقة قبل الفرض والمسيس خاصة وقيل لان الاولى لا تشعر بالوجوب و لهذا لما نزلت قال بعض الصحابة ان شئت احسنت و ان شئت فلا فنزلت الثانية اخرجه ابن جرير و من ذلك تكرير الامثال كقوله وما يستوى الاعمى والبصير ولا الظلمات ولا النور و لا الظل و لا الحرور وما يستوى الاحياء و لا الاموات وكذلك ضرب مثل المنافقين اول البقرة بالمستوقد نارا ثم ضربه باصحاب الصيب قال الزمخشري و الثاني ابلغ من الاول لانه اول على فرط الحياة و شدة الامر و فظاعته قال و لذلك آخر و هم يتدرجون في نحو هذا من الاهون الى الاغلظ و من ذلك تكرير القصص كقصة آدم و موسى و نوح و غيرهم من الانبياء قال بعضهم ذكر الله موسى في ماية و عشرين موضعا من كتابه و قال ابن العربي في القواصم ذكر الله قصة نوح في خمس و عشرين آية و قصة موسى في تسعين آية و قد الف البدر ابن جماعة كتابا سماه المقتنص في فوائد تكرار القصص و ذكر في تكرير القصص فوائد منها ان في كل موضع زيادة شيء لم يذكر في الذي قبله او ابدال كلمة باخرى لنكتة و هذه عادة البلغاء و منها ان الرجل كان يسمع القصة من القرآن ثم يعود الى اهله ثم ايها بعده آخرون يحكون ما نزل بعد صدور من تقدمهم فلو لا تكرار القصص لوقعت قصة موسى الى قوم و قصة عيسى الى آخرين و كذا سائر

و ما فى الارض في آيتين احد هما في اثر الاخرى قلنا لاختلاف معني الخبرين عما فى السموات والارض و ذلك ان الخبر عنه في احدى الآيتين ذكر حاجته الى باريه وغني باريه عنه وفى الاخرى حفظ باريه اياه و علمه به و بتدبيره قال فان قيل افلا قيل و كان الله غنيا حميدا و كفى بالله و كيلا قيل ليس فى الآية الاولى ما يصلح ان يختم بوصفه معه بالحفظ و التدبير انتهى و قال الله تعالى و ان منهم لفريقا يلوٗن السنتهم بالكتاب لتحسبوه من الكتاب وما هو من الكتاب قال الراغب الكتاب الاول ما كتبوه بايديهم المذكور في قوله تعالى فويل للذين يكتبون الكتاب بايديهم و الكتاب الثاني التوراة والثالث لجنس كتب الله كلها اى ما هو من شئ من كتب الله و كلامه ومن امثلته ما يظن تكرارا وليس منه قل يا ايها الكافرون لا اعبد ما تعبدون الى اخرها فان لا اعبد ما تعبدون اى فى المستقبل ولا انتم عابدون اى فى الحال ما اعبد فى المستقبل ولا انا عابد اي فى الحال ما عبدتم فى الماضي ولا انتم عابدون اي فى المستقبل ما اعبد اي فى الحال فالحاصل ان القصد نفي عبادته لآلهتهم فى الازمنة الثلاثة و كذا فاذكروا الله عند المشعر الحرام و اذكروه كما هداكم ثم قال فاذا قضيتم مناسككم فاذكروا الله كذكركم اباءكم ثم قال واذكروا الله في ايام معدودات فان المراد بكل واحد من هذه الاذكار غير المراد بالاخر فالاول الذكر في مزدلفة عند الوقوف بقزح و قوله و اذكروه كما هداكم اشارة الى تكرره ثانيا و ثالثا و يحتمل ان يراد به طواف الافاضة بدليل تعقيبه بقوله فاذا قضيتم والذكر الثالث اشارة الى رمي جمرة العقبة و الذكر الاخير لرمي ايام التشريق و منه تكرير حرف الاضراب

المؤمن و الناس من الفاجر و كذا قوله ويل يومئذ للمكذبين في سورة المرسلات لانه تعالى ذكر قصصا مختلفة و اتبع كل قصة بهذا القول فكانه قال عقب كل قصة ويل للمكذبين بهذا القصة و كذا قوله في سورة الشعراء ان في ذلك لآية و ما كان اكثرهم مؤمنين و ان ربك لهو العزيز الرحيم كررت ثمان مرات كل مرة عقب قصة فالاشارة في كل واحدة بذلك الى قصة النبي المذكور قبلها و ما اشتملت عليه من الآيات و العبر و قوله و ما كان اكثرهم مؤمنين الى قومه خاصة و لما كان مفهومه ان الاقل من قومه امنوا اتى بوصفى العزيز الرحيم للاشارة الى ان العزة على من لم يؤمن منهم و الرحمة لمن امن و كذا قوله في سورة القمر و لقد يسرنا القرآن للذكر فهل من مدكر قال الزمخشري كرر ليجددوا عند سماع كل بنا منها ايقاظا و تنبيها و ان كلا من تلك الانبا مستحق لاعتبار يختص به و ان ينتهوا كيلا يغلبهم الشرور و الغفلة قال في عروس الافراح فان قلت اذا كان المراد بكل ما قبله فليس ذلك باطناب بل هي الفاظ كل اريد به غير ما اريد بالاخر قلت اذا قلنا العبرة بعموم اللفظ فكل واحد اريد به ما اريد بالاخر و لكن كرر ليكون نصا فيما يليه و ظاهرا في غيره فان قلت يلزم التاكيد قلت و الامر كذلك و لا يرد عليه ان التاكيد لا يزاد به من ثلاثة لان ذاك فى التاكيد الذي هو تابع اما ذكر الشيء في مقامات متعددة اكثر من ثلاثة فلا يمتنع انتهى و يقرب من ذلك ما ذكره ابن جرير في قوله تعالى ولله ما فى السموات و ما فى الارض و لقد وصينا الى قوله و كان الله غنيا حميدا ولله ما فى السموات وما فى الارض و كفى بالله وكيلا قال فان قيل ما وجه تكرار قوله ولله ما فى السموات

الى قوله فلما جاء هم ما عرفوا كفروا به لا تحسبن الذين يفرحون بما اتوا و يحبون ان يحمدوا بما لم يفعلوا فلا تحسبنهم اني رأيت احد عشر كوكبا و الشمس و القمر رايتهم و منها التعظيم و التهويل نحو الحاقة ما الحاقة القارعة ما القارعة و اصحاب اليمين ما اصحاب اليمين فان قلت هذا النوع احد اقسام النوع قبله فان منها التوكيد بتكرار اللفظ فلا يحسن عده نوعا مستقلا قلت هو يجامعه و يفارقه و يزيد عليه و ينقص عنه فصار اصلا براسه فانه قد يكون التاكيد تكرارا كما تقدم في امثلته و قد لا يكون تكرارا كما تقدم ايضا و قد يكون التكرير غير تاكيد صناعة و ان كان مفيدا للتاكيد معنى و منه ما وقع فيه الفصل بين المكررين فان التاكيد لا يفصل بينه و بين مؤكده نحو اتقوا الله و لتنظر نفس ما قدمت لغد و اتقوا الله ان الله اصطفاك و طهرك و اصطفاك على نساء العالمين فالاتيان من باب التكرير لا التاكيد اللفظي الصناعي و منه الآيات المتقدمة فى التكرير للطول و منه ما كان لتعدد المتعلق بان يكون المكرر ثانيا متعلقا بغير ما تعلق به الاول و هذا القسم يسمى بالترديد كقوله الله نور السموات و الارض مثل نوره كمشكاة فيها مصباح المصباح في زجاجة الزجاجة كانها كوكب درى وقع فيه الترديد اربع مرات و جعل منه قوله تعالى فباى الاء ربكما تكذبان فانها و ان تكررت نيفا و ثلاثين مرة فكل واحدة تتعلق بما قبلها و لذلك زادت على ثلاثة و لو كان الجميع عايدا الى شئ واحد لما زاد عن ثلاثة لان التاكيد لا يزيد عليها قاله ابن عبد السلام وغيره و انكان بعضها ليس بنعمة فذكر النعمة للتحذير نعمة و قد سئل اى نعمة في قوله كل من عليها فان فاجيب باجوبة احسنها النقل من دار الهموم الى دار السرور و اراحة

الشيء بمعنى الامر و الشان و الاصل في هذا النوع ان ينعت بالوصف المراد نحو اذكروا الله ذكرا كثيرا و سرحوهن سراحا جميلا و قد يضاف وصفه اليه نحو اتقوا الله حق تقاته و قد يؤكد بمصدر فعل آخر او اسم عين نيابة عن المصدر نحو و تبتل اليه تبتيلا و المصدر تبتيلا و التبتيل مصدر بتل انبتكم من الارض نباتا اى انباتا اذا النبات اسم عين رابعها الحال المؤكدة نحو يوم ابعث حيا و لا تعثوا فى الارض مفسدين و ارسلناك للناس رسولا ثم توليتم الا قيلا منكم و انتم معرضون و ازلفت الجنة للمتقين غير بعيد و ليس منه ولي مدبرا لان التولية قد لا تكون ادبارا بدليل فول وجهك شطر المسجد و لا فتبسم ضاحكا لان التبسم قد لا يكون ضحكا و لا و هو الحق مصدقا لاختلاف المعينين اذ كونه حقا في نفسه غير كونه مصدقا لما قبله النوع الرابع التكرير و هو ابلغ من التاكيد و هو من محاسن الفصاحة خلافا لبعض من غلط وله فوائد منها التقرير و قد قيل الكلام اذا تكرر تقرر و قد نبه تعالى على السبب الذي لاجله كرر الاقاصيص و الانذار فى القرآن بقوله و صرفنا فيه من الوعيد لعلهم يتقون او يحدث لهم ذكرا و منها التاكيد و منها زيادة التنبيه على ما ينفي التهمة ليكمل تلقى الكلام بالقبول و منه و قال الذي امن يا قوم اتبعوني اهدكم سبيل الرشاد يا قوم انما هذه الحياة الدنيا متاع فانه كرر فيه النداء لذلك و منها اذا طال الكلام و خشى تناسى الاول اعيد ثانيا توطية له و تجديد العهدة و منه ثم ان ربك للذين عملوا السوء بجهالة ثم تابوا من بعد ذلك و اصلحوا ان ربك من بعدها ثم ان ربك للذين هاجروا من بعد ما فتنوا ثم جاهدوا و صبروا ان ربك من بعدها و لما جاءهم كتاب من عند الله

لم يسجدوا متفرقين ثانيها التاكيد اللفظي و هو تكرار اللفظ الاول اما بمرادفة نحو ضيقا حرجا بكسر الراء غرابيب سود و جعل منه الصفار في ما ان مكنا كم على القول بان كليهما للنفي و جعل منه غيره قيل ارجعوا وراء كم فالتمسوا نورا ليس ها هنا ظرفا لان لفظ ارجعوا ينبئ عنه بل هو اسم فعل بمعنى ارجعوا فكانه قال ارجعوا ارجعوا و اما بلفظه و يكون فى الاسم و الفعل و الحرف و الجملة فالاسم نحو قواريرا قواريرا دكا دكا صفا صفا و الفعل نحو فمهل الكافرين امهلهم و اسم الفعل نحو هيهات هيهات لما توعدون و الحرف نحو ففى الجنة خالدين فيها ايعدكم انكم اذا متم و كنتم ترابا و عظاما انكم و الجملة نحو فان مع العسر يسرا ان مع العسر يسرا و الاحسن اقتران الثانية ثم نحو و ما ادراك ما يوم الدين ثم ما ادراك ما يوم الدين كلا سيعلمون ثم كلا سيعلمون و من هذا النوع تاكيد الضمير المتصل بالمنفصل نحو اسكن انت و زوجك اذهب انت و ربك و اما ان تكون نحن الملقين و من تاكيد المنفصل بمثله و هم بالآخرة هم يوقنون ثالثها تاكيد الفعل بمصدره و هوعوض من تكرار الفعل مرتين و فائدته رفع توهم المجاز فى الفعل بخلاف التوكيد السابق فانه لرفع توهم المجاز فى المسند اليه كذا فرق به ابن عصفور و غيره و من ثم رد بعض اهل السنة على بعض المعتزلة في دعواه نفي التكلم حقيقة بقوله و كلم الله موسى تكليما لان التوكيد رفع المجاز فى الفعل و من امثلته و سلموا تسليما تمور السماء مورا و تسير الجبال سيرا جزاؤكم جزاء موفورا و ليس منه و تظنون بالله الظنونا بل هو جمع ظن لاختلاف انواعه و اما الا ان يشاء ربي شيئا فيحتمل ان يكون منه و ان يكون

دخول الاحرف الزائدة قال ابن جني كل حرف زيد في كلام العرب فهو قائم مقام اعادة الجملة مرة اخرى و قال الزمخشري في كشافه القديم الباقي خبر ما و ليس لتاكيد النفي كما ان اللام لتاكيد الايجاب و سئل بعضهم عن التاكيد بالحرف و ما معناه اذ اسقاطه لا يخل بالمعنى فقال هذا يعرفه اهل الطباع يجدون من زيادة الحرف معنى لا يجدونه باسقاطه قال و نظيره العارف بوزن الشعر طبعا اذا تغير عليه البيت بنقص انكره و قال اجد نفسي على خلاف ما اجدها باقامة الوزن فكذلك هذه الحروف يتغير نفس المطبوع بنقصانها و يجد نفسه بزيادتها على معنى بخلاف ما يجدها بنقصانه ثم باب زيادة الحروف و زيادة الافعال قليل و الاسماء اقل اما الحروف فيزاد منها ان و ان و اذ و اذا و الى و ام و الباء و الفاء و في و الكاف و اللام ولا و ما و من و الواو و تقدمت في نوع الادوات مشروحة و اما الافعال فزيد منها كان و خرج عليه كيف نكلم من كان في المهد صبيا و اصبح و خرج عليه فاصبحوا خاسرين و قال الرماني العادة ان من به علة تزاد بالليل ان يرجوا الفرج عند الصباح فاستعمل اصبح لان الخسران حصل لهم في الوقت الذي يرجون فيه الفرج فليست زائدة و اما الاسماء فنص اكثر النحويين على انها لا تزاد و وقع في كلام المفسرين الحكم عليها بالزيادة في مواضع كلفظ مثل في قوله فان امنوا بمثل ما امنتم به اى بما النوع الثالث التاكيد الصناعي و هو اربعة اقسام احدها التوكيد المعنوي بكل و اجمع و كلا و كلتا نحو فسجد الملائكة كلهم اجمعون و فائدته رفع توهم المجاز و عدم الشمول و ادعى الفراء ان كلهم افادت ذلك و اجمعون افادت اجتماعهم على السجود و انهم

ظلموا اى لا تدعني يا نوح في شان قومك فهذا الكلام يلوح بالخبر تلويحا و يشعر بانه قد حق عليهم العذاب فصار المقام مقام ان يتردد المخاطب في انهم هل صاروا محكوما عليهم بذلك او لا فقيل انهم مغرقون بالتاكيد و كذا قوله يا ايها الناس اتقوا ربكم لما امرهم بالتقوى و ظهور ثمرتها و العقاب على تركها محله الاخرة تشوقت نفوسهم الى وصف حال الساعة فقال ان زلزلة الساعة شيئ عظيم بالتاكيد ليتقرر عليه الوجوب وكذا قوله و ما ابرئ نفسي فيه تخيير للمخاطبين و تردد في انه كيف لا يبرى نفسه و هو برية زكية ثبتت عصمتها و عدم موافقتها السوء فائدة بقوله ان النفس لامارة بالسوء و قد يؤكد لقصد الترغيب نحو فتاب عليه انه هو التواب الرحيم اكد باربع تاكيدات ترغيبا للعباد فى التوبة و قد سبق الكلام على ادوات التاكيد المذكورة و معانيها و موافقها فى النوع الاربعين فائدة اذا اجتمعت ان و اللام كان بمنزلة تكرير الجملة ثلاث مرات لان ان افادت التكرير مرتين فاذا دخلت اللام صارت ثلاثا و عن الكسائي ان اللام لتوكيد الخبر و ان توكيد الاسم فيها تجوز لان التوكيد للنسبة لا للاسم و لا للخبر و كذلك نون التوكيد الشديدة بمنزلة تكرير الفعل ثلاثا و الخفيفة بمنزلة تكريرة مرتين و قال سيبويه في نحو يا ايها الالف و الهاء لحقتا ا يا توكيدا فكانك كررت يا مرتين و صار الاسم تنبيها هذا كلامه و تابعه الزمخشري فائدة قوله تعالى و يقول الانسان ائذا ما مت لسوف اخرج حيا قال الجرجاني في نظم القرآن ليست اللام فيه للتاكيد فانه منكر فكيف تحقق ما ينكر و انما قاله حكاية لكلام النبي صلى الله عليه و سلم الصادر منه باداة التاكيد فحكاه فنزلت الآية على ذلك النوع الثاني

ما انتم الا بشر مثلنا و ما انزل الرحمن من شيئ ان انتم الا تكذبون و قد يؤكد بها و المخاطب به غير منكر لعدم جريه على مقتضى اقراره فينزل منزلة المنكر وقد يترك التاكيد و هو منكر لان معه ادلة ظاهرة لو تاملها لرجع عن انكاره و على ذلك يخرج ثم انكم بعد ذلك لميتون ثم انكم يوم القيمة تبعثون اكد الموت تاكيدين و ان لم ينكر لتنزيل المخاطبين لتماديهم فى الغفلة تنزيل من ينكر الموت واكد اثبات البعث تاكيدا واحدا و ان كان اشد نكيرا لانه لما كانت ادلته ظاهرة كان جديرا بان لا ينكر فنزل المخاطبون منزلة غير المنكر حثا لهم على النظر في ادلته الواضحة و نظيره قوله تعالى لا ريب فيه نفى عنه الريب بلا على سبيل الاستغراق مع انه ارتاب فيه المرتابون لكن نزل منزلة العدم تعويلا على ما يزيله من الادلة الباهرة كما نزل الانكار منزلة عدمه لذلك و قال الزمخشري بولغ في تاكيد الموت تنبيها للانسان ان يكون الموت نصب عينيه و لا يغفل عن ترقبه فان ماله اليه فكانه اكدت حملته ثلاث مرات لهذا المعنى لان الانسان فى الدنيا يسعى فيها غاية السعى حتى كانه يخلد و لم يوكد جملة البعث الا بان لانه ابرز في صورة المقطوع به الذي لا يمكن فيه نزاع و لا يقبل انكارا و قال التاج الفركاح اكد الموت ردا على الدهرية القائلين ببقاء النوع الانساني خلفا عن سلف و استغنى عن تاكيد البعث هنا لتاكيده و الرد على منكره في مواضع كقوله قل بلى و ربي لتبعثن و قال غيره لما كان العطف يقتضى الاشتراك استغنى عن اعادة اللام لذكرها فى الاول وقد يوكد بها للمستشرف الطالب الذي قدم له ما يلوح بالخبر فاستشرفت نفسه اليه نحو ولا تخاطبني فى الذين

فقد كذبت رسل من قبلك اى فلا تحزن و اصبر و ان يعودوا فقد مضت سنة الاولين اى يصيبهم مثل ما اصابهم فصـــل كما انقسم الايجاز الى ايجاز قصر و ايجاز حذف كذلك انقسم الاطناب الى بسط و زيادة فالاول الاطناب بتكثير الجمل كقوله تعالى ان في خلق السموات و الارض الآية في سورة البقرة اطنب فيها ابلغ اطناب لكون الخطاب مع الثقلين و في كل عصر و حين للعالم منهم و الجاهل و الموافق و المنافق و قوله الذين يحملون العرش و من حوله يسبحون بحمد ربهم و يؤمنون به فقوله و يؤمنون به اطناب لان ايمان حملة العرش معلوم و حسنه اظهار شرف الايمان ترغيبا فيه و ويل للمشركين الذين لا يؤتون الزكاة و ليس من المشركين مزك و النكتة الحث للمومنين على ادائها و التحذير من المنع حيث جعل من اوصاف المشركين و الثاني يكون بانواع احدها دخول حرف فاكثر من حروف التوكيد السابقة في نوع الادوات و هي ان و ان و لام الابتداء و القسم و الا الاستفتاحية و اما و هاء التنبيه و كان في تاكيد التشبيه و لكن في تاكيد الاستدراك و ليت في تاكيد التمنى و لعل في تاكيد الترجى و ضمير الشان و ضمير الفصل و اما في تاكيد الشرط و قد و السين و سوف و النونان في تاكيد الفعلية و لاء التبرية و لن و لما في تاكيد النفي و انما يحسن تاكيد الكلام بها اذا كان المخاطب به منكرا او مترددا و يتفاوت التاكيد بحسب قوة الانكار و ضعفه كقوله تعالى حكاية عن رسل عيسى اذ كذبوا فى المرة الاولى انا اليكم مرسلون فاكد بان و اسمية الجملة و فى المرة الثانية ربنا يعلم انا اليكم لمرسلون فاكد بالقسم وان واللام واسمية الجملة لمبالغة المخاطبين فى الانكار حيث قالوا

اى بصالح حذف العاطف مع المعطوف تقدم حذف حرف الشرط و فعله يطرد بعد الطلب نحو فاتبعوني يحببكم الله اى ان اتبعتموني قل لعبادي الذين امنوا يقيموا اى ان قلت لهم يقيموا و جعل منه الزمخشري فلن يخلف الله عهده اى ان اتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله و جعل منه ابو حيان فلم تقتلون انبياء الله من قبل اى ان كنتم امنتم بما انزل اليكم فلم تقتلون حذف جواب الشرط فان استطعت ان تبتغي نفقا فى الارض او سلما فى السماء اى فافعل و اذا قيل لهم اتقوا ما بين ايديكم و ما خلفكم لعلكم ترحمون اى اعرضوا بدليل ما بعده انن ذكرتم اى تطيرتم و لو جئنا بمثله مددا اى لنفد و لو ترى اذ المجرمون ناكسوا رؤسهم اى لرأيت امرا فظيعا و لو لا فضل الله عليكم و رحمته و ان الله رؤف رحيم اى ليعذبكم لو لا ان ربطنا على قلبها اى لا بدت به و لو لا رجال مؤمنون و نساء مؤمنات لم تعلموهم ان تطؤهم اى لسلطكم على اهل مكة حذف جملة القسم لاعذبنه عذابا شديدا اى والله حذف جوابه والنازعات غرقا الآيات اى لتبعثن ص و القرآن ذى الذكر اى انه لمعجز ق و القرآن المجيد اى ما الامر كما زعموا حذف جملة مسببة عن المذكور نحو ليحق الحق و يبطل الباطل اى فعل ما فعل حذف جمل كثيرة نحو فارسلون يوسف ايها الصديق اى فارسلون الى يوسف لاستعبره الرؤيا ففعلوه فاتاه فقال له يا يوسف خاتمة تارة لا يقام شئ مقام المحذوف كما تقدم و تارة يقام ما يدل عليه نحو فان تولوا فقد ابلغتكم ما ارسلت به اليكم فليس الابلاغ هو الجواب لتقدمه على توليهم وانما التقدير فان تولوا فلا لوم علىّ او فلا عذر لكم لاني ابلغتكم و ان يكذبون

من الرب تنزيها و تعظيما لان فى النداء طرفا من الامر حذف قد
فى الماضي اذا وقع حالا نحو و جاؤكم حصرت صدورهم نحو انؤمن
لك و اتبعك الارذلون حذف لاء النافية يطرد في جواب القسم اذا
كان المنفي مضارعا نحو تالله تفتؤ و ورد في غيره نحو و على الذين
يطيقونه فدية اى لا يطيقونه و القى فى الارض رواسي ان تميد اى
لان لا تميد حذف لام التوطية و ان لم ينتهوا عما يقولون ليمسن و ان
اطعتموهم انكم لمشركون حذف لام الامر خرج عليه قل لعبادى
الذين امنوا يقيموا اى ليقيموا حذف لام لقد يحسن مع طول الكلام
نحو قد افلح من زكا ها حذف نون التاكيد خرج عليه قرأة الم نشرح
بالنصب حذف نون الجمع خرج عليه قرأة و ما هم بضارين به من
احد حذف التنوين خرج عليه قرأة قل هو الله احد الله الصمد و لا
الليل سابق النهار بالنصب حذف حركة الاعراب و البناء خرج عليه
قرأة فتوبوا الى بارئكم و يأمركم و بعولتهن احق بسكون الثلاثة و كذا
او يعفو الذي بيده عقدة النكاح فاواري سوأة اخي ما بقى من الربا
امثلة حذف اكثر من كلمة حذف مضافين فانها من تقوى القلوب
اى فان تعظيمها من افعال ذوى تقوى القلوب فقبضت قبضة من
اثر الرسول اى من اثر حافر فرس الرسول تدور اعينهم كالذي يغشى
عليه اى كدوران عين الذي يغشى عليه و تجعلون رزقكم اى بدل
شكر رزقكم حذف ثلاثة متضايفات فكان قاب قوسين اى فكان مقدار
مسافة قربه مثل قاب فحذف ثلاثة من اسم كان و واحد من خبرها
حذف مفعولى باب ظن اين شركائى الذين كنتم تزعمون اى تزعمونهم
شركاء حذف الجار مع المجرور خلطوا عملا صالحا اى بسيئ و آخر سيئا

في غير ذلك نحو انتهوا خيرا لكم اى و آتوا و الذين تبوا الدار و الايمان اى و الغوا الايمان او اعتقدوا اسكن انت و زوجك اى و ليكن زوجك و امرأته حمالة الحطب اى آدم و المقيمين الصلاة اى امدح ولكن رسول الله اى كان و ان كلا لما اى يوفوا اعمالهم امثلة حذف الحرف قال ابن جني فى المحتسب اخبرنا ابو علي قال قال ابو بكر حذف الحرف ليس بقياس لان الحروف انما دخلت الكلام لضرب من الاختصار فلو ذهبت بحذفها لكنت مختصرا لها هي ايضا و اختصار المختصر اجحاف به حذف همزة الاستفهام قرأ ابن محيص سواء عليهم اء نذرتهم و خرج عليه هذا ربي فى المواضع الثلاثة و تلك نعمة تمنها اى او تلك حذف الموصول الحرفي قال ابن مالك لا يجوز الا في ان نحو و من آياته يريكم البرق حذف الجار يطرد مع ان و ان نحو يمنون عليك ان اسلموا قل لا تمنوا عليّ اسلامكم بل الله يمن عليكم ان هداكم اطمع ان يغفرلي ايعدكم انكم اى بانكم و جاء مع غيرهما نحو قدرناه منازل اى قدرنا له و يبغونها عوجا اى لها يخوف اولياءه اى يخوفكم باوليايه و اختار موسى قومه اى من قومه و لا تعزموا عقدة النكاح اى على عقدة حذف العاطف خرج عليه الفارسي و لا على الذين اذا ما اتوك لتحملهم قلت لا اجد ما احملكم عليه تولوا اى و قلت وجوه يومئذ ناعمة اى و وجوه عطفا على وجوه يومئذ خاشعة حذف الجواب خرج عليه الاخفش ان ترك خيرا الوصية للوالدين حذف حرف النداء كثيرها انتم اولاء يوسف اعرض قال رب اني وهن العظم فاطر السموات و الارض و فى العجائب للكرماني كثر حذف ياء فى القرآن

حذف المبدل منه خرج عليه و لا تقولوا لما تصف السنتكم الكذب اى لما تصفه و الكذب بدل من الهاء حذف الفاعل لا يجوز الا في فاعل المصدر نحو لا يسأم الانسان من دعاء الخير اى دعائه الخير و جوزه الكسائي مطلقا لدليل و خرج عليه اذا بلغت التراقي اى الروح حتى توارت بالحجاب اى الشمس حذف المفعول تقدم انه كثير في مفعول المشية و الارادة و يرد في غيرهما نحو ان الذين اتخذوا العجل الها كلا سوف تعلمون اى عاقبة امركم حذف الحال يكثر اذا كان قولا نحو و الملائكة يدخلون عليهم من كل باب سلام اى قائلين حذف المنادى الا يا اسجدوا اى يا هولاء يا ليت اى يا قوم حذف العائد يقع في اربعة ابواب الصلة نحوا هذا الذي بعث الله رسولا اى بعثه و الصفة نحو و اتقوا يوما لا تجزي نفس اى فيه و الخبر نحو و كلا وعد الله الحسنى اى وعده و الحال حذف مخصوص نعم انا وجدناه صابرا نعم العبد اى ايوب فقدرنا فنعم القادرون اى نحن و لنعم دار المتقين اى الجنة حذف الموصول امنا بالذي انزل الينا و انزل اليكم اى و الذي انزل اليكم لان الذي انزل الينا ليس هو الذي انزل الى من قبلنا و لهذا اعيدت ما في قوله قولوا آمنا بالله و ما انزل الينا و ما انزل الى ابراهيم امثلة حذف الفعل يطرد اذا كان مفسرا نحو و ان احد من المشركين استجارك اذا السماء انشقت قل لو انتم تملكون و يكثر في جواب الاستفهام نحو و اذا قيل لهم ما ذا انزل ربكم قالوا خيرا اى انزل و اكثر منه حذف القول نحو و اذ يرفع ابراهيم القواعد من البيت و اسمعيل ربنا اى يقولان ربنا قال ابو علي حذف القول من حديث البحر قل و لا حرج و يأتى

بلا تنوين اى فلا خوف شيء عليهم حذف المبتداء يكثر في جواب الاستفهام نحو و ما ادراك ماهيه نار اى هي نار و بعد فالجواب نحو من عمل صالحا فلنفسه اى فعمله لنفسه و من اساء فعليها اى فاساءته عليها و بعد القول نحو و قالوا اساطير الاولين قالوا اضغاث احلام وبعد ما الخبر صفة له فى المعنى نحو التائبون العابدون و نحو صم بكم عمى و وقع في غير ذلك نحو لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد متاع لم يلبثوا الا ساعة من نهار بلاغ اى هذا سورة انزلناها اى هذه و وجب فى النعت المقطوع الى الرفع حذف الخبر اكلها دائم و ظلها اى دائم و يحتمل الامرين فصبر جميل اى اجمل او فامرى صبر فتحرير رقبة اى عليه او فالواجب حذف الموصوف و عندهم قاصرات الطرف اى حور قاصرات ان اعمل سابغات اى دروعا سابغات ايها المؤمنون اى القوم المؤمنون حذف الصفة ياخذ كل سفينة اى صالحة بدليل انه قرئ كذلك و ان تعييبها لا يخرجها عن كونها سفينة الآن جئت بالحق اى الواضح و الا لكفروا بمفهوم ذلك فلا نقيم لهم يوم القيمة وزنا اى نافعا حذف المعطوف عليه ان اضرب بعصاك الحجر فانفلق اى فضرب فانفلق و حيث دخلت واو العطف على لام التعليل ففي تخريجه وجهان احدهما ان يكون تعليلا معلله محذوف كقوله وليبلى المؤمنين منه بلاء حسنا فالمعنى و للاحسان الى المؤمنين فعل ذلك و الثاني انه معطوف على علة اخرى مضمرة ليظهر صحة العطف اى فعل ذلك ليذيق الكافرين باسه وليبلى حذف المعطوف مع العاطف لا يستوي منكم من انفق من قبل الفتح و قاتل اى و من انفق بعده بيدك الخير اى و الشر

في سبيل الله و اخرى كافرة تقاتل في سبيل الطاغوت و فى الغرائب للكرماني فى الآية الاولى التقدير مثل الذين كفروا معك يا محمد كمثل الذي الناعق مع الغنم فحذف من كل طرف ما يدل عليه الطرف الآخر و له فى القرآن نظائر و هو ابلغ ما يكون من الكلام انتهى و ماخذ هذه التسمية فى الحبك الذي معناه الشد و الاحكام وتحسين اثر الصنعة فى الثوب فحبك الثوب شد ما بين خيوطه من الفرج و شده و احكامه بحيث يمنع عنه الخلل مع الحسن و الرونق و بيان اخذه منه ان مواضع الحذف من الكلام شبهت بالفرج بين الخيوط فلما ادركها الناقد البصير بصوغه الماهر في نظمه و حوكه فوضع المحذوف مواضعه كان حائكاله مانعا من خلل يطرقه فسد بتقديره ما يحصل به الخلل مع ما اكتسبه من الحسن و الرونق النوع الرابع ما يسمى بالاختزال و هو ما ليس واحدا مما سبق و هو اقسام لان المحذوف اما كلمة اسم او فعل او حرف او اكثر امثلة حذف الاسم حذف المضاف هو كثير فى القرآن جدا حتى قال ابن جني فى القرآن منه زها الف موضع و قد سردها الشيخ عزالدين في كتاب المجاز على ترتيب السور و الآيات و منه الحج اشهر اى حج اشهر او اشهر الحج و لكن البر من آمن اى ذا البر او بر من حرمت عليكم امهاتكم اى نكاح امهاتكم لا ذقناك ضعف الحياة و ضعف الممات اى ضعف عذاب و فى الرقاب اى و في تحرير الرقاب حذف المضاف اليه يكثر في ياء المتكلم نحو رب اغفرلي و فى الغايات نحو لله الامر من قبل و من بعد اى من قبل الغلب و من بعده و في اى و كل و بعض و جاء في غيرهن كقرأة فلا خوف عليهم بضم

الانواع و ابدعها و قل من تنبه له او نبه عليه من اهل فن البلاغة و لم اره الا في شرح بديعية الاعمى لرفيقه الاندلسي و ذكره الزركشي في البرهان و لم يسمه هذا الاسم بل سماه الحذف المقابلي و افرده بالتصنيف من اهل العصر العلامة برهان الدين البقاعي قال الاندلسي في شرح البديعية من انواع البديع الاحتباك و هو نوع عزيز و هو ان يحذف من الاول ما اثبت نظيره في الثاني و من الثاني ما اثبت نظيره في الاول كقوله تعالى و مثل الذين كفروا كمثل الذي ينعق الآية التقدير و مثل الانبياء و الكفار كمثل الذي ينعق و الذي ينعق به فحذف من الاول الانبياء لدلالة الذي ينعق عليه و من الثاني الذي ينعق به لدلالة الذين كفروا عليه و ادخل يدك في جيبك تخرج بيضاء و التقدير تدخل غير بيضا و اخرجها تخرج بيضاء فحذف من الاول تدخل غير بيضاء من الثاني و اخرجها و قال الزركشي هو ان يجتمع في الكلام متقابلان فيحذف من كل واحد منهما مقابله لدلالة الآخر عليه كقوله تعالى ام يقولون افتراه قل ان افتريته فعلى اجرامي و انا بري مما تجرمون التقدير ان افتريته فعلى اجرامي و انتم براء منه و عليكم اجرامكم و انا بريء مما تجرمون و قوله يعذب المنافقين ان شاء او يتوب عليهم التقدير و يعذب المنافقين ان شاء فلا يتوب عليهم او يتوب عليهم فلا يعذبهم و قوله فلا تقربوهن حتى يطهرن فاذا تطهرن فآتوهن اى حتى يطهرن من الدم و يتطهرن بالماء فاذا تطهرن و طهرن فآتوهن و قوله خلطوا عملا صالحا و آخر سيئا اى عملا صالحا بسيء و آخر سيئا بصالح قلت و من لطيفه قوله فئة تقاتل في سبيل الله و اخرى كافرة اى فئة مومنة تقاتل

حذفت همزة انا تخفيفا و ادغمت النون فى النون و مثله ما قرئ و يمسك السماء ان تقع على الارض بما انزل اليك فمن تعجل في يومين فلا اثم عليه انها لاحدى الكبر النوع الثاني ما يسمى بالاكتفاء وهو ان يقتضى المقام ذكر شيئين بينهما تلازم و ارتباط فيكتفى باحدهما عن الآخر لنكتة و يختص غالبا بالارتباط العطفى كقوله تعالى سرابيل تقيكم الحر اى و البرد و خصص الحر بالذكر لان الخطاب للعرب وبلادهم حارة و الوقاية عندهم من الحر اهم لانه اشد عندهم من البرد و قيل لان البرد تقدم ذكر الامتنان بوقايته صريحا في قوله و من اصوافها و اوبارها و اشعارها و في قوله و جعل لكم من الجبال اكنانا و في قوله و الانعام خلقها لكم فيها دفء و من امثلة هذا النوع بيدك الخير اى و الشر و انما خص الخير بالذكر لانه مطلوب العباد و مرغوبهم او لانه اكثر وجودا فى العالم او لان اضافة الشر الى الله تعالى ليس من باب الآداب كما قال صلى الله عليه وسلم و الشر ليس اليك و منها وله ما سكن فى الليل و النهار اى و ما تحرك و خص السكون بالذكر لانه اغلب الحالين على المخلوق من الحيوان و الجماد و لان كل متحرك يصير الى السكون و منها الذين يومنون بالغيب اى و الشهادة لان الايمان بكل منهما واجب و اثر الغيب لانه امدح ولانه يستلزم الايمان بالشهادة من غير عكس و منها و رب المشارق اى و المغارب و منها هدى للمتقين اى و للكافرين قاله الانباري و يؤيده قوله هدى للناس و منها ان امرء هلك ليس له ولد اى و لا والد بدليل انه اوجب للاخت النصف و انما يكون ذلك مع فقد الاب لانه يسقطها النوع الثالث ما يسمى بالاحتباك و هو من الطف

بفتح الباء كذلك يوحى اليك و الى الذين من قبلك الله بفتح الحاء فان التقدير يسبحه رجال و يوحيه الله ولا يقدران مبتدأين حذف خبرهما لثبوت فاعلية الاسمين في رواية من بنى الفعل للفاعل و للثاني نحو و لئن سالتهم من خلقهم ليقولن الله فتقدير خلقهم الله اولى من الله خلقهم لمجي خلقهن العزيز العليم قاعدة اذا دار الامر بين كون المحذوف اولا او ثانيا فكونه ثانيا اولى و من ثم رجح ان المحذوف في نحو اتحاجوني نون الوقاية لا نون الرفع و في نارا تلظى التا الثانية لا تاء المضارعة و في والله و رسوله احق ان يرضوه ان المحذوف خبر الثاني لا الاول و في نحو الحج اشهر ان المحذوف مضاف الثاني اى حج اشهر لا الاول اى اشهر الحج و قد يجب كونه من الاول نحو ان الله و ملائكته يصلون على النبي في قرأة من رفع ملائكته لاختصاص الخبر بالثاني لوروده بصيغة الجمع و قد يجب كونه من الثاني نحو ان الله بري من المشركين و رسوله اى بري ايضا لتقدم الخبر على الثاني

فصل

الحذف على انواع احدها ما يسمى بالاقتطاع و هو حذف بعض حروف الكلمة و انكر ابن الاثير ورود هذا النوع في القرآن ورد بان بعضهم جعل منه فواتح السور على القول فان كل حرف منها من اسم من اسمائه تعالى كما تقدم و ادعى بعضهم ان الباء في و امسحوا برؤسكم اول كلمة بعض ثم حذف الباقي و منه قرأة بعضهم و نادوا يا مال بالترخيم و لما سمعها بعض السلف قال ما اغنى اهل النار عن الترخيم و اجاب بعضهم بانهم لشدة ما هم فيه عجزوا عن اتمام الكلمة و يدخل في هذا النوع حذف همزة انا من قوله لكنا هو الله ربي اذ الاصل لكن انا

الحذف و وضع الشئ في غير محله فيقدر المفسر في نحو زيدا رأيته مقدما عليه و جوز البيانيون تقديره موخرا عنه لافادة الاختصاص كما قاله النحاة اذا منع منه مانع نحو و اما ثمود فهديناهم ان لا يلى اما فعل قاعدة ينبغي تعليل المقدر مهما امكن لثقل مخالفة الاصل و من ثم ضعف قول الفارسي في و اللاى لم يحضن ان التقدير فعدتهن ثلاثة اشهر و الاولى ان يقدر كذلك قال الشيخ عز الدين فلا يقدر من المحذوفات الا اشدها موافقة للغرض و افصحها لان العرب لا يقدرون الا ما لو لفظوا به لكان احسن و انسب لذلك الكلام كما يفعلون ذلك في الملفوظ به نحو جعل الله الكعبة البيت الحرام قياما للناس قدر ابو علي جعل الله نصب الكعبة و قدر غيره حرمة الكعبة و هو اولى لان تقدير الحرمة في الهدى و القلايد و الشهر الحرام لا شك في فصاحته و تقدير النصب فيها بعيد من الفصاحة قال و مهما تردد المحذوف بين الحسن و الاحسن وجب تقدير الاحسن بان الله وصف كتابه بانه احسن الحديث فليكن محذوفه احسن المحذوفات كما ان ملفوظه احسن الملفوظات قال و متى تردد بين ان يكون مجملا او مبينا فتقدير المبين احسن نحو و داؤد و سليمان اذ يحكمان في الحرث لك ان تقدر في امر الحرث و في تضمين الحرث و هو اولى لتعينه و الامر مجمل لتردده بين انواع قاعدة اذا دار الامر بين كون المحذوف فعلا و الباقي فاعلا و كونه مبتداء و الباقي خبرا فالثاني اولى لان المبتداء عين الخبر فالمحذوف عين الثابت فيكون حذفا كلا حذف فاما الفعل فانه غير الفاعل اللهم الا ان يعتضد الاول برواية اخرى في ذلك الموضع او بموضع آخر يشبه فالاول كقرأة يسبح له فيها

مثل القوم فان اراد تفسير الاعراب و ان الفاعل لفظ المثل محذوفا فمردود و ان اراد تفسير المعنى و ان في بئس ضمير المثل مستترا فسهل الثالث ان لا يكون موكدا لان الحذف مناف للتاكيد اذ الحذف مبنى على الاختصار و التاكيد مبنى على الطول و من ثم رد الفارسي على الزجاج في قوله ان هذان لساحران ان التقدير ان هذان لهما ساحران فقال الحذف والتوكيد باللام متنافيان و اما حذف الشيء لدليل و توكيده فلا تنافي بينهما لان المحذوف لدليل كالثابت الرابع ان لا يودى حذفه الى اختصار المختصر و من ثم لم يحذف اسم الفعل لانه اختصار للفعل الخامس ان لا يكون عاملا ضعيفا فلا يحذف الجار و الناصب للفعل و الجازم الا في مواضع قويت فيها الدلالة و كثر فيها استعمال تلك العوامل السادس ان لا يكون عوضا عن شيء و من ثم قال ابن مالك ان حرف النداء ليس عوضا من ادعو لاجازة العرب حذفه و لذا ايضا لم تحذف التاء من اقامة و استقامة و اما و اقام الصلوة فلا يقاس عليه و لا خبر كان لانه عوض او كالعوض من مصدرها السابع ان لا يؤدى حذفه الى تهيئة العامل القوي و من ثم لم يقس على قرأة و كل وعد الله الحسنى فائدة اعتبر الاخفش فى الحذف التدريج حيث امكن و لهذا قال في قوله واتقوا يوما لا تجزي نفس عن نفس شيئا ان الاصل لا تجزي فيه فحذف حرف الجر فصار تجزيه ثم حذف الضمير فصار تجزي و هذه ملاطفة فى الصناعة و مذهب سيبويه انهما حذفا معا قال ابن جني و قول الاخفش اوفق فى النفس و آنس من ان تحذف الحرفان معا في وقت واحد قاعدة الاصل ان يقدر الشيء في مكانه الاصلي ليلا يخالف الاصلي من وجهين

لا كيدن و قد توجب الصناعة التقدير و ان كان المعنى غير متوقف عليه كقولهم في لا اله الا الله ان الخبر محذوف اى موجود و قد انكره الامام فخر الدين و قال هذا كلام لا يحتاج الى تقدير و تقدير النحاة فاسد لان نفي الحقيقة مطلقة اعم من نفيها مقيدة فانها اذا انتفت مطلقة كان ذلك دليلا على سلب الماهية مع القيد و اذا انتفت مقيدة بقيد مخصوص لم يلزم نفيها مع قيد آخر ورد بان تقديرهم موجود يستلزم نفي كل اله غير الله قطعا فان العدم لا كلام فيه فهو في الحقيقة نفي للحقيقة مطلقة لا مقيدة ثم لابد من تقدير خبر لاستحالة مبتداء بلا خبر ظاهرا و مقدر و انما يقدر النحوي ليعطى القواعد حقها و ان كان المعنى مفهوما تنبيه قال ابن هشام انما يشترط الدليل في ما اذا كان المحذوف الجملة باسرها او احد ركنيها او يفيد معنى فيها هي مبنية عليه نحو تالله تفتو اما الفضلة فلا يشترط لحذفها وجد ان دليل بل يشترط ان لا يكون في حذفها ضرر معنوي او صناعي قال و يشترط فى الدليل اللفظي ان يكون طبق المحذوف ورد قول القراء في ا يحسب الانسان ان لن نجمع عظامه بلى قادرين ان التقدير بلى ليحسبنا قادرين لان الحسبان المذكور بمعنى الظن و المقدر بمعنى العلم لان التردد فى الاعادة كفر فلا يكون مامورا به قال و الصواب فيها قول سيبويه ان قادرين حال اى بلى نجمعها قادرين لان فعل الجمع اقرب من فعل الحسبان و لان بلى لا يجاب المنفى و هو فيها فعل الجمع الشرط الثاني ان لا يكون المحذوف كالجزء و من ثم لم يحذف الفاعل و لا نائبه و لا اسم كان و اخواتها قال ابن هشام و اما قول ابن عطية في بئس مثل القوم ان التقدير بئس المثل

على الحذف لان يوسف لا يصح ظرفا للوم ثم يحتمل ان يقدر لمتنني في حبه لقوله قد شغفها حبا و في مراودته لقوله تراود فتاها و العادة دلت على الثاني لان الحب المفرط لا يلام صاحبه عليه عادة لانه ليس اختيار يا بخلاف المراودة للقدرة على دفعها و تارة يدل عليه التصريح في موضع آخر و هو اقواها نحو هل ينظرون الا ان ياتيهم الله اى امره بدليل او يأتي امر ربك و جنة عرضها السموات اى كعرض بدليل التصريح بها في آية الحديد رسول من الله اى من عند الله بدليل و لما جاءهم رسول من عند الله و من الادلة على اصل الحذف العادة بان يكون العقل غير مانع من اجراء اللفظ على ظاهره من غير حذف نحو لو نعلم قتالا لا تبعناكم اى مكان قتال و المراد مكانا صالحا للقتال و انما كان كذلك لانهم كانوا اخبر الناس بالقتال و يتعيرون بان يتفوهوا بانهم لا يعرفونه فالعادة تمنع ان يريدوا لو نعلم حقيقة القتال فلذلك قدره مجاهد مكان قتال و يدل عليه انهم اشاروا على النبي صلى الله عليه و سلم ان لا يخرج من المدينة و منها الشروع في الفعل نحو باسم الله فيقدر ما جعلت التسمية مبداء له فان كانت عند الشروع في القرأة قدرت اقرأ او الاكل قدرت آكل و على هذا اهل البيان قاطبة خلافا لقول النحاة انه يقدر ابتدأت او ابتدأ كائن باسم الله و يدل على صحة الاول التصريح به في قوله و قال اركبوا فيها بسم الله مجراها و مرساها و في حديث باسمك ربي وضعت جنبي و منها الصناعة النحوية كقولهم في لا اقسم التقدير لا انا اقسم لان فعل الحال لا يقسم عليه و في تالله تفتؤ التقدير لا تفتو لانه لو كان الجواب مثبتا دخلت اللام و النون كقوله تالله

ما يستدعيه فيحصل الجزم بوجوب تقديره نحوا هذا الذي بعث الله رسولا و كلا وعد الله الحسنى و قد يشتبه الحال فى الحذف و عدمه نحو قل ادعوا الله او ادعوا الرحمن قد يتوهم ان معناه نادوا فلا حذف او سموا فالحذف واقع ذكر شروطه هي ثمانية احدها وجود دليل اما حالى نحو قالوا سلاما اى سلمنا سلاما او مقالي نحو و قيل للذين اتقوا ربكم ما ذا انزل ربكم قالوا خيرا اى انزل خيرا قال سلام قوم منكرون اى سلام عليكم انتم قوم منكرون و من الادلة العقل حيث يستحيل صحة الكلام عقلا الا بتقدير محذوف ثم تارة يدل على اصل الحذف من غير دلالة على تعيينه بل يستفاد التعيين من دليل آخر نحو حرمت عليكم الميتة فان العقل يدل على انها ليست المحرمة لان التحريم لا يضاف الى الاحرام و انما هو و الحل يضافان الى الافعال فعلم بالعقل حذف شئ و اما تعيينه و هو التناول فمستفاد من الشرع و هو قوله صلى الله عليه و سلم انما حرم اكلها لان العقل لا يدرك محل الحل و لا الحرمة و اما قول صاحب التلخيص انه من باب دلالة العقل ايضا فتابع فيه السكاكي من غير تامل انه مبني على اصول المعتزلة و تارة يدل العقل ايضا على التعيين نحو و جاء ربك اى امره بمعنى عذابه لان العقل دل على استحالة مجى الباري لانه من سمات الحدوث و على ان الجائى امره اوفوا بالعقود و اوفوا بعهد الله اى بمقتضى العقود و بمقتضى عهد الله لان العقد و العهد قولان قد دخلا فى الوجود و انقضيا فلا يتصور فيهما وفاء فلا نقض و انما الوفاء و النقض بمقتضاهما و ما ترتب عليهما من احكامهما و تارة يدل على التعيين للعادة نحو فذلكن الذي لمتننى فيه دل العقل

الشيخ عبد القاهر ما من اسم حذف في الحالة التي ينبغي ان يحذف فيها الا و حذفه احسن من ذكره و سمى ابن جني الحذف شجاعة العربية لانه يشجع عن الكلام قاعدة في حذف المفعول اختصارا واقتصارا قال ابن هشام جرت عادة النحويين ان يقولوا بحذف المفعول اختصارا و اقتصارا و يريدون بالاختصار الحذف لدليل و بالاقتصار الحذف لغير دليل و يمثلونه بنحو كلوا و اشربوا اى اوقعوا هذين الفعلين و التحقيق ان يقال يعنى كما قال اهل البيان تارة يتعلق الغرض بالاعلام بمجرد وقوع الفعل من غير تعيين من اوقعه و من اوقع عليه فجاء بمصدره مسندا الى فعل كون عام فيقال حصل حريق او نهب و تارة يتعلق بالاعلام بمجرد ايقاع الفاعل للفعل فيقتصر عليهما ولا يذكر المفعول ولا ينوى اذا لمنوي كالثابت ولا يسمى محذوفا لان الفعل ينزل لهذا القصد منزلة ما لا مفعول له و منه ربي الذي يحيي و يميت هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون كلوا واشربو ولا تسرفوا و اذا رأيت ثم اذا لمعنى ربي الذي يفعل الاحياء و الاماتة و هل يستوي من يتصف بالعلم و من ينتفي عنه العلم و اوقعوا الاكل و الشرب و ذروا الاسراف و اذا حصلت منك فيه روية و منه و لما ورد ماء مدين الآية الا ترى انه عليه السلام رحمهما اذا كانتا على صفة الزياد و قومها على السقي لا لكون مزودهما غنما و مسقيهم ابلا و كذلك المقصود من لا نسقى السقى الا المسقى ومن لم يتامل قدر يسقون ابلهم و يزود ان غنمهما و لا يسقى غنما و تارة يقصد اسناد الفعل الى فاعله و تعليقه بمفعوله و يذكره ان نحو لا تاكلوا الربا و لا تقربوا الزنا و هذا النوع الذي اذا لم يذكر محذوفه قبل محذوف و قد يكون فى اللفظ

العالمين قال رب السموات الآيات حذف فيها المبتداء في ثلاثة مواضع قبل ذكر الرب اى هو رب و الله ربكم والله رب المشرق لان موسى استعظم حال فرعون و اقدامه على السوال فاضمر اسم الله تعظيما و تفخيما و مثله في عروس الافراح بقوله رب ارني انظر اليك اى ذاتك و منها صيانة اللسان عنه تحقيرا له نحو صم بكم اى هم اوالمنافقون و منها قصد العموم نحو و اياك نستعين اى على العبادة و على امورنا كلها و الله يدعوا الى دار السلام اى كل احد و منها رعاية الفاصلة نحو و ما ودعك ربك و ما قلى اى و ما قلاك و منها قصد البيان بعد الابهام كما في فعل المشية نحو فلو شاء لهداكم اى فلو شاء هدايتكم فانه اذا سمع السامع فلو شاء تعلقت نفسه بمنشاء انهم عليه لا يدري ما هو فلما ذكر الجواب استبان بعد ذلك و اكثر ما يقع ذلك بعد آداة شرط لان مفعول المشيئة مذكور في جوابها و قد يكون مع غيرها استدلالا بغير الجواب نحو و لا يحيطون بشئ من علمه الا بما شاء و قد ذكر اهل البيان ان مفعول المشيئة و الارادة لا يذكر الا اذا كان غريبا او عظيما نحو لمن شاء منكم ان يستقيم لواردنا ان نتخذ لهوا و انما اطرد او كثر حذف مفعول المشيئة دون سائر الافعال لانه يلزم من وجود المشيئة وجود المشاء فالمشيئة المستلزم لمضمون الجواب لا يمكن ان يكون الا مشيئة الجواب ولذلك كانت الارادة مثلها في اطراد حذف مفعولها ذكره الزملكاني والتنوخي في الاقصى القريب قالوا و اذا حذف بعد لو فهو المذكور في جوابها ابدا واورد في عروس الافراح قالوا لوشاء ربنا لانزل ملائكة فان المعنى لوشاء ربنا ارسال الرسل لانزل ملائكة لان المعنى معين على ذلك فائدة قال

ومنها التفخيم والاعظام لما فيه من الابهام قال حازم في منهاج البلغاء انما يحسن الحذف لقوة الدلالة عليه او يقصد به تعديد اشياء فيكون في تعدادها طول وسأمة فيحذف ويكتفى بدلالة الحال وتترك النفس تجول فى الاشياء المكتفى بالحال عن ذكرها قال ولهذا القصد يوثر فى المواضع التي يراد بها التعجب والتهويل على النفوس ومنه قوله في وصف اهل الجنة حتى اذا جاؤها وفتحت ابوابها فحذف الجواب اذا كان وصف ما يجدونه ويلقونه عند ذلك لايتنا هى فجعل الحذف دليلا على ضيق الكلام عن وصف مايشاهدونه وتركت النفوس تقدر ماشانه ولا يبلغ مع ذلك كنه ما هنالك وكذا قوله ولوترى اذ وقفوا على النار اى لرأيت امرا فظيعا لا يكاد تحيط به العبارة ومنها التخفيف لكثرة دورانه فى الكلام كما في حذف حروف النداء نحو يوسف اعرض ونون لم يك والجمع السالم ومنه قرأة والمقيمى الصلاة ويا والليل اذا يسر وسأل المورخ السدوسي الاخفش عن هذه الآية فقال عادة العرب انها اذا عدلت بالشئ عن معناه نقصت حروفه والليل لما كان لا يسرى وانما يسرى فيه نقص منه حرف كما قال الله تعالى وما كانت امك بغيا الاصل بغية فلما حول عن فاعل نقص منه حرف ومنها كونه لا يصلح الا له نحو عالم الغيب والشهادة فعال لما يريد ومنها شهرته حتى يكون ذكره وعدمه سواء قال الزمخشرى وهو نوع من دلالة الحال التي لسانه انطق من لسان المقال وحمل عليه قرأة حمزة تساء لون به والارحام لان هذا مكان شهر بتكرير الجار فقامت الشهرة مقام الذكر ومنها صيانته عن ذكره تشريفا كقوله قال فرعون وما رب

تعليم الاستفتاح فى الامور باسمه على جهة التعظيم لله و التبرك باسمه الثالث ذكر ابن الاثير و صاحب عروس الافراح و غيرهما ان من انواع ايجاز القصر باب الحصر سواء كان بالا او بانما او غيرهما من ادواته لان الجملة فيها نابت مناب جملتين و باب العطف لان حرفه وضع للاغناء عن اعادة العامل و باب النائب عن الفاعل لانه دل على الفاعل باعطائه حكمه و على المفعول بوضعه و باب الضمير لانه وضع الاستغناء به عن الظاهر اختصارا ولذا لا يعدل الى المنفصل مع امكان المتصل و باب علمت انك قايم لانه منحل لاسم واحد سد مسد المفعولين من غير حذف و منها باب التنازع اذا لم يقدر على رأى القراء و منها طرح المفعول اختصارا على جعل المتعدي كاللازم و سيأتي تحريره و منها ادوات الاستفهام والشرط فان كم مالك يغني عن قولك اهو عشرون ام ثلاثون و هكذا الى ما لايتناهى و منها الالفاظ الملازمة للعموم كاحد و منها لفظ التثنية و الجمع فانه يغني عن تكرير المفرد واقيم الحرف فيهما مقامه اختصار اومما يصلح ان يعد من انواعه المسمى بالاتساع من انواع البديع و هو ان يوتي بكلام يتسع فيه التاويل بحسب ما يحتمله الفاظه من المعانى كفواتح السور ذكره ابن ابي الاصبع القسم الثانى من قسمى الايجاز ايجاز الحذف و فيه فوائد ذكر اسبابه مجرد الاختصار و الاحتراز عن العبث لظهوره و منها التنبيه على ان الزمان يتقاصر عن الاتيان بالمحذوف و ان الاشتغال بذكره يفضي الى تفويت المهم و هذه هى فائدة باب التحذير و الاغراء و قد اجتمعا في قوله ناقة الله و سقياها فناقة الله تحذير بتقدير ذروا و سقياها اغراء بتقدير الزموا

الخامس عشر ان لفظ القصاص مشعر بالمساواة فهو منبئ عن العدل بخلاف مطلق القتل السادس عشر الآية مبنية على الاثبات و المثل على النفي و الاثبات اشرف لانه اول و النفي ثان عنه السابع عشر ان المثل لايكاد يفهم الا بعد فهم ان القصاص هو الحياة و قوله فى القصاص حياة مفهوم من اول و هلة الثامن عشر ان فى المثل بناء افعل التفضيل من فعل متعد و الآية سالمة منه التاسع عشر ان افعل فى الغالب يقتضى الاشتراك فيكون ترك القصاص نافيا للقتل و لكن القصاص اكثر نفيا وليس الامر كذلك والآية سالمة من ذلك العشرون ان الآية رادعة عن القتل والجرح معا لشمول القصاص لهما والحياة ايضا في قصاص الاعضاء لان قطع العضو ينقص مصلحة الحياة وقد يسري الى النفس فيزيلها ولا كذلك المثل ثم في اول الآية ولكم و فيها لطيفة وهي بيان العناية بالمؤمنين على الخصوص و انهم المراد حياتهم لا غيرهم لتخصيصهم بالمعنى مع وجوده فيمن سواهم تنبيهات الاول ذكر قدامه من انواع البديع الاشارة و فسرها بالاتيان بكلام قليل ذي معان جمة و هذا هو ايجاز القصر بعينه لكن فرق بينهما ابن ابي الاصبع بان الايجاز دلالة مطابقة ودلالة الاشارة اما تضمن او التزام فعلم منه ان المراد بها ما تقدم في مبحث المنطوق الثاني ذكر القاضي ابوبكر في اعجاز القرآن ان من الايجاز نوعا يسمى التضمين و هو حصول معنى في لفظ من غيرذكر له باسم هي عبارة عنه قال و هو نوعان احدهما ما يفهم من البينة كقولك معلوم فانه يوجب انه لابد من عالم والثاني من معنى العبارة كبسم الله الرحمن الرحيم فانه تضمن

من تركه السابع ان فى الآية طباقا لان القصاص مشعر بضد الحياة بخلاف المثل الثامن ان الآية اشتملت على فن بديع و هو جعل احد الضدين الذي هو الفناء و الموت محلا و مكانا لضده الذي هو الحياة و استقرار الحياة فى الموت مبالغة عظيمة ذكره فى الكشاف و عبر عنه صاحب الايضاح بانه جعل القصاص كالمنبع للحياة و المعدن لها بادخال فى عليه التاسع ان فى المثل توالى اسباب كثيرة خفيفة و هو السكون بعد الحركة و ذلك مستكره فان اللفظ المنطوق به اذا توالت حركاته تمكن اللسان من النطق به فظهرت فصاحته بخلاف ما اذا تعقب كل حركة سكون فالحركات تنقطع بالسكنات نظيره اذا تحركت الدابة ادنى حركة فحبست ثم تحركت فحبست لايتبين اطلاقها ولا يتمكن من حركتها على ما نختاره فهي كالمقيدة العاشر ان المثل كالمتناقض من حيث الظاهر لان الشئ لاينفي نفسه الحادى عشر سلامة الآية من تكرير قلقلة القاف الموجب للضغة و الشدة و بعدها عن غنة النون الثاني عشر اشتمالها على حروف متلائمة لما فيها من الخروج من القاف الى الصاد اذ القاف من حروف الاستعلاء و الصاد من حروف الاستعلاء و الاطباق بخلاف الخروج من القاف الى التاء التي هى حرف منخفض فهو غير ملائم للقاف و كذا الخروج من الصاد الى الحاء احسن من الخروج من اللام الى الهمزة لبعد مادون طرف اللسان و اقصى الحلق الثالث عشر فى النطق بالصاد و الحاء و التاء حسن الصوت ولا كذلك تكرير القاف والفاء الرابع عشر سلامتها من لفظ القتل المشعر بالوحشة بخلاف لفظ الحياة فان الطباع اقبل له من لفظ القتل

ما فيها على التفصيل لم يخرجوا عنه و قوله تعالى و لكم فى القصاص حياة فان معناه كثير و لفظه يسير لان معناه ان الانسان اذا علم انه متى قتل قتل كان ذلك داعيا الى ان لا يقدم على القتل فارتفع بالقتل الذي هو القصاص كثير من قتل الناس بعضهم لبعض و كان ارتفاع القتل حياة لهم و قد فصلت هذه الجملة على اوجز ما كان عند العرب في هذا المعنى و هو قولهم القتل انفى للقتل بعشرين وجها او اكثر و قد اشار ابن الاثير الى انكار هذا التفصيل و قال لا تشبيه بين كلام الخالق و كلام المخلوق و انما العلماء يقدحون اذهانهم فما يظهر لهم من ذلك الاول ان ما يناظره من كلامهم و هو قوله القصاص حياة اقل حروفا فان حروفه عشرة و حروف القتل انفى للقتل اربعة عشر الثاني ان نفى القتل لا يستلزم الحياة و الآية ناصة على ثبوتها التي هى الغرض المطلوب منه الثالث ان تنكير حياة تفيد تعظيما فيدل على ان فى القصاص حياة متطاولة كقوله تعالى ولتجدنهم احرص الناس على حياة و لا كذلك المثل فان اللام فيه للجنس و لذا فسروا الحياة فيها بالبقاء الرابع ان الآية مطردة بخلاف المثل فانه ليس كل قتل انفى للقتل بل قد يكون ادعى له و هو القتل ظلما و انما ينفيه قتل خاص و هو القصاص ففيه حياة ابدا الخامس ان الآية خالية من تكرار لفظ القتل الواقع فى المثل و الخالي من التكرار افضل من المشتمل عليه و ان لم يكن مخلا بالفصاحة السادس ان الآية مستغنية عن تقدير محذوف بخلاف قولهم فان فيه حذف من التي بعد افعل التفضيل و ما بعدها و حذف قصاصا مع القتل الاول و ظلما مع القتل الثاني و التقدير القتل قصاصا انفى للقتل ظلما

نظمها وجودة معانيها في تصوير الحال مع الايجاز من غير اخلال
و قوله يا ايها النمل ادخلوا مساكنكم الآية جمع في هذه اللفظ احد عشر
جنسا من الكلام نادت و كنت و نبهت و سمت و امرت وقضت و حذرت
و خصت و عمت و اشارت و عذرت فالندا يا و الكناية اى و التنبيه ها
و التسمية النمل و الامر ادخلوا و القصص مساكنكم و التحذير لا يحطمنكم
و التخصيص سليمان و التعميم جنوده و الاشارة وهم و العذر لا يشعرون
افادت خمس حقوق الله حق الله وحق رسوله و حقها وحق رعيتها
و حق جنود سليمان و قوله يابني آدم خذوا زينتكم عند كل مسجد
الآية جمع فيها اصول الكلام الندا و العموم و الخصوص و الامر و الاباحة
و النهي و الخبر و قال بعضهم جمع الله الحكمة في شطر آية كلوا
و اشربوا و لا تسرفوا و قوله تعالى و او حينا الى ام موسى ان ارضعيه
الآية قال ابن العربي هي من اعظم آى فى القرآن فصاحة اذ فيها
امران و نهيان و خبران و بشارتان و قوله فاصدع بما تومر قال ابن ابى
الاصبع المعنى صرح بجميع ما اوحى اليك و بلغ كلما امرت ببيانه
و ان شق بعض ذلك على بعض القلوب فانصدعت و المشابهة بينهما
فيما يوثره التصريح فى القلوب فيظهر اثر ذلك على ظاهر الوجوه
من التقبض و الانبساط و يلوح عليها من علامات الانكار او الاستبشار
كما يظهر على ظاهر الزجاجة المصدوعة فانظر الى جليل هذه الاستعارة
و عظيم ايجازها و ما انطوت عليه من المعانى الكثيرة و قد حكى ان
بعض الاعراب لما سمع هذه الآية سجد و قال سجدت لفصاحة هذا
الكلام انتهى و قوله تعالى فيها ما تشتهى الانفس و تلذ الاعين قال
بعضهم جمع بهاتين اللفظتين ما لو اجتمع الخلق كلهم على وصف

الفحشاء و المنكر و البغي من معصية الله شيئا الا جمعه و روى ايضا عن ابن شهاب في معنى حديث الشيخين بعثت بجوامع الكلم قال بلغني ان جوامع الكلم ان الله يجمع له الامور الكثيرة التي كانت تكتب فى الكتب قبله فى الامر الواحد و الامرين ونحو ذلك و من ذلك قوله تعالى خذ العفو الآية فانها جامعة لمكارم الاخلاق لان في اخذ العفو التساهل و التسامح فى الحقوق و اللين و الرفق فى الدعاء الى الدين و فى الامر بالمعروف كف الاذى و غض البصر و ما شاكلهما من المحرمات و فى الاعراض الصبر و الحلم و التودة و من بديع الايجاز قوله تعالى قل هو الله احد الى اخرها فانها نهاية التنزيه و قد تضمنت الرد على نحو اربعين فرقة كما افرد ذلك بالتصنيف بهاء الدين بن شداد و قوله اخرج منها ماءها و مرعاها دل بهاتين الكلمتين على جميع ما اخرجه من الارض قوتا و متاعا للانام من العشب و الشجر و الحب والتمر و العصف و الحطب و اللباس و النار و الملح لان النار من العيدان و الملح من الماء و قوله لا يصدعون عنها و لا ينزفون جمع فيه جميع عيوب الخمر من الصداع وعدم العقل و ذهاب المال و نفاذ الشراب و قوله و قيل يا ارض ابلعى ماءك الآية امر فيها و نهى و اخبر و نادى و نعت و سمى و هلك و ابقى و اسعد و اشقى و قص من الانباء ما لو شرح ما اندرج في هذه الجملة من بديع اللفظ و البلاغة و الايجاز و البيان لجفت الاقلام و قد افردت بلاغة هذه الآية بالتاليف وفى العجائب للكرماني اجمع المعاندون على ان طوق البشر قاصر عن الاتيان بمثل هذه الآية بعد ان فتشوا جميع كلام العرب و العجم فلم يجدوا مثلها في فخامة الفاظها و حسن

معناه كقوله تعالى انه من سليمان الى قوله و آتوني مسلمين جمع في احرف العنوان و الكتاب و الحاجة و قيل في وصف بليغ كانت الفاظه قوالب معناه قلت و هذا رأى من يدخل المساواة فى الايجاز الثاني ايجاز التقدير و هو ان يقدر معنى زائد على المنطوق و يسمى بالتضييق ايضا و به سماه بدر الدين ابن مالك فى المصباح لانه نقص من الكلام ما صار لفظه اضيق من قدر معناه نحو فمن جاءه موعظة من ربه فانتهى فله ما سلف اى خطاياه غفرت فهي له لا عليه هدى للمتقين اى للضالين الصائرين بعد الضلال الى التقوى الثالث الايجاز الجامع و هو ان يحتوى اللفظ على معان متعددة نحو ان الله يأمر بالعدل و الاحسان الآية فان العدل هو الصراط المستقيم المتوسط بين طرفى الافراط و التفريط المؤتى به الى جميع الواجبات فى الاعتقاد و الاخلاق و العبودية و الاحسان هو الاخلاص في واجبات العبودية لتفسيره فى الحديث بقوله ان تعبد الله كانك تراه اى تعبده مخلصا في نيتك واقفا فى الخضوع اخذا اهبة الحذر الى ما لا يحصى و ايتاء ذى القربى هو الزيادة على الواجب من النوافل هذا فى الاوامر و اما النواهي فبالفحشاء الاشارة الى القوة الشهوانية و بالمنكر الى الافراط الحاصل من آثار الغضبية او كل محرم شرعا وبالبغى اى الاستعلاء الفائض عن الوهمية قلت و لهذا قال ابن مسعود رض ما فى القرآن آية اجمع للخير و الشر من هذه الآية اخرجه فى المستدرك و روى البيهقي في شعب الايمان عن الحسن انه قرأها ثم وقف فقال ان الله جمع لكم الخير كله و الشر كله في آية واحدة فو الله ما ترك العدل و الاحسان من طاعة الله شيئا الا جمعه و لا ترك

ثالث و هو ان المساواة لا تكاد توجد خصوصا فى القرآن و قد مثل لها فى التلخيص بقوله تعالى و لا يحيق المكر السيء الا باهله و فى الايضاح بقوله تعالى و اذا رأيت الذين يخوضون في آياتنا و تعقب بان فى الآية الثانية حذف موصوف الذين و فى الاولى اطناب بلفظ السيء لان المكر لا يكون الا سيئا و ايجاز بالحذف ان كان الاستثناء غير مفرغ اى باحد و بالقصر فى الاستثناء و بكونها حاثة على كف الاذى عن جميع الناس محذرة عن جميع ما يودى اليه و بان تقديرها يضر بصاحبه مضرة بليغة فاخرج الكلام مخرج الاستعارة التبعية الواقعة على سبيل التمثيلية لان يحيق بمعنى يحيط فلا يستعمل الا فى الاجسام تنبيه الايجاز و الاختصار بمعنى واحد كما يؤخذ من المفتاح و صرح به الخطيبي و قال بعضهم الاختصار خاص بحذف الجمل فقط بخلاف الايجاز قال الشيخ بهاء الدين و ليس بشيء و الاطناب قيل بمعنى الاسهاب و الحق انه اخص منه فان الاسهاب التطويل لفائدة او لا لفائدة كما ذكره التنوخي و غيره فصل الايجاز قسمان ايجاز قصر و ايجاز حذف فالاول هو الوجيز بلفظه قال الشيخ بهاء الدين الكلام القليل ان كان بعضا من كلام اطول منه فهو ايجاز حذف و ان كان كلاما يعطى معنى اطول منه فهو ايجاز قصر و قال بعضهم ايجاز القصر هو تكثير المعنى بتقليل اللفظ و قال آخر هو ان يكون اللفظ بالنسبة الى المعنى اقل من القدر المعهود عادة و سبب حسنه انه يدل على التمكين فى الفصاحة و لهذا قال صلى الله عليه و سلم اوتيت جوامع الكلم و قال الطيبي فى التبيان الايجاز الخالي من الحذف ثلاثة اقسام احدها ايجاز القصر و هو ان يقصر اللفظ على

المفهوم افاد نفي الايقان المحصور بل افاد نفي الايقان مطلقا عن غيرهم و هذا كله على تقدير تسليم الحصر ونحن نمنع ذلك و نقول انه اختصاص و ان بينهما فرقا انتهى كلام السبكي النوع السادس و الخمسون في الايجاز و الاطناب اعلم انهما من اعظم انواع البلاغة حتى نقل صاحب سر الفصاحة عن بعضهم انه قال البلاغة هي الايجاز و الاطناب قال صاحب الكشاف كما انه يجب على البليغ في مظان الاجمال ان يحمل و يؤخر فكذلك الواجب عليه في موارد التفصيل ان يفصل و يشبع انشد الجاحظ شعرا

يرمون بالخطب الطوال و تارة وحي الملاحظ خيفة الرقباء

و اختلف هل بين الايجاز و الاطناب واسطة و هي المساواة اولا و هي داخلة في قسم الايجاز فالسكاكي و جماعة على الاول لكنهم جعلوا المساواة غير محمودة و لا مذمومة لانهم فسروها بالمتعارف من كلام اوساط الناس الذين ليسوا في مرتبة البلاغة و فسروا الايجاز باداء المقصود باقل من عبارة المتعارف و الاطناب اداؤه باكثر منها لكون المقام خليقا بالبسط و ابن الاثير و جماعة على الثاني فقالوا الايجاز التعبير عن المراد بلفظ غير زايد و الاطناب بلفظ ازيد و قال القزويني الاقرب ان يقال ان المقبول من طريق التعبير عن المراد تاديته اصله اما بلفظ مسا و للاصل المراد او ناقص عنه واف او زايد عليه لفائدة و الاول المساواة و الثاني الايجاز و الثالث الاطناب و احترز بواف عن الاخلال و بقولنا لفائدة عن الحشو و التطويل فعنده ثبوت المساواة واسطة وانها من قسم المقبول فان قلت عدم ذكرك المساواة في الترجمة لما ذا هل هو لرجحان نفيها او عدم قبولها او لامر غير ذلك قلت لهما و لامر

عن غيره بالمفهوم الثالث الحصر الذي قد يفيده التقديم وليس هو على تقدير تسليمه مثل الحصرين الاولين بل هو في قوة جملتين احدٰهما ما صدر به الحكم نفيا كان او اثباتا و هو المنطوق و الاخرى ما فهم من التقديم و الحصر يقتضي نفي المنطوق فقط دون ما دل عليه من المفهوم لان المفهوم لا مفهوم فاذا قلت انا لا اكرم الا اياك افاد التعريض بان غيرك يكرم غيره و لا يلزم انك لا تكرمه و قد قال الله تعالى الزاني لا ينكح الا زانية او مشركة افاد ان العفيف قد ينكح غير الزانية و هو ساكت عن نكاحه الزانية فقال سبحانه تعالى بعده و الزانية لا ينكحها الا زان او مشرك بيانا لما سكت عنه في الاولى فلو قال بالآخرة يؤقنون افاد بمنطوقه ايقانهم بها و مفهومه عند من يزعم انهم لا يؤقنون بغيرها و ليس ذلك مقصودا بالذات و المقصود بالذات قوة ايقانهم بالآخرة حتى صار غيرها عندهم كالمد حوض فهو حصر مجازي و هو دون قولنا يؤقنون بالآخرة لا بغيرها فاضبط هذا واياك ان تجعل تقديره لا يؤقنون الا بالآخرة اذا عرفت هذا فتقديمهم افاد ان غيرهم ليس كذلك فلو جعلنا التقدير لا يؤقنون الا بالآخرة كان المقصود المهم النفي فيتسلط المفهوم عليه فيكون المعنى افادة ان غيرهم يؤقن بغيرها كما زعم المعترض ويطرح افهام انه لا يؤقن بالآخرة و لا شك ان هذا ليس بمراد بل المراد افهام ان غيرهم لا يؤقن بالآخرة فلذلك حافظنا على ان الغرض الاعظم اثبات الايقان بالآخرة ليتسلط المفهوم عليه و ان المفهوم لا يتسلط على الحصر لان الحصر لم يدل عليه بجملة واحدة مثل ما و الا و مثل انما و انما دل عليه بمفهوم مستفاد من منطوق و ليس احدهما متقيدا بالآخر حتى يقول ان

و كذلك آلهة غير الله تريدون المنكر ارادتهم آلهة دون الله من غير حصر و قد قال الزمخشري في و بالآخرة هم يوقنون في تقديم الآخرة و بناء يوقنون على هم تعريض باهل الكتاب و ما كانوا عليه من اثبات امر الآخرة على خلاف حقيقته و ان قولهم ليس بصادر عن ايقان و ان اليقين ما عليه من آمن بما انزل اليك و ما انزل من قبلك و هذا الذي قاله الزمخشري في غاية الحسن و قد اعترض عليه بعضهم فقال تقديم الآخرة افاد ان ايقانهم مقصور على انه ايقان بالآخرة لا بغيرها و هذا الاعتراض من قائله مبنى على ما فهمه من ان تقديم المعمول يفيد الحصر وليس كذلك ثم قال المعترض وتقديمهم افاد ان هذا القصر مختص بهم فيكون ايقان غيرهم بالآخرة ايمانا بغيرها حيث قالوا لن تمسنا النار و هذا منه ايضا استمرار على ما في ذهنه من الحصر اى ان المسلمين لا يوقنون الا بالآخرة و اهل الكتاب يوقنون بها و بغيرها و هذا فهم عجيب الجأه اليه فهمه الحصر و هو ممنوع و على تقدير تسليمه فالحصر على ثلاثة اقسام احدها بما و الا كقولك ما قام الا زيد صريح في نفى القيام عن غير زيد و يقتضى اثبات القيام لزيد قيل بالمنطوق و قيل بالمفهوم و هو الصحيح لكنه اقوى المفاهيم لان الا موضوعة للاستثناء و هو الاخراج فدلالتها على الاخراج بالمنطوق لا بالمفهوم ولكن الاخراج من عدم القيام ليس هو غير القيام بل قد يستلزمه فلذلك رجحنا انه بالمفهوم و التبس على بعض الناس لذلك فقال انه بالمنطوق و الثاني الحصر بانما و هو قريب من الاول فيما نحن فيه و ان كان جانب الاثبات فيه اظهر فكانه يفيد اثبات قيام زيد اذا قلت انما قام زيد بالمنطوق و نفيه

الناس من الاختصاص الحصر و ليس كذلك و انما الاختصاص شئ و الحصر شئ آخر و الفضلاء لم يذكروا في ذلك لفظة الحصر و انما عبروا بالاختصاص و الفرق بينهما ان الحصر نفي غير المذكور و اثبات المذكور و الاختصاص قصد الخاص من جهة خصوصه و بيان ذلك ان الاختصاص افتعال من الخصوص و الخصوص مركب من شيئين احدهما عام مشترك بين شيئين اواشياء و الثاني معنى منضم اليه يفصله عن غيره كضرب زيد فانه اخص من مطلق الضرب فاذا قلت ضربت زيدا اخبرت بضرب عام وقع منك على شخص خاص فصار ذلك الضرب المخبر به خاصا لما انضم اليه منك و من زيد و هذه المعاني الثلاثة اعني مطلق الضرب و كونه وقعا منك و كونه واقعا على زيد قد يكون قصد المتكلم لها ثلاثتها على السواء و قد يترجح قصده لبعضها على بعض و يعرف ذلك بما ابتداء به كلامه فان الابتداء بالشي يدل على الاهتمام به و انه هو الارجح في غرض المتكلم فاذا قلت زيدا ضربت علم ان خصوص الضرب على زيد هو المقصود و لا شك ان كل مركب من خاص و عام له جهتان فقد يقصد من جهة عمومه و قد يقصد من جهة خصوصه و الثاني هو الاختصاص و انه هو الاهم عند المتكلم وهو الذي قصد افادته السامع من غير تعرض ولا قصد لغيره باثبات ولا نفي ففي الحصر معنى زايد عليه وهو نفي ما عدا المذكور و انما جاء هذا في اياك نعبد للعلم بان قائليه لا يعبدون غير الله و لذا لم يطرد في بقية الآيات فان قوله ا فغير دين الله يبغون لو جعل في معنى ما يبغون الا غير دين الله وهمزة الانكار داخلة عليه لزم ان يكون المنكر الحصر لا مجرد بغيهم غير دين الله و ليس المراد

اختصاصهم بشهادة النبي صلى الله عليه و سلم و خالف في ذلك ابن الحاجب فقال في شرح المفصل الاختصاص الذي يتوهمه كثير من الناس من تقديم المعمول و هم استدل على ذلك بقوله فاعبد الله مخلصا له الدين ثم قال بل الله فاعبد و رد هذا الاستدلال بان مخلصا له الدين اغنى عن آداة الحصر فى الآية الاولى و لو لم يكن فى المانع من ذكر المحصور في محل بغير صيغة الحصر كما قال الله تعالى و اعبدوا ربكم و قال امر ان لا تعبدوا الا اياه بل قوله بل الله فاعبد من اقوى ادلة الاختصاص فان قبلها لئن اشركت ليحبطن عملك فلو لم تكن للاختصاص وكان معناها اعبد الله لما حصل الاضراب الذي هو في معنى بل و اعترض ابو حيان على مدعى الاختصاص بنحو افغير الله تأمروني اعبد و اجيب بانه لما كان من اشرك بالله غيره كانه لم يعبد الله كان امرهم بالشرك كانه امر بتخصيص غير الله بالعبادة و رد صاحب الفلك الدائر الاختصاص بقوله كلا هدينا و نوحا هدينا من قبل و هو اقوى ما رد به و اجيب بانه لا يدعى فيه اللزوم بل الغلبة و قد يخرج الشيء عن الغالب قال الشيخ بهاء الدين و قد اجتمع الاختصاص و عدمه في آية واحدة و هي اغير الله تدعون ان كنتم صادقين بل اياه تدعون فان التقديم فى الاولى قطعا ليس للاختصاص و في اياه قطعا للاختصاص وقال والده الشيخ تقى الدين في كتاب الاقتناص فى الفرق بين الحصر و الاختصاص اشتهر كلام الناس في ان تقديم المعمول يفيد الاختصاص و من الناس من ينكر ذلك و يقول انما يفيد الاهتمام وقد قال سيبويه في كتابه و هم يقدمون ما هم به اعنى و البيانيون على افادته الاختصاص و يفهم كثير من

و صرح الزمخشري بانه افاد الاختصاص في قوله الله يبسط الرزق في سورة الرعد و في قوله الله نزل احسن الحديث و في قوله والله يقول الحق و هو يهدى السبيل و يحتمل انه اراد ان تقديمه افادة فيكون من امثلة الطريق السابع العاشر تعريف الجزئين ذكر الامام فخرالدين في نهاية الايجاز انه يفيد الحصر حقيقة او مبالغة نحو المنطلق زيد و منه فى القرآن فيما ذكر الزملكاني في اسرار التنزيل الحمد لله قال انه يفيد الحصر كما في اياك نعبد اى الحمد لله لا لغيره الحادي عشر نحو جاء زيد نفسه نقل بعض شراح التلخيص عن بعضهم انه يفيد الحصر الثاني عشر نحو ان زيد القايم نقله المذكور ايضا الثالث عشر نحو قائم في جواب زيد اما قائم او قاعد ذكره الطيبي في شرح التبيان الرابع عشر قلب بعض حروف الكلمة فانه يفيد الحصر على ما نقله فى الكشاف في قوله و الذين اجتنبوا الطاغوت ان يعبدوها وقال القلب للاختصاص بالنسبة الى لفظ الطاغوت لانه وزنه على قول فعلوت من الطغيان كملكوت و رحموت قلب بتقديم اللام على العين فوزنه فعلوت ففيه مبالغات التسمية بالمصدر و البناء بناء مبالغة و القلب و هو الاختصاص اذ لا يطلق على غير الشيطان تنبيه كاد اهل البيان يطبقون على ان تقديم المعمول يفيد الحصر سواء كان مفعولا او ظرفا او مجرورا و لهذا قيل في اياك نعبد و اياك نستعين معناه نخصك بالعبادة و الاستعانة و في لالى الله تحشرون معناه اليه لا الى غيره و في لتكونوا شهداء على الناس و يكون الرسول عليكم شهيدا اخرت الصلة فى الشهادة الاولى و قدمت فى الثانية لان الغرض فى الاول اثبات شهادتهم و فى الثاني اثبات

معرفة و المسند مثبتا فيأتي للتخصيص نحو انا قمت و انا سعيت في حاجتك فان قصد به قصر الافراد اكد بنحو وحدي او قصر القلب اكد بنحو لا غيري و منه في القرآن بل انتم بهديتكم تفرحون فانما قبله من قوله ا تمدونني بمال ولفظ بل المشعر بالاضراب يقضي بان المراد بل انتم لا غيركم فان المقصود نفي فرحه هو بالهدية لا اثبات الفرح لهم بهديتهم قاله في عروس الافراح قال و كذا قوله لا تعلمهم نحن نعلمهم اى لا يعلمهم الا نحن و قد تأتي للتقوية والتاكيد دون التخصيص قال الشيخ بهاء الدين و لا يتميز ذلك الا بما يقتضيه الحال و سياتي الكلام ثانيها ان يكون المسند منفيا نحو انت لا تكذب فانه ابلغ في نفي الكذب من لا تكذب و من لا تكذب انت و قد يفيد التخصيص و منه فهم لا يتساءلون ثالثها ان يكون المسند اليه نكرة مثبتا نحو رجل جاءني فيفيد التخصيص اما بالجنس اى لا امراة او الوحدة اى لا رجلان رابعها ان يلى المسند اليه حرف النفي فيفيده نحو ما انا قلت هذا اى لم اقله مع ان غيري قاله و منه و ما انت علينا بعزيز اى العزيز علينا رهطك لا انت و لذا قال ارهطي اعز عليكم من الله هذا حاصل رأى الشيخ عبد القاهر و وافقه السكاكي و زاد شروطا و تفاصيل ذلك بسطناها في شرح الفية المعاني الثامن تقديم المسند ذكر ابن الاثير و ابن النفيس و غيرهما ان تقديم الخبر على المبتداء يفيد الاختصاص و رده صاحب الفلك الدائر بانه لم يقل به احد و هو ممنوع فقد صرح السكاكي وغيره بان تقديم ما رتبته التاخير يفيده و مثلوه بنحو تميمي انا التاسع ذكر المسند اليه ذكر السكاكي انه قد يذكر ليفيد التخصيص و تعقبه صاحب الايضاح

فيه خلافا و نازع فيه الشيخ بهاء الدين في عروس الافراح فقال اي قصر فى العطف بلا انما فيه نفي و اثبات فقولك زيد شاعر لا كاتب لا تعرض فيه لنفي صفة ثالثة و القصر انما يكون بنفي جميع الصفات غير المثبت حقيقة او مجازا و ليس هو خاصا بنفى الصفة التي يعتقدها المخاطب و اما العطف ببل فابعد منه لانه لا يستمر فيها النفي و الاثبات الخامس تقديم المعمول نحو اياك نعبد لالى الله تحشرون و خالف فيه قوم و سياتي بسط الكلام فيه قريبا السادس ضمير الفصل نحو فالله هو الولي اى لا غيره و اولئك هم المفلحون ان هذا لهو القصص الحق ان شانئك هو الابتر و ممن ذكر انه للحصر البيانيون في بحث المسند اليه و استدل له السهيلي بانه اتى به في كل موضع ادعى فيه نسبة ذلك المعنى الى غير الله و لم يؤت به حيث لم يدع و ذلك في قوله و انه هو اضحك و ابكى الى آخر الآيات فلم يؤت به في و انه خلق الزوجين و ان عليه النشأة و انه اهلك لان ذلك لم يدع لغير الله و اتى به فى الباقي لادعائه لغيره قال في عروس الافراح و قد استنبطت دلالته على الحصر من قوله فلما توفيتني كنت انت الرقيب لانه لو لم يكن للحصر لما حسن لان الله لم يزل رقيبا عليهم و انما الذي حصل بتوفيته انهم لم يبق لهم رقيب غير الله ومن قوله لا يستوى اصحاب النار و اصحاب الجنة اصحاب الجنة هم الفائزون فانه ذكر لتبيين عدم الاستواء و ذلك لا يحسن الا بان يكون الضمير للاختصاص السابع تقديم المسند اليه على ما قال الشيخ عبد القاهر قد يقدم المسند اليه ليفيد تخصيصه بالخبر الفعلى والحاصل على رائه ان له احوالا احدها ان يكون المسند اليه

لا يجتمع حرفا تاكيد متواليان الا للحصر و منها قوله تعالى انما العلم عند الله قال انما يأتيكم به الله قل انما علمها عند ربي فانه انما يحصل مطابقة الجواب اذا كانت انما للحصر ليكون معناها لا آتيكم به انما يأتي به الله و لا اعلمها انما يعلمها الله و كذا قوله و لمن انتصر بعد ظلمه فاوليك ما عليهم من سبيل انما السبيل على الذين يظلمون الناس ما على المحسنين من سبيل الى قوله انما السبيل على الذين يستاذنونك وهم اغنياء و اذا لم تأتهم بآية قالوا لولا اجتبيتها قل انما اتبع ما يوحى الى من ربي و ان تولوا فانما عليك البلاغ لا يستقيم المعنى في هذه الآيات ونحوها الا بالحصر و احسن ما يستعمل انما في مواقع التعريض نحو انما يتذكر اولوا الالباب الثالث انما بالفتح عدها من طرق الحصر الزمخشري و البيضاوي فقالا في قوله تعالى قل انما يوحى الى انما الهكم اله واحد انما القصر الحكم على شئ او لقصر الشى على حكم نحو انما زيد قايم و انما يقوم زيد و قد اجتمع الامران في هذه الآية لان انما يوحى الى مع فاعله بمنزلة انما يقوم زيد و انما الهكم بمنزلة انما زيد قائم و فائدة اجتماعهما الدلالة على ان الوحي الى الرسول صلى الله عليه وسلم مقصور على استيثار الله بالوحدانية و صرح التنوخي فى الاقصى القريب بكونها للحصر فقال كلما اوجب ان انما بالكسر للحصر اوجب ان انما بالفتح للحصر لانها فرع عنها و ما ثبت للاصل ثبت للفرع ما لم يثبت مانع منه و الاصل عدمه و رد ابو حيان على الزمخشري ما زعمه بانه يلزمه انحصار الوحى فى الوحدانية و اجيب بانه حصر مجازي باعتبار المقام الرابع العطف بلا او بل ذكره اهل البيان و لم يحكوا

و الاستثناء بالا او غير نحو لا اله الا الله و ما من اله الا الله ما قلت لهم الا ما امرتني به و وجه افادة الحصر ان الاستثناء المفرغ لابد ان يتوجه النفي فيه الى مقدر هو مستثنى منه لان الاستثناء اخراج فيحتاج الى مخرج منه و المراد التقدير المعنوي لا الصناعي و لابد ان يكون عاما لان الاخراج لا يكون الا من عام و لابد ان يكون مناسبا للمستثنى في جنسه مثل ما قام الا زيد اى احد و ما اكلت الا تمرا اى ماكولا و لابد ان يوافقه في صفته اى اعرابه و حينئذ يجب القصر اذا اوجب منه شئ بالا ضرورة ببقاء ما عداه على صفة الانتفاء و اصل استعمال هذا الطريق ان يكون المخاطب جاهلا بالحكم و قد يخرج عن ذلك فينزل المعلوم منزلة المجهول لاعتبار مناسب نحو و ما محمد الا رسول فانه خطاب للصحابة و هم لم يكونوا يجهلون رسالة النبي صلى الله عليه و سلم لانه نزل استعظامهم له عن الموت منزلة من يجهل رسالته لان كل رسول فلابد من موته فمن استبعد موته فكانه استبعد رسالته الثاني انما الجمهور على انها للحصر فقيل بالمنطوق و قيل بالمفهوم و انكر قوم افادتها اياه منهم ابو حيان و استدل مثبتوه بامور منها قوله تعالى انما حرم عليكم الميتة بالنصب فان معناه ما حرم عليكم الا الميتة لانه المطابق فى المعنى لقراءة الرفع فانها للقصر فكذا قراءة النصب و الاصل استواء معنى القرأتين و منها اَنّ اِنّ للاثبات و ما للنفي فلابد ان يحصر القصر للجمع بين النفي و الاثبات لكن تعقب بان ما زايدة كافة لا نافية و منها ان ان للتاكيد و ما كذلك فاجتمع تاكيد ان فافاد الحصر قاله السكاكي و تعقب بانه لو كان اجتماع تاكيدين يفيد الحصر لافاده نحو ان زيد القائم و اجيب بان مراده

وعدم تعذرها يبعد ان يكون للذات صفة واحدة ليس لها غيرها و لذا لم يقع فى التنزيل و مثاله مجازيا و ما محمد الا رسول اى انه مقصور على الرسالة لا يتعداها الى التبري من الموت الذي استعظموه الذي هو من شان الاله و مثال قصر الصفة على الموصوف حقيقيا لا اله الا الله و مثاله مجازيا قل لا اجد فيما اوحى الى محرما على طاعم يطعمه الا ان يكون ميتة الآية كما قال الشافعي فيما تقدم نقله عنه في اسباب النزول ان الكفار لما كانوا يحلون الميتة و الدم و لحم الخنزير و ما اهل لغير الله به و كانوا يحرمون كثيرا من المباحات و كانت سجيتهم تخالف وضع الشرع ونزلت الآية مسبوقة بذكر شبههم فى البحيرة والسائبة والوصيلة و الحامي و كان الغرض ابانة كذبهم فكانه قال لا حرام الا ما احللتموه و الغرض الرد عليهم والمضادة لا الحصر الحقيقي و قد تقدم بابسط من هذا و ينقسم الحصر باعتبار آخر الى ثلاثة اقسام قصر افراد و قصر قلب و قصر تعيين فالاول يخاطب به من يعتقد الشركة نحو انما الله اله واحد خوطب به من يعتقد اشتراك الله و الاصنام فى الالوهية و الثاني يخاطب به من يعتقد اثبات الحكم لغير من اثبته المتكلم نحو ربى الذي يحيى و يميت خوطب به نمرود الذي اعتقد انه هو المحيى المميت دون الله الا انهم هم السفهاء خوطب به من اعتقد من المنافقين ان المؤمنين سفهاء دونهم و ارسلناك للناس رسولا خوطب به من يعتقد من اليهود اختصاص بعثته بالعرب و الثالث يخاطب به من تساوي عنده الامران فلم يحكم باثبات الصفة لواحد بعينه و لا لواحد باحد الصفتين بعينها فصل طرق الحصر كثيرة احدها النفي و الاستثناء سواء كان النفي بلا او ما و غيرهما

جانبه قال الطيبي و ذلك يفعل اما لتنويه جانب الموصوف و منه و رفع بعضهم درجات اى محمدا صلى الله عليه و سلم اعلى لقدره اى انه العلم الذي لا يشتبه و اما لتلطف به و احتراز عن المخاشنة نحو ما لي لا اعبد الذي فطرني اى و مالكم لا تعبدون بدليل قوله و اليه ترجعون و كذا قوله ا اتخذ من دونه الهة و وجه حسنه اسماع من يقصد خطابه الحق على وجه يمنع غضبه اذا لم يصرح بنسبته للباطل و الاعانة على قبوله اذا لم يرد له الا ما اراده لنفسه و اما لاستدراج الخصم الى الاذعان و التسليم و منه لئن اشركت ليحبطن عملك خوطب النبي صلى الله عليه و سلم و اريد غيره لاستحالة الشرك عليه شرعا و اما للذم نحو انما يتذكر اولوا الالباب فانه تعريض بذم الكفار و انهم في حكم البهايم الذين لا يتذكرون و اما للاهانة و التوبيخ نحو و اذا الموؤدة سئلت باى ذنب قتلت فان سوالها لاهانة قاتلها و توبيخه و قال السبكي التعريض قسمان قسم يراد به معناه الحقيقي و يشار به الى المعنى الاخر المقصود كما تقدم و قسم لا يراد به بل يضرب مثلا للمعنى الذي هو مقصود التعريض كقول ابراهيم بل فعله كبيرهم هذا النوع الخامس و الخمسون فى الحصر و الاختصاص اما الحصر و يقال له القصر هو تخصيص امر باخر بطريق مخصوص و يقال ايضا اثبات الحكم للمذكور و نفيه عما عداه و ينقسم الى قصر الموصوف على الصفة و قصر الصفة على الموصوف و كل منهما اما حقيقي و اما مجازي مثال قصر الموصوف على الصفة حقيقيا نحو ما زيد الا كاتب اى لا صفة له غيرها و هو عزيز لا يكاد يوجد لتعذر الاحاطة بصفات الشئ حتى يمكن اثبات شئ منها و نفي ما عداها بالكلية

عن قوله بالسواى مع ان فيه مطابقة كالجملة الثانية الى بما عملوا تادبا ان تضاف السوء الى الله تعالى فصـــل للناس فى الفرق بين الكناية و التعريض عبارات متقاربة فقال الزمخشري الكناية ذكر الشئ بغير لفظه الموضوع له و التعريض ان يذكر اشياء يدل به على شئ لم يذكره و قال ابن الاثير الكناية مادل على معنى يجوز حمله على الحقيقة و المجاز بوصف جامع بينهما و التعريض اللفظ الدال على معنى لا من جهة الوضع الحقيقى او المجازي كقوله من يتوقع صلة و الله اني محتاج فانه تعريض بالطلب مع انه لم يوضع له حقيقة ولا مجازا و انما فهم من عرض اللفظ اي جانبه و قال السبكي في كتاب الاغريض فى الفرق بين الكناية و التعريض الكناية لفظ استعمل في معناه مراد منه لازم المعني فهى بحسب استعمال اللفظ فى المعنى حقيقة و التجوز في ارادة افادة ما لم يوضع له و قد لايراد منها المعنى بل يعبر بالملزوم عن اللازم و هي حينئذ مجاز و من امثلته قل نارجهنم اشد حرا فانه لم يقصد افادة ذلك لانه معلوم بل افادة لازمة و هو انهم يردونها و يجدون حرها ان لم يجاهدوا و اما التعريض فهو لفظ استعمل في معناه للتلويح بغيره تحويل فعله كبيرهم هذا نسب الفعل الى كبير الاصنام المتخذة الهة كانه غضب ان تعبد الصغار معه تلويحا لعابديها فانها لا تصلح ان تكون الهة لما يعلمون اذا نظروا بعقولهم من عجز كبيرها عن ذلك الفعل و الا له لا يكون عاجزا فهو حقيقة ابدا و قال السكاكي التعريض ما سبق لاجل موصوف غير مذكور و منه ان يخاطب واحد و يراد غيره و سمي به لانه اميل الكلام الى جانب مشارا به الى اخر يقال نظر اليه بعرض وجهه اى

فتاخذ الخلاصة من غير اعتبار مفرداتها بالحقيقة و المجاز فتعبر بها عن المقصود كما تقول الرحمن على العرش استوى انه كناية عن الملك فان الاستواء على السرير لا يحصل الا مع الملك فجعل كناية عنه و كذا قوله و الارض جميعا قبضة يوم القيمة و السموات مطويات بيمينه كناية عن عظمته و جلالته من غير ذهاب بالقبض و اليمين الى جهتين حقيقة و مجاز تذنيب من انواع البديع التي تشبه الكناية الارداف و هو ان يريد المتكلم معنى فلا يعبر عنه بلفظه الموضوع له و لا بدلالة الاشارة بل بلفظ يرادفه كقوله تعالى و قضى الامر و الاصل و هلك من قضى الله هلاكه و نجى من قضى الله نجاته و عدل عن ذلك الى لفظ الارداف لما فيه من الايجاز و التنبيه على ان هلاك الهالك و نجاة الناجي كان بامر آمر مطاع و قضاء من لا يرد قضاه و الامر يستلزم امرا فقضاؤه يدل على قدرة الآمر به و قهره و ان الخوف من عقابه و رجاء ثوابه يخصان على طاعة الامر و لا يحصل ذلك كله من اللفظ الخاص و كذا قوله و استوت على الجودي حقيقة ذلك جلست فعدل عن اللفظ الخاص بالمعنى الى مرادفه لما فى الاستواء من الاشعار بجلوس متمكن لا زيغ فيه و لا ميل و هذا لا يحصل من لفظ الجلوس و كذا فيهن قاصرات الطرف الاصل عفيفات و عدل عنه للدلالة على انهن مع العفة لا تطمح اعينهن الى غير ازواجهن و لا يشتهين غيرهم و لا يوخذ ذلك من لفظ الفقه قال بعضهم و الفرق بين الكناية و الارداف ان الكناية انتقال من لازم الى ملزوم و الارداف من مذكور الى متروك و من امثلته ايضا ليجزي الذين اساؤا بما عملوا و يجزي الذين احسنوا بالحسنى عدل فى الجملة الاولى

يكني و اورد على ذلك التصريح بالفرج في قوله و التي احصنت فرجها و اجيب بان المراد به فرج القميص و التعبير به من لطيف الكنايات و احسنها اي لم يعلق ثوبها زينة فهي طاهرة الثوب كما يقال نقي الثوب وعفيف الذيل كناية عن العفة و منه و ثيابك فطهر و كيف يظن ان نفخ جبريل وقع في فرجها و انما نفخ في جيب درعها و نظيره ايضا و لا ياتين ببهتان يفترينه بين ايديهن و ارجلهن قلت و على هذا ففي الآية كناية عن كناية و نظيره ما تقدم من مجاز المجاز رابعها قصد البلاغة و المبالغة نحوا و من ينشأ في الحلية و هو في الخصام غير مبين كني عن النساء بانهن ينشأن في الترفه و التزين الشاغل عن النظر في الامور و دقيق المعاني و لو اتى بلفظ النساء لم يشعر بذلك و المراد نفي ذلك عن الملائكة و قوله بل يداه مبسوطتان كناية عن سعة جوده و كرمه جدا خامسها قصد الاختصار كالكناية عن الفاظ متعددة بلفظ فعل نحو و لبئس ما كانوا يفعلون فان لم تفعلوا و لن تفعلوا اى فان لم تاتوا بسورة من مثله سادسها التنبيه على مصيره نحو تبت يدا ابي لهب اي جهنمي مصيره الى اللهب حمالة الحطب في جيدها حبل اي تمامه مصيرها الى ان تكون حطبا لجهنم في جيدها غل قال بدرالدين بن مالك في المصباح انما يعدل عن الصريح الى الكناية لنكتة كالايضاح او بيان حال الموصوف او مقدار حاله او القصد الى المدح او الذم او الاختصار او الستر او الصيانة او التعمية او الالغاز او التعبير عن الصعب بالسهل او عن المعنى القبيح باللفظ الحسن و استنبط الزمخشري نوعا من الكناية غريبا و هو ان يعمد الى جملة معناها على خلاف الظاهر

كناية عن آدم ثانيها ترك اللفظ الى ما هو اجمل نحو ان هذا اخي له تسع و تسعون نعجة و لي نعجة واحدة فكنى بالنعجة عن المرأة كعادة العرب في ذلك لان ترك التصريح بذكر النساء اجمل منه و لهذا لم تذكر فى القرآن امرأة باسمها الا مريم قال السهيلي و انما ذكرت مريم باسمها على خلاف عادة الفصحاء لنكتة و هو ان الملوك و الاشراف لا يذكرون حرايرهم في ملأ و لا يتبدلون اسماء هن بل يكنون عن الزوجة بالعرس و العيال و نحو ذلك فاذا ذكروا الاماء لم يكنوا عنهن و لم يصونوا اسماء هن عن الذكر فلما قالت النصارى في مريم ما قالوا صرح الله باسمها و لم يكن تاكيد اللعبودية التي هي صفة لها و تاكيدا لان عيسى لا اب له و الا لنسب اليه ثالثها ان يكون الصريح مما يستقبح ذكره ككناية الله عن الجماع بالملامسة و المباشرة و الافضاء و الرفث و الدخول و السر في قوله و لكن لا تواعدوهن سرا و الغشيان في قوله فلما تغشاها واخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال المباشرة الجماع و لكن الله يكنى واخرج عنه قال ان الله كريم يكنى ما شاء و ان الرفث هو الجماع و كنى عن طلبه بالمراودة في قوله و راودته التي هو في بيتها عن نفسه و عنه او عن المعانقة باللباس في قوله هن لباس لكم و انتم لباس لهن و بالحرث في قوله نساءكم حرث لكم و كنى عن البول ونحوه بالغايط في قوله او جاء احد منكم من الغايط و اصله المكان المطمين من الارض و كنى عن قضاء الحاجة باكل الطعام في قوله في مريم و ابنها كانا يأكلان الطعام و كنى عن الاستاه بالادبار في قوله يضربون وجوههم و ادبارهم واخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد في هذه الآية قال يعنى استاههم و لكن الله

قال في عروس الافراح و ما قاله ممنوع و ليس من شرط الاستعارة صلاحية الكلام لصرفه الى الحقيقة فى الظاهر قال بل لو عكس ذلك و قيل لا بد من عدم صلاحيته لكان اقرب لان الاستعارة مجاز لابد له من قرينة فان لم تكن قرينة امتنع صرفه الى الاستعارة و صرفناه الى حقيقته و انما نصرفه الى الاستعارة بقرينة اما لفظية او معنوية نحو زيد اسد فالاخبار به عن زيد قرينة صارفة عن ارادة حقيقته قال و الذي نختاره في نحو زيد اسد انه قسمان تارة يقصد به التشبيه فكيون اداة التشبيه مقدرة و تارة يقصد بها الاستعارة فلا يكون مقدرة و يكون الاسد مستعملا في حقيقته و ذكر زيد و الاخبار عنه ما لا يصلح له حقيقة قرينة صارفة الى الاستعارة دالة عليها فان قامت قرينة على حذف الاداة صرنا اليه و ان لم تقم فنحن بين اضمار و استعارة و الاستعارة اولى فيصار اليها و ممن صرح بهذا الفرق عبد اللطيف البغدادي في قوانين البلاغة و كذا قال حازم الفرق بينهما ان الاستعارة و ان كان فيها معنى التشبيه فتقدير حرف التشبيه لا يجوز فيها و التشبيه بغير حرف على خلاف ذلك لان تقدير حرف التشبيه واجب فيه النوع الرابع و الخمسون في كناياته و تعريضه هما من انواع البلاغة و اساليب الفصاحة و قد تقدم ان الكناية ابلغ من التصريح و عرفها اهل البيان بانها لفظ اريد به لازم معناه قال الطيبي ترك التصريح بالشئ الى ما يساويه فى اللزوم فينتقل منه الى الملزوم و انكر وقوعها فى القرآن من انكر المجاز فيه بناء على انها مجاز و قد تقدم الخلاف في ذلك و للكناية اسباب احدها التنبيه على عظم القدرة نحو هو الذي خلقكم من نفس واحدة

و قال الطرطوسي ان اطلق المسلمون الاستعارة فيه اطلقناها و ان امتنعوا امتنعنا و يكون هذا من قبيل ان الله عالم و العلم هو العقل ثم لا تصفه به لعدم التوقيف انتهى فائدة ثانية تقدم ان التشبيه من اعلى انواع البلاغة و اشرفها و اتفق البلغاء على ان الاستعارة ابلغ منه لانها مجاز و هو حقيقة و المجاز ابلغ فاذن الاستعارة على مراتب الفصاحة و كذا الكناية ابلغ من الصريح و الاستعارة و لانها ابلغ من الكناية كما قال في عروس الافراح انه الظاهر لانها كالجامعة بين كناية و استعارة و لانها مجاز قطعا و فى الكناية خلاف و ابلغ انواع الاستعارة التمثيلية كما يوخذ من الكشاف و يليها المكنية صرح به الطيبي لاشتمالها على المجاز العقلي و الترشيحية ابلغ من المجردة و المطلقة و التخييلية ابلغ من التحقيقية و المراد بالابلغية افادة زيادة التاكيد و المبالغة في كمال التشبيه لا زيادة فى المعنى لا توجد في غير ذلك خاتمة من المهم تحرير الفرق بين الاستعارة و التشبيه المحذوف الاداة نحو زيد اسد قال الزمخشري في قوله تعالى صم بكم عمى فان قلت هل تسمى ما فى الآية استعارة قلت مختلف فيه و المحققون على تسميته تشبيها بليغا لا استعارة لان المستعار له مذكور و هم المناققون و انما تطلق الاستعارة حيث يطوى ذكر المستعار له و يجعل الكلام خلوا عنه صالحا لان يراد المنقول عنه و المنقول له لو لا دلالة الحال او فحوى الكلام و من ثم ترى المفلقين السحرة يتناسون التشبيه و يضربون عنه صفحا و علله السكاكي بان من شرط الاستعارة امكان حمل الكلام على الحقيقة فى الظاهر و تناسى التشبيه و زيد اسد لا يمكن كونه حقيقة فلا يجوز ان يكون استعارة و تابعه صاحب الايضاح

فاثبت له الارادة التي هي من خواص العقلاء و من التصريحية آية مسستهم الباساء من بعثنا من مرقدنا هذا وتنقسم باعتبار آخر الى وفاقية بان يكون اجتماعهما في شئ ممكنا نحو او من كان ميتا فاحييناه اي ضالا فهديناه استعير الاحياء من جعل الشيء حيا للهداية التي بمعنى الدلالة على ما يوصل الى المطلوب و الاحياء و الهداية مما يمكن اجتماعهما في شئ و عنادية و هي ما لا يمكن اجتماعهما في شئ كاستعارة اسم المعدوم للموجود لعدم نفعه واجتماع الوجود و العدم في شئ ممتنع و من العنادية التهكمية و التمليحية و هما ما استعمل في ضد او نقيض نحو فبشرهم بعذاب اليم اي انذرهم استعيرت البشارة وهي الاخبار بما يسر للانذار الذي هو ضده بادخاله في جنسها على سبيل التهكم و الاستهزاء و نحو انك لانت الحليم الرشيد عنوا الغوى السفيه تهكما ذق انك انت العزيز الكريم و تنقسم باعتبار آخر اي تمثيلية و هي ان يكون وجه الشبه فيها منتزعا من متعدد نحو و اعتصموا بحبل الله جميعا شبه استظهار العبد بالله و وثوقه بحمايته و النجاة من المكاره باستمساك الواقع في مهواة بحبل و ثيق مدلى من مكان مرتفع يأمن انقطاعه تنبيه قد تكون الاستعارة بلفظين نحو قوارير من فضة يعنى تلك الاواني ليست من الزجاج ولا من الفضة بل في صفاء القارورة و بياض الفضة فصب عليهم ربك سوط عذاب فالصب كناية عن الدوام و السوط عن الايلام فالمعنى عذبهم عذابا دائما مولما فائدة انكر قوم الاستعارة بناء على انكارهم المجاز و قوم اطلاقها فى القرآن لان فيها ايها ما للحاجة و لانه لم يرد في ذلك اذن من الشرع و عليه القاضي عبد الوهاب المالكي

قرن بما يلايم المستعار له من الاذاقة و لو اراد الترشيح لقال فكساها لكن التجريد هنا ابلغ لما في لفظ الاذاقة من المبالغة فى الالم باطنا و الثالثة ان لا تقرن بواحدة منهما و تنقسم باعتبار آخر الى تحقيقية و تخئيلية و مكنية و تصريحية فالاولى ما تحقق معنا هما حسا نحو فاذا قها الله الآية او عقلا نحو و انزلنا اليكم نورا اى بيانا واضحا وحجة لا معة اهدنا الصراط المستقيم اى الدين الحق فان كلا منهما يتحقق عقلا و الثانية ان يضمر التشبيه فى النفس فلا يصرح بشئ من اركانه سوى المشبه زيادةً على ذلك التشبيه المضمر فى النفس بان يثبت للمشبه به فسمى ذلك التشبيه المضمر استعارة بالكناية و مكنيا عليها لانه لم يصرح به بل دل عليه بذكر خواصه و بقابله التصريحية و يسمى اثبات ذلك الامر المختص بالمشبه به للمشبه استعارة تخئيلية لانه قد استعير للمشبه ذلك الامر المختص بالمشبه به و به يكون كمال المشبه به و قوامه في وجه الشبه ليخيل ان المشبه من جنس المشبه به و من امثلة ذلك الذين ينقضون عهد الله من بعد ميثاقه شبه العهد بالحبل و اضمر فى النفس فلم يصرح بشئ من اركان التشبيه سوى العهد المشبه و دل عليه باثبات النقض له الذي هو من خواص المشبه به و هو الحبل و كذا و اشتعل الراس شيبا طوى ذكر المشبه به و هو النار و دل عليه بلازمه و هو الاشتعال فاذا قها الله الآية شبه ما يدرك من اثر الضرر و الالم بما يدرك من طعم المرقا وقع عليه الاذاقة ختم الله على قلوبهم شبهها في ان لا يقبل الحق بالشئ الموثوق المختوم ثم اثبت لها الختم جدارا يريد ان ينقض شبه ميلانه للسقوط بانحراف الحي

التبليغ فقد لا يوثر التبليغ و الصدع يوثر جزما و اخفض لهما جناح الذل قال الراغب لما كان الذل على ضربين ضرب يضع الانسان وضرب يرفعه و قصد في هذا المكان الى ما يرفع استعير لفظ الجناح فكانه قيل استعمل الذل الذي يرفعك عند الله و كذا قوله يخوضون في آياتنا فنبذوه و راء ظهورهم افمن اسس بنيانه على تقوى و يبغونها عوجا لتخرج الناس من الظلمات الى النور فجعلناه هباء منثورا في كل و اديهيمون ولا تجعل يدك مغلولة الى عنقك كلها من استعارة المحسوس للمعقول و الجامع عقلى الخامس استعارة معقول لمحسوس و الجامع عقلي ايضا نحو انا لما طغي الماء المستعار منه التكبر و هو عقلي و المستعار له كثرة الماء و هي حسى و الجامع الاستعلاء و هو عقلي ايضا و مثله تكاد تميز من الغيظ و جعلنا آية النهار مبصرة تنقسم باعتبار اللفظ الى اصليه و هي ما كان الفظ المستعار فيها اسم جنس كآية بحبل من الله من الظلمات الى النور في كل واد و تبعية و هي ما كان اللفظ فيها غير اسم جنس كالفعل و المشتقات كسائر الآيات السابقة و كالحروف نحو فالتقطه آل فرعون ليكون لهم عدوا شبه سبب ترتب العداوة و الحزن على الالتقاط بترتب علته الغائية عليه ثم استعير فى المشبه اللام الموضوعة للمشبه به و تنقسم باعتبار آخر الى مرشحة و مجردة و مطلقة فالاولى و هى ابلغها ان تقرن بما يلايم المستعار منه نحو اوليك الذين اشتروا الضلالة بالهدى فما ربحت تجارتهم استعير الاشتراء للاستبدال و الاختيار ثم قرن بما يلايمه من الربح و التجارة و الثانية ان تقرن بما يلايم المستعار له نحو فاذا قها الله لباس الجوع و الخوف استعير اللباس للجوع ثم

من المشرق عند انشقاق الفجر قليلا قليلا بجامع التتابع على طريق التدريج و كل ذلك محسوس الثاني استعارة محسوس لمحسوس بوجه عقلي قال ابن ابى الاصبع و هي الطف من الاولى نحو و آية لهم الليل نسلخ منه النهار فالمستعار منه السلخ الذي هو كشط الجلد عن الشاة و المستعار له كشف الضوء عن مكان الليل و هما حسيان و الجامع ما يعقل من ترتب امر على آخر و حصوله عقب حصوله كترتب ظهور اللحم على الكشط و ظهور الظلمة على كشف الضوء عن مكان الليل والترتب امر عقلي و مثله فجعلناها حصيدا اصل الحصيد النبات و الجامع الهلاك و هو امر عقلي الثالث استعارة معقول لمعقول بوجه عقلي قال ابن ابى الاصبع و هي الطف الاستعارات نحو من بعثنا من مرقدنا المستعار منه الرقاد اى النوم و المستعار له الموت و الجامع عدم ظهور الفعل و الكل عقلي و مثله و لما سكت عن موسى الغضب المستعار السكوت و المستعار منه الساكت و المستعار له الغضب الرابع استعارة محسوس لمعقول بوجه عقلي ايضا نحو مستهم الباساء و الضراء استعير المس و هو صفة فى الاجسام و هو محسوس لمقاساة الشدة و الجامع اللحوق و هما عقليان بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فالقذف و الدمغ مستعار ان و هما محسوسان و الحق و الباطل مستعار لهما و هما معقولان ضربت عليهم الذلة اينما ثقفوا الا بحبل من الله و حبل من الناس استعير الحبل المحسوس للعهد و هو معقول فاصدع بما تؤمر استعير الصدع و هي كسر الزجاجة و هو محسوس للتبليغ و هو معقول و الجامع التاثير و هو ابلغ من بلغ و ان كان بمعناه لان تاثير الصدع ابلغ من تاثير

جليا و اخفض لهما جناح الذل فان المراد امر الولد بالذل لوالديه رحمة فاستعير للذل اولا جانبا ثم للجانب جناحا و تقدير الاستعارة القريبة و اخفض لهما جانب الذل اي اخفض جانبك ذلا و حكمة الاستعارة في هذا جعل ما ليس بمرئي مرئيا لاجل حسن البيان و لما كان المراد خفض جانب الولد للوالدين بحيث لا يبقى الولد من الذل لهما و الاستكانة ممكنا احتيج فى الاستعارة الى ما هو ابلغ من الاولى فاستعير لفظ الجناح لما فيه من المعاني التي لا تحصل من خفض الجانب لان من يميل جانبه الى جهة السفل ادنى ميل صدق عليه انه خفض جانبه و المراد خفض يلصق الجنب بالارض و لا يحصل ذلك الا بذكر الجناح كالطائر و مثال المبالغة و فجرنا الارض عيونا و حقيقته و فجرنا عيون الارض و لو عبر بذلك لم يكن فيه من المبالغة ما فى الاول المشعر بان الارض كلها صارت عيونا فرع اركان الاستعارة ثلاثة مستعار و هو اللفظ المشبه به و مستعار منه و هو اللفظ المشبه ومستعار له و هو المعنى الجامع و اقسامها كثيرة باعتبارات فتنقسم باعتبار الاركان الثلاثة الى خمسة اقسام احدها استعارة محسوس لمحسوس نحو و اشتعل الرأس شيبا فالمستعار منه هو النار و هو المستعار له الشيب و الوجه هو الانبساط و مشابهة ضوء النار لبياض الشيب و كل ذلك محسوس و هو ابلغ مما لو قيل اشتعل شيب الرأس لافادته عموم الشيب لجميع الرأس و مثله و تركنا بعضهم يومئذ يموج في بعض اصل الموج حركة الماء فاستعمل في حركتهم على سبيل الاستعارة و الجامع سرعة الاضطراب و تتابعه من الكثرة و الصبح اذا تنفس استعير خروج النفس شيئا فشيئا لخروج النور

اي لا نجعلهم كذلك نعم اورد على ذلك مثل نوره كمشكوة فانه شبه فيه الاعلى بالادنى لا في مقام السلب و اجيب بانه للتقريب الى اذهان المخاطبين اذ لا اعلى من نوره فيشبه به فائدة قال ابن ابى الاصبع لم يقع فى القرآن تشبيه شيئين بشيئين و لا اكثر من ذلك انما وقع فيه تشبيه واحد بواحد فصل زوج المجاز بالتشبيه فتولد بينهما الاستعارة فهي مجاز علاقته المشابهة و يقال في تعريفها اللفظ المستعمل فيما شبه بمعناه الاصلي والاصح انه مجاز لغوي لانها موضوعة للمشبه به لا للمشبه و لا لاعم منهما فاسد في قولك رأيت اسدا يرمي موضوع للسبع لا للشجاع و لا لمعنى اعم منهما كالحيوان الجري مثلا ليكون اطلاقه عليهما حقيقة كاطلاق الحيوان عليهما و قيل مجاز عقلي بمعنى ان التصرف فيها في امر عقلي لا لغوي لانها لا تطلق على المشبه الا بعد ادعاء دخوله في جنس المشبه به فكان استعمالها فيما وضعت له فيكون حقيقة لغوية ليس فيها غير نقل الاسم و حده و ليس نقل الاسم المجرد استعارة لانه لا بلاغة فيه بدليل الاعلام المنقولة فلم يبق الا ان يكون مجازا عقليا و قال بعضهم حقيقة الاستعارة ان تستعار الكلمة من شئ معروف بها الى شئ لم يعرف بها و حكمة ذلك اظهار الخفي و ايضاح الظاهر الذي ليس بجلي او حصول المبالغة او المجموع مثال اظهار الخفي و انه في ام الكتاب فان حقيقته و انه في اصل الكتاب فاستعير لفظ الام للاصل لان الاولاد تنشأ من الام كما تنشأ الفروع من الاصل وحكمة ذلك تمثيل ما ليس بمرئ حتى يصير مرئيا فينتقل السامع من حد السماع الى حد العيان و ذلك ابلغ فى البيان و مثال ايضاح ما ليس بجلي ليصير

ما حذفت فيه الآداة نحو وهي تمر مرالسحاب اى مثل مرالسحاب
وازواجه امهاتهم وجنة عرضها السموات و الارض و مرسل و هو ما لم
يحذف كالآيات السابقة والمحذوف الآداة ابلغ لانه نزل فيه الثاني نزل
منزلة الاول تجوزا قاعدة الاصل دخول آداة التشبيه على المشبه به
و قد تدخل على المشبه اما لقصد المبالغة فينقلب التشبيه و يجعل
المشبه هو الاصل نحو قالوا انما البيع مثل الربا كان الاصل ان يقول
انما الربا مثل البيع لان الكلام فى الربا لا فى البيع فعدلوا عن ذلك و جعلوا
الربا اصلا ملحقا به البيع فى الجواز و انه الخليق بالحل ومنه قوله افمن
يخلق كمن لا يخلق فان الظاهر العكس لان الخطاب لعبدة الاوثان الذين
سموها الهة تشبيها بالله سبحانه فجعلوا غير الخالق مثل الخالق
فخولف في خطابهم لانهم بالغوا في عبادتهم و غلوا حتى صارت
عندهم اصلا فى العبادة فجاء الرد على وفق ذلك و اما لوضوح الحال
نحو و ليس الذكر كالانثى فان الاصل و ليس الانثى كالذكر و انما عدل
عن الاصل لان المعنى و ليس الذكر الذي طلبت كالانثى التي
وهبت و قيل لمراعات الفواصل لان ما قبله اني وضعتها انثى و قد
تدخل على غيرهما اعتمادا على فهم المخاطب نحو كونوا انصار الله
كما قال عيسى ابن مريم الآية المراد كونوا انصار الله خالصين فى
الانقياد كشان مخاطبين عيسى اذ قالوا قاعدة القاعدة فى المدح تشبيه
الادنى بالاعلى و فى الذم تشبيه الاعلى بالادنى لان الذم مقام الادنى
و الاعلى طار عليه فيقال فى المدح حصى كالياقوت و فى الذم ياقوت
كالزجاج و كذا فى السلب و منه يا نساء النبي لستن كاحد من النساء
اي فى النزول لا فى العلو ام نجعل المتقين كالفجار اي في سوء الحال

فلا تصيبها الشمس في احد طرفي النهار بل تصيبها الشمس اعدل اصابة و هذا مثل ضربه الله للمؤمن ثم ضرب للكافر مثلين احدهما كسراب بقيعة و الآخر كظلمات في بحر لجي الى آخره و هو ايضا تشبيه مركب الثالث ينقسم باعتبار آخر الى اقسام احدها تشبيه ما يقع عليه الحاسة مما لا يقع اعتمادا على معرفة النقيض و الضد فان ادراكهما ابلغ من ادراك الحاسة كقوله طلعها كانه رؤس الشياطين شبه بما لا يشك انه منكر قبيح لما حصل في نفوس الناس من بشاعة صور الشياطين و ان لم ترها عيانا الثاني عكسه و هو تشبيه ما لا يقع عليه الحاسة بما يقع عليه كقوله و الذين كفروا اعمالهم كسراب بقيعة الآية اخرج ما لا يحس و هو الايمان الى ما يحس و هو السراب و المعنى الجامع بطلان التوهم مع شدة الحاجة و عظم الفاقة الثالث اخراج ما لم تجر العادة به الى ماجرت كقوله تعالى و اذ نتقنا الجبل فوقهم كانه ظلة و الجامع بينهما الارتفاع فى الصورة الرابع اخراج ما لا يعلم بالبديهة الى ما يعلم بها كقوله وجنة عرضها كعرض السماء و الجامع العظم و فايدته التشويق الى الجنة بحسن الصفة و افراط السعة الخامس اخراج ما لا قوة له فى الصفة الى ماله قوة فيها كقوله تعالى و له الجوار المنشات فى البحر كالاعلام و الجامع فيها العظم و الفائدة ابانة القدرة على تسخير الاجسام العظام فى الطف ما يكون من الماء و ما في ذلك من انتفاع الخلق بحمل الاثقال و قطعها الاقطار البعيدة فى المسافة القريبة و ما يلازم ذلك من تسخير الرياح للانسان فتضمن الكلام بناء عظيما من الفخر و تعداد النعم و على هذا الاوجه الخمسة تجرى تشبيهات القرآن الرابع ينقسم باعتبار آخر الى موكد و هو

الحس فالمحسوس اصل للمعقول و تشبيهه به يستلزم جعل الاصل فرعا و الفرع اصلا و هو غير جائز و قد اختلف في قوله تعالى هن لباس لكم و انتم لباس لهن الثاني ينقسم باعتبار وجهه الى مفرد و مركب و المركب ان ينتزع وجه الشبه في امور مجموع بعضها الى بعض كقوله كمثل الحمار يحمل اسفارا فالتشبيه مركب من احوال الحمار و هو حرمان الانتفاع بابلغ نافع مع تحمل التعب في استصحابه و قوله انما مثل الحياة الدنيا كماء انزلناه من السماء الى قوله كان لم تغن فى الامس فان فيه عشر جمل وقع التركيب من مجموعها بحيث لو سقط شيء اختل التشبيه اذ المقصود تشبيه حال الدنيا في سرعة نقيضها و انقراض نعيمها و اغترار الناس بها بحال ما نزل من السماء و انبت انواع العشب و زين بزخرفها وجه الارض كالعروس اذا اخذت الثياب الفاخرة حتى اذا طمع اهلها فيها و ظنوا انها مسلمة من الحوائج اتاها بأس الله فجأة كانها لم تكن بالامس و قال بعضهم وجه تشبيه الدنيا بالماء امران احدهما ان الماء اذا اخذت منه فوق حاجتك تضررت و ان اخذت قدر الحاجة انتفعت به فكذلك الدنيا و الثاني ان الماء اذا طبقت عليه كفك لتحفظه لم يحصل فيه شيء فكذلك الدنيا و قوله مثل نوره كمشكاة فيها مصباح الآية فشبه نور الذي يلقيه في قلب المؤمن بمصباح اجتمعت فيه اسباب الاضاءة اما بوضعه في مشكاة و هي الطاقة التي لا تنفذ و كونها لا تنفذ ليكون اجمع للبصر و قد جعل فيها مصباح في داخل زجاجة تشبه الكوكب الدري في صفائها و دهن المصباح من اصفى الادهان و اقواها وقودا لانه من زيت شجرة في وسط السراج لا شرقية و لا غربية

النفس باخراجها من خفي الى جلي و ادناه البعيد من القريب ليفيد بيانا و قيل الكشف عن المعنى المقصود مع الاختصار و ادواته حروف و اسماء و افعال فالحروف الكاف نحو كرماد و كان نحو كانه رؤس الشياطين و الاسماء مثل و شبه و نحوهما مما يشتق من المماثلة و المشابهة قال الطيبي ولا يستعمل الا في حال او صفة لها شان وفيها غرابة نحو مثل ما ينفقون في هذه الحيوة الدنيا كمثل ريح فيها صر اصابت حرث قوم و الافعال نحو يحسبه الظمأن ماء يخيل اليه من سحرهم انها تسعي قال فى التلخيص تبعا للسكاكي و ربما يذكر فعل ينبئ عن التشبيه فيوتي بالتشبيه القريب بنحو علمت زيدا اسدا الدال على التحقيق و فى البعيد بنحو حسبت زيدا اسدا الدال على الظن و عدم التحقيق و خالفه جماعة منهم الطيبي فقالوا في كون هذه الافعال تبنئ عن التشبيه نوع خفاء و الاظهر ان الفعل ينبئ عن حال التشبيه فى القرب و البعد و ان الاداة محذوفة مقدرة لعدم استقامة المعني بدونه ذكر اقسامه ينقسم التشبيه باعتبارات الاول باعتبار طرفيه الى اربعة اقسام لانهما اما حسيان او عقليان او المشبه به حسي و المشبه عقلي او عكسه مثال الاول و القمر قدرناه منازل حتى عاد كالعرجون القديم كانهم اعجاز نخل منقعر و مثال الثاني ثم قست قلوبكم من بعد ذلك فهي كالحجارة او اشد قسوة كذا مثل به فى البرهان و كانه ظن ان التشبيه واقع فى القسوة و هو غير ظاهر بل هو واقع بين القلوب و الحجارة فهو من الاول و مثال الثالث مثل الذين كفروا بربهم اعمالهم كرماد اشتدت به الريح و مثال الرابع لم يقع فى القرآن بل منعه الامام اصلا لان العقل مستفاد من

بين الحقيقة و المجاز قال انه لم يوضع لما استعمل فيه فليس حقيقة ولا علاقة معتبرة فليس مجاز كذا في شرح بديعية ابن جابر لرفيقه قلت و الذي يظهر انها مجاز و العلاقة المصاحبة خاتمة لهم مجاز المجاز و هو ان يجعل المجاز الماخوذ عن الحقيقة بمثابة الحقيقة بالنسبة الى مجاز اخر فيتجوز بالمجاز الاول عن الثاني لعلاقة بينها كقوله تعالى و لكن لا تواعد و هن سرا فانه مجاز فان الوطي تجوز عنه بالسر لكونه لا يقع غالبا الا في السر و تجوز به عن العقد لانه سبب عنه فللمصحح للمجاز الاول الملازمة و الثاني السببية و المعني لا تواعدو هن عقد نكاح وكذا قوله و من يكفر بالايمان فقد حبط عمله فان قوله لا اله الا الله مجاز عن تصديق القلب بمدلول هذا اللفظ و العلاقة السببية لان توحيد اللسان مسبب عن توحيد الجنان و التعبير بلا الا الله عن الواحد انية من مجاز التعبير بالقول عن المقول فيه و جعل منه ابن السيد قوله انزلنا عليكم لباسا فان المنزل عليهم ليس هو نفس اللباس بل الماء المنبت للزرع المتخذ منه الغزل المنسوج منه اللباس النوع الثالث و الخمسون في تشبيهه و استعاراته التشبيه نوع من اشرف انواع البلاغة و اعلاها قال المبرد في الكامل لو قال قائل هو اكثر كلام العرب لم يبعد و قد افرد تشبيهات القرآن بالتصنيف ابو القاسم ابن البدار البغدادي في كتاب سماه الجمان و عرفه جماعة منهم السكاكي بانه الدلالة على مشاركة امر لامر في معني و قال ابن ابي الاصبع هو اخراج الاغمض الى الاظهر و قال غيره هو الحاق شي بذي وصف في وصفه و قال بعضهم هو ان تثبت للمشبه حكما من احكام المشبه به و الغرض منه تانيس

الكناية وفيها اربعة مذاهب احدها انها حقيقة قال ابن عبد السلام و هو الظاهر لانها استعملت فيما وضعت له واريد بها الدلالة على غيرها الثاني انها مجاز الثالث انها لا حقيقة ولا مجاز و اليه ذهب صاحب التلخيص لمنعه فى المجاز ان يراد المعني الحقيقي مع المجازي و تجويزه ذلك فيها الرابع و هو اختيار الشيخ تقي الدين السبكي انها تقسم الى حقيقة و مجاز فان استعملت اللفظ في معناه مرادا منه لازم المعني ايضا فهو حقيقة و ان لم يرد المعني بل عبر بالملزوم عن اللازم فهو مجاز لاستعماله في غير ما وضع له و الحاصل ان الحقيقة منها ان يستعمل اللفظ فيما وضع له ليفيد غير ما وضع له و المجاز منها ان يريد به غير موضوعه استعمالا و افادة الخامس التقديم و التاخير عده قوم من المجاز لان تقديم ما رتبته التاخير كالمفعول و تاخير ما رتبته التقديم كالفاعل نقل لكل واحد منهما عن مرتبته وحقه قال فى البرهان والصحيح انه ليس منه فان المجاز نقل ما وضع الى مالم يوضع له السادس الالتفات قال الشيخ بهاء الدين السبكي لم ارمن ذكر هل هو حقيقة اومجاز قال و هو حقيقة حيث لم يكن معه تجريد فصل فيما يوصف بانه حقيقة و مجاز باعتبارين هو الموضوعات الشرعية كالصلوة والزكاة والصوم و الحج فانها حقائق بالنظر الى الشرع مجازات بالنظر الى اللغة فصل فى الواسطة بين الحقيقة و المجاز قيل بها في ثلاثة اشياء احدها اللفظ قبل الاستعمال و هذا القسم مفقود فى القرآن و يمكن ان يكون منه اوائل السور على القول بانها للاشارة الى الحروف التي يتركب منها الكلام ثانيها الاعلام ثالثها اللفظ المشتمل فى المشاكلة نحو و مكروا و مكر الله و جزاء سيئة سيئة مثلها ذكر بعضهم انه واسطة

اربعة اقسام قسم يتوقف عليه صحة اللفظ و معناه من حيث الاسناد نحو و اسأل القرية اي اهلها اذ لا يصح اسناد السوال اليها و قسم يصح بدونه لكن يتوقف عليه شرعا كقوله فمن كان منكم مريضا او على سفر فعدة من ايام اخر اي فافطر فعدة و قسم يتوقف عليه عادة لا شرعا نحو اضرب بعصاك الحجر فانفلق اي فضربه و قسم يدل عليه دليل غير شرعي و لا هو عادة نحو فقبضت قبضة من اثر الرسول دل الدليل على انه انما قبض من اثر حافر فرس الرسول وليس في هذه الاقسام مجازا لا الاول و قال الزنجاني فى المعيار انما يكون مجازا اذا تغير حكم فاما اذا لم يتغير كحذف خبر المبتداء المعطوف على جملة فليس مجازا اذا لم يتغير حكم ما بقى من الكلام و قال القزويني فى الايضاح متى تغير اعراب الكلمة بحذف او زيادة فهي مجاز نحو اسأل القرية ليس كمثله شيء فان كان الحذف و الزيادة لا توجب تغير الاعراب نحو او كصيب من السماء فيها رحمة فلا توصف الكلمة بالمجاز الثاني التاكيد زعم قوم انه مجاز لانه لا يفيد الا ما افاده الاول و الصحيح انه حقيقة قال الطرطوسي فى العمد و من سماه مجازا قلنا له اذا كان التاكيد بلفظ الاول نحو عجل عجل و نحوه فان جاز ان يكون الثاني مجازا جاز فى الاول لانهما في لفظ واحد و اذا بطل حمل الاول على المجاز بطل حكم الثاني عليه لانه مثل الاول الثالث التشبيه زعم قوم انه مجاز و الصحيح انه حقيقة قال الزنجاني فى المعيار لانه معنى من المعاني و له الفاظ تدل عليه وضعا فليس فيه نقل اللفظ عن موضوعه و قال الشيخ عز الدين ان كان بحرف فهو حقيقة او بحذفه فمجاز بناء على ان الحذف من باب المجاز الرابع

و الترجي و النداء لغيرها كما سياتي كل ذلك فى الانشاء و منها التضمين و هو اعطاء الشئ معنى الشئ و يكون فى الحروف و الافعال و الاسماء اما الحروف فتقدم في حروف الجر و غيرها و اما الافعال فان تضمن فعل معنى فعل آخر و يكون فيه معنى الفعلين معا و ذلك بان يأتى الفعل متعديا بحرف ليس من عادته التعدي به فيحتاج الى تاويله او تاويل الحرف ليصح التعدي به و الاول تضمين الفعل و الثاني تضمين الحرف و اختلفوا ايهما اولى فقال اهل اللغة وقوم من النحاة التوسع فى الحرف و قال المحققون التوسع فى الفعل لانه فى الافعال اكثر مثاله عينا يشرب بها عباد الله فيشرب انما يتعدى بمن فتعديته بالباء اما على تضمينه معنى يروي و يلتذ او تضمين الباء معنى من احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم فالرفث لا يتعدى بالى الا على تضمين معنى الافضاء هل لك الى ان تزكى و الاصل في ان تضمن معنى ادعوك يقبل التوبة عن عباده عديت بعن لتضمنها معنى العفو و الصفح و اما فى الاسماء فان تضمن اسم معنى اسم لافادة معنى الاسمين معا نحو حقيق على ان لا اقول على الله الا الحق ضمن حقيق معنى حريص ليفيد انه محقوق بقول الحق و حريص عليه و انما كان التضمين مجازا لان اللفظ لم يوضع للحقيقة و المجاز معا فالجمع بينهما مجاز فصل في انواع مختلف في عدها من المجاز و هي ستة احدها الحذف فالمشهور انه من المجاز و انكره بعضهم لان المجاز استعمال اللفظ في غير موضعه و الحذف ليس كذلك و قال ابن عطية حذف المضاف هو عين المجاز و معظمه و ليس كل حذف مجازا و قال القراء فى الحذف

لانه صفة لقوم و حسن العدول عنه وقوع الموصوف خبرا عن ضمير المخاطبين قال اذهب فمن تبعك منهم فان جهنم جزاؤكم غلب فى الضمير المخاطب و ان كان من تبعك يقتضى الغيبة و حسنه انه لما كان الغائب تبعا للمخاطب فى المعصية و العقوبة جعل تبعا له فى اللفظ ايضا و هو من محاسن ارتباط اللفظ بالمعنى و لله يسجد ما فى السموات و ما فى الارض غلب غير العاقل حيث اتى بما لكثرته و في آية اخرى عبر بمن فغلب العاقل لشرفه لنخرجنك يا شعيب و الذين آمنوا معك من قريتنا او لتعودن في ملتنا ادخل شعيب في لتعودن بحكم التغليب اذ لم يكن في ملتهم اصلا حتى يعود فيها و كذا قوله ان عدنا في ملتكم فسجد الملائكة كلهم اجمعون الا ابليس عد منهم بالاستثناء تغليبا لكونه كان بينهم يا ليت بيني و بينك بعد المشرقين اى المشرق و المغرب قال ابن الشجري و غلب المشرق لانه اشهر الجهتين مرج البحرين يلتقيان اى الملح و العذب و البحر خاص بالملح فغلب لكونه اعظم و لكل درجات اى من المومنين و الكفار و الدرجات للعلو و الدركات للسفل فاستعمل الدرجات فى القسمين تغليبا للاشرف قال فى البرهان و انما كان التغليب باب المجاز لان اللفظ لم يستعمل فيما وضع له الا ترى ان القانتين موضوع للذكور الموصوفين بهذا الوصف فاطلاقه على الذكور و الاناث اطلاق غير ما وضع له و كذا باقى الامثلة و منها استعمال حروف الجر في غير معانيها الحقيقية كما تقدم فى النوع الاربعين و منها استعمال صيغة افعل لغير الوجوب و صيغة لا تفعل لغير التحريم و ادوات الاستفهام لغير طلب التصور او التصديق و اداة التمني

عند الله و رتب الناس في علم الله اكثر من العشرة لا محالة الله يتوفى الانفس اياما معدودات و نكتة التقليل في هذه الآية التسهيل على المكلفين و عكسه نحو يتربصن بانفسهن ثلاثة قروء و منها تذكير المونث على تاويله بمذكر نحو فمن جاءه موعظة من ربه اى وعظ فاحيينا به بلدة ميتا على تاويل البلدة بالمكان فلما رأى الشمس بازغة قال هذا ربي اى الشخص او الطالع ان رحمة الله قريب من المحسنين قال الجوهري ذكرت على معنى الاحسان و قال الشريف المرتضى في قوله و لا يزالون مختلفين الا من رحم ربك و لذلك خلقهم ان الاشارة للرحمة و انما لم يقل و تلك لان تانيثها غير حقيقي و لانه يجوز ان يكون في تاويل ان يرحم و منها تانيث المذكر نحو الذين يرثون الفردوس هم فيها انث الفردوس و هو مذكر حملا على معنى الجنة من جاء بالحسنة فله عشر امثالها انث عشر حيث حذف الهاء مع اضافتها الى الامثال و واحدها مذكر فقيل لاضافة الامثال الى مونث و هو ضمير الحسنات فاكتسى منه التانيث و قيل هو من باب مراعاة المعنى لان الامثال فى المعنى مونثة لان مثل الحسنة حسنة و التقدير فله عشر حسنات امثالها و قد قدمنا فى القواعد المهمة قاعدة فى التذكير و التانيث و منها التغليب و هو اعطاء الشئ حكم غيره و قيل ترجيح احد المغلوبين على الآخر واطلاق لفظه عليهما اجراء للمختلفين مجرى المتفقين نحو و كانت من القانتين الا امرأته كانت من الغابرين و الاصل من القانتات و الغابرات فعدت الانثى من المذكر بحكم التغليب بل انتم قوم تجهلون اتى بتاء الخطاب تغليبا لجانب انتم على جانب قوم و القياس ان يوتى بياء الغيبة

كذبتم و فريقا تقتلون و يقول الذين كفروا لست مرسلا اى قالوا
و من لواحق ذلك التعبير عن المستقبل باسم الفاعل او المفعول لانه
حقيقة فى الحال لا فى الاستقبال نحو و ان الدين لواقع ذلك يوم
مجموع له الناس و منها اطلاق الخبر على الطلب امرا او نهيا او دعاء
مبالغة فى الحث عليه حتى كانه وقع و اخبر عنه قال الزمخشري
ورود الخبر والمراد الامر او النهي ابلغ من صريح الامر اوالنهي كانه سورع
فيه الى الامتثال و اخبر عنه نحو و الوالدات يرضعن و المطلقات
يتربصن فلا رفث و لا فسوق و لا جدال فى الحج على قرأة الرفع
و ما تنفقون الا ابتغاء وجه الله اى لا تنفقوا الا ابتغاء وجه الله لا يمسه
الا المطهرون اى لا يمسسه و اذ اخذنا ميثاق بني اسرائيل لا تعبدون
الا الله اى لا تعبدوا بدليل و قولوا للناس حسنا لا تثريب عليكم
اليوم يغفر الله لكم اى اللهم اغفر لهم و عكسه نحو فليمدد له الرحمن
مدا اى يمد اتبعوا سبيلنا و لنحمل خطاياكم اى و عن حاملون
بدليل و انهم لكاذبون و الكذب انما يرد على الخبر فليضحكوا قليلا
و ليبكوا كثيرا قال الكواشي فى الآية الاولى الامر بمعنى الخبر ابلغ
من الخبر لتضمنه اللزوم نحو ان زرتنا فلنكرمك يريدون تاكيدا يجاب
الاكرام عليهم و قال ابن عبد السلام ان الامر للايجاب بشبه الخبر به في
ايجابه و منها وضع النداء موضع التعجب نحو يا حسرة على العباد
قال الفراء معناه فيا لها حسرة و قال ابن خالويه هذه من اصعب
مسألة فى القرآن لان الحسرة لا تنادى و انما تنادى الاشخاص لان فائدته
التنبيه ولكن المعنى على التعجب و منها وضع جمع القلة موضع الكثرة
نحو و هم فى الغرفات آمنون و غرف الجنة لا تحصى هم درجات

معا لسكوت موسى عنه فمن تعجل في يومين و التعجيل فى اليوم الثاني على رجل من القريتين عظيم قال الفارسي اى من احد القريتين و ليس منه و لمن خاف مقام ربه جنتان و ان المعنى جنة واحدة خلافا للفراء و في كتاب ذا القد لابن جني ان منه ا انت قلت للناس اتخذوني و امى الهين و انما المتخذا لها عيسى دون مريم و مثال اطلاقه على الجمع ثم ارجع البصر كرتين اى كرات لان البصر لا نخسأ الا بها و جعل منه بعضهم قوله الطلاق مرتان و مثال اطلاق الجمع على المفرد قال رب ارجعوني اى ارجعني و جعل منه ابن فارس فناظرة بم يرجع المرسلون و الرسول واحد بدليل ارجع اليهم وفيه نظر لانه يحتمل انه خاطب رئيسهم لا سيما و عادة الملوك جارية ان لا يرسلوا واحدا وجعل منه فنادته الملائكة تنزل الملائكة بالروح اى جبرئيل و اذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها و القاتل واحد و مثال اطلاقه على المثنى قالتا اتينا طايعين قالوا لا تخف خصمان فان كان له اخوة فلامه السدس اى اخوان فقد صغت قلوبكما اى قلباكما و داؤد و سليمان اذ يحكمان الى قوله و كنا لحكمهم شاهدين و منها اطلاق الماضي على المستقبل لتحقق وقوعه نحو اتى امر الله اى الساعة بدليل فلا تستعجلوه و نفخ فى الصور فصعق من فى السموات و اذ قال الله يا عيسى ابن مريم أ انت قلت للناس الآية و برزوا لله جميعا و نادى اصحاب الاعراف و عكسه لافادة الدوام و الاستمرار فكانه وقع و استمر نحو اتأمرون الناس بالبر و تنسون و اتبعوا ما تتلوا الشياطين على ملك سليمان اى تلت و لقد نعلم اى علمنا قد نعلم ما انتم عليه اى علم فلم تقتلون انبياء الله اى قتلتم و كذا فريقا

وتحته انواع كثيرة منها اطلاق المصدر على الفاعل نحو فاتهم عدولي
و لهذا افرده و على المفعول نحو و لا يحيطون بشيء من علمه اى
من معلومه صنع الله اي مصنوعه و جاؤا على قميصه بدم كذب اى
مكذوب فيه لان الكذب من صفات الاقوال لا الاجسام و منه اطلاق
البشرى على المبشر به و الهوى على المهوى و القول على المقول
و منها اطلاق الفاعل و المفعول على المصدر نحو ليس لوقعتها كاذبة
اى تكذيب بايكم المفتون اى الفتنة على ان الباء غير زائدة و منها
اطلاق فاعل على مفعول نحو ماء دافق اى مدفوق لا عاصم اليوم من
امر الله الا من رحم اى لا معصوم جعلنا حرما آمنا اى مأمونا فيه
و عكسه نحو انه كان وعده ماتيا اى اتيا حجابا مستورا اى ساترا و قيل
هو على بابه اى مستورا عن العيون لا يحس به احد و منها اطلاق
فعيل بمعنى مفعول نحو وكان الكافر على ربه ظهيرا و منها اطلاق
واحد من المفرد و المثنى و الجمع على آخر منها مثال اطلاق المفرد
على المثنى و الله و رسوله احق ان يرضوه اى يرضوهما فافرد لتلازم
الرضائين و على الجمع ان الانسان لفي خسر اى الاناسي بدليل
الاستثنا منه ان الانسان خلق هلوعا بدليل الا المصلين و مثال اطلاق
المثنى على المفرد القيا في جهنم اى الق و منه كل فعل نسب
الى شيئين و هو لاحدهما فقط يخرج منهما اللؤلؤ و المرجان و انما
يخرج من احدهما و هو الملح دون العذب و نظيره و من كل تأكلون
لحما طريا و تستخرجون حلية تلبسونها و انما تخرج الحلية من الملح
و جعل القمر فيهن نورا اى في احد يهن نسيا حوتهما و الناسي يوشع
بدليل قوله لموسى اني نسيت الحوت و انما اضيف النسيان اليهما

ينقض وصفه بالارادة و هي من صفات الحي تشبيها لميله للوقوع بارادته
الثامن عشر اطلاق الفعل و المراد مشارفته و مقارنته و ارادته نحو فاذا
بلغن اجلهن فامسكوهن اى قاربن بلوغ الاجل اى انقضاء العدة لان
الامساك لا يكون بعده و هو في قوله فبلغن اجلهن فلا تعضلوهن
حقيقة فاذا جاء اجلهم لا يستأخرون ساعة و لا يستقدمون اى فاذا
قرب مجيئه و به يندفع السوال المشهور فيها ان عند مجئ الاجل
لا يتصور تقديم و لا تاخير و ليخش الذين لو تركوا الآية اى لو قاربوا
ان يتركوا خافوا لان الخطاب للاوصياء و انما يتوجه اليهم قبل الترك
لانهم بعده اموات اذا قمتم الى الصلوة فاغسلوا اى اردتم القيام فاذ
قرأت القرآن فاستعذ اى اردت القرأة لتكون الاستعاذة قبلها و كم من
قرية اهلكناها فجأها بأسنا اى اردنا اهلاكها و الا لم يصح العطف بالفاء
و جعل منه بعضهم قوله من يهدى الله فهو المهتدى اى من يرد
الله هدايته و هو حسن جدا ليلا يتحد الشرط و الجزاء التاسع عشر
القلب اما قلب اسناد نحو ما ان مفاتحه لتنوء بالعصبة اى لتنوء
العصبة بها لكل اجل كتاب اى لكل كتاب اجل و حرمنا عليه المراضع
اى حرمناه على المراضع و يوم يعرض الذين كفروا على النار اى
تعرض النار عليهم لان المعروض عليه هو الذي له الاختيار و انه لحب
الخير لشديد اى و ان حبه للخير و ان يردك بخير اى يرد بك
الخير فتلقى آدم من ربه كلمات لان المتلقى حقيقة هو آدم كما قرئ
بذلك ايضا او قلب عطف نحو ثم تولى عنهم فانظر اى فانظر ثم
تولى ثم دنى فتدلى اى تدلى فدنى لانه بالتدلى مال الى الدنو
او قلب تشبيه و سيأتي في نوعه العشرين اقامة صيغة مقام اخرى

نحو اني اراني اعصر خمرا اى عنبا يؤول الى الخمرية و لا يلدوا الا فاجرا كفارا اى صائرا الى الكفر و الفجور حتى تنكح زوجا غيره سماه زوجا لان العقد يؤول الى زوجية لانها لا تنكح في حال كونه زوجا فبشرناه بغلام حليم نبشرك بغلام عليم وصفه في حال البشارة بما يؤول اليه من العلم و الحلم الثالث عشر اطلاق اسم الحال على المحل نحو ففي رحمة الله هم فيها خالدون اى فى الجنة لانها محل الرحمة بل مكر الليل اى فى الليل اذ يريكهم الله في منامك اى عينك على قول الحسن الرابع عشر عكسه نحو فاليدع ناديه اى اهل ناديه اى مجلسه و منه التعبير باليد على القدرة نحو بيده الملك و بالقلب عن العقل نحو لهم قلوب لا يفقهون بها اى عقول و بالافواه على الالسن نحو و يقولون بافواههم و بالقرية عن سائنيها نحو و اسال القرية و قد اجتمع هذا النوع و ما قبله في قوله تعالى خذوا زينتكم عند كل مسجد فان اخذ الزينة غير ممكن لانها مصدر فالمراد محلها فاطلق عليه اسم الحال و اخذها للمسجد نفسه لا يجب فالمراد الصلاة فاطلق اسم المحل على الحال الخامس عشر تسمية الشئ باسم آلته نحو واجعل لي لسان صدق فى الآخرين اى ثناء حسنا لان اللسان آلة و ما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه اى بلغة قومه السادس عشر تسمية الشئ باسم ضده نحو فبشرهم بعذاب اليم والبشارة حقيقة فى الخبر السار و منه تسمية الداعي الى الشى باسم الصارف عنه ذكره السكاكي و خرج عليه قوله تعالى ما منعك ان لا تسجد يعنى ما دعاك الى ان لا تسجد وسلم بذلك من دعوى زيادة لا السابع عشر اضافة الفعل الى ما لا يصح منه تشبيها نحو جدارا يريد ان

لا يجب على النبي بيان كل ما اختلف فيه بدليل الساعة و الروح و نحو هما و بان موسى كان وعدهم بعذاب فى الدنيا و فى الآخرة فقال يصيبكم هذا العذاب فى الدنيا و هو بعض الوعيد من غير نفي عذاب الآخرة ذكره ثعلب قال الزركشي و يحتمل ايضا ان يقال ان الوعيد مما لا يستنكر ترك جميعه فكيف بعضه و يؤيد ما قاله ثعلب قوله فاما نرينك بعض الذي نعدهم او نتوفينك فالينا مرجعهم الخامس اطلاق اسم الخاص على العام نحو انا رسول رب العالمين اى رسله السادس عكسه نحو و يستغفرون لمن فى الارض اى المؤمنين بدليل قوله و يستغفرون للذين آمنوا السابع اطلاق اسم الملزوم على اللازم الثامن عكسه نحو هل يستطيع ربك ان ينزل علينا مائدة اى هل يفعل اطلق الاستطاعة على الفعل لانها لازمة له التاسع اطلاق المسبب على السبب نحو ينزل لكم من السماء رزقا قد انزلنا عليكم لباسا اى مطرا يتسبب عنه الرزق و اللباس لا يجدون نكاحا اى مؤنة من مهر و نفقة و ما لابد للمتزوج منه العاشر عكسه نحو ما كانوا يستطيعون السمع اى القبول و العمل به لانه مسبب عن السمع تنبيه من ذلك نسبة الفعل الى سبب السبب كقوله فاخرجهما مما كانا فيه كما اخرج ابويكم من الجنة فان المخرج فى الحقيقة هو الله و سبب ذلك اكل الشجرة و سبب الاكل وسوسة الشيطان الحادي عشر تسمية الشيء باسم ما كان عليه نحو و آتوا اليتامى اموالهم اى الذين كانوا يتامى اذ لا يتم بعد البلوغ فلا تعضلوهن ان ينكحن ازواجهن اى الذين كانوا ازواجهن من يأت ربه مجرما سماه مجرما باعتبار ما كان عليه فى الدنيا من الاجرام الثاني عشر تسمية باسم ما يؤول اليه

مبالغة من الفرار فكانهم جعلوا الاصابع و اذا رايتهم تعجبك اجسامهم
اى وجوههم لانه لم ير جملتهم فمن شهد منكم الشهر فليصمه اطلق
الشهر و هو اسم لثلاثين ليلة و اراد جزأ منها كذا اجاب به الامام فخرالدين
عن استشكال ان الجزاء انما يكون بعد تمام الشرط و الشرط ان يشهد
الشهر و هو اسم لكلمة حقيقة فكانه امر بالصوم بعد مضى الشهر و ليس
كذلك و قد فسره علي و ابن عباس و ابن عمر على ان المعنى من
شهد اول الشهر فليصمه جميعه و ان سافر في اثنائه اخرجه ابن جرير
و ابن ابي حاتم و غيرهما و هو ايضا من هذا النوع و يصلح ان يكون
من نوع الحذف الرابع عكسه نحو و يبقى وجه ربك اى ذاته فولوا
وجوهكم شطره اى ذواتكم اذ الاستقبال يجب بالصدر وجوه يومئذ ناعمة
وجوه يومئذ خاشعة عاملة ناصبة عبر بالوجوه عن جميع الاجساد لان
التنعم و النصب حاصل لكلها ذلك بما قدمت يداك بما كسبت
ايديكم اى قدمت و كسبتم و نسب ذلك الى الايدى لان اكثر
الاعمال تزاول بهما قم الليل و قرآن الفجر و اركعوا مع الراكعين و من
الليل فاسجد له اطلق كلا من القيام و القرأة و الركوع و السجود على
الصلوة و هو بعضها هديا بالغ الكعبة اى الحرم كله بدليل انه لا يذبح
فيها تنبيه الحق بهذين النوعين شيان احدهما وصف البعض باسم
الكل ناصية كاذبة خاطئة فالخطأ صفة الكل وصف به الناصية و عكسه
كقوله انا منكم و جلون و الوجل صفة القلب و لملئت منهم رعبا
و الرعب انما يكون فى القلب و الثاني اطلاق لفظ بعض مراد به الكل
ذكره ابو عبيدة و خرج عليه قوله و لا بين لكم بعض الذي تختلفون
فيه اى كله و ان يك صادقا يصبكم بعض الذي يعدكم و تعقب بانه

و علاقته الملابسة و ذلك ان يسند الفعل او شبهه الى غير ما هو له اصالة الملابسة له كقوله و اذا تليت عليهم آياته زادتهم ايمانا نسبت الزيادة و هي فعل الله الى الآيات لكونها سببا لها يذبح ابناء هم يا هامان ابن لي نسب الذبح و هي فعل الاعوان الى فرعون و البنا و هو فعل العملة الى هامان لكونهما آمرين به و كذا قوله و احلوا قومهم دار البوار نسب الاحلال اليهم لتسببهم في كفرهم بامرهم اياهم به و منه قوله تعالى يوما يجعل الولدان شيبا نسب الفعل الى الظرف لوقوعه فيه عيشة راضية اى مرضية فاذا عزم الامر اى عزم عليه بدليل فاذا عزمت و هذا القسم اربعة انواع احدها ما طرفاه حقيقيان كالآية المصدر بها و كقوله و اخرجت الارض اثقالها ثانيها مجازيان نحو فما ربحت تجارتهم اى ما ربحوا فيها و اطلاق الربح و التجارة هنا مجاز ثالثها و رابعها ما احد طرفيه حقيقي دون الاخر اما الاول او الثاني كقوله ام انزلنا عليهم سلطانا اى برهانا كلا انها لظى نزاعة للشوي تدعوا فان الدعاء من النار مجاز و قوله حتى تضع الحرب اوزارها توتى اكلها كل حين فامه هاوية فاسم الام لهاوية مجازا اى كما ان الام كافلة لولدها او ملجا له كذلك النار للكافرين كافلة و ماوى و مرجع القسم الثانى المجاز فى المفرد و يسمى المجاز اللغوي و هو استعمال اللفظ في غير ما وضع له اولا و انواعه كثيرة احدها الحذف و سياتي مبسوطا في نوع الايجاز فهو به اجدر خصوصا اذا قلنا انه ليس من انواع المجاز الثانى الزيادة و سبق تحرير القول فيها في نوع الاعراب الثالث اطلاق اسم الكل على الجزء نحو يجعلون اصابعهم في اذانهم اى انا ملهم و نكتة التعبير عنها بالاصابع الاشارة الى ادخالها على غير المعتاد

من اقسم وانما هو المعنى اقسم بيوم القيمة و لا اقسم بالنفس اللوامة و لم يقسم و السبب و الاضمار مثل و اسأل القرية اى اهل القرية و الخاص و العام مثل يا ايها النبي فهذا فى المسموع خاص اذا طلقتم النساء فصار فى المعنى عاما و الامر وما بعده الى الاستفهام امثلتها واضحة والابهة مثل انا ارسلنا نحن قسمنا عبر بالصيغة الموضوعة للجماعة للواحد تعالى تفخيما و تعظيما و ابهة و الحروف المصرفة كالفتنة تطلق على الشرك نحو حتى لا تكون فتنة و على المعذرة نحو ثم لم تكن فتنتهم اى معذرتهم وعلى الاختيار نحو قد فتنا قومك من بعدك و الاعذار نحو فبما نقضهم ميثاقهم لعناهم اعتذر انه لم يفعل ذلك الا بمعصيتهم و البواقي امثلتها واضحة النوع الثاني والخمسون في حقيقته و مجازه لا خلاف في وقوع الحقايق فى القرآن و هو كل لفظه بقى على موضوعه و لا تقديم فيه و لا تاخير و هذا اكثر الكلام و اما المجاز فالجمهور ايضا على وقوعه فيه و انكره جماعة منهم الظاهرية و ابن القاص من الشافعية و ابن خويزمنداد من المالكية و شبهتهم ان المجاز اخو الكذب و القرآن منزه عنه و ان المتكلم لا يعدل اليه الا اذا ضاقت به الحقيقة فيستعير و ذلك محال على الله تعالى وهذه شبهة باطلة و لو سقط المجاز من القرآن سقط منه شرط الحسن فقد اتفق البلغاء على ان المجاز ابلغ من الحقيقة و لو وجب خلو القرآن من المجاز وجب خلوه من الحذف و التوكيد و تنبيه القصص و غيرها و قد افرده بالتصنيف الامام عز الدين بن عبد السلام و لخصته مع زيادات كثيرة في كتاب سميته مجاز الفرسان الى مجاز القرآن و هو قسمان الاول المجاز فى التركيب ويسمى مجاز الاسناد والمجاز العقلى

لا تحبه و تنافس فى القرب منه و تنفق انفاسها فى التودد اليه
و يكون احب اليها من كل ما سواه و رضاه آثر عندها من رضي كل
من سواه و كيف لا تهلج بذكره و تصير حبه و الشوق اليه و الانس به
هو غذاها و قوتها و دواها بحيث ان فقدت ذلك فسدت و هلكت
و لم تنتفع بحياتها فائدة قال بعض الاقدمين انزل القرآن على ثلاثين
نحوا كل نحو منه غير صاحبه فمن عرف و جوهها ثم تكلم فى الدين
اصاب و وفق و من لم يعرفها فتكلم فى الدين كان الخطاء اليه اقرب
و هى المكي و المدني و الناسخ و المنسوخ و المحكم و المتشابه
و التقديم و التاخير و المقطوع و الموصول و السبب و الاضمار و الخاص
و العام و الامر و النهي و الوعد و الوعيد و الحدود و الاحكام و الخبر
و الاستفهام و الابهة و الحروف المصرفة و الاعذار و الانذار و الحجة
و الاحتجاج و المواعظ و الامثال و القسم قال فالمكي مثل و اهجرهم
هجرا جميلا و المدني مثل و قاتلوا في سبيل الله و الناسخ و المنسوخ
واضح و المحكم مثل و من يقتل مومنا متعمدا الآية ان الذي يأكلون
اموال اليتامى ظلما و نحوه مما احكمه الله و بينه و المتشابه مثل
يا ايها الذين امنوا لا تدخلوا بيوتا غير بيوتكم حتى تستانسوا الآية
و لم يقل و من يفعل ذلك عدوانا و ظلما فسوف نصليه نارا كما قال
فى المحكم و قد ناداهم في هذه الآية بالايمان و نهاهم عن المعصية
و لم يجعل فيها وعيدا فتشبه على اهلها ما يفعل الله بهم و التقديم
و التاخير مثل كتب عليكم اذا حضر احدكم الموت ان ترك خيرا
الوصية التقدير كتب عليكم الوصية اذا حضر احدكم الموت و المقطوع
و الموصول مثل لا اقسم بيوم القيمة و لا اقسم بالنفس اللوامة فلا مقطوع

يثني على نفسه و يمجد نفسه و يحمد نفسه و ينصح عباده و يدلهم على ما فيه سعادتهم و فلاحهم و يرغبهم فيه و يحذرهم مما فيه هلاكهم و يتعرف اليه باسمائه و صفاته و يتحبب اليهم بنعمه و آلائه يذكرهم بنعمه عليهم و يأمرهم بما يستوجبون به تمامها و يحذرهم من نقمه و يذكرهم بما اعدلهم من الكرامة ان اطاعوه و ما اعدلهم من العقوبة ان عصوه و يخبرهم بصنعه في اوليائه و اعدائه و كيف كانت عاقبة هولاء و هولاء و يثني على اوليائه بصالح اعمالهم و احسن اوصافهم و يذم اعداءه بسيء اعمالهم و قبيح صفاتهم و يضرب الامثال و ينوع الادلة و البراهين و يجيب عن شبهة اعدائه احسن الاجوبة و يصدق الصادق و يكذب الكاذب و يقول الحق و يهدي السبيل و يدعوا الى دار السلام و يذكر اوصافها و حسنها و نعيمها و يحذر من دار البوار و يذكر عذابها و قبحها و آلامها و يذكر عباده فقرهم اليه و شدة حاجتهم اليه من كل وجه و انهم لاغني لهم عنه طرفة عين و يذكر غناه عنهم و عن جميع الموجودات و انه الغني بنفسه عن كل من سواه و كل ماسواه فقير اليه بنفسه و انه لاينال احد ذرة من الخير فما فوقها الا بفضله و رحمته ولا ذرة من الشر فما فوقها الا بعدله و حكمته و تشهد من خطابه عطابه لاحبابه الطف عتاب و انه مع ذلك مقيل عثراتهم و غافر ذلاتهم و مقيم اعذارهم و مصلح فسادهم و الدافع عنهم المحامي عنهم و الناصرلهم و الكفيل بمصالحهم و المنجي لهم من كل كرب و الموفي لهم بوعده و انه وليهم الذي لاولى لهم سواه فهو مولاهم الحق و ينصرهم على عدوهم فنعم المولى و نعم النصير فاذا شهدت القلوب من القرآن ملكا عظيما جوادا رحيما جميلا هذا شانه فكيف

ثم قال للكفار فاعلموا انما انزل بعلم الله بدليل فهل انتم مسلمون و منه انا ارسلناك شاهدا الى قوله لتومنون فيمن قرأ بالفوقية السابع و العشرون خطاب التلوين و هو الالتفات الثامن و العشرون خطاب الجمادات خطاب من يعقل نحو فقال لها و للارض ايتيا طوعا او كرها التاسع و العشرون خطاب التهييج نحو و على الله فتوكلوا ان كنتم مومنين الثلاثون خطاب التحنن و الاستعطاف نحو يا عبادي الذين اسرفوا الآية الحادي و الثلاثون خطاب التحبب نحو يا ابت لم تعبد يا بنى انها ان تك يا ابن ام لا تأخذ بلحيتي الثاني و الثلاثون خطاب التعجيز نحو فأتوا بسورة الثالث و الثلاثون خطاب التشريف و هو كلما فى القرآن مخاطبة بقل فانه تشريف منه تعالى لهذه الامة بان يخاطبها بغير واسطة لتفوز بشرف المخاطبة الرابع و الثلاثون خطاب التشريف المعدوم و يصح ذلك تبعا لموجود نحو يا بنى آدم فانه خطاب لاهل ذلك الزمان و لكل من بعدهم فائدة قال بعضهم خطاب القرآن ثلاثة اقسام قسم لا يصلح الا النبي صلى الله عليه و سلم و قسم لا يصلح الا لغيره و قسم يصلح لهما فائدة قال ابن القيم تامل خطاب القرآن تجد ملكا له الملك كله و له الحمد كله ازمة الامور كلها بيده و مصدرها منه و مردها اليه مستويا على العرش لا يخفى عليه خافية من اقطار مملكته عالما بما في نفوس عبيده مطلعا على اسرارهم و علانيتهم منفردا بتدبير المملكة يسمع و يرى و يعطى و يمنع و يثبت و يعاقب و يكرم و يهين و يخلق و يرزق و يميت و يحيى و يقدر و يقضى و يدبر الامور نازلة من عنده دقيقها و جليلها و صاعدة اليه لا تتحرك ذرة الا باذنه و لا تسقط ورقة الا بعلمه فتامل كيف تجده

تتلوا منه من قرآن و لا تعملون من عمل قال ابن الانباري جمع في الفعل الثالث ليدل على ان الامة داخلون مع النبي صلى الله عليه و سلم و مثله يا ايها النبي اذا طلقتم العشرون عكسه نحو و اقيموا الصلوة و بشر المؤمنين الحادي و العشرون خطاب الاثنين بعد الواحد نحو ا جئتنا لتلفتنا عما وجدنا عليه اباءنا و تكون لكما الكبرياء الآية الثاني و العشرون عكسه نحو فمن ربكما يا موسى الثالث و العشرون خطاب العين و المراد به الغير نحو يا ايها النبي اتق الله و لا تطع الكافرين الخطاب له و المراد امته لانه صلى الله عليه و سلم كان تقيا و حاشاه من طاعة الكفار و منه فان كنت في شك مما انزلنا اليك فاسأل الذين يقرؤن الكتاب الآية حاشاه صلى الله عليه و سلم من الشك و انما المراد بالخطاب التعريض بالكفار اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس في هذه الآية قال لم يشك صلى الله عليه و سلم و لم يسال و مثله و اسال من ارسلنا من قبلك من رسلنا الآية فلا تكونن من الجاهلين و انحاء ذلك الرابع و العشرون خطاب الغير و المراد به العين نحو لقد انزلنا اليكم كتابا فيه ذكركم الخامس و العشرون الخطاب العام الذي لم يقصد به مخاطب معين نحو و لوترى اذ وقفوا على النار الم تر ان الله يسجد له و لو ترى اذ المجرمون ناكسوا رؤسهم و لم يقصد بذلك خطاب معين بل كل احد و اخرج في صورة الخطاب لقصد العموم يريد ان حالهم تناهت في الظهور بحيث لا يختص بها راء دون راء بل كل من امكن منه الروية داخل في ذلك الخطاب السادس و العشرون خطاب الشخص ثم العدول الى غيره نحو فان لم يستجيبوا لكم خوطب به النبي صلى الله عليه وسلم

الا بالله الآية و كذا قوله فان لم يستجيبوا لكم فاعلموا بدليل قوله قل فاتوا و جعل منه بعضهم قال رب ارجعون اي ارجعني و قيل رب خطاب له تعالى و ارجعون للملائكة و قال السهيلي هو قول من حضرته الشياطين و زبانية العذاب فاختلط فلا يدري ما يقول من الشطط و قد اعتاد امرا يقوله في الحياة من رد الامر الى المخلوقين الخامس عشر خطاب الواحد بلفظ الاثنين نحو القيا في جهنم و الخطاب لمالك خازن النار و قيل لخزنة النار و الزبانية فيكون من خطاب الجمع بلفظ الاثنين و قيل للملكين الموكلين به في قوله و جاءت كل نفس معها سائق وشهيد فيكون على الاصل و جعل المهدوي من هذا النوع قال قد اجيبت دعوتكما قال الخطاب لموسى وحده لانه الداعي و قيل لهما لان هرون امن على دعائه و المومن احد الداعيين السادس عشر خطاب الاثنين بلفظ الواحد كقوله فمن ربكما يا موسى اي و يا هارون و فيه وجهان احدهما انه افرده بالندا لا دلالة عليه بالتربية والاخر لانه صاحب الرسالة و الآيات و هارون تبع له ذكره ابن عطية و ذكر في الكشاف آخر و هو ان هارون لما كان افصح لسانا من موسى نكب فرعون عن خطابه حذرا من لسانه و مثله فلا يخرجنكما من الجنة فتشقى قال ابن عطية افرده بالشقا لانه المخاطب اولا و المقصود في الكلام و قيل لان الله جعل الشقا في معيشة الدنيا في جانب الرجال و قيل اغضاء عن ذكر المرأة كما قيل من الكرم ستر الحرم السابع عشر خطاب الاثنين بلفظ الجمع كقوله ان تبوأ لقومكما بمصر بيوتا و اجعلوا بيوتكم قبلة الثامن عشر خطاب الجمع بلفظ الاثنين كما تقدم في القيا التاسع عشر خطاب الجمع بعد الواحد كقوله و ما تكون في شان و ما

باسمه الثامن خطاب المدح نحو يا ايها الذين آمنوا ولهذا وقع خطابا لاهل المدينة الذين آمنوا و هاجروا واخرج ابن ابي حاتم عن خثيمة قال ما تقرؤن فى القرآن يا ايها الذين آمنوا فانه فى التوراة يا ايها المساكين و اخرج البيهقي و ابو عبيد و غيرهما عن ابن مسعود قال اذا سمعت الله يقول يا ايها الذين آمنوا فادعها سمعك فانه خير يأمر به او شر ينهى عنه التاسع خطاب الذم نحو يا ايها الذين كفروا لا تعتذروا اليوم قل يا ايها الكافرون و لتضمنه الاهانة لم يقع فى القرآن في غير هذين الموضعين و كثرة الخطاب يا ايها الذين آمنوا على المواجهة و في جانب الكفار جئ بلفظ الغيبة اعراضا عنهم كقوله ان الذين كفروا قل للذين كفروا العاشر خطاب الكرامة كقوله يا ايها النبي يا ايها الرسول قال بعضهم و تجد الخطاب بالنبي في محل لا يليق به الرسول و كذا عكسه كقوله فى الامر بالتشريع العام يا ايها الرسول بلغ ما انزل اليك من ربك و في مقام الخاص يا ايها النبي لم تحرم ما احل الله لك قال و قد يعبر بالنبي في مقام التشريع العام لكن مع قرينة ارادة التعميم كقوله يا ايها النبي اذا طلقتم و لم يقل طلقت الحادي عشر خطاب الاهانة نحو فانك رجيم اخسؤا فيها ولا تكلمون الثاني عشر خطاب التهكم نحو ذق انك انت العزيز الكريم الثالث عشر خطاب الجمع بلفظ الواحد نحو يا ايها الانسان ما غرك بربك الكريم الرابع عشر خطاب الواحد بلفظ الجمع نحو يا ايها الرسل كلوا من الطيبات الى قوله فذرهم في غمرتهم فهو خطاب له صلى الله عليه وسلم وحده اذ لا نبي معه و لا بعده و كذا قوله و ان عاقبتم فعاقبوا الآية خطاب له صلى الله عليه وسلم وحده بدليل قوله و اصبر و ما صبرك

و قوله لا يتخذ المومنون الكافرين اولياء من دون المومنين و قوله و لا تكرهوا فتياتكم على البغاء ان اردن تحصنا و الاطلاع على ذلك من فوائد معرفة اسباب النزول فائدة قال بعضهم الالفاظ اما ان تدل بمنطوقها او بفحواها و مفهومها او باقتضائها و ضرورتها او بمعقولها المستنبط منها حكاه ابن الحصار و قال هذا كلام حسن قلت فالاول دلالة المنطوق و الثاني دلالة المفهوم و الثالث دلالة الاقتضاء و الرابع دلالة الاشارة النوع الحادي و الخمسون في وجوب مخاطباته قال ابن الجوزي في كتاب النفيس الخطاب في القرآن على خمسة عشر وجها و قال غيره على اكثر من ثلاثين وجها احدها خطاب العام و المراد به العموم كقوله الله الذي خلقكم و الثاني خطاب الخاص و المراد الخصوص كقوله اكفرتم بعد ايمانكم يا ايها الرسول بلغ و الثالث خطاب العام و المراد به الخصوص كقوله يا ايها الناس اتقوا ربكم لم يدخل فيه الاطفال و المجانين و الرابع خطاب الخاص و المراد العموم كقوله يا ايها النبي اذا طلقتم النساء افتتح الخطاب بالنبي صلى الله عليه وسلم و المراد سائر من يملك الطلاق و قوله يا ايها النبي انا احللنا لك ازواجك الآية قال ابو بكر الصيرفي كان ابتداء الخطاب له فلما قال في الموهوبة خالصة لك علم ان ما قبلها له و لغيره الخامس خطاب الجنس كقوله يا ايها الناس السادس خطاب النوع نحو يا بني اسرائيل السابع خطاب العين نحو يا آدم اسكن يا نوح اهبط يا ابراهيم قد صدقت يا موسى لا تخف يا عيسى اني متوفيك و لم يقع في القرآن الخطاب بيا محمد بل يا ايها النبي يا ايها الرسول تعظيما له و تشريفا و تخصيصا بذلك عمن سواه و تعليما للمومنين ان لا يناده

حكمه المنطوق فان كان اولى سمى فحوى الخطاب كدلالة فلا تقل لهما اف على تحريم الضرب لانه اشد و ان كان مساويا سمى لحن الخطاب اي معناه كدلالة ان الذين يأكلون اموال اليتامى ظلما على تحريم الاحراق لانه مسا و للاكل فى الاتلاف و اختلف هل دلالة ذلك قياسية او لفظية مجازية او حقيقية على اقوال بيناها في كتبنا الاصولية و الثاني ما يخالف حكمه المنطوق و هو انواع مفهوم صفة نعتا كانت او حالا او ظرفا او عددا نحو ان جاءكم فاسق بنباء فتبينوا مفهومه ان غير الفاسق لا يجب التبين في خبره فيجب قبول خبر الواحد العدل و لا تباشروهن و انتم عاكفون فى المساجد الحج اشهر معلومات اي فلا يصح الاحرام به في غيرها فاذكروا الله عند المشعر الحرام اي فالذكر عند غيره ليس محصلا للمطلوب فاجلدوهم ثمانين جلدة اي لا اقل و لا اكثر و شرط نحو و ان كن اولات حمل فانفقوا عليهن اي فغير اولات الحمل لا يجب الانفاق عليهن و غاية نحو فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره اي فاذا نكحته تحل للاول بشرطه و حصر نحو لا اله الا الله انما الهكم الله اي فغيره ليس باله فالله هو الولي اي فغيره ليس بولي الا الى الله تحشرون اي لا اله غيره اياك نعبد اي لا غيرك و اختلف فى الاحتجاج بهذه المفاهيم على اقوال كثيرة و الاصح فى الجملة انها كلها حجة بشروطه منها ان لا يكون المذكور خرج للغالب و من ثم لم يعتبر الاكثرون مفهوم قوله و ربايبكم اللاتي في حجوركم فان الغالب كون الربايب في حجور الازواج فلا مفهوم له لانه انما خص بالذكر لغلبة حضوره فى الذهن و ان لا يكون موافقا للواقع و من ثم لامفهوم لقوله و من يدع مع الله الها آخر لا برهان له به

و لا عاد فان الباغي يطلق على الجاهل وعلى الظالم وهو فيه اظهر و اغلب و نحو و لا تقربوهن حتى يطهرن فانه يقال للانقطاع طهر وللوضوء و الغسل و هو في الثاني اظهر فان حمل على المرجوح لدليل فهو تاويل و يسمى المرجوح المحمول عليه مأولا كقوله و هو معكم اينما كنتم فانه يستحيل حمل المعية على القرب بالذات فتعين صرفه عن ذلك و حمله على القدرة و العلم او على الحفظ و الرعاية كقوله و اخفض لهما جناح الذل من الرحمة فانه يستحيل حمله على الظاهر لاستحالة ان يكون للانسان اجنحة فيحمل على الخضوع و حسن الخلق و قد يكون مشتركا بين حقيقتين او حقيقة و مجاز و يصح حمله عليهما جميعا فيحمل عليهما جميعا سواء قلنا بجواز استعمال اللفظ في معينة اولا و وجهه على هذا ان يكون اللفظ قد خوطب به مرتين مرة اريد هذا و مرة اريد هذا و من امثلته و لا يضار كاتب ولا شهيد فانه يحتمل و لا يضارر والكاتب و الشهيد صاحب الحق يجوز في الكتابة و الشهادة و لا يضارر بالفتح اي لا يضر هما صاحب الحق بالزامهما ما لا يلزمهما و اجبارهما على الكتابة و الشهادة ثم ان توقفت صحة دلالة اللفظ على اضمار سميت دلالة اقتضاء نحو و اسأل القرية اي اهلها وان لم يتوقف و دل اللفظ على ما لم يقصد به سميت دلالة اشارة كدلالة قوله تعالى احل لكم ليلة الصيام الرفث الى نسائكم على صحة صوم من اصبح جنبا اذا باحة الجماع الى طلوع الفجر يستلزم كونه جنبا في جزء من النهار و قد حكى هذا الاستنباط عن محمد بن كعب القرطبي فصـــل و المفهوم ما دل عليه اللفظ لا في محل النطق و هو قسمان مفهوم موافقة و مفهوم مخالفة فالاول ما يوافق

بالمسح الى الكوعين و يقول ان الردة تحبط العمل لمجردها والثاني مثل تقييد الصوم بالتتابع في كفارة القتل و الظهار و تقيده بالتفريق في صوم التمتع و اطلق كفارة اليمين و قضاء رمضان فيبقى على اطلاقه من جوازه مفرقا و متتابعا لا يمكن حمله عليهما لتنافي القيدين و لا على احدهما لعدم المرجح تنبيهان الاول اذا قلنا يحمل المطلق على المقيد فهل هو من وضع اللغة او بالقياس مذهبان وجه الاول ان العرب من مذهبها استحباب الاطلاق اكتفاء بالمقيد و طلبا للايجاز و الاختصار والثاني ما تقدم محله اذا كان الحكمان بمعنى واحد و انما اختلفا فى الاطلاق و التقييد فاما اذا حكم في شئ بامور ثم في آخر ببعضها و سكت فيه عن بعضها فلا يقتضى الالحاق كالامر بغسل الاعضاء الاربعة فى الوضوء و ذكر فى التيمم عضوين فلا يقال بالحمل و مسح الراس و الرجلين بالتراب فيه ايضا و كذلك ذكر العتق و الصوم و الاطعام في كفارة الظهار و اقتصر في كفارة القتل على الاولين و لم يذكر الاطعام فلا يقال بالحمل و ابدال الصيام بالاطعام النوع الخمسمون في منطوقه و مفهومه المنطوق ما دل عليه اللفظ في محل النطق و ان افاد معني لا يحتمل غيره فالنص نحو فصيام ثلاثة ايام فى الحج و سبعة اذا رجعتم تلك عشرة كاملة و قد نقل عن قوم من المتكلمين انهم قالوا بندور النص جدا فى الكتاب و السنة و قد بالغ امام الحرمين و غيره فى الرد عليهم قال لان الغرض من النص الاستقلال بافادة المعنى على قطع مع انحسام جهات التاويل و الاحتمال و هذا و ان عز حصوله بوضع الصيغ ردا الى اللغة فما اكثره مع القرائن الحالية و المقابلة انتهى او مع احتمال غيره احتمالا مرجوحا فالظاهر نحو فمن اضطر غير باغ

النوع التاسع و الاربعون في مطلقه و مقيده المطلق الدال على الماهية بلا قيد و هو مع المقيد كالعام مع الخاص قال العلماء متى وجد دليل على تقئيد المطلق صير اليه و الا فلا بل يبقى المطلق على اطلاقه و المقيد على تقئيده لان الله تعالى خاطبنا بلغة العرب و الضابط ان الله تعالى اذا حكم في شئ بصفة او شرط ثم ورد حكم آخر مطلقا نظر فان لم يكن له اصل يرد اليه الا ذلك الحكم المقيد وجب تقئيده به و ان كان له اصل غيره لم يكن رده الى احدهما باولى من الآخر فالاول مثل اشتراط العدالة فى الشهود على الرجعة و الفراق و الوصية في قوله و اشهدوا ذوى عدل منكم و قوله شهادة بينكم اذا حضر احدكم الموت حين الوصية اثنان ذوا عدل منكم و قد اطلق الشهادة فى البيوع وغيرها في قوله و اشهدوا اذا تبايعتم فاذا دفعتم اليهم اموالهم فاشهدوا عليهم و العدالة شرط فى الجميع و مثل تقئيده ميراث الزوجين بقوله من بعد وصية يوصين بها اودين و اطلاقه الميراث فيما اطلق فيه و كان ما اطلق من المواريث كلها بعد الوصية و الدين وكذلك ما اشترط في كفارة القتل من الرقبة المومنة و اطلقها في كفارة الظهار و اليمين و المطلق كالمقيد في وصف الرقبة وكذلك تقييد الايدى بقوله الى المرافق فى الوضوء و اطلاقه فى التيمم و تقييد احباط العمل بالردة بالموت على الكفر في قوله و من يرتدد منكم عن دينه فيمت و هو كافر الآية و اطلق في قوله و من يكفر بالايمان فقد حبط عمله و تقئيد تحريم الدم بالمسفوح فى الانعام و اطلق فيماعداها فمذهب الشافعي رح حمل المطلق على المقيد فى الجميع و من العلماء من لا يجهله و يجوز اعتاق الكافرة في كفارة الظهار و اليمين و يكتفى فى التيمم

فلم ينكروا منه ما انكرت ثم قال له ان العرب قد تدخل لا في اثناء كلامها و تلغى معناها و انشد فيه ابياتا تنبيه قال الاستاذ ابو اسحق الاسغرائي اذا تعارضت الآى و تعذر فيها الترتيب و الجمع طلب التاريخ و ترك المتقدم بالمتاخر و يكون ذلك نسخا و ان لم يعلم و كان الاجماع على العمل باحدى الآيتين علم باجماعهم ان الناسخ ما اجمعوا على العمل بها قال و لا يوجد فى القرآن آيتان متعارضتان تخلو عن هذين الوصفين قال غيره و تعارض القرأتين بمنزلة تعارض الآيتين نحو و ارجلكم بالنصب و الجر و لهذا جمع بينهما بحمل النصب على الغسل و الجر على مسح الخف وقال الصيرفي جماع الاختلاف و التناقض ان كل كلام صح ان يضاف بعض ما وقع الاسم عليه الاوجه من الوجوه فليس فيه تناقض و انما التناقض فى اللفظ ما ضاده من كل جهة و لا يوجد فى الكتاب و السنة شيء من ذلك ابدا و انما يوجد فيه النسخ في وقتين و قال القاضي ابو بكر لا يجوز تعارض آى القرآن و الاثار و ما يوجبه العقل فلذلك لم يجعل قول الله خالق كل شيء معارضا لقوله و تخلقون افكا و اذ تخلق من الطين لقيام الدليل العقلي انه لا خالق غير الله فتعين تاويل ما عارضه فيؤول تخلقون على تكذبون و تخلق على تصور فائدة قال الكرماني عند قوله تعالى و لو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا الاختلاف على وجهين اختلاف تناقض و هو ما يدعو فيه احدى الشيئين الى خلاف الآخر و هذا هو الممتنع على القرآن و اختلاف تلاوم و ما يوافق الجانبين كاختلاف وجوه القرأت و اختلاف مقادير السور و الآيات و اختلاف الاحكام من الناسخ و المنسوخ و الامر و النهي والوعد والوعيد

اظلم ممن افترى على الله كذبا و كذابا فيها و اذا تخصص بالصلات زال التناقض و منها ان التخصيص بالنسبة الى السبق لما لم يسبق احد الى مثله حكم عليهم بانهم اظلم ممن جاء بعدهم سالكا طريقهم و هذا يؤول معناه الى ما قبله لان المراد السبق الى المانعية و الاقترانية و منها و ادعى ابو حيان انه الصواب ان نفي الا ظلمية لا يستدعى نفي الظالمية لان نفي المقيد لا يدل على نفي المطلق و اذا لم يدل على نفي الظالمية لم يلزم التناقض لان فيها اثبات التسوية فى الاظلمية ثم لم يكن احد ممن وصف بذلك يزيد على الآخر لانهم يتساوون فى الاظلمية و صار المعنى لا احد اظلم ممن افترى و ممن منع و نحوها و لا اشكال في تساوي هولاء فى الاظلمية و لا يدل على ان احد هولاء اظلم من الآخر كما اذا قلت لا احد افقه منهم انتهى و حاصل الجواب ان نفي التفضيل لا يلزم منه نفي المساواة و قال بعض المتاخرين هذا استفهام مقصود به التهويل و التفظيع من غير قصد اثبات الاظلمية للمذكور حقيقة و لا نفيها عن غيره و قال الخطابي سمعت ابن ابي هريرة يحكى عن ابى العباس بن شريح قال سال رجل بعض العلماء عن قوله لا اقسم بهذا البلد فاخبر انه لا يقسم به ثم اقسم به في قوله و هذا البلد الامين فقال ايما احب اليك اجيبك ثم اقطعك او اقطعك ثم اجيبك فقال بل اقطعني ثم اجبني فقال له اعلم ان هذا القرآن نزل على رسول الله صلى الله عليه و سلم بحضرة رجال و بين ظهراني قوم و كانوا احرص الخلق على ان يجدوا فيه مغمزا و عليه مطعنا فلو كان لتعلقوا مناقضة هذا عندهم به و اسرعوا بالرد عليه و لكن القوم علموا و جهلت

الى ذكرالله ومما استشكلوه قوله تعالى وما منع الناس ان يومنوا اذجاءهم الهدى و يستغفروا ربهم الا ان تاتيهم سنة الاولين و ياتيهم العذاب قبلا فانه يدل على حصر المانع من الايمان في احد هذين الشيئين وقال في آية اخرى وما منع الناس ان يومنوا اذ جاءهم الهدى الا ان قالوا بعث الله بشرا رسولا فهذا حصراً خرفي غيرهما واجاب ابن عبدالسلام بان معنى الآية وما منع الناس ان يؤمنوا الا ارادة ان تاتيهم سنة الاولين من الخسف او غيره اوياتيهم العذاب قبلا في الآخرة فاخبر انه اراد ان يصيبهم احد الامرين ولا شك ان ارادة الله مانعة من وقوع ماينا في المراد فهذا حصر في السبب الحقيقي لان الله هوالمانع في الحقيقة و معنى الآية الثانية و ما منع الناس ان يومنوا الاستغراب بعثه بشرا رسولا لان قولهم ليس مانعا من الايمان لانه لايصلح لذلك و هو يدل على الاستغراب بالالتزام و هو المناسب للما نعية واستغرابهم ليس مانعا حقيقيا بل عاد يا لجواز وجود الايمان معه بخلاف ارادة الله فهذا حصر في المانع العادي والاول حصر في المانع الحقيقي فلاتنا في انتهى و مما استشكل ايضا قوله تعالى فمن اظلم ممن افترى على الله كذبا فمن اظلم ممن كذب على الله مع قوله و من اظلم ممن ذكر بآيات ربه ثم اعرض عنها و نسي ما قدمت يداه و من اظلم ممن منع مساجد الله الى غير ذلك من الآيات و وجهه ان المراد بالاستفهام هنا النفي والمعنى لا احد اظلم فيكون خبرا و اذا كان خبرا واخذت الآيات على ظواهرها ادى الى التناقض واجيب باوجه منها تخصيص كل موضع بمعنى صلة اي لا احد من المانعين اظلم ممن منع مساجدالله ولا احد من المفترين

ابو الحسن الشاذلي الاية الاولى على التوحيد بدليل قوله تعالى بعدها ولا تموتن الا و انتم مسلمون و الثانية على الاعمال و قيل بل الثانية ناسخة للاولى وكقوله فان خفتم ان لا تعدلوا فواحدة مع قوله ولن تستطيعوا ان تعدلوا بين النساء و لو حرصتم فلا تميلو فالاولى تفهم امكان العدل و الثانية تنفيه و الجواب ان الاولى في توفية الحقوق و الثانية فى الميل القلبي و ليس في قدرة الانسان و كقوله ان الله لا يأمر بالفحشاء مع قوله امرنا مترفيها ففسقوا فيها فالاولى فى الامر الشرعي و الثانية فى الامر الكوني بمعنى القضاء و التقدير الثالث لاختلافهما في جهتى الفعل كقوله فلم تقتلوهم ولكن الله قتلهم و ما رميت اذ رميت اضيف القتل اليهم و الرمى اليه صلى الله عليه و سلم على جهة الكسب و المباشرة و نفاه عنهم و عنه باعتبار التاثير الرابع لاختلافهما فى الحقيقة و المجاز كقوله و ترى الناس سكارى و ما هم بسكارى اي سكارى من الاهوال مجاز الا من الشراب حقيقة الخامس بوجهين و اعتبارين كقوله فبصرك اليوم حديد مع قوله خاشعين من الذل ينظرون من طرف خفي قال قطرب فبصرك اى علمك ومعرفتك بها قوية من قولهم بصر بكذا اى علم وليس المراد روية العين قال الفارسي ويدل على ذلك قوله فكشفنا عنك غطاءك و كقوله الذين آمنو او تطمين قلوبهم بذكرالله مع قوله انما المومنون الذين اذا ذكر الله وجلت قلوبهم فقد يظن ان الوجل خلاف الطمانينة وجوابه ان الطمانينة تكون بانشراح الصدر بمعرفة التوحيد والوجل يكون عند خوف الزيغ والذهاب عن الهدى فتوجل القلوب لذلك وقد جمع بينهما في قوله تقشعر منه جلود الذين يخشون ربهم ثم تلين جلودهم وقلوبهم

كالف سنة فقال يوم القيمة حساب خمسين الف سنة و السموات في ستة ايام كل يوم يكون الف سنة و يدبر الامر من السماء الى الارض ثم يعرض اليه في كل يوم كان مقداره الف سنة قال ذلك مقدار المسير و ذهب بعضهم الى ان المراد بهما يوم القيمة و انه باعتبار حال المومن و الكافر بدليل قوله يوم عسير على الكافرين غير يسير فصل قال الزركشي فى البرهان للاختلاف اسباب احدها وقوع المخبر به على احوال مختلفة و تطويرات شتى كقوله في آدم مرة من تراب و مرة من حماء مسنون و مرة من طين لازب و مرة من صلصال كالفخار فهذه الفاظ مختلفة و معانيها في احوال مختلفة لان الصلصال غير الحمأ والحمأ غير التراب إلّا ان مرجعها كلها الى جوهر و هو التراب و من التراب تدرجت هذه الاحوال و كقوله فاذا هي ثعبان مبين و في موضع تهتز كانها جان و الجان الصغير من الحيات و الثعبان الكبير منها و ذلك لان خلقها خلق الثعبان العظيم و اهتزازها و حركتها و خفتها كاهتزاز الجان و خفته الثاني لاختلاف الموضوع كقوله وقفوهم انهم مسئولون و قوله فلنسألن الذين ارسل اليهم و لنسألن المرسلين مع قوله فيومئذ لا يسأل عن ذنبه انس و لا جان قال الحليمي فتحتمل الآية الاولى على السوال عن التوحيد و تصديق الرسل و الثاني على ما يستلزمه الاقرار بالنبوات من شرائع الدين و فروعه و حمله غيره على اختلاف الاماكن لان فى القيمة مواقف كثيرة ففي موضع يسألون و في آخر لا يسئلون و قيل ان السوال المثبت سوال تبكيت و توبيخ و المنفي سوال المعذرة و بيان الحجة و كقوله اتقوا الله حق تقاته مع قوله فاتقوا الله ما استطعتم حمل الشيخ

لم يكن هناك من يغفر له او يرحم و بانه ليس في الحال كذلك كما يشعر به لفظ كان و الجواب عن الاول بانه كان في الماضي تسمى به و عن الثاني بان كان يعطى معنى الدوام و قد قال النحاة كان لثبوت خبرها ماضيا دايما او منقطعا و قد اخرج ابن ابي حاتم من وجه آخر عن ابن عباس رض ان يهوديا قال له انكم تزعمون ان الله كان عزيزا حكيما فكيف هو اليوم فقال انه كان في نفسه عزيزا حكيما مواضع آخر توقف فيه ابن عباس قال ابو عبيد رض حدثنا اسماعيل بن ابراهيم عن ايوب عن ابن ابي مليكه قال سأل رجل ابن عباس رض عن يوم كان مقداره الف سنة و قوله يوم كان مقداره خمسين الف سنة فقال ابن عباس رض هما يومان ذكرهما الله في كتابه الله اعلم بهما و اخرجه ابن ابي حاتم من هذا الوجه و زاد و ما ادري ما هي و اكره ان اقول فيها ما لا اعلم قال ابن ابي مليكة فضرب الدهر حتى دخلت على سعيد بن المسيب فسئل عن ذلك فلم يدر ما يقول فقلت له الا اخبرك بما حضرت من ابن عباس رض فاخبرته فقال ابن المسيب للسائل هذا ابن عباس رض قد اتقى ان يقول فيها و هو اعلم مني و روى عن ابن عباس رض ايضا ان يوم الالف هو مقدار سيرا لامير و عروجه اليه و يوم الالف في سورة الحج هو احد الايام الستة التي خلق الله فيها السموات يوم الخمسين الفا هو يوم القيمة فاخرج ابن ابي حاتم من طريق سماك عن عكرمة عن ابن عباس ان رجلا قال له حدثني ما هولاء الآيات في يوم كان مقداره خمسين الف سنة و يدبر الامر من السماء الى الارض ثم يعرض اليه في كل يوم كان مقداره الف سنة و ان يوما عند ربك

فيما اخرجه ابن جرير عن الضحاك بن مزاحم ان نافع بن الازرق اتى ابن عباس فقال قول الله و لا يكتمون الله حديثا و قوله و الله ربنا ما كنا مشركين فقال اني احسبك قمت من عند اصحابك فقلت لهم اتى ابن عباس رض القى عليه متشابه القرآن فاخبرهم ان الله اذا جمع الناس يوم القيمة قال المشركون ان الله لا يقبل الا ممن وحده فسألهم فيقولون و الله ربنا ما كنا مشركين قال فختم على افواههم و تستنطق جوارحهم و يؤيده ما اخرجه مسلم من حديث ابي هريرة رض في اثناء حديث و فيه ثم يلقى الثالث فيقول رب آمنت بك. و كتابك و رسولك و يثنى ما استطاع فيقول الآن نبعث شاهدا عليك فيذكر في نفسه من الذي يشهد علي فيختم على فيه و تنطق جوارحه و اما الثالث ففيه اجوبة اخرى منها ان ثم بمعنى الواو فلا ايراد و قيل المراد ترتيب الخبر لا المخبر به كقوله ثم كان من الذين آمنوا و قيل على بابها و هي لتفاوت ما بين الخلقين لا للتراخي في الزمان و قيل خلق بمعنى قدر و اما الرابع و جواب ابن عباس رض فيحتمل كلامه انه اراد انه سمى نفسه غفورا رحيما و هذه التسمية مضت لان التعلق انقضى واما الصفتان فلايزالان كذلك لا تنقطعان لانه تعالى اذا اراد المغفرة او الرحمة في الحال او الاستقبال وقع مراده قاله الشمس الكرماني قال و يحتمل ان يكون ابن عباس رض اجاب بجوابين احدهما ان التسمية هي التي كانت و انتهت و الصفة لا نهاية لها و الاخر ان معنى كان الدوام فانه لايزال كذلك و يحتمل ان يحمل السوال على مسلكين و الجواب على دفعهما كان فقال هذا اللفظ مشعر بانه في الزمان الماضي كان غفورا رحيما مع انه

و اصله فى الصحيح قال ابن حجر في شرحه حاصل ما فيه السوال عن اربعة مواضع الاول نفى المسائلة يوم القيمة و اثباتها الثاني كتمان المشركين حالهم و افشاؤه الثالث خلق الارض و السماء ايهما تقدم الرابع الاتيان بحرف كان الدالة على المضى مع ان الصفة لازمة و حاصل جواب ابن عباس عن الاول ان نفى المسائلة فيما قبل النفخة الثانية و اثباتها فيما بعد ذلك و عن الثاني انهم يكتمون بالسنتهم فتنطق ايديهم و جوارحهم و عن الثالث انه بدأ خلق الارض في يومين غير مدحوة ثم خلق السموات فسواهن في يومين ثم وحى الارض بعد ذلك و جعل فيها الرواسي و غيرها في يومين فتلك اربعة ايام للارض و عن الرابع بان كان و ان كانت للماضي لكنها لا تستلزم الانقطاع بل المراد انه لم يزل كذلك فاما الاول فقد جاء فيه تفسير آخر ان نفى المسئلة عند تشاغلهم بالصعق و المحاسبة و الجواز على الصراط و اثباتها فيما عدا ذلك و هذا منقول عن السدى اخرجه ابن جرير و من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس ان نفى المسائلة عند النفخة الاولى و اثباتها بعد النفخة الثانية و قد تاول و ابن مسعود نفى المسائلة على معني آخر و هو طلب بعضهم من بعض العفو فاخرج ابن جرير من طريق زاد ان قال اتيت ابن مسعود رض فقال يوخذ بيد العبد يوم القيمة فينادى الا ان هذا فلان بن فلان فمن كان له حق قبله فليأت قال فتود المرأة يومئذ ان يثبت لها حق على ابيها او ابنها او اخيها او زوجها فلا انساب بينهم يومئذ و لا يتساءلون و من طريق اخرى قال لا يسئل احد يومئذ ينسب شيئا و لا يتساءلون به و لا يمت برحم و اما الثاني فقد ورد بابسط منه

حديثا فقد كتموا و اسمعه يقول فلا انساب بينهم يومئذ و لا يتسالون ثم قال و اقبل بعضهم على بعض يتساءلون و قال اينكم لتكفرون بالذي خلق الارض في يومين حتى بلغ طايعين ثم قال فى الآية الاخرى ام السماء بناها ثم قال و الارض بعد ذلك دحاها و اسمعه يقول كان الله ما شانه يقول و كان الله فقال ابن عباس اما قوله ثم لم تكن فتنتهم الا ان قالوا و الله ربنا ما كنا مشركين فانهم لما رأوا يوم القيمة و ان الله يغفر لاهل الاسلام و يغفر الذنوب و لا يغفر مشركا و لا يتعاظمه ذنب ان يغفره جحده المشركون رجاء ان يغفر لهم فقالوا و الله ربنا ما كنا مشركين فختم الله على افواههم و تكلمت ايديهم و ارجلهم بما كانوا يعملون فعنده ذلك يود الذين كفروا و عصوا الرسول لو تسوي بهم الارض و لا يكتمون الله حديثا و اما قوله فلا انساب بينهم يومئذ لا يتساءلون فانه نفخ فى الصور فصعق من فى السموات و من فى الارض الا من شاء الله فلا انساب بينهم عند ذلك و لا يتساءلون ثم نفخ فيه اخرى فاذا هم قيام ينظرون و اقبل بعضهم على بعض يتساءلون و اما قوله خلق الارض في يومين فان الارض خلقت قبل السماء و كانت السماء دخانا فسواهن سبع سموات في يومين بعد خلق الارض و اما قوله و الارض بعد ذلك دحاها يقول جعل فيها جبلا و جعل فيها نهرا و جعل فيها شجرا و جعل فيها بحورا و اما قوله كان الله فان الله كان و لم يزل كذلك و هو كذلك عزيز حكيم عليم قدير ثم لم يزل كذلك فما اختلف عليك من القرآن فهو يشبه ما ذكرت لك و ان الله لم يزل شيئا الا و قد اصاب به الذي اراد و لكن اكثر الناس لا يعلمون اخرجه بطوله الحاكم فى المستدرك و صححه

خطب الناس فقال لا تشكوا في الرجم فانه حق و لقد هممت ان اكتبه في المصحف فسألت ابي ابن كعب فقال ا ليس اتيتني و انا استقرئها رسول الله صلى الله عليه و سلم فدفعت في صدري و قلت ا تستقرئه آية الرجم و هم يتسافدون تسافد الحمر قال ابن حجر و فيه اشارة الى بيان السبب في رفع تلاوتها و هو الاختلاف تنبيه قال ابن الحصار في هذا النوع ان قيل كيف يقع النسخ الى غير بدل و قد قال تعالى ما ننسخ من آية او ننسها نأت بخير منها او مثلها و هذا اخبار لا يدخله خلف فالجواب ان تقول كلما ثبت الآن من القرآن و لم ينسخ فهو بدل مما قد نسخت تلاوته فكلما نسخه الله من القرآن مما لا تعلمه الان فقد ابدله مما علمناه و تواتر الينا لفظه و معناه النوع الثامن و الاربعون في مشكله و موهم الاختلاف و التناقض افرده بالتصنيف قطرب و المراد به ما يوهم التعارض بين الآيات و كلامه تعالى منزه عن ذلك كما قال و لو كان من عند غير الله لوجدوا فيه اختلافا كثيرا و لكن قد يقع للمبتدي ما يوهم اختلافا و ليس به في الحقيقة فاحتيج لازالته كما صنف في مختلف الحديث و بيان الجمع بين الاحاديث المتعارضة و قد تكلم في ذلك ابن عباس و حكى عنه التوقف في بعضها قال عبد الرزاق في تفسيره انبأنا معمر عن رجل عن المنهال ابن عمرو عن سعيد بن جبير قال جاء رجل الى ابن عباس فقال ا رأيت اشياء تختلف علي من القرآن فقال ابن عباس ما هو اشك قال ليس بشك و لكنه اختلاف قال هات ما اختلف عليك من ذلك قال اسمع الله يقول ثم لم تكن فتنتهم الا ان قالوا والله ربنا ما كنا مشركين و قال و لا يكتمون الله

الملازمة مشكلة و لعله كان يعتقد انه خبر واحد و القرآن لايثبت به و ان ثبت الحكم و من هنا انكر ابن ظفر فى الينبوع عد هذا مما نسخ تلاوته قال لان خبر الواحد لا يثبت القرآن قال و انما هذا من المنسالا النسخ و هما مما يلتبسان و الفرق بينهما ان المنسا لفظه قد يعلم حكمه انتهى و قوله لعله كان يعتقد انه خبر واحد مردود فقد صح انه تلقاها من النبي صلى الله عليه و سلم و اخرج الحاكم من طريق كثير بن الصلت قال كان زيد بن ثابت و سعيد بن القاضي يكتبان المصحف فمرا على هذه الآية فقال زيد سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول الشيخ و الشيخة اذا زنيا فارجموهما البتة فقال عمر لما نزلت اتيت النبي صلى الله عليه و سلم فقلت اكتبها فكانه كره ذلك فقال عمر الا ترى ان الشيخ اذا زنا ولم يحصن جلد و ان الشاب اذا زنا و قد احصن رجم قال ابن حجر في شرح البخاري فيستفاد من هذا الحديث السبب في نسخ تلاوتها لكون العمل على غير الظاهر من عمومها قلت و خطر لي في ذلك نكتة حسنة و هو ان سببه التخفيف على الامة بعدم اشتهار تلاوتها و كتابتها فى المصحف و ان كان حكمها باقيا لانه اثقل الاحكام و اشدها و اغلظ الحدود و فيه الاشارة الى ندب الستر و اخرج النسائي ان مروان بن الحكم قال لزيد بن ثابت الا تكتبها فى المصحف قال لا الا ترى ان الشابين الثيبين يرجمان و لقد ذكرنا ذلك فقال عمر انا اكفيكم فقال يا رسول الله اكتبني آية الرجم قال لا استطيع قوله اكتبني اى ايذن لي في كتابتها و مكنى من ذلك و اخرج ابن الضريس في فضائل القرآن عن يعلى بن حكيم عن زيد بن اسلم ان عمر

الذين قتلوا و قنت رسول الله صلى الله عليه و سلم يدعو على قاتليهم قال انس و نزل فيهم قرآن قرأناه حتى رفع ان بلغوا عنا قومنا انا لقينا ربنا فرضى عنا و ارضانا و فى المستدرك عن حذيفة قال ما تقرؤن ربعها يعنى برأة قال ابو الحسن بن المنادي في كتابه الناسخ و المنسوخ و مما رفع رسمه من القرآن و لم يرفع من القلوب حفظه سورتا القنوت فى الوتر و يسمى سورتى الخلع و الحفد تنبيه حكى القاضي ابو بكر فى الانتصار عن قوم انكار هذا الضرب لان الاخبار فيه اخبار احاد و لا يجوز القطع على انزال قرآن و نسخه باخبار احاد لا حجة فيها و قال ابو بكر الرازي نسخ الرسم و التلاوة انما يكون بان ينسيهم الله اياه و يرفعه من اوهامهم و يأمرهم بالاعراض عن تلاوته وكتبه فى المصحف فيندرس على الايام كساير كتب الله القديمة التي ذكرها في كتابه في قوله ان هذا لفى الصحف الاولى صحف ابراهيم و موسى ولا يعرف اليوم منها شيء ثم لا يخلوا ذلك من ان يكون في زمان النبي صلى الله عليه و سلم حتى اذا تو في لا يكون متلوا من القرآن او يموت و هو متلو موجود بالرسم ثم ينسيه الله الناس و يرفعه من اذهانهم و غير جايز نسخ شيء من القرآن بعد وفاة النبي صلى الله عليه و سلم انتهي و قال فى البرهان في قول عمر لولا ان يقول الناس زاد عمر في كتاب الله لكتبتها يعني آية الرجم ظاهره ان كتابتها جايزة و انما منعه قول الناس و الجايز في نفسه قد يقوم من خارج ما يمنعه و اذا كانت جايزة لزم ان يكون ثابتة لان هذا شان المكتوب و قد يقال لو كانت التلاوة باقية لبادر عمر و لم يعرج على مقالة الناس لان مقال الناس لا يصلح مانعا و بالجملة فهذه

و يتوب الله على من تاب و اخرج ابن ابي حاتم عن ابي موسى الاشعري قال كنا نقرأ سورة نشبهها باحدى المسبحات و انسيناها غير اني قد حفظت منها يا ايها الذين آمنوا لم تقولون ما لا تفعلون فتكتب شهادة في اعناقكم فتسألون عنها يوم القيمة و قال ابو عبيد حدثنا حجاج عن شعبة عن الحكم ابن عتيبة عن عدى قال قال عمر كنا نقرأ لا ترغبوا عن ابائكم فانه كفر بكم ثم قال لزيد بن ثابت ا كذلك قال نعم و قال حدثنا ابن ابي مريم عن نافع عن ابن عمر الجمحي حدثني ابن ابي مليكة عن المسور بن مخرمة قال قال عمر لعبد الرحمن بن عوف ا لم تجد فيما انزل علينا ان جاهدوا كما جاهدتم اول مرة فانا لا نجدها قال اسقطت فيما اسقط من القرآن و قال حدثنا ابن ابي مريم عن ابن لهيعة عن يزيد بن عمر المغافري عن ابي سفيان الكلاعي ان مسلمة بن مخلد الانصاري قال لهم ذات يوم اخبروني بآيتين من القرآن لم يكتبنا فى المصحف فلم يخبروه و عندهم ابو الكنود سعد بن مالك فقال مسلمة ان الذين آمنوا و هاجروا و جاهدوا في سبيل الله باموالهم و انفسهم الا ابشروا انتم المفلحون و الذين اووهم و نصروهم و جادلوا عنهم القوم الذين غضب الله عليهم اوليك لا تعلم نفس ما اخفى لهم من قرة اعين جزاء بما كانوا يعملون و اخرج الطبراني فى الكبير عن ابن عمر قال قرأ رجلان سورة اقرأ هما رسول الله صلى الله عليه و سلم فكانا يقرأن بهما فقاما ذات ليلة يصليان فلم يقدرا منها على حرف فاصبحا غاديين على رسول الله صلى الله عليه و سلم فذكرا ذلك له فقال انها مما نسخ فالهوا عنها و فى الصحيحين عن انس في قصة اصحاب بير معونة

حجاج عن ابن جريج اخبرني ابن ابي حميد عن حميدة بنت ابي يونس قالت قرأ علي ابي و هو ابن ثمانين سنة في مصحف عايشة ان الله و ملائكته يصلون على النبي يا ايها الذين آمنوا صلوا عليه و سلموا تسليما و على الذين يصلون الصفوف الاول قالت قبل ان يغير عثمان المصاحف قال و حدثنا عبد الله بن صالح عن هشام بن سعيد عن زيد ابن اسلم عن عطا بن يسار عن ابي واقد الليثي قال كان رسول الله صلى الله عليه و سلم اذا اوحى اليه اتيناه فعلمنا مما اوحى اليه قال فجئت ذات يوم فقال ان الله يقول انا انزلنا المال لا قام الصلوة و ايتاء الزكاة و لو ان لابن آدم واديا من ذهب لاحب ان يكون اليه الثاني و لو كان له الثاني لاحب ان يكون اليهما الثالث و لا يملأ جوف ابن آدم الا التراب و يتوب الله على من تاب و اخرج ابي كم فى المستدرك عن ابي ابن كعب قال قال لي رسول الله صلى الله عليه و سلم ان الله امرني ان اقرء عليك القرآن فقرء لم يكن الذين كفروا من اهل الكتاب و المشركين و من بقيتها لو ان ابن آدم سأل واديا من مال فاعطيه سأل ثانيا و ان سأل ثانيا فاعطيه سأل ثالثا و لا يملأ جوف ابن آدم الا التراب و يتوب الله على من تاب و ان ذات الدين عند الله الحنيفية غير اليهودية و لا النصرانية و من يعمل خيرا فلن يكفره وقال ابو عبيد حدثنا حجاج عن حماد بن سلمة عن على بن زيد عن ابي حرب عن ابى الاسود عن ابي موسى الاشعري قال نزلت سورة نحو براءة ثم رفعت وحفظ منها ان الله سيؤيد هذا الدين باقوام لا خلاف لهم و لو ان لابن آدم واديان من مال لتمنى واديا ثالثا ولا يملأ جوف ابن آدم الا التراب

انتهى والضرب الثالث ما نسخ تلاوته دون حكمه و قد اورد بعضهم فيه سوالا و هو ما الحكمة في رفع التلاوة مع بقاء الحكم و هلا بقيت التلاوة ليجتمع العمل بحكمها و ثواب تلاوتها و اجاب صاحب الفنون بان ذلك ليظهر به مقدار طاعة هذه الامة فى المسارعة الى بذل النفوس بطريق الظن من غير استفصال لطلب طريق مقطوع به فيسرعون بايسر شئ كما سارع الخليل الى ذبح ولده بمنام والمنام ادنى طريق الوحي و امثلة هذا الضرب كثيرة قال ابو عبيدة حدثنا اسمعيل بن ابراهيم عن ايوب عن نافع عن ابن عمر قال لا يقولن احدكم قد اخذت القرآن كله و ما يدريه ما كله قد ذهب منه قرآن كثير و لكن ليقل قد اخذت منه ما ظهر و قال حدثنا ابن ابي مريم عن ابي لهيعة عن ابى الاسود عن عروة ابن الزبير عن عايشة قالت كانت سورة الاحزاب تقرأ في زمان النبي صلى الله عليه و سلم و مائتى آية فلما كتب عثمان المصاحف لم تقدر منها الاعلى ما هو الان و قال حدثنا اسمعيل ابن جعفر عن المبارك بن فضالة عن عاصم بن ابى النجود عن زر بن حبيش قال قال لي ابي بن كعب كاين تعد سورة الاحزاب قلت اثنتين و سبعين آية او ثلاثا و سبعين آية قال ان كانت لتعدل سورة البقرة و ان كنا لنقرأ فيها آية الرجم قلت و ما آية الرجم قال اذا زنا الشيخ و الشيخة فارجموهما البتة نكالا من الله و الله عزيز حكيم و قال حدثنا عبد الله بن صالح عن الليث عن خالد بن يزيد عن سعيد بن ابي هلال عن مروان بن عثمان عن ابي امامة بن سهل ان خالته قالت لقد اقرأنا رسول الله صلى الله عليه وسلم آية الرجم اذا زنى الشيخ و الشيخة فارجموهما البتة بما قضيا من اللذة و قال حدثنا

اولها منسوخ بفرض الصلوات الخمس و قوله انفروا خفافا وثقالا
فاسخ لآيات الكف منسوخ بآيات العذر و اخرج ابو عبيد عن
الحسن و ابي ميسرة قالا ليس فى المائدة منسوخ ويشكل بما فى
المستدرك عن ابن عباس ان قوله فاحكم بينهم اواعرض عنهم
منسوخ بقوله و ان احكم بينهم بما انزل الله و اخرج ابو عبيده و غيره
عن ابن عباس قال اول ما نسخ من القرآن شان القبلة و اخرج
ابو داؤد في ناسخه من وجه اخر عنه قال اول آية نسخت من القرآن
شان القبلة ثم الصيام الاول و قال مكي و على هذا فلم يقع فى المكي
ناسخ قال وقد ذكر انه وقع فيه في آيات منها قوله تعالى في سورة
غافر و الملائكة يسبحون بحمد ربهم ويومنون به و يستغفرون للذين
امنوا فانه ناسخ لقوله و يستغفرون لمن فى الارض قلت احسن من
هذا نسخ قيام الليل في اول سورة المزمل باخرها اوبا يجاب الصلوات
الخمس و ذلك بمكة اتفاقا تنبيه قال ابن الحصار انما يرجع فى
النسخ الى نقل صريح عن رسول الله صلى الله عليه وسلم او عن
صحابي يقول آية كذا نسخت كذا قال و قد يحكم به عن وجود
التعارض المقطوع به مع علم التاريخ ليعرف المتقدم و المتاخر قال
ولا يعتمد فى النسخ قول عوام المفسرين بل و لا اجتهاد المجتهدين
من غير نقل صحيح و لا معارضة بينة لان النسخ يتضمن رفع حكم
و اثبات حكم تقرر في عهده صلى الله عليه و سلم فالمعتمد فيه النقل
و التاريخ دون الراى و الاجتهاد قال و الناس في هذا بين طرفى
نقيض فمن قائل لا يقبل فى النسخ اخبارا لاحاد العدول و من
متساهل يكتفى فيه بقول مفسرا و مجتهد و للصواب خلاف قولهما

و هي قوله خذ العفو يعني الفضل من اموالهم على راى من قال انها منسوخة بآية الزكاة و قال ابن العربي كل ما فى القرآن من الصفح عن الكفار و التولى و الاعراض و الكف عنهم فهو منسوخ بآية السيف وهي فاذا انسلخ الاشهر الحرم فاقتلوا المشركين الآية نسخت مأية و اربعا و عشرين آية ثم نسخ آخرها اولها انتهى و قد تقدم ما فيه و قال ايضا من عجائب المنسوخ قوله تعالى خذ العفو الآية فان اولها و آخرها و هو و اعرض عن الجاهلين منسوخ و وسطها محكم و هو و أمر بالعرف و قال من عجائبه ايضا اولها منسوخ و آخرها ناسخ و لا نظير لها و هي قوله عليكم انفسكم لا يضركم من ضل اذا اهتديتم يعني بالامر بالمعروف و النهي عن المنكر فهذا ناسخ لقوله عليكم انفسكم و قال السعيدي لم يمكث منسوخ مدة اكثر من قوله تعالى قل ما كنت بدعاء من الرسل الآية مكثت ستة عشر سنة حتى نسخها اول الفتح عام الحديبية و ذكر هبة الله بن سلامة الضرير انه قال في قوله تعالى و يطعمون الطعام على حبه الآية ان المنسوخ من هذه الجملة و اسيرا و المراد بذلك اسير المشركين فقرئ عليه الكتاب و ابنته تسمع فلما انتهى الى هذا الموضع قالت له اخطأت يا ابة قال و كيف قالت اجمع المسلمون على ان الاسير يطعم و لا يقتل جوعا فقال صدقت و قال شيذلة فى البرهان يجوز نسخ الناسخ فيصير منسوخا كقوله لكم دينكم ولى دين نسخها قوله اقتلوا المشركين ثم نسخ هذا بقوله حتى يعطوا الجزية كذا قال و فيه نظر من وجهين احدهما ما تقدمت الاشارة اليه و الآخر ان قوله حتى يعطوا الجزية مخصص للآية لا ناسخ نعم يمثل له باخر سورة المزمل فانه ناسخ

قد اكثر الناس في المنسوخ من عدد  و ادخلوا فيه آيا ليس تنحصر
و هاك تحرير آى لا مزيد لها  عشرين حررها الحذاق و الكبر
اى التوجه حيث المرء كان و ان  يوصى لاهليه عند الموت محتضر
و حرمة الاكل بعد النوم مع رفث  و فدية لمطيق الصوم مشتهر
و حق تقواه فيما صح في آثر  و فى الحرام قتال للاولى كفروا
و الاعتداد بحول مع و صيتها  وان يدان حديث النفس والفكر
والحلف والحبس للزاني وترك اولى  كفروا شهادهم و الصبر و النفر
و منع عقد لزان او لزانية  و ماعلى المصطفى فى العقد مختطر
و دفع مهر لمن جاءت و آية نجوا  كذاك قيام الليل مستطر
و زيد آية الاستيذان من ملكت  وآية القسمة الفصلى لمن حضروا

فان قلت ما الحكمة فى رفع الحكم و بقاء التلاوة فالجواب من وجهين احدهما ان القرآن كما يتلى ليعرف الحكم منه و العمل به فيتلى لكونه كلام الله فيثاب عليه فتركت التلاوة لهذه الحكمة و الثاني ان النسخ غالبا للتخفيف فابقيت التلاوة لهذا الحكمة تذكيرا للنعمة ورفع المشقة و اما ما ورد فى القرآن ناسخا لما كان عليه الجاهلية او كان في شرع من قبلنا او في اول الاسلام فهو ايضا قليل العدد كنسخ استقبال بيت المقدس بآية القبلة و صوم عاشورا بصوم رمضان في اشياء آخر حررتها في كتاب المشار اليه فوائد منثورة قال بعضهم ليس فى القرآن ناسخ الا و المنسوخ قبله فى الترتيب الا في آيتين آية العدة فى البقرة وقوله لا تحل لك النساء كما تقدم و زاد بعضهم ثالثة و هي آية الحشر فى الفى على راى من قال انها منسوخة بآية الانفال و اعلموا انما غنمتم من شئ و زاد قوم رابعة

فى العمل بها قوله تعالى و اللاتى ياتين الفاحشة الآية منسوخة بآية النور و من المايدة قوله تعالى ولا اشهر الحرام منسوخة باباحة القتال فيه قوله تعالى فان جاؤك فاحكم بينهم او اعرض عنهم منسوخ بقوله تعالى و ان احكم بينهم بما انزل الله قوله تعالى اوآخران من غيركم منسوخ بقوله و اشهدوا ذوى عدل منكم و من الانفال قوله تعالى ان يكن منكم عشرون صابرون الآية منسوخة بالآية بعدها و من براءة قوله تعالى انفروا خفافا وثقالا منسوخة بآية العذر وهى قوله ليس على الاعمى حرج الآية و ليس على الضعفاء الآيتين وبقوله وما كان المومنون لينفروا كافة و من النور قوله تعالى الزاني لا ينكح الا زانية الآية منسوخة بقوله تعالى و انكحوا الايامى منكم قوله ليستاذنكم الذين ملكت ايمانكم الآية قيل منسوخة و قيل لا ولكن تهاون الناس فى العمل بها و من الاحزاب قوله تعالى لا يحل لك النساء من بعد الآية منسوخة بقوله انا احللنا لك ازواجك الآية و من المجادلة قوله تعالى و اذا ناجيتم الرسول فقدموا الآية منسوخة بالآية بعدها و من الممتحنة قوله تعالى فاتوا الذين ذهبت ازواجهم مثل ما انفقوا قيل منسوخ بآية السيف وقيل بآية الغنيمة وقيل محكم و من المزمل قوله تعالى قم الليل الا قليلا منسوخ باخر السورة ثم نسخ الاخر بالصلوات الخمس فهذه احدى وعشرون آية منسوخة على خلاف فى بعضها لا يصح دعوي النسخ في غيرها والاصح في آية الاستيذان و القسمة الاحكام فصارت تسعة عشر ويضم اليها قوله تعالى فاينما تولوا فثم وجه الله على راى ابن عباس انها منسوخة بقوله فول وجهك شطر المسجد الحرام الآية فيتم عشرين وقد نظمتها في ابيات فقلت قد اكثر الناس فى المنسوخ من عدد شعر

في اول الاسلام ادخاله اوجه من القسمين قبله اذا علمت ذلك فقد خرج من الآيات التى اوردها المكثرون الجم الغفير مع آيات الصفح والعفوان قلنا ان آية السيف لم ينتسخها وبقى مما يصلح لذلك عدد يسير وقد افردته بادلته في تاليف لطيف وها انا اورده هنا محررا فمن البقرة قوله تعالى كتب عليكم اذا حضر احدكم الموت الآية منسوخة قيل بآية المواريث وقيل بحديث لا وصية لوارث وقيل بالاجماع حكاه ابن العربي قوله تعالى وعلى الذين يطيقونه فدية قيل منسوخة بقوله فمن شهد منكم الشهر فليصمه وقيل محكمة ولا مقدرة قوله احل لكم ليلة الصيام الرفث ناسخة لقوله تعالى كما كتب على الذين من قبلكم لان مقتضاه الموافقة فيما كان عليهم من تحريم الاكل والوطى بعد النوم ذكره ابن العربى وحكى قولا اخر انه نسخ لما كان بالسنة قوله تعالى يسألونك عن الشهر الحرام الآية منسوخة بقوله وقاتلوا المشركين كافة الآية اخرجه ابن جرير عن عطا بن ميسرة قوله تعالى والذين يتوفون منكم الى قوله متاعا الى الحول منسوخة بآية اربعة اشهر وعشرا والوصية منسوخة بالميراث والسكنى ثابتة عند قوم منسوخة عند اخرين بحديث ولا سكنى قوله تعالى ان تبدوا ما في انفسكم اوتخفوه يحاسبكم به الله منسوخة بقوله بعده لايكلف الله نفسا الا وسعها ومن ال عمران قوله تعالى اتقوا الله حق تقاته قيل انه منسوخ بقوله فاتقوا الله ما استطعتم وقيل لا بل هو محكم وليس فيها آية يصح فيها دعوى النسخ غير هذه الآية ومن النساء قوله تعالى والذين عاقدت ايمانكم فاتوهم نصيبهم منسوخة بقوله واولوا الارحام بعضهم اولى ببعض قوله تعالى واذا حضر القسمة الآية قيل منسوخة وقيل لا ولكن تهاون الناس

يفسر بالزكاة و بالانفاق على الاهل و بالانفاق فى الامور المندوبة كالاعانة و الاضافة و ليس فى الآية ما يدل على انها نفقة واجبة غير الزكاة و الآية الثانية يصح حملها على الزكاة و قد فسرت بذلك و كذا قوله تعالى اليس الله باحكم الحاكمين قيل انها مما نسخ بآية السيف و ليس كذلك لانه تعالى احكم الحاكمين ابدا لا يقبل هذا الكلام النسخ و ان كان معناه الامر بالتفويض و ترك المعاقبة و قوله فى البقرة و قولوا للناس حسنا عده بعضهم من المنسوخ بآية السيف و قد غلطه ابن الحصار بان الآية حكاية عما اخذه على بني اسرائيل من الميثاق فهو خبر فلا نسخ فيه و قس على ذلك و قسم هو من قسم المخصوص لا من قسم المنسوخ و قد اعتني ابن العربي تجريره فاجاد كقوله ان الانسان لفي خسر الا الذين آمنوا و الشعراء يتبعهم الغاوون الا الذين آمنوا فاعفوا و اصفحوا حتى ياتى الله بامره و غير ذلك من الآيات التي خصت باستثناء او غاية و قد اخطا من ادخلها فى المنسوخ و منه قوله ولا تنكحوا المشركات حتى يومن قيل انه نسخ بقوله والمحصنات من الذين اوتوا الكتاب و انما هو مخصوص به و قسم رفع ما كان عليه الامر فى الجاهلية او في شرائع من قبلنا او في اول الاسلام و لم ينزل فى القران كابطال نكاح نساء الآباء و مشروعية القصاص و الدية و حصر الطلاق فى الثلاث و هذا ادخاله في قسم الناسخ قريب و لكن عدم ادخاله اقرب و هو الذي رجحه مكي و غيره و وجهوه بان ذلك لوعد فى الناسخ لعد جميع القران منه اذ كله او اكثره رافع لما كان عليه الكفار و اهل الكتاب قالوا و انما حق الناسخ و المنسوخ ان يكون آية نسخت آية انتهى نعم النوع الاخر منه و هو رافع ما كان

كذا قال وفيه نظر يعرف مما سياتي السادسة قال مكي الناسخ اقسام فرض نسخ فرضا ولا يجوز العمل بالاول كنسخ الجنس للزواني بالحد وفرض نسخ فرضا ويجوز العمل بالاول كآية المصابرة وفرض نسخ ندبا كالقتال كان ندبا ثم صار فرضا وندب نسخ فرضا كقيام الليل نسخ بالقرأة في قوله فاقرؤا ما تيسر من القرأن السابعة النسخ في القران على ثلاثة اضرب احدها ما نسخ تلاوته وحكمه معاقالت عايشة كان فيما انزل الله عشر رضعات معلومات فنسخن بخمس معلومات فتوفى رسول الله صلى الله عليه وسلم وهن مما يقرأ من القران رواه الشيخان وقد تكلموا في قولها وهي مما يقرأ فان ظاهره بقاء التلاوة وليس كذلك واجيب بان المراد قارب الوفاة او ان التلاوة نسخت ايضا ولم يبلغ ذلك كل الناس الى بعد وفاة رسول الله صلى الله وسلم فتوفى وبعض الناس يقرؤها وقال ابو موسى الاشعري نزلت ثم رفعت وقال مكي هذا المثال فيه المنسوخ غير متلو والناسخ ايضا غير متلو ولا اعلم له نظيرا انتهى الضرب الثاني ما نسخ حكمه دون تلاوته وهذا الضرب هو الذي فيه الكتب المولفة وهو على الحقيقة قليل جد او ان اكثر الناس من تعديد الآيات فيه فان المحققين منهم كالقاضي ابي بكر بن العربي ميز ذلك واتقنه والذي اقوله ان الذي او رد المكثرون اقسام قسم ليس من النسخ في شئ ولا من التخصيص ولا له بهما علاقة بوجه من الوجوه وذلك مثل قوله تعالى ومما رزقناهم ينفقون وانفقوا مما رزقناكم ونحو ذلك قالوا انه منسوخ بآية الزكاة وليس كذلك بل هو باق اما الاولى فانها خبر في معرض الثنا عليهم بالانفاق وذلك يصلح ان

نسخا تجوزا الثالث ما امر به لسبب ثم يزول السبب كالامر حين الضعف و القلة بالصبر و الصفح ثم نسخ بايجاب القتال و هذا فى الحقيقة ليس نسخا بل هو من قسم المنسا كما قال الله تعالى او ننساها فالمنسى هو الامر بالقتال الى ان يقوى المسلمون و في حال الضعف يكون الحكم و جواب الصبر على الاذى و بهذا يضعف مالهج به كثيرون من ان الآيات في ذلك منسوخة بآية السيف و ليس كذلك بل هي من المنسا بمعنى ان كل امر ورد يجب امتثاله في وقت ما لعلة يقتضي ذلك الحكم ثم ينتقل بانتقال تلك العلة الى حكم آخر و ليس بنسخ انما النسخ الازالة للحكم حتى لا يجوز امتثاله و قال مكي ذكر جماعة انما ورد من الخطاب مشعرا بالتوقيت و الغاية مثل قوله فى البقرة فاعفوا و اصفحوا حتى يأتى الله بامره محكم غير منسوخ لانه موجل باجل و الموجل باجل لا نسخ فيه الخامسة قال بعضهم سور القرآن باعتبار الناسخ و المنسوخ اقسام قسم ليس فيه ناسخ ولا منسوخ و هو ثلاثة و اربعون سورة الفاتحة و يوسف و يس و الحجرات و الرحمن و الحديد و الصف و الجمعة و التحريم و الملك و الحاقة و نوح و الجن و المرسلات و عم و النازعات و الانفطار و ثلاث بعدها و الفجر و ما بعدها الى آخر القرآن الا التين و العصر و الكافرين و قسم فيه الناسخ و المنسوخ و هو خمس و عشرون البقرة و ثلاث بعدها و الحج و النور و تالياها و الاحزاب و سبا و المومن و شورى والذاريات و الطور والواقعة والمجادلة و المزمل و المدثر و كورت و العصر و قسم فيه الناسخ فقط و هو ستة الفتح و الحشر و المنافقون و التغابن و الطلاق و الاعلى و قسم فيه المنسوخ فقط و هو الاربعون الباقية

في كتاب مكنون لا يمسه الا المطهرون الثانية النسخ مما خص الله
به هذه الامة لحكم منها التيسير و قد اجمع المسلمون على جوازه
و انكره اليهود ظنا منهم انه بدأ كالذي يرى الراى ثم يبدوله و هو
باطل لانه بيان مدة الحكم كالاحياء بعد الاماتة و عكسه و المرض بعد
الصحة و عكسه و الفقر بعد الغنى و عكسه و ذلك لا يكون بدأ فكذا
الامر و النهي و اختلف العلماء فقيل لا ينسخ القرآن لقوله ما ننسخ
من آية او ننساها نات بخير منها او مثلها قالوا و لا يكون مثل القرآن
و خيرا منه الا قرآن و قيل بل ينسخ القرآن بالسنة لانها ايضا من
عند الله قال الله تعالى و ما ينطق عن الهوى و جعل منه آية الوصية
الآتية و الثالث اذا كانت السنة بامر الله من طريق الوحي نسخت
و ان كانت باجتهاد فلا حكاه ابن حبيب النيشابوري في تفسيره
و قال الشافعي حيث وقع نسخ القرآن بالسنة فمعها قرآن عاضد لها
و حيث وقع نسخ السنة بالقرآن فمعه سنه عاضدة له لتبيين توافق
القرآن و السنة و قد بسطت فروع هذه المسألة في شرح منظومة
جمع الجوامع فى الاصول الثالثة لا يقع النسخ الا فى الامر و النهي
و لو بلفظ الخبر اما الخبر الذي ليس بمعنى الطلب فلا يدخله
النسخ و منه الوعد و الوعيد و اذا عرفت ذلك عرفت فساد منع
من ادخل في كتب النسخ كثيرا من آيات الاخبار و الوعد و الوعيد
الرابعة النسخ اقسام احدها نسخ المامور به قبل امتثاله و هو النسخ
على الحقيقة كآية النجوي الثاني ما نسخ مما كان شرعا لمن قبلنا
كآية شرع القصاص و الدية او كان امر به امرا حمليا كنسخ التوجه
الى بيت المقدس بالكعبة و صوم عاشورا برمضان و انما يسمى هذا

تنبيه قال ابن الحصار من الناس من جعل المجمل و المحتمل بازاء شيء واحد قال و الصواب ان المجمل اللفظ المبهم الذي لا يفهم المراد منه و المحتمل اللفظ الواقع بالوضع الاول على معنيين مفهومين فصاعدا سواء كان حقيقة في كلها او بعضها قال فالفرق بينهما ان المحتمل يدل على امور معروفه و اللفظ مشترك متردد بينهما و المبهم لايدل على امر معروف مع القطع بان الشارع لم يفوض لاحد بيان المجمل بخلاف المحتمل النوع السابع والاربعون في الناسخ والمنسوخ افرده بالتصنيف خلائق لا يحصون منهم ابوعبيد القاسم بن سلام و ابوداؤد السجستاني و ابوجعفر النحاس و ابن الانباري ومكي و ابن العربي و آخرون قال الايمة لا يجوز لاحد ان يفسر كتاب الله الا بعد ان يعرف منه الناسخ والمنسوخ و قد قال عليّ لقاصٍ ا تعرف الناسخ و المنسوخ قال لا قال هلكت و اهلكت و في هذا النوع مسائل الاولى يرد النسخ بمعنى الازالة و منه قوله فينسخ الله ما يلقى الشيطان ثم يحكم الله وبمعنى التبديل ومنه و اذا بدلنا آية مكان آية و بمعنى التحويل كتناسخ المواريث بمعنى تحويل الميراث من واحد الى واحد وبمعنى النقل من موضع الى موضع و منه نسخت الكتاب اذا نقلت ما فيه حاكيا للفظه و خطه قال مكي وهذا الوجه لا يصح ان يكون في القرآن و انكر على النحاس اجازته ذلك محتجا بان الناسخ فيه لا ياتي بلفظ المنسوخ و انه انما ياتي بلفظ آخر قال السعيدي يشهد لما قاله النحاس قوله تعالى انا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون و قال و انه في ام الكتاب لدينا لعلي حكيم و معلوم انما نزل من الوحي نحو ما جميعه في ام الكتاب و هو اللوح المحفوظ كما قال

البيوع وجهان و هل الاجمال فى المعنى المراد دون لفظها لان لفظ البيع اسم لغوي معناه معقول لكن لما قام بازائه من السنة ما يعارضه تدافع العمومان و لم يتعين المراد الا ببيان السنة فصار مجملا لذلك دون اللفظ او فى اللفظ ايضا لانه لما لم يكن المراد منه ما وقع عليه الاسم و كانت له شرائط غير معقولة فى اللغة كان مشكلا ايضا وجهان قال و على الوجهين لا يجوز الاستدلال بها على صحة بيع و لا فساده و دلت على صحة البيع من اصله قال و هذا هو الفرق بين العموم والمجمل حيث جاز الاستدلال بظاهر العموم و لم يجز الاستدلال بظاهر المجمل و القول الثالث انها عامة مجملة معا قال و اختلف في وجه ذلك على اوجه احدها ان العموم فى اللفظ و الاجمال فى المعنى فيكون اللفظ عاما مخصوصا و المعنى مجملا لحقه التفسير و الثاني ان العموم فى واحل الله البيع و الاجمال في و حرم الربا والثالث انه كان مجملا فلما بينه النبي صلى الله عليه وسلم صار عاما فيكون داخلا فى المجمل قبل البيان و فى العموم بعد البيان فعلى هذا يجوز الاستدلال بظاهرها فى البيوع المختلف فيها والقول الرابع انها تناولت بيعا معهودا و انزلت بعد ان احل النبي صلى الله عليه و سلم بيوعا و حرم بيوعا فاللام للعهد فعلى هذا لا يجوز الاستدلال بظاهرها انتهى و منها الآيات التي فيها الاسماء الشرعية نحو اقيموا الصلاة و اتوا الزكاة فمن شهد منكم الشهر فليصمه و لله على الناس حج البيت قيل انها مجملة لاحتمال الصلوة لكل دعاء و الصيام لكل امساك و الحج لكل قصد و المراد بها لا تدل عليه اللغة فافتقر الى البيان و قيل لا بل يحمل على كل ما ذكر الا ما خص بدليل

بين مسح الكل و البعض و مسح الشارع الناصية مبين لذلك وقيل لا و انما هي لمطلق المسح الصادق باقل ما ينطلق عليه الاسم و بغيره و منها حرمت عليكم امهاتكم قيل انها مجملة لان اسناد التحريم الى العين لا يصح لانه انما يتعلق بالفعل فلابد من تقديره و هو محتمل لامور لا حاجة الى جميعها و لا مرجح لبعضها و قيل لا لوجود المرجح و هو العرف فانه يقتضي بان المراد تحريم الاستمتاع بوطئ اونحوه و يجري ذلك في كلما علق فيه التحريم و التحليل بالاعيان ومنها و احل الله البيع و حرم الربا قيل انها مجملة لان الربا الزيادة و ما من بيع الا وفيه زيادة فافتقر الى بيان ما يحل وما يحرم وقيل لا لان البيع منقول شرعا فحمل على عمومه مالم يقم دليل التخصيص وقال الماوردي الشافعي في هذه الآية اربعة اقوال احدها انها عامة فان لفظها لفظ عموم يتناول كل بيع و يقتضى اباحة جميعها الا ماخصه الدليل وهذا القول اصحها عند الشافعي و اصحابه لانه صلى الله عليه وسلم نهى عن بيوع كانوا يعتادونها و لم يبين الجائز فدل على ان الآية تناولت اباحة جميع البيوع الا ماخص منها فبين صلى الله عليه وسلم المخصوص قال فعلى هذا فى العموم قولان احدهما انه عموم اريد به العموم و ان دخله التخصيص و الثاني انه عموم اريد به الخصوص قال و الفرق بينهما ان البيان فى الثاني متقدم على اللفظ فى الاول متاخر عنه مقترن به قال و على القولين يجوز الاستدلال بالآية فى المسائل المختلف فيها ما لم يقم دليل تخصيص و القول الثاني انها مجملة لا يعقل منها صحة بيع من فساده الا ببيان النبي صلى الله عليه وسلم قال ثم هي مجملة بنفسها لم يعارض ما نهى عنه من

فاين الثالثة قال امساك بمعروف اوتسريح باحسان وقوله و جوه يومئذ ناضرة الى ربها ناظرة دال على جواز الروية ومفسر ان المراد بقوله لا تدركه الابصار لا تحيط به دون لاتراه و قد اخرج ابن جرير بن طريق العوفي عن ابن عباس في قوله لا تدركه الابصار قال لا تحيط به و اخرج عن عكرمة انه قيل له عند ذكر الروية اليس قد قال لا تدركه الابصار فقال الست تري السماء افكلها ترى وقوله احلت لكم بهيمة الانعام الا ما يتلي عليكم فسره قوله حرمت عليكم الميتة الآية وقوله مالك يوم الدين فسره قوله وما ادراك مايوم الدين ثم ما ادراك ما يوم الدين يوم لا تملك الآية و قوله فتلقى آدم من ربه كلمات فسره بقوله قالا ربنا ظلما انفسنا الآية و قوله و اذا بشر احدهم بما ضرب للرحمن مثلا فسره قوله في آية النحل بالانثى و قوله و اوفوا بعهدي اوف بعهدكم قال العلماء بيان هذا العهد قوله لين اقمتم الصلاة و اتيتم الزكاة و امنتم برسلى الخ فهذا عهده و عهدهم لاكفرن عنكم سياتكم الخ و قوله صراط الذين انعمت عليهم بينه قوله فاوليك الذين انعم الله عليهم من النبيين الآية و قد يقع التبيين بالسنة مثل و اقيموا الصلوة و اتوا الزكاة ولله على الناس حج البيت و قد بينت السنة افعال الصلاة و الحج و مقادير نصب الزكوات في انواعها تنبيه اختلف في آيات هل هي من قبيل المجمل اولا منها آية السرقة قيل انها مجملة فى اليد لانها تطلق على العضو الى الكوع و الى المرفق و الى المنكب و فى القطع لانه يطلق على الابانة و على الجرح و لا ظهور لواحد من ذلك و ابانة الشارع من الكوع تبين ان المراد ذلك و قيل لا اجمال فيها لان القطع ظاهر فى الابانة و منها و امسحوا برؤسكم قيل انها مجملة لترددها

نحو و ترغبون ان تنكحوهن يحتمل في وعن و منها اختلاف مرجع الضمير نحو اليه يصعد الكلم الطيب والعمل الصالح يرفعه يحتمل عود الضمير الفاعل في يرفعه الى ما عاد عليه ضمير اليه و هو الله ويحتمل عوده الى العمل والمعني ان العمل الصالح هوالذي يرفع له بكلم الطيب ويحتمل عوده الى الكلم اى ان الكلم الطيب و هو التوحيد يرفع العمل الصالح لانه لايصح العمل الا مع الايمان ومنها احتمال العطف والاستيناف نحو الا الله والراسخون فى العلم يقولون و منها غرابة اللفظ نحو فلا تفضلوهن ومنها عدم كثرة الاستعمال الان نحو يلقون السمع اى يسمعون ثاني عطفه اى متكبرا فاصبح يقلب كفيه اى نادما ومنها التقديم والتاخير نحو ولولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما واجل مسمى اى ولولا كلمة و اجل مسمى لكان لزا ما يسألونك كانك حفى عنها اى يسألونك عنها كانك حفى و منها قلب المنقول نحو طور سينين اى سيناء على آل ياسين اى الياس و منها التكرير القاطع لوصل الكلام فى الظاهر نحو الذين استضعفوا لمن آمن منهم فصل قد يقع التبيين متصلا نحو من الفجر بعد قوله الخيط الابيض من الخيط الاسود و منفصلا في آية اخرى نحو فان طلقها فلا تحل له من بعد حتى تنكح زوجا غيره بعد قوله الطلاق مرتان فانها تبينت ان المراد به الطلاق الذي يملك الرجعة بعده ولولا هي فكان الكل منحصرا فى الطلقتين وقد اخرج احمد و ابو داؤد في ناسخه و سعيد بن منصور و غيرهم عن ابي رزين الاسدي قال قال رجل يا رسول الله ارايت قول الله الطلاق مرتان فاين الثالثة قال التسريح باحسان واخرج ابن مردوية عن انس قال قال رجل يا رسول الله ذكر الله الطلاق مرتين

له اخرج ابن ابي حاتم عن الزهري قال اذا قال الله يا ايهاالذين امنوا افعلوا فالنبي صلى الله عليه وسلم منهم والثاني لا لانه ورد على لسانه لتبليغ غيره ولما له من الخصائص والثالث ان اقترن بقل لم يشمله لظهوره في التبليغ و ذلك قرينة عدم شموله و الا فيشمله الرابع الاصح في الاصول ان الخطاب بيا ايها الناس يشمل الكافر و العبد لعموم اللفظ وقيل لا يعم الكافر بناء على عدم تكليفه بالفروع ولا العبد لصرف منافعه الى سيده شرعا الخامس اختلف في من هل يتناول الانثى فالاصح نعم خلافا للحنفية لنا قوله تعالى و من يعمل من الصالحات من ذكر او انثى فالتفسير بهما دال على تناول من لهما و قوله من يقنت منكن لله و اختلف في جمع الذكور السالم هل يتناولهما فالاصح لا وانما يدخلن فيه بقرينة اما المكسر فلا خلاف في دخولهن فيه السادس اختلف في الخطاب بيا اهل الكتاب هل يشمل المومنين فالاصح لا لان اللفظ قاصر على من ذكر وقيل ان شركوهم في المعنى شملهم والا فلا واختلف في الخطاب بيا ايهاالذين آمنوا هل يشمل اهل الكتاب فقيل لا بناء على انهم غير مخاطبين بالفروع وقيل نعم واختاره ابن السمعاني قال وقوله يا ايهاالذين آمنوا خطاب تشريف لا تخصيص النوع السادس والاربعون في مجمله ومبينه المجمل مالم تتضح دلالة و هو واقع في القران خلافا لداؤد الظاهري و في جواز بقائه مجملا اقوال اصحها لا يبقى المكلف بالعمل به بخلاف غيره والاجمال اسباب منها الاشتراك نحو والليل اذا يغشى فانه موضوع لاقبل وادبر ثلثة قروء فان القروء موضوع للحيض والطهر او يعفو الذي بيده عقدة النكاح يحتمل الزوج والولى فان كلا منهما بيده عقدة النكاح ومنها الحذف

عليها و المولفة قلوبهم خص عموم قوله صلى الله عليه و سلم لا تحل الصدقة لغني ولا لذى مرة سوى قوله فقاتلوا التى تبغى خص عموم قوله عليه السلام اذا التقى المسلمان بسيفيهما فالقاتل و المقتول فى النار فروع منثورة تتعلق بالعموم و الخصوص الاول اذا سيق العام للمدح اوللذم فهل هو باق على عمومه فيه مذاهب احدها نعم اذلا صارف عنه ولا تنا فى بين العموم و بين المدح او الذم والثانى لا لانه لم يسبق للتعميم بل للمدح اوللذم والثالث و هو الاصح التفصيل فيعم ان لم يعارضه عام اخر لم يسبق لذلك ولا يعم ان عارضه ذلك جمعا بينهما مثاله ولا معارض قوله تعالى ان الابرار لفى نعيم و ان الفجار لفى جحيم و مع المعارض قوله تعالى والذين هم لفروجهم حافظون الا على ازواجهم اوما ملكت ايمانهم فانه سيق للمدح فظاهره يعم الاختين بملك اليمين جمعا وعارضه فى ذلك و ان تجمعوا بين الاختين فانه شامل بجمعهما بملك اليمين ولم يسبق للمدح فحمل الاول على غير ذلك بان لم يرد تناوله له و مثاله فى الذم و الذين يكنزون الذهب و الفضة الاية فانه سيق للذم و ظاهره يعم الحلى المباح وعارضه فى ذلك حديث جابر ليس فى الحلى زكاة فحمل الاول على غير ذلك الثانى اختلف فى الخطاب الخاص به صلى الله عليه و سلم نحو يا ايها النبى يا ايها الرسول هل يشمل الامة فقيل نعم لان امر القدوة امر لاتباعه معه عرفا والاصح فى الاصول المنع لاختصاص الصيغة به الثالث اختلف فى الخطاب بيا ايها الناس هل يشمل الرسول صلى الله عليه و سلم على مذاهب اصحها و عليه الاكثرون نعم لعموم الصيغة

و اتيتم احديهن قنطارا فلا تأخذوا منه شيئا الآية خص بقوله فلا جناح عليهما فيما افتدت به و قوله الزانية و الزانى فاجلدوا كل واحد منهما ماية جلدة خص بقوله فعليهن نصف ما على المحصنات من العذاب و قوله فانكحوا ما طاب لكم من النساء خص بقوله حرمت عليكم امهاتكم الآية و من امثلة ما خص بالحديث قوله تعالى و احل الله البيع خص منه البيوع الفاسدة و هى كثيرة بالسنة و حرم الربا خص منه العرايا بالسنة و آيات المواريث خص منها القاتل و المخالف فى الدين بالسنة و اية التحريم الميتة خص منها الجراد بالسنة و اية ثلاثة قروء خص منها الايمة بالسنة و قوله ماء طهورا خص منه المتغير بالسنة و قوله و السارق و السارقة فاقطعوا خص منه من سرق دون ربع دينار بالسنة و من امثلة ما خص بالاجماع اية المواريث خص منه الرقيق فلا يرث بالاجماع ذكره مكى و من امثلة ما خص بالقياس آية الزنا فاجلدوا كل واحد منهما ماية جلدة خص منها العبد بالقياس على الامة المنصوصة فى قوله فعليهن نصف ما على المحصنات المخصص لعموم الآية ذكره مكى ايضا فصل من خاص القران ما كان مخصصا لعموم السنة و هو عزيز و من امثلته قوله تعالى حتى يعطوا الجزية خص عموم قوله صلى الله عليه و سلم امرت ان اقاتل الناس حتى يقولوا لا اله الا الله و قوله حافظوا على الصلوات و الصلواة الوسطى خص عموم نهيه صلى الله عليه و سلم عن الصلوة فى الاوقات المكروهة باخراج الفرائض و قوله و من اصوافها و اوبارها الاية خص عموم قوله صلى الله عليه و سلم ما ابين من حى فهو ميت و قوله و العاملين

المخصوص فامثلته فى القرآن كثيرة جدا و هي اكثر من المنسوخ اذما من عام فيه الاوقد خص ثم المخصص له اما متصل و اما منفصل فالمتصل خمسة وقعت فى القرآن احدها الاستثناء نحو و الذين يرمون المحصنات ثم لم يأتوا باربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة و لا تقبلوا لهم شهادة ابدا و اولئك هم الفاسقون الا الذين تابوا والشعراء يتبعهم الغاوون الى قوله الا الذين آمنوا و عملوا الصالحات الآية ومن يفعل ذلك يلق اثاما الى قوله الا من تاب و المحصنات من النساء الا ما ملكت ايمانكم كل شيء هالك الا وجهه الثاني الوصف نحو وربايبكم اللاتي في حجوركم من نسائكم اللاتي دخلتم بهن الثالث الشرط نحو و الذين يبتغون الكتاب مما ملكت ايمانكم فكاتبوهم ان علمتم فيهم خيرا كتب عليكم اذا حضر احدكم الموت ان ترك خيرا الوصية الرابع الغاية نحو قاتلوا الذين لا يومنون بالله و لا باليوم الآخر الى قوله حتى يعطوا الجزية ولا تقربوهن حتى يطهرن و لا تحلقوا رؤسكم حتى يبلغ الهدى محله و كلوا و اشربوا حتى يتبين الآية الخامس بدل البعض من الكل نحو و لله على الناس حج البيت من استطاع اليه سبيلا و المنفصل آية اخرى في محل آخر او حديث او اجماع او قياس فمن امثلة ما خص بالقرآن قوله تعالى و المطلقات يتربصن بانفسهن ثلاثة قروء خص بقوله اذا نكحتم المومنات ثم طلقتموهن من قبل ان تمسوهن فما لكم عليهن من عدة تعتدونها و بقوله و اولات الاحمال اجلهن ان يضعن حملهن وقوله حرمت عليكم الميتة و الدم خص من الميتة السمك بقوله احل لكم صيد البحر و طعامه متاعا لكم و للسيارة و من الدم الجامد بقوله او دما مسفوحا و قوله

الاصلي بخلاف الثاني فان فيه مذاهب اصحها انه حقيقة و عليه اكثر الشافعية و كثير من الحنفية و جميع الحنابلة ونقله امام الحرمين عن جميع الفقهاء و قال الشيخ ابو حامد انه مذهب الشافعي و اصحابه وصححه السبكى لان تناول اللفظ للبعض الباقي بعدالتخصيص كتناوله له بلا تخصيص و ذلك التناول حقيقي اتفاقا فليكن هذا التناول حقيقيا ايضا و منها ان قرينة الاول عقلية و الثاني لفظية و منها ان قرينة الاول لا تنفك عنه و قرينة الثاني قد تنفك عنه و منها ان الاول يصح ان يراد به واحد اتفاقا و فى الثاني خلاف و من امثلته المراد به الخصوص قوله تعالى الذين قال لهم الناس ان الناس قد جمعوا لكم فاخشوهم و القائل واحد نعيم بن مسعود الاشجعي او اعرابي من خزاعة كما اخرجه ابن مردوية من حديث ابي رافع لقيامه مقام كثير في تثبيطه المومنين عن ملاقاة ابى سفيان قال الفارسي و مما يقوي ان المراد به واحد قوله انما ذلكم الشيطان فوقعت الاشارة بقوله ذلكم الى واحد بعينه و لو كان المعنى به جمعا لقال انما اوليائكم الشياطين فهذه دلالة ظاهرة فى اللفظ و منها قوله تعالى ام يحسدون الناس اي رسول الله صلى الله عليه و سلم لجمعه ما فى الناس من الخصال الحميدة و منها قوله ثم افيضوا من حيث افاض الناس اخرج ابن جرير من طريق الضحاك عن ابن عباس في قوله من حيث افاض الناس قال ابراهيم و من الغريب قرأة سعيد بن جبير من حيث افاض الناس قال فى المحتسب يعني آدم بقوله فنسى ولم نجد له عزما و منها قوله تعالى فنادته الملائكة وهو قايم يصلى فى المحراب اي جبريل كما في قرأة ابن مسعود و اما

الذين يخالفون عن امره اى كل امرالله والمعرف بال نحو واحل الله البيع اى كل بيع ان الانسان لفي خسر اى كل انسان بدليل الاالذين آمنوا والنكرة في سياق النفي والنهي نحو فلا تقل لهما اف وان من شيء الا عندنا خزائنه ذلك الكتاب لاريب فيه فلارفث ولا فسوق ولا جدال فى الحج وفي سياق الشرط نحو وان احد من المشركين استجارك فاجره حتى يسمع كلام الله وفي سياق الامتنان نحو وانزلنا من السماء ماء طهورا فصل العام على ثلاثة اقسام الاول الباقي على عمومه قال القاضي جلال الدين البلقيني ومثاله عزيز اذ ما من عام الا ويتخيل فيه التخصيص فقوله يا ايها الناس اتقوا ربكم قد يخص منه غير المكلف وحرمت عليكم الميتة خص منه حالة الاضطرار وميتة السمك والجراد وحرم الربا خص منه العرايا وذكر الزركشي فى البرهان انه كثير فى القرآن واورد منه والله بكل شيء عليم ان الله لايظلم الناس شيئا ولا يظلم ربك احدا الله الذي خلقكم ثم رزقكم ثم يميتكم ثم يحييكم الله الذي خلقكم من تراب ثم من نطفة الله الذي جعل لكم الارض قرارا قلت هذه الآيات كلها في غير الاحكام الفرعية فالظاهر ان مراد البلقيني انه عزيز فى الاحكام الفرعية وقد استخرجت من القران بعد تفكر آية فيها وهي قوله حرمت عليكم امهاتكم الآية فانه لا خصوص فيها الثاني العام المراد به الخصوص والثالث العام المخصوص وللناس بينهما فروق منها ان الاول لم يرد شموله لجميع الافراد لا من جهة تناول اللفظ ولا من جهة الحكم بل هو ذو افراد استعمل في فرد منها والثاني اريد عمومه وشموله بجميع الافراد من جهة تناول اللفظ لها لا من جهة الحكم ومنها ان الاول مجاز قطعا لنقل اللفظ عن موضوعه

على الطير لان تسخير هاله و تسبيحها اعجب وادل على القدرة و ادخل فى الاعجاز لانها جماد والطير حيوان ناطق ومنها رعاية الفواصل وسياتي لذلك امثلة كثيرة و منها افادة الحصر والاختصاص وسياتي فى النوع الخامس والخمسين تنبيه قد يقدم لفظ في موضع و يوخر في اخر و نكتة ذلك اما لكون السياق في كل موضع يقتضى ما وقع فيه كما تقدمت الاشارة اليه و اما لقصد البدأة والختم به للاعتناء بشانه كما في قوله يوم تبيض وجوه الآيات واما لقصد التفنن فى الفصاحة واخراج الكلام على عدة اساليب كما في قوله وادخلوا الباب سجدا و قولوا حطة و قوله انا انزلنا التوراة فيها هدي و نور و قال فى الانعام قل من انزل الكتاب الذي جاء به موسى نورا و هدى للناس النوع الخامس والاربعون في عامه و خاصه العام لفظ يستغرق الصالح له من غير حصر وصيغة كل مبتداءة نحو كل من عليها فان اوتابعة نحو فسجد الملائكة كلهم اجمعون والذي والتي وتثنيتهما وجمعهما نحو والذي قال لوالديه اف فان المراد به كل من صدر منه هذا القول بدليل قوله بعد اوليك الذين حق عليهم القول والذين امنوا وعملوا الصالحات اوليك اصحاب الجنة للذين احسنوا الحسنى وزيادة للذين اتقوا عند ربهم جنات واللاي يئسن من المحيض الاية واللاتي ياتين الفاحشة من نسائكم فاستشهدوا الآية واللذان ياتيانها منكم فاذوهما واى وما ومن شرطا واستفها ما وموصولا نحو اياما تدعوا فله الاسماء الحسنى انكم وما تعبدون من دون الله حصب جهنم ومن يعمل سوء يجز به والجمع المضاف نحو يوصيكم الله في اولادكم والمعرف بال نحو قد افلح المومنون فاقتلوا المشركين واسم الجنس المضاف نحو فليحذر

من ابصارهم و يحفظوا فروجهم لان البصر داعية الى الفرج الثامن الكثرة كقوله فمنكم كافر و منكم مؤمن لان الكفار اكثر فمنهم ظالم لنفسه الآية قدم الظالم لكثرته ثم المقتصد ثم السابق قيل و لهذا قدم السارق على السارقة لان السرقة فى الذكور اكثر و الزانية على الزاني لان الزنا فيهن اكثر و منه تقديم الرحمة على العذاب حيث وقع في القرآن غالبا و لهذا ورد ان رحمتي غلبت غضبي و قوله ان من ازواجكم و اولادكم عدوا لكم قال ابن الحاجب في اماليه انما قدم الازواج لان المقصود الاخبار ان فيهم اعداء و وقوع ذلك فى الازواج اكثر منه فى الاولاد و كان اقعد فى المعنى المراد فقدم و لذلك قدمت الاموال في قوله انما اموالكم و اولادكم فتنة لان اموال لا تكاد تفارقها الفتنة ان الانسان ليطغى ان راه استغنى و ليست الاولاد في استلزام الفتنة مثلها فكان تقديمها اولى التاسع الترقي من الادنى الى الاعلى كقوله الهم ارجل يمشون بها ام لهم ايد يبطشون بها الآية بدأ بالادنى لغرض الترقي لان اليد اشرف من الرجل و العين اشرف من اليد و السمع اشرف من البصر و من هذا النوع تاخير الا بلغ وقد خرج عنه تقديم الرحمن على الرحيم والرؤف على الرحيم والرسول على النبي في قوله و كان رسولا نبيا و ذكر لذلك نكت اشهرها مراعاة الفاصله العاشر التدلى من الاعلى الى الا دني و خرج عليه لاتأخذه سنة ولا نوم لا يغادر صغيرة ولا كبيرة لن يستنكف المسيح ان يكون عبد الله ولا الملائكة المقربون هذا ما ذكره ابن الصايغ وزاد غيره اسبابا اخر منها كونه ادل على القدرة و اعجب كقوله فمنهم من يمشى على بطنه الآية وقوله و سخرنا مع داؤد الجبال يسبحن والطير قال الزمخشري قدم الجبال

و الاولى فلمراعاة الفاصلة و كذا قوله جمعناكم و الاولين الخامس الحث عليه و الحض على القيام به حذرا من التهاون به كتقديم الوصية على الدين في قوله من بعد وصية يوصى بها او دين مع ان الدين مقدم عليها شرعا السادس السبق و هو اما فى الزمان باعتبار الايجاد كتقديم الليل على النهار و الظلمات على النور و آدم على نوح و نوح على ابراهيم و ابراهيم على موسى و هو على عيسى و داؤد على سليمان و الملائكة على البشر في قوله الله يصطفى من الملائكة رسلا و من الناس و عاد على ثمود و الازواج على الذرية في قوله قل لازواجك و بناتك والسنة على النوم في قوله لا تأخذه سنة و لا نوم او باعتبار الانزال كقوله صحف ابراهيم و موسى و انزل التوراة و الانجيل من قبل هدى للناس و انزل الفرقان او باعتبار الوجوب و التكليف نحو اركعوا و اسجدوا فاغسلوا وجوهكم و ايديكم الآية ان الصفا و المروة من شعاير الله و لهذا قال النبي صلى الله عليه و سلم نبدأ بما بدأ الله به او بالذات نحو مثنى و ثلاث و رباع ما يكون من نجوي ثلاثة الا هو رابعهم و لا خمسة الا هو سادسهم و كذا جميع الاعداد كل مرتبة هي متقدمة على ما فوقها بالذات و اما قوله ان تقوموا لله مثنى و فرادى فللحث على الجماعة و الاجتماع على الخير السابع السببية كتقديم العزيز على الحكيم لانه عز فحكم و العليم عليه لان الاحكام و الاتقان ناشئ عن العلم و اما تقديم الحكيم عليه في سورة الانعام فلانه مقام تشريع الاحكام و منه تقديم العبادة على الاستعانة في سورة الفاتحة لانها سبب حصول الاعانة و كذا قوله يحب التوابين و يحب المتطهرين لان التوبة سبب الطهارة لكل افاك اثيم لان الافك سبب الاثم يغضوا

الفاصلة و قيل لان انتفاع اهل السموات العايد عليهن الضمير به اكثر
قال ابن الانباري يقال ان القمر وجهه يضيء لاهل السموات و ظهره
لاهل الارض و لهذا قال الله تعالى فيهن لما كان انثر نوره يضيء الى
اهل السماء و منه تقديم الغيب على الشهادة في قوله عالم الغيب
و الشهادة لان علمه اشرف و اما يعلم السر و اخفى فاخر فيه رعاية
للفاصلة الرابع المناسبة و هي اما مناسبة المتقدم لسياق الكلام كقوله
و لكم فيها جمال حين تريحون و حين تسرحون فان الجمال بالجمال
وان كان ثابتا حالتى السراح والا راحة الا انها حالة اراحتها و هو مجيئها
من المرعي اخر النهار يكون الجمال بها افخر اذهي فيه بطان وحالة
سراحتها للمرعي اول النهار يكون الجمال بها دون الاول اذهي فيه
خماص و نظيره قوله و الذين اذا انفقوا لم يسرفوا ولم يقتروا قدم نفي
الاسراف لان السرف فى الانفاق و قوله يريكم البرق خوفا و طمعا لان
الصواعق تقع مع اول برقه ولا يحصل المطر الا بعد توالى البرقات
و قوله وجعلنا ها و ابنها اية للعالمين قدمها على الابن لما كان السياق
في ذكرها في قوله و التي احصنت فرجها و لذلك قدم الابن في
قوله و جعلنا ابن مريم و امه آية و حسنة تقديم موسى فى الآية قبله
و منه قوله و لا اتينا حكما و علما قدم الحكم و ان كان العلم سابقا عليه
لان السياق فيه لقوله في اول الآية اذ يحكمان فى الحرث و اما مناسبة
لفظ هو من التقدم او التاخر كقوله الاول و الآخر و لقد علمنا المستقدمين
منكم و لقد علمنا المستاخرين امن نشاء منكم ان يتقدم او يتاخر بما
قدم و آخر ثلة من الاولين و ثلة من الآخرين لله الامر من قبل
و من بعد و له الحمد فى الاولى و الآخرة و اما قوله فلله الآخرة

و الانثى بالانثى و الحى في قوله يخرج الحى من الميت الآية
و ما يستوى الاحياء ولا الاموات و الخيل في قوله و الخيل و البغال
و الحمير لتركبوها و السمع في قوله و على سمعهم و على ابصارهم
وقوله ان السمع والبصر و الفواد و قوله ان اخذ الله سمعكم و ابصاركم
حكى ابن عطيه عن النقاش انه استدل بها على تفضيل السمع على
البصر و كذا وقع في وصفه تعالى سميع بصير بتقديم السمع ومن ذلك
تقديمه صلى الله عله و سلم على نوح و من معه في قوله و اذ اخذنا
من النبيين ميثاقهم و منك و من نوح الآية و تقديم الرسول في قوله
من رسول ولا نبي و تقديم المهاجرين في قوله والسابقون الاولون من
المهاجرين و الانصار و تقديم الانس على الجن حيث ذكر في القرآن
و تقديم النبيين ثم الصديقين ثم الشهداء ثم الصالحين في آية النساء
و تقديم اسمعيل على اسحق لانه اشرف لكون النبي صلى الله عليه
و سلم من ولده و اسن وتقديم موسى على هارون لاصطفائه بالكلام وتقديم
هارون عليه في سورة طه رعاية للفاصلة و تقديم جبريل على ميكائيل
في آية البقرة لانه افضل و تقديم العاقل على غيره في قوله متاعا
لكم ولانعامكم يسبح له من في السموات و الارض و الطير صافات واما
تقديم الانعام في قوله تاكل منه انعامهم و انفسهم فلانه تقدم ذكر الزرع
فناسب تقديم الانعام بخلاف آية عبس فانه تقدم فيها فلينظر الانسان
الى طعامه فناسب تقديم لكم و تقديم المومنين على الكفار في كل
موضع و اصحاب اليمين على اصحاب الشمال و السماء على الارض
والشمس على القمر حيث وقع الا في قوله خلق الله سبع سموات
طباقا و جعل القمر فيهن نورا و جعل الشمس سراجا فقيل لمراعاة

تعالى لما قال ان الله يأمركم الآية علم المخاطبون ان البقرة لا تذبح الا للدلالة على قاتل خفيت عينه عليهم فلما استقر علم هذا في نفوسهم اتبع بقوله و اذ قتلتم نفسا فادارأتم فيها فسألتم موسى فقال ان الله يأمركم ان تذبحوا بقرة و منه افرأيت من اتخذ الهه هواه و الاصل هواه الهه لان من اتخذ الهه هواه غير مذموم فقدم المفعول الثاني للعناية به و قوله اخرج المرعى فجعله غثاء احوى على تفسير احوى بالاخضر و جعله نعتا للمرعى اي اخرجه احوى فجعله غثاء و آخر رعاية للفاصلة و قوله غرابيب سود و الاصل سود غرابيب لان الغرابيب الشديد السواد و قوله فضحكت فبشرناها اي فبشرناها فضحكت و قوله ولقد همت به و هم بها لولا ان راى برهان ربه قيل المعنى على التقديم و التاخيراي لولا ان راى برهان به لهم بها و على هذا قالهم منفي عنه الثاني ما ليس كذلك و قد الف فيه العلامة شمس الدين بن الصايغ كتابه المقدمة في سرالالفاظ المقدمة قال فيه الحكمة الشائعة الذائعة في ذلك الاهتمام كما قال سيبويه في كتابه كانهم يقدمون الذي بيانه اهم وهم ببيانه اعنى قال هذه الحكمة اجمالية و اما تفاصيل اسباب التقديم و اسراره فقد ظهر لي منها في الكتاب العزيز عشرة انواع الاول التبرك كتقديم اسم الله في الامور و ذوات الشان و منه قوله شهد الله انه لا اله الا هو و الملائكة و اولوا العلم و قوله و اعلموا انما غنمتم من شيء فان لله خمسه و للرسول الآية الثاني التعظيم كقوله و من يطع الله و الرسول ان الله و ملائكته يصلون و الله و رسوله احق ان يرضوه الثالث التشريف كتقديم الذكر على الانثى في نحو ان المسلمين و المسلمات الآية و الحر في قوله الحر بالحر و العبد بالعبد

باب التقديم و التاخير اتضح و هو جدير ان ينفرد بالتصنيف و قد تعرض السلف لذلك في آيات فاخرج ابن ابي حاتم عن قتادة في قوله فلا تعجبك اموالهم و لا اولادهم انما يريد الله ليعذبهم بها في الحياة الدنيا قال هذا من تقاديم الكلام تقول لا تعجبك اموالهم و لا اولادهم في الحياة الدنيا انما يريد الله ان يعذبهم بها في الاخرة و اخرج عنه ايضا في قوله و لولا كلمة سبقت من ربك لكان لزاما و اجل مسمى قال هذا من تقاديم الكلام تقول لو لا كلمة و اجل مسمى لكان لزاما و اخرج عن مجاهد في قوله انزل على عبده الكتاب و لم يجعل له عوجا قيما قال هذا من التقديم و التاخير انزل على عبده الكتاب قيما و لم يجعل له عوجا و اخرج عن قتادة في قوله اني متوفيك و رافعك الىّ قال هذا من المقدم والموخر اني رافعك الىّ و متوفيك و اخرج عن عكرمة في قوله لهم عذاب شديد بما نسوا يوم الحساب قال هذا من التقديم و التاخير يقول لهم يوم الحساب عذاب شديد بما نسوا و اخرج ابن جرير عن ابن زيد في قوله و لولا فضل الله عليكم و رحمته لا تبعتم الشيطان الا قليلا قال هذه الآية مقدمة و موخرة انما هي اذا عوايه الا قليلا منهم و لولا فضل الله عليكم و رحمته لم يبح قليل و لا كثير و اخرج عن ابن عباس في قوله فقالوا ارنا الله جهرة فقال انهم اذا راوا الله فقد رأوه انما قالوا جهرة ارنا الله قال هو مقدم و موخر قال ابن جرير يعنى ان سوالهم كان جهرة و من ذلك قوله و اذ قتلتم نفسا فادارا تم فيها قال البغوي هذا اول القصة و ان كان موخرا فى التلاوة و قال الواحدي كان الاختلاف فى القاتل قبل ذبح البقرة و انما آخر فى الكلام لانه

الى المراد منه و زيادة المشقة توجب مزيد الثواب و منها انه لو كان القرآن كله محكما لما كان مطابقا الا لمذهب واحد و كان بصريحه مبطلا لكل ما سوى ذلك المذهب و ذلك مما ينفر ارباب سائر المذاهب عن قبوله و عن النظر فيه و الانتفاع به فاذا كان مشتملا على المحكم و المتشابه طمع صاحب كل مذهب ان يجد فيه ما يؤيد مذهبه و ينصر مقالته فينظر فيه جميع ارباب المذاهب و يجتهد فى التامل فيه صاحب كل مذهب و اذا بالغوا في ذلك صارت المحكمات مفسرة للمتشابهات وبهذا الطريق يتخلص المبطل من باطله و يتصل الى الحق و منها ان القرآن اذا كان مشتملا على المتشابه افتقر الى العلم بطريق التاويلات و ترجيح بعضها على بعض و افتقر في تعلم ذلك الى تحصيل علوم كثيرة من علم اللغة و النحو و المعاني و البيان و اصول الفقه و لو لم يكن الامر كذلك لم يحتج الى تحصيل هذه العلوم الكثيرة فكان في ايراد المتشابه هذه الفوائد الكثيرة و منها ان القرآن مشتمل على دعوة الخواص و العوام و طبائع العوام تنفر في اكثر الامر عن درك الحقائق فمن سمع من العوام في اول الامر اثبات موجود ليس بجسم و لا متحيز و لا مشار اليه ظن ان هذا عدم و نفي فوقع فى التعطيل فكان الاصلح ان يخاطبوا بالفاظ دالة على بعض ما يناسب ما توهموه و تخيلوه و ذلك مخلوطا بما يدل على الحق الصريح فالقسم الاول و هو الذي يخاطبون به في اول الامر يكون من المتشابهات و القسم الثاني و هو الذي يكشف لهم في آخر الامر هو من المحكمات النوع الرابع و الاربعون في مقدمة و موخرة و هو قسمان الاول ما اشكل معناه بحسب الظاهر فلما عرف انه من

كله محكما لا يحتاج الى تاويل و نظرا ستوت منازل الخلق و لم يظهر فضل العالم على غيره و ان كان مما لا يمكن علمه فله فوائد منها ابتلاء العباد بالوقف عنده و التوقف فيه و التفويض و التسليم و التعبد بالاشتغال به من جهة التلاوة كالمنسوخ و ان لم يجز العمل بما فيه و اقامة الحجة عليهم لانه لما نزل بلسانهم و لغتهم و عجزوا عن الوقوف على معناه مع بلاغتهم و افهامهم دل على انه نزل من عند الله وانه الذي اعجزهم عن الوقوف قال الامام فخرالدين من الملحدة من طعن فى القرآن لاجل اشتماله على المتشابهات و قال انكم تقولون ان تكاليف الخلق مرتبطة بهذا القرآن الى قيام الساعة ثم ان انا نراه بحيث يتمسك به صاحب كل مذهب على مذهبه فالجبري يتمسك بآيات الجبر كقوله و جعلنا على قلوبهم اكنة ان يفقهوه و في اذانهم و قرا و القدري يقول هذا مذهب الكفار بدليل انه تعالى حكى ذلك عنهم في معرض الذم لهم في قوله و قالوا قلوبنا في اكنة مما تدعونا اليه و في آذاننا وقر و في موضع آخر و قالوا قلوبنا غلف و منكر الروية يتمسك بقوله لا تدركه الابصار و ثبت الجهة متمسك بقوله يخافون ربهم من فوقهم الرحمن على العرش و استوى و النافي يتمسك بقوله ليس كمثله شيء ثم يسمى كلواحد الآيات الموافقة لمذهبه محكمة و الآيات المخالفة له متشابهة و انما آل في ترجيح بعضها على البعض الى ترجيحات خفية و وجوه ضعيفة فكيف يليق بالحكيم ان يجعل الكتاب الذي هو المرجوع اليه في كل الدين الى يوم القيمة هكذا قال و الجواب ان العلماء ذكروا لوقوع المتشابه فيه فوائد منها انه يوجب مزيد المشقة فى الوصول

الحسن وقتادة وقيل هو المداد حكاه ابن قرصه في غريبه وقيل هو القلم حكاه الكرماني عن الجاحظ وقيل هو من اسماء النبي صلى الله عليه وسلم حكاه ابن عسكر في مبهماته وفي المحتسب لابن جني ان ابن عباس قرأ حم سق بلاعين ويقول السين كل فرقة تكون والقاف كل جماعة تكون قال ابن جني وفي هذه القرأة دليل على ان الفواتح فواصل بين السور ولوكانت اسماء لله لم يجز تحريف شئ منها لانها تكون حينئذ اعلاما والاعلام تودي باعيانها ولا يحرف شئ منها وقال الكرماني في غرايبه في قوله الم أحسب الناس الاستفهام هنا يدل على انقطاع الحروف عما بعدها في هذه السورة وغيرها خاتمة اورد بعضهم سوالا وهو انه هل للمحكم مزية على المتشابه اولا فان قلتم بالثاني فهو خلاف الاجماع او بالاول فقد نقضتم اصلكم في ان جميع كلامه سبحانه سواء انه منزل بالحكمة واجاب ابو عبد الله البكر ابادي بان المحكم كالمتشابه من وجه ويخالفه من وجه فيتفقان في ان الاستدلال بهما لايمكن الا بعد معرفة حكمة الواضع فانه لا يحتاج القبيح ويختلفان في ان المحكم بوضع اللغة لا يحتمل الا الوجه الواحد فمن سمعه امكنه ان يستدل به في الحال والمتشابه يحتاج الى فكر ونظر ليحمله على الوجه المطابق ولان المحكم اصل والعلم بالاصل اسبق ولان المحكم يعلم مفصلا والمتشابه لا يعلم الا مجملا وقال بعضهم ان قيل ما الحكمة في انزال المتشابه ممن اراد لعباده البيان والهدي قلنا ان كان مما يمكن علمه فله فوائد منها الحث للعلماء على النظر الموجب للعلم بغوامضه والبحث عن دقائقه فان استدعاء الهمم لمعرفة ذلك من اعظم القرب ومنها ظهور التفاضل وتفاوت الدرجات اذلو كان القرآن

ابي حاتم من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله طه
قال هو كقولك افعل و قيل طه اي يا بدر لان الطاء بتسعة و الهاء
بخمسة فذلك اربع عشر اشارة الى البدر لانه فيها ذكره الكرماني في
غرائبه و قال في قوله يس اي يا سيد المرسلين و في قوله صاد
معناه قيل صدق الله و قيل اقسم بالصمد الصانع الصادق و قيل معناه
صاد يا محمد عملك بالقرآن اي عارضه به فهو امر من المصاداة اخرج
ابن ابي حاتم عن سفيان في قوله صاد قال اتباع القرآن صاده
بعلمك و اتبعه عملك و اخرج عن الحسن قال صاد حادث القرآن
يعني انظر فيه و اخرج عن سفيان ابن حسين قال كان الحسن
يقرأها صاد و القرآن يقول عارض القرآن و قيل صاد اسم بحر عليه عرش
الرحمن و قيل اسم بحر يحيى به الموتى و قيل معناه صاد محمد
قلوب العباد حكاها الكرماني كلها و حكى في قوله المص ان معناه
الم نشرح لك صدرك و في حم انه محمد صلى الله عليه و سلم
و قيل معناه حم ما هو كاين و في حمعسق انه جبل قاف و قيل
ق جبل محيط بالارض اخرجه عبد الرزاق عن مجاهد و قيل اقسم
بقوة قلب محمد صلى الله عليه و سلم و قيل هي القاف من قوله
قضى الامر دلت عليه بقية الكلمة و قيل معناه قف يا محمد على
اداء الرسالة و العمل بما امرت حكاهما الكرماني و قيل نون هو الحوت
و اخرج الطبراني عن ابن عباس مرفوعا اول ما خلق الله القلم
و الحوت قال اكتب قال ما اكتب قال كل شيء كاين الى يوم القيمة
ثم قرأ ن و القلم فالنون الحوت و القلم القلم و قيل هو اللوح المحفوظ
اخرجه ابن جرير من مرسل قرة مرفوعا و قيل هو الدواة اخرجه عن

مقطعا و جاء تمامها مولفا ليدل القوم الذي نزل القرآن بلغتهم انه بالحروف التي يعرفونها فيكون ذلك تعريفا لهم و دلالة على عجزهم ان ياتوا بمثله بعد ان علموا انه منزل بالحروف التي يعرفونها و يبنون كلامهم منها و قيل المقصود بها الاعلام بالحروف التي يتركب منها الكلام فذكر منها اربعة عشر حرفا و هي نصف جميع الحروف و ذكر من كل جنس نصفه فمن حروف الحلق الحا و العين و الهاء و من التي فوقها القاف و الكاف و من الحرفين الشفهيين الميم و من المهموسة السين و الحاء و الكاف و الصاد و الهاء و من الشديدة الهمزة و الطاء و القاف و الكاف و من المطبقة الطا و الصاد و من المجهورة الهمزة و اللام و الميم و العين و الراء و الظاء و القاف و الياء و النون و من المستعلية القاف و الصاد و الطاء و من المنخفضة الهمزة و اللام و الميم و الراء و الكاف و الهاء و الياء و العين و السين و الحاء و النون و من القلقلة القاف و الطاء ثم انه تعالى و ذكر حروفا مفردة و حرفين حرفين و ثلاثة ثلاثة و اربعة و خمسة لان تراكيب الكلام على هذا النمط و لا زيادة على الخمسة و قيل هي امارة جعلها الله لاهل الكتاب انه سينزل على محمد كتابا في اول سور منه حروف مقطعة هذا ما وقفت عليه من الاقوال في اوايل السور من حيث الجملة و في بعضها اقوال آخر فقيل ان طه و يس بمعنى يا رجل او يا محمد او يا انسان و قد تقدم في المعرب وقيل هما اسمان من اسماء النبي صلى الله عليه وسلم قال الكرماني في غرائبه و يقويه في يس قرأة يس بفتح النون و قوله ال يا سين و قيل طه اي طا الارض او اطمئن فيكون فعل امر والها مفعول او للسكت او مبدلة من الهمزة اخرج ابن

و قد تحصل لي فيها عشرون قولا و ازيد و لا اعرف احد يحكم عليها بعلم و لا يصل منها الى فهم و الذي اقوله انه لو لا ان العرب كانوا يعرفون ان لها مدلولا متداولا عنهم لكانوا اول من انكر ذلك على النبي صلى الله عليه و سلم بل تلى عليهم حم فصلت و ص و غيرها فلم ينكروا ذلك بل صرحوا بالتسليم له فى البلاغة و الفصاحة مع تشوقهم الى عثرة و حرصهم على زلة فدل على انه كان امرا معروفا بينهم لا انكار فيه انتهى و قيل هي تنبيهات كما فى النداء عده ابن عطية مغايرا للقول بانها فواتح و الظاهر انه بمعناها قال ابو عبيدة الم افتتاح كلام و قال الجويني القول بانها تنبيهات جيد لان القرآن كلام عزيز و فوائد عزيزة فينبغي ان يرد على سمع منتبه فكان من الجايز ان يكون الله قد علم في بعض الاوقات كون النبي صلى الله عليه و سلم في عالم البشر مشغولا فامر جبرئيل ان يقول عند نزوله الم و المر و حم ليسمع النبي صوت جبرئيل فيقبل عليه يصغي اليه قال و انما لم تستعمل الكلمات المشهورة فى التنبيه كالاواما لانها من الالفاظ التي يتعارفها الناس في كلامهم و القرآن كلام لا يشبه الكلام فناسب ان نوتي فيه بالفاظ تنبيه لم تعهد ليكون ابلغ في قرع سمعه انتهى و قيل ان العرب كانوا اذا سمعوا القرآن لغوا فيه فانزل الله هذا النظم البديع ليعجبوا منه و يكون تعجبهم منه سببا لاستماعهم و اسماعهم له سبب لاستماع ما بعده فترق القلوب و تلين الافيدة عد هذا جماعة قولا مستقلا و الظاهر خلافه و انما يصلح هذا مناسبة لبعض الاقوال لا قولا في معناها اذ ليس فيه بيان معنى و قيل ان هذه الحروف ذكرت لتدل على ان القرآن مولف من الحروف التي هي ا ب ت ث فجاء بعضها

حتى ما ندري قليلا اعطيت ام كثيرا ثم قال قوموا عنه ثم قال ابو ياسر لاخيه و من معه ما يدريكم لعله قد جمع هذا كله لمحمد احدى و سبعون و احدى و ثلاثون و مائة و احدى و ثلاثون و مائتان و احدى و سبعون و مائتان فذلك سبعمائة و اربع سنين فقالوا لقد تشابه علينا امره فيزعمون ان هولاء الآيات نزلت فيهم هو الذي انزل عليك الكتاب منه آيات محكمات هن ام الكتاب و آخر متشابهات اخرجه ابن جرير من هذا الطريق و ابن المنذر من وجه آخر عن ابن جريج مفصلا و اخرج ابن جرير و ابن ابي حاتم عن ابى العالية في قوله الم قال هذه الاحرف الثلاثة من الاحرف التسعة و عشرين دارت بها الالسن ليس منها حرف الا و هو مفتاح اسم من اسمايه و ليس منها حرف الا و هو من الآية و ثلاثة و ليس منها حرف الا و هو في مدة اقوام و اجالهم فالالف مفتاح اسمه الله و اللام مفتاح اسمه لطيف و الميم مفتاح اسمه مجيد فالالف الا الله و اللام لطف الله و الميم مجد الله فالالف سنة و اللام ثلاثون و الميم اربعون قال الجويني و قد استخرج بعض الائمة من قوله تعالى الم غلبت الروم ان البيت المقدس تفتحه المسلمون في سنة ثلاث و ثمانين وخمسماية و وقع كما قال و قال السهيلي لعل عدد الحروف التي في اوايل السور مع حذف المكرر للاشارة الى مدة بقاء هذه المدة قال ابن حجر و هذا باطل لا يعتمد عليه فقد ثبت ابن عباس الزجر عن عداى جاء ذو الاشارة الى ان ذلك من جملة السحر و ليس ذلك ببعيد فانه لا اصل له فى الشريعة و قد قال القاضي ابوبكربن العربي في فوائد رحلته و من الباطل علم الحروف المقطعة في اوايل السور

من طريق الثوري عن ابن ابي نجيح عن مجاهد قال الم و حم و المص و ص و نحوها فواتح افتتح الله بها القرآن و اخرج ابو الشيخ من طريق ابن جريج قال قال مجاهد الم الر المر فواتح يفتح الله بها القرآن قلت الم يكن يقول هي اسماء قال لا و قيل هي حساب ابي جاد لتدل على مدة هذه الامة و اخرج ابن ابي اسحٰق عن الكلبي عن ابن صالح عن ابن عباس عن جابر بن عبدالله بن رياب قال مر ابو ياسر بن اخطب في رجال من يهود برسول الله صلى الله عليه و سلم و هو يتلو فاتحة سورة البقرة الم ذلك الكتاب لا ريب فيه فاتى اخاه حي بن اخطب في رجال من اليهود فقال تعلمون و الله لقد سمعت محمدا يتلوا فيما انزل عليه الم ذلك الكتاب فقال انت سمعته فقال نعم فمشى حي في اوليك النفر الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا الم تذكر انك تتلوا فيما انزلت عليك الم ذلك الكتاب فقال بلى فقالوا لقد بعث الله قبلك انبياء ما نعلمه بين لنبي منهم ما مدة ملكه و ما اجل امته غيرك الالف واحدة و اللام ثلثون و الميم اربعون فهذه احدى و سبعون سنة ا فتدخل في دين نبي انما مدة ملكه و اجل امته احدى و سبعون سنة ثم قال يا محمد هل مع هذا غيره قال نعم المص قال هذه اثقل و اطول الالف واحدة و اللام ثلاثون والميم اربعون و الصاد تسعون فهذه احدى و ثلاثون و ماية سنة هل مع هذا غيره قال نعم الر قال هذه اثقل و اطول الالف واحدة و اللام ثلاثون والراء مائتان هذه احدى و ثلاثون و مائتا سنة هل مع هذا غيره قال نعم المر قال هذه اثقل و اطول هذه احدى و سبعون و مائتا سنة ثم قال لقد لبس علينا امرك

الا ان تأ اراد و ان شرا فشر و الا ان تشاء وقال ناداهم الا الجموا الاتا قالوا جميعا كلهم الا فا اراد الا تركبون الا فاركبوا و هذا القول اختاره الزجاج وقال العرب تنطق بالحرف الواحد تدل به على الكلمة التي هو منها وقيل انها الاسم الاعظم الا انا نعرف تاليفه منها كذا نقله ابن عطية واخرج ابن جرير بسند صحيح عن ابن مسعود قال هو اسم الله الاعظم واخرج ابن ابي حاتم من طريق السدي انه بلغه عن ابن عباس قال الم اسم من اسماء الله الاعظم واخرج ابن جرير وغيره من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس قال الم وطسم وص و اشباهها قسم اقسم الله به و هو من اسماء الله و هذا يصلح ان يكون قولا ثالثا اي انها برمتها اسماء الله و يصلح ان يكون من القول الاول و من الثاني وعلى الاول مشى ابن عطية وغيره و يؤيده ما اخرجه ابن ماجه في تفسيره من طريق نافع بن ابي نعيم القاري عن فاطمة بنت علي بن ابي طالب انها سمعت علي بن ابي طالب يقول يا كهيعص اغفرلي و ما اخرجه ابن ابي حاتم عن الربيع بن انس في قوله كهيعص قال يا من يجير لا يجار عليه واخرج عن اشهب قال سالت مالك بن انس ا ينبغي لاحد ان يتسمى بيس فقال ما اراه ينبغي لقول الله يس و القرآن الحكيم يقول هذا اسمي فسميت به وقيل هي اسماء للقرآن كالفرقان و الذكر اخرجه عبدالرزاق عن قتادة واخرجه ابن ابي حاتم بلفظ كل هجاء في القرآن فهو اسم من اسماء القرآن و قيل هي اسماء للسور نقله الماوردي وغيره عن زيد بن اسلم و نسبه صاحب الكشاف الى الاكثر وقيل هي فواتح للسور كما يقولون في اول القصايد بل و لا بل واخرج ابن جرير

مردويه عن وجه آخر عن سعيد عن ابن عباس في قوله كهيعص قال كبير هاد آمين عزيز صادق و اخرج ابن مردويه من طريق الكلبي عن ابي صالح عن ابن عباس في قوله كهيعص قال الكاف الكافي والهاء الهادي و العين العالم و الصاد الصادق و اخرج من طريق يوسف بن عطية قال سئل الكلبي عن كهيعص فحدث عن ابي صالح عن ام هاني عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال كاف هاد آمين عالم صادق و اخرج ابن ابي حاتم عن عكرمة في قوله كهيعص قال يقول انا الكبير الهادي علي امين صادق واخرج عن محمد بن كعب في قوله طه قال الطاء من ذي الطول و اخرج عنه ايضا في قوله طسم قال الطاء من ذي الطول و السين من القدوس و الميم من الرحمن و اخرج عن سعيد بن جبير في قوله حم قال حا اشتقت من الرحمن و ميم اشتقت من الرحيم و اخرج عن محمد بن كعب في قوله حمعسق قال الحاء و الميم من الرحمن و العين من العليم و السين من القدوس و القاف من القاهر و اخرج عن مجاهد قال فواتح السور كلها هجاء مقطوع و اخرج عن سالم بن عبد الله قال الم و حم و ن و نحوها اسم الله مقطعة و اخرج عن السدي قال فواتح السور اسما من اسماء الرب فرقت فى القرآن و حكى الكرماني في قوله ق انه حرف من اسمه قادر و قاهر و حكى غيره في قوله ن و انه مفتاح اسمه تعالى نور و ناصر و هذه الاقوال كلها راجعة الى قول واحد و هو انها حروف مقطعة كلها حرف منها ماخوذ من اسم من اسمائه تعالى والاكتفاء ببعض الكلمة معهود فى العربية قال الشاعر قلت لها قفي فقالت قاف اي وقفت و قال بالخير خيرات و ان شرا فا ولا اريد الشر

انها من الاسرار التي لا يعلمها الا الله اخرج ابن المنذر وغيره عن الشعبي انه سئل عن فواتح السور فقال ان لكل كتاب سرا و ان سر هذا القرآن فواتح السور و خاص في معناها آخرون فاخرج ابن ابي حاتم وغيره من طريق ابى الضحى عن ابن عباس في قوله الم قال انا الله اعلم و في قوله المص قال انا الله افضل و في قوله الر قال انا الله ارى و اخرج من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس في قوله الم و حم و ن قال اسم مقطع و اخرج من طريق عكرمة عن ابن عباس قال الر و حم و ن حروف الرحمن مفرقة و اخرج ابو الشيخ عن محمد ابن كعب القرظي قال الر من الرحمن و اخرج ايضا عنه قال المص الالف من الله و الميم من الرحمن و الصاد من الصمد و اخرج ايضا عن الضحاك في قوله المص قال انا الله الصادق و قيل المص معناه المصور و قيل المر معناه انا الله اعلم و ارفع حكاهما الكرماني في غرائبه و اخرج الحاكم وغيره من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس في كهيعص قال الكاف من كريم و الهاء من هاد و الياء من حكيم و العين من عليم و الصاد من صادق و اخرج الحاكم ايضا من وجه آخر عن سعيد عن ابن عباس في قوله كهيعص قال كاف هاد امين عزيز صادق و اخرج ابن ابي حاتم من طريق السدي عن ابي مالك و عن ابي صالح عن ابن عباس و عن مرة عن ابن مسعود وناس من الصحابة في قوله كهيعص قال هو هجاء مقطع الكاف من الملك و الهاء من الله و الياء و العين من العزيز و الصاد من المصور و اخرج عن محمد بن كعب مثله الا انه قال و الصاد من الصمد و اخرج سعيد بن منصور و ابن

آيات كثيرة وقد قال العلماء كل صفة يستحيل حقيقتها على الله تعالى تفسر بلازمها و قال الامام فخرالدين جميع الاعراض النفسانية اعنى الرحمة والفرج والسرور والغضب والحيا والمكر والاستهزاء لها اوايل ولها غايات مثاله الغضب فان اوله غليان دم القلب وغاية ارادة ايصال الضرر الى المغضوب عليه فلفظ الغضب في حق الله لايحمل على اوله الذي هو غليان دم القلب بل على عرفه الذي هو ارادة الاضرار وكك الحياء له اول و هو انكسار يحصل فى النفس و له غرض و هو ترك العقل فلفظ الحيا في حق الله يحمل على ترك الفعل لاعلى انكسار النفس انتهى وقال الحسين بن الفضل العجب من الله انكار الشئي و تعظيمه وسئل الجنيد عن قوله و ان تعجب فعجب قولهم فقال ان الله لا يعجب من شئي ولكن وافق رسوله فقال و ان تعجب فعجب قولهم اي هو كما تقول و من ذلك لفظة عند في قوله عند ربك و من عنده و معناها الاشارة الى التمكين و الزلفى و الرفعة و من ذلك قوله و هو معكم اينما كنتم اي بعلمه و قوله و هو الله فى السموات و فى الارض يعلم قال البيهقي الاصح ان معناه انه المعبود فى السموات و فى الارض مثل قوله و هوالذي فى السماء آله و فى الارض اله وقال الاشعري الظرف متعلق بيعلم اي عالم بما فى السموات و من ذلك قوله سنفرغ لكم ايها الثقلان اي سنقصد لجزايكم تنبيه قال ابن اللبان ليس من المتشابه قوله تعالى ان بطش ربك لشديد لانه فسره بعده بقوله انه هو يبدئ ويعيد وتنبيها على ان بطشه عبارة عن تصرفه في يديه و اعادته و جميع تصرفاته في مخلوقاته فصل و من المتشابه اوايل السور والمختار فيها ايضا

آدم و تكريمه بان جمع له في خلقه بين فضله و عدله قال وصاحبة الفضل هي اليمين التي ذكرها في قوله و السموات مطويات بيمينه سبحانه و من ذلك الساق في قوله يوم يكشف عن ساق و معناه عن شدة و امر عظيم كما يقال قامت الحرب على ساق اخرج الحاكم في المستدرك من طريق عكرمة عن ابن عباس انه سئل عن قوله يوم يكشف عن ساق قال اذا خفي عليكم شيء في القرآن فابتغوه في الشعر فانه ديوان العرب اما سمعتم قول الشاعر

اصبر عفان انه شر باق  قد سن لي قومك ضرب الاعناق

و قامت الحرب بنا على ساق قال ابن عباس هذا يوم كرب وشدة و من ذلك الجنب في قوله على ما فرطت في جنب الله اي في طاعته و حقه لان التفريط انما يقع ذلك و لا يقع في الجنب المعهود و من ذلك صفة القرب في قوله فاني قريب و نحن اقرب اليه من حبل الوريد اي بالعلم و من ذلك صفة الفوقية في قوله هو القاهر فوق عباده يخافون ربهم من فوقهم والمراد بها العلو من غير جهة وقد قال فرعون و انا فوقهم قاهرون ولا شك انه لم يرد العلو المكاني و من ذلك صفة المجئي في قوله و جاء ربك او ياتي ربك اى امره لان الملك انما يجئي بامره او بتسليطه كما قال تعالى وهم بامره يعملون فصار كما لو صرح به وكذا قوله اذهب انت و ربك فقاتلا اى اذهب بربك اى بتوفيقه و قوته ومن ذلك صفة الحب في قوله يحبهم و يحبونه فاتبعوني يحببكم الله وصفة الغضب في قوله غضب الله عليها وصفة الرضي في قوله رضي الله عنهم وصفة العجب بل عجبت بضم التاء و قوله و ان تعجب فعجب قولهم وصفة الرحمة في

علل بها البصر لحكم ربه صريحا في قوله انا نحن نزلنا عليك القرآن تنزيلا فاصبر لحكم ربك قال وقوله في سفينة نوح تجري باعيننا اي بآياتنا بدليل وقال اركبوا فيها بسم الله مجراها و مرساها وقال ولتصنع على عيني اي على حكم آيتي التي اوحيتها الى امك ان ارضعيه فاذا خفت عليه فالقيه فى اليم الاية انتهى وقال غيره المراد فى الآيات كلاءته تعالى وحفظه و من ذلك اليه في قوله لما خلقت بيدي يد الله فوق ايديهم مما عملت ايدينا ان الفضل بيد الله و هي مؤولة بالقدرة وقال السهيلي اليه فى الاصل كالمصدر عبارة عن صفة لموصوف ولذلك مدح سبحانه بالايدي مقرونة مع الابصار في قوله اولى الايدي و الابصار ولم يمدحهم بالجوارح لان المدح انما يتعلق بالصفات لا بالجواهر قال ولهذا قال الاشعري ان اليد صفة و رد بها الشرع و الذي يلوح من معنى هذه الصفة انها قريبة من معنى القدرة الا انها اخص و القدرة اعم كالمحبة مع الارادة و المشية فان فى اليد تشريفا لازما وقال البغوي في قوله بيدي في تحقيق الله الثنية فى اليد دليل على انها ليست بمعنى القدرة و القوة و النعمة و انهما صفتان من صفات ذاته وقال مجاهد اليد ههنا صلة و تاكيدا كقوله و يبقى وجه ربك قال البغوي و هذا تاويل غير قوي لانها لو كانت صلة لكان لابليس ان يقول ان كنت خلقته فقد خلقتني و كذلك فى القدرة و النعمة لا يكون لآدم فى الخلق مزية على ابليس وقال ابن اللبان فان قلت فما حقيقة اليدين في خلق آدم قلت الله اعلم بما اراد و لكن الذي استمرته من تدبر كتابه ان اليدين استعارة لنور قدرته القائم بصفة فضله و لنورها القائم بصفة عدله و نبه على تخصيص

و يرجع معناه الى انه اعطى بعزته كل شئى خلقه موزونا بحكمته البالغة و من ذلك النفس في قوله تعالى تعلم ما في نفسي ولا اعلم ما في نفسك و وجه بانه خرج على سبيل المشاكلة مرادا به الغيب لانه مستتر كالنفس و قوله و يحذركم الله اى عقوبته وقيل اياه و قال السهيلي النفس عبارة عن حقيقة الوجود دون معنى زايد و قد استعمل من لفظها النفاسة و الشئى النفيس فصلحت للتعبير عنه سبحانه و قال ابن اللبان اولها العلماء بتاويلات منها ان النفس عبر عنها عن الذات قال و هذا و ان كان شايعا فى اللغة و لكن تعدي الفعل اليها بفى المفيدة للظرفية محال عليه تعالى وقد اولها بعضهم بالغيب اى ولا اعلم ما في غيبك و سرك قال و هذا احسن لقوله اخر الاية انك انت علام الغيوب ومن ذلك الوجه وهو مؤول بالذات و قال ابن اللبان في قوله يريدون وجهه انما نطعمكم لوجه الله الا ابتغاء وجه ربه المراد اخلاص النية و قال غيره في قوله فثم وجه الله اي الجهة التي امر بالتوجه اليها و من ذلك العين و هي مؤولة بالبصر اوالادراك بل قال بعضهم انها حقيقة في ذلك خلافا لتوهم بعض الناس انها مجاز و انما المجاز في تسمية العضو بها قال ابن اللبان نسبة العين اليه تعالى اسم لآياته المبصرة التي بها سبحانه ينظر للمومنين وبها ينظرون اليه قال فلما جاءتهم آياتنا مبصرة نسب البصر للآيات على سبيل المجاز تحقيقا لان المراد بالعين المنسوبة اليه و قال قد جاءكم بصاير من ربكم فمن ابصر فلنفسه و من عمى فعليها قال فقوله و اصبر لحكم ربك فانك باعيننا اي بآياتنا تنظر بها الينا و ننظر بها اليك قال و يؤيد ان المراد بالاعين هنا الايآت كونه

صح يحتاج الى تاويل فان الاستقراء مشعر بالتجسيم ثانيها ان استوى بمعنى استولى ورد بوجهين احدهما ان الله تعالى مستول على الكونين و الجنة و النار و اهلهما فاى فايدة في تخصيص العرش والاخر ان الاستيلاء انما يكون بعد قهر و غلبة والله تعالى منزه عن ذلك اخرج اللالكائي فى السنة عن ابن الاعرابي انه سئل عن معنى استوى فقال هو على عرشه كما اخبر فقيل يا ابا عبد الله معناه استولى قال اسكت لا يقال استولى على الشئى الا اذا كان له مضادفا فاذا غلب احدهما قيل استولى ثالثها انه بمعنى صعد قاله ابو عبيد ورد بانه تعالى منزه عن الصعود ايضا رابعها ان التقدير الرحمن علا اى ارتفع من العلو و العرش له استوى حكاه اسمعيل الضرير في تفسيره ورد بوجهين احدهما انه جعل علا فعلا وهي حرف هنا باتفاق فلو كانت فعلا لكتب بالف كقوله علا فى الارض و الاخر انه رفع العرش ولم يرفعه احد من القرا خامسها ان الكلام عند قوله الرحمن على العرش ثم ابتداء بقوله استولى له ما فى السموات و ما فى الارض ورد بانه يزيل الاية عن نظمها و مرادها قلت ولا يتاتي له في قوله ثم استوى على العرش سادسها ان معنى استوى اقبل على خلق العرش و عمد الى خلقه كقوله ثم استوى الى السماء وهي دخان اى قصد و عمد الى خلقها قاله الفرا و الاشعرى و جماعة اهل المعاني و قال اسمعيل الضرير انه الصواب قلت يبعده تعدية بعلى و لوكان كما ذكروه لتعدى بالى كما في قوله ثم استوى الى السماء سابعها قال ابن اللبان الاستواء المنسوب اليه تعالى بمعنى اعتدل اى قام بالعدل كقوله قايما بالقسط فقيامه بالقسط والعدل هو استواؤه

اتفق الفقهاء كلهم من المشرق الى المغرب على الايمان بالصفات من غير تفسير ولا تشبيه وقال الترمذي فى الكلام على حديث الروية المذهب في هذا عند اهل العلم من الائمة مثل سفيان الثوري ومالك و ابن المبارك و ابن عيينه و وكيع و غيرهم انهم قالوا يروي هذه الاحاديث كما جاءت ونؤ من بها ولا يقال كيف ولا نفسر ولا نتوهم وذهبت طايفة من اهل السنة الى انانا ولها على ما يليق بجلاله تعالى و هذا مذهب الخلف وكان امام الحرمين يذهب اليه ثم رجع عنه فقال فى الرسالة النظامية الذي ترتضيه ديننا وندين الله به عقدا اتباع سلف الامة فانهم درجوا على ترك التعرض لمعانيها وقال ابن الصلاح على هذه الطريقة مضى صدر الامة و ساداتها و اياها اختار ائمة الفقهاء و قاداتها واليها دعا ائمة الحديث و اعلامه ولا احد من المتكلمين من اصحابنا يصدق عنها و ياباها و اختار ابن برهان مذهب التاويل قال و منشاء الخلاف بين الفريقين هل يجوز ان يكون فى القران شئ لم نعلم معناه اولا بل يعلمه الراسخون فى العلم و توسط ابن دقيق العيد فقال اذا كان التاويل قريبا من لسان العرب لم ينكر او بعيدا توقفنا عنه و امنا بمعناه على الوجه الذي اريد به مع التنزيه قال وما كان معناه من هذه الالفاظ ظاهرا مفهوما من تخاطب العرب قلنا به من غير توقيف كما في قوله تعالى يا حسرتا على ما فرطت في جنب الله و تحمله على حق الله و ما يجب له ذكر ما وقفت عليه من تاويل الآيات المذكورة على طريقة اهل السنة من ذلك صفة الاستواء و حاصل ما رأيت فيها سبعة اجوبة احدها حكي مقاتل و الكلبي عن ابن عباس ان استوي بمعنى استقر و هذا ان

محالا و اما اثبات المعنى المراد فلا يمكن بالعقل لان طريق ذلك ترجيح مجاز على مجاز وتاويل على تاويل و ذلك الترجيح لا يمكن الا بالدليل اللفظي و الدليل اللفظي فى الترجيح ضعيف لا يفيد الا الظن و الظن لايعول عليه فى المسائل الاصولية القطعية فلهذا اختيار الائمة المحققون من السلف والخلف بعد اقامة الدليل القاطع على ان حمل اللفظ على ظاهره محال ترك الخوض في تعيين التاويل انتهي و حسبك بهذا الكلام من الامام فصـــل من المتشابه آيات الصفات ولا بن اللبان فيها تصنيف مفرد نحو الرحمٰن على العرش استوي كل شيء هالك الا وجهه و يبقي وجه ربك و لتصنع على عيني يد الله فوق ايديهم و السموات مطويات بيمينه وجمهور اهل السنة منهم السلف واهل الحديث على الايمان بها وتفويض معناها المراد منها الى الله تعالى ولايفسرها مع تنزيهها له عن حقيقتها اخرج ابو القاسم اللالكائي فى السنة من طريق قرة بن خالد عن الحسن عن امه عن ام سلمه في قوله الرحمٰن على العرش استوي قالت الكيف غير معقول والاستواء غير مجهول والاقراربه من الايمان والجحود به كفر واخرج ايضا عن ربيعة بن ابي عبد الرحمٰن انه سئل عن قوله الرحمن على العرش استوي فقال الايمان غير مجهول الكيف غير معقول ومن الله الرسالة وعلى الرسول البلاغ المبين وعلينا التصديق واخرج ايضا عن مالك انه سئل عن الآية فقال الكيف غير معقول والاستواء غير مجهول والايمان به واجب والسوال عنه بدعة واخرج البيهقي عنه انه قال هو كما وصف نفسه ولا يقال كيف وكيف عنه مرفوع واخرج اللالكائي عن محمد بن الحسن قال

كالعموم و الخصوص نحو اقتلو المشركين و الثاني من جهة الكيفية كالوجوب و الندب نحو فانكحوا ما طاب لكم من النساء و الثالث من جهة الزمان كالناسخ و المنسوخ نحو اتقوا الله حق تقاته الرابع من جهة المكان و الامور التي نزلت فيها نحو و ليس البر بان تأتوا البيوت من ظهورها انما النسيء زيادة فى الكفر فان من لا يعرف عادتهم فى الجاهلية يتعذر عليه تفسير هذه الآية الخامس من جهة الشروط التي يصح بها الفعل و يفسد كشرط الصلاة و النكاح قال و هذه الجملة اذا تصورت علم ان كل ماذكره المفسرون في تفسير المتشابه لا يخرج عن هذه التقاسيم ثم جميع المتشابه على ثلاثة اضرب ضرب لا سبيل الى الوقوف عليه كوقت الساعة و خروج الدابة و نحو ذلك و ضرب للانسان سبيل الى معرفته كالالفاظ الغريبة و الاحكام المغلقة و ضرب متردد بين الامرين يختص بمعرفته بعض الراسخين فى العلم و يخفى على من دونهم و هو المشار اليه بقوله صلى الله عليه و سلم لابن عباس اللهم فقهه فى الدين و علمه التاويل واذا عرفت هذه الجملة عرفت ان الوقوف على قوله و ما يعلم تاويله الا الله و وصله بقوله و الراسخون فى العلم جايزان وان لكل واحد منهما وجها حسب مادل عليه التفصيل المتقدم انتهي وقال الامام فخر الدين صرف اللفظ على الراجح الى المرجوح لا بد فيه من دليل منفصل و هو اما لفظي او عقلي فالاول لا يمكن اعتباره فى المسائل الاصولية لانه لا يكون قاطعا لانه موقوف على انتفاء الاحتمالات العشرة المعروفة و انتفاؤها مظنون والموقوف على المظنون مظنون و الظني لا يكتفى به فى الاصول و اما العقلى فانما يفيد صرف اللفظ عن ظاهره لكون الظاهر

في قلوبهم زيغ انهم هم الذين يتبعون ما تشابه منه و معنى ذلك ان من لم يكن على يقين من المحكمات و في قلبه شك و استرابة كانت راحته في تتبع المشكلات المتشابهات و مراد الشارع منا التقدم الى فهم المحكمات و تقديم الامهات حتى اذا حصل اليقين و رسخ العلم لم تبل بما اشكل عليك و مراد هذا الذي في قلبه زيغ التقدم الى المشكلات و فهم المتشابه قبل فهم الامهات و هو عكس المعقول و المعتاد و المشروع و مثل هولاء مثل المشركين الذين يقترحون على رسلهم آيات غير الايات التي جاؤا بها و يظنون انهم لو جأتهم آيات آخر لامنوا عندها جهلا منهم و ما علموا ان الايمان باذن الله انتهى و قال الراغب في مفردات القرآن الايات عند اعتبار بعضها ببعض ثلاثة اضرب محكم على الاطلاق و متشابه على الاطلاق ومحكم من وجه متشابه من وجه فالمتشابه بالجملة ثلاثة اضرب متشابه من جهة اللفظ فقط و من جهة المعنى فقط و من جهتهما فالاول ضربان احدهما يرجع الى الالفاظ المفردة اما من جهة الغرابة نحو الاب و يزفون او الاشتراك كاليد و العين و ثانيهما يرجع الى جملة الكلام المركب و ذلك ثلاثة اضرب ضرب لاختصار الكلام نحو و ان خفتم الا تقسطوا فى اليتامى فانكحوا ماطاب لكم فضرب لبسطه نحو ليس كمثله شيء لانه لو قيل ليس مثله شيء كان اظهر للسامع و ضرب لنظم الكلام نحو انزل على عبده الكتاب و لم يجعل له عوجا و المتشابه من جهة المعنى اوصاف الله تعالى و اوصاف القيمة فان تلك الصفات لا تتصور لنا اذ كان لا يحصل في نفوسنا صورة ما لم تحسبه او ليس من جنسه و المتشابه من جهتهما خمسة اضرب الاول من جهة الكمية

بعد اذ هديتنا الى آخره شاهدا على ان الراسخون فى العلم مقابل لقوله و الذين في قلوبهم زيغ و فيه اشارة الى ان الوقف على قوله الا الله تام و الى ان علم بعض المتشابه مختص بالله تعالى و انه من حاول معرفته هو الذي اشار اليه فى الحديث بقوله فاحذروهم و قال بعضهم العقل مبتلى باعتقاد حقية المتشابه كابتلاء البدن باداء العبادة كالحكيم اذا صنف كتابا اجمل فيه احيانا ليكون موضع خضوع المتعلم لاستاذه و كالملك يتخذ علامة يمتاز بها من يطلعه على سره و قيل لو لم يبتل العقل الذي هو اشرف البدن لاستمر العالم في ابهة العلم على التمرد فبذلك يستانس الى التذلل بعز العبودية و المتشابه هو موضع خضوع العقل لباريها استسلاما و اعترافا بقصورها و في ختم الآية بقوله تعالى و ما يذكر الا اولوا الالباب تعريض بالزايغين و مدح للراسخين يعنى من لم يتذكر و يتعظ و يخالف هواه فليس من اولى العقول و من ثم قال الراسخون ربنا لا تزغ قلوبنا بعد اذ هديتنا الى آخر الآية فخضعوا لباريهم لاستنزال العلم اللدني بعد ان استعاذوا به من الزيغ النفساني و قال الخطابي المتشابه على ضربين احدهما ما اذا رد الى المحكم واعتبر به عرف معناه والاخر ما لا سبيل الى الوقوف على حقيقته و هو الذي تتبعه اهل الزيغ فيطلبون تاويله و لا يبلغون كنهه فيرتابون فيه فيعتنون و قال ابن الحصار قسم الله آيات القرآن الى محكم و متشابه و اخبر عن المحكمات انها ام الكتاب لان اليه ترد المتشابهات و هي التي يعتمد في فهم مراد الله من خلقه في كلما تعبدهم به من معرفته و تصديق رسله و امثال اوامره و اجتناب نواهيه و بهذا الاعتبار كانت امهات ثم اخبر عن الذين

حتى ترك ظهره دبره ثم تركه حتى برأ ثم عاد له ثم تركه حتى برأ فدعا به ليعود فقال ان كنت تريد قتلى فاقتلني قتلا جميلا فاذن له الى ارضه و كتب الى ابي موسى الاشعري ان لا يجالسه احد من المسلمين واخرج الدارمي عن عمر بن الخطاب قال انه سياتيكم ناس يجادلونكم بشبهات القرآن فخذوهم بالسنن فان اصحاب السنن اعلم بكتاب الله فهذه الاحاديث و الاثار تدل على ان المتشابه مما لا يعلمه الا الله و ان الخوض فيه مذموم و سياتي قريبا زيادة على ذلك قال الطيبي المراد بالمحكم ما اتضح معناه والمتشابه بخلافه لان اللفظ الذي يقبل معنى اما ان يحتمل غيره اولا والثاني النص والاول اما ان يكون دلالته على ذلك الغير ارجح اولا والاول هو الظاهر والثاني اما ان يكون يساويه اولا الاول هو المجمل والثاني المأول فالمشترك بين النص و الظاهر هو المحكم و المشترك بين المجمل و المأول هو المتشابه و يويد هذا التقسيم انه تعالى اوقع المحكم موافقا للمتشابه فالواجب ان يفسر المحكم بما يقابله و يعضد ذلك اسلوب الاية و هو الجمع مع التقسيم لانه تعالى فرق ما جمع في معنى الكتاب بان قال منه آيات محكمات و اخر متشابهات و اراد ان يضيف الى كل منهما ما شاء الله فقال اولا فاما الذين في قلوبهم زيغ الى ان قال و الراسخون في العلم يقولون آمنا به وكان يمكن ان يقال و اما الذين في قلوبهم استقامة فيتبعون المحكم لكنه وضع موضع ذلك الراسخون في العلم لاتيان لفظ الرسوخ لانه لا يحصل الا بعد التتبع العام والاجتهاد البليغ فاذا استقام القلب على طريق الرشاد و رسخ القدم في العلم افصح صاحبه النطق بالقول الحق و نفى بدعاء الراسخين في العلم ربنا لا تزغ قلوبنا

ابن مردو من حديث عمرو بن شعيب عن ابيه عن جده عن رسول صلى الله عليه و سلم قال ان القرآن لم ينزل ليكذب بعضه بعضا فما عرفتم فاعملوا به و ما تشابه فامنوا به و اخرج الحاكم عن ابن مسعود عن النبي صلى الله عليه و سلم قال كان الكتاب الاول ينزل من باب واحد على حرف واحد و نزل القرآن من سبعة ابواب على سبعة احرف زاجر و آمر و حلال و حرام و محكم و متشابه و امثال فاحلوا حلاله و حرموا حرامه و افعلوا ما امرتم به و انتهوا عما نهيتم عنه و اعتبروا بامثاله و اعملوا بمحكمه و امنوا بمتشابهه و قولوا آمنا به كل من عند ربنا و اخرج البيهقي فى الشعب نحوه من حديث ابي هريرة و اخرج ابن جرير عن ابن عباس مرفوعا انزل القرآن على اربعة احرف حلال و حرام لا يعذر احد بجهالته و تفسير تفسره العرب و تفسير تفسره العلماء و متشابه لا يعلمه الا الله و من ادعى علمه سوى الله فهو كاذب ثم اخرجه من وجه آخر عن ابن عباس موقوفا بنحوه و اخرج ابن ابي حاتم من طريق العوفى عن ابن عباس قال نومن بالمحكم و ندين به و نومن بالمتشابه و لا ندين به و هو من عند الله كله و اخرج ايضا عن عايشة قالت كانت رسوخهم فى العلم ان آمنوا بمتشابهه و لا يعلمونه و اخرج ايضا عن ابي الشعثا و ابي نهيك قالا انكم تصلون هذه الاية و هي مقطوعة و اخرج الدارمي في مسنده عن سليمان بن يسار ان رجلا يقال له صبيغ قدم المدينة فجعل يسال عن متشابه القرآن فارسل اليه عمرو قد اعدله عراجين النخل فقال من انت قال انا عبد الله صبيغ فاخذ عمر عرجونا من تلك العراجين فضربه حتى دمى راسه و في رواية عنده فضربه بالجريد

و هو اصح الروايات عن ابن عباس قال ابن السمعاني لم يذهب الى القول الاول الاشر ذمة قليلة واختاره القتيبي قال وقد كان يعتقد مذهب اهل السنة لكنه سهى في هذه المسئلة قال ولاغرو فان لكل جواد كبوة و لكل عالم هفوة قلت و يدل بصحة مذهب الاكثرين ما اخرجه عبد الرزاق في تفسيره و الحاكم في مستدركه عن ابن عباس انه كان يقراء و ما يعلم تاويله الا الله و يقول الراسخون فى العلم امنا به فهذا يدل على ان الواو للاستيناف لان هذه الرواية و ان لم يثبت بها القرأة فاقل درجاتها ان يكون خبرا باسناد صحيح الى ترجمان القرآن فيقدم كلامه في ذلك على من دونه و يويد ذلك ان الاية دلت على ذم متبعى المتشابه و وصفهم بالزيغ و ابتغاء الفتنة وعلى مدح الذين فوضوا العلم الى الله وسلموا اليه كما مدح الله المومنين بالغيب و حكى القرأ ان في قرأة ابي ابن كعب ايضا و يقول الراسخون و اخرج ابن ابي داؤد فى المصاحف من طريق الاعمش قال في قرأة ابن مسعود و ان تاويله الا عند الله و الراسخون فى العلم يقولون آمنا به واخرج الشيخان وغيرهما عن عايشة قالت تلا رسول الله صلى الله عليه و سلم هذه الاية هو الذي انزل عليك الكتاب الى قوله اولوا الباب قالت قال رسول الله صلى الله عليه و سلم فاذا رايت الذين يتبعون ما تشابه منه فاولئك الذين سمى الله فاحذروهم و اخرج الطبرانى فى الكبير عن ابي مالك الاشعري انه سمع رسول الله صلى الله عليه و سلم يقول لا اخاف على امتى الا ثلاث خلال ان يكثر لهم المال فيتحاسدوا فيقتلوا و ان يفتح لهم الكتاب فياخذه المومن يبتغى تاويله و ما يعلم تاويله الا الله الحديث و اخرج

الانعام محكمات قل تعالوا و الآيتان بعدها و اخرج ابن ابي حاتم من وجه اخر عن ابن عباس في قوله آيات محكمات قال من ههنا قل تعالوا الى ثلاث آيات و من ههنا و قضي ربك ان لا تعبدوا الا اياه الى ثلاث آيات بعدها و اخرج عبد بن حميد عن الضحاك قال المحكمات ما لم ينسخ منها منه و المتشابهات ما قد نسخ و اخرج ابن ابي حاتم عن مقابل بن حيان قال المتشابهات فيما بلغنا الم و المص و المر و الر قال ابن ابي حاتم و قد روي عن عكرمة و قتادة و غيرهما ان المحكم الذي يعمل به و المتشابه الذي يومن به ولا يعمل به فصل اختلف هل المتشابه مما يمكن الاطلاع على علمه اولا يعلمه الا الله على قولين منشاهما الاختلاف في قوله و الراسخون فى العلم هل هو معطوف و يقولون حال او مبتداء خبره يقولون و الواو للاستيناف و على الاول طايفة يسيرة منهم مجاهد و هو رواية عن ابن عباس فاخرج ابن المنذر من طريق مجاهد عن ابن عباس في قوله و ما يعلم تاويله الا الله و الراسخون فى العلم قال انا ممن يعلم تاويله و اخرج عبد بن حميد عن مجاهد في قوله و الراسخون فى العلم قال يعلمون تاويله و يقولون آمنا به و اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك قال الراسخون فى العلم يعلمون تاويله لو لم يعلموا تاويله لم يعلموا ناسخه من منسوخه ولا حلاله من حرامه ولا محكمه من متشابهه و اختار هذا القول النووي فقال في شرح مسلم انه الا صح لانه يبعد ان يخاطب الله عباده بما لا سبيل لاحد من الخلق الى معرفته و قال ابن الحاجب انه الظاهر و اما الاكثرون من الصحابة و التابعين واتباعهم و من بعدهم خصوصا اهل السنة فذهبوا الى الثاني

من طرقه و قد قال الله تعالى لتبين للناس ما نزل اليهم و المحكم لا يتوقف معرفته على البيان و المتشابه لا يرجى بيانه و قد اختلف في تعيين المحكم و المتشابه على اقوال فقيل المحكم ما عرف المراد منه اما بالظهور و اما بالتاويل و المتشابه ما استاثر الله بعلمه كقيام الساعة و خروج الدجال و الحروف المقطعة في اوايل السور و قيل المحكم ما وضح معناه و المتشابه نقيضه و قيل المحكم ما لا يحتمل من التاويل الا وجها واحدا و المتشابه ما احتمل اوجها و قيل المحكم ما كان معقول المعنى و المتشابه بخلافه كاعداد الصلوات و اختصاص الصيام برمضان دون شعبان قاله الماوردي و قيل المحكم ما استقل بنفسه و المتشابه ما لا يستقل بنفسه الا برده الى غيره و قيل المحكم ما تاويله تنزيله و المتشابه ما لا يدري الا بالتاويل و قيل المحكم ما لم تتكرر الفاظه و مقابله المتشابه و قيل المحكم الفرايض و الوعد والوعيد و المتشابه القصص و الامثال اخرج ابن ابي حاتم من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس قال المحكمات ناسخه و حلاله و حرامه و حدوده و فرايضه و ما يومن به و يعمل به و المتشابهات منسوخه و مقدمه و موخره و امثاله و اقسامه و ما يومن به و لا يعمل به واخرج الفريابي عن مجاهد قال المحكمات ما فيه الحلال و الحرام و ما سوى ذلك منه متشابه يصدق بعضه بعضا و اخرج ابن ابي حاتم عن الربيع قال المحكمات هي الآمرة الزاجرة و اخرج عن اسحاق بن سويدان يحيى بن يعمر و ابا فاخته تراجعا في هذه الآية فقال ابو فاخته فواتح السور و قال يحيى الفرايض و الامر و النهي و الحلال واخرج الحاكم و غيره عن ابن عباس قال الثلاث آيات من آخر سورة

صوابا مسالة اختلف في جواز العطف على معمولى عاملين فالمشهور عن سيبويه المنع و به قال المبرد و ابن السراج و هشام وجوزه الاخفش و الكسائي و الفراو الزجاج و خرج عليه قوله تعالى ان فى السموات و الارض لآيات للمومنين و في خلقكم و ما يبث من دابة آيات لقوم يوقنون و اختلاف الليل و النهار و ما انزل الله من السماء من رزق فاحيى به الارض بعد موتها و تصريف الرياح آيات لقوم يعقلون فيمن نصب آيات الاخيرة مسالة اختلف في جواز العطف على الضمير المجرور من غير اعادة الجار فجمهور البصريين على المنع و بعضهم و الكوفيون على الجواز و خرج عليه قرأة حمزة و اتقوا الله الذي تسالون به و الارحام و قال ابو حيان في قوله تعالى وصد عن سبيل الله و كفر به و المسجد الحرام ان المسجد معطوف على ضمير به و ان لم يعد الجار قال و الذي نختاره جواز ذلك لوروده في كلام العرب كثيرا نظما و نثرا قال و لسنا متعبدين باتباع جمهور البصريين بل نتبع الدليل النوع الثالث و الاربعون فى المحكم و المتشابه قال الله تعالى هو الذي انزل عليك الكتاب منه آيات محكمات هن ام الكتاب واخر متشابهات و قد حكى ابن حبيب النيشابوري فى المساله ثلاثة اقوال احدها ان القرآن كله محكم لقوله تعالى كتاب احكمت اياته الثاني كله متشابه لقوله كتابا متشابها مثاني الثالث و هو الصحيح انقسامه الى محكم و متشابه للآية المصدر بها و الجواب عن الآيتين ان المراد باحكامه اتقانه و عدم تطرق النقص و الاختلاف اليه و بتشابهه كونه يشبه بعضه بعضا فى الحق و الصدق و الاعجاز و قال بعضهم الآية لا تدل على الحصر فى الشيئين اذ ليس فيها شئ

فی القران انه عطف علی المعنی مسالة اختلف في جواز عطف الخبر علی الانشا و عکسه فمنعه البیانیون و ابن مالک و ابن عصفور و نقله عن الاکثرین و اجازه الصفار و جماعة مستدلین بقوله تعالی و بشر الذین آمنوا في سورة البقرة و بشر المومنین في سورة الصف و قال الزمخشري فی الاولی لیس المعتمد بالعطف الامر حتی یطلب له مشاکل بکل المراد عطف جملة ثواب المومنین علی جملة ثواب الکافرین و فی الثانیة ان العطف علی یومنون لانه بمعنی امنوا و رد بان الخطاب به للمومنین و یبشر للنبي صلی الله علیه و سلم و بان الظاهر في یومنون انه تفسیر للتجارة لا طلب وقال السکاکي الامر ان معطوفان علی کل مقدرة قبل یایها و حذف القول کثیر مسالة اختلف في جواز عطف الاسمیة علی الفعلیة و عکسه فالجمهور علی الجواز و بعضهم علی المنع و قد لهج به الرازي فيتفسیره کثیرا و رد به علی الحنفیة القائلین بتحریم اکل متروک التسمیة اخذا من قوله تعالی و لا تاکلوا مما لم یذکر اسم الله علیه و انه لفسق فقال هي حجة للجواز لا للتحریم و ذلک ان الواو لیست عاطفة لتخالف الجملتین بالاسمیة و الفعلیة و لا للاستیناف لان اصل الواو ان تربط ما بعدها بما قبلها فبقی ان یکون للحال فتکون جملة الحال مقیدة للنهي و المعنی لا تاکلوا منه في حال کونه فسقا و مفهومه جواز الاکل اذا لم یکن فسقا و الفسق قد فسره الله تعالی بقوله او فسقا اهل لغیر الله به فالمعنی لا تاکلوا منه اذا سمی علیه لغیر الله و مفهومه و کلوا منه اذا لم یسم علیه غیر الله انتهی قال ابن هشام و لو ابطل العطف بتخالف الجملتین بالانشا و الخبر لکان

و شرط جوازه صحة دخول ذلك العامل المتوهم و شرط حسنه كثرة دخوله هناك و قد وقع هذا العطف فى المجرور في قول زهير

شعر

بدأ لي اني لست مدرك ما مضى ولا سابق شيئا اذا كان جائيا

و فى المجزوم في قرأة غير ابي عمرو لولا اخرتني الى اجل قريب فاصدق و اكن خرجه الخليل و سيبويه على انه عطف على التوهم لان معني لولا اخرتني فاصدق و معني اخرني اصدق واحد و قراة قنبل انه من يتقي و يصبر خرجه الفارسي عليه لان من الموصولة فيها معنى الشرط و فى المنصوب في قراة حمزة و ابن عامر و من وراء اسحق يعقوب بفتح الباء لانه على معنى و وهبنا له اسحق و من وراء اسحق يعقوب و قال بعضهم في قوله و حفظا من كل شيطان انه عطف على معنى انا زينا السماء الدنيا و هو انا خلقنا الكواكب فى السماء الدنيا زنية للسماء و قال بعضهم في قراة و دو الوتدهن فيدهنوا انه على معنى و دوا ان تدهن و قيل في قراة حفص لعلى ابلغ الاسباب اسباب السموات فاطلع بالنصب انه عطف على معنى لعلى ان ابلغ لان خبر لعل يقترن بان كثيرا و قيل في قوله تعالى و من آياته ان يرسل الرياح مبشرات و ليذيقكم انه على تقدير ليبشركم و ليذيقكم تنبيه ظن ابن مالك ان المراد بالمتوهم الغلط و ليس كذلك كما نبه عليه ابو حيان و ابن هشام بل هو مقصد صواب و المراد انه عطف على المعنى اي جوز العربي في ذهنه ملاحظة ذلك المعنى فى المعطوف عليه فعطف ملاحظا له لا انه غلط في ذلك و لهذا كان الادب ان يقال في مثل ذلك

و لا شيء بعد امن الرسول و قد جاء التاكيد في كلام المنافقين فقالوا انما نحن مصلحون قاعدة في المصدر قال ابن عطية سبيل الواجبات الاتيان بالمصدر مرفوعا كقوله فامساك بمعروف او تسريح باحسان فاتباع بالمعروف و اداء اليه باحسان و سبيل المندوبات الاتيان به منصوبا كقوله فضرب الرقاب و لهذا اختلفوا هل كانت الوصية للزوجات واجبة لاختلاف القرأة في قوله تعالى وصية لازواجهم بالرفع و النصب قال ابوحيان و الاصل في هذه التفرقة قوله تعالى قالوا سلاما قال سلام فان الاول مندوب و الثاني واجب و النكتة في ذلك ان الجملة الاسمية اثبت و اكد من الفعلية قاعدة في العطف هو ثلاثة اقسام عطف على اللفظ و هو الاصل و شرطه امكان توجه العامل الى المعطوف و عطف على المحل و له ثلاثة شروط احدها امكان ظهور ذلك المحل في الفصيح فلا يجوز مررت بزيد و عمرو الا انه لا يجوز مررت زيدا الثاني ان يكون للموضع بحق الاصالة فلا يجوز هذا الضارب زيدا و اخيه لان الوصف المستوفى بشروط العمل الاصل اعماله لا اضافته الثالث وجود المحرز اي الطالب لذلك المحل فلا يجوز ان زيدا و عمرو قاعدان لان الطالب لرفع عمرو هو الابتداء و هو قد زال بدخول ان و خالف في هذا الشرط الكسائي مستدلا بقوله تعالى ان الذين آمنوا و الذين هادوا و الصابيون الاية و اجيب بان خبر ان فيها محذوف اي ماجورون او امنون و لا يختص مراعاة الموضع بان يكون العامل في اللفظ زايدا و قد اجاز الفارسي في قوله و اتبعوا في هذه الدنيا لعنة و يوم القيمة ان يكون يوم القيمة عطفا على محل هذه و عطف على التوهم نحو ليس زيد قايما و لا قاعد بالخفض على توهم دخول الباء في الخبر

لا يتجدد وكذا ساير الصفات الدايمة التي يستعمل فيها الفعل وجوابه ان معني علم الله كذا وقع علمه فى الزمن الماضي ولا يلزم انه لم يكن قبل ذلك فان العلم في زمن ماض اعم من المستمر على الدوام قبل ذلك الزمن و بعده و غيره و لهذا قال الله تعالى حكاية عن ابراهيم الذي خلقني فهو يهدين الآيات فاتى بالماضي فى الخلق لانه مفروغ منه و بالمضارع فى الهداية و الاطعام و الاسقا و الشفا لانها متكررة متجددة تقع مرة بعد اخرى الثاني مضمر الفعل فيما ذكر كمظهره و لهذا قالوا ان سلام الخليل ابلغ من سلام الملائكة حيث قالوا سلاما قال سلام فان نصب سلاما انما يكون على ارادة الفعل اي سلمنا سلاما و هذه العبارة موذنة بحدوث التسليم منهم اذ الفعل متاخر عن وجود الفاعل بخلاف سلام على ابراهيم فانه مرتفع بالابتداء فاقتضى الثبوت على الاطلاق و هو اولى مما يعرض له الثبوت فكانه قصد ان يحييهم باحسن ما حيوه به الثالث ما ذكرناه من دلالة الاسم على الثبوت و الفعل على التجدد و الحدوث هو المشهور عند اهل البيان و قد انكره ابو المطرف بن عميرة في كتاب التمويهات على التبيان لابن الزملكاني و قال انه غريب لا مستند له فان الاسم انما يدل على معناه فقط اما كونه يثبت المعنى للشيء فلا ثم اورد قوله تعالى ثم انكم بعد ذلك لميتون ثم انكم يوم القيمة تبعثون و قوله ان الذين هم من خشية ربهم مشفقون و الذين هم بآيات ربهم يومنون و قال ابن المنير طريقة العربية تلوين الكلام و مجيء الفعلية تارة و الاسمية اخرى من غير تكلف لما ذكروه و قد راينا الجملة الفعلية تصدر من الاقويا الخلص اعتمادا على ان المقصود حاصل بدون التاكيد نحو ربنا آمنا

والخطاب بالفعل الاسم يدل على الثبوت و الاستمرار و الفعل يدل على التجدد و الحدوث ولايحسن وضع احدهما موضع الاخر فمن ذلك قوله تعالى و كلبهم باسط ذراعيه لو قيل يبسط لم يرد الغرض لانه يوذن بمزاولة الكلب البسط و انه يتجدد له شيء بعد شيء فباسط اشعر بثبوت الصفة و قوله هل من خالق غير الله يرزقكم لو قيل رازقكم لفات ما افاده الفعل من تجدد الرزق شئاً بعد شيء و لهذا جاءت الحال في صورة المضارع مع ان العامل الذي يفيده ماض نحو و جاوا اباهم عشاء يبكون اذ المراد ان تعدد صورة ماهم عليه وقت المجيء و انهم اخذون فى البكاء يجددونه شيئا بعد شيء و هو المسمى حكاية الحال الماضية و هذا هو سر الاعراض عن اسم الفاعل و المفعول و لهذا ايضا عبر بالذين ينفقون ولم يقل المنفقون كما قيل المومنون و المتقون لان النفقة امر فعلي شانه الانقطاع و التجدد بخلاف الايمان فان له حقيقة تقوم بالقلب يدوم مقتضاها وكذلك التقوي و الاسلام و الصبر و الشكر و الهدى و العمى و الضلال و البصر كلها لها مسميات حقيقته او مجازيته تستمر و اثار يتجدد و ينقطع فجاءت بالاستعمالين وقال الله تعالى في آية الانعام يخرج الحي من الميت و يخرج الميت من الحي قال الامام فخر الدين لما كان الاعتناء بشان اخراج الحي من الميت اشد فيه بالمضارع ليدل على التجدد كما في قوله الله يستهزئ بهم تنبيهات الاول المراد بالتجدد فى الماضى الحصول و فى المضارع ان من شانه ان يتكرر و يقع مرة بعد اخرى صرح بذلك جماعة منهم الزمخشري في قوله الله يستهزئ بهم قال الشيخ بهاء الدين السبكي و بهذا يتضح الجواب عما يورد من نحو علم الله كذا فان علم الله

الفعل ومع ذلك صدر الجواب بالفعل واجيب بان الجواب مقدر دل عليه السياق اذبل لا تصلح ان يصدر بها الكلام والتقدير ما فعلته بل فعله قال الشيخ عبد القاهر وحيث كان السوال ملفوظا به فالاكثر ترك الفعل فى الجواب والاقتصار على الاسم وحده وحيث كان مضمرا فالاكثر التصريح به لضعف الدلالة عليه ومن غير الاكثر يسبح له فيها بالغد و والآصال رجال في قراة البناء للمفعول فائدة اخرج البزار عن ابن عباس قال ما رايت قوما خيرا من اصحاب محمد ما سالوه الا عن ثنتي عشرة مسألة كلها فى القران واوردة الامام الرازي بلفظ اربعة عشر حرفا وقال منها ثمانية فى البقرة واذا سالك عبادي عني يسالونك عن الاهلة يسالونك ماذا ينفقون قل ما انفقتم يسالونك عن الشهر الحرام يسالونك عن الخمر والميسر ويسالونك عن اليتامي ويسالونك ماذا ينفقون قل العفو ويسالونك عن المحيض قال والتاسع يسالونك ماذا احل لهم فى المايدة والعاشر يسالونك عن الانفال والحادي عشر يسالونك عن الساعة والثاني عشر ويسالونك عن الجبال والثالث عشر ويسالونك عن الروم والرابع عشر ويسالونك عن ذي القرنين قلت السائل عن الروح وذي القرنين مشركوا اهل مكة او اليهود كما في اسباب النزول لا الصحابة فالخالص اثني عشر كما صحت به الرواية فائدة قال الراغب السوال اذا كان للتعريف تعدي الى المفعول الثاني تارة بنفسه وتارة بعن وهو اكثر نحو ويسالونك عن الروح واذا كان لاستدعاء مال فانه يعدي بنفسه او بمن وبنفسه اكثر نحو واذا سالتموهن متاعا فاسالوهن من وراء حجاب واسالوا ما انفقتم واسالوا الله من فضله قاعدة فى الخطاب بالاسم

واحد فتعين ان يكون قل الله جواب سوال كانهم سالوا لما سمعوا ذلك فمن يبدوا الخلق ثم يعيده قاعدة الاصل فى الجواب ان يكون مشاكلا للسوال فان كان جملة اسمية فينبغي ان يكون الجواب كذلك و يجي كذلك فى الجواب المقدر الا ان ابن مالك قال في قولك زيد في جواب من قرا انه من باب حذف الفعل علي جعل الجواب جملة فعلية قال وانما قدرته ككـ لا مبتدا مع احتماله جريا على عادتهم فى الاجوبة اذا قصد واتمامها قال تعالى من يحيي العظام وهي رميم قل يحييها الذي انشاها ولئن سالتهم من خلق السموات والارض ليقولن خلقهن العزيز العليم ماذا احل لهم قل احل لكم الطيبات فلما اتى بالفعلية مع فوات مشاكلة السوال علم ان تقدير الفعل اولا اولى انتهى وقال ابن الزملكاني فى البرهان اطلق النحويون القول بان زيدا في جواب من قام فاعل على تقدير قام زيد و الذي توجبه صناعة علم البيان انه مبتدا لوجهين احدهما انه يطابق الجملة المسؤل بها فى الاسمية كما وقع فى التطابق في قوله واذا قيل لهم ماذا انزل ربكم قالوا خيرا فى الفعلية وانما لم يقع التطابق في قوله ماذا انزل ربكم قالوا اساطير الاولين لانهم لو طابقوا لكانوا مقرين بالانزال وهم من الاذعان به على مفاوز الثاني ان اللبس لم يقع عند السايل الا فيمن فعل الفعل فوجب ان يقدم الفاعل فى المعنى لانه متعلق غرض السايل واما الفعل فمعلوم عنده ولا حاجة به الى السوال عنه فجري ان يقع فى الاواخر التي هي محل التكملات والفضلات فانهم لم يستفهموه عن الكسر بل عن الكاسر واشكل على هذا بل فعله كبيرهم في جواب آ انت فعلت هذا فان السوال وقع عن الفاعل لا عن

الزيادة في الجواب قوله تعالى الله ينجيكم منها و من كل كرب في جواب من ينجيكم من ظلمات البر و البحر و قول موسى هي عصاى اتوكأ عليها واهش بها في جواب و ما تلك بيمينك زاد في الجواب استلذاذا بخطاب الله و قول قوم ابراهيم نعبد اصناما فنظل لها عاكفين في جواب ما تعبدون زادوا في الجواب اظهار الابتهاج بعبادتها الاستمرار على مواظبتها ليزداد غيظ السائل و مثال النقص منه قوله تعالى قل ما يكون لي ان ابدله في جواب ائت بقرآن غير هذا او بدله اجاب عن التبديل دون الاختراع قال الزمخشري لان التبديل في امكان البشر دون الاختراع فطوى ذكره للتنبيه على انه سوال محال و قال غيره التبديل اسهل من الاختراع و قد نفي امكانه فالاختراع اولى تنبيه قد يعدل عن الجواب اصلا اذا كان السائل قصده التعنت نحو و يسالونك عن الروح قل الروح من امر ربي قال صاحب الافصاح انما سال اليهود تعجيزا و تغليطا اذ كان الروح يقال بالاشتراك عن روح الانسان و القرآن و عيسى و جبريل و ملك آخر و صنف من الملائكه فقصد اليهود ان يسالوه فبأي مسمى اجابهم قالوا ليس هو فجاءهم الجواب مجملا و كان هذا الاجمال كيدا يرد به كيدهم قاعدة قيل اصل الجواب ان يعاد فيه نفس السوال ليكون وفقه نحو ائنك لانت يوسف قال انا يوسف فانا في جوابه هو انت في سوالهم و كذا اقررتم و اخذتم على ذلكم اصرى قالوا اقررنا فهذا اصله ثم انهم اتوا عوض ذلك بحروف الجواب اختصارا و تركا للتكرار و قد يحذف السوال ثقة بفهم السامع بتقديره نحو قل هل من شركائكم من يبدؤ الخلق ثم يعيد فانه لا يستقيم ان يكون السوال و الجواب من

باسناد لا صحيح ولا غيره ان السوال وقع عما ذكروه بل ورد ما يويد ما قلناه فاخرج ابن جرير عن ابى الغالية قال بلغنا انهم قالوا يا رسول الله لم خلقت الاهلة فانزل الله يسالونك عن الاهلة فهذا صريح في انهم سالوا عن حكمة ذلك لا عن كيفيته من جهة الهيئة ولا يظن ذو دين بالصحابة الذين هم ادق فهما و اعزز علما انهم ليسوا ممن يطلع على دقايق الهيئة بسهولة و قد اطلع عليها احاد العجم الذين اطبق الناس على انهم ابلد اذهانا من العرب يكثر هذا لو كان للهيئة اصل يعتبر فكيف و اكثرها فاسد لا دليل عليه و قد صنفت كتبا في نقض اكثر مسايلها بالادلة الثاني عن رسول الله صلى الله عليه و سلم الذي صعد الى السماء و راها عيانا و علم ما حوته من عجايب الملكوت بالمشاهدة و اتاه الوحي من خالقها و لو كان السوال وقع عن ما ذكروه لم يمتنع ان يجابوا عنه بلفظ يصل الى افهامهم كما وقع ذلك لما سالوه عن المخبرة و غيرها من الملكوتيات نعم المثال الصحيح لهذا القسم جواب موسى لفرعون حيث قال و ما رب العالمين قال رب السموات و الارض و ما بينهما لان ما سوال عن الماهية و الجنس و لما كان هذا السوال في حق الباري خطأ لانه لا جنس له فيذكر و لا يدرك ذاته عدلا فى الجواب بالصواب ببيان الوصف المرشد الى معرفته و لهذا تعجب فرعون من عدم مطابقته للسوال فقال لمن حوله الا تستمعون اي جوابه الذي لم يطابق السوال فاجاب موسى بقوله ربكم و رب ابايكم الاولين المتضمن ابطال ما يعتقدونه من ربوبية فرعون نصا و ان كان دخل فى الاول ضمنا اغلاظا فزاد فرعون فى الاستهزأبه فلما راهم موسى لم يتعظوا اغلظ فى الثالث بقوله ان كنتم تعقلون و مثال

في وصف الكتاب اتينا فهو ابلغ من كل موضع ذكر فيه اوتوا لان اوتوا قد يقال اذا اوتى من لم يكن منه قبول واتيناهم يقال فيمن كان منه قبول و من ذلك السنة و العام قال الراغب الغالب استعمال السنة في الحول الذي فيه الشدة و الجدب و لهذا يعبر عن الجدب بالسنة و العام ما فيه الرخا و الخصب و بهذا يظهر النكتة في قوله الف سنة الا خمسين عاما حيث عبر عن المستثنى بالعام و عن المستثنى منه بالسنة قاعدة في السوال و الجواب الاصل في الجواب ان يكون مطابقا للسوال اذا كان السوال متوجها و قد يعدل في الجواب عما يقتضيه السوال تنبيها على انه كان من حق السوال ان يكون كذلك و يسميه السكاكي اسلوب الحكيم و قد يجي الجواب اعم من السوال للحاجة اليه في السوال و قد يجي انقص لاقتضاء الحال ذلك مثال ما عدل عنه قوله تعالى يسالونك عن الاهلة قل هي مواقيت للناس و الحج سالوا عن الهلال لم يبدوا دقيقا مثل الخيط ثم يتزايد قليلا قليلا حتى يمتلى ثم لا يزال ينقص حتى يعود كما بدا فاجيبوا ببيان حكمة ذلك تنبيها على ان الاهم السوال عن ذلك لما سئلوا عنه كذا قال السكاكي و متابعوه و استرسل التفتازاني في الكلام الى ان قال لانهم ليسوا ممن يطلع على دقايق الهيئة بسهولة و اقول ليت شعري من اين لهم ان السوال انما وقع عن غير ما حصل الجواب به و ما المانع من ان يكون انما وقع عن حكمة ذلك ليعلموها فان نظم الآية محتمل لذلك كما انه محتمل لما قالوه و الجواب ببيان الحكمة دليل على ترجيح الاحتمال الذي قلناه و قرينة ترشد الى ذلك اذ الاصل في الجواب المطابقة للسوال و الخروج عن الاصل يحتاج الى دليل و لم يرد

قال الجويني لا يكاد اللغويون يفرقون بينهما فظهر لي بينهما فرق يبني عن بلاغة كتاب الله و هو ان الايتاء اقوى من الاعطاء في اثبات مفعوله لان الاعطاء له مطاوع تقول اعطاني فعطوت و لا يقال في الايتاء اتاني فاتيت و انما يقال اتاني فاخذت و الفعل الذي له مطاوع اضعف في اثبات مفعوله من الذي لا مطاوع له لانك تقول قطعته فانقطع فيدل على ان فعل الفاعل كان موقوفا على قبول في المحل لولاه ما ثبت المفعول و لهذا يصح قطعته فما انقطع و لا يصح فيما لا مطاوع له ذلك فلا يجوز ضربته فانضرب او فما انضرب و لا قتلته فانقتل ولا فما انقتل لان هذه افعال اذا صدرت من الفاعل ثبت لها المفعول في المحل والفاعل مستقل بالافعال التي لا مطاوع لها فالايتاء اقوى من الاعطاء قال و قد تفكرت في مواضع من القرآن فوجدت ذلك مراعى قال تعالى توتي الملك من تشاء لان الملك شيء عظيم لا يعطاه الا من له قوة و كذا توتي الحكمة من تشاء ايتناك سبعا من المثاني لعظم القرآن و شانه و قال انا اعطيناك الكوثر لانه مورود في الوقف موتحل عنه قريبا الى منازل الغرفي الجنة فعبر فيه بالاعطاء لانه يترك عن قريب و ينتقل الى ما هو اعظم منه و كذا يعطيك ربك فترضى لما فيه من تكرر الاعطاء و الزيادة الى ان يرضى كل الرضاء و هو مفسر ايضا بالشفاعة وهي نظير الكوثر في الانتقال بعد انقضاء الحاجة منه و كذا اعطى كل شيء خلقه لتكرر حدوث ذلك باعتبار الموجودات حتى يعطوا الجزية لانها موقوفة على قبول منا وانما يعطونها عن كره فائدة قال الراغب خص دفع الصدقة في القرآن بالايتاء نحو اقاموا الصلاة و اتوا الزكاة و اقام الصلاة و ايتاء الزكاة قال و كل موضع ذكر

و السقى ان يعطيه ما يشرب و من ذلك عمل و فعل فالاول لما كان مع امتداد زمان نحو يعملون له ما يشاء مما عملت ايدينا لان خلق الانعام و الثمار و الزروع بامتداد و الثاني بخلافه نحو كيف فعل ربك باصحاب الفيل كيف فعل ربك بعاد و كيف فعلنا بهم لانها اهلاكات وقعت من غير بطوء و يفعلون ما يومرون اي في طرفة عين ولهذا عبر بالاول في قوله و عملوا الصالحات حيث كان المقصود المثابرة عليها لا الاتيان بها مرة او بسرعة و بالثاني في قوله و افعلوا الخير حيث كان بمعنى سارعوا كما قال فاستبقوا الخيرات و قوله و الذين هم للزكاة فاعلون حيث كان القصد ياتون بها على سرعة من غير توان و من ذلك القعود و الجلوس و الاول لما فيه كنت لبث بخلاف الثاني و لهذا يقال قواعد البيت و لا يقال جوالسته للزومها و لبثها و يقال جليس الملك و لا يقال قعيده لان مجالس الملوك يستحب فيها التخفيف و لهذا استعمل الاول في قوله مقعد صدق للاشارة الى انه لا زوال له بخلاف تفسحوا فى المجلس لانه تجلس فيه زمانا يسيرا و من ذلك التمام و الكمال و قد اجتمعا في قوله اكملت لكم دينكم و اتممت عليكم نعمتي فقيل الاتمام لا زالة نقصان الاصل و الاكمال لا زالة نقصان العوارض بعد تمام الاصل و لهذا كان قوله تلك عشرة كاملة احسن من تامة فان التمام من العدد قد علم و انما نفي احتمال نقص في صفاتها و قيل ثم يشعر بحصول نقص قبله و كمل لا يشعر بذلك و قال العسكري الكمال اسم لاجتماع ابعاض الموصوف به و التمام اسم للجزء الذي يتم به الموصوف و لهذا يقال القافية تمام البيت و لا يقال كماله و يقولون البيت بكماله اي باجتماعه و من ذلك الاعطاء و الايتاء

بان الضن اصله يكون بالعواري و البخل بالهبات ولهذا يقال هو ضنين بعلمه و لا يقال بخيل لان العلم بالعارية اشبه منه بالهبة لان الواهب اذا وهب شيئا خرج عن ملكه بخلاف العارية و لهذا قال الله تعالى و ما هو على الغيب بضنين و لم يقل ببخيل و من ذلك السبيل و الطريق و الاول اغلب وقوعا فى الخير و لا يكاد اسم الطريق يراد به الخير الا مقترنا بوصف او اضافة تخلصه لذلك كقوله يهدى الى الحق و الى طريق مستقيم و قال الراغب السبيل الطريق التي فيها سهولة فهو اخص و من ذلك جاراتى و الاول يقال فى الجواهر و الاعيان و الثاني فى المعاني و الازمان و لهذا ورد جاء في قوله و لمن جاء به حمل بعير و جاوا على قميصه بدم وجئ يومئذ بجهنم و اتى في اتى امر الله اتاها امرنا و اما و جاء ربك اي امره فان المراد به اهوال القيمة المشاهدة و كذا جاء اجلهم لان الاجل كالمشاهدة ولهذا عبر عنه بالحضور في قوله حضرة الموت و لهذا فرق بينهما في قوله جئناك بما كانوا فيه يمترون و اتيناك بالحق لان الاول العذاب و هو مشاهد مرئي بخلاف الحق و قال الراغب الاتيان مجئ بسهولة فهو اخص من مطلق المجئ قال و منه قيل للسبيل المار على وجهه اتى و اتارى و من ذلك مد و امد قال الراغب اكثر ما جاء الامداد فى المحبوب نحو و امددناهم بفاكهة و المد فى المكروه نحو و نمد له من العذاب مدا و من ذلك سقى و اسقى فالاول لما لا كلفة فيه و لهذا ذكر في شراب الجنة نحو و سقاهم ربهم شرابا و الثاني لما فيه كلفة و لهذا ذكر في ماء الدنيا نحو لاسقيناهم ماء غدقا و قال الراغب الاسقاء ابلغ من السقى لان الاسقاء ان يجعل له ما يستقى منه و يشرب

عز الدين وبشر الذين آمنوا وعملوا الصالحات ان لهم جنات و تارة يحتمل الامرين فيحتاج الى دليل بعين احدهما و اما مقابلة الجمع بالمفرد فالغالب ان لا يقضي تفخيم المفرد و قد يقتضيه كما في قوله و على الذين يطيقونه فدية طعام مسكين المعنى على كل واحد لكل يوم طعام مسكين و الذين يرمون المحصنات ثم لم يأ توا باربعة شهداء فاجلدوهم ثمانين جلدة لانه على كل واحد منهم ذلك قاعدة في الفاظ يظن بها الترادف ليست منه ذلك الخوف و الخشية لا يكاد اللغوي يفرق بينهما و لا شك ان الخشية اعلا منه و هي اشد الخوف فانها ماخوذة من قولهم شجرة خشية اي يابسة و هو فوات بالكلية والخوف من فاته خوفا اي بها داء هو نقص و ليس بفوات ولذلك خصت الخشية بالله في قوله تعالى يخشون ربهم ويخافون سوء الحساب و فرق بينهما ايضا بان الخشية تكون من عظم المخشى و ان كان الخاشى قويا و الخوف يكون من ضعف الخائف و ان كان المخوف امرا يسيرا و يدل لذلك ان الخاء و الشين و الياء في تقاليبها تدل على العظمة نحو شيخ للسيد الكبير و خيش لما غلظ من اللباس ولذا وردت الخشية غالبا في حق الله نحو من خشية الله انما يخشى الله من عباده العلماء و اما يخافون ربهم من فوقهم ففيه لطيفة فانه في وصف الملائكة و لما ذكر قوتهم و شدة خلقهم عبر عنهم بالخوف لبيان انهم و ان كانوا غلاظا شدادا فهم بين يديه تعالى ضعفاء ثم اردفه بالفوقية الدالة على العظمة فجمع بين الامرين و لما كان ضعف البشر معلوما لم يحتج الى التنبيه عليه و من ذلك الشح و البخل و الشح هو اشد البخل قال الراغب الشح بخل مع حرص و فرق العسكري بين البخل و الضن

بالقصر كمعا و قيل انى كقرد وقيل انوة كفرقة الصياصي جمع صيصة
مناساة جمع مناسي الحرور جمعه حرور بالضم غرابيب جمع غريب
اتراب جمع ترب الالى جمع الى كمعا و قيل الى كقفا و قيل الى
كقرد وقيل الو التراقي جمع ترقوة بفتح اوله الامشاج جمع مشج
الفافا جمع لف بالكسر العشار جمع عشر الخنس جمع خانسة و كذا
الكنس الزبانية جمع زبينة و قيل زابن و قيل زاني اشتات جمع شتى
و شتيت ابابيل لا واحد له و قيل واحدة ابول مثل عجوك و قيل
ابيل مثل اكليل فائدة ليس فى القرآن من الالفاظ المعدولة الالفاظ
العدد مثنى و ثلاث و رباع و من غيرها طوى فيما ذكره الاخفش فى
الكتاب المذكور و من الصفات آخر في قوله تعالى و آخر متشابهات
قال الراغب و غيره و هي معدولة عن تقدير ما فيه الالف و اللام وليس
له نظير في كلامهم فان افعل اما ان يذكر معه من لفظا او تقديرا
فلا يثنى ولا يجمع و لا يونث او يحذف منه من فتدخل عليه الالف
و اللام و يثنى و يجمع و هذه اللفظة من بين اخواتها جوز فيها ذلك
من غير الالف و اللام و قال الكرماني فى الآية المذكورة لا يمتنع كونها
معدولة عن الالف و اللام مع كونها وصفا لنكرة لان ذلك مقدر من وجه
غيرمقدر من وجه قاعدة مقابلة الجمع بالجمع تارة يقتضي مقابلة كل
فرد من هذا بكل فرد من هذا نقوله و استغشوا ثيابهم اي استغشى
كل منهم ثوبه حرمت عليكم امهاتكم اي على كل من المخاطبين
امه يوصيكم الله في اولادكم اي كلا في اولاده و الوالدات يرضعن اولادهن
اي كل واحدة ترضع ولدها و تارة تقتضي ثبوت الجمع لكل فرد من
افراد المحكوم عليه نحو فاجلدوهم ثمانين جلدة و جعل منه الشيخ

و العذب فلهذا حسن تثنية المشرق و المغرب في هذه السورة و جمعا في قوله فلا اقسم برب المشارق و المغارب انا لقادرون و في سورة الصافات للدلالة على سعة القدرة و العظمة فائدة حيث ورد البار مجموعا في صفة الآدميين قيل ابرار و في صفة الملائكة قيل بررة ذكره الراغب و وجهه بان الثاني ابلغ لانه جمع بار و هو ابلغ من بر مفردا لاول و حيث ورد الاخ مجموعا في النسب قيل اخوة و في الصداقة قيل اخوان قاله ابن فارس وغيره و اورد عليه في الصداقة انما المومنون اخوة و في النسب او اخوانهن او بني اخوانهن او بيوت اخوانكم فائدة الف ابو الحسن الاخفش كتابا في الافراد والجمع في القرآن ذكر فيه جميع ما وقع في القرآن مفردا و ما وقع فيه جمعا و اكثره من الواضحات و هذه امثلة من خفي ذلك المن جمع لا واحد له السلوى لم يسمع له بواحد النصارى قيل جمع نصراني و قيل جمع نصير كنديم و قيل العوان جمعه عون الهدى لا واحد له الاعصار جمع اعاصير الانصار واحده نصير كشريف و اشراف الازلام واحدها زلم و يقال زلم بالضم مدرار جمعه مدارير اساطير واحده اسطورة و قيل اسطار جمع سطر الصور قيل جمع صورة و قيل واحد الاصوار فرادى جمع افراد جمع فرد قنوان جمع قنو و صنوان جمع صنو و ليس في اللغة جمع مثنى بصيغة واحدة الاهذان و لفظ ثالث لم يقع في القرآن قاله ابن خالويه في كتاب ليس الحوايا جمع حاوية و قيل حاويا نشرا جمع نشور عضين و عزين جمع عضة وعزة المثاني جمع مثنى تارة جمعها تارات و تير ايقاظ جمع يقظ الاريك جمع اريكة سرى جمع سريان كحضى و حضيان اناء الليل جمع انا

افراد النار حيث وقعت والجنة وقعت مجموعة ومفردة لان الجنان مختلفة الانواع فحسن جمعها و النار مادة واحدة و لان الجنة رحمة و النار عذاب فناسب جمع الاولى و افراد الثانية على حد الرياح و الريح و من ذلك افراد السمع و جمع البصر لان السمع غلب عليه المصدرية فافرد بخلاف البصر فانه اشتهر فى الجارحة و لان متعلق السمع الاصوات و هي حقيقة واحدة و متعلق البصر الالوان و الاكوان و هي حقائق مختلفة فاشار في كل منهما الى متعلقه و من ذلك افراد الصديق و جمع الشافعين في قوله فما لنا من شافعين و لا صديق حميم و حكمته كثرة الشفعاء فى العادة و قلة الصديق قال الزمخشري الا ترى ان الرجل اذا امتحن بارهاق ظالم نهضت جماعة و افرده من اهل بلدة بشفاعته رحمة و ان لم يسبق له باكثرهم معرفة و اما الصديق فاغر من بيض الانوق و من ذلك الالباب لم يقع الا مجموعا لان مفرده ثقيل لفظا و من ذلك مجئ المشرق و المغرب بالافراد و التثنية وبالجمع فحيث افردا فاعتبار الجهة و حيث ثنيا فاعتبار المشرق الصيف و الشتا و مغربهما و حيث جمعا فاعتبار العدد المطالع في كل فصل من فصلى السنة و اما وجه اختصاص كل موضع بما وقع فيه ففي سورة الرحمن ورد بالتثنية لان سياق السورة سياق المزدوجين فانه سبحانه ذكرا و لا نوعى الايجاد و هما الخلق و التعليم ثم ذكر سراجى العالم الشمس و القمر ثم نوعى النبات ما كان على ساق و ما لا ساق له و هما النجم و الشجر ثم نوعى السماء و الارض ثم نوعى العدل و الظلم ثم نوعى الخارج من الارض و هما الحبوب والرياحين ثم نوعى المكلفين وهما الانس و الجان ثم نوعى المشرق والمغرب ثم نوعى البحر الملح

وغيره عن ابيّ بن كعب قال كل شيء في القرآن من الرياح فهي رحمة وكل شيء من الريح فهو عذاب ولهذا ورد في الحديث اللهم اجعلها رياحا ولا تجعلها ريحا وذكر في حكمة ذلك ان رياح الرحمة مختلفة الصفات والهيات والمنافع واذ اهاجت منها ريح اثير لها من مقابلها ما يكسر سورتها فينشأ من بينهما ريح لطيفة تنفع الحيوان والنبات فكانت في الرحمة رياحا واما في العذاب فانها تاتي من وجه واحد ولا معارض لها ولا دافع وقد خرج عن هذه القاعدة قوله تعالى في سورة يونس وجرين بهم بريح طيبة وذلك لوجهين لفظي وهو المقابلة في قوله جاءتها ريح عاصف ورب شيء يجوز في المقابلة ولا يجوز استقلالا نحو ومكروا ومكر الله ومعنوي وهو ان تمام الرحمة هناك انما يحصل بوحدة الريح لا باختلافها فان السفينة لا تسير الا بريح واحدة من وجه واحد فاذا اختلفت عليها الرياح كان سبب الهلاك فالمطلوب هناك ريح واحدة ولهذا اكد هذا المعنى بوصفها بالطيب وعلى ذلك ايضا جرى قوله ان يشاء يسكن الريح فيظللن رواكد وقال ابن المنير انه على القاعدة لان سكون الريح عذاب وشدة على اصحاب السُفن ومن ذلك افراد النور وجمع الظلمات وافراد سبيل الحق وجمع سبل الباطل في قوله ولا تتبعوا السبل فتفرق بكم عن سبيله لان طريق الحق واحدة وطريق الباطل متشعبة متعددة والظلمات بمنزلة طريق الباطل والنور بمنزلة طريق الحق بل هما هما ولهذا وحد ولى المومنين وجمع اولياء الكفار لتعددهم في قول الله ولى الذين امنوا يخرجهم من الظلمات الى النور والذين كفروا اولياؤهم الطاغوت يخرجونهم من النور الى الظلمات ومن ذلك

آية و هو الذي في السماء اله فقد اجاب عنها الطيبي بانها من باب التكرير لا فاطة امر زائد بدليل تكرير ذكر الرب فيها قبله من قوله سبحان رب السموات و الارض رب العرش و وجهه الاطناب في تنزيهه تعالى عن نسبة الولد اليه و شرط القاعدة ان لا يقصد التكرير و قد ذكر الشيخ بهاء الدين في آخر كلامه ان المراد بذكر الاسم مرتين كونه مذكورا في كلام واحد او كلامين بينهما تواصل بان يكون احدهما معطوفا على الاخر اوله به تعلق ظاهر و تناسب واضح و ان تكونا من متكلم واحد و دفع بذلك ايراد آية القتال لان الاول فيها محكي عن قول السائل والثاني محكي من كلام النبي صلى الله عليه وسلم قاعدة في الافراد والجمع من ذلك السماء و الارض حيث وقع في القرآن ذكر الارض فانها مفردة و لم تجمع بخلاف السموات لثقل جمعها و هو ارضون و لهذا لما اريد ذكر جمع الارضين قال و من الارض مثلهن و اما السماء فذكرت تارة بصيغة الجمع و تارة بصيغة الافراد لنكت تليق بذلك المحل كما اوضحته في اسرار التنزيل و الحاصل انه حيث اريد العدد اتى بصيغة الجمع الدالة على سعة العظمة و الكثرة نحو سبح لله ما في السموات اي جميع سكانها على كثرتهم تسبح له السموات اي كل واحدة على اختلاف عددها قل لا يعلم من في السموات و الارض الغيب الا الله اذ المراد نفي علم الغيب عن كل من هو في واحدة واحدة من السموات و حيث اريد الجهة اتى بصيغة الافراد نحو و في السماء رزقكم أ امنتم من في السماء ان يخسف بكم الارض اي من فوقكم و من ذلك الريح ذكرت مجموعة و مفردة فحيث ذكرت في سياق الرحمة جمعت او في سياق العذاب افردت اخرج ابن ابي حاتم

الثواب ان النفس بالنفس اي القاتلة بالمقتولة وكذا ساير الاية الحر بالحر الاية هل اتى على الانسان حين من الدهر ثم قال انا خلقنا الانسان من نطفة فان الاول آدم و الثاني ولده و كذلك انزلنا اليك الكتاب فالذين اتيناهم الكتاب يومنون به فان الاول القرآن و الثاني التوراة و الانجيل و منها فى القسم الثاني و هو الذي فى السماء اله و فى الارض آله يسألونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير فان الثاني فيهما هو الاول و هما نكرتان و منها فى القسم الثالث ان يصالحا بينهما و الصلح خير و يؤت كل ذي فضل فضله و يزدكم قوة الى قوتكم ليزدادوا ايمانا مع ايمانهم زدناهم عذابا فوق العذاب وما يتبع اكثرهم الا ظنا ان الظن لا يغني فان الثاني فيهما غير الاول واقول الانتقاض بشئ من ذلك عند التامل فان اللام فى الاحسان للجنس فيهما يظهر و حينئذ يكون فى المعنى كالنكرة و كذا آية النفس و الحر بخلاف آية العسر فان ال فيها اما للعهد او للاستغراق كما يفيده الحديث و كذا آية الظن لا نسلم ان الثاني فيها غير الاول بل هو عينه قطعا اذ ليس كل ظن مذموما كيف و احكام الشريعة ظنية و كذا آية الصلح لا مانع من ان يكون المراد منها الصلح المذكور و هو الذي بين الزوجين و استحباب الصلح في ساير الامور يكون ماخوذا من السنة او من الاية بطريق القياس بل لا يجوز القول بعموم الآية و ان كل صلح خير لان ما احل حراما من الصلح او حرم حلالا فهو ممنوع و كذا آية القتال الذي ليس الثاني فيها عين الاول بلاشك لان المراد بالاول المسئول عنه القتال الذي وقع في سريه بن الحضرمي سنة اثنتين من الهجرة لانه سبب نزول الآية و المراد بالثاني جنس القتال لاذاك بعينه واما

خلقكم من ضعف ثم جعل من بعد ضعف قوة ثم جعل من بعد قوة ضعفا و شيبة فان المراد بالضعف الاول النطفة و بالثاني الطفولية و بالثالث الشيخوخة و قال ابن الحاجب في قوله تعالى غدوها شهر و رواحها شهر الفائدة في اعادة لفظ الشهر الاعلام بمقدار زمن الغدو و زمن الرواح و الالفاظ التي تاتي مبينة للمقادير لا يحسن فيها الاضمار و لو اضمر فالضمير انما يكون لما تقدم باعتبار خصوصية فاذا لم يكن له وجب العدول عن المضمر الى الظاهر و قد اجتمع القسمان في قوله تعالى فان مع العسر يسرا ان مع العسر يسرا فالعسر الثاني هو الاول و لهذا قال صلى الله عليه و سلم في الآية لن يغلب عسر يسرين و ان كان الاولى نكرة و الثاني معرفة فالثاني هو الاول حملا على العهد نحو ارسلنا الى فرعون رسولا فعصى الرسول فيها مصباح المصباح في زجاجة الزجاجة الى صراط مستقيم صراط الله ما عليهم من سبيل انما السبيل و ان كان الاول معرفة و الثاني نكرة فلا يطلق القول بل يتوقف على القراين فتارة تقوم قرينة على التغاير نحو و يوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير ساعة يسألك اهل الكتاب ان تنزل عليهم كتابا و لقد آتينا موسى الهدى و اورثنا بني اسرائيل الكتاب هدى قال الزمخشري المراد بالهدى جميع ما اتاه من الدين و المعجزات و الشرايع و هدى الارشاد و تارة تقوم قرينة على الاتحاد نحو و لقد ضربنا للناس في هذا القران من كل مثل لعلهم يتذكرون قرانا عربيا تنبيه قال الشيخ بهاء الدين في عروس الافراح وغيره الظاهر ان هذه القاعدة غير محررة فانها منتقضة بآيات كثيرة منها في القسم الاول هل جزاء الاحسان الا الاحسان فانهما معرفتان و الثاني غير الاول فان الاول العمل و الثاني

امره اي كل امر لله فائدة سئل عن الحكمة في تنكير احد و تعريف الصمد من قوله تعالى قل هو الله احد الله الصمد والفت في جوابه تاليفا مودعا في الفتاوي وحاصله ان في ذلك اجوبة احدها انه نكر للتعظيم و الاشارة الى ان مدلوله وهو الذات المقدسة غير ممكن تعريفها و الاحاطة بها الثاني انه لايجوز ادخال آل عليه كغيره وكل وبعض وهو فاسد فقد قرى شاذا قل هو الله الاحد الله الواحد الصمد حكي هذه القراة ابو حاتم في كتاب الزينة عن جعفر بن محمد الثالث و هو مما خطر لي ان هو مبتداء و الله خبر و كلاهما معرفة فاقتضى الحصر فعرف الجزآن في الله الصمد لافادة الحصر لتطابق الجملة الاولى و استغنى عن تعريف احد فيها لافادة الحصر بدونه فاتى به على اصله من التنكير على انه خبرتان و ان جعل الاسم الكريم مبتداء واحد خبره ففيه من ضمير الشان ما فيه من التفخيم و التعظيم فاتى بالجملة الثانية على نحو الاولى بتعريف الخبرين للحصر تفخيما و تعظيما قاعدة اخرى تتعلق بالتعريف و التنكير اذا ذكر الاسم مرتين فله اربعة احوال لانه اما ان يكونا معرفتين او نكرتين او الاول نكرة و الثاني معرفة او بالعكس فان كانا معرفتين فالثاني هو الاول غالبا حملا له على المعهود الذي هو الاصل في اللام او الاضافة نحو اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم فاعبد الله مخلصا له الدين الا لله الدين الخالص و جعلوا بينه و بين الجنة نسبا و لقد علمت الجنة و فهم السئات و من تتق السئات لعلى ابلغ الاسباب اسباب السموات و ان كانا نكرتين فالثاني غير الاول غالبا و الا لكان المناسب هو التعريف بناء على كونه معهودا سابقا نحو الله الذي

خلق الله فاروني ماذا خلق الذين من دونه وللتعريض بغباوة السامع حتى انه لا يتميز له الشيء الا باشارة الحس و هذه الاية تصلح لذلك و لبيان حاله في القرب و البعد فيوتي في الاول بنحو هذا و في الثاني بنحو ذلك و اولئك و لقصد تحقيره بالقرب كقول الكفار اهذا الذي يذكر الهتكم ا هذا الذي بعث الله رسولا ما ذا اراد الله بهذا مثلا و كقوله تعالى و ما هذه الحياة الدنيا الا لهو و لعب و لقصد تعظيمه بالبعد نحو ذلك الكتاب لا ريب فيه ذهابا الى بعد درجته و للتنبيه بعد ذكر المشار اليه باوصاف قبله على انه جدير بما يرد بعده من اجلها نحو اولئك على هدى من ربهم و اولئك هم المفلحون و بالموصولية لكراهة ذكره بخاص اسمه اما ستراً عليه او اهانة له اولغير ذلك فيوتي بالذي و نحوها موصولة بما صدر منه من فعل او قول نحو و الذي قال لوالديه اف لكما و راودته التي هو في بيتها و قد يكون لارادة العموم نحو ان الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا الاية والذين جاهدوا فينا لنهدينهم سبلنا ان الذين يستكبرون عن عبادتي سيدخلون جهنم للاختصار نحو لا تكونوا كالذين آذوا موسى فبرّأهُ الله مما قالوا اي قولهم انه آذوا اذ لو عدد اسماء القائلين لطال و ليس للعموم لان بني اسرائيل كلهم لم يقولوا في حقه ذلك و بالالف و اللام للاشارة الى معهود خارجي او ذهني او حضوري و للاستغراق حقيقة او مجازا و لتعريف الماهية و قد مرت امثلتها في نوع الادوات بالاضافة لكونها اخصر طريق و لتعظيم المضاف نحو ان عبادي ليس لك عليهم سلطان ولايرضي لعبادة الكفر اي الاصفياء في الآيتين كما قاله ابن عباس و غيره ولقصد العموم نحو فليحذر الذين يخالفون عن

بدليل ان يتبعون الا الظن من اي شيء خلقه اي من شيء حقير مهين ثم بينه بقوله من نطفة خلقه السادس التقليل نحو و رضوان من الله اكبر اي رضوان قليل منه اكبر من الجنات لانه راس كل سعادة قليل منك يكفيني و لكن قليلك لا يقال له قليل و جعل منه الزمخشري سبحان الذي اسرى بعبده ليلا اي ليلا قليلا اي بعض ليل و اورد عليه ان التقليل رد الجنس الى فرد من افراده لا تنقيص فرد الى جزء من اجزائه و اجاب في عروس الافراح بانا لا نسلم ان الليل حقيقة في جميع الليلة بل كل جزء من اجزائها يسمى ليلا وعد السكاكي من الاسباب ان لا يعرف من حقيقته الا ذلك و جعل منه ان تقصد التجاهل و انك لا تعرف شخصه كقولك هل لكم في حيوان على صورة انسان يقول كذا و عليه من تجاهل الكفار هل ندلكم على رجل ينبيكم كانهم لا يعرفونه وعد غيره منها قصد العموم بان كانت في سياق النفي نحو لا ريب فيه فلا رفث الآية او الشرط نحو و ان احد من المشركين استجارك او الاتيان نحو و انزلنا من السماء ماء طهورا و اما التعريف فله اسباب فبالاضمار لان المقام مقام التكلم او الخطاب او الغيبة و بالعلمية لاحضاره بعينه في ذهن السامع ابتداء باسم مختص به نحو قل هو الله احد محمد رسول الله او لتعظيم او اهانة حيث علمه يقتضي ذلك فمن التعظيم ذكر يعقوب بلقبه اسرائيل لما فيه من المدح و التعظيم بكونه صفوة الله او اسرى الله على ما سياتي في معناه في الالقاب و من الاهانة قوله تبت يدا ابي لهب و فيه ايضا نكتة اخرى و هي الكناية عن كونه جهنميا و بالاشارة لتمييزه اكمل تمييز باحضاره في ذهن السامع حسا نحو هذا

كان معناهما واحدا كان اثبات التاء احسن من تركها لانها ثابتة فيما هو من معناه و اما فريقا هدى الآية فالفريق مذكر و لو قال فريق ضلوا لكان بغير تاء و قوله حق عليهم الضلالة في معناه فجاء بغير تاء و هذا اسلوب لطيف من اساليب العرب ان يدعوا حكم اللفظ الواجب في قياس لغتهم اذا كان في مرتبة كلمة لا يجب لها ذلك الحكم قاعدة في التعريف و التنكير اعلم ان لكل منهما مقاما لا يليق بالاخر اما التنكير فله اسباب احدها ارادة الواحد نحو و جاء رجل من اقصى المدينة يسعى اي رجل واحد و ضرب الله مثلا رجلا فيه شركاء متشاكسون و رجلا سالما لرجل الثاني ارادة النوع نحو هذا ذكر اي نوع منها من الذكر و على ابصارهم غشاوة اي نوع غريب من الغشاوة لا يتعارفه الناس بحيث غطى ما لا يغطيه شيء من الغشاوات و لتجدنهم احرص الناس على حيوة اي نوع منها و هو الازدياد في المستقبل لان الحرص لا يكون على الماضي و لا على الحاضر و يحتمل الوحدة و النوعية معا قوله و الله خلق كل دابة من ماء اي كل نوع من انواع الدواب من نوع من انواع الماء و كل فرد من افراد الدواب من فرد من افراد النطف الثالث التعظيم بمعنى انه اعظم من ان يعين و يعرف نحو فاذنوا بحرب اي حرب و لهم عذاب اليم و سلام عليه يوم ولد سلام على ابراهيم ان لهم جنات الرابع التكثير نحو اين لنا لاجرا اي وافرا جزيلا و يحتمل التعظيم و التكثير معا و ان يكذبوك فقد كذبت رسل اي رسل عظام ذو عدد كثير الخامس التحقير بمعنى انحطاط شانه الى حد لا يمكن ان يعرف نحو ان نظن اي ظنا حقيرا لا يعبأ به و الا لا تبعوه لان ذلك ديدنهم

غالبا الا ان وقع فصل و كلما كثر الفصل احسن نحو فمن جاءه موعظة
من ربه قد كان لكم آية فان كثر الفصل ازداد حسنا نحو و اخذ الذين
ظلموا الصيحة و الاثبات ايضا حسن نحو و اخذت الذين ظلموا الصيحة
فجمع بينهما في سورة هود و اشار بعضهم الى ترجيح الحذف
و استدل عليه بان الله قدمه على الاثبات حيث جمع بينهما و يجوز
الحذف ايضا مع عدم الفصل حيث الاسناد الى ظاهره فان كان الى
ظاهره فان كان الى ضميره امتنع و حيث وقع ضمير او اشارة بين
مبتداء و خبر احدهما مذكر و الاخر مونث جاز فى الضمير والاشارة
التذكير و التانيث كقوله تعالى قال هذا رحمة من ربي فذكرو الخبر
مونث لتقدم المسند و هو مذكر و قوله تعالى فذانك برهانان من
ربك ذكروا لمشار اليه اليد و العصا و هما مونثان لتذكير الخبر و هو
برهانان و كل اسماء الاجناس يجوز فيها التذكير حملا على الجنس
و التانيث حملا على الجماعة كقوله اعجاز نخل خاوية اعجاز نخل
منقعر ان البقر تشابه علينا و قوي تشابهت السماء منفطر به اذا
السماء انفطرت و جعل منه بعضهم جاءتها ريح عاصف و لسليمان
الريح عاصفة و قد سئل ما الفرق بين قوله تعالى فمنهم من هدى الله
و منهم من حقت عليه الضلالة و قوله فريقا هدى و فريقا حق عليهم
الضلالة واجيب بان ذلك لوجهين لفظي وهو كثرة حروف الفاصل فى
الثاني و الحذف مع كثرة الحواجز اكثر و معنوي و هو ان من في
قوله من حقت راجعة الى الجماعة و هي مونثة لفظا بدليل ولقد
بعثنا في كل امة رسولا ثم قال و منهم من حقت عليه الضلالة اي
من تلك الامم و لو قال ضلت لتعينت التاء و الكلامان واحد و اذا

حملا على منعى ما ثم راعي اللفظ فذكر فقال و محرم انتهي قال ابن الحاجب في اماليه اذا حمل على اللفظ جاز الحمل بعده على المعنى و اذا حمل على المعنى ضعف الحمل بعده على اللفظ لان المعنى اقوي فلا يعيد الرجوع اليه بعد اعتبار اللفظ و يضعف بعد اعتبار المعنى القوي الرجوع الى الاضعف و قال ابن جني في المحتسب يجوز مراجعة اللفظ بعد انصرافه عنه الى المعنى و اورد عليه قوله تعالى و من يعش عن ذكر الرحمن نقيض له شيطانا فهو له قرين و انهم ليصدونهم عن السبيل و يحسبون انهم مهتدون ثم قال حتى اذا جاءنا فقد راجع اللفظ بعد الانصراف عنه الى المعنى و قال محمود بن حمزة في كتاب العجايب ذهب بعض النحويين الى انه لا يجوز الحمل على اللفظ بعد الحمل على المعنى و قد جاء في القران بخلاف ذلك و هو قوله خالدين فيها ابدا قد احسن الله له رزقا و قال ابن خالويه في كتاب ليس القاعدة في و نحوه الرجوع من اللفظ الى المعنى و من الواحد الى الجمع و من المذكر الى المونث نحو و من يقنت منكن لله و رسوله وتعمل صالحا و من اسلم وجهه الى قوله و لا خوف عليهم اجمع على هذا النحويون قال و ليس في كلام العرب ولا في شيء من العربية الرجوع من المعنى الى اللفظ الا في حرف واحد استخرجه ابن مجاهد و هو قوله تعالى و من يؤمن بالله و يعمل صالحا يدخله جنات الاية وحد في يومن و يعمل و يدخله ثم جمع في قوله خالدين ثم وجد في قوله احسن الله له فرجع بعد الجمع الى التوحيد قاعدة في التذكير و التانيث التانيث ضربان حقيقي و غيره فالحقيقي لا تحذف تاء التانيث من فعله

الذين كفروا فانها لا تعمي الابصار وفائدته الدلالة على تعظيم المخبر عنه وتفخيمه بان يذكر اولا مبهما ثم يفسر تنبيه قال ابن هشام متي امكن الحمل على ضمير الشان فلاينبغي ان يحمل عليه ومن ثم ضعف قول الزمخشري في انه يراكم ان اسم ان ضمير الشان والاولى كونه ضمير الشيطان ويؤيده قراة وقيله بالنصب وضمير الشان لا يعطف عليه قاعدة جمع العاقلات لا يعود عليه الضمير غالبا الا بصيغة الجمع سواء كان للقلة او للكثرة نحو والوالدات يرضعن والمطلقات يتربصن وورد افراد في قوله وازواج مطهرة ولم يقل مطهرات واما غير العاقل فالغالب في جمع الكثرة الافراد وفي القلة الجمع وقد اجتمعا في قوله ان عدة الشهور عند الله اثنى عشر شهرا الى ان قال منها اربعة حرم فاعاد منها بصيغة الافراد على الشهور وهي للكثرة ثم قال فلا تظلموا فيهن فاعاده جمعا على اربعة حرم وهي للقلة وذكر الفرا لهذه القاعدة سرا لطيفا وهو ان التميز مع جمع الكثرة وهو مازاد على العشرة لما كان واحدا وحد الضمير ومع القلة فهو العشرة فما دونها لما كان جمعا جمع الضمير قاعدة اذا اجتمع في الضمائر مراعاة اللفظ والمعني بدي باللفظ ثم بالمعنى هذا هو الجادة في القران قال الله تعالى ومن الناس من يقول ثم قال وماهم بمومنين افرد اولا باعتبار اللفظ ثم جمع باعتبار المعنى وكذا ومنهم من يستمع اليك وجعلنا على قلوبهم ومنهم من يقول ائذن لي ولا تفتني الا في الفتنة سقطوا قال الشيخ علم الدين العراقي ولم يجئ في القران البدأة بالحمل على المعنى الا في موضع واحد وهو قوله تعالى وقالوا ما في بطون هذه الانعام خالصة لذكورنا ومحرم على ازواجنا فانث خالصة

و ضمير جعل له تعالى وقد يخالف بين الضماير حذرا من التنافر نحو منها اربعة حرم الضمير للاثنى عشرثم قال فلا تظلموا فيهن اتي بصيغة ضمير الجمع مخالفا لعوده على الاربعة ضمير الفصل ضمير بصيغة المرفوع مطابق لما قباه تكاما و خطابا و غيبة وافرادا و غيره و انما تقع بعد مبتداء اوما اصله المبتداء و قيل خبر كذلك اسما نحو و اولئك هم المفلحون وانا لنحن الصافون كنت انت الرقيب عليهم تجدوه عند الله هو خيرا ان ترني انا اقل منك مالا هولاء بناتي هن اطهر لكم و جوز الاخفش و قوعه بين الحال وصاحبها و خرج عليه قرأة من اظهر بالنصب و جوز الجرجاني وقوعه قبل مضارع وجعل منه انه هو يبدئ و يعيد وجعل منه ابوالبقا و مكر اولئك هو يبور ولا محل لضمير الفصل من الاعراب وله ثلاث فوائد الاعلام بان ما بعده خبر لا تابع والتاكيد ولهذا سماه الكوفيون دعامة لانه يدعم به الكلام اي يقوي ويوكد ربئي عليه بعضهم انه لاتجمع بينه وبينه فلا يقال زيد نفسه هو الفاصل والاختصاص و ذكر الزمخشري الثلاثة في و اولئك هم المفلحون فقال فايدته الدلالة على ان ما بعده خبر لاصفة والتوكيد وايجاب ان فايدة المسند ثابة للمسند اليه دون غيره ضمير الشان و القصة ويسمي ضمير المجهول قال فى المغني خالف القياس من خمسة اوجه احدهما عوده على ما بعده لزوما اذ لا يجوز للجملة المفسرة له ان تتقدم عليه شيء و لا شيء منها الثاني ان مفسره لا يكون الا جملة و الثالث انه لا يتبع بتابع فلا يوكد و لا يعطف عليه ولايبدل منه والرابع انه لا يعمل فيه الا الابتداء او ناسخه والخامس انه ملازم للافراد و من امثلته قل هو الله احد فاذا هي شاخصة ابصار

في علم الله كونه و كان بمنزلة المشاهد الموجود قاعدة الاصل عوده على اقرب مذكور ومن ثم اخر المفعول الاول في قوله وكذلك جعلنا لكل نبي عدوا شياطين الانس و الجن يوحى بعضهم الى بعض ليعود الضمير عليه لقربه الا ان يكون مضاف و مضاف اليه فالاصل عوده للمضاف لانه المحدث عنه نحو و ان تعدوا نعمة الله لا تحصوها و قد يعود على المضاف اليه نحو الى آله موسى و اني لا اظنه كاذبا واختلف في او لحم خنزير فانه رجس فمنهم من اعاده على المضاف و منهم من اعاده الى المضاف اليه قاعدة الاصل توافق الضماير فى المرجع حذرا من التشتت و لهذا لما جوز بعضهم في ان اقذ فيه فى التابوت فاقذ فيه فى اليم ان الضمير فى الثاني للتابوت و فى الاول لموسى عابه الزمخشري و جعله تنافرا مخرجا للقرآن عن اعجازه فقال و الضماير كلها راجعة الى موسى و رجوع بعضها اليه و بعضها الى التابوت فيه هجنة لما يودي اليه من تنافر النظم الذي هو ام اعجاز القرآن و مراعاته اهم ما يجب على المفسر و قال في لتؤمنوا بالله و رسوله و تعززوه و توقروه و تسبحوه الضماير لله والمراد بتعزيزه تعزيز دينه و رسوله و من فرق الضماير فقد ابعد و قد يخرج عن هذا الاصل كما في قوله و لا تستفت فيهم منهم احدا فان ضمير فيهم لاصحاب الكهف و منهم لليهود قاله ثعلب و المبرد و مثله ولما جاءت رسلنا لوطا سيء بهم و ضاق بهم ذرعا قال ابن عباس ساء ظنا بقومه و ضاق بهم ذرعا باضيافه وقوله ان لا تنصروه الاية فيها اثنى عشر ضميرا كلها للنبي صلى الله عليه وسلم الا ضمير عليه فلصاحبه كما نقله السهيلي عن الاكثرين لانه صلى الله عليه و سلم لم تزل عليه السكينة

الكلالة فان كانتا اثنتين و لم يتقدم لفظ مثنى يعود عليه قال الاخفش لان الكلالة تقع على الواحد و الاثنين و الجمع فثنى الضمير الراجع اليها حملا على المعنى كما يعود الضمير جمعا على من حملا على معناه و قد يعود على لفظ شيء و المراد به الجنس من ذلك الشيء قال الزمخشري كقوله ان يكن غنيا او فقيرا فالله اولى بهما اي بجنسي الفقير و الغني لدلالة غنيا او فقيرا على الجنسين و لو رجع الى المتكلم به لوحده وقد يذكر مثلين و يعاد الضمير الى احدهما و الغالب كونه الثاني نحو و استعينوا بالصبر و الصلاة و انها لكبيرة فاعيد الضمير للصلاة و قيل للاستعانة المفهومة من استعينوا جعل الشمس ضياء و القمر نورا و قدره منازل اي القمر لانه الذي يعلم به الشهور و الله و رسوله احق ان يرضوه اراد يرضوهما فافرد لان الرسول هو داعي العباد و المخاطب لهم شفاها و يلزم من رضاه رضي ربه تعالى و قد يثنى الضمير و يعود على احد المذكورين نحو يخرج منهما اللؤلؤ و المرجان و انما يخرج من احدهما و قد يجيء الضمير متصلا بشيء و هو لغيره نحو و لقد خلقنا الانسان من سلالة من طين يعني آدم ثم قال ثم جعلناه نطفة فهذا لولده لان آدم لم يخلق من نطفة قلت هذا هو باب الاستخدام و منه لا تسالوا عن اشياء ان تبدلكم تسؤكم ثم قال قد سالها اي اشياء آخر مفهومة من لفظ اشياء السابقة و قد يعود الضمير على ملابس ما هو له نحو الاعشية او ضحاها او ضحى يومها لا ضحى العشية نفسها لانه لا ضحى لها و قد يعود على غير مشاهد محسوس و الاصل خلافه نحو اذا قضى امرا فانما يقول له كن فيكون فضمير له عايد على الامر و هو اذ ذاك غير موجود لانه لما كان سابقا

بعد تعذر المتصل بان يقع في الابتداء نحو اياك نعبد او بعد الا نحو امران لا تعبدوا الا اياه مرجع الضمير لا بدله من مرجع يعود اليه و يكون ملفوظا به سابقا مطابقا نحو و نادى نوح ابنه و عصى آدم ربه اذا اخرج يده لم يكد يراها او متضمنا له نحو اعدلوا هو اقرب فانه عايد على العدل المتضمن له اعدلوا و اذا حضر القسمة اولوا القربى و اليتامى و المساكين فارزقوهم منه اي المقسوم لدلالة القسمة عليه او دالا عليه بالالتزام نحو انا انزلناه اي القرآن لان الانزال يدل عليه التزاما فمن عفى له من اخيه شئ فاتباع بالمعروف و اداء اليه فعفى يستلزم عافيا اعيد عليه الهاء من اليه او متاخر لفظا لا رتبة مطابقا نحو فاوجس في نفسه خيفة موسى و لا يسال عن ذنوبهم المجرمون فيومئذ لا يسال عن ذنبه انس و لا جان او رتبة ايضا في باب ضمير الشان و القصة و نعم و بئس و التنازع او متاخرا دالا بالالتزام نحو فلو لا اذا بلغت الحلقوم فلا اذا بلغت الحلقوم كلا اذا بلغت التراقي اضمر الروح او النفس لدلالة الحلقوم و التراقي عليها حتى توارت بالحجاب اي الشمس لدلالة الحجاب عليها و قد يدل عليه السياق فيضمر ثقة بفهم السامع نحو كل من عليها فان ما ترك على ظهرها اي الارض او الدنيا و لابويه اي الميت و لم يتقدم له ذكر و قد يعود على لفظ المذكور دون معناه نحو و ما يعمر من معمر و لا ينقص من عمره اي عمر معمر آخر و قد يعود على بعض ما تقدم نحو يوصيكم الله في اولادكم الى قوله فان كن نساء و بعولتهن احق بردهن بعد قوله و المطلقات فانه خاص بالرجعيات و العايد عليه عام فيهن و في غيرهن و قد يعود على المعنى كقوله في آية

سواء للسائلين قرئي بالنصب على الحال وشاذا بالرفع اي هو وبالجر حملا على الايام وقيله يا رب قري بالنصب على المصدر وبالجر وتقدم توجيهه وشاذا بالرفع عطفا على علم الساعة ق القراة المشهورة بالسكون وقري شاذا بالفتح والكسر لما مرا لحبك فيه سبع قرات ضم الحاء والباء وكسرهما وفتحهما وضم الحاء وسكون الباء وضمها وفتح الباء وكسرها وسكون الباء وكسرها وضم الباء والحب ذوالعصف والريحان قري برفع الثلاثة ونصبها وجرها وحورعين كامثال اللؤلؤ المكنون قري برفعهما وجرهما ونصبهما بفعل مضمراي ويزوجون فائدة قال بعضهم ليس في القران على كثرة منصوباتة مفعول معه قلت في القران عدة مواضع اعرب كل منها مفعولا معه احدها وهو اشهرها قوله تعالى فاجمعوا امركم وشركاءكم اي اجمعوا انتم مع شركا ئكم امركم ذكره جماعة منهم الثاني قوله تعالى قوا انفسكم واهليكم نارا قال الكرماني في غرايب التفسير هو مفعول معه اي مع اهليكم الثالث قوله تعالى لم يكن الذين كفروا من اهل الكتاب والمشركين قال الكرماني يحتمل ان يكون قوله والمشركين مفعولا معه ومن الذين او من الواو في كفروا النوع الثاني والاربعون في قواعد مهمة يحتاج المفسر الى معرفتها قاعدة في الضماير الف ابن الانباري في بيان الضماير الواقعة في القرآن مجلدين واصل وضع الضمير للاختصار ولهذا قام قوله اعد الله لهم مغفرة واجرا عظيما مقام خمسة وعشرين كلمة لو اتى بها مظهرة وكذا قوله وقل للمومنات يغضضن من ابصارهن قال مكي ليس في كتاب الله آية اشتملت على ضماير اكثر منها فان فيها خمسة وعشرين ضميرا ومن ثم لا يعدل الى المنفصل الا

ذرية بعضها من بعض قري بتثليث الذال و اتقوا الله الذي تساء لون به و الارحام قري بالنصب عطفا على الجلالة وبالجر عطفا على ضميربه وبالرفع على الابتداء والخبر محذوف اي والارحام مما يجب ان تتقوه و ان تحتاطوا لانفسكم فيه لايستوي القاعدون من المومنين غير اولى الضرر قري بالرفع صفة القاعدون وبالجر صفة للمومنين و بالنصب على الاستثناء و امسحوا بروسكم وار جلكم قري بالنصب عطفا على الايدي وبالجر على الجوار او غيره وبالرفع على الابتداء او لخبر محذوف دل عليه ماقبله فجزاء مثل ماقتل من النعم قري بجر مثل باضافة جزاء اليه وبرفعه وتنوين مثل صفة له وبنصبه مفعول بجزاء والله ربنا قري بجر ربنا نعتاً او بدلا وبنصبه على النداء او باضمار امدح وبرفعه ورفع الجلالة مبتداء وخبرا ويذرك والهتك قري برفع يذرك ونصبه وجزمه للخفة فاجمعوا امركم وشركاء كم قري بنصب شركاءكم مفعولا معه أو معطوفا او بتقديرو ادعوا وبرفعه عطفا على ضمير فاجمعوا او مبتداء خبره محذوف وبجره عطفا على كم في امركم وكاين من آية في السموات والارض يمرون عليها قري بجر الارض عطفا على ماقبله وبنصبها من باب الاشتغال وبرفعها على الابتداء والخبر ما بعدها موعدك بملكنا قري بتثليث الميم وحرم على قرية قري بلفظ الماضي بفتح الراء وكسرها وضمها وبلفظ الوصف بكسر الراء وسكونها مع فتح الهاء وسكونها مع كسر الحاء وحرام بالفتح والف فهذه سبع قرآت كوكب درى قري بتثليث الدال ياسين القرأة المشهورة بسكون النون وقري شاذا بالفتح للخفة والكسر لالتقاء الساكنين وبالضم على النداء ولات حين مناص قري بنصب حين ورفعه وجره

سايرها و اما ابن الانباري فانه جنح الى تضعيف الروايات و معارضتها بروايات آخر عن ابن عباس وغيره بثبوت هذه الاحرف فى القرأة والجواب الاول اولى و اقعد ثم قال ابن اشته حدثنا ابو العباس محمد بن يعقوب ثنا ابوداؤد ثنا ابن الاسود ثنا يحيى ابن ادم عن عبد الرحمن ابن ابي الزناد عن ابيه عن خارجة بن زيد قال قولوا لزيد يا ابا سعيد او همت انما هي ثمانية ازواج من الضان اثنين اثنين ومن المعز اثنين اثنين ومن الابل اثنين اثنين ومن البقر اثنين اثنين فقال لان الله يقول فجعل منه الزوجين الذكر والانثى فهما زوجان كل واحد منهما زوج الذكر زوج والانثى زوج قال ابن اشته فهذا الخبر يدل على ان القوم كانوا يتخيرون اجمع الاحرف للمعاني و سهلها على الالسنة و اقربها فى الاخذ واشهرها عند العرب للكتاب فى المصاحف و ان الاخرى كانت قراة معروفة عند كلهم وكذا ما اشبه ذلك انتهي فائدة في ما قرئ بثلاثة اوجه الاعراب او البناء او نحو ذلك وقد رائت فيه تاليفا لطيفا لاحمد ابن يوسف بن مالك الرعيني سماه تحفة الاقران فيما قري بالتثليث من حروف القران الحمد لله قري بالرفع على الابتداء و النصب على المصدر و الكسر على اتباع الدال اللام في حركتها رب العالمين قري بالجر على انه نعت و بالرفع على القطع باضمار مبتداء وبالنصب عليه باضمار فعل او على النداء الرحمن الرحيم قريا بالثلاثة اثنتا عشرة عينا قري بسكون الشين و هي لغة تميم وكسرها و هي لغة الحجاز وفتحها وهي لغة بين المرء قري بتثليث الميم لغات فيه فبهت الذين كفر قرأة الجماعة بالبناء للفاعل بوزن ضرب و علم وحسن

الضحاك عن ابن عباس انه كان يقرأ و وصي ربك و يقول امر ربك انهما و او ان التصقت احداهما بالصاد واخرجه من طريق اخرى عن الضحاك انه قال كيف نقرأ هذا الحرف قال وقضى ربك قال ليس كذلك نقروها نحن ولا ابن عباس انما هي و وصي ربك وكذلك كانت تقرأ و تكتب فاستمد كاتبكم فاحتمل القلم مداد اكثيرا فالتزقت الواو بالصاد ثم قرأ ولقد وصينا الذين اوتوا الكتاب من قبلكم واياكم ان اتقوا الله ولو كانت قضى من الرب لم يستطع احد رد قضاء الرب ولكنه وصية اوصي بها العباد وما اخرجه سعيد ابن منصور وغيره من طريق عمرو بن دينار عن عكرمه عن ابن عباس انه كان يقرأ و لقد اتينا موسى و هارون الفرقان ضياء و نقول خذوا هذه الواو و اجعلواها هاهنا و الذين قال لهم الناس ان الناس قد جمعوا لكم الآية واخرجه ابن ابي حاتم من طريق الزبيربن خريت عن عكرمة عن ابن عباس قال اترعوا هذه الواو فاجعلوها فى الذين يحملون العرش و من حوله وما اخرجه ابن اشته و ابن ابي حاتم من طريق عطا عن ابن عباس في قوله تعالى مثل نوره قال هي خطاء من الكاتب هو اعظم من ان يكون نوره مثل نور المشكاة انما هي مثل نور المؤمن كمشكاة وقد اجاب ابن اشته عن هذه الاثار كلها بان المراد اخطاوا فى الاختيار وما هو الاولى لجمع الناس عليه من الاحرف السبعة لا ان الذي كتب خطا خارج عن القران قال فمعنى قول عايشة حرف الهجاء القي الى الكاتب هجاء غير ما كان الاولى ان يلقي اليه من الاحرف السبعة قال وكذا معنى قول ابن عباس كتبها وهو ناعس يعني فلم يتدبر الوجه الذي هو اولى من الاخر وكذا

بمعنى نعم فالذين آمنوا وما بعده في موضع رفع والصابيون عطف
عليه الخامس انه على اجرأ صيغة الجمع مجرى المفرد والنون
حرف الاعراب حكي هذه الاوجه ابو البقا تذنيب يقرب مما تقدم
عن عايشه ما اخرجه الامام احمد في مسنده وابن اشته في
المصاحف من طريق اسمعيل المكي عن ابي خلف مولى بني
جمح انه دخل مع عبيد بن عمير على عايشة فقال جئت اسالك
عن آية من كتاب الله كيف كان رسول الله صلى الله عليه وسلم
يقروها قالت اية اية قال الذين يوتون ما اتوا والذين ياتون ما اتوا
فقالت ايتهما احب اليك قلت والذي نفسي بيده لاحدهما
احب الىّ من الدنيا جميعا قالت ايهما قلت الذين ياتون ما اتوا
فقالت اشهد ان رسول الله صلى الله عليه وسلم كذلك كان يقروها
وكذلك انزلت ولكن الهجا حرف وما اخرجه ابن جرير وسعيد
بن منصور في سننه من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس
في قوله حتى تستانسوا وتسلموا قال انما هي خطاء من الكاتب
حتى تستاذنوا وتسلموا اخرجه ابن ابي حاتم بلفظ هو فيما احسب
مما اخطأت به الكتاب وما اخرجه ابن الانباري من طريق عكرمه
عن ابن عباس انه قرأ افلم يتبين الذين امنوا ان لو يشاء الله لهدي
الناس جميعا فقيل له انها في المصحف افلم ييأس فقال اظن
الكاتب كتبهما وهو ناعس وما اخرجه سعيد بن منصور من طريق
سعيد بن جبير عن ابن عباس انه كان يقول في قوله وقضى ربك
انما هي ووصى ربك التزقت الواو بالصاد واخرجه ابن اشته بلفظ
استمد الكاتب مداد اكثيرا فالتزقت الواو بالصاد واخرجه من طريق

و الكتابة بخلافها و اما القراة على مقتضى الرسم فلا و قد تكلم اهل العربية على هذه الاحرف و وجهوها على احسن توجيه اما قوله ان هذان لساحران ففيه اوجه احدها انه جار على لغة من يجرى المثنى بالالف في احواله الثلاث و هي لغة مشهورة لكنانة و قيل لبنى الحارث الثاني ان اسم ان ضمير الشان محذوفا والجملة بعده مبتداء و خبره خبران الثالث كذلك الا ان ساحران خبر مبتداء محذوف و التقدير لهما ساحران الرابع ان ان هنا بمعنى نعم الخامس ان هاء ضمير القصة اسم ان و ذان لساحران مبتداء و خبر و تقدم رد هذا الوجه بانفصال ان و اتصالها فى الرسم قلت وظهر لي وجه آخر و هو ان الاتيان بالالف لمناسبة ساحران يريد ان كما نون سلاسلا لمناسبة اغلالا و من سبأ لمناسبة نبأ و اما قوله و المقيمين الصلاة ففيه ايضا اوجه احدها انه مقطوع الى المدح بتقدير امدح لانه ابلغ الثاني انه معطوف على المجرور في يومنون بما انزل اليك اي و يومنين بالمقيمين الصلاة و هم الانبياء و قيل الملائكة و قيل التقدير يومنون بدين المقيمين فيكون المراد بهم المسلمين و قيل باجابة المقيمين الثالث انه معطوف على قبل اي و من قبل المقيمين فحذف قبل و اقيم المضاف اليه مقامه الرابع انه معطوف على الكاف في قبلك الخامس انه معطوف على الكاف في اليك السادس انه معطوف على الضمير في منهم حكى هذه الاوجه ابو البقا و اما قوله و الصابيون ففيه ايضا احدها انه مبتداء حذف خبره اي و الصابيون كذلك الثاني انه معطوف على محل ان مع اسمها فان محلهما رفع بالابتداء الثالث انه معطوف على الفاعل في هادوا الرابع ان

عبد الرحمن عن عبد الاعلى بن عبد الله بن عامر قال لما فرغ من المصحف اتى به عثمان فنظر فيه فقال احسنتم و اجملتم ارى شيئا سنقيمه بالسنتنا فهذا الاثر لا اشكال فيه و به يتضح معني ما تقدم فكانه عرض عليه عقب الفراغ من كتابته فراى فيه شيئا كتب على غير لسان قريش كما وقع لهم فى التابوة والتابوت فوعد بانه سيقيمه على لسان قريش ثم وفي بذلك عند العرض و التقويم و لم يترك فيه شيئا و لعل من روى تلك الاثار السابقة عنه حرفها و لم يتقن اللفظ الذي صدر من عثمان فلزم منه مالزم من الاشكال فهذا اقوي ما يجاب به عن ذلك ولله الحمد وبعد فهذه الاجوبة لا يصلح منها شيء عن حديث عايشة اما الجواب بالتضعيف فلان اسناده صحيح كما ترى و اما الجواب بالرمز و ما بعده فلان سوال عروة عن الاحرف المذكورة لايطابقه وقد اجاب عنه ابن اشته و تبعه ابن جبارة في شرح الرائية بان معني قولها اخطاوا اي في اختيار الاولى من الاحرف السبعة لجمع الناس عليه لا ان الذين كتبوا من ذلك خطالا يجوز قال و الدليل على ذلك ان مالا يجوز مردود باجماع من كل شيء و ان طالت مدة و قوعه قال و اما قول سعيد ابن جبير لحن من الكاتب فيعني باللحن القرأة و اللغة يعني انها لغة الذي كتبها و قرأته و فيها قرأة اخرى ثم اخرج عن ابراهيم النخعي انه قال ان هذان لساحران و ان هذين لساحران سوأء لعلهم كتبوا الالف مكان الياء و الواو في قوله و الصابيون و الراسخون مكان الياء قال ابن اشته يعني انه من ابدال حرف فى الكتابة بحرف مثل الصلوة و الزكاة و الحياة و اقول هذا الجواب انما يحسن لوكانت من القرأة بالياء فيها

من جهة كتب و لا نطق و معلوم انه كان مواصلا لدرس القرآن متقنا لالفاظه موافقا على ما رسم فى المصاحف المنفذة الى الامصار و النواحي ثم ايد ذلك بما اخرجه ابو عبيد قال حدثنا عبدالرحمن بن مهدي عن عبد الله بن المبارك ثنا ابو وايل شيخ من اهل اليمن عن هانى البربري مولى عثمان قال كنت عند عثمان وهم يعرضون المصاحف فارسلنى بكتف شاة الى ابى بن كعب فيها لم يتسن وفيها لا تبديل للخلق و فيها فامهل الكافرين قال فدعا بالدواة فمحا احد اللاميين فكتب لخلق الله و محى فامهل و كتب فمهل و كتب لم يتسنه الحق فيها الها قال ابن الانباري فكيف يدعى عليه انه راى فسادا فامضاه و هو يوقف على ما كتب و يرفع الخلاف اليه الواقع بين الناسخين ليحكم بالحق ويلزمهم اثبات الصواب وتخليده انتهى قلت ويؤيد هذا ايضا ما اخرجه ابن اشته فى المصاحف قال حدثنا الحسن بن عثمان ثنا الربيع بن بدر عن سوار بن شبيب قال سالت ابن الزبير عن المصاحف فقال قام رجل الى عمر فقال يا امير المومنين ان الناس قد اختلفوا فى القران فكان عمر قدهم ان يجمع القران على قراة واحدة فطعن طعنته التي مات فيها فلما كان في خلافة عثمان قام ذلك الرجل فذكر له فجمع عثمان المصاحف ثم بعثني الى عايشه فجئت بالصحف فعرضناها عليه حتى قومناها ثم امر بسايرها فشققت فهذا يدل على انهم ضبطوها واتقنوها و لم يتركوا فيها مايحتاج الى اصلاح ولا تقويم ثم قال ابن اشته ثنا محمد بن يعقوب ثنا ابوداؤد سليمان بن الاشعث ثنا حميد بن مسعدة ثنا اسمعيل اخبرني الحارث بن عبد الحرث بن

يقيمه غيرهم و ايضا فانه لم يكتب مصحفا واحدا بل كتب عدة مصاحف فان قيل ان اللحن وقع في جميعها فبعيد اتفاقها على ذلك او في بعضها فهو اعتراف بصحة البعض و لم يذكر احد من الناس ان اللحن كان في مصحف دون مصحف و لم تات المصاحف قط مختلفة الا فيما هو من وجوه القرأة وليس ذلك بلحن الوجه الثاني على تقدير صحة الرواية ان ذلك مؤول على الرمز و الاشارة و مواضع الحذف نحو الكتب و الصبرين و ما اشبه ذلك الثالث انه مؤول على اشياء خالف لفظها رسمها كما كتبوا لا اوضعوا و لا اذبحنه بالف بعد لا و جزاء و الظالمين بواو و الف و تايبد بيايين فلو قرئ ذلك بظاهر الخط لكان لحنا و بهذا الجواب و ما قبله جزم ابن اشته في كتاب المصاحف و قال ابن الانباري في كتاب الرد على من خالف مصحف عثمان الاحاديث المروية عن عثمان في ذلك لا يقوم بها حجة لانها منقطعة غير متصلة و ما يشهد عقل بان عثمان و هو امام الامة الذي هو امام الناس في وقته و قدوتهم بجمعهم على المصحف الذي هو الامام فيتبين فيه خللا و يشاهد في خطه زللا فلا يصلحه كلا و الله ما يتوهم عليه هذا ذو انصاف و تمييز و لا يعتقد انه اخر الخطاء في الكتاب ليصلحه من بعده و سبيل الجائين من بعده البناء على رسمه و الوقوف عند حكمه و من زعم ان عثمان اراد بقوله ارى فيه لحنا ارى في خطه لحنا اذا اقمناه بالسنتنا كان لحن الخط غير مفسد ولا محرف من جهة تحريف الالفاظ و افساد الاعراب فقد ابطل و لم يصب لان الخط منبئ عن النطق فمن لحن في كتبه فهو لاحن في نطقه و لم يكن عثمان ليوخر فسادا في هجاء الفاظ القرآن

اخطأوا فى الكتاب هذا اسناد صحيح على شرط الشيخين و قال حدثنا حجاج عن هارون بن موسى اخبرني الزبير بن الخريب عن عكرمة قال لما كتبت المصاحف عرضت على عثمان فوجد فيها حروفا من اللحن فقال لا تغيروها فان العرب ستغيرها او قال ستغير بها بالسنتها لوكان الكاتب من ثقيف المملي من هذيل لم توجد فيه هذه الحروف اخرجه من هذه الطريق ابن الانباري في كتاب الرد على من خالف مصحف عثمان ابن اشته في كتاب المصاحف ثم اخرج ابن الانباري نحوه عبد الاعلى بن عبد الله بن عامر و ابن اشته نحوه من طريق يحيى بن يعمر و اخرج من طريق ابي بشر عن سعيد ابن جبير انه كان يقرأ و المقيمين الصلوة و يقول هو لحن من الكاتب و هذه الاثار مشكلة جدا و كيف يظن بالصحابة اولا انهم يلحنون فى الكلام فضلا عن القرآن و هم الفصحاء اللّد ثم كيف يظن بهم ثانيا فى القرآن الذي تلقوه من النبي صلى الله عليه و سلم كما انزل و حفظوه و ضبطوه و اتقنوه ثم كيف يظن بهم ثالثا اجتماعهم كلهم على الخطاء و كتابته ثم كيف يظن بهم رابعا عدم تنبههم و رجوعهم عنه ثم كيف يظن بعثمان ان ينتهى عن تغييره ثم كيف يظن ان القرأة استمرت على مقتضي ذلك الخطاء و هو مروي بالتواتر خلفا عن سلف هذا مما يستحيل عقلا و شرعا و عادة و قد اجاب العلماء عن ذلك بثلاثة اوجه احدها ان ذلك لا يصح عن عثمان فان اسناده ضعيف مضطرب منقطع و لان عثمان جعل للناس اماما يقتدون به فكيف يرى فيه لحناً و يتركه لتقيمه العرب بالسنتها فاذا كان الذين تولوا جمعه و كتابته لم يقيموا ذلك و هم الخيار فكيف

هولاء زيادة كالحاجة الى اللفظ المزيد عليه انتهى و اقول بل الحاجة اليه كالحاجة اليه سواء بالنظر الى مقتضى الفصاحة و البلاغة و انه لو ترك كان الكلام دونه مع افادته اصل المعنى المقصود ابتر خاليا عن الرونق البليغي لا شبهة في ذلك و مثل هذا يستشهد عليه بالاستاذ البياني الذي خالط كلام الفصحاء و عرف مواقع استعمالهم و ذاق حلاوة الفاظهم و اما النحوى الجا في فعن ذلك بمنقطع الثرى تنبيهات الاول قد يتجاذب المعنى و الاعراب الشئ الواحد بان يوجد فى الكلام ان المعنى يدعو الى امر و الاعراب يمنع منه و المتمسك به صحة المعنى و يأول لصحة الاعراب و ذلك كقوله تعالى انه على رجعه لقادر يوم تبلى السرائر فالظرف الذي هو يوم يقتضى المعنى انه يتعلق بالمصدر و هو رجع انه على رجعه في ذلك اليوم لقادر لكن الاعراب يمنع منه لعدم جواز الفصل بين المصدر و معموله فيجعل العامل فيه فعلا مقدرا دل عليه المصدر و كذا اكبر من مقتكم انفسكم اذ تدعون فالمعنى يقتضي تعلق اذ بالمقت و الاعراب يمنعه للفصل المذكور فيقدر له فعل يدل عليه الثاني قد يقع في كلامهم هذا تفسير معني و هذا تفسير اعراب و الفرق بينهما ان تفسير الاعراب لابد فيه من ملاحظة الصناعة النحوية و تفسير المعنى لا تضره مخالفة ذلك الثالث قال ابو عبيد في فضائل القرآن حدثنا ابو معوية عن هشام بن عروة عن ابيه قال سالت عايشة رضى الله تعالى عنها عن لحن القرآن عن قوله ان هذان لساحران و عن قوله و المقيمين الصلوة و المؤتون الزكاة و عن قوله ان الذين آمنوا و الذين هادوا و الصابئون فقالت يا ابن اخي هذا عمل الكتاب

بل يحصى و شرط التمئيز المنصوب بعد افعل كونه فاعلا فى المعنى فالصواب انه فعل و امدا مفعول مثل و احصى كل شئ عددا العاشر ان لا يخرج على خلاف الاصل او خلاف الظاهر لغير مقتض و من ثم خطئ مكي في قوله و لا تبطلوا صدقاتكم بالمن و الاذى كالذي ان الكاف نعت لمصدر اي ابطالا كابطال الذي و الوجه كونه حالا من الواو اي لا تبطلوا صدقاتكم مشبهين الذي فهذا لا حذف فيه و الحادي عشر ان يبحث عن الاصلي و الزائد نحو الا ان يعفون او يعفو الذي بيده عقدة النكاح فانه قد يتوهم ان الواو في يعفون ضمير الجمع فيشكل اثبات النون و ليس كذلك بل هي فيه لام الكلمة فهي اصلية و النون ضمير النسوة و الفعل معها مبني و وزنه يفعلن بخلاف و ان تعفوا اقرب فالواو فيه ضمير الجمع و ليست من اصل الكلمة الثاني عشر ان يجتنب اطلاق لفظ الزائد في كتاب الله فان الزائد قد يفهم منه انه ما لا معنى له وكتاب الله منزه عن ذلك و لهذا فر بعضهم الى التعبير بدله بالتاكيد و الصلة و المفخم و قال ابن الخشاب اختلف في جواز اطلاق لفظ الزائد فى القرآن فالاكثرون على جوازه نظرا الى انه نزل بلسان القوم و متعارفهم و لان الزيادة بازاء الحذف هذا للاختصار و التخفيف و هذا للتوكيد و التوطية و منهم من ابي ذلك و قال هذه الالفاظ المحمولة على الزيادة جاءت لفوائد و معاني تخصها فلا اقضى عليها بالزيادة قال و التحقيق انه ان اريد بالزيادة اثبات معني لا حاجة اليه فباطل لانه عبث فتعين ان النيابة حاجة لكن الحاجات الى الاشياء قد تختلف بحسب المقاصد فليست الحاجة الى اللفظ الذي عده

من الباء الا و هو منصوب و من قال في و لئن سألتهم من خلقهم ليقولن الله ان الاسم الكريم مبتداء و الصواب انه فاعل بدليل ليقولن خلقهن العزيز العليم تنبيه و كذا اذا جاءت قرأة اخرى في ذلك الموضع بعينه تساعدا حد الاعرابين فينبغي ان يترجح كقوله و لكن البر من امن قيل التقدير و لكن ذا البر و قيل و لكن البر بر من امن و يؤيد الاول انه قرئ و لكن البار تنبيه و قد يوجد ما يرجح كلا من المحتملات فينظر في اولاها نحو فاجعل بيننا و بينك مواعدا فموعد محتمل للمصدر و يشهد له لا نخلفه نحن ولا انت و للزمان و يشهد له قال موعدكم يوم الزينة و للمكان و يشهد له مكانا سوى و اذا اعرب مكانا بدلا منه لا ظرفا لنخلفه تعين ذلك الثامن ان يراعى الرسم و من ثم خطئ من قال في سلسبيلا انها جملة امرية اي سل طريقا موصلة اليها لانها لو كانت كذلك لكتبت مفصولة و من قال في ان هذان لساحران انها ان و اسمها اي ان القصة و ذان مبتداء خبره لساحران و الجملة خبر ان و هو باطل برسم ان منفصلة و هذان متصلة و من قال في و لا الذين يموتون و هم كفار ان اللام للابتداء و الذين مبتداء و الجملة بعده خبره و هو باطل فان الرسم و لا و من قال في ايهم اشد ان هم اشد مبتداء و خبر و اي مقطوعة عن الاضافة و هو باطل برسم ايهم متصلة و من قال في و اذا كالوهم او وزنوهم يخسرون ان هم فيها ضمير رفع موكد للواو و هو باطل برسم الواو فيهما بلا الف بعدها فالصواب انه مفعول التاسع ان تتامل عند ورود المشتبهات و من ثم خطئ من قال في احصى لما لبثوا امدا انه افعل تفضيل و المنصوب تمئيز و هو باطل فان الامد ليس محصيا

ذلک لحق تخاصم اهل النار بنصب تخاصم انه صفة للاشارة لان اسم الاشارة انما ينعت بذی اللام الجنسية و الصواب كونه بدلا و في قوله فاستبقوا الصراط و في سنعيدها سيرتها ان المنصوب فيهما ظرف لان ظرف المكان شرطه الابهام و الصواب انه علی اسقاط الجار توسعا و هو فيهما الی و في قوله في ما قلت لهم الا ما امرتني به ان اعبدوا الله ان ان مصدرية و هي و صلتها عطف بيان علی الهاء لامتناع عطف البيان علی الضمير كنعته و هذا الامر السادس عده ابن هشام فی المعنی و يحتمل دخوله فی الامر الثاني السابع ان يراعی في كل تركيب ما يشاكله فربما خرج كلاما علی شيء و يشهد استعمال آخر في نظير ذلك الموضع بخلافه و من ثم خطی الزمخشري في قوله و مخرج الميت من الحي انه عطف علی فالق الحب و النوی و لم يجعله معطوفا علی يخرج الحي من الميت لان عطف الاسم علی الاسم اولی و لكن مجي قوله يخرج الحي من الميت و يخرج الميت من الحي بالفعل فيهما يدل علی خلاف ذلك و من ثم خطی من قال في ذلك الكتاب لا ريب فيه ان الوقف علی ريب و فيه خبر هدی و يدل علی خلاف ذلك قوله في سورة السجدة تنزيل الكتاب لا ريب فيه من رب العالمين و من قال في و لمن صبر و غفر ان ذلك لمن عزم الامور ان الرابط الاشارة و ان الصابر الغافر جعلا من عزم الامور مبالغة و الصواب ان الاشارة للصبر و الغفران بدليل و ان تصبروا و تتقوا فان ذلك من عزم الامور و لم يقل انكم و من قال في نحو و ما ربك بغافل ان المجرور في موضع رفع و الصواب في موضع نصب لان الخبر لم يجئ فی التنزيل مجردا

على الاختصاص لضعفه بعد ضمير المخاطب والصواب انه منادى
ومن قال في تماما على الذي احسن بالرفع ان اصله احسنوا فحذفت
الواو واجتزي عنها بالضمة لان باب ذلك الشعر والصواب تقدير
مبتدأ اي هو احسن ومن قال في وان تصبروا وتتقوا لا يضركم
بضم الراء المشددة انه من باب ان يضرع اخوك تضرع لان ذلك
خاص بالشعر والصواب انها ضمة اتباع وهو مجزوم ومن قال في
وارجلكم انه مجرور على الجوار لان الجر على الجوار في نفسه ضعيف
شاذ لم يرد منه الا احرف يسيرة والصواب انه معطوف على بروسكم
على ان المراد به مسح الخف قال ابن هشام وقد يكون الموضع لا يتخرج
الا على وجه مرجوح فلا حرج على مخرجه كقرأة نجى المؤمنين
قبل الفعل ماض ويضعفه اسكان آخره وانابه ضمير المصدر عن الفاعل
مع وجود المفعول به وقيل مضارع اصله ننجي بسكون ثانيه ويضعفه
ان النون لا تدغم فى الجيم وقيل اصله ننجي بفتح ثانيه وتشديد
ثالثه فحذفت النون الثانية ويضعفه ان ذلك لايجوز الا فى التاء
الخامس ان تستو في جميع ما يحتمله اللفظ من الاوجه الظاهرة
فنقول في نحو سبح اسم ربك الاعلى يجوز كون الا على صفة للرب
وصفة للاسم وفي نحو هدى للمتقين الذين يجوز كون الذين تابعا
ومقطوعا الى النصب باضمار اعني او امدح او الى الرفع باضمار هو
السادس ان يراعى الشروط المختلفة بحسب الابواب ومتى لم يتاملها
اختلطت عليه الابواب والشرائط ومن ثم خطئ الزمخشري في قوله
ملك الناس اله الناس انهما عطفا بيان والصواب انهما نعتان لاشتراط
الاشتقاق فى النعت والجمود في عطف البيان وفي قوله في ان

الله و ربط الموصول بالظاهر و هو فاعل اخرجک وباب ذلك الشعر
واقرب ما قيل فى الآية انها مع مجروها خبر محذوف اي هذه
الحال من تنفيلك القرآة على ما رأيت منهم في كراهتهم لها كحال
اخراجك للحرب في كراهيتهم له وكقول ابن مهران في قرأة ان
البقر تشابهت بتشديد التاء انه من زيادة التاء في اول الماضي
ولا حقيقة لهذه القاعدة وانما اصل القرأة ان البقرة تشابهت بتاء
الوحدة ثم ادغمت في تاء تشابهت فهو ادغام من كلمتين الرابع
ان تجتنب الامور البعيدة والاوجه الضعيفة و اللغات الشاذة و يخرج
على القريب و القوي و الفصيح فان لم يظهر له الا الوجه البعيد فله
عذر وان ذكر الجميع لقصد الاعراب والتكثير فصعب شديد اولبيان
المحتمل وتدريب الطالب فحسن في غير الفاظ القرآن اما التنزيل
فلا يجوز ان يخرج الا على ما يغلب على الظن ارادته فان لم يغلب
شيء فليذكر الاوجه المحتملة من غير تعسف ومن ثم خطي من قال
في وقيله بالجر او النصب انه عطف على لفظ الساعة او محلها لما
بينهما من التباعد و الصواب انه قسم او مصدر قال مقدرا ومن قال
في ان الذين كفروا بالذكر ان خبره اوليك ينادون من مكان بعيد
والصواب انه محذوف و من قال في ص والقران ذى الذكران جوابه
ان ذلك لحق والصواب انه محذوف اي ما الامركما زعموا او انه
لمعجز او انك لمن المرسلين ومن قال في فلا جناح عليه ان يطوف
ان الوقف على جناح وعليه اعز الان اعزاء الغائب ضعيف بخلاف
القول بمثل ذلك في عليكم ان لا تشركوا فانه حسن لان اعزا المخاطب
فصيح و من قال في ليذهب عنكم الرجس اهل البيت انه منصوب

لغثاء او من شدة الخضرة فحال من الرعي قال ابن هشام وقد زلت اقدام كثير من المعربين راعوا فى الاعراب ظاهر اللفظ ولم ينظروا في موجب المعنى من ذلك قوله اصلواتك تأمرك ان نترك ما يعبد اباؤنا او ان نفعل في اموالنا ما نشاء فانه يتبادر الى الذهن عطف ان نفعل على ان نترك و ذلك باطل لانه لم يأمرهم ان يفعلوا في اموالهم ما يشاؤن و انما هو عطف على ما فهو معمول للترك والمعنى ان نترك ان نفعل و موجب الوهم المذكور ان المعرب يرى ان والفعل مرتين وبينهما حرف العطف الثاني ان يراعي ما تقتضيه الصناعة فربما راعى المعرب وجها صحيحا ولا ينظر في صحته فى الصناعة فيخطي من ذلك قول بعضهم في وثمودا فما ابقى ان ثمودا مفعول مقدم وهذا ممتنع لان لما النافية الصدر فلا يعمل ما بعدها فيما قبلها بل هو معطوف على عاد او على تقدير واهلك ثمودا وقول بعضهم في لا عاصم اليوم من امر الله لا تثريب عليكم اليوم ان الظرف متعلق باسم لا وهو باطل لان اسم لا حينئذ يطول فيجب نصبه و تنوينه وانما هو متعلق بمحذوف وقول الحوفي ان الباقي قوله فناظرة بم يرجع المرسلون متعلقة بناظرة و هو باطل لان الاستفهام له الصدر بل هو متعلق بما بعده وكذا قول غيره في ملعونين اينما ثقفوا انه حال من معمول ثقفوا او اخذوا باطل لان الشرط له الصدر بل هو منصوب على الذم الثالث ان يكون مليا بالعربية لئلا يخرج على مالم يثبت نقول ابي عبيدة في كما اخرجك ربك ان الكاف قسم حكاه مكي وسكت عليه فشنع ابن الشجري عليه في سكوته ويبطله ان الكاف لم تجئ بمعنى واو القسم و اطلاق ماء الموصولة على

اشهرها والسمين وهو اجلها على مافيه من حشو وتطويل ولخصه السغافتي فجوده وتفسير ابي حيان مشحون بذلك ومن فوائد هذا النوع معرفة المعنى لان الاعراب يميز المعاني ويوفق على اغراض المتكلمين اخرج ابو عبيد في فضائله عن عمر ابن الخطاب قال تعلموا اللحن والفرائض والسنن كما تعلمون القرآن واخرج عن يحيى بن عتيق قال قلت للحسن يا ابا سعيد الرجل يتعلم العربية يلتمس بها حسن المنطق ويقيم بها قرأته قال حسن يا ابن اخي فتعلمها فان الرجل يقرأ الآية فيعيي بوجهها فيهلك فيها وعلى الناظر في كتاب الله الكاشف عن اسراره النظر في الكلمة وصيغتها ومحلها لكونها مبتداء او خبرا او فاعلا او مفعولا اوفي مبادي الكلام او في جواب الى غير ذلك ويجب عليه مراعاة امور احدها وهو اول واجب عليه ان يفهم معنى ما يريدان يعربه مفردا او مركبا قبل الاعراب فانه فرع المعنى ولهذا لا يجوز اعراب فواتح السور اذا قلنا انها من المتشابه الذي استاثر الله بعلمه وقالوا في توجيه نصب كلالة في قوله وان كان رجل يورث كلالة انه يتوقف على المراد بها فان كان اسما للميت فهو حال ويورث خبركان اوصفة وكان تامة او ناقصة وكلالة خبرا وللورثة فهو على تقدير مضاف اي ذا كلالة وهو ايضا حال او خبر كما تقدم او للقرابة فهو مفعول لاجله وقوله سبعا من المثاني ان كان المراد بالمثاني القران فمن للتبعيض او الفاتحة فالبيان الجنس وقوله الا ان تتقوا منهم تقاة ان كانت بمعنى الاتقا فهي مصدر او بمعنى متقى اي امرا يجب اتقاؤه فمفعول به او جمعا كرماة فحال وقوله غثاء احوى ان اريد به الاسود من الجفاف واليبس فهو صفة

و قال الخليل وى وحدها و كان كلمة مستقلة للتحقيق لا للتشبيه و قال ابن الانباري يحتمل و يكانه ثلاثة اوجه ان يكون و يك حرفا و انه حرف و المعنى الم تروا ان تكون كذلك و المعنى ويلك و ان يكون وى حرفا للتعجب و كانه حرف و وملا خطا لكثرة الاستعمال كما وصل يبنؤم و يل قال الاصمعي ويل تقبيح قال الله تعالى ولكم الويل مما تصفون و قد يوضع موضع التحسر و التفجع نحو يا ويلتنا يا ويلتا اعجزت اخرج الحربي في فوائده من طريق اسمعيل بن عياش عن هشام بن عروة عن ابيه عن عايشة قالت قال لي رسول الله صلى الله عليه و سلم ويحك فجزعت منها فقال لي يا حميراء ان ويحك او ويشك رحمة فلا تجزعي منها ولكن اجزعي من الويل يا حرف لنداء البعيد حقيقة او حكما و هي اكثر احرفه استعمالا و لهذا لا يقدر عند الحذف سواها نحو رب اغفر لي يوسف اعرض و لا ينادي اسم الله و ايها وايتها الا بها قال الزمخشري و تفيد التاكيد الموذن بان الخطاب الذي يتلوه يعتني به جدا و ترد للتنبيه فتدخل على الفعل و الحرف نحو الا يا اسجدوا يا ليت قومي يعلمون تنبيه يا قد اتيت على شرح معاني الادوات الواقعة فى القرآن على وجه موجز مفيد محصل للمقصود منه و لم ابسطه لان محل البسط و الاطناب انما هو تصانيفنا في فن العربية و كتبنا النحوية و المقصود في جميع انواع هذا الكتاب انما هو ذكر القواعد و الاصول لا استيعاب الفروع و الجزئيات النوع الحادي و الاربعون في معرفة اعرابه افرده بالتصنيف خلائق منهم مكي و كتابه فى المشكل خاصة و العكبري و هو اوضحها و ابو البقا العكبري و هو

و اوالاستيناف نحو ثم قضى اجلا و اجل مسمى عنده لنبين لكم و نقر فى الارحام و اتقوا الله و يعلمكم الله من يضلل الله فلا هادي له و يذرهم بالرفع اذ لو كانت عاطفة لنصب نقروا نجزم ما بعده و نصب اجل ثالثها واو الحال الداخلة على الجملة الاسمية نحو ونحن نسبح بحمدك يغشى طايفة منكم و طايفة قد اهمتهم لئن اكله الذئب و نحن عصبة و زعم الزمخشري انها تدخل على الجملة الواقعة صفة لتاكيد ثبوت الصفة للموصوف و لصوقها به كما تدخل على الحالية و جعل من ذلك و يقولون سبعة و ثامنهم كلبهم رابعها واو الثمانية ذكرها جماعة كالحريري و ابن خالويه و الثعلبي و زعموا ان العرب اذا عدوا يدخلون الواو بعد السبعة ايذانا بانها عدد تام و ان ما بعده مستانف و جعلوا من ذلك قوله سيقولون ثلاثة رابعهم كلبهم الى قوله سبعة و ثامنهم كلبهم و قوله التائبون العابدون الى قوله و الناهون عن المنكر لانه الوصف الثامن وقوله مسلمات الى قوله و ابكارا والصواب عدم ثبوتها و انها فى الجميع للعطف خامسها الزائدة و خرج عليه واحدة من قوله و تله للجبين و ناديناه سادسها واو ضمير الذكور في اسم او فعل نحو المومنون و اذا سمعوا اللغوا عرضوا قل للذين امنوا يقيموا سابعها واو علامة المذكرين في لغة طي و خرج عليه و اسروا النجوى الذين ظلموا ثم عموا و صموا كثيرا منهم ثامنها الواو المبدلة من همزة الاستفهام المضموم ما قبلها كقراءة قنبل و اليه النشور و امنتم قال فرعون و امنتم و يكان قال الكسائي كلمة تندم و تعجب و اصله ويلك فالكاف ضمير مجرور و قال الاخفش وي اسم فعل بمعنى اعجب و الكاف حرف خطاب و ان على اضمار اللام و المعنى اعجب لان الله

غلط اوقعه فيه اللام فان تقديره بعد الامر لما توعدون اي لاجله و احسن منه ان اللام لتبيين الفاعل و فيها لغات قرى منها بالفتح و بالضم و بالخفض مع التنوين فى الثلاثة و عدمه الواو جارة و ناصبة و غير عاملة فالجارة واو القسم نحو و الله ربنا ما كنا مشركين و الناصبة واو مع فتنصب المفعول معه في راى قوم نحو فاجمعوا امركم و شركاءكم ولا ثاني له فى القرآن و المضارع في جواب النفي او الطلب عند الكوفيين نحو ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم و يعلم الصابرين يا ليتنا نرد ولا نكذب بآيات ربنا و نكون و واو الصرف عندهم و معناها ان الفعل كان يقتضي اعرابا فصرفته عنه الى النصب نحو اتجعل فيها من يفسد فيها و يسفك الدماء في قراءة النصب وغير العاملة انواع احدها واو العطف و هي لمطلق الجمع فيعطف الشيء على مصاحبه نحو فانجيناه و اصحاب السفينة و على سابقه نحو ارسلنا نوحا و ابراهيم و لاحقه نحو يوحى اليك و الى الذين من قبلك و تفارق سائر حروف العطف في اقترانها باما نحو اما شاكرا و اما كفورا و بلا بعد نفي نحو و ما اموالكم و لا اولادكم بالتي تقربكم و بلكن نحو و لكن رسول الله و بعطف العقد على النيف نحو احد و عشرون و العام على الخاص و عكسه نحو و مليكته و جبريل و ميكال رب اغفرلي و لوالدي و لمن دخل بيتي مومنا و للمومنين و المومنات و الشيء على مرادفه نحو صلوات من ربهم و رحمة انما اشكوا بثي و حزني و المجرور على الجوار نحو بروسكم و ارجلكم قيل و ترد بمعنى او و حمل عليه مالك انما الصدقات للفقراء و المساكين الاية و للتعليل و حمل عليه الخارزنجي الواو الداخلة على الافعال المنصوبة ثانيها

الرفع المخبر عنه باشارة نحو ها انتم اولاء و على نعت اي في النداء نحو يا ايها الناس و يجوز في لغة اسد حذف الف هذه و ضمها اتباعا و عليه قراءة ايه الثقلان هات فعل امر لا يتصرف و من ثم ادعى بعضهم انه اسم فعل هل حرف استفهام يطلب به التصديق دون التصور و لا يدخل على منفي و لا شرط و لا ان و لا اسم بعده فعل غالبا و لا عاطف قال ابن سيده و لا يكون الفعل معها الا مستقبلا و رد بقوله فهل وجدتم ما وعد ربكم حقا و ترد بمعنى قد و به فسر هل اتى على الانسان و بمعنى النفي نحو هل جزاء الاحسان الا الاحسان و معان أخر ستأتي في مبحث الاستفهام هام دعاء الى الشيء و فيه قولان احدهما ان اصله ها و لم من قولك لممت الشيء اي اصلحته فحذفت الالف و ركب و قيل اصله هل ام كانه قيل هل لك في كذا امه اي اقصده فركبا و لغة الحجاز تركه على حاله في التثنية و الجمع و بها ورد القرآن و لغة تميم الحاقه العلامات هنا اسم يشار به للمكان القريب نحو انا ههنا قاعدون و يدخل عليه اللام و الكاف فيكون للبعيد نحو هنالك ابتلى المومنون و قد يشار به للزمان اتساعا و خرج عليه هنالك تبلوا كل نفس ما اسلفت هنالك دعا ذكريا ربه هيت اسم فعل بمعنى اسرع و بادر قاله في المحتسب و فيها لغات قرى ببعضها هيت بفتح الهاء و التاء و هيت بكسر الهاء و فتح التاء و هيت بفتح الهاء و كسر التاء و هيت بفتح الهاء و ضم التاء و قرى هيت بوزن جيت و هو فعل بمعنى تهيأت و قرى هييت و هو فعل بمعنى اصلحت هيهات اسم فعل بمعنى بعد قال تعالى هيهات هيهات لما توعدون قال الزجاج البعد لما توعدون قيل و هذا

عاد اخا هم هودا انا ارسلنا نوحا و تنوين التنكير و هو اللاحق لاسماء الافعال فرقا بين معرفتها و نكرتها نحو التنوين اللاحق لاف في قراءة من نونه و هيهات في قراءة من نونها و تنوين المقابلة و هو اللاحق لجمع المونث السالم نحو مسلمات مومنات قانتات تائبات عابدات سائحات و تنوين العوض اما عن حرف آخر مفاعل المعتل نحو و الفجر و ليال و من فوقهم غواش او عن اسم مضاف اليه في كل و بعض و اي نحو كل في فلك نفضلنا بعضهم على بعض اياما تدعوا و عن الجملة المضاف اليها نحو و انتم حينئذ تنظرون اي حين اذا بلغت الروح الحلقوم او اذا على ما تقدم عن شيخنا و من يحى نحوه نحو و انكم اذا لمن المقربين اى اذا غلبتم و تنوين الفواصل الذي يسمى في غير القرآن الترنم بدلا من حرف الاطلاق و يكون فى الاسم و الفعل و الحرف و خرج عليه الزمخشري وغيره قواريرا و الليل اذا يسر كلا سيكفرون بتنوين الثلاثة نعم حرف جواب فيكون تصديقا للمخبر و وعد اللطالب و اعلاما للمستخبر و ابدال عينها حاء و كسرها اتباع النون لها فى الكسر لغات قرئ بها نعم فعل لانشاء المدح لا يتصرف الهاء اسم ضمير غائب يستعمل فى الجر و النصب نحو قال له صاحبه و هو يحاوره و حرف للغيبة و هو اللاحق لا يا و للسكت نحو ماهيه كتابيه حسابيه سلطانيه ماليه لم يتسنه و قرئ بها في اواخر اي الجمع كما تقدم وقفا ها ترد اسم فعل بمعنى خذ و يجوز مد الفه فيتصرف ح للمثنى و الجمع نحو هاؤم اقروا كتابيه و اسما ضمير اللمونث نحو فالهمها فجورها و تقواها و حرف تنبيه فتدخل على الاشارة نحو هولاء هذان خصمان ههنا و على ضمير

و شرطية نحو من يعمل سوءا يجزبه و استفهامية نحو من بعثنا من مرقدنا ونكرة موصوفة نحو و من الناس من يقول اي فريق يقول و هي كما في استوائها فى المذكر و المفرد و غيرهما و الغالب استعمالها فى العالم عكس ما و نكتة ان ما اكثر وقوعا فى الكلام منها و ما لا يعقل اكثر ممن يعقل فاعطوا ما كثرت مواضعه لكثير و ما قلت للقليل للمشاكلة قال الانباري و اختصاص من بالعالم و ما بغيره فى الموصولتين دون الشرطيتين لان الشرط يستدعى الفعل و لا يدخل على الاسماء مهما اسم لعود الضمير عليها في مهما تاتنا به قال الزمخشري عاد عليها ضمير به و ضمير بها حملا على اللفظ و على المعنى و هى شرط لما لا يعقل غير الزمان كالآية المذكورة و فيها تاكيد و من ثم قال قوم ان اصلها ما الشرطية و ما الزائدة ابدلت الف الاولى هاء دفعا للتكرار النون على اوجه اسم و هي ضمير النسوة نحو فلما رأينه اكبرنه و قطعن ايديهن و قلن و حرف و هي نوعان نون التاكيد و هي خفيفة و ثقيلة نحو ليسجنن و ليكونا لنسفعا بالناصية و لم تقع الخفيفة فى القرآن الا في هذين الموضعين قلت و ثالث في قراءة شاذة و هي فاذا جاء وعد الاخرة ليسوؤا وجوهكم و رابع في قراءة الحسن القيا في جهنم ذكره ابن جني فى المحتسب و نون الوقاية و تلحق ياء المتكلم المنصوبة بفعل نحو فاعبدني ليحزنني او حرف نحو يا ليتني كنت معهم انني انا الله و المجرورة بلدن من لدني عذرا او من او عن نحو ما اغنى عني و القيت عليك محبة مني التنوين نون تثبت لفظا لا خطا و اقسامه كثيرة تنوين التمكين و هو اللاحق للاسماء المعربة نحو هدى و رحمة و الى

و فی الشامل عن الشافعي ان من في قوله و ان كان من قوم عدولكم بمعنى في بدليل قوله تعالى و هو مومن و عن نحو قد كنا في غفلة من هذا اي عنه و عند نحو لن تغني عنهم اموالهم ولا اولادهم من الله شيئا اي عنده و التاكيد و هي الزايدة فی النفي او النهی او الاستفهام نحو وما تسقط من ورقة الا يعلمها ما تري في خلق الرحمن من تفاوت فارجع البصر هل ترى من فطور و اجازها قوم فی الايجاب و خرجوا عليه ولقد جاءك من نباء المرسلين يحلون فيها من اساور من جبال فيها من برد يغضوا من ابصارهم فائدة اخرج ابن ابي حاتم من طريق السدي عن ابن عباس قال لوان ابراهيم حين دعا قال اجعل افئدة من الناس تهوي اليهم لازدحمت عليه اليهود و النصارى ولكنه خص حين قال افئدة من الناس فجعل ذلك للمومنين و اخرج عن مجاهد قال لو قال ابراهيم فاجعل افئدة الناس تهوي اليهم لزاحمتكم عليه الروم و فارس و هذا صريح في فهم الصحابة و التابعين التبعيض من من و قال بعضهم حيث وقعت يغفر لكم في خطاب المومنين لم تذكر معها من كقوله في الاحزاب يا ايها الذين امنوا اتقوا الله و قولوا قولا سديدا يصلح لكم اعمالكم و يغفرلكم ذنوبكم و فی الصف يا ايها الذين امنوا هل ادلكم على تجارة تنجيكم الى قوله يغفرلكم ذنوبكم و قال في خطاب الكفار في سورة نوح يغفرلكم من ذنوبكم و كذا في سورة ابراهيم و في سورة الاحقاف و ما ذاك الا للتفرقة بين الخطابين لئلا يسوى بين الفريقين فی الوعد ذكره فی الكشاف من لاتقع الا اسما فترد موصولة نحو وله من فی السموات و الارض و من عنده لا يستكبرون

عن الزمان نحو متى نصر الله و شرطا مع اسم بدليل جرها بمن في قرأة بعضهم هذا ذكر من معي و هي في بمعنى عند و اصلها لمكان الاجتماع او وقته نحو و دخل معه السجن فتيان ارسله معنا غدا لن ارسله معكم و قد يراد به مجرد الاجتماع و الاشتراك من غير ملاحظة المكان و الزمان نحو و كونوا مع الصادقين و ارتعوا مع الراكعين و اما نحو اني معكم ان الله مع الذين اتقوا و هو معكم اينما كنتم ان معي ربي سيهدين فالمراد بالعلم و الحفظ و المعونة مجازا قال الراغب و المضاف اليه لفظ مع هو المنصوب كالآيات المذكورة من حرف جر له معان اشهرها ابتداء الغاية مكانا و زمانا و غيرهما نحو من المسجد الحرام من اول يوم انه من سليمان و التبعيض بان يسد بعض مسدها نحو حتى تنفقوا مما تحبون و قرأ ابن مسعود بعض ما تحبون و التبيين و كثيرا ما تقع بعد ما و مهما نحو ما يفتح الله للناس من رحمة ما ننسخ من آية مهما تاتنا به من آية و من وقوعها بعد غيرهما فاجتنبوا الرجس من الاوثان اساور من ذهب و التعليل مما خطاياهم اغرقوا يجعلون اصابعهم في آذانهم من الصواعق و الفصل بالمهملة و هي الداخلة على ثاني المتضادين نحو يعلم المفسد من المصلح يميز الخبيث من الطيب و البدل نحو ارضيتم بالحيوة الدنيا من الآخرة اي بدلها لجعلنا منكم مليكة في الارض اي بدلكم و تنصيص العموم نحو و ما من اله الا الله قال في الكشاف هو بمنزلة البنا في لا اله الا الله في افادة معني الاستغراق و معني الباء نحو ينظرون من طرف خفي اي به و على نحو ونصرناه من القوم اي عليهم و في نحو اذا نودي للصلوة من يوم الجمعة اي فيه

بارادة شدة التاكيد فائدة حيث وقعت ما قبل ليس اولم اولا او بعد
الا فهي موصولة نحو ما ليس لي بحق مالم يعلم مالا تعلمون الا ما
علمتنا وحيث وقعت بعد كاف التشبيه فهي مصدرية وحيث
وقعت بعد الباء فانها تحتملها نحو بما كانوا يظلمون وحيث وقعت
بين فعلين سابقهما علم اودراية ارنظر احتملت الموصولة والاستفهامية
نحو اعلم ماتبدون وما كنتم تكتمون ما ادري ما يفعل بي ولا بكم
ولتنظر نفس ما قدمت لغد وحيث وقعت في القران قبل
الا فهي نافية الا في ثلاثة عشر موضعا مما اتيتموهن الا ان يخافا
فنصف ما فرضتم الا ان يعفون ببعض ما اتيتموهن الا ان يأتين
ما نكح اباؤكم من النساء الا ما قد سلف وما اكل السبع الا ما ذكيتم
ولا اخاف ما تشركون به الا فصل لكم ما حرم عليكم الا ما دامت
السموات والارض الا في موضعي هود فما حصدتم فذروه في سنبله
الا ما قدمتم لهن الا واذا عتزلتموهم وما يعبدون الا الله وما بينهما
الا بالحق حيث كان ماذا ترد على اوجه احدهما ان تكون ما استفهاما
وذا موصولة وهو ارجح الوجهين في ويسألونك ماذا ينفقون قل
العفو في قرأة الرفع اي الذين ينفقونه العفو اذا لاصل ان تجاب
الاسمية بالاسمية والفعلية بالفعلية الثاني ان يكون ما استفهاما وذا
اشارة الثالث ان يكون ما ذا كله استفهاما على التركيب وهو ارجح
الوجهين في ماذا ينفقون قل العفو في قرأة النصب اي ينفقون
العفو الرابع ان تكون ماذا كله اسم جنس بمعنى شيء او موصولا
بمعنى الذي الخامس ان تكون ما زائدة وذا للاشارة السادس ان
تكون ما استفهاما وذا زائدة ويجوز ان يخرج عليه متى ترد استفهاما

اذا جرت و ابقاء الفتحه دليلا عليها فرقا بينها و بين الموصولة نحو عم يتساءلون فيم انت من ذكراها لم تقولون ما لا تفعلون بم يرجع المرسلون و شرطية نحو ما ننسخ من آية او ننساها نأت بخير و ما تفعلوا من خير يعلمه الله فما استقاموا لكم فاستقيموا لهم وهذه منصوبة بالفعل بعدها وتعجيبية نحو فما اصبرهم على النار قتل الانسان ما اكفره ولا ثالث لها فى القران الا في قرأة سعيد بن جبير ما غرك بربك الكريم ومحلها رفع بالابتداء وما بعدها خبر وهي نكرة تامة ونكرة موصوفة نحو بعوضة فما فوقها نعما يعظكم اى نعم شيئا يعظكم به هو وغير موصوفة نحو فنعما هي اى نعم شيئا هي والحرفية ترد مصدرية اما زمانية نحو فاتقوا الله ما استطعتم اى مدة استطاعتكم اوغير زمانية نحو فذوقوا بما نسيتم اى بنسيانكم ونافية اما عاملة عمل ليس نحو ما هذا بشرا ماهن امهاتهم فما منكم من احد عنه حاجزين ولا رابع لها فى القران اوغير عاملة نحو وما تنفقون الا ابتغاء وجه الله فما ربحت تجارتهم قال ابن الحاجب وهي لنفي الحال ومقتضى كلام سيبويه ان فيها معنى التاكيد لانه جعلها فى النفي جوابا لقد فى الاثبات فكما ان قد فيها معنى التاكيد فكذلك ما جعل جوابا لها وزائدة للتاكيد اما كافة نحو انما الله اله واحد انما الهكم اله واحد كانما اغشيت وجوههم ربما يود الذين كفروا اوغير كافة نحو فاماترين ايا ما تدعوا ايما الاجلين قضيت فبما رحمة مما خطاياهم مثلا ما بعوضة قال الفارسي جميع ما فى القران من الشرط بعد اما موكد بالنون لمشابهة فعل الشرط بدخول ما للتاكيد لفعل القسم من جهة ان ما كاللام فى القسم لما فيها من التاكيد وقال ابوالبقا زيادة ما مؤذنة

في يونس فلولا كانت قرية فنفعها ايمانها يقول فما كانت قرية
و قوله فلولا انه كان من المسبحين و بهذا يتضح مراد الخليل و هو
ان مراده لولا المقترنة بالفا لوما بمنزلة لولا قال الله تعالى لوما
تاتينا بالملائكة و قال الما لقي لم ترد الا للتخصيص ليت حرف
ينصب الاسم و يرفع الخبر و معناه التمني و قال التنوخي انما
تفيد تاكيده ليس فعل جامد و من ثم ادعى قوم حرفيته و معناه
نفي مضمون الجملة في الحال و نفي غيره بالقرينة و قيل هي
لنفي الحال وغيره و قواه ابن الحاجب بقوله تعالى الا يوم يأتيهم
ليس مصروفا عنهم فانه نفي للمستقبل قال ابن مالك و ترد للنفي
العام المستغرق المراد به الجنس كلا التبرية و هو مما يغفل عنه
و خرج عليه ليس لهم طعام الا من ضريع ما اسمية و حرفية فالاسمية
ترد موصولة بمعنى الذي نحو ما عندكم ينفد و ما عند الله باق
و يستوي فيها المذكر و المونث و المفرد و المثنى و الجمع و الغالب
استعمالها فيما لا يعلم و قد تستعمل في العالم نحو و السماء و ما بناها
و لا انتم عابدون ما اعبد اي الله و يجوز في ضميرها مراعاة اللفظ
و المعنى و اجتمعا في قوله ويعبدون من دون الله ما لا يملك لهم
رزقا من السموات و الارض شيئا و لا يستطيعون و هذه معرفة بخلاف
الباقي و استفهامية بمعنى اي شيء ويسأل بها عن اعيان ما لا يعقل
و اجناسه و صفاته و اجناس العقلاء و انواعهم و صفاتهم نحو ما هي
ما لونها ما و لاهم ما تلك بيمينك و ما الرحمن ولا يسأل بها عن
اعيان اولى العلم خلافا لمن اجازه و اما قول فرعون و ما رب العالمين
فانه قاله جهلا و لهذا اجابه موسى بالصفات و يجب حذف الفها

جوابها فعلا مقرونا باللام ان كان مثبتا نحو فلو لا انه كان من المسبحين للبث و مجردا منها ان كان منفيا نحو و لو لا فضل الله عليكم و رحمته ما زكى منكم من احد ابدا و ان وليها ضمير فحقه ان يكون ضمير رفع نحو لولا انتم لكنا مومنين الثاني ان تكون بمعنى هلا فهي للتخصيص و العرض فى المضارع او ما في تاويله نحو لولا تستغفرون الله لولا اخرتني الى اجل قريب و للتوبيخ و التنديم فى الماضي نحو لولا جاؤا عليه باربعة شهداء فلولا نصرهم الذين اتخذوا من دون الله و لولا اذ سمعتموه قلتم فلولا اذ جاء هم باسنا تضرعوا فلولا اذا بلغت الحلقوم فلولا ان كنتم غير مدينين ترجعونها الثالث ان تكون للاستفهام ذكره الهروي و جعل منه لولا اخرتني لولا انزل اليه ملك و الظاهر انها فيهما بمعنى هلا الرابع ان تكون للنفي ذكره الهروي ايضا و جعل منه فلولا كانت قرية آمنت اي آمنت قرية اي اهلها عند مجيء العذاب فنفعها ايمانها و الجمهور لم يثبتوا ذلك و قال المراد فى الآية التوبيخ على ترك الايمان قبل مجيء العذاب و يؤيده قرأة ابي فهلا و الاستثناء حينئذ منقطع فائدة نقل عن الخليل ان جميع ما فى القرآن من لولا فهي بمعنى هلا الا فلولا انه كان من المسبحين و فيه نظر لما تقدم من الآيات و كذا قوله لولا ان رأى برهان ربه لولا فيه امتناعية و جوابها محذوف اي لهم بها او لواقعها و قوله لولا ان من الله علينا لخسف بنا و قوله لولا ان ربطنا على قلبها اي لا بدت به في آيات آخر و قال ابن ابي حاتم ثنا موسى الحطمي ثنا هرون بن ابي حاتم ثنا عبد الرحمن بن ابي حماد عن اسباط عن السدي عن ابي مالك قال كلما فى القرآن فلولا فهو فهلا الا حرفين

ليت كما تقول ليتهم بادون انتهى كلامه و جواب لو اما مضارع منفي بلم او ماض مثبت او منفي بما و الغالب على المثبت دخول اللام عليه نحو لو نشاء لجعلناه حطاما و من تجرده لو تشاء جعلناه اجاجا و الغالب على المنفي تجرده نحو و لو شاء ربك ما فعلوه فائدة ثالثة قال الزمخشري الفرق بين قولك لو جاءني زيد لكسوته و لو زيد جاءني لكسوته و لو ان زيدا جاءني لكسوته ان القصد فى الاول مجرد ربط الفعلين و تعليق احدهما بصاحبه لا غير من غير تعرض لمعنى زائد على التعلق الساذج و فى الثاني انضم الى التعليق احد معنيين اما نفى الشك و الشبهة و ان المذكور مكسر لا محالة و اما بيان انه هو المختص بذلك دون غيره و يخرج عليه آية لو انتم تملكون و فى الثالث مع ما فى الثاني زيادة التاكيد الذي تعطيه ان و اشعار بان زيدا كان حقه ان يجيء و انه يترك المجيء قد اغفل حظه و يخرج عليه و لو انهم صبروا و نحوه فتامل ذلك و خرج عليه ما وقع فى القرآن من احد الثلاثة تنبيه ترد لو شرطية فى المستقبل و هي التي تصلح موضعها ان نحو و لو كره المشركون و لو اعجبك حسنهن و مصدرية و هي التي تصلح موضعها ان المفتوحة و اكثر وقوعها بعد ود و نحوه نحو ود كثير من اهل الكتاب لو يردونكم يود احدهم لو يعمر يود المجرم لو يفتدي اي الرد و التعمير و الافتداء و للتمني و هي التي يصلح موضعها ليت نحو فلو ان لنا كرة فنكون و لهذا نصب الفعل في جوابها و للتقليل و خرج عليه و لو على انفسكم لولا على اوجه احدها ان تكون حرف امتناع لوجود فتدخل على الجملة الاسمية و يكون

زيد قام عمرو محكوم بانتفائه وبكونه مستلزما ثبوته لثبوت قيام من عمرو وهل لعمرو قيام اخر غير اللازم عن قيام زيدا وليس له لا تعرض لذلك قال ابن هشام وهذه اجود العبارات فائدة اخرج ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس قال كل شيء في القرآن لو فانه لايكون ابدا فائدة ثانية تختص لو المذكورة بالفعل واما نحو قل لو انتم تملكون فعلى تقديره قال الزمخشري واذا وقعت ان بعدها وجب كون خبرها فعلا ليكون عوضا عن الفعل المحذوف ورده ابن الحاجب بآية ولو ان ما في الارض قال انما ذاك اذا كان مشتقا لا جامدا ورده ابن مالك بقوله لو ان حيا مدرك الفلاح ادركه ملاعب الرماح قال ابن هشام وقد وجدت آية في التنزيل وقع فيها الخبر اسما مشتقا ولم يتنبه لها الزمخشري كما لم يتنبه لآية لقمان ولا ابن الحاجب والا لما منع من ذلك ولا ابن مالك والا لما استدل بالشعر وهي قوله يودوا لو انهم بادون في الاعراب و وجدت آية الخبر فيها طرف وهي لو ان عندنا ذكرا من الاولين ورد ذلك الزركشي في البرهان وابن الدماميني بان لو في الآية الاولى للتمني والكلام في الامتناعية اعجب من ذلك ان مقالة الزمخشري سبقه اليها السيرافي وهذا الاستدراك و ما استدرك به منقول قديما في شرح الايضاح لابن الخباز لكن في غير مظنته فقال في باب ان واخواتها قال السيرافي تقول لو ان زيدا قام لاكرمته ولا يجوز لو ان زيدا حاضر لاكرمته لانك لم تلفظ بفعل يسد مسد ذلك الفعل هذا كلامه وقد قال الله تعالى وان يأت الاحزاب يودوا لو انهم بادون في الاعراب فا وقع خبرها صفة ولهم ان يفرقوا بان هذه للتمني فاجريت مجرى

قوله لا تدركه الابصار حيث اريد نفى الادراك على الاطلاق و هو مغاير للروية انتهي قيل و ترد لن للدعاء وخرج عليه رب بما انعمت على فلن اكون الآية لو حرف شرط فى المضى يصرف المضارع اليه بعكس ان الشرطية و اختلف في افادتها الامتناع وكيفية افادتها اياه على اقوال احدها انها لا تفيده بوجه ولا تدل على امتناع الشرط ولا امتناع الجواب بل هي لمجرد ربط الجواب بالشرط دالة على التعليق فى الماضي كما دلت ان على التعليق فى المستقبل ولم تدل بالاجماع على امتناع ولا ثبوت قال ابن هشام وهذا القول كانكار الضروريات اذ فهم الامتناع منها كالبديهي فان كل من سمع لو فعل فهم عدم وقوع الفعل من غير تردد ولهذا جاز استدراكه فتقول لوجاء زيد لاكرمته لكنه لم يجئ الثاني وهو لسيبويه قال انها حرف لما كان سيقع لوقوع غيره اي انها تقتضي فعلا ماضيا كان يتوقع ثبوته لثبوت غيره والمتوقع غير واقع فكانه قال حرف يقتضي فعلا امتنع لامتناع ما كان يثبت لثبوته الثالث وهو المشهور على السنة النحاة ومشى عليه المعربون انها حرف امتناع لامتناع اي تدل على امتناع الجواب لامتناع الشرط فقولك لوجئت لاكرمتك دال على امتناع الاكرام لامتناع المجئ واعترض بعدم امتناع الجواب في مواضع كثيرة كقوله تعالى ولو ان ما فى الارض من شجرة اقلام والبحر يمده من بعده سبعة ابحر ما نفدت كلمات الله ولو اسمعهم لتولوا فان عدم النفاد عند فقد ما ذكر والتولى عند عدم الاسماع اولى الرابع وهو لابن مالك انها حرف يقتضي امتناع ما يليه واستلزامه لتاليه من غير تعرض لنفي التالي قال فقيام زيد من قولك لوقام

اذا هم يشركون و جوز ابن عصفور كونه مضارعا نحو فلما ذهب عن ابراهيم الروع و جاءته البشري يجادلنا و اوله غيره يجادلنا الثالث ان تكون حرف استثناء فتدخل على الاسمية و الماضية نحو ان كل نفس لما عليها حافظ بالتشديد اي الا و ان كل ذلك لما متاع الحياة الدنيا لن حرف نصب و نفي و استقبال و النفي بها ابلغ من النفي بلا فهي لتاكيد النفي كما ذكره الزمخشري و ابن الخباز حتى قال بعضهم ان منعه مكابرة فهي لنفي اني افعل ولا لنفي افعل كما في لم ولما قال بعضهم العرب تنفي المظنون بلن و المشكوك بلا ذكره ابن الزملكاني في التبيان و ادعى الزمخشري ايضا انها لتابيد النفي كقوله لن يخلقوا ذبابا ولن تفعلوا قال ابن مالك وحمله على ذلك اعتقاده في لن تراني ان الله لايرى ورد غيره بانها لوكانت للتابيد لم يقيد منفيها باليوم في فلن اكلم اليوم انسيا ولم يصح التوقيت في لن نبرح عليه عاكفين حتى يرجع الينا موسى ولكان ذكر الابد في و لن يتمنوه ابدا تكرارا و الاصل عدمه و استفادة التابيد في لن يخلقوا ذبابا و نحوه من خارج و وافقة على افادة التابيد ابن عطية و قال في قوله لن تراني لوبقينا على هذا النفي لتضمن ان موسى لا يراه ابدا ولا في الاخرة لكن ثبت في الحديث المتواتران اهل الجنة يرونه وعكس ابن الزملكاني مقالة الزمخشري فقال ان لن لنفي ما قرب وعدم امتداد النفي ولا يمتد معها النفي قال وسر ذلك ان الالفاظ مشاكلة للمعاني ولا اخرها الالف و الالف يمكن امتداد الصوت بها بخلاف النون فطابق كل لفظ معناه قال ولذلك اتي بلن حيث لم يرد به النفي مطلقا بل في الدنيا حيث قال لن تراني وبلا في

قتادة قال كان في بعض القراءة وتتخذون مصانع كانكم خالدون
لم حرف جزم لنفي المضارع و قلبه ما ضيا نحو لم يلد و لم يولد
والنصب بها لغة حكاها اللحياني و خرج عليها قراءة الم نشرح
لما على اوجه احدها ان تكون حرف جزم فتختص بالمضارع و تنفيه
وتقلبه ما ضيا كلم لكن يفترقان من اوجه انها لا تقترن باداة شرط
و نفيها مستمر الى الحال و قريب منه و يتوقع ثبوته قال ابن مالك
في لما يذوقوا عذاب المعنى لم يذوقوه و ذوقه لهم متوقع و قال
الزمخشري في و لما يدخل الايمان في قلوبكم ما في لما من معنى
التوقع دال على ان هولاء قد آمنوا فيما بعد و ان نفيها اكد من نفي
لم فهي لنفي قد فعل و لم لنفي فعل ولهذا قال الزمخشري في
الفائق تبعا لابن جني انها مركبة من لم وما وانهم لما زادوا في
الاثبات قد زادوا في النفي ما وان منفي لما جائز الحذف اختيارا
بخلاف لم و هي احسن ما يخرج عليه و ان كلا لما اي لما يهملوا او
يتركوا قاله ابن الحاجب قال ابن هشام ولا اعرف وجها في الآية
اشبه من هذا و ان كانت النفوس تستبعده لان مثله لم يقع في التنزيل
قال و الحق ان لا يستبعد لكن الاولي ان يقدر لما يوفوا اعمالهم اي
انهم الى الآن لم يوفوها و سيوفونها الثاني ان تدخل على الماضي
فتقتضي جملتين وجدت الثانية عن وجود الاولي نحو فلما نجاكم
الى البر اعرضتم و يقال فيها حرف وجود لوجود و ذهب جماعة الى
انها حينئذ ظرف بمعنى حين و قال ابن مالك بمعنى اذ لانها
مختصة بالماضي و بالاضافة الى الجملة و جواب هذه يكون ماضيا
كما تقدم و جملة اسمية بالفاء او باذا الفجائية نحو فلما نجاهم الى البر

برفع ما توهم بثبوته نحو ما زيد شجاعا لكنه كريم لان الشجاعة و الكرم لا يكاد ان يفترقان فنفي احدهما يوهم نفي الآخر و مثل التوكيد بنحو لو جاءني اكرمته لكنه لم يجئ فاكدت ما افادته لو من الامتناع و اختار ابن عصفور انها لهما معا و هو المختار كما ان كان للتشبيه المؤكد و لهذا قال بعضهم انها مركبة من لكن ان فطرحت الهمزة للتخفيف و نون لكن للساكنين لكن مخففة ضربان احدهما مخففة من الثقيلة و هي حرف ابتداء لا تعمل بل لمجرد افادة الاستدراك و ليست عاطفة لاقترانها بالعاطف في قوله و لكن كانوا هم الظالمين و الثاني عاطفة اذا تلاها مفرد و هي ايضا للاستدراك نحو لكن الله يشهد لكن الرسول لكن الذين اتقوا ربهم لدا و لدن تقدما في عند لعل حرف ينصب الاسم و يرفع الخبر و له معان اشهرها التوقع و هو الترجي فى المحبوب نحو لعلكم تفلحون و الاشفاق فى المكروه نحو لعل الساعة قريب و ذكر التنوخي انها تفيد تاكيد ذلك الثاني التعليل و خرج عليه فقولا له قولا لينا لعله يتذكر او يخشى الثالث الاستفهام و خرج عليه لا تدري لعل الله يحدث بعد ذلك امرا و ما يدريك لعله يزكى و لذا علق تدري قال فى البرهان و حكى البغوي عن الواقدي ان جميع ما فى القرآن من لعل فانها للتعليل الا قوله لعلكم تخلدون فانها للتشبيه قال و كونها للتشبيه غريب لم يذكره النحاة و وقع في صحيح البخاري في قوله لعلكم تخلدون ان لعلكم للتشبيه و ذكر غيره انه للرجاء المحض و هو بالنسبة اليهم انتهى قلت اخرج ابن ابي حاتم من طريق السدي عن ابي مالك قال لعلكم فى القرآن بمعنى كى غير آية فى الشعراء لعلكم تخلدون يعني كانكم تخلدون و اخرج عن

بمعنى نقص و قيل اصلها ليس تحركت الياء فقلبت الفا لانفتاح ما قبلها و ابدلت السين تاء و قيل هي كلمتان لا النافية زيدت عليها التاء لتانيث الكلمة و حركت لالتقاء الساكنين و عليه الجمهور و قيل هي لاء النافية و التاء زائدة في اول الحين و استدل له ابو عبيدة بانه وجدها في مصحف عثمان مختلطة بحين فى الخط و اختلف في عملها فقال الاخفش لا تعمل شيئا فان تلاها مرفوع فمبتدأ و خبر او منصوب فبفعل محذوف فقوله تعالى و لات حين مناص بالرفع اي كائن لهم و بالنصب اي لا ارى حين مناص و قيل تعمل عمل ان و قال الجمهور تعمل عمل ليس و على كل قول لا يذكر بعدها الا احد المعمولين و لا تعمل الا في لفظ الحين قيل او ما رادفه و قال الفراء و قد يستعمل حرف جر لاسماء الزمان خاصة و خرج عليه قرأة و لات حين بالجر لاجرم وردت فى القرآن في خمسة مواضع متلوة بان و اسمها و لم يجئ بعدها فعل فاختلف فيها فقيل لا نافية لما تقدم و جرم فعل معناه حق و ان مع ما في حيزه فاعله و قيل زائدة و جرم معناه كسب اي كسب لهم عملهم الندامة و ما في حيزها في موضع نصب و قيل هما كلمتان ركبتا و صار معنا هما حقا و قيل معنا هما لابد و ما بعدها في موضع نصب باسقاط حرف الجر لكن مشددة النون حرف ينصب الاسم و يرفع الخبر و معناه الاستدراك و فسر بان يثبت لما بعدها حكما مخالفا لحكم ما قبلها و لذلك لابد ان يتقدمها كلام مخالف لما بعدها او مناقض له نحو و ما كفر سليمان و لكن الشياطين كفروا و قد ترد للتوكيد مجردا عن الاستدراك قاله صاحب البسيط و فسر الاستدراك

لا تتخذوا عدوى لا يتخذ المومنون الكافرين و لا تنسوا الفضل او دعاء نحو لا تواخذنا الثالث التاكيد و هي الزائدة نحو ما منعك ان لا تسجد ما منعك اذ رايتهم ضلوا ان لا تتبعني لئلا يعلم اهل الكتاب اي ليعلمون قال ابن جنى لا هنا موكدة قائمة مقام اعادة الجملة مرة اخرى و اختلف في قوله لا اقسم بيوم القيمة فقيل زائدة و فائدتها مع التوكيد التمهيد لنفي الجواب و التقدير لا اقسم بيوم القيامة لا تتركون سدي و مثله فلا و ربك لا يومنون حتى يحكموك و يؤيده قرأة لا اقسم و قيل نافية لما تقدم عنهم من انكار البعث فقيل لهم ليس الامر كذلك ثم استونف القسم قالوا و انما صح ذلك لان القرآن كله كالسورة الواحدة و لهذا يذكر الشيء في سورة و جوابه نحو و قالوا يا ايها الذي نزل عليه الذكر انك لمجنون ما انت بنعمة ربك بمجنون و قيل منفيها اقسم على انه اخبار لا انشاء و اختاره الزمخشري قال و المعنى في ذلك انه لا يقسم بالشيء الا اعظاما له بدليل فلا اقسم بمواقع النجوم و انه لقسم لو تعلمون عظيم فكانه قيل ان اعظامه بالاقسام به كلا اعظامه اي انه يستحق اعظاما فوق ذلك و اختلف في قوله قل تعالوا اتل ما حرم ربكم عليكم ان لا تشركوا فقيل لا نافية و قيل ناهية و قيل زائدة و في قوله و حرام على قرية اهلكناها انهم لا يرجعون فقيل زائدة و قيل نافية و المعنى ممتنع عدم رجوعهم الى الآخرة تنبيه ترد لا اسما بمعنى غير فيظهر اعرابها فيما بعدها نحو غير المغضوب عليهم و لا الضالين لا مقطوعة و لا ممنوعة لا فارض و لا بكر فائدة قد تحذف الفها و خرج عليه ابن جنى و اتقوا فتنة لا تصيبن الذين ظلموا منكم خاصة لات اختلف فيها فقال قوم فعل ماض

كقوله يدعو لمن ضره اقرب من نفعه و لام الجواب للقسم او لو او لولا
نحو تالله لقد اثرك الله تالله لاكيدن اصنامكم لو تزيلوا لعذبنا
و لولا دفع الله الناس بعضهم ببعض لفسدت الارض و اللام الموطية
و تسمى الموذنة و هى الداخلة على اداة شرط للايذان بان الجواب
بعدها مبني على قسم مقدر نحو لئن اخرجوا لا يخرجون معهم
و لئن قوتلوا لا ينصرونهم و لئن نصروهم ليولن الادبار و خرج
عليها قوله تعالى لما اتيتكم من كتاب لا على اوجه احدها ان
تكون نافية وهي انواع احدها ان تعمل عمل ان و ذلك اذا اريد
بها نفى الجنس على سبيل التنصيص و تسمى ح تبرية و انما
يظهر نصبها اذا كان مضافا او شبهه و الا فيركب معها نحو لا اله
الا الله لا ريب فيه فان تكررت جاز التركيب و الرفع نحو فلا رفث
و لا فسوق و لا جدال لا بيع فيه و خلة و لا شفاعة لا لغو فيها ولا تاثيم
ثانيها ان تعمل عمل ليس نحو و لا اصغر من ذلك و لا اكبر الا في
كتاب ثالثها و رابعها ان تكون عاطفة او جوابية و لم يقعا فى القرآن
خامسها ان تكون على غير ذلك فان كان ما بعدها جملة اسمية
صدرها معرفة او نكرة و لم تعمل فيها او فعلا ماضيا لفظا او تقديرا
وجب تكرارها نحو لا الشمس ينبغي لها ان تدرك القمر و لا الليل
سابق النهار لا فيها غول و لا هم عنها ينزفون فلا صدق و لا صلى او
مضارعا لم يجب نحو لا يحب الله الجهر قل لا اسالكم عليه اجرا
و تعترض لا هذه بين الناصب و المنصوب نحو ليلا يكون للناس و الجازم
و المجزوم نحو ان لا تفعلوه الوجه الثاني ان تكون لطلب الترك
فتختص بالمضارع و تقتضي جزمه و استقباله سواء كان نهيا نحو

الذي عندى انها للتعليل حقيقة وانهم التقطوه ليكون لهم عدوا و
ذلك على حذف مضاف تقديره لمخافة ان تكون كقوله يبين الله
لكم ان تضلوا اي كراهته ان تضلوا انتهى والتاكيد وهي الزايدة اوالمقوية
للعامل الضعيف لفرعية او تاخير نحو ردف لكم يريد الله ليبين لكم
وامرنا لنسلم فعال لما يريدان كنتم للرويا تعبرون وكذا لحكمهم شاهدين
والتبيين للفاعل اوالمفعول نحو فتعسالهم هيهات هيهات لما توعدون
هيت لك والناصبة هي لام التعليل ادعي الكوفيون النصب بها
وقال غيرهم بان مقدرة في محل جربا للام والجازمة هي لام الطلب
وحركتها الكسر وسايم بفتحها واسكانها بعد الواو والفاء اكثر من تحريكها
نحو فليستجيبو الى وليومنوا بي وقد تسكن بعد ثم نحو ثم ليقضوا
وسواء كان الطلب امرا نحو لينفق ذوسعة اودعا نحو ليقض علينا ربك
وكذا لوخرجت الى الخبر نحو فليمدد له الرحمن و لنحمل خطاياكم
او التهديد نحو ومن شاء فليكفر و جزمها فعل الغائب كثير نحو فلتقم
طائفة و ليا خذوا اسلحتهم فليكونوا من ورايكم ولتات طايفة اخرى لم
يصلوا فليصلوا معك و فعل المخاطب قليل و منه فبذلك فلتفرحوا
في قراة التاء و فعل المتكلم اقل و منه و لنحمل خطايا كم و غير العاملة
اربع لام الابتداء و فائدتها امران توكيد مضمون الجملة و لهذا زحلقوها
في باب ان عن صدر الجملة كراهة توالى موكدين و تخليص المضارع
للحال و تدخل فى المبتداء نحو لانتم اشد رهبة و في خبر ان نحو
ان ربي لسميع الدعاء ان ربك ليحكم بينهم و انك لعلي خلق عظيم
و اسمها الموخر نحو ان علينا للهدى و ان لنا للاخرة و اللام الزايدة في
خبر ان المفتوحة كقرأة سعيد بن جبير الا انهم ليا كلون الطعام والمفعول

ويل للمطففين لهم في الدنيا خزي وللكافرين النار اي عذابها
و الاختصاص نحو ان له ابا فان كان له اخوة و الملك نحو له ما في
السموات و ما في الارض و التعليل نحو و انه لحب الخير لشديد
اي و انه من اجل حب المال لبخيل و اذ اخذ الله ميثاق النبيين
لما اتيتكم من كتاب و حكمة الآية في قراة حمزة اي لاجل ايتاى
اياكم بعض الكتاب و الحكمة ثم لمجيء محمد صلى الله عليه و سلم
مصدقا لما معكم لتومنن به فما مصدرية و اللام تعليلية و قوله ليلاف
قريش و تعلقها بيعبد و او قيل بما قبله اي فجعلهم كعصف ما كول
ليلاف قريش و رجح بانهما في مصحف أبي سورة واحدة و موافقة
الى نحو بان ربك اوحى لها كل يجرى لاجل مسمى وعلى نحو
و يخرون للاذقان دعا نالجنبه وتله للجبين وان اسأتم فلها ولهم اللعنة
اي عليهم كما قال الشافعي و في نحو و نضع الموازين القسط ليوم
القيمة لا يجليها لوقتها الا هو ياليتني قدمت لحياتي اي في
حياتي و قيل هي فيها للتعليل اي لاجل حياتي في الاخرة وعند
كقراة الحجدري بل كذبوا بالحق لما جاهم وبعد نحو اقم الصلوة لدلوك
الشمس وعن نحو قال الذين كفرو اللذين آمنوا لوكان خيرا ما سبقونا
اليه اي عنهم و في حقهم لا انهم خاطبوا به المومنين والا قيل ما
سبقتمونا والتبليغ وهي الجارة لاسم السامع لقول او ما في معناه
كالاذن والصير ورة ويسمى لام العاقبة نحو فالتقطة آل فرعون ليكون لهم
عدوا وحزنا فهذا عاقبة التقاطهم لاعلته اذهي التبني ومنع قوم ذلك
وقالوا هي للتعليل مجاز الان كونه عدوا لما كان ناشيا من الا لتقاط وان
لم يكن لهم عرضا نزل منزلة الغرض على طريق المجاز وقال ابوحيان

للتناسب قال ابن هشام و ليس التوجيه منحصرا عند الزمخشري في ذلك بل جوز كون التنوين بدلا من حرف الاطلاق المزيد في راس الآية ثم انه وصل بنية الوقف كم اسم مبني لازم الصدر مبهم مفتقر الى التمييز و ترد استفهامية و لم تقع في القرآن و خبرية بمعنى كثير و انما تقع غالبا في مقام الافتخار و المباهاة نحو و كم من ملك في السموات و كم من قرية اهلكناها و كم قصمنا من قرية و عن الكسائي ان اصلها كما فحذفت الالف مثل بم و لم حكاه الزجاج و رده بانه لو كان كذلك لكانت مفتوحة الميم كي حرف له معنيان احدهما التعليل نحو كي لا يكون دولة بين الاغنياء و الثاني معنى ان المصدرية نحو لكيلا تاسوا لصحة حلول ان محلها و لانها لو كانت حرف تعليل لم يدخل عليها حرف تعليل كيف اسم يرد على وجهين الشرط و خرج عليه ينفق كيف يشاء يصوركم في الارحام كيف يشاء فيبسطه في السماء كيف يشاء و جوابها في ذلك كله محذوف لدلالة ما قبلها و الاستفهام و هو الغالب و يستفهم بها عن حال الشيء لا عن ذاته قال الراغب و انما يسال بها عن ما يصح ان يقال فيه شبيه و غير شبيه و لهذا لا يصح ان يقال في الله كيف قال و كلما اخبر الله بلفظ كيف عن نفسه فهو استخبار على طريق التنبيه للمخاطب او التوبيخ نحو كيف تكفرون كيف يهدي الله قوما اللام اربعة اقسام جارة و ناصبة و جازمة و مهملة غير عاملة فالجارة مكسورة مع الظاهر و اما قرأة بعضهم الحمد لله فالضمة عارضة للاتباع مفتوحة مع المضمر الا اليأ و لها معان الاستحقاق و هي الواقعة بين معنى و ذات نحو الحمد لله الملك لله لله الامر

بسيطة فقال سيبويه و الاكثرون حرف معناه الردع و الزجر لا معنى لها عندهم الا ذلك حتى انهم يجيزون ابدا الوقف عليها و الابتداء بما بعدها وحتى قال جماعة منهم متى سمعت كلا في سورة فاحكم بانها مكية لان فيها معنى التهديد و الوعيد و اكثرما نزل بمكة لان اكثر العتو كان بها قال ابن هشام و فيه نظر لانه لا يظهر معنى الزجر في نحو ما شاء ربك كلا يوم يقوم الناس لرب العالمين كلا ثم ان علينا بيانه كلا و قولهم انته عن ترك الايمان بالتصوير في اي صورة شاء الله و بالبعث و عن العجلة بالقرآن تعسف اذ لم يتقدم في الاولين حكاية نفي ذلك عن احد و لطول الفصل في الثالثة بين كلا و ذكر العجلة و ايضا فان اول ما نزل خمس آيات من اول سورة العلق ثم نزل كلا ان الانسان ليطغى فجاءت في افتتاح الكلام. وراى آخرون ان معنى الردع و الزجر ليس مستمرا فيها فزادوا معنا ثانيا يصح عليه ان يوقف دونها و يبتدا بها ثم اختلفوا في تعيين ذلك المعنى فقال الكسائي يكون بمعنى حقا و قال ابو حاتم بمعنى الا الاستفتاحية قال ابو حيان و لم يسبقه الى ذلك احد و تابعه جماعة منهم لزجاج و قال النضر بن شميل حرف جواب بمنزلة اي و نعم و حملوا عليه كلا و القمر و قال الفرا و ابن سعد ان بمعنى سوف حكاه ابو حيان في تذكرته قال مكي و اذا كان بمعنى حقا فهو اسم وقرئ كلا سيكفرون بعبادتهم بالتنوين ووجه بانه مصدر كل اذا اعيا اي كلوا في دعواهم و انقطعوا او من الكل و هو الثقل اي حملوا كلا و جوز الزمخشري كونه حرف الردع نون كما في سلا سلا ورده ابوحيان بان ذلك انما صح في سلا سلا لانه اسم اصله التنوين فرجع به الى اصله

عبد القد احصاهم و عدهم عدا و كلهم اتيه يوم القيمة فردا او قطعت فكذلك نحو كل يعمل على شاكلته فكلا اخذنا بذنبه و كل اتوه واخرين و كل كانوا ظالمين و حيث وقعت في حيز النفي بان تقدمت عليها اداته او الفعل المنفي فالنفي موجه الى الشمول خاصة و يفيد بمفهومه اثبات الفعل لبعض الافراد و ان وقع النفي في حيزها فهو موجه الى كل فرد هكذا ذكره البيانيون و قد اشكل على هذه القاعدة قوله و الله لا يحب كل مختال فخور اذ تقتضي اثبات الحب لمن فيه احد الوصفين و اجيب بان دلالة المفهوم انما يعول عليها عند عدم المعارض و هو هنا موجود اذ دل الدليل على تحريم الاختيال و الفخر مطلقا مسالة يتصل ما بكلما نحو كلما رزقوا منها من ثمرة رزقا و هي مصدرية لكنها نابت بصلتها عن ظرف زمان كما ينوب عنه المصدر الصريح و المعنى كل وقت و لهذا تسمى ما هذه المصدرية الظرفية النايبة عن الظرف لا انها ظرف في نفسها فكل من كلما منصوب على الظرف لاضافته الى شئ هو قائم مقامه و ناصبه الفعل الذي هو جواب فى المعنى و قد ذكر الفقهاء و الاصوليون ان كلما للتكرار قال ابو حيان و انما ذلك من عموم ما لان الظرفية مراد بها العموم و كل اكدته كلا و كلتا اسمان مفرد ان لفظا مثنيان معنى مضافان ابدا لفظا و معنى الى كلمة واحدة معرفة دالة على اثنين قال الراغب و هما فى التثنية ككل فى الجمع قال تعالى كلتا الجنتين اتت احدهما او كلاهما كلا مركبة عند ثعلب من كاف التشبيه و لاء النافية شدت لامها لتقوية المعنى و لدفع توهم بقاء معنى الكلمتين و قال غيره

معه ربيون و فيها لغات منها كاين بوزن بايع و قرأبها ابن كثير حيث وقعت و كائن بوزن كعين و قرى بها و كائن من نبي قتل و هو مبنية لازمة الصدر ملازمة للابهام مفتقرة الى تمييز و تمييزها مجرور بمن غالبا و قال ابن عصفور لازما كذا لم ترد فى القرآن الا للاشارة نحو ا هكذا عرشك كل اسم موضوع لاستغراق افراد المنكر المضاف هو اليه نحو كل نفس ذايقة الموت و المعرف المجموع نحو و كلهم اتيه يوم القيمة فردا كل الطعام كان حلا و اجزأ المفرد المعرف نحو يطبع الله على كل قلب متكبر باضافة قلب الى متكبر اي على كل اجزائه و قرأة التنوين لعموم افراد القلوب و ترد باعتبار ما قبلها و ما بعدها على ثلثة اوجه احدها ان تكون لغتا لنكرة او معرفة فتدل على كماله و تجب اضافتها الى اسم ظاهر يماثله لفظا و معنى نحو و لا تبسطها كل البسط اي بسطا كل البسط اي تاما فلا تميلوا كل الميل ثانيها ان تكون توكيدا لمعرفة ففائدتها العموم و يجب اضافتها الى ضمير راجع للموكد نحو فسجد الملائكة كلهم اجمعون و اجاز الفراء و الزمخشري قطعها ح عن الاضافة لفظا و خرج عليه قرأة بعضهم ان كلا فيها ثالثها ان لا تكون تابعة بل تالية للعوامل فتقع مضافة الى الظاهر و غير مضافة نحو كل نفس بما كسبت رهينة و كلا ضربنا له الامثال و حيث اضيفت الى منكر وجب في ضميرها مراعاة معناها نحو و كل شيء فعلوه و كل انسان الزمناه كل نفس ذايقة الموت كل نفس بما كسبت رهينة و على كل ضامريانين او الى معرف جاز مراعاة لفظها فى الافراد و التذكير و مراعاة معناها و قد اجتمعا في قوله ان كل من فى السموات و الارض الا اتى الرحمن

اموالا و اولادا و تاتي بمعني الدوام و الاستمرار نحو و كان الله غفورا رحيما وكنا بكل شيء عالمين اي لم نزل كذلك و على هذا المعني يتخرج جميع الصفات الذاتية المقترنة بكان قال ابوبكر الرازي كان في القرآن على خمسة اوجه بمعنى الازل و الابد كقوله وكان الله عليما حكيما وبمعنى المضي المنقطع و هو الاصل في معناه نحو وكان في المدينة تسعة رهط و بمعني الحال نحو كنتم خير امة ان الصلاة كانت على المومنين كتابا موقوتا و بمعنى الاستقبال نحو يخافون يوماً كان شره مستطيراً و بمعني صار نحو وكان من الكافرين انتهى قلت اخرج ابن ابي حاتم عن السدي قال قال عمر بن الخطاب لوشاء الله لقال انتم فكنا كلنا ولكن قال كنتم في خاصة اصحاب محمد صلى الله عليه وسلم وترد كان بمعني ينبغي نحو ما كان لكم ان تنبتوا شجرها ما يكون لنا ان نتكلم بهذا وبمعني حضر او وجد نحو وان كان ذو عسرة الا ان تكون تجارة و ان تك حسنة وترد للتاكيد وهي الزائدة و جعل منه وما علمي بما كانوا يعملون اي بما يعملون كان بالتشديد حرف للتشبيه الموكد لان الاكثر على انه مركب من كاف التشبيه وان الموكدة والاصل في كان زيدا اسد ان زيدا كاسد قدم حرف التشبيه اهتماما به ففتحت همزة ان لدخول الجار قال حازم وانما تستعمل حيث يقوي الشبه حتى يكاد الرائي يشك في ان المشبه هو المشبه به او غيره و لذلك قالت بلقيس كانّه هو قيل و ترد للظن و الشك فيما اذا كان خبرها غير جامد وقد تخفف نحو كان لم يدعنا الى ضرّ مسه كاين اسم مركب من كاف التشبيه و اي المنونة للتكثير في العدد نحو وكاين من نبي قتل

في ذلك ونحوه حرف خطاب لا محل له من الاعراب و في اياك قيل حرف وقيل اسم مضاف اليه و في ارايتك قيل حرف وقيل اسم في محل رفع وقيل نصب والاول ارجح كاد فعل ناقص اتي منه الماضي والمضارع فقط له اسم مرفوع وخبر مضارع مجرد من ان ومعناها قارب فنفيها نفي للمقاربة واثباتها اثبات للمقاربة واشتهر على السنة كثيران نفيها اثبات واثباتها نفي فقولك كاد زيد يفعل معناه لم يفعل بدليل وان كادوا ليفتنونك وما كاد يفعله معناه فعل بدليل و ما كادوا يفعلون اخرج ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس قال كل شيء في القرآن كادوا كاد ويكاد فانه لايكون ابدا وقيل انها تفيد الدلالة على وقوع الفعل بعسر وقيل نفي الماضي اثبات بدليل و ما كادوا يفعلون ونفي المضارع نفي بدليل لم يكديراها مع انه لم يرشيأ و الصحيح الاول انها كغيرها نفيها نفي واثباتها اثبات فمعني كاد يفعل قارب الفعل و لم يفعل وماكاد يفعل ما قارب الفعل فضلا عن ان يفعل فنفي الفعل لازم من نفي المقاربة عقلا واما آية فذبحوها وما كادوا يفعلون فهو اخبار عن حالهم في اول الامر فانهم كانوا اولا بُعَدآ من ذبحها واثبات الفعل انما فهم من دليل آخر وهو قوله فذبحوها واما قوله لقد كدت تركن مع انه صلى الله عليه وسلم لم يركن لا قليلا ولا كثيرا فانه مفهوم من جهة ان لولا الامتناعية تقتضي ذلك فائدة ترد كاد بمعني اراد و منه كذلك كدنا ليوسف اكاد اخفيها وعكسه كقوله جدارا يريدان ينقضّ اي يكاد كان فعل ماض ناقص متصرف يرفع الاسم وينصب الخبر معناه في الاصل المضي والانقطاع نحو كانوا اشد منكم قوة واكثر

لاجل ارسالنا فيكم رسولا منكم فاذكروني واذكروه كما هداكم اي لاجل هدايته اياكم ويكانه لا يفلح الكافرون اي اعجب لعدم فلاحهم اجعل لنا الهاكما لهم الهة والتاكيد وهي الزايدة وحمل عليه الاكثرون ليس كمثله شئ اى ليس مثله شئ ولوكانت غير زايدة لزم اثبات المثل وهو محال والقصد بهذا الكلام نفيه قال ابن جني وانما زيدت لتوكيد نفي المثل لان زيادة الحروف بمنزلة اعادة الجملة ثانيا وقال الراغب انما جمع بين الكاف والمثل لتاكيد النفي تنبيها على انه لا يصح استعمال المثل ولا الكاف فنفي بليس الامرين جميعا وقال ابن فورك ليست زائدة والمعني ليس مثل مثله شئ واذا نفت التماثل عن المثل فلامثل لله فى الحقيقة وقال الشيخ عزالدين بن عبدالسلام مثل تطلق و يراد بها الذات كقولك مثلك لا يفعل هذا اي انت لا تفعله كما قال

و لم اقل مثلك اعني به سواك يا فردا بلا مشبه

و قد قال تعالى فان امنوا بمثل ما امنتم به فقد اهتدوا اي بالذي آمنتم به اياه لان ايمانهم لا مثل له فالتقدير فى الآية ليس كذاته شئ و قال الراغب المثل هنا بمعنى الصفة و معناه ليس كصفته صفة تنبيها على انه و ان كان وصف بكثير مما وصف به البشر فليس تلك الصفات له على حسب ما تستعمل فى البشر و لله المثل الاعلى تنبيه ترد الكاف اسما بمعنى مثل فيكون في محل اعراب و يعود عليها الضمير قال الزمخشري في قوله كهيئة الطير فانفخ فيه ان الضمير في فيه للكاف في كهيئة اي فانفخ في ذلك الشئ المماثل فيصير كسائر الطيور انتهى مسألة الكاف

بالقريب قال النحاة و ابنى على افادتها ذلك احكام منها منع دخولها على ليس و عسى و نعم و بيس لانهن للحال فلا معنى لذكر ما يقرب بما هو حاصل ولانهن لا يفدن الزمان ومنها وجوب دخولها على الماضي الواقع حالا اما ظاهرة نحو و مالنا ان لا نقاتل في سبيل الله وقد اخرجنا من ديارنا او مقدرة نحو هذه بضاعتنا ردت الينا او جاوكم حصرت صدورهم و خالف في ذلك الكوفيون و الاخفش فقالوا لا تحتاج كذلك لكثرة وقوعه حالا بدون قد و قال السيد الجرجاني و شيخنا العلامة الكافيجي ما قاله البصريون غلط سببه اشتباه لفظ الحال عليهم فان الحال الذي يقربه قد حال الزمان و الحال المبين للهيئة حال الصفات و هما متغايران المعنى الثالث التقليل مع المضارع قال في المغني وهو ضربان تقليل وقوع الفعل نحو قد يصدق الكذوب وتقليل متعلقه نحو قد يعلم ما انتم عليه اي ان ماهم عليه هوا قل معلوماته تعالى قال وزعم بعضهم انها في هذه الآية و نحوها للتحقيق انتهى و ممن قال بذلك الزمخشري وقال انها دخلت لتوكيد العلم ويرجع ذلك الى توكيد الوعيد الرابع التكثير ذكره سيبويه وغيره وخرج عليه الزمخشري قد نرى تقلب وجهك في السماء قال اي ربما نرى و معناه تكثير الروية الخامس التوقع نحو قد يقدم الغايب لمن يتوقع قدومه وينتظره وقد قامت الصلوة لان الجماعة منتظرون ذلك وحمل عليه بعضهم قد سمع الله قول التي تجادلك لانها كانت تتوقع اجابة الله لدعائها الكاف حرف جره معان اشهرها التشبيه نحو وله الجوار المنشات في البحر كالاعلام والتعليل نحو كما ارسلنا فيكم قال الاخفش اي

من كتاب عند الله الى قوله فلما جاءهم ما عرفوا الخامس ان تكون للاستيناف و خرج عليه كن فيكون بالرفع اي فهو يكون في حرف جر له معان اشهرها الظرفية مكانا او زمانا نحو غلبت الروم في ادنى الارض وهم من بعد غلبهم سيغلبون في بضع سنين حقيقة كالاية او مجازا نحو و لكم فى القصاص حياة لقد كان في يوسف و اخوته ايات انا لدرك في ضلال ثانيها المصاحبة كمع نحو ادخلوا في امم اي معهم في تسع ايات ثالثها التعليل نحو فذلكن الذي لمتنني فيه لمسكم فيما افضتم اي لاجله رابعها الاستعلاء نحو لاصلبنكم في جذوع النخل اي عليها خامسها معنى الباء نحو يذروكم فيه اي بسببه سادسها معنى الى نحو فردوا ايديهم في افواههم اي اليها سابعها معنى من نحو و يوم نبعث في كل امة شهيدا اي منهم بدليل الآية الاخرى ثامنها معنى عن نحو فهو فى الآخرة اعمى اي عنها و عن محاسنها تاسعها المقايسة و هي الداخلة بين مفضول سابق و فاضل لاحق نحو فما متاع الحيوة الدنيا فى الآخرة الا قليل عاشرها التوكيد و هي الزائدة نحو و قال اركبوا فيها اي اركبوها فيها بسم الله مجرى ها و مرساها قد حرف مختص بالفعل المتصرف الجزى المثبت المجرد من ناصب و جازم و حرف تنفيس ماضيا كان او مضارعا و لها معان التحقيق مع الماضي نحو قد افلح المومنون قد افلح من زكاها و هي فى الجملة الفعلية المجاب بها القسم مثل ان و اللام فى الاسمية المجاب بها في افادة التوكيد و التقريب مع الماضي ايضا تقربه من الحال تقول قام زيد فيحتمل الماضي القريب و الماضي البعيد فان قلت قد قام اختص

نحو انزل من السماء ماء فتصبح الارض مخضرة خلقنا النطفة علقة فخلقنا العلقة مضغة الآية ثالثها السببية غالبا نحو فوكزه موسى فقضي عليه فتلقي ادم من ربه كلمات فتاب عليه لآكلون من شجر من زقوم فمالئون منها البطون فشاربون عليه من الحميم وقد تجيئ بمجرد الترتيب نحو فراغ الى اهله فجاء بعجل سمين فقرّبه اليهم فاقبلت امراته في صرة فصكت وجهها فالزاجرات زجرا فالتاليات الوجه الثاني ان تكون لمجرد السببية من غير عطف نحوانا اعطيناك الكوثر فصل اذلا يعطف الانشاء على الخبر وعكسه الثالث ان تكون رابطة للجواب حيث لايصلح لان تكون شرطا بان كان جملة اسمية نحو ان تعذبهم فانهم عبادك وان يمسسك بخير فهو على كل شي قدير او فعلية فعلها جامد نحو ان ترني انا اقل منك مالا وولدا فعسي ربي ان يوتيني ومن يفعل ذلك فليس من الله في شيء ان تبدوا الصدقات فنعما هي ومن يكن الشيطان له قرينا فساء قرينا او انشائي نحو ان كنتم تحبون الله فاتبعوني فان شهدوا فلا تشهد معهم واجتمعت الاسمية والانشاء في قوله ان اصبح ماؤكم غورا فمن يأتيكم بماء معين او ماض لفظا ومعنى نحو ان يسرق فقد سرق اخ له من قبل او مقرون بحرف استقبال نحو من يرتدد منكم عن دينه فسوف ياتي الله بقوم وما تفعلوا من خير فلن تكفروه وكما تربط الجواب بشرطه تربط شبه الجواب بشبه الشرط نحو ان الذين يكفرون بايات الله و يقتلون النبيين الى قوله فبشرهم الوجه الرابع ان تكون زايدة وحمل عليه الزجاج هذا فليذوقوه ورد بان الخبر حميم وما بينهما معترض وخرج عليه الفارسي بل الله فاعبد وغيره ولما جاءهم

فلا يتعرف مالم يقع بين ضدين ومن ثم جاز وصف المعرفة بها في قوله غير المغضوب عليهم والاصل ان يكون وصفا للنكرة نحو فعمل صالحا غير الذي كنا نعمل وتقع حالان صلح موضعها لا واستثناء ان صلح موضعها الا فيعرب باعراب الاسم التالي الا في ذلك الكلام وقرئ قوله تعالى لا يستوي القاعدون من المومنين غير اولي الضرر بالرفع على انها صفة للقاعدون او استثناء وابدل على حدما فعلوه الا قليل وبالنصب على الاستثناء وبالجر خارج السبع صفة للمومنين وفي المفردات للراغب غير تقال على اوجه الاول ان تكون للنفي المجرد من غير اثبات معني به نحو مررت برجل غير قائم اي لا قائم قال الله تعالى ومن اضل ممن اتبع هواه بغير هدي من الله وهو في الخصام غير مبين الثاني بمعني الا فيستثنى بها وتوصف به النكرة نحو مالكم من آله غيره هل من خالق غير الله الثالث لنفي الصورة من غير مادتها نحو الماء حارا غيره اذا كان باردا ومنه قوله تعالى كلما نضجت جلودهم بدلنا هم جلودا غيرها الرابع ان يكون ذلك متناولا لذات نحو تقولون على الله غير الحق اغير الله ابغي ربا ايت بقران غير هذا ويستبدل قوما غيركم انتهي الفاء ترد على اوجه احدها ان تكون عاطفة فتفيد ثلاثة امور احدها الترتيب معنويا كان نحو فوكزه موسى فقضي عليه اوذكريا وهو عطف مفصل على مجمل نحو فازلهما الشيطان عنها فاخرجهما مما كانا فيه سالوا موسى اكبر من ذلك فقالوا ارنا الله جهرة ونادي نوح ربه فقال رب الآية وانكره الفرأ واحتج بقوله اهلكناها فجاء ها باسنا واجيب بان المعني اردنا اهلاكها ثانيها التعقيب وهوا في كل شي بحسبه وبذلك ينفصل عن التراخي

الجزئين كما في احسب الناس ان يتركوا عند ظرف مكان يستعمل في الحضور والقرب سواء كانا حسيين نحو فلما رأه مستقرا عنده عند سدرة المنتهى عندها جنة الماوى او معنويين نحو قال الذي عنده علم من الكتاب وانهم عندنا لمن المصطفين في مقعد صدق عند مليك احيا عند ربهم ابن لي عندك بيتا في الجنة فالمراد في هذه الآيات قرب التشريف ورفعة المنزلة ولا تستعمل الا ظرفا او مجرورة بمن خاصة نحو فمن عندك ولما جاءهم رسول من عند الله وتعاقبها لدا ولدن نحو لدا الحناجر لدا الباب وما كنت لديهم اذ يلقون اقلامهم ايهم يكفل مريم وما كنت لديهم اذ يختصمون وقد اجتمعتا في قوله آتيناه رحمة من عندنا وعلمناه من لدنا علما ولوجي فيهما بعندا ولدن صح ولكن ترك رفعا للتكرار وانما حسن تكرار لدا في وما كنت لديهم لتباعدما بينهما وتفارق عند ولدا ولدن من ستة اوجه فعند ولدا تصلح في محل ابتداء غاية وغيرها ولا تصلح لدن الا في ابتداء غاية وعند ولدا يكونان فضلة نحو وعندنا كتاب حفيظ ولدينا كتاب ينطق بالحق ولدن لا تكون فضلة وجر لدن بمن اكثر من نصبها حتى انها لم تجي في القرآن منصوبة وجر عند كثير وجر لدا ممتنع وعند ولدا معربان ولدن مبنية في لغة الاكثرين ولدن قد لاتضاف وقد تضاف للجملة بخلافهما وقال الراغب لدن اخص من عند وابلغ لانها تدل على ابتداء نهاية الفعل انتهى وعند امكن من لدي من وجهين لانها تكون ظرفا للاعيان والمعاني بخلاف لدى وعند تستعمل في الحاضر والغايب ولا تستعمل لدي الا في الحاضر ذكرهما ابن الشجري وغيره غير اسم ملازم للاضافة والابهام

و الظنون و الباري منزه عن ذلك و الوجه في استعمال هذه الالفاظ ان الامور الممكنة لما كان الخلق يشكون فيها و لا يقطعون على الكائن منها و الله يعلم الكائن منها على الصحة صارت لها نسبتان نسبة الى الله تسمى نسبة قطع و يقين و نسبة الى المخلوق تسمى نسبة شك و ظن فصارت هذه الالفاظ لذلك ترد تارة بلفظ القطع بحسب ما هي عليه عند الله نحو فسوف ياتي الله بقوم يحبهم و يحبونه و تارة بلفظ الشك بحسب ما هي عليه عند الخلق نحو فعسى الله ان ياتي بالفتح اوامر من عنده فقولا له قولاً لينا لعله يتذكر او يخشى و قد علم الله حال ارسالهما ما يفضي اليه حال فرعون لكن ورد اللفظ بصورة ما يختلج في نفس موسى و هارون من الرجا و الطمع و لما نزل القرآن بلغة العرب جاء على مذاهبهم في ذلك و العرب قد تخرج الكلام المتيقن في صورة المشكوك لاغراض و قال ابن الدهان عسى فعل ماضي اللفظ و المعنى لانه طمع قد حصل في شيء مستقبل و قال قوم ماضي اللفظ مستقبل المعنى لانه اخبار عن طمع يريد ان يقع تنبيه وردت في القرآن على وجهين احدهما رافعة لاسم صريح بعده فعل مضارع مقرون بان و الاشهر في اعرابها حينئذ انها فعل ناقص عامل عمل كان فالمرفوع اسمها و ما بعده الخبر و قيل متعد بمنزلة قارب معنى و عملا او قاصر بمنزلة قرب من ان يفعل و حذف الجار توسعا و هو راى سيبويه و المبرد و قيل قاصر بمنزلة قرب و ان يفعل بدل اشتمال من فاعلها الثاني ان يقع بعدها ان والفعل فالمفهوم من كلامهم انها حينئذ تامة و قال ابن مالك عندي انها ناقصة ابدا و ان وصلتها سدت مسد

عسى فعل جامد لا يتصرف و من ثم ادعى قوم انه حرف و معناه الترجي في المحبوب و الاشفاق في المكروه و قد اجتمعا في قوله و عسى ان تكرهوا شيئا و هو خير لكم و عسى ان تحبوا شيئا و هو شر لكم قال ابن فارس و تاتي للقرب و الدنو نحو قل عسى ان يكون ردف لكم و قال الكسائي كلما في القرآن من عسى على وجه الخبر فهو موجد كالآية السابقة و وجد على معنى عسى الامر ان يكون كذا و ما كان على الاستفهام فانه يجمع نحو فهل عسيتم ان توليتم قال ابو عبيدة معناه هل عدوتم ذلك هل حزتموه و اخرج ابن ابي حاتم و البيهقي و غيرهما عن ابن عباس قال كل عسى في القرآن فهي واجبة و قال الشافعي يقل عسى من الله واجبة و قال ابن الانباري عسى في القرآن واجبة الا في موضعين احدهما عسى ربكم ان يرحمكم يعني بني النضير فارحمهم الله بل قاتلهم رسول الله صلى الله و سلم فاوقع و عليهم العقوبة و الثاني عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجا فلم يقع التبديل و ابطل بعضهم الاستثناء و عمم القاعدة لان الرحمة كانت مشروطة بان لا يعودوا كما قال و ان عدتم عدنا و قد عادوا فوجب عليهم العذاب والتبديل مشروطا بان يطلق و لم يطلق فلا يجب و في الكشاف في سورة التحريم عسى اطماع من الله لعباده و فيه وجهان احدهما ان يكون على ما جرت به عادة الجبابرة من الاجابة بلعل و عسى و وقوع ذلك منهم موقع القطع و البت و الثاني ان يكون جيء به تعليما للعباد ان يكونوا بين الخوف و الرجا و في البرهان عسى و لعل من الله واجبتان و ان كانتا رجاء و طمعا في كلام المخلوقين لان الخلق هم الذين يعرض لهم الشكوك

و توكل على الحى الذي لا يموت بمعنى الاضافة و الاسناد اي اضف توكلك و اسنده اليه كذا قيل و عندي انها فيه بمعنى باء الاستعانة و في نحو كتب على نفسه الرحمة لتاكيد التفضل لا الايجاب و الاستحقاق و كذا في نحو انّ علينا حسابهم لتاكيد المجازاة قال بعضهم و اذا ذكرت النعمة فى الغالب مع الحمد لم تقترن بعلى و اذا اريدت النعمة اتى بها و لهذا كان صلى الله عليه وسلم اذا راى ما يعجبه قال الحمد لله الذي بنعمته تتم الصالحات و اذا راى ما يكره قال الحمد لله على كل حال تنبيه ترد على اسما فيما ذكره الاخفش اذا كان مجرورها و فاعل متعلقها ضميرين لمسمى واحد نحو امسك عليك زوجك لما تقدمت الاشارة اليه في الى و ترد فعلا من العلو و منه ان فرعون علا فى الارض عن حرف جر له معان اشهرها المجاوزة نحو فليحذر الذين يخالفون عن امره اي يجاوزونه و يبعدون عنه ثانيها البدل نحو لا تجزى نفس عن نفس شيئا ثالثها التعليل نحو و ما كان استغفار ابراهيم لابيه الا عن موعدة اي لاجل موعدة ما نحن بتاركى آلهتنا عن قولك اي لقولك رابعها بمعنى على نحو فانما يبخل عن نفسه اي عليها خامسها بمعنى من نحو يقبل التوبة عن عباده اي منهم بدليل فتقبل من احدهما سادسها بمعنى بعد نحو يحرفون الكلم عن مواضعه بدليل ان في آية اخرى من بعد مواضعه لتركبن طبقا عن طبق اي حالة بعد حالة تنبيه ترد اسما اذا دخل عليها من و جعل منه ابن هشام ثم لاتينهم من بين ايديهم و من خلفهم و عن ايمانهم وعن شمائلهم قال فيقدر معطوفة على مجرور من لا على من ومجرورها

انه الفراق و المعنى في ذلك ان المشددة للتاكيد فدخلت على اليقين و الخفيفة بخلافها فدخلت فى الشك و لهذا دخلت الاولى فى العلم نحو فاعلم انه لا اله الا الله و علم ان فيكم ضعفا و الثانية فى الحسبان نحو و حسبوا ان لا تكون فتنة ذكر ذلك الراغب في تفسيره و اورد على هذا الضابط و ظنوا ان لا ملجأ من الله و اجيب بانها هنا اتصلت بالاسم و فى الامثلة السابقة اتصلت بالفعل ذكره فى البرهان قال فتمسك بهذا الضابط فهو من اسرار القرآن و قال ابن الانباري قال ثعلب العرب تجعل الظن علما و شكا و كذبا فان قامت براهين العلم فكانت اكبر من براهين الشك فالظن يقين و ان اعتدلت براهين اليقين و براهين الشك فالظن شك و ان زادت براهين الشك على براهين اليقين فالظن كذب قال الله تعالى ان هم الا يظنون اراد يكذبون انتهى على حرف جر له معان اشهرها الاستعلاء حسا او معنى نحو و عليها و على الفلك تحملون كل من عليها فان فضلنا بعضهم على بعض و لهم عليّ ذنب ثانيها المصاحبة كمع نحو و آتى المال على حبه اي مع حبه و ان ربك لذو مغفرة للناس على ظلمهم ثالثها الابتداء كمن نحو اذا اكتالوا على الناس اي من الناس لفروجهم حافظون الا على ازواجهم اي منهم بدليل احفظ عورتك الا من زوجتك رابعها التعليل كاللام نحو و لتكبروا الله على ما هداكم اي لهدايته اياكم خامسها الظرفية كفي نحو و دخل المدينة على حين غفلة من اهلها اي في حين و اتبعوا ما تتلوا الشياطين على ملك سليمان اي في زمن ملكه سادسها معنى الباء نحو حقيق على ان لا اقول اي بان كما قرأ ابيّ فائدة هي في نحو

و يجوز ان يكون منه و اهدنا الى سواء الصراط و لم ترد فى القرآن بمعنى غير و قيل وردت و جعل منه فى البرهان فقد ضل سواء السبيل و هو وهم و احسن منه قول الكابي في قوله نحن و لا انت مكانا سوى انها استثنائية و المستثنى محذوف اي مكانا سوى هذا المكان حكاه الكرماني في عجائبه و قال فيه بعد لانها تستعمل غير مضافة ساء فعل للذم لا ينصرف سبحان مصدر بمعنى التسبيح لازم النصب و الاضافة الى مفرد ظاهر نحو سبحان الله سبحان الذي اسرى او مضمر نحو سبحانه ان يكون له ولد سبحانك لا علم لنا و هو مما اميت فعله و فى العجائب للكرماني من الغريب ما ذكره المفضل انه مصدر سبح اذا رفع صوته بالدعاء و الذكر و انشد

قبح الاله وجوه تغلب كلما سبح الحجيج و كبروا اهلالا

اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس في قوله سبحان الله قال تنزيه الله نفسه عن السوء ظن اصله للاعتقاد الراجح كقوله ان ظنا ان يقيما حدود الله و قد تستعمل بمعنى اليقين كقوله الذين يظنون انهم ملاقوا ربهم اخرج ابن حاتم و غيره عن مجاهد قال كل ظن فى القرآن يقين و هذا يشكل بكثير من الآيات لم يستعمل فيها بمعنى اليقين كالآية الاولى و قال الزركشي فى البرهان الفرق بينهما فى القرآن ضابطان احدهما انه حيث وجد الظن محمودا مثابا عليه فهو اليقين و حيث وجد مذموما متوعدا عليه بالعذاب فهو الشك و الثاني ان كل ظن يتصل بعده ان الخفيفة فهو شك نحو بل ظننتم ان لن ينقلب الرسول و كل ظن يتصل به ان المشددة فهو يقين كقوله اني ظننت اني ملاق حسابيه و ظن انه الفراق و قرئ و ايقن

للاستمرار لا للاستقبال كقوله ستجدون آخرين الآية سيقول السفهاء الآية لان ذلك انما نزل بعد قولهم ما ولاهم فجاءت السين اعلاما بالاستمرار لا بالاستقبال قال ابن هشام و هذا لا يعرفه النحويون بل الاستمرار مستفاد من المضارع و السين باقية على الاستقبال اذ الاستمرار انما يكون في المستقبل قال و زعم الزمخشري انها اذا دخلت على فعل محبوب او مكروه افادت انه واقع لا محالة و لم ار من فهم وجه ذلك و وجهه انها تفيد الوعد بحصول الفعل فدخولها على ما يفيد الوعد او الوعيد مقتضٍ لتوكيده و تثبيت معناه و قد اومى الى ذلك في سورة البقرة فقال في فسيكفيكهم الله معنى السين ان ذلك كائن لا محالة و ان تأخر الى حين و صرح به في سورة براءة فقال في قوله اولئك سيرحمهم الله السين مفيدة وجود الرحمة لا محالة فهي توكد الوعد كما توكد الوعيد في قولك سانتقم منك سوف كالسين و اوسع زمانا منها عند البصريين لان كثرة الحروف تدل على كثرة المعنى و مرادفة لها عند غيرهم و تنفرد عن السين بدخول اللام عليها نحو و لسوف يعطيك قال ابو حيان و انما امتنع ادخال اللام على السين كراهة توالي الحركات في ليستدحرج ثم طرد الباقي قال ابن بابشاذ و الغالب على سوف استعمالها في الوعيد و التهديد و على السين استعمالها في الوعد و قد تستعمل سوف في الوعد و السين في الوعيد انتهى سواء تكون بمعنى مستو فتقصر مع الكسر نحو مكانا سوى و تمد مع الفتح نحو سواء عليهم ءانذرتهم ام لم تنذرهم و بمعنى الوسط فتمد مع الفتح نحو في سواء الجحيم و بمعنى التمام فكذلك نحو في اربعة ايام سواء اي تماما

الى الحالين فانه حين ذكره في معرض الثناء عليه اتى بذي لان الاضافة بها اشرف و بالنون لان لفظه اشرف من لفظ الحوت لوجوده في اوائل السور و ليس في لفظ الحوت ما يشرفه كذلك فاتى به و بصاحب حين ذكره في معرض النهي عن اتباعه رويد اسم لا يتكلم به الا مصغرا مامورا به و هو تصغير رود و هو المهل رب حرف في معناه ثمانية اقوال الاول انها للتعليل دائما و عليه الاكثرون الثاني للتكثير دائما كقوله ربما يود الذين كفروا لو كانوا مسلمين فانه يكثر منهم تمني ذلك و قال الاولون هم مشغولون بغمرات الاهوال فلا يفيقون بحيث يتمنون ذلك الا قليلا الثالث انها لهما على السواء الرابع للتقليل غالبا و للتكثير نادر او هو اختياري الخامس عكسه السادس لم توضع لواحد منهما بل هي حرف اثبات لا تدل على تكثير و لا تقليل و انما يفهم ذلك من خارج السابع للتكثير في موضع المباهاة و الافتخار و للتقليل فيما عداه الثامن لمبهم العدد تكون تقليلا و تكثيرا و تدخل عليها ما فتكفها عن عمل الجر و تدخلها على الجمل و الغالب حينئذ دخولها على الفعلية الماضي فعلها لفظا و معنى و من دخولها على المستقبل الآية السابقة و قيل انه على حد و نفخ في الصور السين حرف تختص بالمضارع و تخلصه للاستقبال و تنزل منه منزلة الجزء فلذا لم تعمل فيه و ذهب البصريون الى ان مدة الاستقبال معه اضيق منها مع سوف و عبارة المعربين فيها حرف تنفيس و معناها حرف توسع لانها تقلب المضارع من الزمن الضيق و هو الحال الى الزمن الواسع و هو الاستقبال و ذكر بعضهم انها قد تأتي

لان افعل التفضيل لا ينصب المفعول به الا ان اولته بعالم و قال ابو حيان الظاهر اقرارها على الظرفية المجازية و تضمين اعلم معنى ما يتعدى الى الظرف فالتقدير الله انفذ علما حيث يجعل اي هو نافذ العلم في هذا الموضع دون ترد ظرفا نقيض فوق فلا تنصرف على المشهور و قيل تنصرف و بالوجهين قرئ و منا دون ذلك بالرفع و النصب و ترد اسما بمعنى غير نحو آ اتخذ من دونه آلهة اي غيره و قال الزمخشري معناه ادنى مكان من الشيء و يستعمل للتفاوت في الحال نحو زيد دون عمرو و اي في الشرف و العلم و اتسع فيه فاستعمل في تجاوز حد الى حد نحو اولياء من دون المومنين اي لا تجاوزوا ولاية المومنين الى ولاية الكافرين ذو اسم بمعني صاحب وضع للتوصل الى وصف الذوات باسماء الاجناس كما ان الذي وضعت وصلة الى وصف المعارف بالجمل و لا يستعمل الا مضافا و لا يضاف الى ضمير و لا مشتق و جوزه بعضهم و خرج عليه قراءة ابن مسعود و فوق كل ذي عالم عليم و اجاب الاكثرون عنها بان العالم هنا مصدر كالباطل او بان ذي زائدة قال السهيلي و الوصف بذو ابلغ من الوصف بصاحب و الاضافة بها اشرف فان ذو تضاف للتابع و صاحب يضاف الى المتبوع تقول ابو هريرة صاحب النبي و لا تقول النبي صاحب ابي هريرة و اما ذو فانك تقول ذو المال و ذو الفرس فتجد الاسم الاول متبوعا غير تابع و بني على هذا الفرق انه تعالى قال في سورة الانبياء و ذا النون فاضافه الى النون و هو الحوت و قال في سورة ن و لا تكن كصاحب الحوت قال و المعنى واحد لكن بين اللفظين تفاوت كثير في حسن الاشارة

عدم الدخول مع الى و الدخول مع حتى فوجب الحمل عليه عند التردد والثاني تدخل فيهما والثالث لا فيهما و استدل القولان في استوائهما بقوله فمتعناهم الى حين و قرأ ابن مسعود حتى حين تنبيه ترد حتى ابتدائية اي حرفا يبتدأ بعده الجمل اي تستانف فتدخل على الاسمية و الفعلية المضارعة و الماضية نحو حتى يقول الرسول بالرفع حتى عفوا و قالوا حتى اذا فشلتم و تنازعتم و ادعى ابن مالك انها فى الآيات جارة لاذا و لان مضمرة فى الايتين الاوليين و الاثرون على خلافه و ترد عاطفة ولا اعلمه فى القرآن لان العطف بها قليل جدا و من ثم انكره الكوفيون البتة فائدة ابدال حائها عينا لغة هذيل و بهذا قرأ ابن مسعود حيث ظرف مكان قال الاخفش و ترد للزمان مبنية على الضم تشبيها بالغايات فان الاضافة الى الجملة كلا اضافة و لهذا قال الزجاج في قوله من حيث لا ترونهم ما بعد حيث صلة لها و ليست بمضافة اليه يعني انها غير مضافة للجملة بعدها فصارت كالصلة لها اي كالزيادة وليست جزأ منها و فهم الفارسي انه اراد انها موصولة فرد عليه و من العرب من يعربها و منهم من يبينها على الكسر لالتقاء الساكنين وعلى الفتح للتخفيف و يحتملهما قرأة من قرأ من حيث لا يعلمون بالكسر اللّٰهُ أَعْلَمُ حيث يجعل رسالته بالفتح و المشهور انها لا تنصرف و جوز قوم فى الآية الاخيرة كونها مفعولا به على السعة قالوا و لا يكون ظرفا لانه تعالى لا يكون في مكان أعلم منه في مكان و لان المعنى انه يعلم نفس المكان المستحق لموضع الرسالة لا شيأ فى المكان على هذا فالناصب لها يعلم محذوفا مدلولا عليه باعلم لا به

الاخرى و قال الفارسي حاشا فاعل من الحشا و هو الناحية اي صار في ناحية اي بعد مما رمي به و تنحى عنه فلم يغشه و لم يلابسه ولم يقع فى القرآن حاشا الاستثنائية حتى حرف لانتهاء الغاية كالى لكن يفترقان في امور فتنفرد حتى بانها لا تجر الا الظاهر و الا الآخر المسبوق بذي اجزاء و الملاقي له نحو سلام هي حتى مطلع الفجر و انها لافادة تقضي الفعل قبلها شيأ فشيأ و انها لا يقال بها ابتداء الغاية وانها يقع بعدها المضارع المنصوب بان المقدرة و يكونان في تأويل مصدر مخفوض ثم لها ح ثلثة معان مرادفة الى نحو لن نبرح عليه عاكفين حتى الينا موسى اي الى رجوعه و مرادفة كي التعليلية نحو و لا يزالون يقاتلونكم حتى يردوكم لا تنفقوا على من عند رسول الله حتى ينفضوا و يحتملها فقاتلوا التي تبغي حتى تفيء الى امر الله و مرادفة الا فى الاستثناء و جعل منه ابن مالك وغيره و ما يعلمان من احد حتى يقولا مسئلة متى دل دليل على دخول الغاية التي بعد الى وحتى في حكم ما قبلها او على عدم دخوله فواضح انه يعمل به فالاول نحو و ايديكم الى المرافق و ارجلكم الى الكعبين دلت السنة على دخول المرافق و الكعبين فى الغسل و الثاني نحو ثم اتموا الصيام الى الليل دل النهي عن الوصال على عدم دخول الليل فى الصيام فنظرة الى ميسرة فان الغاية لو دخلت هنا لوجب الانظار حال اليسار ايضا و ذلك يؤدي الى عدم المطالبة و تفويت حق الدائن و ان لم يدل دليل على واحد منهما ففيها اربعة اقوال احدها و هو الاصح تدخل مع حتى دون الى حملا على الغالب فى البابين لان الاكثر مع القرينة

هنالك الله شهيد بدليل هنالك الولاية لله الحق و قال الطبري في قوله اثم اذا ما وقع امنتم به معناه هنالك و ليست ثم العاطفة و هذا وهم اشتبه عليه المضمومة بالمفتوحة و فى الترشيح لخطاب ثم ظرف فيه معنى الاشارة الى حيث لانه هو فى المعنى جعل قال الراغب لفظ عام فى الافعال كلها و هو اعم من فعل وضع و سائر اخواتها و يتصرف على خمسة اوجه احدها يجري مجرى صار و طفق و لا يتعدى نحو جعل زيد يقول كذا و الثاني مجرى وجد فيتعدى لمفعول واحد نحو و جعل الظلمات و النور و الثالث في ايجاد شيء من شيء و تكوينه منه نحو و جعل لكم من انفسكم ازواجا و جعل لكم من الجبال اكنانا و الرابع في تصيير الشيء على حالة دون حالة نحو الذي جعل لكم الارض فراشا و جعل القمر فيهن نورا الخامس الحكم بالشيء على الشيء حقا كان نحو و جاعلوه من المرسلين او باطلا نحو و يجعلون لله البنات سبحانه الذين جعلوا القرآن عضين حاشى اسم بمعنى التنزيه في قوله تعالى حاشا لله ما علمنا عليه من سوء حاشا لله ما هذا بشرا لافعل و لا حرف بدليل قراءة بعضهم حاشاً لله بالتنوين كما يقال براءة لله و قراءة ابن مسعود حاشى الله بالاضافة كمعاذ الله و سبحان الله و دخولها على اللام في قراءة السبعة و الجار لا يدخل على الجار و انما ترك التنوين في قراءتهم لبنائها لشبهها بحاشا الحرفية لفظا و زعم قوم انها اسم فعل معناه اتبرأ او تبرأت لبنائها ورد باعرابها في بعض اللغات و زعم المبرد و ابن جني انها فعل و ان المعنى فى الآية جانب يوسف المعصية لاجل الله و هذا التاويل لا يتأتى فى الآية

اسم فعل ثم حرف يقتضي ثلاثة امور التشريك في الحكم و الترتيب و المهلة و في كل خلاف اما التشريك فزعم الكوفيون والاخفش انه قد يتخلف بان تقع زائدة فلا تكون عاطفة البتة وخرجوا على ذلك حتى اذا ضاقت عليهم الارض بما رحبت و ضاقت عليهم انفسهم و ظنوا ان لا ملجأ من الله الا اليه ثم تاب عليهم و اجيب بان الجواب فيها مقدر و اما الترتيب و المهلة فخالف قوم في اقتضائها ايا هما تمسكا بقوله هو الذي خلقكم من نفس واحدة ثم جعل منها زوجها بدأ خلق الانسان من طين ثم جعل نسله من سلالة من ماء مهين ثم سواه و اني لغفار لمن تاب و آمن و عمل صالحا ثم اهتدى و الاهتداء سابق على ذلك ذلكم وصاكم به لعلكم تتقون ثم آتينا موسى الكتاب و اجيب عن الكل بان ثم فيها لترتيب الاخبار لا لترتيب الحكم قال ابن هشام وغير هذا الجواب انفع منه لانه يصحح الترتيب فقط لا المهلة اذ لا تراخي بين الاخبارين و الجواب المصحح لهما ما قيل في الاولى ان العطف على مقدر اي من نفس واحدة انشأها ثم جعل منها زوجها و في الثانية ان سواه عطف على الجملة الاولى لا الثانية و في الثالثة ان المراد ثم دام على الهداية فائدة اجرى الكوفيون ثم مجرى الفاء والواو في جواز نصب المضارع المقرون بها بعد فعل الشرط و خرج عليه قراءة الحسن و من يخرج من بيته مهاجرا الى الله و رسوله ثم يدركه ثم بالفتح اسم يشار به الى المكان البعيد نحو و ازلفنا ثم الآخرين و هو ظرف لا يتصرف فلذلك غلط من اعربه مفعولا لرأيت في قوله و اذا رايت ثم و قرئ فالينا مرجعهم ثم الله اي

لست بربنا بخلاف بلى فانها لابطال النفي فالتقدير انت ربنا
و نازع في ذلك السهيلي و غيره بان الاستفهام التقريري خبر
موجب و لذلك امتنع سيبويه من جعل ام متصلة في قوله
افلا تبصرون ام انا خير لانها لا تقع بعد الايجاب و اذا ثبت انه ايجاب
فنعم بعد الايجاب تصديق له انتهى قال ابن هشام و يشكل عليهم
ان بلى لا يُجاب بها الايجاب اتفاقا بئيس فعل لانشاء الذم لا يتصرف
بين قال الراغب موضوع للخلل بين الشيئين و وسطهما قال
الله تعالى و جعلنا بينهما زرعا و تارة تستعمل ظرفا و تارة اسما
فمن الظرف لا تقدموا بين يدي الله و رسوله فقدموا بين يدي
نجواكم صدقة فاحكم بيننا بالحق و لا يستعمل الا فيما له مسافة
نحو بين البلدان اوله عدد ما اثنان فصاعدا نحو بين الرجلين
و بين القوم و لا يضاف الى ما يقتضي معنى الوحدة الا اذا كرر
نحو و من بيننا و بينك حجاب فاجعل بيننا و بينك موعدا
و قرئ قوله تعالى لقد تقطع بينكم بالنصب على انه ظرف
و بالرفع على انه اسم مصدر بمعنى الوصل و يحتمل الامرين
قوله تعالى ذات بينكم و قوله فلما بلغا مجمع بينهما اي فراقهما
التا حرف جر معناه القسم تختص بالتعجب و باسم الله تعالى
قال في الكشاف في قوله تعالى و تالله لا كيدن اصنامكم التاء اصل
احرف القسم و الواو بدل منها و التاء بدل من الواو و فيها زيادة
معنى التعجب كأنه تعجب من تسهل الكيد على يديه و تأتيه
مع عتو نمرود و قهره انتهى تبارك فعل لا يستعمل الا بلفظ الماضي
و لا يستعمل الا لله تعالى تعال فعل امر لا يتصرف و من ثم قيل انه

يكون معناه الانتقال من غرض الى آخر نحو و لدينا كتاب ينطق بالحق و هم لا يظلمون بل قلوبهم في غمرة من هذا فما قبل بل فيه على حاله وكذا قد افلح من تزكى و ذكر اسم ربه فصلى بل تؤثرون الحيوة الدنيا و ذكر ابن مالك في شرح كافيته انها لا تقع فى القرآن الا على هذا الوجه و وهمه ابن هشام و سبق ابن مالك الى ذلك صاحب البسيط و وافقه ابن الحاجب فقال في شرح المفصل ابطال الاول و اثباته للثاني ان كان فى الاثبات من باب الغلط فلا يقع مثله فى القرآن انتهى اما اذا تلاها مفرد فهي حرف عطف و لم يقع فى القرآن كذلك بلى حرف اصلي الالف و قيل الاصل بل و الالف زائدة و قيل هي للتانيث بدليل امالتها و لها موضعان احدهما ان تكون رد النفي يقع قبلها نحو ما كنا نعمل من سوء بلى اي عملتم السوء لا يبعث الله من يموت بلى اي يبعثهم زعم الذين كفروا ان لن يبعثوا قل بلى و ربي لتبعثن قالوا ليس علينا فى الاميين سبيل ثم قال بلى اي عليهم سبيل و قالوا لن يدخل الجنة الا من كان هودا او نصارى ثم قال بلى اي يدخلها غيرهم و قالوا لن تمسنا النار الا اياما معدودة ثم قال بلى اي تمسهم و يخلدون فيها الثاني ان تقع جوابا لاستفهام دخل على نفي فتفيد ابطاله سواء كان الاستفهام حقيقيا نحو اليس زيد بقائم فتقول بلى او توبيخا نحو ام يحسبون انا لا نسمع سرهم و نجواهم بلى ايحسب الانسان ان لن نجمع عظامه بلى او تقريريا نحو الست بربكم قالوا بلى قال ابن عباس و غيره لو قالوا نعم كفروا و وجهه ان نعم تصديق للمخبر بنفي او ايجاب فكانهم قالوا

وجوبا في نحو اسمع بهم و ابصر و جوازا غالبا في نحو كفى بالله شهيدا فان الاسم الكريم فاعل و شهيدا نصب على الحال او التمييز و الباء زائدة و دخلت لتاكيد الاتصال لان الاسم في قوله كفى بالله متصل بالفعل اتصال الفاعل قال ابن الشجري و فعل ذلك ايذانا بان الكفاية من الله ليست كالكفاية من غيره في عظم المنزلة فضوعف لفظها لتضاعف معناها و قال الزجاج دخلت لتضمن كفى معنى اكتف قال ابن هشام و هو من الحسن بمكان و قيل الفاعل مقدر و التقدير كفى الاكتفاء بالله فحذف المصدر و بقي معموله دالا عليه و لا تزاد في فاعل كفى بمعنى وقى نحو فسيكفيكهم الله و كفى الله المؤمنين القتال و في المفعول نحو و لا تلقوا بايديكم الى التهلكة و هزي اليك بجذع النخلة فليمدد بسبب الى السماء و من يرد فيه بالحاد و في المبتدأ نحو بايكم المفتون اي ايكم و قيل هي ظرفية اي في اي طايفة منكم وفي اسم ليس في قراءة بعضهم ليس البر بان تولوا بنصب البر و في الخبر المنفي نحو و ما الله بغافل قيل و الموجب و خرج عليه جزاء سيئة بمثلها و في التوكيد و جعل منه يتربصن بانفسهن فائدة اختلف في الباء من قوله و امسحوا برؤسكم فقيل للالصاق و قيل للتبعيض و قيل زائدة و قيل للاستعانة و ان في الكلام حذفا و قلبا فان مسح يتعدى الى المزال عنه بنفسه و الى المزيل بالباء فالاصل امسحوا رؤسكم بالماء بل حرف اضراب اذا تلاها جملة ثم تارة يكون معنى الاضراب الابطال لما قبلها نحو و قالوا اتخذ الرحمن ولدا سبحانه بل عباد مكرمون اي بل هم عباد ام يقولون به جنة بل جاءهم بالحق و تارة

بالآخر ثم قد تكون حقيقة نحو و امسحوا برؤسكم اي الصقوا المسح برؤسكم فامسحوا بوجوهكم و ايديكم منه و قد يكون مجازا نحو و اذا مروا بهم اي بمكان يقربون منه الثاني التعدية كالهمزة نحو ذهب الله بنورهم و لو شاء الله لذهب بسمعهم اي اذهبه كما قال ليذهب عنكم الرجس و زعم المبرد و السهيلي ان بين تعدية الباء و الهمزة فرقا و ذلك اذا قلت ذهبت بزيد كنت مصاحبا له في الذهاب وردّ بالآية الثالث الاستعانة و هي الداخلة على آلة الفعل كباء البسملة الرابع السببية و هي التي تدخل على سبب الفعل نحو فكلاً اخذنا بذنبه ظلمتم انفسكم باتخاذكم العجل و يعبر عنها ايضا بالتعليل الخامس المصاحبة كمع نحو اهبط بسلام جاءكم الرسول بالحق فسبح بحمد ربك السادس الظرفية كفي زمانا و مكانا نحو نجيناهم بسحر نصركم الله ببدر السابع الاستعلاء كعلى نحو من ان تأمنه بقنطار اي عليه بدليل الا كما امنتكم على اخيه الثامن المجاوزة كعن نحو فاسأل به خبيرا اي عنه بدليل يسألون عن ابنائكم ثم قيل تختص بالسوال و قيل لا نحو يسعى نورهم بين ايديهم و بايمانهم اي و عن ايمانهم و يوم تشقق السماء بالغمام اي عنه التاسع التبعيض كمن نحو عينا يشرب بها عباد الله اي منها العاشر الغاية كالى نحو و قد احسن بي اي اليّ الحادي عشر المقابلة و هي الداخلة على الاعراض نحو ادخلوا الجنة بما كنتم تعملون و انما لم نقدرها بالسببية كما قال المعتزلة لان المعطي بعوض قد يعطي مجّانا و اما المسبب فلا يوجد بدون السبب الثاني عشر التوكيد و هي الزائدة فتزاد في الفاعل

ايها النبي ايا زعم الزجاج انه اسم ظاهر والجمهور ضمير ثم اختلفوا فيه على اقوال احدها انه كله ضمير هو وما اتصل به والثاني انه وحده ضمير و ما بعده اسم مضاف له يفسر ما يراد به من تكلم وغيبة وخطاب نحو فاياي فارهبون بل اياه تدعون اياك نعبد والثالث انه وحده ضمير وما بعده حروف تفسير المراد والرابع انه عماد وما بعده هو الضمير وقد غلط من زعم انه مشتق و فيه سبع لغات قرئ بها تشديد الياء وتخفيفها مع الهمزة وابدالها هاء مكسورة و مفتوحة هذه ثمانية يسقط منها فتح الهاء مع التشديد ايان اسم استفهام وانما يستفهم به عن الزمان المستقبل كما جزم به ابن مالك وابو حيان ولم يذكرا فيه خلافا و ذكر صاحب ايضاح المعاني مجيئها للماضي و قال السكاكي لا تستعمل الا في مواضع التفخيم نحو ايان مرساها ايان يوم الدين والمشهور عند النحاة انها كمتى تستعمل فى التفخيم وغيره و قال بالاول من النحاة علي بن عيسى الربعي و تبعه صاحب البسيط فقال انما تستعمل فى الاستفهام عن الشيء المعظم امره و فى الكشاف قيل انها مشتقة من اي فعلان منه لان معناه اي وقت و اي فعل من اويت اليه لان البعض او الى الكل ومتساندله وهو بعيد وقيل اصله اي آن وقيل اي او ان حذفت الهمزة من اوان و الياء الثانية من اي و قلبت الواو ياء و ادغمت الياء الساكنة فيها و قرئ بكسر همزتها اين اسم استفهام عن المكان نحو فاين تذهبون ويرد شرطا عاما فى الامكنة و اينما اعم منها نحو اينما يوجهه لايأت بخير الباء المفردة حرف جر له معان اشهرها الالصاق ولم يذكر لها سيبويه غيره وقيل انه لا يفارقها قال في شرح اللب وهو تعلق احد المعنيين

دورانه في الكلام و قيل المعنى انت اولى و اجدر بهذا العذاب و قال ثعلب اولى لك في كلام العرب معناه مقاربة الهلاك كأنه يقول قد وليت الهلاك قد دانيت الهلاك و اصله من الولي و هو القرب و منه قاتلوا الذين يلونكم اي يقربون منكم و قال النحاس العرب تقول اولى لك اي كدت تهلك و كأن تقديره اولى لك الهلكة اي بالكسر و السكون حرف جواب بمعنى نعم فيكون لتصديق المخبر و لاعلام المستخبر و لوعد الطالب قال النحاة و لا تقع الا قبل القسم قال ابن الحاجب و الابعد الاستفهام نحو ويستنبؤنك احق هو قل اي و ربي اي بالفتح والتشديد على اوجه الاول ان تكون شرطية نحو ايما الاجلين قضيت فلا عدوان اياما تدعوا فله الاسماء الحسنى الثاني استفهامية نحو ايكم زادته هذه ايمانا و انما يسأل بها عما يميز احد المتشاركين في امر يعمهما نحو اي الفريقين خير مقاما اي انحن ام اصحاب محمد الثالث موصولة نحو لننزعن من كل شيعة ايهم اشد وهي في الامثلة الثلاثة معربة و تبنى في الوجه الثالث على الضم اذا حذف عائدها واضيفت كالآية المذكورة و اعربها الاخفش في هذه الحالة ايضا و خرج عليه قراءة بعضهم بالنصب و اول قراءة الضم على الحكاية و اولها غيره على التعليق للفعل و اولها الزمخشري على انها خبر مبتداء محذوف و تقدير الكلام لننزعن بعض كل شيعة فكأنه قيل من هذا البعض فقيل هو الذي هو اشد ثم حذف المبتداء ان المكتنفان لاي و زعم ابن الطراوة انها في الآية مقطوعة عن الاضافة مبنية و ان هم اشد مبتدأ وخبر و ورد برسم الضمير متصلا باي و بالاجماع على اعرابها اذا لم تضف الرابع ان تكون وصلة الى نداء ما فيه ال نحو يا ايها الناس يا

تطيع آثما او كفورا اي واحدا منهما فاذا جاء النهي ورد على ما كان ثابتا فالمعنى لا تطع واحدا منهما فالتعميم فيهما من جهة النهي وهي على بابها الثالث لكون مبناها على عدم التشريك عاد الضمير الى مفردها بالافراد بخلاف الواو واما قوله تعالى ان يكن غنيا او فقيرا فالله اولى بهما فقيل انها بمعنى الواو وقيل المعنى ان يكن الخصمان غنيين او فقيرين فائدة اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال كل شئ فى القرآن اواو فهو مخير فاذا كان فمن لم يجد فهو الاول فالاول واخرج البيهقي في سننه عن ابن جريج قال كل شئ فى القرآن فيه او فللتخيير الا قوله ان يقتلوا او يصلبوا ليس بمخير فيها قال الشافعي وبهذا اقول اولى في قوله تعالى اولى لك فاولى وفي قوله فاولى لهم قال فى الصحاح قولهم اولى لك كلمة تهدد ووعيد قال الشاعر

فاولى له ثم اولى له

قال الاصمعي معناه قاربه ما يهلكه اي نزل به قال الجوهري ولم يقل احد فيها احسن مما قال الاصمعي وقال قوم هو اسم فعل مبني ومعناه وليك شر بعد شر ولك تبيين وقيل هو علم للوعيد غير مصروف ولذا لم ينون وان محله رفع على الابتداء ولك الخبر ووزنه على هذا فعلى والالف للالحاق وقيل افعل وقيل معناه الويل لك وانه مقلوب منه والاصل اويل فاخر حرف العلة ومنه قول الخنساء

هممت بنفسي بعض الهموم فاولى لنفسي اولى لها

وقيل معناه الذم لك اولى من تركه فحذف المبتدأ لكثرة

لا جناح عليكم فيما يتعلق بمهور النساء ان طلقتمو هن في مدة انتفاء احد هذين الامرين مع انه اذا انتفى الفرض دون المسيس لزم مهر المثل و اذا انتفى المسيس دون الفرض لزم نصف المسمى فكيف يصح رفع الجناح عند انتفاء احد الامرين و لان المطلقات المفروض لهن قد ذكرن ثانيا بقوله وان طلقتمو هن الآية وترك ذكر الممسوسات لما تقدم من المفهوم ولوكان تفرضوا مجز وما لكانت الممسوسات والمفروض لهن مستويات فى الذكر و اذا قدرت او بمعنى الا خرجت المفروض لهن عن مشاركة الممسوسات فى الذكر وكذا اذا قدرت بمعنى الى وتكون غاية لنفي الجناح لا لنفي المسيس واجاب ابن حاجب عن الاول بمنع كون المعنى مدة انتفاء احدهما بل مدة لم يكن واحد منهما وذلك بنفيهما جميعا لانه نكرة في سياق النفي الصريح واجاب بعضهم عن الثاني بان ذكر المفروض لهن انما كان لتعيين النصف لهن لا لبيان ان لهن شيأ فى الجملة ومما خرج على هذا المعنى قراءة ابي تقاتلونهم او يسلموا تنبيهات الاول لم يذكر المتقدمون لا وهذه المعاني بل قالوا هي لاحد الشئين او الاشياء قال ابن هشام وهو التحقيق والمعاني المذكورة مستفادة من القرائن الثاني قال ابوالبقا او فى النهي نقيضة او فى الاباحة فيجب اجتناب الامرين كقوله ولا تطع منهم آثما او كفورا فلا يجوز فعل احدهما فلو جمع بينهما كان فعلا للمنهي عنه مرتين لان كل واحد منهما احدهما وقال غيره او في مثل هذا بمعنى الواو تفيد الجمع وقال الخطيبي الاولى انها على بابها و انما جاء التعميم فيها من النهي الذي فيه معنى النفي و النكرة في سياق النفي تعم لان المعنى قبل النهي

او حرف عطف ترد لمعان الشك من المتكلم نحو قالوا لبثنا يوما
او بعض يوم والابهام على السامع نحو انا اواياكم لعلى هدى اوفي
ضلال مبين والتخيير بين المعطوفين بان يمتنع الجمع بينهما والاباحة
بان لا يمتنع الجمع ومثل الثاني بقوله ولا على انفسكم ان تأكلوا من
بيوتكم اوبيوت ابائكم الآية ومثل الاول بقوله ففدية من صيام اوصدقة
اونسك وقوله فكفارته اطعام عشرة مساكين من اوسط ما تطعمون
اهليكم اوكسوتهم او تحرير رقبة واستشكل بان الجمع في الآيتين غير
ممتنع واجاب ابن هشام بانه ممتنع بالنسبة الى وقوع كل كفارة او
فدية بل يقع واحد منهن كفارة اوفدية والباقي قربة مستقلة خارجة
عن ذلك قلت واوضح من هذا التمثيل بقوله ان يقتلوا اويصلبوا
الآية على قول من جعل الخيرة في ذلك الى الامام فانه يمتنع عليه
الجمع بين هذه الامور بل يفعل منها واحدا يؤدي اجتهاده اليه
والتفصيل بعد الاجمال نحو وقالوا كونوا هودا اونصارى تهتدوا قالوا
ساحرا ومجنون اي قال بعضهم كذا وبعضهم كذا والاضراب كبل وخرج
عليه وارسلناه الى مأية الف اويزيدون فكان قاب قوسين اوادنى و
قراءة بعضهم اوكلما عاهدوا عهدا بسكون الواو ومطلق الجمع كالوا ونحو
لعله يتذكر او يخشى لعلهم يتقون او يحدث لهم ذكرا والتقريب ذكره
الحريري وابو البقا وجعل منه وما امر الساعة الا كلمح البصر او هو
اقرب ورد بان التقريب مستفاد من غيرها ومعنى الا في الاستثناء و
معنى الى وهاتان ينصب المضارع بعدهما بان مضمرة وخرج عليها
لاجناح عليكم ان طلقتم النساء مالم تمسوهن او تفرضوا لهن فريضة
فقيل انه منصوب لا مجزوم بالعطف على تمسوهن لئلا يصير المعنى

منهم المبرد ان هذ ان لساحران أن بالفتح والتشديد على وجهين احدهما ان تكون حرف تاكيد والاصح انها فرع المكسورة وانها موصول حرفي تؤول مع اسمها وخبرها بالمصدر فانكان الخبر مشتقا فالمصدر المؤول به من لفظه نحو لتعلموا ان الله على كل شئ قدير اي قدرته وان كان جامدا قدر بالكون وقد استشكل كونها للتاكيد بانك لوصرحت بالمصدر المنسبك منها لم يفد توكيدا واجيب بان التاكيد للمصدر المحل وبهذا يفرق بينها وبين المكسور لان التاكيد في المكسورة للاسناد و هذه لاحد الطرفين الثاني ان تكون لغة في لعل وخرج عليها وما يشعركم انها اذا جاءت لايؤمنون في قراءة الفتح اي لعلها انى اسم مشترك بين الاستفهام والشرط فاما الاستفهام فترد فيه بمعنى كيف نحو انى يحيي هذه الله بعد موتها فانى يوفكون ومن اين نحو انى لك هذا اي من اين قلتم انى هذا اي من اين جاءنا قال في عروس الافراح و الفرق بين اين ومن اين ان اين سؤال عن المكان الذي حل فيه الشيء ومن اين سؤال عن المكان الذي برزمنه الشيء وجعل من هذا المعنى ما قرئ شاذا انى صببنا الماء صبا وبمعنى متى وقد ذكرت المعاني الثلاثة في قوله تعالى فأتوا حرثكم انى شئتم فاخرج ابن جرير الاول من طريق عن ابن عباس واخرج الثاني عن الربيع ابن انس واختاره واخرج الثالث عن الضحاك واخرج قولا رابعا عن ابن عمر وغيره انها بمعنى حيث شئتم واختاره ابو حيان وغيره انها في الآية شرطية حذف جوابها لدلالة ما قبلها عليه لانها لوكانت استفهامية لا كتفت بما بعدها كما هو شان الاستفهامية ان تكتفي بما بعدها اي يكون كلاما يحسن السكوت عليه اما اسما اوفعلا

لا يدخل عليها حرف جر الرابع ان تكون زائدة والاكثر ان تقع بعد لما التوقيتية نحو ولما ان جاءت رسلنا لوطا وزعم الاخفش انها قد تنصب المضارع وهي زائدة وخرج عليه وما لنا ان لا نقاتل في سبيل الله وما لنا ان لا نتوكل على الله قال فهي زائدة بدليل وما لنا لانؤمن بالله الخامس ان تكون شرطية كالمكسورة قاله الكوفيون وخرجوا عليه ان تضل احداهما ان صدوكم عن المسجد الحرام صفحا ان كنتم قوما مسرفين قال ابن هشام ويرجحه عندي تواردهما على محل واحد والاصل التوافق وقد قرئ بالوجهين في الآيات المذكورة ودخول الفاء بعدها في قوله فتذكر السادس ان تكون نافية قاله بعضهم في قوله لن يوتى احد مثل ما اوتيتم اي لا يوتى والصحيح انها مصدرية اي ولا تومنوا ان يوتي اي بايتاء احد السابع ان تكون للتعليل كاذ قاله بعضهم في قوله بل عجبوا ان جاءهم منذر منهم يخرجون الرسول واياكم ان تؤمنوا والصواب انها مصدرية وقبلها لام العلة مقدرة الثامن ان تكون بمعنى لئلا قاله بعضهم في قوله يبين الله لكم ان تضلوا اي لئلا تضلوا والصواب انها مصدرية والتقدير كراهة ان تضلوا ان بالكسر والتشديد على اوجه احدها التاكيد والتحقيق وهو الغالب نحو ان الله غفور رحيم انا اليكم لمرسلون قال عبد القاهر والتاكيد بها اقوى من التاكيد باللام قال واكثر مواقعها بحسب الاستقراء الجواب لسوال ظاهر اومقدر اذا كان للسائل فيه ظن الثاني التعليل اثبته ابن جني واهل البيان ومثلوه بنحو واستغفروا الله ان الله غفور رحيم وصل عليهم ان صلواتك سكن لهم وما ابرئ نفسي ان النفس لامارة بالسوء وهو نوع من التاكيد والثالث معنى نعم اثبته الاكثرون وخرج عليه قوم

وان هذه موصول حرفي وتوصل بالفعل المتصرف مضارعا كما مر وماضيا نحو لولا ان من الله علينا ولولا ان ثبتناك وقد يرفع المضارع بعدها اهمالا لها حملا على ما اختها كقراءة ابن محيصن لمن اراد ان يتم الرضاعة الثاني ان تكون مخففة من الثقيلة فتقع بعد فعل اليقين او ما نزل منزلته نحو افلا يرون ان لايرجع اليهم قولا علم ان سيكون وحسبوا ان لاتكون في قراءة الرفع الثالث ان تكون مفسرة بمنزلة اي نحو فاوحينا اليه ان اصنع الفلك و نودوا ان تلكم الجنة و شرطها ان تسبق بجملة فلذلك غلط من جعل منها و آخر دعواهم ان الحمدلله وان يتأخر عنها جملة و ان يكون فى الجملة السابقة معنى القول و منه و انطلق الملأ منهم ان امشوا اذ ليس المراد بالانطلاق المشي بل انطلاق السنتهم بهذا الكلام كما انه ليس المراد بالمشي المتعارف بل الاستمرار على المشي و زعم الزمخشري ان التي في قوله ان اتخذي من الجبال بيوتا مفسرة ورد بان قبله و اوحى ربك الى النحل والوحي هذا الالهام باتفاق وليس فى الالهام معنى القول و انما هي مصدرية اي باتخاذ الجبال و ان لايكون فى الجملة السابقة احرف القول و ذكر الزمخشري في قوله ما قلت لهم الا ما امرتني به ان اعبدوا الله انه يجوز ان تكون مفسرة للقول على تأويله بالامر اي ما امرتهم الا بما امرتني به ان اعبدوا الله قال ابن هشام وهو حسن و على هذا فيقال فى الضابط ان لا يكون فيها حروف القول الا والقول مأول بغيره قلت وهذا من الغرائب كونهم يشرطون ان يكون فيها معنى القول فاذا جاء لفظه او لوه بما فيه معناه مع صريحه وهو نظير ما تقدم من جعلهم ال في الآن زائدة مع قولهم بتضمنها معناها وان

ان كنتم مؤمنين لتدخلن المسجد الحرام ان شاء الله آمنين و انتم الاعلون ان كنتم مؤمنين ونحو ذلك مما الفعل فيه محقق الوقوع واجاب الجمهور عن آية المشية بانه تعليم للعباد كيف يتكلمون اذا اخبروا عن المستقبل وبان اصل ذلك الشرط ثم صار يذكر للتبرك او ان المعنى لتدخلن جميعا ان شاء الله ان لايموت منكم احد قبل الدخول و عن سائر الآيات بانه شرط جيء به للتهييج و الالهاب كما تقول لابنك ان كنت ابني فاطعني السادس ان تكون بمعنى قد ذكره قطرب و خرج عليه فذكر ان نفعت الذكرى اي قد نفعت ولا يصح معنى الشرط فيه لانه مامور بالتذكير على كل حال وقال غيره هي للشرط و معناه ذمهم واستبعاد لنفع التذكير فيهم وقيل التقدير وان لم تنفع على حد قوله سرابيل تقيكم الحر فائدة قال بعضهم وقع في القرآن ان بصيغة الشرط وهو غير مراد في ستة مواضع ولا تكرهوا فتياتكم على البغاء ان اردن تحصنا واشكروا نعمة الله ان كنتم اياه تعبدون وان كنتم على سفر ولم تجدوا كاتبا فرهان ان ارتبتم فعدتهن ان تقصروا من الصلوة ان خفتم وبعولتهن احق بردهن في ذلك ان ارادوا اصلاحا أن بالفتح والتخفيف على اوجه الاول ان تكون حرفا مصدريا ناصبا للمضارع ويقع في موضعين في الابتداء فيكون في محل رفع نحو وان تصوموا خير لكم وان تعفوا اقرب للتقوى وبعد لفظ دال على معنى غير اليقين فيكون في محل رفع نحو الم يأن للذين آمنوا ان تخشع و عسى ان تكرهوا شيأ و نصب نحو نخشى ان تصيبنا دائرة وما كان هذا القرآن ان يفترى فاردت ان اعيبها وخفض نحو او ذينا من قبل ان تأتينا من قبل ان يأتي احدكم الموت

لما عليها حافظ في قراءة التشديد ورد بقوله ان عندكم من سلطان بهذا ان ادري لعله فتنة و مما حمل على النافية قوله ان كنا فاعلين قل ان كان للرحمن ولدو على هذا فالوقف هنا و لقد مكناهم فيما ان مكناكم فيه اي في الذي ما مكناكم فيه وقيل هي زائدة و يؤيد الاول قوله مكناهم في الارض مالم نمكن لكم و عدل عن مالئلا تتكرر فيثقل اللفظ قلت و كونها للنفي هو الوارد عن ابن عباس كما تقدم في نوع الغريب من طريق ابن ابي طلحة و قد اجتمعت الشرطية و النافية في قوله ولئن زالتا ان امسكهما من احد من بعده و اذا دخلت النافية على الاسمية لم تعمل عند الجمهور و اجاز الكسائي و المبرد اعمالها عمل ليس و خرج عليه قراءة سعيد بن جبير ان الذين تدعون من دون الله عبادا امثالكم فائدة اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد قال كل شيء في القرآن ان فهو انكار الثالث ان تكون مخففة من الثقيلة فتدخل على الجملتين ثم الاكثر اذا دخلت على الاسمية اهمالها نحو و ان كل ذلك لما متاع الحيوة الدنيا و ان كل لما جميع لدينا محضرون ان هذ ان لساحران في قراءة حفص و ابن كثير و قد تعمل نحو و ان كلا لما ليوفينهم في قراءة الحرميين و اذا دخلت على الفعل فالاكثر كونه ماضيا ناسخا نحو و ان كانت لكبيرة و ان كادوا ليفتنونك و ان وجدنا اكثرهم لفاسقين و دونه ان يكون مضارعا ناسخا نحو و ان يكاد الذين كفروا و ان نظنك لمن الكاذبين وحيث وجدت ان بعدها اللام المفتوحة فهي المخففة من الثقيلة الرابع ان تكون زائدة وخرج عليه في ما ان مكناكم فيه الخامس ان تكون للتعليل كاذ قاله الكوفيون و خرجوا عليه و اتقوا الله

يعذبهم و اما يتوب عليهم و التخيير نحو اما ان تعذب و اما ان تتخذ فيهم حسنا اما ان تلقي و اما ان تكون اول من القى فاما منا بعد و اما فداء و التفصيل نحو اما شاكرا و اما كفورا التنبيهات الاول لا خلاف ان اما الاولى في هذه الامثلة و نحوها غير عاطفة و اختلف في الثانية فالاكثرون على انها عاطفة و انكره جماعة منهم ابن مالك لملازمتها غالبا الواو العاطفة و ادعى ابن عصفور الاجماع على ذلك قال و انما ذكروها في باب العطف لمصاحبتها لحرفه و ذهب بعضهم الى انها عطفت الاسم على الاسم و الواو عطفت اما على اما و هو غريب الثاني سيأتي ان هذه المعاني لا و الفرق بينها و بين اما ان اما يبنى الكلام معها من اول الامر على ما جيء بها لاجله و لذلك وجب تكرارها و او يفتتح الكلام معها على الجزم ثم يطرأ الابهام او غيره و لهذا لم يتكرر الثالث ليس من اقسام اما التي في قوله فاما ترين من البشر احدا بل هي كلمتان ان الشرطية و ما الزائدة إن بالكسر و التخفيف على اوجه الاول ان تكون شرطية نحو ان ينتهوا يغفرلهم ما قد سلف و ان يعود و افقد مضت و اذا دخلت على لم فالجزم بلم لا بها نحو فان لم تفعلوا او على لا فالجزم بها لا بلا نحو و الا تغفرلي الا تنصروه و الفرق ان لم عامل يلزم معموله و لا يفصل بينهما بشيء و ان يجوز الفصل بينها و بين معمولها بمعموله و لا لا تعمل الجزم اذا كانت نافية فاضيف العمل الى ان الثاني ان تكون نافية و تدخل على الاسمية و الفعلية نحو ان الكافرون الا في غرور ان امهاتهم الا اللائي و لدنهم ان اردنا الا الحسنى ان يدعون من دونه الا اناثا قيل و لا تقع الا و بعدها الا كما تقدم او لما المشددة نحو ان كل نفس

يجوز في ام ان تكون معادلة بمعنى اي الامرين كائن سبيل على التقرير لحصول العلم بكون احدهما و يجوز ان تكون منقطعة الثاني ذكر ابو زيد ان ام تقع زائدة و خرج عليه قوله تعالى افلا تبصرون ام انا خير قال التقدير افلا تبصرون انا خير اما بالفتح والتشديد حرف شرط و تفصيل و توكيد اما كونها حرف شرط فبدليل لزوم الفاء بعدها نحو فاما الذين آمنوا فيعلمون انه الحق من ربهم واما الذين كفروا فيقولون واما قوله فاما الذين اسودت وجوههم اكفرتم بعد ايمانكم فعلى تقدير القول اي فيقال لهم اكفرتم فحذف القول استغناء عنه بالمقول فتبعته الفاء في الحذف وكذا قوله واما الذين كفروا افلم تكن آياتي واما التفصيل فهو غالب احوالها كما تقدم وكقوله اما السفينة فكانت لمساكين واما الغلام واما الجدار وقد يترك تكرارها استغناء باحد القسمين عن الآخر وسيأتي في انواع الحذف واما التوكيد فقال الزمخشري فائدة اما في الكلام ان تعطيه فضل توكيد تقول زيد ذاهب فاذا قصدت توكيد ذلك وانه لامحالة ذاهب وانه بصدد الذهاب وانه منه عزيمة قلت اما زيد فذاهب ولذلك قال سيبويه في تفسيره مهمايكن من شيء فزيد ذاهب و يفصل بين اما والفاء اما بمبتدأ كالآيات السابقة اوخبر نحو اما في الدار فزيد اوجملة شرط نحو فاما ان كان من المقربين فروح الآية او اسم منصوب بالجواب نحو فاما اليتيم فلا تقهر او اسم معمول لمحذوف يفسره ما بعد الفاء نحو واما ثمود فهديناهم في قراءة بعضهم بالنصب تنبيه ليس من اقسام اما التي في قوله تعالى اما ذاكنتم تعملون بل هي كلمتان ام المنقطعة و ما الاستفهامية اما بالكسر والتشديد ترد لمعان الابهام نحو وآخرون مرجون لامرالله إما

عن الآخر و يسمى ايضا معادلة لمعادلتها للهمزة في افادة التسوية في القسم الاول و الاستفهام في الثاني و يفترق القسمان من اربعة اوجه احدها و ثانيها ان الواقعة بعد همزة التسوية لا تستحق جوابا لان المعنى معها ليس على الاستفهام و ان الكلام معها قابل للتصديق و التكذيب لانه خبر و ليست تلك كذلك لان الاستفهام معها على حقيقته و الثالث و الرابع ان الواقعة بعد همزة التسوية لا تقع الا بين جملتين و لا تكون الجملتان معها الا في تأويل المفردين و تكون الجملتان فعليتين و اسميتين ومختلفتين نحو سواء عليكم ادعو تموهم ام انتم صامتون و ام الاخرى تقع بين المفردين و هو الغالب فيها نحوا انتم اشد خلقا ام السماء بناها و بين جملتين ليستا في تأويلهما النوع الثاني منقطعة و هي ثلاثة اقسام مسبوقة بالخبر المحض نحو تنزيل الكتاب لاريب فيه من رب العالمين ام يقولون افتراه و مسبوقة بالهمزة لغير الاستفهام نحوا لهم ارجل يمشون بها ام لهم ايد يبطشون بها اذا لهمزة في ذلك للانكار فهي بمنزلة النفي و المتصلة لا تقع بعده و مسبوقة باستفهام بغير الهمزة نحو هل يستوي الاعمى و البصير ام هل تستوي الظلمات و النور و معنى ام المنقطعة الذي لا يفارقها الاضراب ثم تارة تكون له مجردا و تارة تضمن مع ذلك استفهاما انكاريا فمن الاول ام هل تستوى الظلمات و النور لانه لايدخل الاستفهام على استفهام و من الثاني ام له البنات و لكم البنون تقديره بل اله البنات اذلو قدرت للاضراب المحض لزم المحال تبيينهان الاول قد ترد ام محتملة للاتصال و الانقطاع كقوله قل اتخذتم عند الله عهدا فلن يخلف الله عهده ام تقولون على الله ما لاتعلمون قال الزمخشري

اي لك وتقدم انه من الانتهاء ومنها التبيين قال ابن مالك وهي المبينة لفاعلية مجرورها بعد ما يفيد حبا او بغضا من فعل تعجب او اسم تفضيل نحو رب السجن احب الي ومنها التوكيد وهي الزائدة نحوا فئدة من الناس تهوي اليهم في قراءة بعضهم بفتح الواو اي تهواهم قاله الفراء وقال غيره هو على تضمين تهوي معنى تميل تنبيه حكى ابن عصفور في شرح ابيات الايضاح عن ابن الانباري ان الى تستعمل اسما فيقال انصرفت من اليك كما يقال غدوت من عليه وخرج عليه من القرآن قوله وهزي اليك وبه يندفع اشكال ابي حيان فيه بان القاعدة المشهورة ان الفعل لا يتعدى الى ضمير متصل بنفسه او بالحرف وهو رفع المتصل وهما لمدلول واحد في غير باب ظن اللهم المشهور ان معناه يا الله حذفت ياء النداء وعوض منها الميم المشددة في آخره وقيل اصله يا الله امنا بخير فركب تركيب حيهلا وقال ابو رجا العطاردي الميم فيها تجمع سبعين اسما من اسمائه وقال ابن ظفر قيل انها الاسم الاعظم واستدل لذلك بان الله دال على الذات والميم دالة على الصفات التسعة والتسعين ولهذا قال الحسن البصري اللهم مجمع الدعاء وقال النضر بن شميل من قال اللهم فقد دعا الله بجميع اسمائه ام حرف عطف وهي نوعان متصلة وهي قسمان الاول ان يتقدم عليها همزة التسوية نحو سواء عليهم ءانذرتهم ام لم تنذرهم سواء علينا اجزعنا ام صبرنا سواء عليهم استغفرت لهم ام لم تستغفر لهم والثاني ان يتقدم عليها همزة يطلب بها وبام التعيين نحوا الذكرين حرم ام الانثيين وسميت في القسمين متصلة لان ما قبلها وما بعدها لا يستغنى باحدهما

فائدة قال الرماني في تفسيره معنى الا اللازم لها الاختصاص بالشيء دون غيره فاذا قلت جاءني القوم الا زيدا فقد اختصصت زيدا بانه لم يجيء و اذا قلت ما جاءني الا زيد فقد اختصصته بالمجيء و اذا قلت ما جاءني زيد الا راكبا فقد اختصصته بهذه الحال دون غيرها من المشي و العدو و نحوه الآن اسم للزمن الحاضر و قد تستعمل في غيره مجازا و قال قوم هي حد للزمانين اي طرف للماضي و طرف للمستقبل و قد يتجوز بها عما قرب من احدهما و قال ابن مالك لوقت حضر جميعه كوقت فعل الانشاء حال النطق به او بعضه نحو الآن خفف الله عنكم فمن يستمع الآن يجد له شهابا رصدا قال وظرفيته غالبة لا لازمة و اختلف في ال التي فيه فقيل للتعريف الحضوري و قيل زائدة لازمة الى حرف جر له معان اشهرها انتهاء الغاية زمانا نحوا تموا الصيام الى الليل او مكانا نحو الى المسجد الاقصى او غيرهما نحو و الامر اليك اي منتهيا اليك و لم يذكر لها الاكثرون غير هذا المعنى و زاد ابن مالك و غيره تبعا للكوفيين معاني اخر منها المعية كمع و ذلك اذا ضممت شيئا الى آخر في الحكم به او عليه او التعلق نحو من انصاري الى الله و ايديكم الى المرافق ولا تأكلوا اموالهم الى اموالكم قال الرضي و التحقيق انها للانتهاء اي مضافة الى المرافق و الى اموالكم و قال غيره ما ورد من ذلك ماول على تضمن العامل و ابقاء الى على اصلها و المعنى في الآية الاولى من يضيف نصرته الى نصرة الله او من ينصرني حال كوني ذاهبا الى الله و منها الظرفية كفي نحو ليجمعنكم الى يوم القيمة اي فيه هل لك الى ان تزكى اي في ان و منها مرادفة اللام و جعل منه و الامر اليك

الا تحبون ان يغفر الله لكم الا بالفتح و التشديد حرف تحضيض لم يقع في القرآن لهذا المعنى فيما اعلم الا انه يجوز عندي ان يخرج عليه قوله الا تسجدوا واما قوله الا تعلوا علي فليست هذه بل هي كلمتان ان الناصبة ولا النافية او ان المفسرة ولا الناهية الا بالكسر والتشديد على اوجه احدها الاستثناء متصلا نحو فشربوا منه الا قليلا منهم ما فعلوه الا قليل او منقطعا نحو قل ما اسألكم عليه من اجر الا من شاء ان يتخذ الى ربه سبيلا وما لاحد عنده من نعمة تجزى الا ابتغاء وجه ربه الاعلى الثاني بمعنى غير فيوصف بها وبتاليها جمع منكر او شبهه ويعرب الاسم الواقع بعدها باعراب غير نحو لوكان فيهما آلهة الا الله لفسدتا فلا يجوز ان يكون في هذه الآية للاستثناء لان آلهة جمع منكر في الاثبات فلا عموم له فلا يصح الاستثناء منه ولانه يصير المعنى حينئذ لوكان فيهما آلهة ليس فيهم الله لفسدتا وهو باطل باعتبار مفهومه الثالث ان تكون عاطفة بمنزلة الواو في التشريك ذكره الاخفش و الفراء و ابو عبيدة و خرجوا عليه لئلا يكون للناس عليكم حجة الا الذين ظلموا منهم لا يخاف لدي المرسلون الا من ظلم ثم بدل حسنا بعد سوء اي ولا الذين ظلموا ولا من ظلم و تأولهما الجمهور على الاستثناء المنقطع الرابع بمعنى بل ذكره بعضهم و خرج عليه ما انزلنا عليك القرآن لتشقى الا تذكرة اي بل تذكرة الخامس بمعنى بدل ذكره ابن الصائغ و خرج عليه آلهة الا الله اي بدل الله او عوضه وبه يخرج عن الاشكال المذكور في الاستثناء و في الوصف بالا من جهة المفهوم و غلط ابن مالك فعد من اقسامها نحو الا تنصروه فقد نصره الله وليست منها بل هي كلمتان ان الشرطية ولا النافية

حذف مضاف اي خروج الاذل كماقدره الزمخشري مسئلة اختلف في ال في اسم الله تعالى فقال سيبويه هي عوض من الهمزة المحذوفة بناءً على ان اصله اله دخلت ال فنقلت حركة الهمزة الى اللام ثم ادغمت قال الفارسي ويدل على ذلك قطع همزها ولزومها وقال آخرون هي مزيدة للتعريف تفخيما وتعظيما واصله الاه اولاه وقال قوم هي زايدة لازمة لا للتعريف وقال بعضهم اصله ها الكناية زيدت فيه لام الملك فصارله ثم زيدت ال تعظيما وفخموه توكيدا وقال الخليل وخلائق هي من بنية الكلمة وهو اسم علم لا اشتقاق له ولا اصل خاتمة اجاز الكوفيون وبعض البصريين وكثير من المتاخرين نيابة ال عن الضمير المضاف اليه وخرجوا على ذلك فان الجنة هي الماوى والمانعون يقدرون له واجاز الزمخشري نيابتها عن الظاهر ايضا وخرج عليه وعلم ادم الاسماء كلها قال الاصل اسماء المسميات الا بالفتح والتخفيف وردت فى القران على اوجه احدها للتنبيه فيدل على تحقيق مابعدها قال الزمخشري ولذلك قل وقوع الجمل بعدها الا مصدرة نحو ما يتلقى به القسم ويدخل على الاسمية والفعلية نحو الا انهم هم السفهاء الا يوم ياتيهم ليس مصروفا عنهم قال فى المغني ويقول المعربون فيها حرف استفتاح فيبينون مكانها ويهملون معناها وافادتها التحقيق من جهة تركيبها من الهمزة ولا وهمزة الاستفهام اذا دخلت على النفي افادت التحقيق نحو اليس ذلك بقادر الثاني والثالث التحضيض والعرض ومعناهما طلب الشئ لكن الاول طلب بحث والثاني طلب بلين وتختص فيهما بالفعلية نحو الا تقاتلون قوما نكثوا قوم فرعون الاتتقون الا تاكلون

اذهما فى الغار اذ يبايعونك تحت الشجرة او معهودا حضوريا نحو اليوم اكملت لكم دينكم اليوم احل لكم الطيبات قال ابن عصفور وكذا كل واقعة بعد اسم الاشارة او اي فى النداء او اذا الفجائية او في اسم الزمان الحاضر نحو الآن والجنسية اما لاستغراق الافراد وهي التي تخلفها كل حقيقة نحو وخلق الانسان ضعيفا عالم الغيب والشهادة ومن دلائلها صحة الاستثناء من مدخولها نحو ان الانسان لفي خسر الا الذين آمنوا ووصفه بالجمع نحوا والطفل الذين لم يظهروا واما لاستغراق خصائص الافراد وهي التي تخلفها كلُّ مجازاً نحو ذلك الكتاب اي الكتاب الكامل فى الهداية الجامع لصفات جميع الكتب المنزلة وخصائصها واما لتعريف الماهية والحقيقة والجنس وهي التي لاتخلفها كلٌّ لاحقيقةً ولامجازًا نحو وجعلنا من الماء كل شئ حي اولئك الذين اتيناهم الكتاب والحكم والنبوة قيل والفرق بين المعرف بال هذه وبين اسم الجنس النكرة هو الفرق بين المطلق والمقيد لان المعرف بها يدل على الحقيقة بقيد حضورها فى الذهن واسم الجنس النكرة يدل على مطلق الحقيقة لا باعتبار قيد الثالث ان تكون زائدة وهي نوعان لازمة كالتي فى الموصولات على القول بان تعريفها بالصلة وكالتي فى الاعلام المقارنة لنقلها كاللات والعزّى او لغلبتها كالبيت للكعبة والمدينة لطيبة والنجم للثريا وهذه فى الاصل للعهد اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد في قوله تعالى والنجم اذا هوى قال الثريا وغير لازمة كالواقعة فى الحال وخرج عليه قراة بعضهم ليخرجن الاعز منها اذلّ بفتح الياء اى ذليلا لان الحال واجبة التنكير الا ان ذلك غير فصيح فالاحسن تخريجه على

فيه ناصبة للمضارع فالصواب اثبات هذا المعني لها كما جنح اليه الشيخ ومن سبق النقل عنه * اف كلمة يستعمل عند التضجر والتكره وقدحكي ابو البقا في قوله تعالى فلاتقل لهما اف قولين احدهما انه اسم لفعل الامراى كفا واتركا و الثاني انه اسم لفعل ماض اى كرهت وتضجرت وحكى غيره ثالثا انه اسم لفعل مضارع اى تضجر منكما واما قوله في سورة الانبياء اف لكم فاحاله ابو البقا على ماسبق فى الاسراء و مقتضاه تساويهما فى المعني وقال العزيزى في غريبه هنا اى بئيسالكم و فسر صاحب الصحاح اف بمعني قذرا وقال فى الارتشاف اف اتضجر وفى البسيط معناه التضجر وقيل الضجر وقيل تضجرت ثم حكي فيها تسعا وثلاثين لغة قلت قرى منها فى السبع اف بالكسر بلاتنوين واف بالكسر والتنوين واف بالفتح بلاتنوين وفى الشاذ اف بالضم منونا وغير منون واف بالتخفيف اخرج ابن ابي حاتم مجاهد في قوله تعالى فلاتقل لهما اف قال لاتقذرهما واخرج عن ابي مالك قال هو الردي من الكلام * ال على ثلاثة اوجه احدها ان تكون اسما موصولا بمعني الذي وفروعه وهي الداخلة على اسماء الفاعلين والمفعولين نحوان المسلمين والمسلمات الى آخر الآية التايبون العابدون الآية وقيل هي حينئذ حرف تعريف وقيل موصول حرفي الثاني ان تكون حرف تعريف وهي نوعان عهدية وجنسية وكل منهما ثلاثة اقسام فالعهدية اما ان تكون مصحوبها معهودا ذكريا نحوكما ارسلنا الى فرعون رسولا فعصي فرعون الرسول فيها مصباح المصباح في زجاجة الزجاجة كانها كوكب وضابط هذه ان يسدّ الضمير مسدّها مع مصحوبها او معهوداً ذهنيًا نحو

المغني لم تذكره النحاة لكنه قياس ما قالوه في اذو في التذكرة لابي حيان ذكرلي علم الدين القمني ان القاضي تقي الدين بن رزين كان يذهب الى ان اذن عوض من الجملة المحذوفة و ليس هذا قول نحوى وقال الجوني و انا اظن انه يجوز ان يقول لمن قال انا آتيك اذن اكرمك بالرفع على معني اذا اتيتني اكرمك فحذفت اتيتني وعوضت التنوين من الجملة فسقطت الالف لالتقاء الساكنين قال ولا يقدح في ذلك اتفاق النحاة على ان الفعل في مثل ذلك منصوب باذن لانهم يريدون بذلك ما اذا كانت حرفا ناصبا له ولاينفي ذلك رفع الفعل بعدها اذا اريد بها اذا الزمانية معوضا من جملتها التنوين كما ان منهم من يجزم ما بعد من اذا جعلها شرطية و يرفعه اذا اريد بها الموصولة انتهى فهولاء قد حاموا حول ما حام عليه الشيخ الا انه ليس احد منهم من المشهورين بالنحو و ممن يعتمد قوله فيه نعم ذهب بعض النحاة الى ان اصل اذن الناصبة اسم والتقدير في اذن اكرمك اذا جئتني اكرمك فحذفت الجملة وعوضت منها التنوين واضمرت ان و ذهب آخرون الى انها حرف مركبة من اذوان حكى القولين ابن هشام فى المغني التذبية الثاني الجمهور ان اذن يوقف عليها بالالف المبدلة من النون و عليه اجماع القراء وجوز قوم منهم المبرد والمازني في غير القران الوقوف عليها بالنون كلن وان و يبتني على الخلاف فى الوقف عليها كتابتها فعلى الاول تكتب بالالف كما رسمت فى المصاحف وعلى الثاني بالنون واقول الاجماع فى القران على الوقف عليها وكتابتها بالالف دليل على انها اسم منون لاحرف آخره نون خصوصا انها لم تقع

اذن نوعان الاول ان تدل على انشاء السببية و الشرط بحيث لايفهم الارتباط من غيرها نحوا زورك فتقول اذن اكرمك و هي في هذا الوجه عاملة تدخل على الجملة الفعلية فتنصب المضارع المستقبل المتصل اذا صدرت والثاني ان تكون موكدة لجواب ارتبط بمقدم او منبهة على سبب حصل فى الحال وهي حينئذ غير عاملة لان الموكدات لايعتمد عليها والعامل يعتمد عليه نحوان تاتيني اذن آتيك و والله اذن لافعلن الاترى انها لوسقطت لفهم الارتباط وتدخل هذه على الاسمية فتقول اذن انا اكرمك و يجوز توسطها و تاخرها ومن هذا قوله تعالى ولئن اتبعت اهواءهم من بعد ماجاءك من العلم انك اذن فهي موكدة للجواب مرتبطة بما تقدم تنبيهات الاول سمعت شيخنا العلامة الكافيجي يقول في قوله تعالى ولئن اطعتم بشرا مثلكم انكم اذن لخاسرون ليست اذن هذه الكلمة المعهودة وانما هي اذا الشرطية حذفت جملتها التي تضاف اليها وعوض منها التنوين كما في يومئذ وكنت استحسن هذا جدًا واظن ان الشيخ لاسلف له في ذلك ثم رايت الزركشي قال فى البرهان بعد ذكره لاذن المعنيين السابقين وذكر لها بعض المتاخرين معنى ثالثا و هو ان تكون مركبة من اذا التي هي ظرف زمن ماض و من جملة بعدها تحقيقا اوتقديرًا لكن حذفت الجملة تخفيفا وابدل منها التنوين كما في قولهم حينئذ و ليست هذه الناصبة للمضارع لان تلك تختص به ولذا عملت فيه ولا يعمل الا ما يختص وهذه لا تختص بل تدخل على الماضي كقوله تعالى واذن لا تيناهم اذن لا مسكتم اذن لاذقناك و على الاسم نحو وانكم اذن لمن المقربين قال و هذا

ابتلاؤه بالشر مقطوعا به و قال الجوني الذي اظنه ان اذا يجوز دخولها على المتيقن والمشكوك لانها ظرف و شرط فبا لنظر الى الشرط تدخل على المشكوك و بالنظر الى الظرف تدخل على المتيقن كسائر الظروف الخامس خالفت اذا ان ايضا في افادة العموم قال ابن عصفور فاذا قلت اذا قام زيد قام عمر و افادت ان كلما قام زيد قام عمر و قال هذا هو الصحيح و في ان المشروط بها اذا كان عدما يقع الجزاء في الحال و في ان لا يقع حتى يتحقق اليأس من وجوده و في ان جزاءها مستعقب بشرطها على الاتصال لا يتقدم و لا يتاخر بخلاف ان و في ان مدخولها لا تجزمه لانها لا تتمحض شرطا خاتمة قيل قد تاتي اذا زايدة و خرج عليه اذا السماء انشقت اى انشقت السماء كما قال اقتربت الساعة * اذن قال سيبويه معناها الجواب و الجزاء فقال السلوبين في كل موضع وقال الفارسي في الاكثر و الاكثر ان تكون جوابا لأن او لو ظاهرتين او مقدرتين قال الفراء و حيث جاءت بعدها اللام فقبلها لو مقدرة ان لم تكن ظاهرة نحو اذن لذهب كل آله بما خلق و هي حرف ينصب المضارع بشرط تصديرها و استعماله و اتصالها و انفصالها بالقسم او بلا النافية قال النحاة و اذا وقعت بعد الواو و الفاء جاز فيها الوجهان نحو و اذن لا يلبثون خلفك فاذا لا يؤتون الناس و قرى شاذاً بالنصب فيهما و قال ابن هشام التحقيق انه اذا تقدمها شرط و جزاء و عطفت فان قدرت العطف على الجواب جزمت و بطل عمل اذن لوقوعها حشوا او على الجملتين جميعا جاز الرفع و النصب و كذا اذا تقدمها مبتداء خبره فعل مرفوع ان عطفت على الفعلية رفعت او الاسمية فالوجهان وقال غيره

على الظرفية او محولة الى الحرفية و يحتمل ان يجرى فيها القولان في اذ ما و يحتمل ان يجزم ببقائها على الظرفية لانها ابعد من التركيب بخلاف اذا ما الرابع تختص اذا بدخولها على المتيقن والمظنون و الكثير الوقوع بخلاف ان فانها تستعمل فى المشكوك و الموهوم و النادر و لهذا قال تعالى اذا قمتم الى الصلوة فاغسلوا ثم قال و ان كنتم جنبا فاطهروا فاتى باذا فى الوضوء لتكرره و كثرة اسبابه و بان فى الجنابة لندرة و قوعها بالنسبة الى الحدث و قال الله تعالى فاذا جاءتهم الحسنة قالوا لنا هذه و ان تصبهم سيئة يطيروا بموسى و اذا اذقنا الناس رحمة فرحوا بها و ان تصبهم سيئة بما قدمت ايديهم اذا هم يقنطون اتى في جانب الحسنة باذا لان نعم الله على العباد كثيرة و مقطوع بها و بان في جانب السيئة لانها نادرة الوقوع و مشكوك فيها نعم اشكل على هذه القاعدة آيتان الاولى قوله و لئن متّم او ان مات فاتى بان مع ان الموت متحقق الوقوع و الاخرى قوله و اذا مسّ الناس ضر دعوا ربهم منيبين اليه ثم اذا اذاقهم منه رحمة فاتى باذا فى الطرفين و اجاب الزمخشري عن الاولى بان الموت لما كان مجهول الوقت اجرى مجرى غير المجزوم و اجاب السكاكي عن الثانية بانه قصد التوبيخ و التقريع فاتى باذا لتكون تخويفا لهم و اخباراً بانهم لابد ان يمسهم شئ من العذاب و استفيد التقليل من لفظ المس و تنكير ضرّ و اما قوله تعالى و اذا انعمنا على الانسان اعرض و نأى بجانبه و اذا مسه الشر فذو دعاء عريض فاجيب عنه بان الضمير في مسه للمعرض المتكبر لا لمطلق الانسان و يكون لفظ اذا للتنبيه على ان مثل هذا المعرض يكون

و كنتم ازواجا ثلثة وقد تخرج عن الاستقبال فترد للحال نحو و الليل اذا يغشى فان الغشيان مقارن لليل و النهار اذا تجلى و النجم اذا هوى و للماضي نحو و اذا رأوا تجارة او لهوا الآية فان الآية نزلت بعد الروية و الانفضاض و كذا قوله تعالى و لا على الذين اذا ما آتوك لتحملهم قلت لا اجد ما احملكم عليه حتى اذا بلغ مطلع الشمس حتى اذا ساوى بين الصدفين وقد تخرج عن الشرطية نحو و اذا ما غضبوهم يغفرون و الذين اذا اصابهم البغى هم ينتصرون فاذا في الآيتين ظرف لخبر المبتداء بعدها و لو كانت شرطية و الجملة الاسمية جواب لاقترنت بالفاء وقول بعضهم انه على تقديرها مردود بانها لا تحذف الا ضرورة وقول آخر ان الضمير توكيد لا مبتداء و ان ما بعده الجواب تعسف وقول آخر ان جوابها محذوف مدلول عليه بالجملة بعدها تكلف من غير ضرورة تنبيهات الاول المحققون على ان ناصب اذا شرطُها و الاكثرون انه ما في جوابها من فعل او شبهه الثاني قد تستعمل اذا للاستمرار فى الاحوال الماضية و الحاضرة و المستقبلة كما يستعمل الفعل المضارع لذلك ومنه و اذا لقوا الذين آمنوا قالوا آمنا و اذا خلوا الى شياطينهم قالوا انا معكم اي ان هذا شانهم ابدا و كذا قوله و اذا قاموا الى الصلوة قاموا كسالى الثالث ذكر ابن هشام فى المغني ان ما و لم يذكر اذا ما و قد ذكرها الشيخ بهاء الدين السبكي في عروس الافراح في ادوات الشرط فاما ان ما فلم تقع فى القرآن و مذهب سيبويه انها حرف وقال المبرد وغيره انها باقية على الظرفية و اما اذا ما فوقعت فى القرآن في قوله و اذا ما غضبوا اذا ما آتوك لتحملهم و لم ار من تعرض لكونها باقية

المفاجاة قال التقدير ثم اذا دعاكم فاجاتم الخروج في ذلك الوقت
قال بن هشام و لا يعرف ذلك لغيره و انما يعرف ناصبها عندهم
الخبر المذكور او المقدر قال و لم يقع الخبر معها فى التنزيل الا
مصرحا به الثاني ان تكون لغير المفاجاة فالغالب ان يكون ظرفا
للمستقبل مضمنة معنى الشرط و تختص بالدخول على الجمل
الفعلية و تحتاج لجواب و تقع فى الابتداء عكس الفجائية و الفعل
بعدها اما ظاهر نحو اذا جاء نصر الله او مقدر نحو اذا السماء
انشقت و جوابها اما فعل نحو فاذا جاء امر الله قضى بالحق او جملة
اسمية مقرونة بالفاء نحو فاذا نقر فى الناقور فذلك يومئذ يوم عسير
فاذا نفخ الصور فلا انساب او فعلية طلبية كذلك نحو فسبح بحمد
ربك او اسمية مقرونة باذا المفاجاة نحو اذا دعاكم دعوة من الارض
اذا انتم تخرجون اذا اصاب به من يشاء من عباده اذا هم يستبشرون
و قد يكون مقدرًا لدلالة ما قبله عليه او لدلالة المقام و سياتي في انواع
الحذف و قد تخرج اذا عن الظرفية قال الاخفش في قوله تعالى
حتى اذا جاؤها ان اذا جر بحتى و قال ابن جنى في قوله تعالى
اذا وقعت الواقعة الآية فيمن نصب خافضة رافعة ان اذا الاولى مبتداء
و الثانية خبر و المنصوبان حالان وكذا جملة ليس و معمولها و المعنى
وقت وقوع الواقعة خافضة لقوم رافعة لآخرين هو وقت رجّ الارض
و الجمهور انكروا خروجها عن الظرفية و قالوا فى الآية الاولى ان حتى
حرف ابتداء داخل على الجملة باسرها و لا عمل له و فى الثانية
ان اذا الثانية بدل من الاولى و الاولى ظرف و جوابها محذوف لفهم
المعني وحسنه طول الكلام وتقديره بعد اذا الثانية اي انقسمتم اقساما

فعلها ماض لفظا و معني نحو و اذ قال ربك للملائكة و اذا تبلى ابراهيم ربه او معني لا لفظا نحو و اذ تقول للذي انعم الله عليه * و قد اجتمعت الثلاثة في قوله الا تنصروه فقد نصره الله اذا خرجه الذين كفروا ثاني اثنين اذ هما فى الغار اذ يقول لصاحبه الآية و قد تحذف الجملة للعلم بها و يعوض عنها التنوين و تكسر الذال لالتقاء الساكنين نحو و يومئذ يفرح المومنون و انتم حينئذ تنظرون و زعم الاخفش ان اذ في ذلك معربة لزوال افتقارها الى الجملة و ان الكسرة اعراب لان اليوم و الحين مضاف اليها و رد بان بناءها لوصفها على حرفين و بان الافتقار باق فى المعني كالموصول الذي تحذف صلته اذا على وجهين احدهما ان تكون للمفاجاة فتختص بالجمل الاسمية و لا تحتاج لجواب و لا تقع فى الابتداء و معناها الحال لا الاستقبال نحو فالقاها فاذا هي حية تسعى فلما انجاهم اذاهم يبغون و اذا اذقنا الناس رحمة من بعد ضراء مستهم اذا لهم مكر في آياتنا قال ابن الحاجب و معنى المفاجاة حضور الشئ معك في وصف من اوصافك الفعلية تقول خرجت فاذا الاسد بالباب فمعناه حضور الاسد معك في زمن وصفك بالخروج او في مكان خروجك و حضوره معك في مكان خروجك الصق بك من حضوره في زمن خروجك لان ذلك المكان يخصك دون ذلك الزمان و كلما كان الصق كانت المفاجاة فيه اقوى و اختلف في اذا هذه فقيل انها حرف و عليه الاخفش و رجحه ابن مالك و قيل ظرف مكان و عليه المبرد و رجحه ابن عصفور و قيل ظرف زمان و عليه الزجاج و رجحه الزمخشري و زعم ان عاملها فعل مقدر مشتق من لفظ

نحو و لا تعملون من عمل الا كنا عليكم شهودا اذ تفيضون فيه اي حين تفيضون فيه فائدة اخرج ابن ابي حاتم من طريق السدي عن ابي مالك قال ما كان في القرآن ان بكسر الالف فلم يكن و ما كان اذ فقد كان الوجه الثاني ان تكون للتعليل نحو و لن ينفعكم اليوم اذ ظلمتم انكم في العذاب مشتركون اي و لن ينفعكم اليوم اشتراككم في العذاب لاجل ظلمكم في الدنيا و هل هي حرف بمنزلة لام العلة او ظرف بمعني وقت و التعليل مستفاد من قوة الكلام لا من اللفظ قولان المنسوب الى سيبويه الاول و على الثاني في الاية اشكال لان اذ لا تبدل من اليوم لاختلاف الزمانين و لا تكون ظرفا لينفع لانه لا يعمل في طرفين و لا لمشتركون لان معمول خبر ان و اخواتها لا يقدم عليها و لان معمول الصلة لا يتقدم على الموصول و لان اشتراكهم في الآخرة لا في زمن ظلمهم و مما حمل على التعليل و اذ لم يهتدوا به فسيقولون هذا افك قديم و اذ اعتزلتموهم و ما يعبدون الا الله فأووا الى الكهف و انكر الجمهور هذا القسم و قالوا التقدير بعد اذ ظلمتم و قال ابن جني راجعت ابا علي مرارا في قوله تعالى و لن ينفعكم اليوم الآية مستشكلا ابدال اذ من اليوم فآخر ما تحصل منه ان الدنيا و الآخرة متصلتان و انهما في حكم الله تعالى سواء فكان اليوم ماض انتهى الوجه الثالث التوكيد بان تحمل على الزيادة قاله ابو عبيدة و تبعه ابن قتيبة و حملا عليه آيات منها و اذ قال ربك للملائكة الرابع التحقيق كقد و حملت عليه الآية المذكورة و جعل منه السهيلي قوله بعد اذ انتم مسلمون قال ابن هشام و ليس القولان بشيء مسئلة تلزم اذ الاضافة الى جملة اما اسمية نحو و اذكروا اذ انتم قليل او فعلية

للزمن الماضي و هو الغالب ثم قال الجمهور لا تكون الاظرفا نحو فقد نصره الله اذا خرج الذين كفروا او مضافا اليها الظرف نحو بعد اذ هديتنا يومئذ تحدث و انتم حينئذ تنظرون و قال غيرهم تكون مفعولا به نحو و اذكروا اذ كنتم قليلا و كذا المذكورة في اوائل القصص كلها مفعول به بتقدير اذكر و بدلا منه نحو و اذكر فى الكتاب مريم اذ انتبذت فاذ بدل اشتمال من مريم على حد البدل في يسألونك عن الشهر الحرام قتال فيه و اذكروا نعمة الله عليكم اذ جعل فيكم انبياء اي اذكروا النعمة التي هي الجعل المذكور فهي بدل كل من كل و الجمهور يجعلونها فى الاول ظرفا لمفعول محذوف اي و اذ كروا نعمة الله عليكم اذ كنتم قليلا و فى الثاني ظرف لمضاف الى المفعول محذوف اي و اذكر قصة مريم و يويد ذلك التصريح به في و اذ كروا نعمة الله عليكم اذ كنتم اعداء و ذكر الزمخشري انها تكون مبتداء و خرج عليه قراة بعضهم اذ من الله على المومنين قال التقدير منه اذ بعث فاذ في محل رفع كاذا في قولك اخطب ما يكون الامير اذا كان قائما اي لمن من الله على المومنين وقت بعثه انتهى قال ابن هشام و لا نعلم بذلك قائلا و ذكر كثير انها تخرج عن المضي الي الاستقبال نحو يومئذ تحدث اخبارها و الجمهور انكروا ذلك و جعلوا الآية من باب و نفخ فى الصور اعني من تنزيل المستقبل الواجب الوقوع منزلة الماضي الواقع و احتج المثبتون منهم ابن مالك بقوله فسوف يعلمون اذ الاغلال في اعناقهم فان يعلمون مستقبل لفظا و معني لدخول حرف التنفيس عليه و قد عمل في اذ فيلزم ان يكون بمنزلة اذا و ذكر بعضهم انها تاتي للحال

يستعمل فيهما مطلقا واحد يستوي فيه المذكر و المونث قال الله تعالى لستن كاحد من النساء بخلاف الواحد فلا يقال كواحد من النساء بل كواحدة و احد يصلح للافراد و الجمع قلت و لهذا وصف به في قوله من احد عنه حاجزين بخلاف الواحد و الاحد له جمع من لفظه و هو الاحدون و الآحاد وليس للواحد جمع من لفظه فلا يقال واحدون بل اثنان و ثلاثة و الاحد ممتنع الدخول فى الضرب والعدد والقسمة و في شيء من الحساب بخلاف الواحد انتهى ملخصا وقد تحصل من كلامه بينهما سبعة فروق وفي اسرار التنزيل للبارزي في سورة الا خلاص فان قيل المشهور في كلام العرب ان الاحد يستعمل بعد النفي والواحد بعد الاثبات فكيف جاء احد ههنا بعد الاثبات قلنا قد اختار ابو عبيد انهما بمعنى واحد وحينئذ فلا يختص احدهما بمكان دون الآخر وان غلب استعمال احد فى النفي و يجوز ان يكون العدول هنا عن الغالب رعاية للفواصل انتهى وقال الراغب في مفردات القرآن احد يستعمل على ضربين احدهما فى النفي فقط والآخر فى الاثبات فالاول لاستغراق جنس الناطقين ويتناول الكثير والقليل ولذلك صح ان يقال ما من احد فاضلين كقوله تعالى فما منكم من احد عنه حاجزين والثاني على ثلثة اوجه الاول المستعمل فى العدد مع العشرات نحو احد عشر احد و عشرين والثاني المستعمل مضافا اليه بمعني الاول نحوا ما احد كما فيسقي ربه خمرا والثالث المستعمل وصفا مطلقا و يختص بوصف الله تعالى نحو قل هو الله احد واصله وحد الا ان وحدا يستعمل في غيره انتهى اذ ترد على اوجه احدها ان تكون اسما

في النوع السابع والخمسين فائدة اذا دخلت على رأيت امتنع ان تكون من روية البصر اوالقلب وصار بمعني اخبرني و قد تبدل هاء وخرج على ذلك قراءة قنبل ها أنتم هؤ لاء بالقصر وقد تقع في القسم ومنه ماقرئ ولا نكتم شهادة بالتنوين الله بالمد الثاني من وجهي الهمزة ان تكون حرفا ينادى به القريب وجعل منه الفراء قوله تعالى امن هو قانت آناء الليل على قراءة تخفيف الميم اي يا صاحب هذه الصفات قال ابن هشام و يبعده انه ليس في التنزيل نداء بغير ياء ويقربه سلامته من دعوى المجاز اذلايكون الاستفهام منه تعالى على حقيقة ومن دعوى نكرة الحذف اذالتقدير عند من جعلها للاستفهام امن هو قانت خيرام هذا الكافراي المخاطب بقوله قل تمتع بكفرك قليلا فحذف شيأن معادل الهمزة والخبر احد قال ابو حاتم في كتاب الزينة هو اسم اكمل من الواحد الا ترى انك اذا قلت فلان لا يقوم له واحد جاز في المعني ان يقوم له اثنان فاكثر بخلاف قولك لا يقوم له احد و في الاحد خصوصية ليست في الواحد تقول ليس في الدار واحد فيجوز ان يكون من الدواب و الطير و الوحش والانس فيعم الناس و غيرهم بخلاف ليس في الدار احد فانه مخصوص بالادميين دون غيرهم قال و يأتي الاحد في كلام العرب بمعني الاول و بمعني الواحد فيستعمل في الاثبات و في النفي نحو قل هو الله احداى واحد واول فابعثوا احدكم بورقكم و بخلافهما فلا يستعمل الا في النفي تقول ما جاء في من احد و منه ايحسب ان لن يقدر عليه احد ان لم يره احد فما منكم من احد ولا تصل على احد و واحد

الحمد لله الذي قال عن صلوتهم ساهون و لم يقل في صلوتهم و سيأتي ذكر كثير من اشباه ذلك و هذا سردها مرتبة على حروف المعجم و قد افرد هذا النوع بالتصنيف خلائق من المتقدمين كالهروي فى الازهية و المتأخرين كابن ام قاسم فى الجنى الداني الهمزة تأتي على وجهين احدهما الاستفهام و حقيقته طلب الافهام و هي اصل ادواته و من ثم اختصت بامور احدها جواز حذفها كما سياتي فى النوع السادس و الخمسين ثانيها انها ترد لطلب التصور و التصديق بخلاف هل فانها للتصديق خاصة و سائر الادوات للتصور خاصة ثالثها انها تدخل على الاثبات نحوا كان للناس عجبا الذكرين حرم و على النفي نحوا لم نشرح و تفيد حينئذ معنيين احدهما التذكير و التنبيه كالمثال المذكور و كقوله الم تر الى ربك كيف مد الظل و الآخر التعجيب من الامر العظيم كقوله تعالى الم تر الى الذين خرجوا من ديارهم و هم الوف حذر الموت و في كلا الحالين هي تحذير نحو الم نهلك الاولين رابعها تقدمها على العاطف تنبيها على اصالتها فى التصدير نحوا و كلما عاهدوا عهدا افامن اهل القرى اثم اذا ما وقع و سائر اخواتها تتأخر عنه كما هو قياس جميع اجزاء الجملة المعطوفة نحو و كيف تكفرون فاين تذهبون فانى تؤفكون فهل يهلك فاي الفريقين فمالكم فى المنافقين خامسها انه لايستفهم بها حتى يهجس فى النفي اثبات ما يستفهم عنه بخلاف هل فانه لما لا يترجح عنده نفي و لا اثبات حكاه ابو حيان عن بعضهم سادسها انها تدخل على الشرط نحوا فان مت فهم الخالدون افائن مات او قتل انقلبتم بخلاف غيرها و تخرج عن الاستفهام الحقيقي فتأتي لمعان تذكر

و ما ادراك ما سجين و ما ادراك ما عليون ثم فسر الكتاب لا السجين و لا العليون و في ذلك نكتة لطيفة انتهى و لم يذكرها و بقيت اشياء تاتي فى النوع الذي يلي هذا ان شاء الله تعالى النوع الاربعون في معرفة معانى الادوات التي يحتاج اليها المفسر واعني بالادوات الحروف و ما شاكلها من الاسماء و الافعال و الظروف اعلم ان معرفة ذلك من المهمات المطلوبة لاختلاف مواقعها و لهذا يختلف الكلام و الاستنباط بحسبها كما في قوله تعالى و انا او ايا كم لعلى هدى او في ضلال مبين فاستعملت على في جانب الحق و في في جانب الضلال لان صاحب الحق كانه مستعل يصرف نظره كيف شاء و صاحب الباطل كانه منغمس في ظلام منخفض لا يدري اين يتوجه و قوله فابعثوا احدكم بورقكم هذه الى المدينة فلينظر ايها ازكى طعاما فليأتكم برزق منه و ليتلطف عطف الجمل الاول بالفاء و الاخيرة بالواو لما انقطع نظام الترتب لان التلطف غير مترتب على الاتيان بالطعام كما كان الاتيان به مترتبا على النظر فيه و النظر فيه مترتبا على التوجه في طلبه و التوجه في طلبه مترتبا على قطع الجدال فى المسألة عن مدة اللبث و تسليم العلم له تعالى و قوله تعالى انما الصدقات للفقراء الآية عدل عن اللام الى في فى الاربعة الاخيرة ايذانا بانهم اكثر استحقاقا للمتصدق عليهم ممن سبق ذكره باللام لان في للوعاء فنبه باستعمالها على انهم احقاء بان يجعلو مظنة لوضع الصدقات فيهم كما يوضع الشئ في وعائه مستقرا فيه و قال الفارسي انما قال و فى الرقاب و لم يقل و للرقاب ليدل على ان العبد لا يملك و عن ابن عباس قال

عن ابن زيد قال شئ فى القرآن فاسق فهو كاذب الا قليلا واخرج ابن المنذر عن السدي قال ما كان فى القرآن حنيفا مسلمين و ما كان فى القرآن حنفاء مسلمين حجاجا واخرج عن سعيد بن جبير قال العفو فى القرآن على ثلاثة انحاء نحو تجاوز عن الذنب ونحو فى القصد فى النفقة و يسألونك ماذا ينفقون قل العفو ونحو فى الاحسان فيما بين الناس الا ان يعفون او يعفو الذي بيده عقدة النكاح و في صحيح البخاري قال سفيان ابن عيينة ما سمى الله المطر فى القرآن الا عذابا و تسميه العرب الغيث قلت استثنى من ذلك ان كان بكم اذى من مطر فان المراد به الغيث قطعا و قال ابو عبيدة اذا كان من العذاب فهو امطرت و اذا كان من الرحمة فهو مطرت • فرع اخرج ابو الشيخ عن الضحاك قال قال لي ابن عباس احفظ عني كل شئ فى القرآن و مالهم فى الارض من ولي و لا نصير فهو للمشركين فاما المومنون فما اكثر انصارهم و شفعاءهم و اخرج سعيد بن منصور عن مجاهد قال كل طعام فى القرآن فهو نصف صاع و اخرج ابن ابي حاتم عن وهب بن منبه قال كل شئ فى القرآن قليل و الا قليل فهو دون العشرة و اخرج عن مسروق قال ما كان فى القرآن على صلوتهم يحافظون حافظوا على الصلوات فهو على مواقيتها و اخرج عن سفيان بن عيينة قال كل شئ فى القرآن و ما يدريك فلم يخبر به و ما ادراك فقد اخبره و اخرج عنه قال كل مكر فى القرآن فهو عمل و اخرج عن مجاهد قال ما كان فى القرآن قتل ولعن فانما عنى به الكافر و قال الراغب في مفرداته قيل كل شئ ذكره الله بقوله و ما ادراك فسره و كل شئ ذكر بقوله و ما يدريك تركه و قد ذكر

عن ابي مالك عن ابن عباس قال ريب شك الامكانا واحدا في
والطور ريب المنون يعني حوادث الامور واخرج ابن ابي حاتم
وغيره عن ابي بن كعب قال كل شئ في القرآن من الرياح فهي
رحمة وكل شئ فيه من الريح فهو عذاب واخرج عن الضحاك
قال كل كأس ذكره الله في القرآن انما عني به الخمر واخرج عنه
قال كل شئ في القرآن فاطر فهو خالق واخرج عن سعيد بن جبير
قال كل شئ في القرآن افك فهو كذب واخرج عن ابي العالية
قال كل آية في القرآن في الامر بالمعروف فهو الاسلام والنهي عن
المنكر فهو عبادة الاوثان واخرج عن ابي العالية ايضا قال كل آية
في القرآن يذكر فيها حفظ الفرج فهو من الزنا الا قوله قل للمومنين
يغضوا من ابصارهم ويحفظوا فروجهم فالمراد ان لا يراها احد واخرج
عن مجاهد قال كل شئ في القرآن ان الانسان كفورا انما يعني به
الكفار واخرج عن عمر بن عبد العزيز قال كل شئ في القرآن خلود
فانه لا توبة له واخرج عن عبد الرحمن بن زيد بن اسلم قال كل
شئ في القرآن يقدر فمعناه يقل واخرج عنه قال التزكي في القرآن
كله الاسلام واخرج عن ابي مالك قال وراء في القرآن امام كله
غير حرفين فمن ابتغى وراء ذلك يعني سوى ذلك واحل لكم
ما وراء ذلكم يعني سوى ذلكم واخرج عن ابي بكر بن عياش قال
ما كان كِسْفًا فهو عذاب وما كان كِسَفًا فهو قطع السحاب واخرج عن
عكرمة قال ما صنع الله فهو الشد وما صنع الناس فهو السد واخرج
ابن جرير عن ابي روق قال كل شئ في القرآن جعل فهو خلق
واخرج عن مجاهد قال المباشرة في كل كتاب الله الجماع واخرج

المهر وقال الداني كلما فيه من الحضور فهو بالضاد من المشاهدة الا موضعا واحدا فانه بالظاء من الاحتظار و هو المنع و هو قوله كهشيم المحتظر وقال ابن خالويه ليس فى القرآن بعد بمعنى قبل الا حرف واحد و لقد كتبنا فى الزبور من بعد الذكر قال مغلطاي في كتاب الميسر قد وجدنا حرفا آخر و هو قوله تعالى و الارض بعد ذلك دحاها قال ابو موسى في كتاب المغيث معناه هنا قبل لانه تعالى خلق الارض في يومين ثم استوى الى السماء فعلى هذا خلق الارض قبل خلق السماء انتهى قلت قد تعرض النبي صلى الله عليه و سلم و الصحابة و التابعون لشيء من هذا النوع فاخرج الامام احمد في مسنده و ابن ابي حاتم و غيرهما من طريق دراج عن ابى الهيثم عن ابي سعيد الخدرى رضي الله عنه عن رسول الله صلى الله عليه و سلم قال كل حرف فى القرآن يذكر فيه القنوت فهو الطاعة هذا اسناد جيد و ابن حبان يصححه و اخرج ابن ابي حاتم من طريق عكرمة عن ابن عباس قال كل شيء فى القرآن اليم فهو الموجع و اخرج من طريق علي بن ابي طلحة عن ابن عباس قال كل شيء فى القرآن قتل فهو لعن و اخرج من طريق الضحاك عن ابن عباس قال كل شيء في كتاب الله من الرجز يعني به العذاب و قال الفريابي حدثنا قيس عن عمار الذهبي عن سعيد بن جبير عن ابن عباس قال كل تسبيح فى القرآن صلوة وكل سلطان فى القرآن حجة و اخرج ابن ابي حاتم من طريق عكرمة عن ابن عباس قال كل شيء فى القرآن الدين فهو الحساب و اخرج ابن الانباري في كتاب الوقف و الابتداء من طريق السدى

الا سخريا فى الزخرف فهو من التسخير و الاستخدام * وكل سكينة فيه طمانينة الا التي في قصة طالوت فهو شيء كرأس الهرة و له جناحان * وكل سعير فيه فهو النار و الوقود الا في ضلال و سعر فهو العنا * وكل شيطان فيه فابليس و جنوده الا و اذا خلوا الى شياطينهم * وكل شهيد فيه غير القتلى فمن يشهد في امور الناس الا و ادعوا شهداءكم فهو شركاؤكم * وكل ما فيه من اصحاب النار فاهلها الا و ما جعلنا اصحاب النار الا ملائكة فالمراد خزنتها * وكل صلوة فيه عبادة و رحمة الا و صلوات و مساجد فهي الاماكن * وكل صمم فيه ففي سماع الايمان و القرآن خاصة الا الذي فى الاسراء * وكل عذاب فيه فالتعذيب الا وليشهد عذابهما فهو الضرب * وكل قنوت فيه طاعة الا كل له قانتون فمعناه مقرون * وكل كنز فيه مال الا الذي فى الكهف فهو صحيفة علم * وكل مصباح فيه كوكب الا الذي فى النور فالسراج * وكل نكاح فيه تزوج الا حتى اذا بلغوا النكاح فهو الحلم * وكل نبأ فيه خبر الا فعميت عليهم الانباء فهي الحجج * وكل ورود فيه دخول الا ولما ورد ماء مدين يعني هجم عليه و لم يدخله * وكل ما فيه من لا يكلف الله نفسا الا وسعها فالمراد من العمل الا التي فى الطلاق فالمراد منه النفقة * وكل ياس فيه قنوط الا التي فى الرعد فمن العلم * وكل صبر فيه محمود الا لولا ان صبرنا عليها و اصبروا على آلهتكم * هذا آخر ما ذكره ابن فارس وقال غيره كل صوم فيه فمن العبادة الا نذرت للرحمن صوما اى صمتا * وكل ما فيه من الظلمات و النور فالمراد الكفر والايمان الا التي في اول الانعام فالمراد ظلمة الليل ونورالنهار * وكل انفاق فيه فهو الصدقة الا فأتوا الذين ذهبت ازواجهم مثل ما انفقوا فالمراد به

والحرية نصف ما على المحصنات من العذاب فصل قال ابن فارس في كتاب الافراد كل ما في القرآن من ذكر الاسف فمعناه الحزن الا فلما اسفونا فمعناه اغضبونا * وكل ما فيه من ذكر البروج فهي الكواكب الا و لو كنتم في بروج مشيدة فهي القصور الطوال الحصينة * وكل ما فيه من ذكر البر والبحر فالمراد بالبحر الماء و بالبر التراب اليابس الاظهر الفساد في البر و البحر فالمراد البرية والعمران * وكل ما فيه من ذكر بخس فهو النقص الا بثمن بخس اي حرام * وكل ما فيه من البعل فهو الزوج الا اتدعون بعلا فهو الصنم وكل ما فيه من البكم فالخرس عن الكلام بالايمان الا عميا و بكما و صما في الاسراء واحدها ابكم في النحل فالمراد عدم القدرة على الكلام مطلقا * وكل ما فيه جثيا فمعناه جميعا الا وترى كل امة جاثية فمعناه تجثوا على ركبها * وكل ما فيه من حسبان فهو العدد الا حسبانا من السماء في الكهف فهو العذاب * وكل ما فيه حسرة فالندامة الا ليجعل الله ذلك حسرة في قلوبهم فمعناه الحزن * وكل ما فيه من الدحض فالباطل الا فكان من المدحضين فمعناه من المفز وعين * وكل ما فيه من رجز فالعذاب الا و الرجز فاهجر فالمراد به الصنم * وكل ما فيه من ريب فالشك الا ريب المنون يعني حوادث الدهر * وكل ما فيه من الرجم فهو القتل الا لا رجمنك فمعناه لا شتمنك و رجما بالغيب اي ظنا * وكل ما فيه من الزور فالكذب مع الشرك الا منكرا من القول و زورا فانه كذب غير شرك * وكل ما فيه من زكاة فهو المال الا و حنانا من لدنا و زكاة اي طهرة * وكل ما فيه من الزيغ فالميل الا و اذ زاغت الابصار اي شخصت * وكل ما فيه من سخر فالاستهزاء

فمنهم من قضى نحبه و الفصل لقضى الامر بيني و بينكم و المضي
ليقضى الله امرا كان مفعولا و الهلك لقضي اليهم اجلهم و الوجوب
لما قضى الامر و الابرام في نفس يعقوب قضاها و الاعلام و قضينا الى
بني اسرائيل و الوصية و قضى ربك ان لا تعبدوا الا اياه و الموت
فقضى عليه و النزول فلما قضينا عليه الموت و الخلق فقضاهن سبع
سموات و الفعل كلا لما يقض ما امره يعني حقا لم يفعل و العهد اذ
قضينا الى موسى الامر * ومن ذلك الذكر ورد على اوجه ذكر اللسان
فاذكروا الله كذكركم آباءكم و ذكر القلب ذكروا الله فاستغفروا لذنوبهم
و الحفظ فاذكروا ما فيه و الطاعة و الجزاء فاذكروني اذكركم و الصلوات
الخمس فاذا امنتم فاذكروا الله و العظة فلما نسوا ما ذكروا به و ذكر فان
الذكرى و البيان او عجبتم ان جاءكم ذكر من ربكم و الحديث اذكرني
عند ربك اي حدثه بحالي و القرآن و من اعرض عن ذكري ما
يأتيهم من ذكر و التوراة فاسألوا اهل الذكر و الخبر سأتلوا عليكم منه
ذكرا و الشرف و انه لذكر لك و العيب اهذا الذي يذكر الهتكم
و اللوح المحفوظ من بعد الذكر و الثنا و ذكروا الله كثيرا و الوحي
فالتاليات ذكرا و الرسول ذكرا رسولا و الصلوٰة و لذكر الله اكبر و صلوٰة
الجمعة فاسعوا الى ذكر الله و صلوٰة العصر عن ذكر ربي * و من ذلك
الدعا ورد على اوجه العبادة و لا تدع من دون الله ما لا ينفعك
و لا يضرك و الاستعانة وادعوا شهداءكم و السؤال ادعوني استجب لكم
و القول دعواهم فيها سبحانك اللهم و النداء يوم يدعوكم و التسمية
لاتجعلوا دعاء الرسول بينكم كدعاء بعضكم بعضا * ومن ذلك الاحصان
ورد على اوجه العفة و الذين يرمون المحصنات و التزوج فاذا احصن

و ردت على اوجه الاسلام يختص برحمته من يشاء و الايمان و آتاني رحمة من عنده و الجنة ففي رحمة الله هم فيها خالدون و المطر نشرا بين يدي رحمته و النعمة و لو لا فضل الله عليكم و رحمته و النبوة ام عندهم خزائن رحمة ربك اهم يقسمون رحمة ربك و القرآن قل بفضل الله و برحمته و الرزق خزائن رحمة ربي و النصر و الفتح ان اراد بكم سوء او اراد بكم رحمة و العافية او ارادني برحمة و المودة رافة و رحمة رحماء بينهم و السعة تخفيف من ربكم و رحمة و المغفرة كتب ربكم على نفسه الرحمة و العصمة لا عاصم اليوم من امر الله الا من رحم * ومن ذلك الفتنة وردت على اوجه الشرك والفتنة اشد من القتل حتى لا تكون فتنة والاضلال ابتغاء الفتنة و القتل ان يفتنكم الذين كفروا و الصدوا حذرهم ان يفتنوك و الضلالة و من يرد الله فتنته و المعذرة ثم لم تكن فتنتهم والقضاء ان هي الا فتنتك و الاثم الا في الفتنة سقطوا و المرض يفتنون في كل عام و العبرة لا تجعلنا فتنة و العقوبة ان تصيبهم فتنة و الاختبار و لقد فتنا الذين من قبلهم و العذاب جعل فتنة الناس كعذاب الله و الاحراق يوم هم على النار يفتنون و الجنون بايكم المفتون * و من ذلك الروح و رد على اوجه الامر و روح منه و الوحي تنزل الملائكة بالروح و القرآن اوحينا اليك روحا من امرنا و الرحمة و ايدهم بروح منه و الحياة فروح و ريحان و جبريل فارسلنا اليها روحنا نزل به الروح الامين و ملك عظيم يوم يقوم الروح و جنس من الملائكة تنزل الملائكة و الروح فيها و روح البدن و يسألونك عن الروح * و من ذلك القضاء ورد على اوجه الفراغ فاذا قضيتهم مناسككم و الامر اذا قضى امرا و الاجل

هاد و جعلنا هم ائمة يهدون بامرنا و بمعنى الرسل و الكتب فاما
يأتينكم مني هدى و المعرفة و بالنجم هم يهتدون و بمعنى النبي
صلى الله عليه و سلم ان الذين يكتمون ما انزلنا من البينات
و الهدى و بمعنى القرآن و لقد جاءهم من ربهم الهدى و التوراة
و لقد آتينا موسى الهدى و الاسترجاع و اولئك هم المتدون و الحجة
لا يهدي القوم الظالمين بعد قوله الم تر الى الذي حاج ابراهيم
في ربه اي لا يهديهم حجة و التوحيد ان تتبع الهدى معك و السنة
فبهداهم اقتده و انا على آثارهم مهتدون و الاصلاح ان الله لا يهدي
كيد الخائنين و الالهام اعطى كل شيء خلقه ثم هدى اي الهم المعاش
و التوبة انا هدنا اليك و الارشاد ان يهديني سواء السبيل * و من
ذلك السوء يا تي على اوجه الشدة يسومونكم سوء العذاب و العقر
و لا تمسوها بسوء و الزنا ما جزاء من اراد باهلك سوء ما كان ابوك
امرء سوء و البرص بيضاء من غير سوء و العذاب ان الخزي اليوم
و السوء و الشرك ما كنا نعمل من سوء و الشتم لا يحب الله الجهر
بالسوء و السنتهم بالسوء و الذنب و الذين يعملون السوء بجهالة و بمعنى
بئس و لهم سوء الدار و الضر و يكشف السوء و ما مسني السوء و القتل
و الهزيمة لم يمسسهم سوء * و من ذلك الصلوة تاتي على اوجه الصلوات
الخمس يقيمون الصلوة و صلوة العصر تحبسونهما من بعد الصلوة
و صلوة الجمعة اذا نودي للصلوة و صلوة الجنازة و لا تصل على احد
منهم و الدعاء و صل عليهم و الدين اصلوتك تامرك و القراءة و لا تجهر
بصلوتك و الرحمة و الاستغفار ان الله و ملائكة يصلون على النبي
و مواضع الصلوة و صلوات و مساجد لا تقربوا الصلوة * و من ذلك الرحمة

الواحدة تنصرف الى عشرين وجها و اقل و اكثر و لا يوجد ذلك في كلام البشر و ذكر مقاتل في صدر كتابه حديثا مرفوعا لا يكون الرجل فقيها كل الفقه حتى يرى للقرآن وجوها كثيرة قلت هذا اخرجه ابن سعد و غيره عن ابي الدرداء موقوفا و لفظه لا يفقه الرجل كل الفقه اه و قد فسره بعضهم بان المراد ان يرى اللفظ الواحد يحتمل معاني متعددة فيحمله عليها اذا كانت غير متضادة و لا يقتصر به على معنى واحد و اشار آخرون الى ان المراد به استعمال الاشارات الباطنة وعدم الاقتصار على التفسير الظاهر * واخرجه ابن عساكر في تاريخه من طريق حماد بن زيد عن ايوب عن ابي قلابة عن ابي الدرداء قال اذلك لن تفقه كل الفقه حتى ترى للقرآن وجوها * قال حماد فقلت لايوب ا رأيت قوله حتى ترى للقرآن وجوها اهوان يرى له وجوها فيهاب الاقدام عليه قال نعم هو هذا * و اخرج ابن سعد من طريق عكرمة عن ابن عباس ان علي بن ابي طالب ارسله الى الخوارج فقال اذهب اليهم فخاصمهم و لا تحاججهم بالقرآن فانه ذو وجوه ولكن خاصمهم بالسنة * واخرج من وجه آخر ان ابن عباس قال له يا امير المومنين فانا اعلم بكتاب الله منهم في بيوتنا نزل قال صدقت و لكن القرآن حمال ذو وجوه تقول و يقولون و لكن حاجهم بالسنن فانهم لن يجدوا عنها محيصا فخرج اليهم فحاجهم بالسنن فلم تبق بايديهم حجة * و هذه عيون من امثلة هذا النوع من ذلك الهدى يأتي على سبعة عشر وجها بمعنى الثبات اهدنا الصراط المستقيم * و البيان اولئك على هدى من ربهم و الدين ان الهدى هدى الله والايمان و يزيد الله الذين اهتدوا هدى و الدعاء ولكل قوم

و قلت

و زدت يس و الرحمن مع ملكو ت ثم سينين شطر البيت مشهور
ثم الصراط و دري يحور مر جان اليم مع القنطار مذكور
و راعنا طفقا هدنا ابلعي و ورا و الارائك و الاكواب مأثور
هود و قسط و كفّر رمزه سقر هون يصدون و المنساة مسطور
شهر مجوس و اقفال يهود حوا ريون كنز و سجين و تتبير
بعير آزر حوب و ردة عرم ال و من تحتها عبدت و الصور
و لينة فو مهار هو و اخلد مز جاة و سيدها القيوم موفور
و قمل ثم اسفار عتي كتبا و سجدا ثم ربيون تكثير
و حطة وطوى و الرس نون كذا عدن و منفطر الاسباط مذكور
مسك اباريق ياقوت رودا فهنا مافات من عدد الالفاظ محصور
و بعضهم عد الاولى مع بطائنها و الآخرة لمعان الضد مقصور

النوع التاسع و الثلاثون معرفة الوجوه و النظائر صنف فيه قديما مقاتل بن سليمان و من المتأخرين ابن الجوزي و ابن الد امغاني و ابو الحسين محمد بن عبد الصمد المصري و ابن فارس و آخرون * فالوجوه اللفظ المشترك الذي يستعمل في عدة معان كلفظ الامة و قد افردت في هذا الفن كتابا سميته معترك الاقران في مشترك القرآن و النظائر كالالفاظ المتواطئة و قيل النظائر فى اللفظ و الوجوه فى المعاني و ضعف لانه لو اريد هذا لكان الجميع فى الالفاظ المشتركة و هم يذكرون في تلك الكتب اللفظ الذي معناه واحد في مواضع كثيرة فيجعلون الوجوه نوعا لاقسام و النظائر نوعا آخر و قد جعل بعضهم ذلك من انواع معجزات القرآن حيث كانت الكلمة

عن ابن عباس في قوله يٰسٓ قال يا انسان بالحبشية و اخرج ابن ابي حاتم عن سعيد بن جبير قال يس يا رجل بلغة الحبشية يصدرن قال ابن الجوزي معناه يضجون بالحبشية يصهر قيل معناه ينضج بلسان اهل المغرب حكاه شيذلة اليم قال ابن قتيبة اليم البحر بالسريانية و قال ابن الجوزي بالعبرانية و قال شيذلة بالقبطية اليهود قال الجواليقي اعجمي معرب منسوبون الى يهوذ ابن يعقوب فعرب باهمال الذال * فهذا ما وقفت عليه من الالفاظ المعربة في القرآن بعد الفحص الشديد سنين ولم تجتمع قبل في كتاب قبل هذا * و قد نظم القاضي تاج الدين بن السبكي منها سبعة وعشرين لفظا في ابيات و ذيل عليه الحافظ ابو الفضل ابن حجر بابيات فيها اربعة و عشرون لفظا و ذيلت عليهما بالباقي و هو بضع وستون فتمت اكثر من مائة لفظة فقال ابن السبكي *

السلسبيل و طٰهٰ كورت بيع ... روم و طوبى و سجيل و كافور
و الزنجبيل و مشكاة سرادق مع ... استبرق صلوات سندس طور
كذا قراطيس ربانيهم و غسا ... ق ثم دينار القسطاس مشهور
كذاك قسورة و اليم ناشئة ... و نون كفلين مذكور و مسطور
له مقاليد فردوس يعد كذا ... فيما حكى ابن دريد منه تنور

و قال ابن حجر

و زدت حرم و مهل و السجل كذا ... السري و الابّ ثم الجبت مذكور
و قطنا و آناه ثم متكيا ... دارست يصهر منه فهو مصهور
وهيت و السكر الاواه مع حصب ... و اوبي معه و الطاغوت مسطور
صرهن اصرى وغيض الماء مع وزر ... ثم الرقيم مناص و السنا النور

عباس و قال الواسطي في الارشاد هو الملك بلسان النبط مناص
قال ابو القاسم معناه فرار بالنبطية منساة اخرج ابن جرير عن السدي
قال المنساة العصا بلسان الحبشة منفطر اخرج ابن جرير عن ابن
عباس في قوله السماء منفطر به قال ممتلئة به بلسان الحبشة مهل
قيل هو عكر الزيت بلسان اهل المغرب حكاه شيذلة و قال ابو القاسم
بلغة البربر ناشئة اخرج الحاكم في مستدركه عن ابن مسعود قال
ناشئة الليل قيام الليل بالحبشية اخرج البيهقي عن ابن عباس
مثله ن حكى الكرماني في العجائب عن الضحاك انه فارسي
اصله انون و معناه اصنع ما شئت هدنا قيل معناه تبنا بالعبرانية حكاه
شيذلة و غيره هود قال الجواليقي الهود اليهود اعجمي هون اخرج
ابن ابي حاتم عن ميمون بن مهران في قوله يمشون على الارض
هونا قال حكما بالسريانية و اخرج عن الضحاك مثله و اخرج عن
ابي عمران الجوني انه بالعبرانية هيت لك اخرج ابن ابي حاتم
عن ابن عباس قال هيت لك هلم لك بالقبطية و قال الحسن
هي بالسريانية كذلك اخرجه ابن جرير و قال عكرمة هي بالحورانية
كذلك اخرجه ابو الشيخ و قال ابو زيد الانصاري هي بالعبرانية
و اصلها هيتلج اي تعاله وراء قيل معناه امام بالنبطية حكاه شيذلة
و ابو القاسم وردة ذكر الجواليقي انها غير عربية وزر قال ابو القاسم
هو الجبل و الملجأ بالنبطية ياقوت ذكر الجواليقي والثعالبي و آخرون
انه فارسي يحور اخرج ابن ابي حاتم عن داؤد بن هند في قوله
انه ظن ان لن يحور قال بلغة الحبشية يرجع و اخرج مثله عن عكرمة
وتقدم في اسئلة نافع بن الازرق عن ابن عباس يس اخرج ابن مردوية

في فقه اللغة انه بالرومية اثنتا عشرة الف اوقية و قال الخليل زعموا انه بالسريانية ملء جلد ثور من ذهب او فضة قال بعضهم انه بلغة بربر الف مثقال و قال ابن قتيبة قيل انه ثمانية آلاف مثقال بلسان اهل افريقية القيوم قال الواسطي هو الذي لا ينام بالسريانية كافور ذكر الجواليقي و غيره انه فارسي كفر قال ابن الجوزي كفر عنا معناه امح عنا بالنبطية و اخرج ابن ابي حاتم عن ابي عمران الجوني في قوله كفر عنهم سيئاتهم قال بالعبرانية محي عنهم كفلين اخرج ابن ابي حاتم عن ابي موسى الاشعري قال كفلين ضعفين بالحبشية كنز ذكر الجواليقي انه فارسي معرب كورت اخرج ابن جرير عن سعيد بن جبير قال كورت غورت وهي بالفارسية لينة فى الارشاد للواسطي هي النخلة قال الكلبي لا اعلمها الا بلسان يهود يثرب متكأ اخرج ابن ابي حاتم عن سلمة بن تمام الشقري قال متكأ بكلام الحبش يسمون الترنج متكأ مجوس ذكر الجواليقي انه اعجمي مرجان حكى الجواليقي عن بعض اهل اللغة انه اعجمي مسك ذكر الثعالبي انه فارسي مشكاة اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد قال المشكاة الكوة بلغة الحبشة مقاليد اخرج الفريابي عن مجاهد قال مقاليد مفاتيح بالفارسية و قال ابن دريد و الجواليقي الا قليد و المقليد المفتاح فارسي معرب مرقوم قال الواسطي في قوله كتاب مرقوم اي مكتوب بلسان العبرية مزجاة قال الواسطي مزجاة قليلة بلسان العجم و قيل بلسان القبط ملكوت اخرج بن ابي حاتم عن عكرمة في قوله ملكوت قال هو الملك ولكنه بكلام النبطية ملكوتا اخرجه ابو الشيخ عن ابن

ابو الشيخ عن سعيد ابن جبير قال بالهندية طور اخرج الفريابي عن مجاهد قال الطور الجبل بالسريانية و اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك انه بالنبطية طوى في العجائب للكرماني قيل هو معرب معناه ليلا و قيل هو رجل بالعبرانية عبدت قال ابو القاسم في قوله عبدت بني اسرائيل معناه قتلت بلغة النبط عدن اخرج ابن جرير عن ابن عباس انه سأل كعبا عن قوله جنات عدن قال جنات كروم و اعناب بالسريانية و في تفسير جويبر انه بالرومية العرم اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد قال العرم بالحبشة و هي المسناة التي تجتمع فيها الماء ثم ينبثق غساق قال الجواليقي و الواسطي هو البارد المنتن بلسان الترك و اخرج ابن جرير عن عبد الله بن بريدة قال الغساق المنتن و هو بالطحاوية غيض قال ابو القاسم غيض الماء نقص بلغة الحبشة فردوس اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد قال الفردوس بستان بالرومية و اخرج عن السدي قال الكرم بالنبطية و اصله فرداسا قوم قال الواسطي هو الحنطة بالعبرية قراطيس قال الجواليقي يقال ان القرطاس اصله غير عربي قسط اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد قال القسط العدل بالرومية قسطاس اخرج الفريابي عن مجاهد قال القسطاس العدل بالرومية اخرج ابن ابي حاتم عن سعيد بن جبير قال القسطاس بلغة الروم الميزان قسورة اخرج ابن جرير عن ابن عباس قال الاسد يقال له بالحبشية قسورة قطنا قال ابو القاسم معناه كتابنا بالنبطية قفل حكى الجواليقي عن بعضهم انه فارسي معرب قمل قال الواسطي هو الدبا بلسان العبرية و السريانية قال ابو عمرو و لا اعرفه في لغة احد من العرب قنطار ذكر الثعالبي

حكى الجواليقي انه عجمي سندس قال الجواليقي هو رقيق الديباج بالفارسية و قال الليث لم يختلف اهل اللغة و المفسرون في انه معرب و قال شيذلة هو بالهندية سيدها قال الواسطي في قوله والفيا سيدها لدا الباب اي زوجها بلسان القبط قال ابو عمرو و لا اعرفها في لغة العرب سينين اخرج ابن ابي حاتم و ابن جرير عن عكرمة قال سينين الحسن بلسان الحبشة سيناء اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك قال سيناء بالنبطية الحسن شطر اخرج ابن ابي حاتم عن رفيع في قوله شطر المسجد تلقاء بلسان الحبش شهر قال الجواليقي ذكر بعض اهل اللغة انه بالسريانية الصراط حكى النقاش و ابن الجوزي انه الطريق بلغة الروم ثم رأيته في كتاب الزينة لابي حاتم صرهن اخرج ابن جرير عن ابن عباس في قوله فصرهن وقال هي نبطية فشققهن و اخرج مثله عن الضحاك و اخرج ابن المنذر عن وهب بن منبه قال ما من اللغة شيء الا منها في القرآن شيء قيل و ما فيه من الرومية قال فصرهن يقول قطعهن صلوات قال الجواليقي بالعبرانية كنائس اليهود واصلها صلوتا و اخرج ابن ابي حاتم نحوه عن الضحاك طه اخرج الحاكم في المستدرك من طريق عكرمة عن ابن عباس في قوله طه قال هو كقولك يا محمد بلسان الحبش و اخرج ابن ابي حاتم من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس قال طه بالنبطية و اخرج عن سعيد بن جبير قال طه يا رجل بالنبطية و اخرج عن عكرمة قال طه يا رجل بلسان الحبشة الطغوت هو الكاهن بالحبشية طفقا قال بعضهم معناه قصدا بالرومية حكاه شيذلة طوبى اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال طوبى اسم الجنة بالحبشية و اخرج

ربيون ذكر ابو حاتم احمد ابن حمدان اللغوي في كتاب الزينة انها سريانية الرحمن ذهب المبرد و ثعلب الى انه عبراني و اصله بالخاء المعجمة الرس في العجائب للكرماني انه عجمي ومعناه البئر الرقيم قيل انه اللوح بالرومية حكاه شيذلة و قال ابو القاسم هو الكتاب بها وقال الواسطي هو الدواة بها رمز عده ابن الجوزي في فنون الافنان من المعرب و قال الواسطي هو تحريك الشفتين بالعبرية رهوا قال ابو القاسم في قوله و اترك البحر رهوا اي سهلا دمنا بلغة النبط وقال الواسطي اي ساكنا بالسريانية الروم قال الجواليقي هو اعجمي اسم لهذا الجيل من الناس زنجبيل ذكر الجواليقي و الثعالبي انه فارسي سجدا قال الواسطي في قوله و ادخلوا الباب سجدا اي مقنعي الرؤس بالسريانية السجل اخرج ابن مردويه طريق ابى الجوزا عن ابن عباس قال السجل بلغة الحبشة الرجل و فى المحتسب لابن جني السجل الكتاب قال قوم هو فارسي معرب سجيل اخرج الفريابي عن مجاهد قال سجيل بالفارسية اولها حجارة و آخرها طين سجين ذكر ابو حاتم في كتاب الزينة انه غير عربي سرادق قال الجواليقي فارسي معرب و اصله سرادر و هو الدهليز و قال غيره الصواب انه بالفارسية سرابرده اي ستر الدار سري اخرج ابن ابي حاتم عن مجاهد في قوله سريا قال نهرا بالسريانية و عن سعيد بن جبير بالنبطية وحكى شيذلة انه باليونانية سفرة اخرج بن ابي حاتم من طريق ابن جريج عن ابن عباس في قوله بايدي سفرة قال بالنبطية القرا سقر ذكر الجواليقي انها عجمية سكر اخرج ابن مردوية من طريق العوفي عن عباس قال السكر بلسان الحبشة الخل سلسبيل

بالعبرانية بيع قال الجواليقي في كتاب المعرب البيعة و الكنيسة جعلهما بعض العلماء فارسيين معربين تنور ذكر الجواليقي والثعالبي انه فارسي معرب تقبير اخرج ابن ابي حاتم عن سعيد بن جبير في قوله و ليتبروا ما علوا تتبيرا قال تبره بالنبطية تحت قال ابو القاسم في لغات القرآن في قوله فناداها من تحتها اي بطنها بالنبطية و نقل الكرماني فى العجائب مثله عن مورج الجبت اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس قال الجبت اسم الشيطان بالحبشية و اخرج عبيد بن حميد عن عكرمة قال الجبت بلسان الحبشة شيطان و اخرج ابن جرير عن سعيد بن جبير قال الجبت الساحر بلسان الحبشة جهنم قيل عجمية و قيل فارسية و قيل عبرانية اصلها كهنام حرم اخرج ابن ابي حاتم عن عكرمة قال و حرم وجب بالحبشية حصب اخرج ابن ابي حاتم عن ابن عباس في قوله حصب جنهم قال حطب جهنم بالزنجية حطة قيل معناه قولوا صوابا بلغتهم حواريون اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك قال الحواريون الغسالون بالنبطية و اصله هواري حوب تقدم في مسائل نافع بن الازرق عن ابن عباس انه قال حوبا اثما بلغة الحبشة دارست معناه قارأت بلغة اليهود دري معناه المضي بالحبشة حكاه شيذلة و ابو القاسم دينار ذكر الجواليقي وغيره انه فارسي راعنا اخرج ابو نعيم في دلائل النبوة عن ابن عباس قال راعنا سب بلسان اليهود ربانيون قال الجواليقي قال ابو عبيدة العرب لا تعرف الربانيين و انما عرفها الفقهاء و اهل العلم قال و احسب الكلمة ليست بعربية و انما هي عبرانية او سريانية و جزم ابو القاسم بانها سريانية

ابو الليث في تفسيره انها بلغتهم كالقبائل بلغة العرب استبرق اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك انه الديباج الغليظ بلغة العجم اسفار قال الواسطي فى الارشاد هي الكتب بالسريانية و اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك قال هي الكتب بالنبطية اصري قال ابو القاسم في لغات القرآن معناه عهدي بالنبطية اكواب حكى ابن الجوزي انها الاكواز بالنبطية و اخرج ابن جرير عن الضحاك انها بالنبطية جرار ليس لها عرى ال قال ابن جني ذكروا انه اسم الله تعالى بالنبطية اليم حكى ابن الجوزي انه الموجع بالزنجية و قال شيذلة بالعبرانية آناه نضجه بلسان اهل العرب ذكره شيذلة و قال ابو القاسم بلغة البربر وقال في قوله حميم آن هو الذي انتهى حره بها و في قوله من عين آنية اي حارة بها اواه اخرج ابو الشيخ بن حبان من طريق عكرمة عن ابن عباس قال الاواه الموقن بلسان الحبشة واخرج ابن ابي حاتم مثله عن مجاهد وعكرمة و اخرج عن عمرو بن شرحبيل قال الرحيم بلسان الحبشة وقال الواسطي الاواه الدعاء بالعبرية اواب اخرج ابن ابي حاتم عن عمرو بن شرحبيل قال الاواب المسبح بلسان الحبشة و اخرج ابن جرير عنه في قوله اوبي معه قال سبحي بلسان الحبشة الاولى و الآخرة قال شيذلة الجاهلية الاولى اي الآخرة فى الملة الآخرة اي الاولى بالقبطية و القبط يسمون الآخرة الاولى و الاولى الآخرة و حكاه الزركشي فى البرهان بطائنها قال شيذلة في قوله بطأينها من استبرق اي ظواهرها بالقبطية و حكاه الزركشي بعير اخرج الغريابي عن مجاهد في قوله كيل بعير اى كيل حمار و عن مقاتل ان البعير كلما يحمل عليه

بلفظ تطويل فعلم بهذا ان لفظ استبرق يجب على كل فصيح ان يتكلم به في موضعه و لا يجد ما يقوم مقامه و اي فصاحة ابلغ من ان لا يوجد غيره مثله انتهى و قال ابو عبيد القاسم بن سلام بعد ان حكى القول بالوقوع عن الفقهاء و المنع عن اهل العربية و الصواب عندي مذهب فيه تصديق القولين جميعا و ذلك ان هذه الحروف اصولها اعجمية كما قال الفقهاء لكنها وقعت للعرب فعربتها بالسنتها و حولتها عن الفاظ العجم الى الفاظها فصارت عربية ثم نزل القرآن و قد اختلطت هذه الحروف بكلام العرب فمن قال انها عربية فهو صادق و من قال عجمية فصادق و مال الى هذا القول الجواليقي و ابن الجزري و آخرون و هذا سرد الالفاظ الواردة في القرآن من ذلك مرتبة على حروف المعجم اباريق حكى الثعالبي في فقه اللغة انها فارسية و قال الجواليقي الابريق فارسي معرب و معناه طريق الماء اوصب الماء على هيئة آب قال بعضهم هو الحشيش بلغة اهل العرب حكاه شيذلة ابلعي اخرج ابن ابي حاتم عن وهب بن منبه في قوله ابلعي ماءك قال بالحبشية ازدردية و اخرج ابو الشيخ من طريق جعفر بن محمد عن ابيه قال اشربي بلغة الهند اخلد قال الواسطي في الارشاد اخلد الى الارض ركن بالعبرية الارائك حكى ابن الجوزي في فنون الافنان انها السرر بالحبشية آزر عد في المعرب على قول من قال انه ليس بعلم لابي ابراهيم و لا للصنم و قال ابن ابي حاتم ذكر عن معتمر بن سليمان قال سمعت ابي يقرأ و اذ قال ابراهيم لابيه آذر يعني بالرفع قال بلغني انها اعوج و انها اشد كلمة قالها ابراهيم لابيه و قال بعضهم هي بلغتهم يا مخطئ اسباط حكى

لا يكون حثه على وجه الحكمة فالوعد و الوعيد نظرا الى الفصاحة واجب ثم ان الوعد بما يرغب فيه العقلاء و ذلك منحصر في امور الاماكن الطيبة ثم المآكل الشهية ثم المشارب الهنية ثم الملابس الرفيعة ثم المناكح اللذيذة ثم ما بعده فيما يختلف فيه الطباع فاذن ذكر الاماكن الطيبة و الوعد به لازم عند الفصيح و لو تركه لقال من امر بالعبادة و وعد عليها بالاكل و الشرب ان الاكل و الشرب لا التذ به اذا كنت في حبس او موضع كريه فاذا ذكر الله الجنة و مساكن طيبة فيها فكان ينبغي ان يذكر من الملابس ما هو ارفعها و ارفع الملابس فى الدنيا الحرير و اما الذهب فليس مما ينسج منه ثوب ثم ان الثوب الذي من غير الحرير لا يعتبر فيه الوزن و الثقل و ربما يكون الصفيق الخفيف ارفع من الثقيل الوزن و اما الحرير فكلما كان ثوبه اثقل كان ارفع فحينئذ وجب على الفصيح ان يذكر الاثقل الاثخن و لا يتركه فى الوعد لئلا يقصر فى الحث و الدعاء ثم هٰذا الواجب الذكر اما ان يذكر بلفظ واحد موضوع له صريح او لا يذكر بمثل هٰذا و لا شك ان الذكر باللفظ الواحد الصريح اولى لانه اوجز و اظهر فى الافادة و ذلك استبرق فان اراد الفصيح ان يترك هٰذا اللفظ و يأتي بلفظ آخر لم يمكنه لان ما يقوم مقامه اما لفظ واحد او الفاظ متعددة و لا يجد العربي لفظا واحدا يدل عليه لان الثياب من الحرير عرفها العرب من الفرس و لم يكن لهم بها عهد و لا وضع فى اللغة العربية للديباج الثخين اسم و انما عربوا ما سمعوا من العجم و استغنوا به عن الوضع لقلة وجوده عندهم و نزرة تلفظهم به و اما ان ذكره بلفظين فاكثر فانه قد يكون اخل بالبلاغة لان ذكر لفظين لمعنى يمكن ذكره

باتفاق النحاة على ان منع صرف نحو ابراهيم للعلمية و العجمة ورد هذا الاستدلال بان الاعلام ليست محل خلاف فالكلام في غيرها فوجه بانه اذا اتفق على وقوع الاعلام فلا مانع من وقوع الاجناس و اقوى ما رأيته للوقوع و هو اختيارى ما اخرجه ابن جرير بسند صحيح عن ابي ميسرة التابعي الجليل قال فى القرآن من كل لسان و روي مثله عن سعيد بن جبير و وهب بن منبه فهذه اشارة الى ان حكمة وقوع هذه الالفاظ فى القرآن انه حوى علوم الاولين و الآخرين وبنا كل شيء فلابد ان تقع فيه الاشارة الى انواع اللغات و الالسن لتتم احاطته بكل شيء فاختير له من كل لغة اعذبها و اخفها و اكثرها استعمالا للعرب ثم رأيت ابن النقيب صرح بذلك فقال من خصائص القرآن على سائر كتب الله المنزلة انها نزلت بلغة القوم الذين انزلت عليهم لم ينزل فيها شيء بلغة غيرهم و القرآن احتوى على جميع لغات العرب و انزل فيه بلغات غيرهم من الروم و الفرس و الحبشة شيء كثير انتهى و ايضا فالنبي صلى الله عليه و سلم مرسل الى كل امة و قد قال الله تعالى و ما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه فلابد و ان يكون فى الكتاب المبعوث به من لسان كل قوم و ان كان اصله بلغة قومه هو و قد رأيت الحوبي ذكر لوقوع المعرب فى القرآن فائدة اخرى فقال ان قيل ان استبرق ليس بعربي و غير العربي من الالفاظ دون العربي فى الفصاحة و البلاغة فنقول لو اجتمع فصحاء العالم و ارادوا ان يتركوا هذه اللفظة و يأتوا بلفظ يقوم مقامها فى الفصاحة لعجزوا عن ذلك و ذلك لان الله تعالى اذا حث عباده على الطاعة فان لم يرغبهم بالوعد الجميل و يخوفهم بالعذاب الوبيل

لقالوا لو لا فصلت آياته أاعجمي و عربي و قد شدد الشافعي النكير على القائل بذلك و قال ابو عبيدة انما انزل القرآن بلسان عربي مبين فمن زعم ان فيه غير العربية فقد اعظم القول و من زعم ان كذا بالنبطية فقد اكبر القول و قال ابن فارس لو كان فيه من لغة غير العرب شيء لتوهم متوهم ان العرب انما عجزت عن الاتيان بمثله لانه اتى بلغات لا يعرفونها و قال ابن جرير ما ورد عن ابن عباس وغيره من تفسير الفاظ من القرآن انها بالفارسية او الحبشية او النبطية اونحو ذلك انما اتفق فيها توارد اللغات فتكلمت بها العرب و الفرس والحبشة بلفظ واحد و قال غيره بل كان للعرب العاربة التي نزل القرآن بلغتهم بعض مخالطة لساير الالسنة في اسفارلهم فعلقت من لغاتهم الفاظا غيرت بعضها بالنقص من حروفها و استعملتها في اشعارها و محاوراتها حتى جرت مجرى العربي الفصيح و وقع بها البيان و على هذا الحد نزل بها القرآن و قال آخرون كل هذه الالفاظ عربية صرفة و لكن لغة العرب متسعة جدا و لا يبعد ان تخفى على الاكابر الجلة و قد خفي على ابن عباس معنى فاطر و فاتح قال الشافعي فى الرسالة لا يحيط با للغة الانبي و قال ابو المعالي عزيزي ابن عبد الملك انما وجدت هذه الالفاظ في لغة العرب لانها اوسع اللغات و اكثرها الفاظا و يجوز ان يكونوا سبقوا الى هذه الالفاظ و ذهب آخرون الى وقوعه فيه و اجابوا عن قوله قرآنا عربيا بان الكلمات اليسيرة بغير العربية لا تخرجه عن كونه عربيا فالقصيدة الفارسية لا تخرج عنها بلفظة فيها عربية و عن قوله أاعجمي و عربي بان المعنى من السياق اكلام اعجمي و مخاطب عربي و استدلوا

معوية الختار الغدار و بلغة عامر بن صعصعة الحفدة الخدم و بلغة ثقيف العول الميل و بلغة عك الصور القرن وقال ابن عبد البر فى التمهيد قول من قال نزل القرآن بلغة قريش معناه عندي الاغلب لان غير لغة قريش موجودة في جميع القرا آت من تحقيق الهمزة ونحوها و قريش لا تهمز و قال الشيخ جمال الدين بن مالك انزل الله القرآن بلغة الحجازيين الا قليلا فانه نزل بلغة التميميين كالادغام في يشاق الله و في من يرتد منكم عن دينه فان ادغام المجزوم لغة تميم و لهذا قل و الفك لغة الحجاز و لهذا كثر نحو و ليملل يحببكم الله يمددكم و اشدد به ازري و من يحلل عليه غضبى قال و قد اجمع القراء على نصب الا اتباع الظن لان لغة الحجازيين التزام النصب فى المنقطع كما اجمعوا على نصب ما هذا بشر الان لغتهم اعمال ما و زعم الزمخشري في قوله قل لا يعلم من فى السموات و الارض الغيب الا الله انه استثناء منقطع جاء على لغة بني تميم فائدة قال الواسطي ليس فى القرآن حرف غريب من لغة قريش غير ثلاثة احرف لان كلام قريش سهل لين واضح و كلام العرب وحشي غريب فليس فى القرآن الا ثلثة احرف غريبة فسينغضون و هو تحريك الرأس مقيتا مقتدرا فشرد بهم سمع

النوع الثامن والثلاثون

فيما وقع فيه بغير لغة العرب فقد افردت في هذا النوع كتابا سميته المهذب فيما وقع فى القرآن من المعرب و انا الخص هنا فوائده فاقول اختلف الائمة في وقوع المعرب فى القرآن فالاكثرون و منهم الامام الشافعي و ابن جرير و ابو عبيدة و القاضي ابوبكر و ابن فارس على عدم وقوعه فيه لقوله تعالى قرآنا عربيا و قوله و لو جعلناه قرآنا اعجميا

تخللوا الازفة و بلغة بني حنيفة العقود العهود الجناح اليد و الرهب الفزع و بلغة اليمامة حصرت ضاقت و بلغة سبا تميلوا ميلا عظيما تخطئوا خطأ بينا تبرنا اهلكنا و بلغة سليم نكص رجع و بلغة عمارة الصاعقة الموت و بلغة طي ينعق يصيح رغد خصب سفه نفسه خسرها يسن يا انسان و بلغة خزاعة افضوا انفروا الافضاء الجماع و بلغة عمان خبا لا غيا نفقا سربا حيث اصاب اراد و بلغة تميم امد نسيان بغيا حسدا و بلغة انما رطائره عمله اغطش اظلم و بلغة الاشعريين لاحتنكن لاستأصلن تارة مرة اشمأزت مالت و نفرت و بلغة الاوس لينة النخل و بلغة الخزرج ينفضوا يذهبوا وبلغة مدين فافرق فاقض انتهى ما ذكره ابوالقاسم ملخصا و قال ابو بكر الواسطي في كتابه الارشاد فى القرا آت العشر فى القرآن من اللغات خمسون لغة لغة قريش و هذيل و كنانة و خثعم و الخزرج و اشعر و نمير و قيس غيلان و جرهم و اليمن و ازد شنوة و كنده و تميم و حمير و مدين ولخم و سعد العشيرة و حضر موت و سدوس و العمالقة و انمار و غسان و مدحج و خزاعة و غطفان و سبا و عمان و بني حنيفة وتغلب وطي و عامر بن صعصعة و اوس و مزينة و ثقيف و جذام و بلى وعذرة و هوازن والنمر و اليمامه و من غير العربية الفرس و الروم و النبط و الحبشة و البربر و السريانية و العبرانية و القبط ثم ذكر في امثلة ذلك غالب ما تقدم عن ابى القاسم و زاد الرجز العذاب بلغة بلى طائف من الشيطان نخسه بلغة ثقيف الاحقاف الرمال بلغة تغلب و قال ابن الجوزي في فنون الافنان فى القرآن بلغة همدان الريحان الرزق و العينا البيضا و العبقري الطنافس و بلغة نضر بن

المسرف و بلغة حمير تفشلا تجنبا عثرا طلع سفاهة جنون زيلنا ميزنا
مرجوا حقيرا السقاية الاناء مسنون منتن امام كتاب ينغضون يحركون
حسبانا بردا من الكبر عتيا نحو لا مآرب حاجات خرجا جعلا غراما
بلاء الصرح البيت انكر الاصوات اقبحها يتركم ينقصكم مدينين
محاسبين رابية شديدة وبيلا شديدا بجبار بمسلط مرض زنا القطر
النحاس محشورة مجموعة معكوفا محبوسا و بلغة جرهم فباؤا استوجبوا
شقاق ضلال خيرا ما لا كداب كاشباه تعولوا تميلوا يغنوا يتمتعوا شرد
نكل اراذلنا سفلتنا عصيب شديد لفيفا جميعا محسورا منقطعا
حدب جانب الخلال السحاب الودق المطر شرذمة عصابة ريع طريق
ينسلون يخرجون شوبا مزاجا الحبك الطرائق سور الحايط و بلغة
ازد شنوة لا شية لا وضح العضل الحبس امة سنين الرس البئر
كاظمين مكروبين غسلين الحار الذي تناهى حره لواحة حراقة
و بلغة مدحج رفث جماع مقيتا مقتدرا بظاهر من القول بكذب
الوصيد الفناء حقبا دهرا الخرطوم الانف و بلغة خثعم تسيمون ترعون
مريج منتشر صغت مالت هلوعا ضجورا شططا كذبا و بلغة قيس
غيلان نحلة فريضة حرج ضيق لخاسرون مضيعون تفندون تستهزؤن
صياصيهم حصونهم تحبرون تنعمون رجيم ملعون يلتكم ينقصكم و بلغة
سعد العشيرة حفدة اختان كل عيال و بلغة كندة فجاجا طرقا بست
فتت تبتئس تحزن و بلغة عذره اخسؤا اخزوا و بلغة حضرموت
ربيون رجال دمرنا اهلكنا لغوب اعيا منساته عصاه و بلغة غسان طفقا
عمدا بئس شديد سيء بهم كرههم و بلغة مزينة لا تغلوا لا تزيدوا و بلغة
لخم املاق جوع و لتعلن تقهرن و بلغة جذام فجاسوا خلال الديار

مصحف عثمان رض عن مجاهد قال الصواع الطِر جهالة بلغة حمير و اخرج فيه عن ابي صالح في قوله افلم ييأس الذين آمنوا قال افلم يعلم بلغة هوازن و قال الفرا قال الكلبي بلغة النخع و في مسائل نافع بن الازرق لا بن عباس يفتنكم يضلكم بلغة هوازن وفيها بور هلكى بلغة عمان و فيها فنقبوا هربوا بلغة اليمن و فيها لا يألتكم لا ينقصكم بلغة بني عبس و فيها مراغما منفسحا بلغة هذيل و اخرج سعيد بن منصور في سننه عن عمرو بن شرحبيل في قوله سيل العرم قال المسناة بلحن اهل اليمن و اخرج جويبر في تفسيره عن ابن عباس في قوله فى الكتاب مسطورا قال مكتوبا و هي بلغة حميرية يسمون الكتاب اسطورا و قال ابو القاسم فى الكتاب الذي الفه في هذا النوع فى القرآن بلغة كنانة السفهاء الجهال خاسئين صاغرين شطر تلقاء لا خلاق لا نصيب و جعلكم ملوكا احرارا قبلا عيانا معجزين سابقين يعزب يغيب تركنوا تميلوا فجوة ناحية موئلا ملجأ مبلسون آيسون دحورا طردا الخراصون الكذابون اسفارا كتبا اقتت جمعت كنود كفور للنعم و بلغة هذيل الرجز العذاب شروا باعوا عزموا الطلاق حققوا صلدا نقيا آناء الليل ساعاته نورهم وجههم مدرارا متتابعا فرقانا مخرجا حرض حصن عيلة فاقة و ليجة بطانة انفروا اغزوا السائحون الصائمون العذت الاثم غمة شبهة ببدنك بدرعك دلوك الشمس زوالها شاكلته ناحيته رجما ظنا ملتحدا ملجأ يرجوا يخاف هضما نقصا هامدة مغبرة و اقصد في مشيك اسرع الاجداث القبور ثاقب مضي بالهم حالهم يهجعون ينامون ذنوبا عذابا دسرا لمسامير تفاوت عيب ارجائها نواحيها اطوارا الوانا بردا نوما واجفة خائفة مسغبة مجاعة المبذر

بغير لغة الحجاز تقدم الخلاف في ذلك في النوع السادس عشر و نوردهنا امثلة ذلك و قد رأيت فيه تأليفا مفردا اخرج ابو عبيد من طريق عكرمة عن ابن عباس رض في قوله تعالى و انتم سامدون قال الغناء و هي يمانية و اخرج ابن ابي حاتم عن عكرمة قال هي بالحميرية و اخرج ابو عبيد عن الحسن قال كنا لا ندري ما الاراءك حتى لقينا رجل من اهل اليمن فاخبرنا ان الاريكة عندهم الحجلة فيها السرير و اخرج عن الضحاك في قوله تعالى و لو القى معاذيره قال ستوره بلغة اهل اليمن و اخرج ابن ابي حاتم عن الضحاك في قوله لا وزر قال لا حبل و هي بلغة اهل اليمن و اخرج عن عكرمة في قوله و زوجناهم بحور قال هي لغة يمانية و ذلك ان اهل اليمن يقولون زوجنا فلانا بفلانة قال الراغب في مفرداته لم يجئ في القرآن زوجناهم حورا كما يقال زوجته امرأة تنبيها ان ذلك لا يكون على حسب المتعارف فيما بيننا بالمناكحة و اخرج عن الحسن في قوله لو اردنا ان نتخذ لهوا قال اللهو بلسان اليمن المرأة و اخرج عن محمد بن علي في قوله و نادى ابنه قال هي بلغة طي ابن امرأته قلت و قد قرئ و نادى نوح ابنها و اخرج عن الضحاك في قوله اعصر خمرا قال عنبا بلغة اهل عمان يسمون العنب الخمر و اخرج عن ابن عباس في قوله اتدعون بعلا قال ربا بلغة اهل اليمن و اخرج عن قتادة قال بعلا ربا بلغة ازد شنوة و اخرج ابو بكر بن الانباري في كتاب الوقف عن ابن عباس قال الوراء ولد الولد بلغة هذيل و اخرج فيه عن الكلبي قال المرجان صغار اللؤلؤ بلغة اليمن و اخرج في كتاب الرد على من خالف

قال اخبرني عن قوله فيها صر قال برد اما سمعت قول نابغة

لا يبرمون اذا ما الارض جللها صر الشتاء من الانحال كالادم

قال اخبرني عن قوله تبوئ المؤمنين قال توطن المؤمنين اما سمعت قول الاعشي

و ما بوأ الرحمن بيتك منزلا با جياد غزى العباد المحرم

قال اخبرني عن قوله ربيون قال جموع اما سمعت قول حسان

و اذا معشر تجافوا عن القصد املنا عليهم ربيا

قال اخبرني عن قوله مخمصة قال مجاعة اما سمعت قول الاعشي

تبيتون فى الشتا ملئ بطونكم و جاراتكم شعث يبتن خمائصا

قال اخبرني عن قوله وليقترفوا قال ليكتسبوا اما سمعت قول لبيد

و اني لآتي ما اتيت و انني لما اقترفت نفسي علي لراهب

هذا آخر مسائل نافع بن الازرق و قد حذفت منها يسيرا نحو بضعة عشر سؤالا و هي اسئلة مشهورة اخرج الائمة افرادا منها باسانيد مختلفة الى ابن عباس و اخرج ابوبكر بن الانباري في كتاب الوقف و الابتداء منها قطعة و هي المعلم عليها بالحمرة صورة ك قال حدثنا بشر بن انس ثنا محمد بن علي بن الحسن بن شقيق ثنا ابو صالح هدية بن مجاهد ابنأنا مجاهد بن شجاع ابنأنا محمد بن زياد اليشكري عن ميمون بن مهران قال دخل نافع بن الازرق المسجد فذكره و اخرج الطبراني في معجمه الكبير منها قطعة و هي المعلم عليها صورة ط من طريق جويبر عن الضحاك بن مزاحم قال خرج نافع بن الازرق فذكره النوع السابع و الثلثون فيما وقع فيه

و شق ابصارنا كيما نعيش بها  و جاب للسمع اصماخا و آذانا

قال اخبرني عن قوله حبا جما قال كثيرا اما سمعت قول امية

ان تغفر اللّهم تغفر جما  و اي عبد لک لا الما

قال اخبرني عن قوله غاسق قال الظلمة اما سمعت قول زهير

ظلت تجوب يداها و هي لاهية  حتى اذا جنح الاظلام و الغسق

قال اخبرني عن قوله في قلوبهم مرض قال النفاق اما سمعت قول الشاعر

اجامل اقواما حياء و قد ارى  صدورهم تغلي علي مراضها

قال اخبرني عن قوله يعمهون قال يلعبون و يترددون اما سمعت قول الاعشي

اراني قد عمهت و شاب رأسي  و هذا اللعب شين بالكبير

قال اخبرني عن قوله الى بارئكم قال خالقكم اما سمعت قول تبع

شهدت على احمد انه رسول  من الله باري النسم

قال اخبرني عن قوله لا ريب فيه لا شک فيه اما سمعت قول ابن الزبعرى

ليس في الحق يا امامة ريب  انما الريب ما يقول الكذوب

قال اخبرني عن قوله ختم الله على قلوبهم قال طبع عليها اما سمعت قول الاعشي

و صهباء طاف يهود بها  فابرزها و عليها ختم

قال اخبرني عن قوله صفوان قال الحجر الاملس اما سمعت قول اوس بن حجر

على ظهر صفوان كأن متونه  عللن بدهن يزلق المتنزلا

قال اخبرني عن قوله يصهر قال يذاب اما سمعت قول الشاعر

سخنت صهارته فظل عتانه  في سيطل نغيث به يتردد

قال اخبرني عن قوله لتنوُ بالعصبة قال لتثقل اما سمعت قول امرئ القيس

تمشي فتثقلها عجيزتها  مشي الضعيف ينوُ بالرمق

قال اخبرني عن قوله كل بنان قال اطراف الاصابع اما سمعت قول عنترة

فنعم فوارس الهيجاء قومي  اذا علق الاعنة بالبنان

قال اخبرني عن قوله اعصار قال الريح الشديدة اما سمعت قول الشاعر

فله في آثارهن خوار  و حفيف كأنه اعصار

قال اخبرني عن قوله مراغما قال منفسحا بلغة هذيل اما سمعت قول الشاعر

و اترك ارض جهرة ان عندي  وجاء فى المراغم و التعادي

قال اخبرني عن قوله صلدا قال املس اما سمعت قول ابي طالب

و اني لقرم و ابن قرم لهاشم  لآباء صدق مجدهم معقل صلد

قال اخبرني عن قوله اجر غير ممنون قال غير منقوص اما سمعت قول زهير

فضل الجواد على الخيل البطا  فلا تعطى بذلك ممنونا و لا نزقا

قال اخبرني عن قوله جابوا الصخر قال نقبوا الحجارة فى الجبال فاتخذوها بيوتا اما سمعت قول امية

قال اخبرني عن قوله و ابا قال الاب ما تعتلف منه الدواب اما سمعت قول الشاعر

ترى به الاب و اليقطين مختلطا على الشريعة تجري تحتها العرب

قال اخبرني عن قوله لا تواعدوهن سرا قال السر الجماع اما سمعت قول امرئ القيس

الا زعمت بسباسة اليوم انني كبرت و ان لا يحسن السر امثالي

قال اخبرني عن قوله فيه تسيمون قال ترعون اما سمعت قول الاعشي

و مشى القوم بالعماد الى الدرحاء اعيا المسيم اين المساق

قال اخبرني عن قوله ما لكم لا ترجون لله وقارا قال تخشون لله عظمة اما سمعت قول ابي ذويب

اذا لسعته النحل لم يرج لسعها

و خالفها في بيت نوب عوامل

قال اخبرني عن قوله ذا متربة قال ذا حاجة وجهد اما سمعت قول الشاعر

تربت يداك ثم قل نوالها و ترفعت عنك السماء سجالها

قال اخبرني عن قوله مهطعين قال مذعنين خاضعين اما سمعت قول تبع

تعبدني نمر بن سعد و قد درى و نمر بن سعد مدين و مهطع

قال اخبرني عن قوله هل تعلم له سميا قال ولدا اماسمعت قول الشاعر

اما السمي فانت منه مكثر و المال فيه تغتدي و تروح

قال اخبرني عن قوله ختار قال الغدار الظلوم الغشوم اما سمعت قول الشاعر

لقد علمت و استيقنت ذات نفسها

بان لا تخاف الدهر صرمي و لا ختري

قال اخبرني عن قوله عين القطر قال الصفر اما سمعت قول الشاعر

فالقى في مراجل من حديد قدور القطر ليس من البرام

قال اخبرني عن قوله اكل خمط قال الاراك اما سمعت قول الشاعر

ما معزل فرد تراعى بعينها اغن غضيض الطرف من خلل الخمط

قال اخبرني عن قوله اشمأزت قال نفرت اما سمعت قول عمرو بن كلثوم

اذا عض الثقاف بها اشمأزت و ولته عشوزنة زبونا

قال اخبرني عن قوله جدد قال طرائق اما سمعت قول الشاعر

قد غادر النسع في صفحاتها جددا كأنها طرق لاحت على اكم

قال اخبرني عن قوله تعالى اغنى و اقنى قال اغنى من الفقر و اقنى من الغنا فقنع به اما سمعت قول عنترة العبسي

فاقني حياك لا ابالك واعلمي اني امرؤ ساموت ان لم اقتل

قال اخبرني عن قوله لا يألتكم قال لا ينقصكم بلغة بني عبس اما سمعت قول الحطيئة العبسي

ابلغ سراة بني سعد مغلغلة جهد الرسالة لا التا و لا كذبا

حينا يقولون اذا مروا على جدثي ارشده يا رب من عان و قد رشدا

قال اخبرني عن قوله هلوعا قال ضجرا جزوعا اما سمعت قول بشر بن ابي حازم

لا مانعا لليتيم نحلته و لا مكبا بخلقه هلعا

قال اخبرني عن قوله ولات حين مناص قال ليس بحين فرار اما سمعت قول الاعشي

تذكرت ليلى حين لات تذكر و قد نيت منها و المناص بعيد

قال اخبرني عن قوله و دسر قال الدسر الذي يخرز به السفينة اما سمعت قول الشاعر

سفينة نوتي قد احكم صنعها
مشحنة الالواح منسوجة الدسر

قال اخبرني عن قوله ركزا قال حسا اما سمعت قول الشاعر

و قد توجس ركزا مفقر ندس بنباة الصوت ما في سمعه كذب

قال اخبرني عن قوله باسرة قال كالحة اما سمعت قول عبيد بن الابرص

صبحنا تميما غداة النسار شهبا ملمومة باسرة

قال اخبرني عن قوله ضيزى قال جائرة اما سمعت قول امرئ القيس

ضازت بنو اسد بحكمهم اذ يعدلون الراس بالذنب

قال اخبرني عن قوله لم يتسنه قال لم تغيره السنون اما سمعت قول الشاعر

طاب منه الطعم و الريح معا لن تراه متغيرا من اسن

قال اخبرني عن قوله و لا ينزفون قال لا يسكرون اما سمعت قول عبد الله بن رواحه

ثم لا ينزفون عنها و لكن يذهب الهم عنهم و الغليل

قال اخبرني عن قوله كان غراما قال ملازما شديدا كلزوم الغريم الغريم اما سمعت قول بشر بن ابي حازم

و يوم النسار و يوم الجفار كانا عذابا و كانا غراما

قال اخبرني عن قوله و الترائب قال هو موضع القلادة من المرأة اما سمعت قول الشاعر

و الزعفران على ترائبها مشرقا به اللبات و النحر

قال اخبرني عن قوله و كنتم قوما بورا قال هلكى بلغة عمان و هم من اليمن اما سمعت قول الشاعر

فلا تكفروا ما قد صنعنا اليكم و كانوا به فالكفر بور لصانعه

قال اخبرني عن قوله نفشت قال النفش الرعي بالليل اما سمعت قول لبيد

بدلن بعد النفش الرجيفا و بعد طول الخبرة الصريفا

قال اخبرني عن قوله الد الخصام قال الجدل المخاصم فى الباطل اما سمعت قول مهلهل

ان تحت الاحجار حزما و جودا و خصيما الد ذا مغلاق

قال اخبرني عن قوله بعجل حنيذ قال النضيج ما يشوى بالحجارة اما سمعت قول الشاعر

لهم راح و فار المسك فيهم و شاويهم اذا شاؤا حنيذا

قال اخبرني عن قوله من الاجداث قال القبور اما سمعت قول ابن رواحة

قال اخبرني عن قوله اخذا و بيلا قال شديدا ليس له ملجأ اما سمعت قول الشاعر

خزي الحياة و خزي الممات  و كلا اراه طعاما و بيلا

قال اخبرني عن قوله فنقبوا فى البلاد قال هربوا بلغة اليمن اما سمعت قول عدي بن زيد

نقبوا فى البلاد من حذر الموت
و جالوا فى الارض اي مجال

قال اخبرني عن قوله الا همسا قال الوطي الخفي و الكلام الخفي اما سمعت قول الشاعر

فباتوا يدلجون و بات يسرى  بصير بالدجى هاد هموس

قال اخبرني عن قوله مقمحون قال المقمح الشامخ بانفه المنكس رأسه اما سمعت قول الشاعر

و نحن على جوانبها قعود  نغض الطرف كالابل القماح

قال اخبرني عن قوله في امر مريج قال المريج الباطل اما سمعت قول الشاعر

فراعت فانتقدت به حشاها  فخر كأنه خوط مريج

قال اخبرني عن قوله حتما مقضيا قال الحتم الواجب اما سمعت قول امية

عبادك يخطيؤن و انت رب  بكفيك المنايا و الحتوم

قال اخبرني عن قوله و اكواب قال القلال التي لاعرى لها اما سمعت قول الهذلي

فلم ينطق الديك حتى ملأت  كوب الدنان له فاستدارا

قال اخبرني عن قوله ذات الحبك قال ذات طرائق و الخلق الحسن اما سمعت قول زهير بن ابي سلمى

هم يضربون حبك البيض اذ لحقوا
لا ينكصون اذا ما استرحموا رحموا

قال اخبرني عن قوله حرضا قال المدنف الهالك من شدة الوجع اما سمعت قول الشاعر

امن ذكر ليلى ان نأت غربة بها كأنك حم للاطباء محرض

قال اخبرني عن قوله يدع اليتيم قال يدفعه عن حقه اما سمعت قول ابي طالب

يقسم حقا لليتيم و لم يكن يدع لدا ايسارهن الاصاغرا

قال اخبرني عن قوله السماء منفطر به قال متصدع من خوف يوم القيمة اما سمعت قول الشاعر

طباهن حتى اعوض الليل دونها افاطير وسمى رواء خدورها

قال اخبرني عن قوله فهم يوزعون قال يحبس اولهم على آخرهم حتى تنام الطير اما سمعت قول الشاعر

و زعت رعيلها باقب نهد اذا ما القوم شدوا بعد خمس

قال اخبرني عن قوله كلما خبت قال الخبوء الذي يطفى مرة و يسعر اخرى اما سمعت قول الشاعر

و النار تخبؤ عن اذا هم و اضرمها اذا انبردوا سعيرا

قال اخبرني عن قوله كالمهل قال كدردي الزيت اما سمعت قول الشاعر

تباري بها العيس السموم كأنها تبطنت الاقراب من عرق مهلا

قال اخبرني عن قوله لا فارض قال الهرمة اما سمعت قول الشاعر

لعمرك لقد اعطيت ضيفك فارضا يساق اليه ما يقوم على رجل

قال اخبرني عن قوله الخيط الابيض من الخيط الاسود قال بياض النهار من سواد الليل وهو الصبح اذا انفلق اما سمعت قول امية

الخيط الابيض ضوء الصبح منفلق و الخيط الاسود لون الليل مكموم

قال اخبرني عن قوله بئيسما اشتروا به انفسهم قال باعوا نصيبهم من الآخرة بطمع يسير من الدنيا اما سمعت قول الشاعر

يعطى بها ثمنا فيمنعها و يقول صاحبها الاتشري

قال اخبرني عن قوله حسبانا من السماء قال نار من السماء اما سمعت قول حسان

بقية معشر صبت عليهم شآبيب من الحسبان شهب

قال اخبرني عن قوله وعنت الوجوه قال استسلمت و خضعت اما سمعت قول الشاعر

ليبك عليك كل عان بكربة وآل قصى من مقل و ذي وفر

قال اخبرني عن قوله معيشة ضنكا قال الضنك الضيق الشديد اما سمعت قول الشاعر

و الخيل قد لحقت بها في مارق ضنك نواحيه شديد المقدم

قال اخبرني عن قوله من كل فج قال الفج الطريق اما سمعت قول الشاعر

حازوا العيال و سدوا الفجاج باجساد عادلها ايدات

شكرت له يوم العكاظ نواله  و لم اك للمعروف ثم كنودا

قال اخبرني عن قوله فسينغضون اليك رؤسهم قال يحركون رؤسهم استهزاء قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

انغض لي يوم الفخار و قد ترى  خيولا عليها كالاسود ضواريا

قال اخبرني عن قوله يهرعون قال يقبلون اليه بالغضب قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

اتونا يهرعون و هم اسارى  نسوقهم على رغم الانوف

قال اخبرني عن قوله بئس الرفد المرفود قال بيس اللعنة بعد اللعنة قال و هل تعرف ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

لا تقذ فن بركن لا كفاله  و ان تأنفك الا عداً بالرفد

قال اخبرني عن قوله غير تتبيب قال تخسير قال و هل تعرف ذلك قال نعم اما سمعت قول بشر بن ابي حازم

هم جدعوا الانوف فاو عبوها  و هم تركوا بني سعد تبابا

قال اخبرني عن قوله هيت لك قال تهيأت لك قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول اجيحة الانصاري

به احمي المصاف اذا دعاني  اذا ما قيل للابطال هيتا

قال اخبرني عن قوله يوم عصيب قال شديد قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

هم ضربوا قوانس خل حجر  بجنب الرده في يوم عصيب

قال اخبرني عن قوله موصدة قال مطبقة قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

لعمرك ما تفتأ تذكر خالدا  وقد غاله ما غال تبع من قبل

قال اخبرني عن قوله خشية املاق قال مخافة الفقر قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

و اني على الاملاق يا قوم ماجد  اعد لاضيا فى الشواء المصهبا

قال اخبرني عن قوله حدائق قال البساتين قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

بلاد سقاها الله اما سهولها  فقضب ودر مغدق وحدائق

قال اخبرني عن قوله مقيتا قال قادرا مقتدرا قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول اجيحة الانصاري

و ذي ضغن كففت النفس عنه  وكنت على مساءته مقيتا

قال اخبرني عن قوله و لا يؤده قال لا يثقله قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

يعطى الميئين و لا يؤده حملها  محض الضرائب ماجد الاخلاق

قال اخبرني عن قوله سريا قال النهر الصغير قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

سهل الخليقة ماجد ذو نائل  مثل السري تمده الانهار

قال اخبرني عن قوله كأسا دهاقا قال ملأ قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

اتانا عامر يرجو قرانا  فانزعنا له كأسا دهاقا

قال اخبرني عن قوله لكنود قال كفور للنعم وهو الذي يأكل وحده و يمنع رفده و يجيع عبده قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

في ذمة من ابي قابوس منقذة  للخائفين ومن ليست له عضد

قال اخبرني عن قوله في الغابرين قال في الباقين قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عبيد ابن الابرص

ذهبوا و خلفني المخلف فيهم  فكأنني في الغابرين غريب

قال اخبرني عن قوله فلا تأس قال لا تحزن قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امرئ القيس

وقوفا بها صحبي علي مطيهم  يقولون لا تهلك اسا و تجمل

قال اخبرني عن قوله يصدفون قال يعرضون عن الحق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول ابي سفيان

عجبت لحلم الله عنا و قد بدا  له صدفنا عن كل حق منزل

قال اخبرني عن قوله ان تبسل قال ان تحبس قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول زهير

و فارقتك برهن لا فكاك له  يوم الوداع فقلبي مبسل غلقا

قال اخبرني عن قوله فلما افلت قال زالت الشمس عن كبد السماء قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول كعب بن مالك

فتغير القمر المنير لفقده  و الشمس قد كسفت و كادت تأفل

قال اخبرني عن قوله كالصريم قال الذاهب قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

غدوت عليه غدوة فوجدته  قعودا لديه بالصريم عواذله

قال اخبرني عن قوله تفتؤ قال لا تزال قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

ويخضب لحية غدرت وخانت  باحمى من نجيع الجوف آن

قال اخبرني عن قوله سلقوكم بالسنة حداد قال الطعن باللسان قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الاعشي

فيهم الخصب و السماحة و النجدة  فيهم و الخاطب المسلاق

قال اخبرني عن قوله و اكدى قال كدره بمنه قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

اعطى قليلا ثم اكدى بمنه  و من ينشر المعروف فى الناس يحمد

قال اخبرني عن قوله لا وزر قال الوزر الملجأ قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عمرو بن كلثوم

لعمرك ما ان له صخرة  لعمرك ما ان له من وزر .

قال اخبرني عن قوله قضى نحبه قال اجله الذي قدر له قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول لبيد بن ربيعه

الا تسأ لان المرء ما ذا يحاول  انحب فيقضي ام ظلال و باطل

قال اخبرني عن قوله ذو مرة قال ذو شدة في امر الله قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول نابغة بني ذبيان

و هذا قرى  ذي مرة حازم

قال اخبرني عن قوله المعصرات قال السحاب يعصر بعضها بعضا فيخرج الماء من بين السحابتين قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول نابغة

تجريها الارواح من بين شمأل  وبين صباها المعصرات الدوامس

قال اخبرني عن قوله سنشد عضدك قال العضد المعين الناصر قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول نابغة

قال اخبرني عن قوله زنيم قال ولدالزنا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

زنيم تداعته الرجال زيادة  كما زيد في عرض الاديم الاكارع

قال اخبرني عن قوله طرائق قددا قال المنقطعة في كل وجه قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

و لقد قلت و زيد حاسر  يوم ولت خيل زيد قددا

قال اخبرني عن قوله برب الفلق قال الصبح اذا الفلق من ظلمة الليل قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول زهير بن ابي سلمى

الفارج الهم مسد و لا عسا كره  كما يفرج غم الظلمة الفلق

قال اخبرني عن قوله خلاق قال نصيب قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امية بن ابي الصلت

يدعون بالويل فيها لاخلاق لهم  الا سرابيل من قطر و اغلال

قال اخبرني عن قوله كل له قانتون قال مقرون قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عدي بن زيد

قانتا لله يرجو عفوه  يوم لا يكفر عبد ما ادخر

قال اخبرني عن قوله جد ربنا قال عظمة ربنا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امية بن ابي الصلت

لك الحمد و النعماء و الملك ربنا  فلا شيء اعلى منك جدا و امجدا

قال اخبرني عن قوله حميم آن قال الان الذي انتهى طبخه و حره قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول نابغة بني ذبيان

تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول نابغة
بني ذبيان فحسبوه فالفوه كما زعمت  تسعا و تسعين لم تنقص و لم تزد
قال اخبرني عن قوله جنفا قال الجور و الميل فى الوصية قال
و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عدي بن زيد
و امك يا نعمان في اخواتها  تأتين ما يأتينه جنفا
قال اخبرني عن قوله بالبأساء و الضراء قال البأساء الخصب
و الضراء الجدب قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت
قول زيد بن عمرو
ان الاله عزيز واسع حكم  بكفه الضراء و الباساء و النعم
قال اخبرني عن قوله الا رمزا قال الاشارة باليد و الوحي بالراس
قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر
ما فى السماء من الرحمن مرتمز  الا اليه و ما فى الارض من وزر
قال اخبرني عن قول فقد فاز قال سعد و نجا قال و هل تعرف
العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عبد الله بن رواحة
و عسى ان افوز بمت التقى  حجة اتقي بها الفتانا
قال اخبرني عن قوله سواء بيننا و بينكم قال عدل قال و هل
تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر
تلاقينا تقاضينا سواء  ولكن جر عن حال بحال
قال اخبرني عن قوله الفلك المشحون قال السفينة الموقرة
الممتلية قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول
عبيد بن الابرص
شحنا ارضهم بالخيل حتى  تركنا هم اذل من الصراط

خطفته منية فتردى و هو فى الملك يأمل التعميرا

قال اخبرني عن قوله في جنات و نهر قال النهر السعة قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول لبيد بن ربيعه

ملكت بها كفي فانهرت فتقها يرى قائم من دونها ما وراها

قال اخبرني عن قوله وضعها للانام قال الخلق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول لبيد بن ربيعه

فان تسألينا فيم نحن فاننا عصافير من هذا الانام المسخر

يعني المخلوق قال اخبرني عن قوله ان لن يحور قال ان لن يرجع بلغة الحبشة قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

و ما المرء الا كالشهاب و ضوءه يحور رمادا بعد اذ هو ساطع

قال اخبرني عن قوله ذلك ادنى ان لا تعولوا قال اجدر ان لا تميلوا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

انا تبعنا رسول الله و اطرحوا قول النبي و عالوا فى الموازين

قال اخبرني عن قوله و هو مليم قال المسيء المذنب قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امية بن ابي الصلت

برى من الآفات ليس لها باهل و لكن المسيء هو المليم

قال اخبرني عن قوله اذ تحسونهم باذنه قال تقتلونهم قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

و منا الذي لاقى بسيف محمد فحسن به الاعداء عرض العساكر

قال اخبرني عن قوله ما الفينا قال يعني وجدنا قال و هل

و المسنون المصور قال وَ هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول حمزة بن عبد المطلب

اغر كأن البدر سنة وجهه  جلي الغيم عنه ضوءه فتبددا

قال اخبرني عن قوله البائس الفقير قال البائس الذي لا يجد شيئًا من شدة الحال قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول طرفة

يغشا هم البائس المدقع  و الضيف و جار مجاور جنب

قال اخبرني عن قوله ماءا غدقا قال كثيرا جاريا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

تدني كراديس ملتقا حدائقها  كالنبت جادت بها انهارها غدقا

قال اخبرني عن قوله بشهاب قبس قال شعلة من نار يقتبسون منه قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قال طرفة

هم عراني فبت ادفعه  دون سهادي كشعلة القبس

قال اخبرني عن قوله عذاب اليم قال الاليم الوجيع قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

نام من كان خليا من الم  و بقيت الليل طولا لم انم

قال اخبرني عن قوله و قفينا على آثارهم قال اتبعنا على آثار الانبياء اي بعثنا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عدي بن زيد

يوم قفت عيرهم من عيرنا  و احتمال الحي فى الصبح فلق

قال اخبرني عن قوله اذا تردى قال اذا مات و تردى فى النار قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عدي بن زيد

لا يخرجون منها ابدا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول عدي بن زيد

فهل من خالد اما هلكنا و هل بالموت ما للناس عار

قال اخبرني عن قوله و جفان كالجوابي قال كالحياض الواسعة قال و هل العرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول طرفة

كالجوابي لانني منزعة لقرى الاضياف او للمحتضر

قال اخبرني عن قوله فيطمع الذي في قلبه مرض قال الفجور والزنا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الاعشي

حانظ للفرج راض بالتقى ليس ممن قلبه فيه مرض

قال اخبرني عن قوله من طين لازب قال الملتزق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول النابغة

فلا تحسبون الخير لا شر بعده و لا تحسبون الشر ضربة لازب

قال اخبرني عن قوله اندادا قال الاشباه و الامثال قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول لبيد بن ربيعة

احمد الله فلا ند له بيديه الخير ما شاء فعل

قال اخبرني عن قوله لشوبا من حميم قال الخلط الحميم و الغساق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

تلك المكارم لا قعبان من لبن شيبا بماء فعادا بعد ابوالا

قال اخبرني عن قوله عجل لنا قطنا قال القط الجزا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الاعشي

و لا الملك النعمان يوم لقيته بنعمته يعطى القطوط و يطلق

قال اخبرني عن قوله من حمأ مسنون قال الحمأ السواد

قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

يضيء كضوء سراج السليط  لم يجعل الله فيه نحاسا

قال اخبرني عن قوله امشاج قال اختلاط ماء الرجل و ماء المرأة اذا وقع في الرحم قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول ابي ذويب

كأن الريش و الفوقين منه  خلال النصل خالطه مشيج

قال اخبرني عن قوله و فومها قال الحنطة قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول ابي محجن الثقفي

قد كنت احسبني كاغنى واحد  قدم المدينة عن زراعة فوم

قال اخبرني عن قوله و انتم سامدون قال السمود اللهو و الباطل قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول هزيلة بنت بكر وهي تبكي قوم عاد

ليت عاد اقبلوا الحق ولم يبدوا حجودا

قيل قم فانظر اليهم ثم ذرعنك السمودا

قال اخبرني عن قوله لافيها غول قال ليس فيها نتن ولا كراهية كخمر الدنيا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امرئ القيس

رب كاس شربت لا غول فيها  وسقيت النديم منها مزاجا

قال اخبرني عن قوله و القمر اذا اتسق قال اتساقه اجتماعه قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول طرفة

ان لنا قلائصا تعانقا  مستوسقات لو يجدن سائقا

اصله واسقا قال اخبرني عن قوله و هم فيها خالدون قال باقون

كان بني معوية بن بكر  الى الاسلام صائحة تخور

قال اخبرني عن قوله ولا تنيا في ذكري قال لا تضعفا عن امري قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

اني وجدك ما وينت  ولم ازل ابغي الفكاك له بكل سبيل

قال اخبرني عن قوله القانع والمعتر قال القانع الذي يقنع بما اعطى والمعتر الذي يعتر من الابواب قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قال الشاعر

على مكثريهم حق من يعتريهم  وعند المقلين السماحة والبذل

قال اخبرني عن قوله وقصر مشيد قال مشيد بالجص والآجر قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت عدي بن زيد يقول

شاده مرمرا جلله كلسا  فللطير في ذراه وكور

قال اخبرني عن قوله شواظ قال الشواظ اللهب الذي لادخان له قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول امية بن ابي الصلت

يظل يشب كيرا بعد كير  وينفخ ذا يبا لهب الشواظ

قال اخبرني عن قوله قد افلح المؤمنون قال فازوا وسعدوا قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول لبيد بن ربيعه

فاعقلي ان كنت لما تعقلي  ولقد افلح من كان عقل

قال اخبرني عن قوله يؤيد بنصره من يشاء قال يقوي قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول حسان بن ثابت

برجال لستموا امثالهم  ايدوا جبريل نصرا فنزل

قال اخبرني عن قوله ونحاس قال هو الدخان الذي لا لهب فيه

قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت عبد الله بن الزبعري يقول

اذا تاني الشيطان في سنة النوم و من مال ميلة مثبورا

قال اخبرني عن قوله فاجاها المخاض قال الجاها قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت حسان بن ثابت يقول

اذا شددنا شدة صادقة فاجاناكم الى سفح الجبل

قال اخبرني عن قوله و احسن نديا قال النادي المجلس قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

يومان يوم مقامات و انديةٍ و يوم سير الى الاعداء تاويب

قال اخبرني عن قوله اثاثا و ريا قال الاثاث المتاع و الزي من الشراب قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

كان على الحمول غداة ولو من الري الكريم من الاثاث

قال اخبرني عن قوله فيذرها قاعا صفصفا قال القاع الاملس و الصفصف المستوي قال وهل تعرف العرب ذلك قال اما سمعت الشاعر يقول

بملمومة شهباء لو قذفوا بها شماريخ من رضوى اذا عاد صفصفا

قال اخبرني عن قوله و انك لا تظما فيها و لا تضحى قال لا تعرف فيها من شدة حر الشمس قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

رات رجلا اما اذا الشمس عارضت فيضحى و اما بالعشى فيحصر

قال اخبرني عن قوله له خوار قال له صياح قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت قول الشاعر

اذا ما مشت وسط النساء تاودت  كما اهتز غصن ناعم النبت يانع

قال اخبرني عن قوله ورياشا قال الرياش المال قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

فرشني بخير طال ما قد بريتني  وخير الموالى من يريش ولا يبري

قال اخبرني عن قوله لقد خلقنا الانسان في كبد قال في اعتدال واستقامة قال تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت لبيد بن ربيعه و هو يقول

يا عين هلا بكيت اربد اذ  قمنا و قام الخصوم في كبد

قال اخبرني عن قوله يكاد سنا برقه قال السنا الضوء قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم و اما سمعت سفيان بن الحارث يقول

يدعو الى الحق لا يبغي به بدلا  يجلو بضوء سناه داجى الظلم

قال اخبرني عن قوله و حفدة قال ولد الولد و هم الاعوان قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

حفد الولائد حولهن و اسلمت  باكفهن ازمة الاحمال

قال اخبرني عن قوله و حنانا من لدنا قال رحمة من عندنا قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت طرفة بن العبد يقول

ابا منذر افنيت فاستبق بعضنا  حنانيك بعض الشر اهون من بعض

قال اخبرني عن قوله افلم ييأس الذين امنوا قال افلم يعلم بلغة بني مالك قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت مالك بن عوف يقول

لقد يئس الاقوام اني انا ابنه  و ان كنت عن ارض العشيرة نائيا

قال اخبرني عن قوله مثبورا قال ملعونا محبوسا من الخير

بن مكرم المعروف بابن الطستي ثنا ابو سهل السرى ابن سهل الجند سابوري ثنا يحيى بن ابي عبيدة بحر بن قروح المسكى ثنا سعيد بن ابي سعيد ثنا عيسى بن داب عن حميد الاعرج و عبد الله بن ابي بكر بن محمد عن ابيه قال بينما عبد الله ابن عباس جالس بفناء الكعبة قد اكتنفه الناس يسالونه عن تفسير القرآن فقال نافع بن الازرق لنجدة بن عويمر قم بنا الى هذا الذي يجتري على تفسير القرآن بما لا علم له به فقاما اليه فقالا انا نريد ان نسالك عن اشياء من كتاب الله فتفسرها لنا و تاتينا بمصادقة من كلام العرب فان الله انما انزل القرآن بلسان عربي مبين فقال ابن عباس سلاني عما بدا لكما فقال نافع اخبرني عن قول الله تعالى عن اليمين و عن الشمال عزين قال عزين الحلق الرفاق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعتَ عبيد ابن الابرص و هو يقول

فجاؤا يهرعون اليه حتى يكونوا حول منبره عزينا

قال اخبرني عن قوله و ابتغوا اليه الوسيلة قال الوسيلة الحاجة قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت عنترة العبسى و هو يقول

ان الرجال لهم اليك وسيله ان ياخذوك تكحّلى و تخضّبى

قال اخبرني عن قوله شرعة و منهاجاً قال الشرعة الدين و المنهاج الطريق قال و هل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعتَ ابا سفيان بن الحارث بن عبد المطلب و هو يقول

لقد نطق المامون بالصدق و الهدى و بيّن للاسلام دينا و منهجا

قال اخبرني عن قوله اذا اثمر و ينعه قال نضجه و بلاغه قال وهل تعرف العرب ذلك قال نعم اما سمعت الشاعر يقول

الانباري قد جاء عن الصحابة و التابعين كثيراً الاحتجاجُ على غريب القرآن ومشكله بالشعر و انكر جماعة لا علم لهم على النحويين ذلك و قالوا اذا فعلتم ذلك جعلتم الشعر اصلًا للقرآن قالوا و كيف يجوز ان يحتج بالشعر على القرآن و هو مذموم فى القرآن و الحديث قال وليس الامر كما زعموه من انا جعلنا الشعر اصلًا للقرآن بل اردنا تبيين الحرف الغريب من القرآن بالشعر لان الله تعالى قال انا جعلناه قرانا عربيا و قال بلسان عربي مبين و قال ابن عباس رضي الله عنه الشعر ديوان العرب فاذا خفى علينا الحرف من القرآن الذي انزله الله بلغة العرب رجعنا الى ديوانها فالتمسنا معرفة ذلك منه ثم اخرج من طريق عكرمة عن ابن عباس قال اذا سالتموني عن غريب القرآن فالتمسوه فى الشعر فان الشعر ديوان العرب و قال ابو عبيد الله في فضائله ثنا هشيم عن حصين بن عبد الرحمن عن عبيد الله بن عبد الله بن عتبة عن ابن عباس انه كان يسال عن القرآن فينشد فيه الشعر قال ابوعبيد يعنى كان يستشهد به على التفسير قلت قد روينا عن ابن عباس كثيرا من ذلك و ارعب ما رويناه عنه مسايل نافع بن الازرق و قد اخرج بعضها ابن الانباري في كتاب الوقف و الطبراني في معجمة الكبير و قد رايت ان اسوقها هنا بتمامها لتستفاد اخبرني ابو عبد الله محمد بن علي الصالحي بقراتي عليه عن ابي اسحق التنوخي عن القاسم بن عساكر انبأنا ابو نصرمحمد بن هبة الله الشيرازي انبأنا ابوالمظفر محمد بن اسعد العراقي انا ابو علي محمد بن سعيد بن نبهان الكاتب انا ابوعلي بن شاذان ثنا ابوالحسين عبد الصمد بن علي بن محمد

انهضوا الي و لا تنظرون توُخرون حقت سبقت و يعلم مستقرها
يأتيها رزقها حيث كانت منيب المقبل الى طاعة الله و لا يلتفت
لا يتخلف تعثوا تسعوا هيت لك تهيأت لك و كان يقرأها مهموزة
و اعتدت هيأت على العرش السرير هذه سبيلي دعوتي المثلات
ما اصاب القرون الماضية من العذاب الغيب و الشهادة السر و العلانية
شديد المحال شديد المكر و العداوة على تخوف تنقص من اعمالهم
و اوحى ربك الى النحل الهمها و اضل سبيلا ابعد حجة قبيلا عيانا
و ابتغ بين ذلك سبيلا اطلب بين الاعلان و الجهر و بين التخافت
و الخفض طريقا لا جهرا شديدا و لا خفضا لا تسمع اذنيك رطبا جنيا
طريا يفرط يعجل يطغى يعتدي لا تظمأ لا تعطش ولا تضحى لا يصيبك
حر ربوة المكان المرتفع ذات قرار خصب و معين ماء ظاهر امتكم
دينكم تبارك تفاعل من البركة كرة رجعة خاوية سقط اعلاها على
اسفلها فله خير ثواب ييس يياس جددا طرائق صراط الجحيم طريق
النار و قفوهم احبسوهم انهم مسئولون محاسبون مالكم لا تناصرون
تمانعون مستسلمون مستنجدون و هو مليم مسيء مذنب و الغوا
فيه عيبوه فصلت بينت مهطعين مقبلين بست فتتت و لا ينزفون
لا يقيؤن كما يقيء صاحب خمر الدنيا الحدث العظيم الشرك
المهيمن الشاهد العزيز المقتدر على ما يشاء الحكيم المحكم لما اراد
خشب مسندة نخل قيام من فطور تشقق حسير كليل ضعيف
لا ترجون لله وقارا لا تخافون له عظمة جدربنا عظمته اتانا اليقين
الموت يتمطى يختال اترابا في سن واحد ثلاث و ثلاثين سنة متاعالكم
منفعة مرساها منتهاها ممنون منقوص

فصل قال ابو بكر بن

رغدا سعة المعيشة يابسوا يخلطوا انفسهم يظلمون يضرون و قولوا حطة قولوا هذا الامر حق كما قيل لكم الطور ما انبت من الجبال و ما لم ينبت فليس بطور خاسئين ذليلين نكالا عقوبة لما بين يديها من بعدهم و ما خلفها الذين بقوا معهم و موعظة تذكرة بما فتح الله عليكم بما اكرمكم به بروح القدس الاسم الذي كان عيسى يحيي به الموتى قانتون مطيعون القواعد اساس البيت صبغة الله دين الله اتحاجوننا اتخاصموننا ينظرون يؤخرون الد الخصام شديد الخصومة السلم الطاعة كافة جميعا كداب كصنيع بالقسط بالعدل الاكمه الذي يولد و هو اعمى ربانيين علماء فقهاء و لا تهنوا لا تضعفوا و اسمع غير مسمع يقولون اسمع لا سمعت ليا بالسنتهم تحريفا بالكذب الا اناثا موتى و عزرتموهم اعنتموهم لبئس ما قدمت لهم انفسهم قال امرتهم ثم لم تكن فتنتهم حجتهم بمعجزين بمسابقين قوما عمين كفارا بسطة شدة لا تبخسوا لا تظلموا القمل الجراد الذي ليس له اجنحة يعرشون يبنون متبر هالك فخذها بقوة بجد و حزم اصرهم عهدهم و مواثيقهم مرساها منتهاها خذ العفو انفق الفضل و أمر بالعرف بالمعروف و جلت فرقت البكم الخرس فرقانا نصرا بالعدوة الدنيا شاطئ الوادي الا و لا ذمة الال القرابة والذمة العهد انى يؤفكون كيف يكذبون ذلك الدين القضاء عرضا غنيمة الشقة المسير فثبطهم حبسهم ملجأ الحرز فى الجبل او مغارات الاسراب فى الارض المخفية او مدخلا المأوى و العاملين عليها السعاة نسوا الله تركوا طاعة الله فنسيهم تركهم من ثوابه و كرامته بخلاقهم بدينهم المعذرون اهل العذر مخمصة مجاعة غلظة شدة يفتنون يبتلون عزيز شديد ما عنتم ما شق عليكم اقضوا الي

الجنة الانشقاق يحور يبعث يوعون يسرون البروج الودود الحبيب الطارق لقول فصل حق بالهزل الباطل الاعلى غثاء هشيما احوى متغيرا من تزكى من الشرك و ذكر اسم ربه و حد الله فصلى الصلوات الخمس الغاشية و الطامة و الصاخة و الحاقة و القارعة من اسماء يوم القيمة ضريع شجر من نار و نمارق المرافق بمسيطر بجبار الفجر لبالمرصاد يسمع و يرى جما شديدا و انى كيف له البلد النجدين الضلالة والهدى و الشمس طحاها قسمها فالهمها فجورها و تقواها بين الخير و الشر و لايخاف عقباها لا يخاف من احد تابعه الضحى سجى ذهب ماودعك ربك و ما قلى ما تركك و ما ابغضك فانصب فى الدعاء قريش ايلافهم لزومهم شانئك عدوك الصمد السيد الذي كمل في سؤدده الفلق الخلق هذا لفظ ابن عباس رضي الله عنه اخرجه ابن جرير و ابن ابي حاتم في تفسير هما مفرقا فجمعته و هو و ان لم يستوعب غريب القرآن فقد اتى على جملة صالحة منه و هذه الفاظ لم تذكر في هذه الرواية سقتها من نسخة الضحاك عنه قال ابن ابي حاتم حدثنا ابوزرعة حدثنا منجاب بن الحرث حدثنا و قال ابن جرير حدثت عن المنجاب انبأنا بشر بن عمارة عن ابي روق عن الضحاك عن ابن عباس في قوله تعالى الحمد لله قال الشكر لله رب العالمين قال له الخلق كله للمتقين للمؤمنين الذين يتقون الشرك و يعملون بطاعتي و يقيمون الصلوة اتمام الركوع و السجود و التلاوة و الخشوع و الاقبال عليها فيها مرض نفاق عذاب اليم نكال موجع يكذبون يبدلون و يحرفون السفهاء الجهال طغيانهم كفرهم كصيب المطر انداد اشباها التقديس التطهير

غير اولادهم المنافقون قاتلهم الله لعنهم و كل شيء في القرآن قتل فهو لعن و انفقوا تصدقوا الطلاق و من يتق الله يجعل له مخرجا ينجيه من كل كرب في الدنيا و الآخرة تبارك تميز تتفرق فسحقا بعدا لو تدهن فيدهنون لو ترخص لهم فيرخصون زنيم ظلوم اوسطهم اعدلهم يوم يكشف عن ساق هو الامر الشديد المفظع من الهول يوم القيمة مكظوم مغموم مذموم ملوم ليزلقونك ينفدونك الحاقة طغى الماء كثر و اعية حافظة اني ظننت ايقنت غسلين صديد اهل النار سأل ذي المعارج العلو و الفواصل نوح سبلا طرقا فجاجا مختلفة الجن جد ربنا فعله و امره و قدرته فلايخاف بخسا نقصا من حسناته و لا رهقا زيادة في سيئاته المزمل كثيبا مهيلا الرمل السائل و بيلا شديدا يوم عسير شديد المدثر لواحة معرضة القيمة فاذا قرأناه بيناه فاتبع قرآنه اعمل به و التفت الساق بالساق آخر يوم من ايام الدنيا و اول يوم من ايام الآخرة فتلتقى الشدة بالشدة سدى هملا الانسان امشاج مختلفة الالوان مستطيرا فاشيا عبوسا ضيقا قمطريرا طويلا المرسلات كفاتا كنا راوسي جبال شامخات مشرفات فراتا عذبا النباء سراجا وهاجا مضيا المعصرات السحاب ثجاجا منصبا الفافا مجتمعة جزاء وفاقا وافق اعمالهم مفازا متنزها كواعب نواهد الروح ملك من اعظم الملائكة خلقا و قال صوابا لا اله الا الله النازعات الرادفة النفخة الثانية و اجفة خائفة الحافرة الحياة سمكها بناها و اغطش اظلم عبس سفرة كتبة قضبا القت و فاكهة الثمار الرطبة مسفرة مشرقة التكوير كورت اظلمت انكدرت تغيرت عسعس ادبر الانفطار فجرت بعضها في بعض بعثرت بحثت المطففين عليين

يهلكهن الزخرف مقرنين مطيقين معارج الدرج و زخرفا الذهب
وانه لذكر شرف تحبرون تكرمون الدخان رهوا سمتا الجاثية اضله الله
على علم في سابق علمه الاحقاف فيما ان مكناكم لم نمكنكم فيه
القتال آسن متغير الحجرات لا تقدموا بين يدي الله و رسوله لا تقولوا
خلاف الكتاب و السنة و لا تجسسوا هو ان يتبع عورات المؤمن ق
المجيد الكريم مريج مختلف باسقات طوال لبس شك حبل الوريد
عرق العنق والذاريات قتل الخراصون لعن المرتابون في غمرة ساهون
في ضلالتهم يتمادون يفتنون يعذبون يهجعون ينامون صرة صيحة
فصكت لطمت بركنه بقوته بايد بقوة المتين الشديد و الطور ذنوبا
دلوا المسجور المحبوس تمور تحرك يدعون يدفعون فاكهين معجبين
و ما التناهم ما نقصناهم تأثيم كذب ريب المنون الموت المسيطرون
المسلطون النجم ذومرة منظر حسن اغنى و اقنى اعطى و ارضى
الآزفة من اسماء يوم القيمة سامدون لاهون الرحمن النجم ما يبسط
على الارض و الشجر ماينبت على ساق للانام للخلق العصف التبن
و الريحان خضرة الزرع فباي الاء ربكما باي نعمة الله مارج خالص
النار مرج ارسل برزخ حاجز ذو الجلال ذو العظمة و الكبرياء سنفرغ
لكم هذا و عيد من الله لعباده و ليس بالله شغل لا تنفدون لا تخرجون
من سلطاني شواظ لهب النار و نحاس دخان النار جنى ثمار
يطمثهن يدن منهن نضاختان فائضتان رفرف خضر المجالس
الواقعة مترفين منعمين للمقوين المسافرين مدينين محاسبين فروح
راحة الحديد نبرأها نخلقها الممتحنة لا تجعلنا فتنة للذين كفروا
لا تسلطهم علينا فيفتنونا و لا يأتين ببهتان يفترينه لا يلحقن بازواجهن

يصدعون يتفرقون لقمان و لا تصاغر خدك للناس لا تتكبر فتحقر
عباد الله و تعرض عنهم بوجهك اذا كلموك الغرور الشيطان السجدة
نسيناكم تركناكم العذاب الادنى مصائب الدنيا و اسقامها و بلائها
الاحزاب سلقوكم استقبلوكم ترجي تؤخر لنغرينك بهم لنسلطنك
عليهم الامانة الفرائض جهولا غرا بامر الله سبا دابة الارض الارضة
منساته عصاه سيل العرم الشديد خمط الاراك فزع جلى الفتاح
القاضي فلا فوت فلا نجاة و انى لهم التناوش فكيف لهم بالرد
فاطر الكلم الطيب ذكر الله و العمل الصالح اداء الفرائض قطمير
الجلد الذي يكون على ظهر النواة لغوب اعياء يس حسرة ويل
كالعرجون القديم اصل العرق العتيق المشحون الممتلي الاجداث
القبور فاكهون فرحون والصافات فاهدوهم و جهوهم غول صداع بيض
مكنون اللؤلؤ المكنون سواء الجحيم وسط الجحيم الفوا وجدوا و تركنا
عليه فى الآخرين لسان صدق للانبياء كلهم شيعته اهل دينه بلغ معه
السعي العمل تله صرعه فنبذناه القيناه بالعراء بالساحل بفاتنين
مضلين ص ولات حين مناص ليس حين فرار اختلاق تخريص
فليرتقوا فى الاسباب السماء فواق ترداد قطنا العذاب نطفق مسحا
جعل يمسح جسدا شيطانا رخاء حيث اصاب مطيعة له حيث
اراد ضغثا حزمة اولى الايدي القوة و الابصار الفقه فى الدين قاصرات
الطرف عن غير ازواجهن اتراب مستويات غساق الزمهرير ازواج
الوان من العذاب الزمر يكور يحمل الساخرين المخوفين المحسنين
المهتدين عامر ذى الطول السعة و الغنا داب حال تباب خسران
ادعوني وحدوني فصلت فهديناهم بينالهم شورى رواكد و قوفا يوبقهن

حول البيت و تقولون هجرا عن الصراط لناكبون عن الحق عادلون
تسخرون تكذبون كالحون عابسون الغور يرمون المحصنات الحرائر
ماركى ما اهتدى و لا يأتل لا يقسم دينهم حسابهم تستأنسوا تستأذنوا
و لا يبدين زينتهن الا لبعولتهن لا تبدي خلاخيلها و معضديها و نحرها
و شعرها الا لزوجها غير اولى الاربة المغفل الذي لا يشتهى النساء
ان علمتم فيهم خيرا ان علمتم لهم حيلة و أتوهم من مال الله ضعوا
عنهم من مكاتبتهم فتياتكم امائكم البغا الزنا نور السموات هادي
اهل السموات مثل نوره هداه في قلب المؤمن كمشكاة موضع الفتيلة
في بيوت المساجد ترفع تكرم و يذكر فيها اسمه يتلى فيها كتابه
يسبح يصلي بالغد و صلاة الغداة و الآصال صلاة العصر بقيعة ارض
مستوية تحية السلام الفرقان ثبورا ويلا بورا هلكى هباء منثورا الماء
المهراق ساكنا دائما قبضا يسيرا سريعا جعل الليل و النهار خلفة
من فاته شيء من الليل ان يعمله ادركه بالنهار او من النهار ادركه
بالليل و عباد الرحمن المؤمنون هونا بالطاعة و العفاف و التواضع
لولا دعاؤكم ايمانكم الشعراء كالطود كالجبل فكبكبوا جمعوا ريع شرف
لعلكم تخلدون كأنكم خلق الاولين دين الاولين هضيم معيشة فرهين
حاذقين الايكة الغيضة الجبلة الخلق في كل واد يهيمون في كل
لغو يخوضون النمل بورك قدس اوزعني اجعلني يخرج الخبأ يعلم
كل خفية في السماء و الارض طائركم مصائبكم ادارك علمهم غاب
علمهم ردف قرب يوزعون يدفعون داخرين صاغرين جامدة قائمة
اتقن احكم القصص جذوة شهاب سرمدا دائما لتنوء تثقل العنكبوت
و تخلقون تصنعون افكا كذبا الروم ادنى الارض طرف الشام اهون ايسر

خسرانا لغوا باطلا اثاثا مالا ضدا اعوانا تؤزهم ازا تغويهم اغواء نعدلهم
عدا انفاسهم التي يتنفّسون بها في الدنيا و ردا عطاشا عهدا شهادة
ان لا اله الا الله ادا عظيما هدا هد ما ركزا صوتا طه بالواد المقدس
المبارك و اسمه طوى اكادا خفيها لا اظهر عليها احدا غيري سيرتها
حالتها و فتناك فتونا اختبرناك اختبارا و لا تنيا تبطيا اعطى كل
شيء خلقه خلق لكل شيء روحه ثم هداه لمنكحه و مطعمه و مشربه
و مسكنه لا يضل لا يخطي تارة حاجة فيسحتكم فيهلككم السلوى
طائر شبيه بالسماني و لا تطغوا لا تظلمو فقد هوى شقي بملكنا
بامرنا ظلت اقمت لننسفنه في اليم لنذرينه في البحر ساء بئس
يتخافتون يتسارون قاعا مستويا صفصفا لا نبات فيه عوجا و اديا امتا
رابية وخشعت الاصوات سكنت همسا الصوت الخفي وعنت الوجوه
ذلت فلا يخاف ظلما ان يظلم فيزاد في سيئاته الانبياء فلك دوران
يسبحون يجرون ننقصها من اطرافها ننقص اهلها و بركتها جداذا
حطاما فظن ان لن تقدر عليه ان لن يأخذه العذاب الذي اصابه
حدب شرف ينسلون يقبلون حصب شجر كطي السجل للكتاب
كطي الصحيفة على الكتاب الحج بهيج حسن ثاني عطفه مستكبرا
في نفسه وهدوا الهموا تفثهم وضع احرامهم من حلق الراس و لبس
الثياب و قصّ الاظفار و نحو ذلك منسكا عيدا القانع المتعفف
المعتر السائل اذا تمنى حدث في امنيته حديثه يسطون يبطشون
المؤمنون خاشعون خائفون ساكنون تنبت بالدهن هو الزيت
هيهات هيهات بعيد بعيد تترى يتبع بعضها بعضا و قلوبهم وجلة
خائفين يجأرون يستغيثون تنكصون تدبرون سامرا تهجرون تسمرون

يوسف * شعفها غلبها متكيا مجلسا اكبرنه اعظمنه فاستعصم امتنع
بعد أمة حين تحصنون تحزنون يعصرون الاعناب و الدهن حصحص
تبين زعيم كفيل ضلالك القديم خطابك * الرعد * عنوان مجتمع هاد
داع معقبات الملايكة يحفظونه من امر الله باذنه بقدرها على قدر
طاقتها سوء الدار سوء العاقبة طوبى فرح و قرة عين بياس يعلم *
ابراهيم * مهطعين ناظرين فى الاصفاد في وثاق قطران النحاس
المذاب الحجر يود يتمنى مسلمين موحدين شيع امم موزون معلوم
حما مسنون طين رطب اغويتني اضللتني فاصدع بما تومر فامضه *
النحل * بالروح بالوحي دفء الثياب و منها جايرا لاهواء المختلفة
تسيمون ترعون مواخر جواري تشاقون تخالفون يتفيو يتميل حفدة
الاصهار الفحشاء الزنا يعظكم يوصيكم اربى اكثر * الاسراء * و قضينا اعلمنا
فجاسوا فمشوا حصيرا سجنا فصلناه بيناه امرنا مترفيها سلطنا شرارها
دمرنا اهلكنا قضى امر و لا تقف لا تقل رفاتا غبارا فسينغضون يهزون
بحمده بامره لاحتنكن لاستولين يزجى يجرى قاصفا عاصفا تبيعا
نصيرا زهوقا ذاهبا يوسا قنوطا شاكلته ناحيته نسفا قطعا مثبورا ملعونا
فرقناه فصلناه * الكهف * عوجا ملتبسا قيما عدلا الرقيم الكتاب تزاور
تميل تقرضهم تدرهم بالوصيد بالفناء و لا تعد عيناك عنهم لا تتعداهم
الى غيرهم كالمهل عكر الزيت الباقيات الصالحات ذكر الله موبقا مهلكا
موئلا ملجا حقبا دهرا من كل شيء سببا علما عين حامية حارة
زبر الحديد قطع الحديد الصدفين الجبلين مريم سويا من غير خرس
حنانا من لدنا رحمة من عندنا سريا هو عيسى جبارا شقيا عصيا
و هجرني اجتنبني حفيا لطيفا لسان صدق عليا الثناء الحسن غيا

ظهورهما ما علق بها من الشحم الحوايا المباعر املاق الفقر دراستهم تلاوتهم
صدف اعرض الاعراف مذوما ملوما رياشا ما لا حثيثا سريعا رجس
سخط صراط الطرق افتح اقض آسى احزن عفوا كثروا و يذرك
و الهتك يترك عبادتك الطوفان المطر متبر خسران اسفا الحزين
ان هي الافتنتك ان هو الا عذابك عزروه حموه و وقروه ذرانا
خلقنا فانبجست انفجرت نتقنا الجبل رفعناه كانك حفى عنها
لطيف بها طايف اللمة لولا اجتبيتها لولا احدثتها لولا تلقيتها
فانشاتها الانفال بنان الاطراف جاءكم الفتح المدد فرقانا المخرج
ليثبتوك ليوثقوك يوم الفرقان يوم بدر فرق الله فيه بين الحق
و الباطل فشرد بهم من خلفهم نكل بهم من بعدهم من و لايتهم ميراثهم
براة يضاهون يشبهون كافة جميعا ليوا طيوا ليشبهوا و لا تفتني
و لا تخرجني احدى الحسنيين فتح او شهادة مغارات الغيران فى
الجبال مدخلا السرب اذن يسمع من كل احد و اغلظ عليهم اذهب
الرفق عنهم و صلوات الرسول استغفاره سكن لهم رحمة ريبة الشك
الا ان تقطع قلوبهم يعنى الموت لاواه يعنى المومن التواب طايفة
عصبة يونس قدم صدق سبق لهم السعادة فى الذكر الاول و لا ادراكم
اعلمكم ترهقكم تغشاهم عاصم مانع تفيضون تفعلون يعزب يغيب هود
يثنون يكفون يستغشون ثيابهم يغطون روسهم لاجرم بلى اخبتوا خافوا
فار التنور نبع اقلعى اسكنى كان لم يغنوا يعيشوا حينئذ نضيج سيء
بهم ساء ظنا بقومه و ضاق ذرعا باضيافه عصيب شديد يهرعون يسرعون
بقطع سواد مسومة معلمة مكانتكم ناحيتكم اليم موجع زفير صوت
شديد و شهيق صوت ضعيف غير مجدوذ غير منقطع و لا تركنوا تدهنوا *

متعدلا ثم الجوارح الكلاب و الفهود و الصقور و اشباهها مكلبين ضواري
فافرق فافصل و من يرد الله فتنته ضلالته و مهيمنا امينا القرآن امين
على كل كتاب قبله شرعة و منهاجا سبيلا و سنة اذلة على المومنين
رحماء مغلولة يعنون بخيل امسك ما عنده تعالى الله عن ذلك
بحيرة هي الناقة اذا انتجت خمسة ابطن نظروا الى الخامس فان
كان ذكرا ذبحوه فاكله الرجال دون النساء و ان كانت انثى جدعوا
آذانها و اما السائبة فكانوا يسيبون من انعامهم لآلهتهم لا يركبون لها
ظهرا و لا يحلبون لها لبنا و لا يجزن لها وبرا و لا يحملون عليها شيئا
و اما الوصيلة فالشاة اذا انتجت سبعة ابطن نظروا الى السابع فان
كان ذكرا او انثى و هو ميت اشترك فيه الرجال و النساء و ان كانت
انثى و ذكرا في بطن استحيوها و قالوا وصلته اخته فحرمته علينا
و اما الحام فالفحل من الابل اذا ولد لولده قالوا حمي هذا ظهره
فلا يحملون عليه شيئا و لا يجزون وبرا و لا يمنعونه من حمى رعي و لا
من حوض يشرب منه و ان كان الحوض لغير صاحبه الانعام مدرارا
يتبع بعضها بعضا و ينأون يتباعدون فلما نسوا تركوا مبلسون آيسون
يصدفون يعدلون يدعون يعبدون جرحتم كسبتم من الاثم يفرطون
يضيعون شيعا اهواء مختلفة لكل بنأ مستقر حقيقة نبسل تفضح
باسطوا ايديهم البسط الضرب فالق الاصباح ضوء الشمس بالنهار و ضوء
القمر بالليل حسبانا عدد الايام و الشهور و السنين قنوان دانية قصار
النخل اللاصقة عروقها بالارض و خرقوا تخرضوا قبلا معاينة ميتا فاحييناه
ضالا فهديناه مكانتكم ناحيتكم حجر حرام حمولة الابل و الخيل و البغال
و الحمير و كل شيء يحمل عليه و فرشا الغنم مسفوحا مهراقا ما حملت

مالم تمسوهن او تفرضوا المس الجماع و الفريضة الصداق فيه سكينة رحمة سنة نعاس و لا يؤده يثقل عليه صفوان حجر صلدا ليس عليه شيء آل عمران متوفيك مميتك ربيون جموع النساء حوبا كبيرا اثما عظيما نحلة مهرا و ابتلوا اختبروا آنستم عرفتم رشدا اصلاحا كلالة من لم يترك والدا و لا ولدا و لا تعضلوهن تقهروهن و المحصنات كل ذات زوج طولا سعة محصنات غير مسافحات عفائف غير زواني فى السر و العلانية و لا متخذات اخدان اخلافا فاذا احصن تزوجن العذت الزنا موالي عصبة قوامون آمرا قانتات مطيعات والجار ذى القربى بينك و بينه قرابة والجار الجنب الذي ليس بينك و بينه قرابة و الصاحب بالجنب الرفيق فتيلا الذي فى الشق الذي في بطن النواة الجبت الشرك نقيرا النقطة التي في ظهر النواة و اولى الامر اهل الفقه و الدين ثبات عصبا سرايا متفرقين مقيتا حفيظا اركسهم اوقعهم حصرت ضاقت اولى الضرر اهل العذر مراغما التحول من الارض الى الارض وسعة الرزق موقوتا مفروضا تألمون توجعون خلق الله دين الله نشوزا بغضا كالمعلقة لا هي ايم و لا هي ذات زوج و ان تلووا السنتكم بالشهادة او تعرضوا عنها و قولهم على مريم بهتانا يعني رموها بالزنا المائدة اوفوا بالعقود ما احل الله و ما حرم و ما فرض و ما حد فى القرآن كله يجرمنكم يحملنكم شنآن عداوة البر ما امرت به والتقوى ما نهيت عنه المنخنقة التي تخنق فتموت الموقوذة التي تضرب بالخشب فتموت و المتردية التي تتردى من الجبل و النطيحة الشاة التي تنطحها الشاة و ما اكل السبع ما اخذ الا ما ذكيتم ذبحتم و به روح الازلام القداح و طعام الذين اوتوا الكتاب ذبائحهم غير متجانف

لقلتها تكلم الناس على معانيها فيوخذ ذلك من كتبهم * و اما الاسماء والافعال فتوخذ من كتب علم اللغة و اكبرها كتاب ابن السيد و منها التهذيب للازهري و المحكم لابن سيده و الجامع للقزاز و الصحاح للجوهري و البارع للقالي و مجمع البحرين للصاغاني و من الموضوعات فى الافعال كتاب ابن القوطية و ابن طريف و السرقسطي ومن اجمعها كتاب ابن القطاع * قلت و اولى ما يرجع اليه في ذلك ما ثبت عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما و اصحابه الاخذين عنه فانه و رد عنهم ما يستوعب تفسير غريب القرآن بالاسانيد الثابتة الصحيحة * و ها انا اسوق هنا ما ورد من ذلك عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما من طريق ابن ابي طلحة خاصة فانها من اصح الطرق عنه وعليها اعتمد البخاري في صحيحه مرتبا على السور * قال ابن ابي حاتم حدثنا ابي ح و قال ابن جرير حدثنا المثنى قالا حدثنا ابو صالح عبد الله بن صالح حدثني معوية ابن صالح عن علي بن ابي طلحة عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما في قوله تعالى يومنون البقرة قال يصدقون يعمهون يتمارون مطهرة من القذر و الاذى الخاشعين المصدقين بما انزل الله وفي ذلكم بلاء نعمة و قومها الحنطة الاماني احاديث قلوبنا غلف في غطاء ما ننسخ نبدل او ننسها نتركها فلا نبدلها مثابة يثوبون اليه ثم يرجعون حنيفا حاجا شطره نحوه فلا جناح فلا حرج خطوات الشيطان عمله اهل به لغير الله ذبح للطواغيت ابن السبيل الضيف الذي ينزل بالمسلمين ان ترك خيرا ما لا جنفا اثما حدود الله طاعة الله لا تكون فتنة شرك فرض احرم قل العفو ما لا يتبين في اموالكم لا عنتكم لا حرجكم و ضيق عليكم

لم يعرفوا معناها فلم يقولوا فيها شيئا فاخرج ابو عبيد فى الفضائل عن ابراهيم التيمي ان ابا بكر الصديق رضي الله تعالى عنه سئل عن قوله تعالى و فاكهة و ابا فقال اي سماء تظلني و اي ارض تقلني ان انا قلت في كتاب الله ما لا اعلم و اخرج عن انس ان عمر بن الخطاب قرأ على المنبر و فاكهة و ابا فقال هذه الفاكهة قد عرفناها فما الاب ثم رجع الى نفسه فقال ان هذا لهوا لكلف يا عمر واخرج من طريق مجاهد عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال كنت لا ادري ما فاطر السموات حتى اتاني اعرابيان يختصمان في بيئر فقال احدهما انا فطرتها يقول انا ابتدأتها و اخرج ابن جرير عن سعيد بن جبير انه سئل عن قوله تعالى و حنانا من لدنا فقال سألت عنها ابن عباس رضي الله تعالى عنهما فلم يجب فيها شيئا واخرج من طريق عكرمة عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال لا والله ما ادري ما حنانا واخرج الفريابي حدثنا اسرائيل حدثنا سماك بن حرب عن عكرمة عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال كل القرآن اعلمه الا اربعا غسلين و حنانا و اواه و الرقيم واخرج ابن ابي حاتم عن قتادة قال قال ابن عباس رضي الله تعالى عنهما ما ادري ما قوله ربنا افتح بيننا و بين قومنا بالحق حتى سمعت قول بنت ذي يزن تعال افاتحك تقول تعال اخاصمك و اخرج من طريق مجاهد عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما قال ما ادري ما الغسلين و لكني اظنه الزقوم

## فصل معرفة هذا الفن للمفسر

ضروري كما سيأتي في شروط المفسر قال فى البرهان و يحتاج الكاشف عن ذلك الى معرفة علم اللغة اسماء وافعالا و حروفا فالحروف

و عرف الجمع باللام و اتى في خبر ان باللام لكن استشكل هذا بقوله تعالى ان الله لا يستحيي ان يضرب مثلا ما بعوضة فما فوقها و قد ضرب النبي صلى الله عليه و سلم المثل بما دون البعوضة فقال لو كانت الدنيا تزن عند الله جناح بعوضة قلت قد قال قوم فى الآية ان معنى فما فوقها فى الخسة و عبّر بعضهم عن هذا بقوله معناه فما دونها فزال الاشكال النوع السادس و الثلاثون في معرفة غريبه افرده بالتصنيف خلائق لا يحصون منهم ابو عبيدة و ابو عمر الزاهد و ابن دريد * و من اشهرها كتاب العزيزي فقد اقام في تأليفه خمس عشرة سنة يحرره هو وشيخه ابوبكر بن الانباري و من احسنها المفردات للراغب و لابي حيان في ذلك تأليف مختصر في كراسين * قال ابن الصلاح و حيث رأيت في كتب التفسير قال اهل المعاني فالمراد به مصنفوا الكتب في معاني القرآن كالزجاج و الفراء و الاخفش و ابن الانباري انتهى و ينبغي الاعتناء به فقد اخرج البيهقي من حديث ابي هريرة مرفوعا اعربوا القرآن و التمسوا غرائبه و اخرج مثله عن عمر و ابن عمر و ابن مسعود موقوفا و اخرج من حديث ابن عمر مرفوعا من قرأ القرآن فاعربه كان له بكل حرف عشرون حسنة و من قرأه بغير اعراب كان له بكل حرف عشر حسنات المراد باعرابه معرفة معاني الفاظه و ليس المراد به الاعراب المصطلح عليه عند النحاة و هو ما يقابل اللحن لان القراءة مع فقده ليست قراءة و لا ثواب فيها * وعلى الخائض في ذلك التثبت و الرجوع الى كتب اهل الفن و عدم الخوض بالظن * فهذه الصحابة و هم العرب العرباء و اصحاب اللغة الفصحاء * و من نزل القرآن عليهم و بلغتهم توقفوا في الفاظ

و يقرب من الاقتباس شيأن احدهما قراءة القرآن يراد بها الكلام قال النووي فى التبيان ذكر ابن ابي داؤد في هذا اختلافا فروى عن النخعي انه كان يكره ان يتأول القرآن بشئ يعرض من امر الدنيا * و اخرج عن عمر بن الخطاب انه قرأ في صلوٰة المغرب بمكة و التين و الزيتون و طور سينين ثم رفع صوته فقال و هذا البلد الامين * و اخرج عن حكيم بن سعيد ان رجلا من المحكمة اتى عليا رضي الله تعالى عنه و هو في صلوٰة الصبح فقال لئن اشركت ليحبطن عملك فاجابه فى الصلوٰة فاصبر ان وعدالله حق و لا يستخفنك الذين لايوقنون انتهى * و قال غيره يكره ضرب الامثال من القرآن صرح به من اصحابنا العماد النتهى تلميذ البغوي كما نقله ابن الصلاح في فوائد رحلته الثاني التوجيه بالالفاظ القرآنية فى الشعر وغيره وهو جائز بلا شك وروينا عن الشريف تقي الدين الحسيني انه لما نظم قوله

مجاز حقيقتها فاعبروا و لا تعمروا هونوها تهن

و ما حسن بيت له زخرف تراه اذا زلزلت لم يكن

خشي ان يكون ارتكب حراما لاستعماله هذه الالفاظ القرآنية فى الشعرفجاء الى شيخ الاسلام تقي الدين بن دقيق العيد ليسأله عن ذلك فانشده اياهما فقال له قل و ما حسن كهف فقال يا سيدي افدتني و افتيتني * خاتمة * قال الزركشي فى البرهان لا يجوز تعدي امثلة القرآن و لذلك انكر على الحريري قوله فادخلني بيتا احرج من التابوت و اوهن من بيت العنكبوت و ايّ معنى ابلغ من معنىً اكده الله من ستة اوجه حيث قال وان اوهن البيوت لبيت العنكبوت فادخل ان و بنى افعل التفضيل و بناه من الوهن و اضافه الى الجمع

في طبقاته في ترجمة الامام ابي منصور عبد القاهر بن طاهر التميمي البغدادي من كبار الشافعية و اجلائهم ان من شعره قوله

يا من عدا ثم اعتدى ثم اقترف ثم انتهى ثم ارعوى ثم اعترف
ابشر بقول الله في آياته ان ينتهوا يغفر لهم ما قد سلف

و قال استعمال مثل الاستاذ ابي منصور مثل هٰذا الاقتباس في شعره فائدة فانه جليل القدر و الناس ينهون عن هٰذا و ربما ادى بحث بعضهم الى انه لا يجوز و قيل ان ذلك انما يفعله من الشعراء الذين هم في كل واد يهيمون و يثبون على الالفاظ و ثبةَ من لا يبالي و هٰذا الاستاذ ابو منصور من ائمة الدين و قد فعل هٰذا و اسند عنه هٰذين البيتين الاستاذ ابو القاسم ابن عساكر قلت ليس هٰذان البيتان من الاقتباس لتصريحه بقول الله و قد قدمنا ان ذلك خارج عنه و اما اخوه الشيخ بهاء الدين فقال في عروس الافراح الورع اجتناب ذلك كله و ان ينزه عن مثله كلام الله و رسوله قلت رأيت استعمال الاقتباس لائمة اجلاء منهم الامام ابو القاسم الرافعي فقال و انشده في اماليه و رواه عنه ائمة كبار

الملك لله الذي عنت الوجوه له و ذلت عنده الارباب
متفرد بالملك و السلطان قد خسر الذين تجادلوه و خابوا
دعهم و زعم الملك يوم غرورهم فسيعلمون غدا من الكذّاب

و روى البيهقي في شعب الايمان عن شيخه ابي عبد الرحمٰن السلمي قال انشدنا احمد بن محمد بن يزيد لنفسه

سل الله من فضله و اتقه فان التقى خير ما يكتسب
و من يتق الله يجعل له و يرزقه من حيث لا يحتسب

عبد السلام فاجازه و استدل بما ورد عنه صلى الله عليه و سلم من قوله فى الصلوٰة و غيرها وجهت وجهي الى آخره و قوله اللهم فالق الاصباح و جاعل الليل سكنا و الشمس و القمر حسبانا اقض عني الدين و اغنني من الفقر و في سياق كلام لابي بكر و سيعلم الذين ظلموا اي منقلب ينقلبون و في آخر حديث لابن عمر قد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة انتهى و هٰذا كله انما يدل على جوازه في مقام المواعظ و الثناء و الدعاء و فى النثر و لا دلالة فيه على جوازه فى الشعر و بينهما فرق فان القاضي ابا بكر من المالكية صرح بان تضمينه فى الشعر مكروه و فى النثر جائز و استعمله ايضا فى النثر القاضي عياض في مواضع من خطبة الشفا و قال الشرف اسمٰعيل بن المقري اليمني صاحب مختصر الروضة و غيره في شرح بديعية ما كان منه فى الخطب و المواعظ و مدحه صلى الله عليه وسلم و آله و صحبه و لو فى النظم فهو مقبول و غيره مردود و في شرح بديعية ابن حجة الاقتباس ثلٰثة اقسام مقبول و مردود و مباح * فالاول ما كان فى الخطب والمواعظ والعهود * و الثاني ما كان فى الغزل والرسائل و القصص * والثالث على ضربين احدهما ما نسبه الله تعالى الى نفسه ونعوذ بالله ممن ينقله الى نفسه كماقيل عن احد بني مروان انه وقع على مطالعة فيها شكاية عماله ان الينا ايابهم ثم ان علينا حسابهم و الآخر تضمين آية في معنى هزل و نعوذ بالله من ذلك كقوله * اوحى الى عشاقه طرفه * هيهات هيهات لما توعدون * وردفه ينطق من خلفه * لمثل ذا فليعمل العاملون * انتهى قلت و هٰذا التقسيم حسن جدا و به اقول و ذكر الشيخ تاج الدين بن السبكي

عن الامام احمد انه منع من تكرير سورة الاخلاص عند الختم لكن عمل الناس على خلافه قال بعضهم و الحكمة فيه ما ورد انها تعدل ثلث القرآن فيحصل بذلك ختمة فان قيل فكان ينبغي ان تقرأ اربعا ليحصل ختمتان قلنا المقصود ان يكون على يقين من حصول ختمة اما التي قرأها و اما التي حصل ثوابها بتكرير السورة انتهى • قلت و حاصل ذلك يرجع الى جبر ما لعله حصل فى القراءة من خلل و كما قاس الحليمي التكبير عند الختم على التكبير عند اكمال رمضان فينبغي ان يقاس تكرير سورة الاخلاص على اتباع رمضان بست من شوال مسئلة يكره اتخاذ القرآن معيشة يتكسب بها و اخرج الاجري من حديث عمران بن حصين مرفوعا من قرأ القرآن فليسأل الله تعالى به فانه سيأتي قوم يقرؤن القرآن يسألون الناس و روى البخاري في تاريخه الكبير بسند صالح حديث من قرأ القرآن عند ظالم ليرفع منه لُعن بكل حرف عشر لعنات مسئلة يكره ان يقول نسيت آية كذا بل انسيتها لحديث الصحيحين فى النهي عن ذلك مسئلة الائمة الثلاثة على وصول ثواب القراءة للميت و مذهبنا خلافه لقوله تعالى و ان ليس للانسان الا ما سعى

## فصل فى الاقتباس و ما جرى مجراه

الاقتباس تضمين الشعر او النثر بعض القرآن لا على انه منه بان لا يقال فيه قال الله تعالى و نحوه فان ذلك حينئذ لا يكون اقتباسا و قد اشتهر عن المالكية تحريمه و تشديد النكير على فاعله و اما اهل مذهبنا فلم يتعرض له المتقدمون و لا اكثر المتأخرين مع شيوع الاقتباس في اعصارهم و استعمال الشعراء له قديما و حديثا و قد تعرض له جماعة من المتأخرين فسئل عنه الشيخ عز الدين بن

بصوم رمضان اذا اكمل عدته يكبر فكذا هنا يكبر اذا اكمل عدة السور قال وصفته ان يقف بعد كل سورة وقفة و يقول الله اكبر و كذا قال سليم الرازي من اصحابنا في تفسيره يكبر بين كل سورتين تكبيرة ولا يصل آخر السورة بالتكبير بل يفصل بينهما بسكتة قال ومن لا يكبر من القراء حجتهم ان في ذلك ذريعة الى الزيادة فى القرآن بان يداوم عليه فيتوهم انه منه وفى النشر اختلف القراء في ابتدائه هل هو من اول الضحى او من آخرها وفي انتهائه هل هو اول سورة الناس او آخرها وفي وصله باولها او آخرها و قطعه و الخلاف فى الكل مبني على اصل و هو انه هل هو لاول السورة او لآخرها وفي لفظه فقيل الله اكبر و قيل لا اله الا الله و الله اكبر و سواء فى التكبير الصلوٰة و خارجها صرح به السخاوي و ابوشامة مسئلة يسنّ الدعاء عقيب الختم لحديث الطبراني وغيره عن العرباض بن سارية مرفوعا من ختم القرآن فله دعوة مستجابة وفى الشعب من حديث انس مرفوعا مع كل ختمة دعوة مستجابة و فيه من حديث ابي هريرة مرفوعا من قرأ القرآن و حمد الرب و صلى على النبي صلى الله عليه و سلم و استغفر ربه فقد طلب الخير مكانه مسئلة يسنّ اذا فرغ من الختمة ان يشرع في اخرى عقيب الختم لحديث الترمذي وغيره احب الاعمال الى الله تعالى الحال المرتحل الذي يضرب من اول القرآن الى آخره كلما حل ارتحل واخرج الدارمي بسند حسن عن ابن عباس عن ابي بن كعب ان النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا قرأ قل اعوذ برب الناس افتتح من الحمد ثم قرأ من البقرة الى اولئك هم المفلحون ثم دعا بدعاء الختمة ثم قام مسئلة

اهله و اصدقائه اخرج الطبراني عن انس رض انه كان اذا ختم القرآن جمع اهله و دعا و اخرج ابن ابي داؤد عن الحكم بن عيينة قال ارسل اليّ مجاهد و عنده ابن ابي امامة و قالا انا ارسلنا اليك لانا اردنا ان نختم القرآن و الدعاء يستجاب عند ختم القرآن و اخرج عن مجاهد قال كانوا يجتمعون عند ختم القرآن و يقول عنده تنزل الرحمة مسئلة يستحب التكبير من الضحى الى آخر القرآن و هي قراءة المكيين اخرج البيهقي في الشعب و ابن خزيمة من طريق ابن ابي بزة سمعت عكرمة بن سليمان قال قرأت على اسمعيل بن عبد الله المكي فلما بلغت الضحى قال لي كبر حتى تختم فاني قرأت على عبد الله بن كثير فامرني بذلك و قال قرأت على مجاهد فامرني بذلك و اخبر مجاهد انه قرأ على ابن عباس فامره بذلك و اخبر ابن عباس انه قرأ على ابي بن كعب فامره بذلك كذا اخرجاه موقوفا ثم اخرجه البيهقي من وجه آخر عن ابن ابي بزة مرفوعا و اخرجه من هذا الوجه اعني المرفوع الحاكم في مستدركه و صححه و له طرق كثيرة عن البزي و عن موسى بن هرون قال قال لي البزي قال لي محمد بن ادريس الشافعي ان تركت التكبير فقد تركت سنة من سنن نبيك قال الحافظ عماد الدين بن كثير و هذا يقتضي تصحيحه للحديث * و روى ابو العلاء الهمداني عن البزي ان الاصل في ذلك ان النبي صلى الله عليه و سلم انقطع عنه الوحي فقال المشركون قلى محمدا ربه فنزلت سورة الضحى فكبر النبي صلى الله عليه وسلم قال ابن كثير ولم يرو ذلك باسناد يحكم عليه بصحة و لا ضعف و قال الحليمي نكتة التكبير التشبيه للقراءة

و اذا قرئ القرآن فاستمعوا له و انصتوا لعلكم ترحمون مسئلة يسنّ السجود عند قراءة آية السجدة و هي اربعة عشر فى الاعراف و الرعد و النحل و الاسراء و مريم و فى الحج سجدتان و الفرقان و النمل و الم تنزيل وفصلت و النجم و اذا السماء انشقت و اقرأ باسم ربك و اما صٓ فمستحبة و ليست من عزائم السجود اي متأكداته و زاد بعضهم آخر الحجر نقله ابن الفرس في احكامه مسئلة قال النووي الاوقات المختارة للقراءة افضلها ما كان فى الصلوٰة ثم الليل ثم نصفه الاخير * و هي بين المغرب و العشاء محبوبة * و افضل النهار بعد الصبح و لاتكره في شئ من الاوقات لمعنى فيه و اما ما رواه ابن ابي داوٗد عن معاذ بن رفاعة عن مشايخه انهم كرهوا القراءة بعد العصر و قالوا هو دراسة يهود فغير مقبول و لا اصل له * و يختار من الايام يوم عرفة ثم الجمعة ثم الاثنين و الخميس و من الاعشار العشر الاخير من رمضان و الاول من ذى الحجة و من الشهور رمضان * و يختار لابتدائه ليلة الجمعة و لختمه ليلة الخميس فقد روى ابن ابي داوٗد عن عثمان بن عفان رض انه كان يفعل ذلك و الافضل الختم اول النهار او اول الليل لما رواه الدارمي بسند حسن عن سعد بن ابي وقاص قال اذا وافق ختم القرآن اول الليل صلت عليه الملائكة حتى يصبح و ان وافق ختمه آخر الليل صلت عليه الملائكة حتى يمسي قال فى الاحياء و يكون الختم اول النهار في ركعتي الفجر و اول الليل في ركعتي سنة المغرب * و عن ابن المبارك يستحب الختم فى الشتاء اول الليل و فى الصيف اول النهار مسئلة يسنّ صوم يوم الختم اخرجه ابن ابي داوٗد عن جماعة من التابعين و ان يحضره

المختلفة كما انكر رسول الله صلى الله عليه و سلم على بلال و كما كرهه ابن سيرين و اما حديث عبد الله فوجهه عندي ان يبتدئ الرجل فى السورة يريد اتمامها ثم يبدو له في اخرى فاما من ابتدأ القراءة و هو يريد التنقل من آية الى آية و ترك التاليف لآي القرآن فانما يفعله من لا علم له لان الله لو شاء لانزله على ذلك انتهى * وقد نقل القاضي ابو بكر الاجماع على عدم جواز قراءة آية آية من كل سورة قال البيهقي و احسن ما يحتج به ان يقال ان هذا التأليف لكتاب الله ماخوذ من جهة النبي صلى الله عليه و سلم و اخذه عن جبريل فالاولى بالقاري ان يقرأه على التاليف المنقول و قد قال ابن سيرين تاليف الله خير من تاليفكم مسئلة قال الحليمي يسن استيفاء كل حرف اثبته القاري ليكون قد اتى على جميع ما هو قرآن و قال ابن الصلاح و النووي اذا ابتدأ بقراءة احد من القراء فينبغي ان لا يزال على تلك القراءة مادام الكلام مرتبطا فاذا انقضى ارتباطه فله ان يقرأ بقراءة اخرى * والاولى دوامه على الاولى في هذا المجلس و قال غيرهما بالمنع مطلقا قال ابن الجزري و الصواب ان يقال ان كانت احدى القرأتين مترتبة على الاخرى منع ذلك منع تحريم كمن يقرأ فتلقى آدم من ربه كلمات برفعهما او بنصبهما آخذا رفع آدم من قراءة غير ابن كثير و رفع كلمات من قراءته و نحو ذلك مما لا يجوز فى العربية و اللغة و ما لم يكن كذلك فرق فيه بين مقام الرواية و غيرها فان كان على سبيل الرواية حرم ايضا لانه كذب فى الرواية و تخليط و ان كان على سبيل التلاوة جاز مسئلة يسن الاستماع لقراءة القرآن و ترك اللفظ و الحديث بحضور القراءة قال الله تعالى

الجزري جوازها في غير الصلوٰة قياسا على رواية الحديث بالمعنى
مسئلة الاولى ان يقرأ على ترتيب المصحف قال في شرح المهذب
لان ترتيبه لحكمة فلا يتركها الا فيما ورد فيه الشرع كصلوٰة صبح الجمعة
بآلم و هل اتى و نظائره فلو فرق السور او عكسها جاز و ترك الافضل
قال و اما قرأة السورة من آخرها الى اولها فمتفق على منعه لانه
يذهب بعض نوع الاعجاز و يزيل حكمة الترتيب قلت وفيه اثر اخرج
الطبراني بسند جيد عن ابن مسعود انه سئل عن رجل يقرأ القرآن
منكوسا قال ذاك منكوس القلب و اما خلط سورة بسورة فعدّ الحليمي
تركه من الآداب لما اخرجه ابو عبيد عن سعيد بن المسيب ان
رسول الله صلى الله عليه وسلم مر ببلال و هو يقرأ من هٰذه السورة
و من هٰذه السورة فقال يا بلال مررت بك و انت تقرأ من هٰذه
السورة و من هٰذه السورة قال اخلط الطيّب بالطيّب فقال اقرأ السورة
على وجهها او قال على نحوها مرسل صحيح و هو عند ابي داؤد
موصول عن ابي هريرة بدون آخره و اخرجه ابو عبيد من وجه آخر
عن عمر مولى غفرة ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لبلال اذا
قرأت السورة فانفدها وقال حدثنا معاذ عن ابن عون قال سألت ابن
سيرين عن الرجل يقرأ من السورة آيتين ثم يدعها و يأخذ في غيرها
قال ليتق احدكم ان يأثم اثما كبيرا و هو لا يشعر و اخرج عن ابن
مسعود قال اذا ابتدأت في سورة فاردت ان تتحول منها الى غيرها
فتحول الى قل هو الله احد فاذا ابتدأت فيها فلا تتحول منها حتى
تختمها و اخرج عن ابى الهذيل قال كانوا يكرهون ان يقرؤا بعض
الآية و يدعوا بعضها * قال ابوعبيد الامر عندنا على كراهة قرأة الآيات

الله تعالى اعجاز نخل منقعر من الشجر الاخضر قالوا فليس المراد ما فهم بل المراد تذكروا الموعظة و الدعا كما قال تعالى فذكر بالقرآن الا انه حذف الجار و المقصود ذكّروا الناس بالقرآن اي ابعثوهم على حفظه كيلا ينسوه قلت اول الاثر يابى هذا الحمل و قال الواحدي الامر ما ذهب اليه ثعلب و المراد انه اذا احتمل اللفظ التذكير و التانيث و لم يحتج فى التذكير الى مخالفة المصحف ذكر نحو ولا يقبل منها شفاعة قال و يدل على ارادته هذا ان اصحاب عبد الله من قراء الكوفة كحمزة و الكسائي ذهبوا الى هذا فقرؤا ما كان من هذا القبيل بالتذكير نحو يوم تشهد عليهم السنتهم و هذا في غير الحقيقي مسئلة يكره قطع القراءة لمكالمة احد قال الحليمي لان كلام الله تعالى لا ينبغي ان يوثر عليه كلام غيره و ايده البيهقي بما فى الصحيح كان ابن عمر اذا قرأ القرآن لم يتكلم حتى يفرغ منه و يكره ايضا الضحك و العبث و النظر الى ما يلهي مسئلة لايجوز قراءة القرآن بالعجمية مطلقا سواء احسن العربية ام لا فى الصلوٰة ام خارجها و عن ابي حنيفة انه يجوز مطلقا و عن ابي يوسف و محمد لمن لا يحسن العربية لكن في شرح البزدوي ان ابا حنيفة رجع عن ذلك و وجه المنع انه يذهب اعجازه المقصود منه و عن القفال من اصحابنا ان القراءة بالفارسية لا يتصور قيل له فاذن لا يقدر احد ان يفسر القرآن قال ليس كذلك لان هناك يجوز ان ياتي ببعض مراد الله و يعجز عن البعض اما اذا اراد ان يقرأه بالفارسية فلا يمكن ان ياتي بجميع مراد الله لان الترجمة ابدال لفظة بلفظة تقوم مقامها و ذلك غير ممكن بخلاف التفسير مسئلة لا تجوز القراءة بالشاذ نقل ابن عبد البر الاجماع على ذلك لكن ذكر موهوب

انه منكر و اخرج بسند حسن عنه موقوفا اديموا النظر فى المصحف و حكى الزركشي فى البرهان ما بحثه النووي قولا و حكى معه قولا ثالثا ان القراءة من الحفظ افضل مطلقا و ان ابن عبد السلام اختاره لان فيه من التدبر ما لا يحصل بالقراءة فى المصحف مسئلة قال فى التبيان اذا ارتج على القاري فلم يدر ما بعد الموضع الذي انتهى اليه فسال عنه غيره فينبغي ان يتأدب بما جاء عن ابن مسعود و النخعي و بشير بن ابي مسعود قالوا اذا سأل احدكم اخاه عن آية فليقرأ ما قبلها ثم يسكت و لا يقول كيف كذا و كذا فانه يلبس عليه انتهى و قال ابن مجاهد اذا شك القاري في حرف هل هو بالتاء او بالياء فليقرأه بالياء فان القرآن مذكر و ان شك في حرف هل هو مهموزا وغير مهموز فليترك الهمز و ان شك في حرف هل يكون موصولا او مقطوعا فليقرأ بالوصل و ان شك في حرف هل هو ممدود او مقصور فليقرأ بالقصر و ان شك في حرف هل هو مفتوح او مكسور فليقرأ بالفتح لان الاول غير لحن في موضع و الثاني لحن في بعض المواضع قلت اخرج عبد الرزاق عن ابن مسعود رض قال اذا اختلفتم في ياء و تاء فاجعلوها ياء ذكّروا القرآن ففهم منه ثعلب ان ما احتمل تذكيره و تانيثه كان تذكيره اجود ورد بانه يمتنع ارادة تذكير غير الحقيقي التانيث لكثرة ما فى القرآن منه بالتانيث نحو النار وعدها الله التفت الساق بالساق قالت لهم رسلهم و اذا امتنع ارادة غير الحقيقي فالحقيقي اولى قالوا و لا يستقيم ارادة ان ما احتمل التذكير و التانيث غلب فيه التذكير كقوله و النخل باسقات اعجاز نخل خاوية فانث مع جواز التذكير قال

بالقرآن كالمسر بالصدقة قال النووي و الجمع بينهما ان الاخفاء افضل حيث خاف الريا او تأذى به مصلون او نيام بجهره و الجهر افضل في غير ذلك لان العمل فيه اكثر و لان فائدته تتعدى الى السامعين و لانه يوقظ قلب القاري و يجمع همه الى الفكر و يصرف سمعه اليه و يطرد النوم و يزيد فى النشاط و يدل لهذا الجمع حديث ابي داؤد بسند صحيح عن ابي سعيد اعتكف رسول الله صلى الله عليه و سلم فى المسجد فسمعهم يجهرون بالقراءة فكشف الستر و قال الا انّ كلكم مناج لربه فلايوذين بعضكم بعضا و لا يرفع بعضكم على بعض فى القراءة و قال بعضهم يستحب الجهر ببعض القراءة و الاسرار ببعضها لان المسر قد يمل فيأنس بالجهر و الجاهر قد يكل فيستريح بالاسرار مسئلة القراءة فى المصحف افضل من القراءة من حفظه لان النظر فيه عبادة مطلوبة قال النووي هكذا قاله اصحابنا و السلف ايضا و لم ار فيه خلافا قال و لو قيل انه يختلف باختلاف الاشخاص فيختار القراءة فيه لمن استوى خشوعه و تدبره في حالتي القراءة فيه و من الحفظ و يختار القراءة من الحفظ لمن يكمل خشوعه بذلك و يزيد على خشوعه و تدبره لو قرأ من المصحف لكان هذا قولا حسنا قلت و من ادلة القراءة فى المصحف ما اخرجه الطبراني و البيهقي فى الشعب من حديث اوس الثقفي مرفوعا قرأءة الرجل في غير المصحف الف درجة و قراءته فى المصحف تضاعف الفي درجة و اخرج ابو عبيد بسند ضعيف حديث فضل قراءة القرآن نظرا على من يقرؤه ظاهرا بفضل الفريضة على النافلة و اخرج البيهقي عن ابن مسعود مرفوعا من سره ان يحب الله و رسوله فليقرأ فى المصحف و قال

فنص الشافعي فى المختصر انه لابأس بها و عن رواية الربيع الجيزي انها مكروهة قال الرافعي فقال الجمهور ليست على قولين بل المكروه ان يفرط فى المدوفي اشباع الحركات حتى يتولد من الفتحة الف و من الضمة و او و من الكسرة ياء اويدغم في غير موضع الادغام فان لم ينته الى هذا الحد فلاكراهة قال في زوائد الروضة و الصحيح ان الافراط على الوجه المذكور حرام يفسق به القاري و يأثم المستمع لانه عدل به عن منهجه القويم قال وهذا مراد الشافعي بالكراهة قلت وفيه حديث اقرؤا القرآن بلحون العرب و اصواتها و اياكم ولحون اهل الكتابين و اهل الفسق فانه سيجيء اقوام يرجعون بالقرآن ترجيع الغنا و الرهبانية لايجاوز حناجرهم مفتونة قلوبهم و قلوب من يعجبهم شانهم اخرجه الطبراني والبيهقي قال النووي ويستحب طلب القراءة من حسن الصوت والاصغاء اليها للحديث الصحيح ولا بأس باجتماع الجماعة فى القراءة ولا بادارتها و هي ان يقرأ بعض الجماعة قطعة ثم البعض قطعة بعدها مسئلة يستحب قراءته بالتفخيم لحديث الحاكم نزل القرآن بالتفخيم قال الحليمي و معناه ان يقرأ على قراءة الرجال ولا يخضع الصوت فيه ككلام النساء قال ولا يدخل في هذا كراهة الامالة التي هى اختيار بعض القراء و قد يجوز ان يكون القرآن نزل بالتفخيم فرخص مع ذلك في امالة ما يحسن امالته مسئلة وردت احاديث تقتضي استحباب رفع الصوت بالقراءة و احاديث تقتضى الاسرار و خفض الصوت فمن الاول حديث الصحيحين ما اذن الله لشيء ما اذن لنبي حسن الصوت يتغنى بالقرآن يجهر به و من الثاني حديث ابي داؤد و الترمذي و النسائي الجاهر بالقرآن كالجاهر بالصدقة و المسر

قرأ نحو و قالت اليهود عزير ابن الله و قالت اليهود يد الله مغلولة
ان يخفض بها صوته كذا كان النخعي يفعل مسئلة لابأس بتكرير
الآية و ترديد ها روى النسائي و غيره ان النبي صلى الله عليه و سلم
قام بآية يرددها حتى اصبح ان تعذ بهم فانهم عبادك الآية مسئلة
يستحب البكاء عند قراءة القرآن والتباكي لمن لايقدر عليه والحزن
والخشوع قال الله تعالى و يخرون للاذقان يبكون و يزيدهم خشوعا
و في الصحيحين حديث قراءة ابن مسعود على النبي صلى الله
عليه و سلم و فيه فاذا عيناه تذرفان و في الشعب للبيهقي عن
سعد بن مالك مرفوعا ان هذا القرآن نزل بحزن و كآبة فاذا قرأتموه
فابكوا فان لم تبكوا فتباكوا و فيه من مرسل عبد الملك بن عمير ان رسول
الله صلى الله عليه و سلم قال اني قارئ عليكم سورة فمن بكى فله الجنة
فان لم تبكوا فتباكوا و في مسند ابي يعلى حديث اقرؤا القرآن بالحزن
فانه نزل بالحزن و عند الطبراني احسن الناس قراءةً من اذا قرأ
القرآن يتحزن به قال في شرح المهذب و طريقه في تحصيل البكاء
ان يتأمل مايقرأ من التهديد والوعيد الشديد و المواثيق والعهود ثم
يفكر في تقصيره فيها فان لم يحضره عند ذلك حزن و بكاء فليبك
على فقد ذلك فانه من المصائب مسئلة يسنّ تحسين الصوت
بالقراءة و تزئينها لحديث ابن حبان و غيره زينوا القرآن باصواتكم
و في لفظ الدار مي حسنوا القرآن باصواتكم فان الصوت الحسن
يزيد القرآن حسنا واخرج البزار و غيره حديث حسن الصوت زينة
القرآن و فيه احاديث صحيحة كثيرة فان لم يكن حسن الصوت حسّنه
ما استطاع بحيث لايخرج الى حد التمطيط و اما القراءة بالالحان

و من قرأ والمرسلات فبلغ فباي حديث بعده يومنون فليقل آمنا بالله
و اخرج احمد و ابو داؤد عن ابن عباس رض ان النبي صلى
الله عليه و سلم كان اذا قرأ سبح اسم ربك الاعلى قال سبحان
ربي الاعلى و اخرج الترمذي والحاكم عن جابر رض قال خرج
رسول الله صلى الله عليه و سلم على اصحابه فقرأ عليهم سورة الرحمن
من اولها الى آخرها فسكتوا فقال لقد قرأتها على الجن ليلة الجن فكانوا
احسن مردودا منكم كنت كلما اتيت على قوله فباي آلاء ربكما
تكذبان قالوا ولا بشيء من نعمك ربنا نكذب فلك الحمد و اخرج
ابن مردويه والديلمي و ابن ابي الدنيا فى الدعاء و غيرهم بسند
ضعيف جدا عن جابر رض ان النبي صلى الله عليه و سلم قرأ
و اذا سألك عبادي عني فاني قريب الآية فقال اللهم امرت
بالدعاء و تكفلت بالاجابة لبيك اللهم لبيك لاشريك لك
لبيك ان الحمد والنعمة لك والملك لك لاشريك لك اشهد
انك فرد احد صمد لم يلد و لم يولد ولم يكن له كفوا احد و اشهد
ان وعدك حق ولقاؤك حق والجنة حق والنار حق و الساعة
آتية لاريب فيها وانك تبعث من فى القبور و اخرج ابن
داؤد و غيره عن وايل بن حجر سمعت النبي صلى الله عليه
و سلم قرأ ولا الضالين فقال آمين يمد بها صوته و اخرج الطبراني بلفظ
قال آمين ثلاث مرات و اخرجه البيهقي بلفظ قال رب اغفرلي آمين
و اخرج ابو عبيد عن ابي ميسرة ان جبريل لقن رسول الله صلى
الله عليه و سلم عند خاتمة البقرة آمين و اخرج عن معاذ بن جبل
انه كان اذا ختم سورة البقرة قال آمين قال النووي و من الاداب اذا

و قلة القراءة او السرعة مع كثرتها و احسن بعض ائمتنا فقال ان ثواب قراءة الترتيل اجل قدرا و ثواب الكثرة اكثر عددا لان بكل حرف عشر حسنات و في البرهان للزركشي كمال الترتيل تفخيم الفاظه و الابانة عن حروفه و ان لا يدغم حرف في حرف و قيل هذا اقله و اكمله ان يقرأه على منازله فان قرأ تهديدا لفظ به لفظ المتهددا و تعظيما لفظ به على التعظيم مسئلة و تسن القراءة بالتدبر والتفهم فهو المقصود الاعظم والمطلوب الاهم و به تنشرح الصدور و تستنير القلوب قال الله تعالى كتاب انزلناه اليك مبارك ليدبروا آياته وقال افلا يتدبرون القرآن و صفة ذلك ان يشغل قلبه بالتفكر في معنى ما يتلفظ به فيعرف معنى كل آية و يتأمل الاوامر و النواهي و يعتقد قبول ذلك فان كان مما قصر عنه فيما مضى اعتذر و استغفر و اذا مر بآية رحمة استبشر و سأل اوعذاب اشفق و تعوذ او تنزيه نزه وعظم او دعاء تضرع وطلب آخرج مسلم عن حذيفة رض قال صليت مع النبي صلى الله عليه و سلم ذات ليلة فافتتح البقرة فقرأها ثم النساء فقرأها ثم آل عمران فقرأها يقرأ مترسلا اذا مر بآية فيها تسبيح سبح اذا مر بسؤال سأل و اذا مر بتعوذ تعوذ و روى ابو داؤد والنسائي و غيرهما عن عوف بن مالك قال قمت مع النبي صلى الله عليه و سلم ليلة فقام فقرأ سورة البقرة لا يمر بآية رحمة الا وقف و سأل ولا يمر بآية عذاب الا وقف وتعوذ و روى ابو داؤد والترمذي حديث من قرأ والتين والزيتون فانتهى الى آخرها فليقل بلى و انا على ذلك من الشاهدين و من قرأ لا اقسم بيوم القيمة فانتهى الى آخرها اليس ذلك بقادر على ان يحيي الموتى فليقل بلى

قال ابن الجزري و الابتداء بالآى وسط برأة قلّ من تعرض له و قد صرح بالبسملة فيه ابوالحسن السخاوي و رد عليه الجعبري مسئلة لاتحتاج قراءة القرآن الى نية كسائر الاذكار الا اذا نذرها خارج الصلوٰة فلا بد من نية النذر او الفرض و لو عين الزمان فلو تركها لم يجز نقله القمولي فى الجواهر مسئلة يسنّ الترتيل في قراءة القرآن قال الله تعالى و رتل القرآن ترتيلا و روى ابو داؤد وغيره عن ام سلمة انها نعتت قراءة النبي صلى الله عليه و سلم قراءة مفسرة حرفا حرفا و فى البخاري عن انس انه سئل عن قراءة رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال كانت مدا ثم قرأ بسم الله الرحمٰن الرحيم يمد الله و يمد الرحمٰن و يمد الرحيم و فى الصحيحين عن ابن مسعود ان رجلا قال له اني اقرأ المفصل في ركعة واحدة فقال هذا كهذالشعر ان قوما يقرؤن القرآن لا يجاوز تراقيهم و لٰكن اذا وقع فى القلب فرسخ فيه نفع و اخرج الاجري في جملة القرآن عن ابن مسعود رض قال لا تنثروه نثر الدقل و لا تهذّوه هذّالشعر قفوا عند عجائبه و حركوا به القلوب و لا يكون هم احدكم آخرالسورة و اخرج من حديث ابن عمر مرفوعا يقال لصاحب القرآن يوم القيٰمة اقرأ و ارق فى الدرجات و رتل كما كنت ترتل فى الدنيا فان منزلك عند آخر آية كنت تقرأها قال في شرح المهذب و اتفقوا على كراهة الافراط فى الاسراع قالوا و قراءة جزء بترتيل افضل من قراءة جزءين في قدر ذلك الزمان بلا ترتيل قالوا و استحباب الترتيل للتدبر و لانه اقرب الى الاجلال و التوقير و اشد تأثيرا فى القلب و لهذا يستحب للاعجمي الذي لا يفهم معناه انتهى و فى النشر اختلف هل الافضل الترتيل

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم ان الله هو السميع العليم و فيها الفاظ اخر قال الحلواني في جامعه ليس للاستعاذة حد تنتهي اليه من شاء زاد و من شاء نقص و فى النشر لابن الجزري المختار عند ائمة القراءة الجهر بها و قيل يسر مطلقا و قيل فيما عدا الفاتحة قال و قد اطلقوا اختيار الجهر و قيده ابو شامة بقيد لابد منه و هو ان يكون بحضرة من يسمعه قال لان الجهر بالتعوذ اظهار شعار القراءة كالجهر بالتلبية و تكبيرات العيد و من فوائده ان السامع ينصت للقراءة من اولها لايفوته منها شيء و اذا اخفى التعوذ لم يعلم السامع بها الا بعد ان فاتة من المقر و شيء و هذا المعنى هو الفارق بين القراءة فى الصلوٰة و خارجها قال و اختلف المتأخرون فى المراد باخفائها فالجمهور على ان المراد به الاسرار فلابد من التلفظ واسماع نفسه وقيل الكتمان بان يذكرها بقلبه بلا تلفظ قال و اذا قطع القراءة اعراضا او بكلام اجنبي و لورد السلام استا نفها او يتعلق بالقراءة فلا قال وهل هي سنة كفاية اوعين حتى لوقرأ جماعة جملة فهل يكفي استعاذة واحد منهم كالتسمية على الا كل اولا لم ارفيه نصا و الظاهر الثاني لان المقصود اعتصام القاريء و التجاءه بالله من شر الشيطان فلايكون تعوذ واحد كافيا عن آخر انتهى كلام ابن الجزري مسئلة و ليحافظ على قراءة البسملة اول كل سورة غير براءة لان اكثر العلماء على انها آية فاذا اخل بها كان تاركا لبعض الختمة عند الا كثرين فان قرأ من اثناء سورة استحبت له ايضا نص عليه الشافعي فيما نقله العبادي قال الفرا و يتأكد عند قراءة نحو آية يرد علم الساعة و هوالذي انشاء جنات لما في ذكر ذلك بعد الاستعاذة من البشاعة و ايهام رجوع الضمير الى الشيطان

ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقرأ مع الحدث قال في شرح المهذب و اذا كان يقرأ فعرضت له ريح امسك عن القراءة حتى يستتم خروجها و اما الجنب والحايض فيحرم عليهما القراءة نعم يجوز لهما النظر في المصحف و امراره على القلب و اما متنجس الفم فيكره له القراءة و قيل تحرم كمس المصحف باليد النجسة مسالة و تسن القراءة في مكان نظيف و افضله المسجد و كره قوم القراءة في الحمام و الطريق قال النووي و مذهبنا لاتكره فيهما قال وكرهها الشعبي في الحش و بيت الرحا و هي تدور قال و هو مقتضى مذهبنا مسألة و يستحب ان يجلس مستقبلا متخشعا بسكينة و وقار مطرقا رأسه مسالة و يسن ان يستاك تعظيما و تطهيرا و قدروي ابن ماجة عن علي موقوفا و البزار بسند جيد عنه مرفوعا ان افواهكم طريق للقرآن فطيبوها بالسواك قلت و لو قطع القراءة و عاد عن قريب فمقتضى استحباب التعوذ اعادة السواك ايضا مسئلة و يسن التعوذ قبل القراءة قال تعالى فاذا قرأت القرآن فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم اي اردت قراءته و ذهب قوم الى انه يتعوذ بعدها لظاهر الآية و قوم الى وجوبها لظاهر الامر قال النووي فلومر على قوم سلم عليهم و عاد الى القراءة فان اعاد التعوذ كان حسنا قال و صفته المختارة اعوذ بالله من الشيطان الرجيم و كان جماعة من السلف يزيدون السميع العليم انتهى و عن حمزة استعيذ و نستعيذ و استعذت و اختاره صاحب الهداية من الحنفية لمطابقة لفظ القرآن و عن حميد بن قيس اعوذ بالله القادر من الشيطان الغادر و عن ابي السماك اعوذ بالله القوي من الشيطان الغوي و عن قوم اعوذ بالله العظيم من الشيطان الرجيم و عن آخرين

اقوياء اصحاب رسول الله صلى الله عليه و سلم يقرؤن القرآن في سبع بعضهم في شهر و بعضهم في شهرين و بعضهم في اكثر من ذلك و قال ابو الليث فى البستان ينبغي للقاري ان يختم فى السنة مرتين ان لم يقدر على الزيادة وقد روى الحسن بن زياد عن ابي حنيفة انه قال من قرأ القرآن في كل سنة مرتين فقد ادى حقه لان النبي صلى الله عليه وسلم عرض على جبرئيل فى السنة التي قبض فيها مرتين وقال غيره يكره تاخير ختمة اكثر من اربعين يوما بلا عذر نص عليه احمد لان عبد الله ابن عمر وسأل النبي صلى الله عليه و سلم في كم يختم القرآن قال في اربعين يوما رواه ابو داؤد وقال النووي فى الاذكار المختار ان ذلك يختلف باختلاف الاشخاص فمن كان يظهر له بتدقيق الفكر لطايف و معارف فليقتصر على قدر يحصل له معه كمال فهم ما يقرأ وكذلك من كان مشغولا بنشر العلم او فصل الحكومات او غير ذلك من مهمات الدين و المصالح العامة فليقتصر على قدر لا يحصل بسببه اخلال بما هو مرصد له ولا فوات كماله وان لم يكن من هؤلاء المذكورين فليستكثر ما امكنه من غير خروج الى حد الملل او الهذرمة فى القراءة مسالة نسيانه كبيرة صرح به النووي فى الروضة و غيرها لحديث ابي داؤد وغيره عرضت على ذنوب امتي فلم ار ذنبا اعظم من سورة من القرآن او آية اوتيها رجل ثم نسيها و روى ايضا حديث من قرأ القران ثم نسيه لقى الله يوم القيمة اجذم وفى الصحيحين تعاهدوا القرآن فوالذي نفس محمد بيده لهو اشد تفلتا من الابل في عقلها مسالة يستحب الوضوء لقراءة القرآن لانه افضل الاذكار وقد كان صلى الله عليه وسلم يكره ان يذكر الله الا على طهر كما ثبت فى الحديث قال امام الحرمين ولا تكره القراءة للمحدث لانه صح

ابي داؤد عن مسلم بن مخراق قال قلت لعائشة ان رجالا يقرأ احدهم القرآن في ليلة مرتين اوثلاثا فقالت قرؤا ولم يقرؤا كنت اقوم مع رسول الله صلى الله و عليه و سلم ليلة التمام فيقرأ بالبقرة و آل عمران والنساء فلا يمر بآية فيها استبشار الادعا و رغب ولا بآية فيها تخويف الادعا و استعاذ ويلي ذلك من كان يختم ليلتين ويليه من كان يختم في كل ثلاث و هو حسن وكره جماعات الختم في اقل من ذلك لما روى ابو داؤد والترمذي و صححه من حديث عبدالله بن عمرو مرفوعا لا يفقه من قرأ القرآن في اقل من ثلاث واخرج ابن ابي داؤد وسعيد بن منصور عن ابن مسعود موقوفا قال لا يقرأ القرآن في اقل من ثلاث واخرج ابو عبيد عن معاذ ابن جبل انه كان يكره ان يقرأ القرآن في اقل من ثلاث واخرج احمد و ابو عبيد عن سعد بن المنذر و ليس له غيره قال قلت يا رسول الله اقرأ القرآن في ثلاث قال نعم ان استطعت ويليه من ختم في اربع ثم في خمس ثم في ست ثم في سبع وهذا اوسط الامور و احسنها و هو فعل الاكثرين من الصحابة و غيرهم اخرج الشيخان عن عبدالله بن عمرو قال قال لي رسول الله صلى الله عليه و سلم اقرأ القرآن في شهر قلت اني اجد قوة قال اقرأه في عشر قلت اني اجد قوة قال اقرأه في سبع ولا تزد على ذلك واخرج ابو عبيد و غيره من طريق واسع بن حبان عن قيس بن ابي صعصعة و ليس له غيره انه قال يا رسول الله في كم اقرأ القرآن قال في خمس عشرة قلت اني اجدني اقوى من ذلك قال اقرأه في جمعة ويلي ذلك من ختم في ثمان ثم في عشر ثم في شهر ثم في شهرين اخرج ابن ابي داؤد عن مكحول قال كان

مسألة مسألة ليسهل تناولها مسألة يستحب الاكثار من قراءة القرآن و تلاوته قال الله تعالى مثنيا على من كان ذلك دابه و يتلون آيات الله اناء الليل و فى الصحيحين من حديث ابن عمر لاحسد الا في اثنتين رجل آتاه الله القرآن فهو يقوم به اناء الليل و اناء النهار و روى الترمذي من حديث ابن مسعود رض من قرأ حرفا من كتاب الله فله به حسنة الحسنة بعشر امثالها و اخرج من حديث ابي سعيد عن النبي صلى الله عليه و سلم يقول الرب سبحانه و تعالى من شغله القرآن و ذكري عن مسألتي اعطيته افضل ما اعطى السائلين و فضل كلام الله على سائر الكلام كفضل الله على سائر خلقه و اخرج مسلم من حديث ابي امامة اقرؤا القرآن فانه يأتي يوم القيمة شفيعا لاصحابه و اخرج البيهقي من حديث عائشه رضى الله تعالى عنها البيت الذي يقرا فيه القرآن يترايا لاهل السماء كما تترا يا النجوم لاهل الارض و اخرج من حديث انس نور و امناز لكم بالصلوة و قراءة القرآن و اخرج من حديث النعمان بن بشير افضل عباده امتي قراءة القرآن و اخرج من حديث سمرة من جندب كل مودب يجب ان يوتي ادبه و ادب الله القرآن فلا تهجروه و اخرج من حديث عبيدة المكي مرفوعا و موقوفا يا اهل القرآن لا توسدوا القرآن و اتلوه حق تلاوته اناء الليل و النهار و افشوه و تدبروا ما فيه لعلكم تفلحون و قد كان للسلف في قدر القرآت عادات فاكثر ما ورد في كثرة القراة من كان يختم فى اليوم و الليلة ثماني ختمات اربعا فى الليل و اربعا بالنهار ويليه من كان يختم فى اليوم والليلة اربعا ويليه ثلاثا ويليه ختمتين ويليه ختمة و قد ذمت عائشة ذلك و اخرج ابن

ان احق ما اخذتم عليه اجرا كتاب الله و قيل ان تعين عليه لم يجز و اختاره الحليمي و قيل لا يجوز مطلقا و عليه ابو حنيفة رضي الله تعالى عنه لحديث ابي داؤد عن عبادة بن الصامت انه علم رجلا من اهل الصفة القرآن فاهدى له قوسا فقال له النبي صلى الله عليه و سلم ان سرك ان تطوق بها طوقا من نار فاقبلها و اجاب من جوزه بان في اسناده مقالا و بانه تبرع بتعليمه فلم يستحق شيئا ثم اهدى اليه على سبيل العوض فلم يجز له الاخذ بخلاف من يعقد معه اجارة قبل التعليم و فى البستان لابي الليث التعليم على ثلثة اوجه احدها للحسنة ولا يأخذ به عوضا و الثاني ان يعلم بالاجرة و الثالث ان يعلم بغير شرط فاذا اهدى اليه قبل فالاول ما جور و عليه عمل الانبياء والثاني مختلف فيه و الارجح الجواز و الثالث يجوز اجماعا لان النبي صلى الله عليه و سلم كان معلما للخلق و كان يقبل الهدية فائدة رابعة كان ابن بصحان اذا رد على القاري شيئا فاته فلم يعرفه كتبه عليه عنده فاذا اكمل الختمة و طلب الاجازة سأله عن تلك المواضع فان عرفها اجازه و الاتركه يجمع ختمة اخرى فائدة اخرى على مريد تحقيق القرآت و احكام تلاوة الحروف ان يحفظ كتابا كاملا يستحضر به اختلاف القراء و تمئيز الخلاف الواجب من الخلاف الجائز فائدة اخرى قال ابن الصلاح في فتاواه قراءة القرآن كرامة اكرم الله بها البشر فقد ورد ان الملائكة لم يعطوا ذلك و انها حريصة لذلك على استماعه من الانس النوع الخامس و الثلاثون في آداب تلاوته و تاليه افرده بالتصنيف جماعة منهم النووي فى التبيان وقد ذكر فيه و في شرح المهذب وفى الاذكار جملة من الاداب و انا الخصها هنا و ازيد عليها اضعافها و افصلها

او يقرأها مالم يقرأها على شيخ لم ارفي ذلك نقلا ولذلك وجه من حيث ان الاحتياط في اداء الفاظ القرآن اشد منه في الفاظ الحديث ولعدم اشتراطه فيه وجه من حيث ان اشتراط ذلك فى الحديث انما هولخوف ان يدخل فى الحديث ماليس منه او يتقول على النبي صلى الله عليه وسلم مالم يقله و القرآن محفوظ متلقى متداول ميسرو هذا هوالظاهر فائدة ثانية الاجازة من الشيخ غير شرط في جواز التصدي للاقراء و الافادة فمن علم من نفسه الا هلية جازله ذلك وان لم يجزه احد وعلى ذلك السلف الاولون و الصدر الصالح و كذلك في كل علم و فى الاقراء و الافتاء خلافا لما يتوهمه الاغبياء من اعتقاد كونها شرطا و انما اصطلح الناس على الاجازة لان اهلية الشخص لا يعلمها غالبا من يريد الاخذ عنه من المبتديين و نحوهم لقصور مقامهم عن ذلك والبحث عن الا هلية قبل الاخذ شرط فجعلت الاجازة كالشهادة من الشيخ للمجاز بالا هلية فائدة ثالثة ما اعتاده كثير من مشايخ القراء من امتناعهم من الاجازة الا باخذ مال في مقابلها لايجوز اجماعا بل ان علم اهلية و جب عليه الاجازة اوعدمها حرم عليه وليس الاجازة مما يقابل بالمال فلايجوز اخذه عنها ولا الاجرة عليها وفي فتاوى الصدر موهوب الجزري من اصحابنا انه سئل عن شيخ طلب من الطالب شيا على اجازته فهل للطالب رفعه الى الحاكم و اجباره على الاجازة فاجاب لاتجب الاجازة على الشيخ ولا يجوز اخذ الاجرة عليها وسئل ايضا عن رجل اجازه الشيخ بالاقراء ثم بان انه لا دين له و خاف الشيخ من تفريط فهل له النزول عن الاجازة فاجاب لا تبطل الاجازة بكونه غير دين واما اخذ الاجرة على التعليم فجائز ففى البخاري

التي فوقه و هكذا الى آخر مراتب المد او يبدأ بالمشيع ثم بما دونه الى القصر و انما يسلك ذلك مع شيخ بارع عظيم الا ستحضار اما غيره فيسلك معه ترتيبا واحدا قال و على الجامع ان ينظر ما فى الا حرف من الخلاف اصولا و فرشا فما امكن فيه التداخل اكتفى منه بوجه و مالم يمكن فيه نظر فان امكن عطفه على ماقبله بكلمة او كلمتين او باكثر من غير تخليط ولا تركيب اعتمده و ان لم يحسن عطفه رجع الى موضع ابتدائه حتى يستوعب الا وجه كلها من غير اهمال ولا تركيب ولا اعادة ما دخل فان الاول ممنوع و الثاني مكروه و الثالث معيب و اما القراءة بالتلفيق وخلط قراءة باخرى فسيأتي بسطه فى النوع الذي يلي هٰذا واما القرا آت و الروايات و الطرق و الاوجه فليس للقاري ان يدع منها شيئا اوبخل به فانه خلل في اكمال الرواية الا الاوجه فانها على سبيل التخيير فاي وجه اتى به اجزاه في تلك الرواية و اما قدر مايقرأ حال الاخذ فقدكان الصدر الاول لايزيدون على عشرآيات لكائن من كان و اما من بعدهم فرأوه بحسب قوة الاخذ قال ابن الجزري و الذي استقر عليه العمل الاخذ فى الافراد بجزء من اجزاء مأية و عشرين و فى الجمع بجزو من اجزاء مأيتين و اربعين ولم يحدله آخرون حدا و هواختيار السخاوي و قدلخصت هٰذا النوع ورتبت فيه متفرقات كلام ائيمة القرآت وهو نوع مهم يحتاج اليه القاري كاحتياج المحدث الى مثله من علم الحديث فائدة ادعى ابن خير الاجماع على انه ليس لاحد ان ينقل حديثا عن النبي صلى الله عليه و سلم مالم يكن له به رواية و لوبالاجازة فهل يكون حكم القرآن كذلك فليس لاحدان ينقل آية

و تاهل و اراد و ان يجمع القرآت في ختمة لا يكلفونه الا فراد لعلمهم بوصوله الى حد المعرفة و الاتقان ثم لهم فى الجمع مذهبان احدهما الجمع بالحرف بان يشرع فى القراءة فاذا مر بكلمة فيها خلف اعادها بمفردها حتى يستوفي ما فيها ثم يقف عليها ان صلحت للوقف والا وصلها باخروجه حتى تنتهي الى الوقف وان كان الخلف يتعلق بكلمتين كالمد المنفصل وقف على الثانية و استوعب الخلاف وانتقل الى ما بعدها وهذا مذهب المصريين وهوا وثق فى الاستيفاء واخف على الآخذ لكنه يخرج عن رونق القراءة و حسن التلاوة الثانى الجمع بالوقف بان يشرع بقراءة من تقدمه حتى ينتهي الى وقف ثم يعود الى القارئ الذي بعده الى ذلك الوقف ثم يعود وهكذا حتى يفرغ وهذا مذهب الشاميين وهو اشد استحضارا واشد استظهارا و اطول زمانا و اجود مكانا وكان بعضهم يجمع بالآية على هذا الرسم وذكر ابوالحسن الفحاظى في قصيدته و شرحها لجامع القرا آت شروطا سبعة حاصلها خمسة احدها حسن الوقف ثانيها حسن الابتداء ثالثها حسن الاداء رابعها عدم الترتيب فاذا قرأ القاري لا ينتقل الى قراءة غيره حتى يتم ما فيها فان فعل لم يدعه الشيخ بل يشير اليه بيده فان لم يتفطن قال لم تصل فان لم يتفطن مكث حتى يتذكره فان عجز ذكره له الخامس رعاية الترتيب فى القراء و الابتداء بما بدأبه المؤلفون فى كتبهم فيبدأ بنافع قبل ابن كثيرو و بقالون قبل ورش قال ابن الجزري و الصواب ان هذاليس بشرط بل يستحب بل الذين ادركناهم من الاستاذين لا يعدون الماهر الا من لا يلتزم تقديم شخص بعينه و بعضهم كان يراعي فى الجمع التناسب فيبدأ بالقصر ثم بالرتبة

السفينة فكانت لمساكين يعملون فى البحر نقلوا ذلك من تغنيهم بقول الشاعر *

اما القطاة فاني سوف انعتها  لغتا يوافق عندي بعض ما فيها

و قد قال صلى الله عليه و سلم في هولاء مفتونة قلوبهم و قلوب من يعجبهم شأنهم و مما ابتدعوه شي سموه الترعيد و هو ان يرعد صوته كالذي يرعد من برد او الم و آخر سموه الترقيص و هو ان يروم السكوت على الساكن ثم ينفرّ مع الحركة كأنه في عدو و هرولة و اخر يسمى التطريب و هو ان يترنم بالقرآن و يتنغم به فيمد في غير مواضع المد و يزيد فى المد على ماينبغي و آخر يسمى التحزين و هو ان يأتي على وجه حزن يكاد يبكي مع خشوع و خضوع و من ذلك نوع احدثه هولاء الذين يجتمعون فيقرؤن كلهم بصوت و احد فيقولون في قوله افلا يعقلون افل يعقلون بحذف الالف قال امنا بحذف الواو و يمدون مالا يمد ليستقيم لهم الطريق الذي سلكوها و ينبغي ان يسمى التحريف انتهى

## فصل في كيفية الاخذ بافراد القرآت وجمعها الذي

كان عليه السلف اخذ كل ختمة برواية لا يجمعون رواية الى غيرها الى اثناء المأية الخامسة فظهر جمع القرآت فى الختمة الواحدة و استقر عليه العمل ولم يكونوا يسمحون به الا لمن افرد القرآت و اتقن طرقها وقرأ لكل قاري بختمة على حدة بل اذا كان للشيخ راويان قرؤا لكل راو بختمة ثم يجمعون له و هكذا و تساهل قوم فسمحوا ان يقرأ لكل قاري من السبعة بختمة سوى نافع وحمزة فانهم كانوا يأخذون ختمة لقالون ثم ختمة لورش ثم ختمة لخلف ثم ختمة لخلاد ولا يسمح احد بالجمع الا بعد ذلك نعم اذا رأو شخصا افرد و جمع على شيخ معتبر و اجيز

فى الجهر و انفردت التاء بالهمس و اشتركت مع الدال فى الانفتاح و الاستفال والظاء و الذال والثاء اشتركت مخرجا ورخاوة و انفردت الظاء بالاستعلاء والاطباق و اشتركت مع الذال فى الجهر و انفردت الثاء بالهمس و اشتركت مع الذال انفتاحا و استفالا والصاد و لزاء والسين اشتركت مخرجا ورخاوة و صفيرا و انفردت الصاد بالاطباق والاستعلاء و اشتركت مع السين فى الهمس و انفردت الزاء بالجهر و اشتركت مع السين فى الانفتاح والاستفال فاذا احكم القاري النطق بكل حرف على حدته موفي حقه فليعمل نفسه باحكامه حالة التركيب لانه ينشأ عن التركيب مالم يكن حالة الافراد بحسب ما يجاورها من مجانس و مقارب و قوي و ضعيف و مفخم و مرقق فيجذب القوي الضعيف و يغلب المفخم المرقق و يصعب على اللسان النطق بذلك على حقه الا بالرياضة الشديدة فمن احكم صحة التلفظ حالة التركيب حصل حقيقة التجويد و من قصيدة الشيخ علم الدين فى التجويد و من خطه نقلت *

لا تحسب التجويد مدا مفرطا او مد ما لا مد فيه لواني
او ان تشدد بعد مد همزة او ان تلوك الحرف كالسكران
او ان تفوه بهمزة متهوعا فيفرسا معها من الغثيان
للحرف ميزان فلاتك طاغيا فيه ولا تك مخسر الميزان
فاذا همزت فجيء به متلطفا من غير ما بهر و غير توان
و امدد حروف المد عند مسكن او همزة حسنا اخا احسان

فائدة قال في جمال القراء قد ابتدع الناس في قراءة القرآن اصوات الغناء و يقال ان اول ما غني به من القرآن قوله تعالى اما

السادس اقصاه من اسفل مخرج القاف قليلا و ما يليه من الحنك للكاف السابع وسطه بينه و بين وسط الحنك للجيم والشين والياء والثامن للضاد المعجمة من اول حافة اللسان و ما يليه من الاضراس من الجانب الايسر و قيل الايمن التاسع للام من حافة اللسان من ادناها الى منتهى طرفه و ما بينها و بين ما يليها من الحنك الا على العاشر للنون من طرفه اسفل اللام قليلا الحادي عشر للراء من مخرج النون لكنها ادخل في ظهر اللسان الثاني عشر للطاء والدال و التاء من طرفه و اصول الثنا يا العليا مصعدا الى جهة الحنك الثالث عشر لحروف الصفير الصاد والسين و الزاء من بين طرف اللسان و فويق الثنا يا السفلى الرابع عشر للظاء والثاء و الذال من بين طرفه و اطراف الثنايا العليا الخامس عشر للفاء من باطن الشفة السفلى و اطراف الثنايا العليا السادس عشر للباء والميم والواو غير المدية بين الشفتين السابع عشر الخيشوم للغنة في الادغام والنون والميم الساكنة قال في النشر فالهمزة والهاء اشتركا مخرجا و انفتاحا و استفالا وانفردت الهمزة بالجهر والشدة والعين والحاء اشتركا كذلك وانفردت الحاء بالهمس والرخاوة الخالصة والغين والخاء اشتركا مخرجا ورخاوة واستعلاء وانفتاحا وانفردت الغين بالجهر والجيم والشين الياء اشتركت مخرجا وانفتاحا واستفالا وانفردت الجيم بالشدة و اشتركت مع الياء في الجهر وانفردت الشين بالهمس و التفشي و اشتركت مع الياء في الرخاوة والضاد والظاء اشتركا صفة جهرا ورخاوة و استعلاء و اطباقا و افترقا مخرجا و انفردت الضاد بالاستطالة و الطاء و الدال والتاء اشتركت مخرجا و شدة وانفردت الطاء بالاطباق والاستعلاء و اشتركت مع الدال

علماء القراءة و غيرهم و هو الخطأ فى الاعراب و الخفي يخل اخلالا يختص بمعرفة علماء القراءة و ائمة الاداء الذين تلقوه من افواه العلماء و ضبطوه من افواه اهل الاداء قال ابن الجزري و لا اعلم لبلوغ النهاية فى التجويد مثل رياضة الالسن والتكرار على اللفظ المتلقى من فم المحسن و قاعدته ترجع الى معرفة كيفية الوقف والامالة و الادغام واحكام الهمز والترقيق و التفخيم و مخارج الحروف و قد تقدمت الاربعة الاول و اما الترقيق فالحروف المستقلة كلها مرققة لا يجوز تفخيمها الا اللام من اسم الله بعد فتحة او ضمة اجماعا او بعد حروف الاطباق في رواية و الا الراء المضمومة او المفتوحة مطلقا اوالساكنة في بعض الاحوال والحروف المستعلية كلها مفخمة لا يستثنى منها شيء في حال من الاحوال و اما مخارج الحروف فالصحيح عند القراء و متقدمي النحاة كالخليل انها سبعة عشر و قال كثير من الفريقين ستة عشر فاسقطوا مخرج الحروف الجوفية و هي حروف المد واللين وجعلوا مخرج الالف من اقصى الحلق و الوا و من مخرج المتحركة و كذا الياء و قال قوم اربعة عشر فاسقطوا مخرج النون و اللام والراء و جعلوها من مخرج واحد قال ابن الحاجب و كل ذلك تقريب و الا فلكل حرف مخرج على حدة قال الفراء و اختيار مخرج الحرف محققا ان يلفظ بهمزالوصل و يأتي بالحرف بعده ساكنا او مشددا وهوا بين بلا خطأ فيه صفات ذلك الحرف المخرج الاول الجوف للالف و الواو والياء الساكنتين بعد حركة تجانسهما الثاني اقصى الحلق للهمزة و الهاء الثالث وسطه للعين والحاء المهملتين الرابع ادناه للفم للغين و الخاء الخامس اقصى اللسان مما يلي الحلق و ما فوقه من الحنك للقاف

اللفظ و تمكين الحروف بدون بتر حروف المد و اختلاس اكثر الحركات و ذهاب صوت الغنة و التفريط الى غاية لا تصح بها القراءة و لا توصف بها التلاوة وهذا النوع مذهب ابن كثير و ابي جعفر و من قصر المنفصل كابي عمر و يعقوب الثالثة التدوير و هو التوسط بين المقامين من التحقيق و الحدر و هو الذي ورد عن اكثر الائمة ممن مد المنفصل و لم يبلغ فيه الاشباع و هو مذهب سائر القراء و هو المختار عند اكثر اهل الاداء تنبيه سيأتي في النوع الذي يلي هذا استحباب الترتيل في القراءة والفرق بينه و بين التحقيق فيما ذكره بعضهم ان التحقيق يكون للرياضة و التعليم و التمرين والترتيل يكون للتدبر و التفكر والاستنباط فكل تحقيق ترتيل و ليس كل ترتيل تحقيقا

## فصل

من المهمات تجويد القرآن و قد افرده جماعة كثيرون بالتصنيف منهم الداني وغيره اخرج عن ابن مسعود انه قال جودوا القرآن قال القراء التجويد حلية القراءة و هو اعطاء الحروف حقوقها و ترتيبها و رد الحرف الى مخرجه واصله و تلطيف النطق به على كمال هيئته من غير اسراف ولا تعسف ولا افراط و لا تكلف و الى ذلك اشار صلى الله عليه و سلم بقوله من احب ان يقرأ القرآن غضا كما انزل فليقرأه على قراءة ابن ام عبد يعني ابن مسعود وكان رضي الله عنه قد اعطي حظا عظيما في تجويد القرآن و لا شك ان الامة كماهم متعبدون بفهم معاني القرآن و اقامة حدوده هم متعبدون بتصحيح الفاظه و اقامة حروفه على الصفة المتلقاة من ائمة القراء المتصلة بالحضرة النبوية و قد عد العلماء القراءة بغير تجويد لحنا فقسموا اللحن الى جلي وخفي فاللحن خلل يطرأ على الالفاظ فيخل الا ان الجلي يخل اخلالا ظاهرا يشترك في معرفة

الشيخ و لوكان غيره يقرأ عليه في تلك الحالة اذا كان بحيث لا يخفى عليه حالهم وقد كان الشيخ علم الدين السخاوي يقرأ عليه اثنان وثلاثة في اماكن مختلفة و يرد على كل منهم و كذا لوكان الشيخ مشتغلا بشغل آخر كنسخ ومطالعة و اما القراءة من الحفظ فالظاهر انها ليست بشرط بل يكفي ولو من المصحف فصل كيفيات القراءة ثلثة احدها التحقيق و هوا عطاء كل حرف حقه من اشباع المد وتحقيق الهمزة و اتمام الحركات و اعتماد الاظهار و التشديدات و بيان الحروف و تفكيكها و اخراج بعضها من بعض بالسكت والترتيل والتؤدة وملاحقة الجائز من الوقوف بلا قصر و لا اختلاس ولا اسكان محرك ولا ادغامه وهو يكون لرياضة الالسن و تقويم الالفاظ و يستحب الاخذ به على المتعلمين من غيران يتجاوز فيه الى حدالافراط بتوليد الحروف من الحركات وتكريرالرا ات و تحريك السواكن و تطنين الذونات بالمبالغة في الغنات كما قال حمزة لبعض من سمعه يبالغ في ذلك اما علمت ان ما فوق البياض برص و ما فوق الجعودة قطط و ما فوق القراءة ليس بقراة و كذا يحترز من الفصل بين حروف الكلمة كمن يقف على التاء من نستعين وقفة لطيفة مدعيا انه يرتل و هذا النوع من القراءة مذهب حمزة و ورش و قد اخرج فيه الداني حديثا في كتاب التجويد مسلسلا الى ابي بن كعب انه قرأ على رسول الله صلى الله عليه وسلم التحقيق و قال انه غريب مستقيم الاسناد الثانية الحدر بفتح الحاء و سكون الدال المهملتين و هو ادراج القراءة و سرعتها و تخفيفها بالقصر والتسكين والاختلاس والبدل والادغام الكبير و تخفيف الهمزة و نحو ذلك مما صحت به الرواية مع مراعاة اقامة الاعراب و تقويم

وتظهر فائدة الخلاف في المد فان كان الساقط الاولى فهو منفصل اوالثانية فهومتصل النوع الرابع والثلاثون في كيفية تحمله اعلم ان حفظ القرآن فرض كفاية على الامة صرح به الجرجاني في الشافي والعبادي وغيرهما قال الجويني والمعنى فيه ان لا ينقطع عدد التواتر فيه فلا تيطرق اليه التبديل و التحريف فان قام بذلك قوم يبلغون هذا العدد سقط عن الباقين والا اثم الكل و تعليمه ايضا فرض كفاية و هو من افضل القرب ففي الصحيح خيركم من تعلم القرآن و علمه و اوجه التحمل عند اهل الحديث السماع من لفظ الشيخ والقراءة عليه والسماع عليه بقراءة غيره والمناولة والاجازة والمكاتبة والوصية والاعلام والوجادة فاما غير الاولين فلايأتي هنا لما يعلم مما سنذكره واما القراءة على الشيخ فهي المستعملة سلفا وخلفا و اماالسماع من لفظ الشيخ فيحتمل ان يقال به هنا لان الصحابة رضي الله عنهم انما اخذوا القرآن من في النبي صلى الله عليه و سلم لكن لم يأخذ به احد من القراء والمنع فيه ظاهر لان المقصود هنا كيفية الاداء وليس كل من سمع من لفظ الشيخ يقدر على الاداء كهيئة بخلاف الحديث فان المقصود فيه المعني او اللفظ لا با لهيئآت المعتبرة في اداء القرآن واماالصحابة فكانت فصاحتهم و طباعهم السليمة تقتضي قدرتهم على الاداء كما سمعوه من النبي صلى الله عليه وسلم لانه نزل من بلغتهم و مما يدل للقراءة على الشيخ عرض النبي صلى الله عليه و سلم القرآن على جبريل في رمضان كل عام ويحكى ان الشيخ شمس الدين بن الجزري لما قدم القاهرة وازد حمت عليه الخلق لم يتسع وقته لقراءة الجميع فكان يقرأ عليهم الآية ثم يعيدونها عليه دفعة واحدة فلم يكتف بقراءته و يجوز القراءة على

فخففوا و سكنوا في جميع القرآن ثانيها الابدال بان يبدل الهمزة الساكنة حرف مد من جنس حركة ما قبلها فتبدل الفاً بعد الفتح نحو و امر اهلك و وا وا بعد الضم نحو يومنون و ياء بعدالكسرة نحو جيت و به يقرأ ابو عمرو سواء كانت الهمزة فاء ا ام عينا ام لاما الا ان يكون سكونها جزما نحو ننساها او بنا نحو ارجيه او يكون ترك الهمز فيه اثقل وهو تووي اليك فى الاحزاب او يوقع فى الالتباس و هوريا في مريم فان تحركت فلاخلاف عنه فى التحقيق نحو يؤده ثالثها التسهيل بينها و بين حرف حركتها فان اتفق الهمزتان فى الفتح سهل الثانية الحرميان و ابو عمرو و هشام وابدلها ورش الفا و ابن كثير لا يدخل قبلها الفا وقالون و هشام و ابو عمرو يدخلونها والباقون من السبعة يحققون و ان اختلفا بالفتح والكسر سهل الحرميان و ابو عمرو الثانية وادخل قالون و ابو عمرو قبلها الفا والباقون يحققون اوبالفتح والضم و ذلك في قل اؤ نبيئكم ا انزل عليه الذكرا والقي فقط فالثلاثة يسهلون و قالون يدخل الفا والباقون يحققون قال الداني و قد اشار الصحابة الى التسهيل بكتابة الثانية وا وا رابعها الاسقاط بلانقل وبه قرأ ابو عمرو اذا اتفقتا فى الحركة وكانتا في كلمتين فان اتفقا كسرا نحو هولاء ان كنتم جعل ورش و قنبل الثانية كياء ساكنة و قالون والبزي الاولى كياء مكسورة و اسقطها ابو عمرو والباقون يحققون فان اتفقا فتحا نحو جاء اجلهم جعل ورش و قنبل الثانية كمدة و اسقط الثلثة الاولى والباقون يحققون اوضما و هو اولياء اولئك فقط اسقطها ابوعمرو وجعلها قالون والبزي كواو مضمومة والآخر ان يجعلان الثانية كواو ساكنة والباقون يحققون ثم اختلفوا فى الساقط هل هوالاولى اوالثانية والاول عن ابي عمرو والثاني عن الخليل من النحاة

المقصور و مد المبالغه في نحو لااله الاالله ومد البدل من الهمزة في نحو آدم و آخرو آمن وقدره الف تامة بالاجماع و مد الاصل في الافعال الممدودة نحو جاء و شاء و الفرق بينه و بين مد البينة ان تلك الاسماء بنيت على المد فرقا بينها و بين المقصور و هذه مدات في اصول افعال احدثت لمعان انتهى النوع الثالث والثلاثون في تخفيف الهمزة فيه تصانيف مفردة اعلم ان الهمز لما كان اثقل الحروف نطقاوا بعدها مخرجا تنوع العرب في تخفيفه بانواع التخفيف و كانت قريش واهل الحجاز اكثرهم له تخفيفا و لذلك اكثر ما يرد تخفيفه من طرقهم كابن كثير من رواية ابن فليح و كنافع من رواية ورش و كابي عمرو فان مادة قراءته عن اهل الحجاز و قد اخرج ابن عدي من طريق موسى بن عبيدة عن نافع عن ابن عمر قال ماهمز رسول الله صلى الله عليه و سلم ولا ابو بكر ولا عمر ولا الخلفاء وانما الهمز بدعة ابتدعوها من بعدهم قال ابو شامة هذا حديث لا يحتج به وموسى بن عبيدة الزيدي ضعيف عند ائمة الحديث قلت و كذا الحديث الذي اخرجه الحاكم في المستدرك من طريق حمران بن اعين عن ابى الاسود الديلي عن ابي ذر قال جاء اعرابي الى رسول الله صلى الله عليه و سلم فقال يا نبيء الله قال لست بنبيء الله ولكني نبي الله قال الذهبي حديث منكر و حمران رافضي ليس بثقة و احكام الهمز كثيرة لا يحصيها اقل من مجلد و الذي نورده هنا ان تخفيفه اربعة انواع احدها النقل لحركته الى الساكن قبله فيسقط نحو قد افلح بفتح الدال و به قرأ نافع من طريق ورش و ذلك حيث كان الساكن صحيحا آخرا والهمزة اولا و استثنى اصحاب يعقوب عن ورش كتابيه اني ظننت فسكنوا الهاء و حققو الهمز واما الباقون

في قراءة ابي عمرو قاعدة متى اجتمع سببان قوي وضعيف عمل بالقوي والغي الضعيف اجماعا ويتخرج عليها فروع منها الفرع السابق في اجتماع اللفظي والمعنوي ومنها نحو جاؤا اباهم ورأى ايديهم اذا قرئ لورش لا يجوز فيه القصر ولا التوسط بل الاشباع عملا با قوى السببين وهو المد لاجل الهمز بعده فان وقف على جاؤا ورأى جازت الاوجه الثلاثة بسبب تقدم الهمز على حرف المد وذهاب سببية الهمز بعده فائدة قال ابو بكر احمد بن الحسين بن مهران النيسابوري مدات القرآن على عشرة اوجه مد الحجز في نحو أأنذرتهم أأنت قلت للناس أئذا متنا أألقي عليه الذكر لانه ادخل بين الهمزتين حاجزا بينهما لاستثقال العرب جمعهما وقدره الف تامة بالاجماع لحصول الحجز بذلك ومد العدل في كل حرف مشدد قبله حرف مدولين نحو الضالين لانه يعدل حركة اي يقوم مقامها في الحجز بين الساكنين ومد التمكين في نحو اولئك والملائكة وشعائر من المدات التي تليها همزة لانه جلب ليتمكن به من تحقيقها واخراجها من مخرجها ومد البسط ويسمى ايضا مد الفصل في نحو بما انزل لانه يبسط بين كلمتين ويفصل به بين كلمتين متصلتين ومد الروم في نحوها انتم يرومون الهمزة من انتم ولا يحققونها ولا يتركونها اصلا ولكن يلينونها ويشيرون اليها وهذا على مذهب من لا يهمزها انتم وقدره الف ونصف ومد الفرق في نحو الآن لانه يفرق به بين الاستفهام والخبر وقدره الف تامة بالاجماع فان كان بين الف المد حرف مشدد زيد الف اخرى ليتمكن به من تحقيق الهمزة نحو الذاكرين الله ومد البينة في نحو ما ودعا وندا وذكريا لان الاسم بني على المد فرقا بينه وبين

و ذكر انها لحمزة السابعة الافراط قدرها الهذلي بست و ذكرها لورش قال ابن الجزري وهذا الاختلاف في تقدير المراتب بالالفات لا تحقيق و راه بل هو لفظي لان المرتبة الدنيا و هي القصر اذا زيد عليها ادنى زيادة صارت ثانية ثم كذلك حتى تنتهي الى القصوى و اما العارض فيجوز فيه لكل من القراء كل من الاوجه الثلاثة المد والقصر و التوسط و هي اوجه تخيير و اما السبب المعنوي فهو قصد المبالغة في النفي و هو سبب قوي مقصود عند العرب و ان كان اضعف من اللفظي عند القراء و منه مد التعظيم في نحو لا اله الله لا اله الا هو لا اله الا انت و قد ورد عن اصحاب القصر في المنفصل لهذا المعنى و يسمى مد المبالغة قال ابن مهران في كتاب المدات انما سمي مد المبالغة لانه طلب للمبالغة في نفي الهية سوى الله سبحانه و تعالى قال و هذا مذهب معروف عند العرب لانها تمد عند الدعاء و عند الاستغاثة و عند المبالغة في نفي شيء و يمدون ما لا اصل له بهذه العلة قال ابن الجزري وقد ورد عن حمزة مد المبالغة للنفي في لا التي للتبرية نحو لاريب فيه لاشية فيها لا مرد له لاجرم و قدره في ذلك وسط لايبلغ الاشباع لضعف سببه نص عليه ابن القصاع وقد يجتمع السببان اللفظي و المعنوي في نحو لا اله الا الله و لا اكراه في الدين و لا اثم عليه فيمد لحمزة مدا مشبعا على اصله في المد لاجل الهمز و يلغي المعنوي اعمالا للاقوى والغاء للاضعف قاعدة اذا تغير سبب المد جاز المد مراعاة للاصل والقصر نظر اللفظ سواء كان السبب همزا او سكونا سواء تغير الهمز بين بين او بابدال او بحذف والمد اولى فيما بقي لتغييره اثر نحو هؤلاء ان كنتم في قراءة قالون والبزي والقصر فيما ذهب اثره نحوها

من غيرا فحاش . و ذهب آخرون الى تفاضله كتفاضل المنفصل فالطولى لحمزة و ورش و دونها لعاصم و دونها لابن عامر و الكسائي و خلف و دونها لابي عمرو و الباقين و ذهب بعضهم الى انه مرتبتان فقط الطولى لمن ذكر والوسطى لمن بقي و اما ذوالساكن و يقال له مدالعدل لانه يعدل حركة فالجمهور ايضا على مده مشبعا قدرا واحدا من غير افراط و ذهب بعضهم الى تفاوته و اما المنفصل و يقال له مد الفصل لانه يفصل بين الكلمتين ومد البسط لانه يبسط بين كلمتين و مد الاعتبار لاعتبار الكلمتين من كلمة ومد حرف بحرف اي مد كلمة بكلمة و المد الجائز من اجل الخلاف في مده و قصره فقد اختلفت العبارات في مقدار مده اختلافا لايمكن ضبطه والحاصل ان له سبع مراتب اولى القصر و هو حذف المد العرضي و ابقاء ذات حرف المد على ما فيها من غير زيادة وهي فى المنفصل خاصة لابي جعفر و ابن كثير ولابي عمرو عندالجمهور الثانية فويق القصر قليلا وقدرت بالفين و بعضهم بالف ونصف وهي لابي عمرو فى المتصل والمنفصل عند صاحب التيسير الثالثة فويقها قليلا و هي التوسط عندالجميع و قدرت بثلاث الفات و قيل بالفين و نصف و قيل بالفين على ان ما قبلها بالف و نصف وهي لابن عامر و الكسائي في الضربين عند صاحب التيسير الرابعة فويقها قليلا و قدرت باربع الفات و قيل بثلاث و نصف و قيل بثلاث على الخلاف فيما قبلها و هي لعاصم فى الضربين عند صاحب التيسير الخامسة فويقها قليلا و قدرت بخمس الفات و باربع و نصف و باربع على الخلاف و هي فيهما لحمزة و ورش عنده السادسة فوق ذلك و قدرها الهذلي بخمس الفات على تقديره الخامسة باربع

ما هكذا اقرأنيها رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال كيف اقرأ كها يا ابا عبد الرحمن قال اقرأنيها انما الصدقات للفقراء والمساكين فمدوها هذا حديث جليل حجة و نص فى الباب رجال اسناده ثقات اخرجه الطبراني فى الكبير المد عبارة عن زيادة مط في حرف المد على المد الطبيعي و هوالذي لا يقوم ذات حرف المد دونه والقصر ترك تلك الزيادة و ابقاء المد الطبيعي على حاله و حرف المد الالف مطلقا والوا والساكنة المضموم ما قبلها والياء الساكنة المكسورة ما قبلها و سببه لفظي و معنوي فا للفظي اما همزا و سكون فالهمز يكون بعد حرف المد وقبله والثاني نحو آدم و رأى و ايمان وخاطئين و اوتي والمؤدة و الاول ان كان معه في كلمة واحدة فهو المتصل نحو اولئك شاء الله والسواي و من سوء و يضيء و ان كان حرف المد آخر كلمة والهمزة اول اخرى فهوالمنفصل نحو بما انزل يا ايها قالوا امنا امره الى الله في انفسكم به الا الفاسقين و وجه المد لاجل الهمز ان حرف المد خفي والهمز صعب فزيد فى الخفي ليتمكن من النطق بالصعب و السكون اما لازم و هو الذي لا يتغير في حاليه نحو الضالين و دابة و آلم و تحاجوني او عارض و هوالذي يعرض للوقف و نحوه نحوالعباد و الحساب و نستعين و الرحيم و يوقنون حالة الوقف و فيه هدى و قال لهم و يقول ربنا حالة الادغام و وجه المد للسكون التمكن من الجمع بين الساكنين فكأنه قام مقام حركة و قد اجمع القراء على مد نوعي المتصل و ذى الساكن اللازم و ان اختلفوا في مقداره و اختلفوا في مد النوعين الآخرين وهما المنفصل و ذو الساكن العارض و في قصرهما فا ما المتصل فاتفق الجمهور على مده قدرا واحدا مشبعا

ستة احرف و هي حروف الحلق الهمزة و الهاء والعين والحاء والغين والخاء نحو ينأون من آمن كل آمن فانهار من هاد جرف هارا نعمت من عمل عذاب عظيم و انحر من حكيم حميد فسينغضون من غل اله غيره والمنخنقة من خير قوم خصمون وبعضهم يخفي عند الغين والخاء والادغام في ستة حرفان بلاغنة و هما اللام والراء نحو فان لم تفعلوا هدى للمتقين من ربهم ثمرة رزقا و اربعة بغنة وهي النون و الميم والياء والواو نحو عن نفس حطة نغفر من مال مثلا ما من وال و رعد و برق من يقول و برق يجعلون والاقلاب عند حرف واحد و هو الباء نحو انبئهم من بعد صم بكم بقلب النون و التنوين عند الباء ميما خاصة فتخفى بغنة والاخفاء عند باقى الحروف وهي خمسة عشر التا والثا والجيم والدال والذال والزاء والسين والشين والصاد والضاد والطاء والظاء والفاء والقاف والكاف نحو كنتم من تاب جنات تجري والانثى من ثمرة قولا ثقيلا انجيتنا ان جعل خلقا جديدا اندادا ان دعوا تأسادهاقا انذرتهم من ذهب وكيلا ذرية تنزيل من زوال صعيدا زلقا الانسان من سوء رجلا سالما انشرة ان شاء غفور شكور الانصار ان صدوكم جمالات صفر منضود من ضل وكلا ضربنا المقنطرة من طين صعيدا طيبا ينظرون من ظهير ظلا ظليلا فانفاق من فضله خالدا فيها انقلبوا من قرار سميع قريب المنكر من كتاب كريم والاخفاء حالة بين الادغام والاظهار و لا بد من الغنة معه النوع الثاني والثلثون فى المد والقصر افرده جماعة من القراء بالتصنيف والاصل فى المد ما اخرجه سعيد بن منصور في سننه حدثنا شهاب بن خراش حدثني مسعود بن يزيد الكندي قال كان ابن مسعود يقرئ رجلا فقرأ الرجل انما الصدقات للفقراء والمساكين مرسلة فقال ابن مسعود

فسوف و ان تعجب فعجب اذ هب فمن تبعك فاذهب فان و من
لم يتب فاولئك الثاني يعذب من في البقرة الثالث اركب معنا
في هود الرابع فخسف بهم في سبا الخامس الراء ساكنة عند اللام نحو
يغفر لكم و اصبر لحكم السادس اللام الساكنة في الذال من يفعل ذلك
حيث وقع السابع الثاء في الذال في يلهث ذلك الثامن الدال
في الثاء من يرد ثواب حيث وقع التاسع الذال في التاء من اتخذتم
و ما جاء من لفظه العاشر الذال فيها من فبنذتها في طه الحادي
عشر الدال فيها ايضا في عدت في غافر والدخان الثاني عشر الثاء
في التاء من لبثتم و لبثت كيف جاء الثالث عشر الثاء فيها في
اورثتموها في الاعراف والزخرف الرابع عشر الدال في الذال في
كهيعص ذكر الخامس عشر النون في الواو من يس والقرآن الحكيم
السادس عشر النون فيها من ن و القلم السابع عشر النون عند الميم
من طسم اول الشعراء والقصص قاعدة كل حرفين التقيا اولهما ساكن
و كانا مثلين او جنسين و جب ادغام الاول منهما لغة و قراءة فالمثلان
نحو اضرب بعصاك ربحت تجارتهم وقد دخلوا اذ ذهب وقل لهم
و هم من عن نفس يدرككم بوجهه والجنسان نحو قالت طائفة و قد
تبين اذ ظلمتم بل ران هل رأيتم قل رب مالم يكن اول المثلين حرف
مد نحو قالوا وهم الذي يوسوس اوا ول الجنسين حرف حلق نحو
فاصفح عنهم فائدة كره قوم الادغام في القرآن و عن حمزة انه كرهه في
الصلوة فتحصلنا على ثلثة اقوال تذنيب يلحق بالقسمين السابقين
قسم آخر اختلف في بعضه و هو احكام النون الساكنة والتنوين ولهما
احكام اربعة اظهار و ادغام و اقلاب و اخفاء فالاظهار لجميع القراء عند

الباقون بالاشارة روما و اشماما ضابط قال ابن الجزري جميع ما ادغمه ابو عمرو من المثلين والمتقاربين اذا وصل السورة بالسورة الف حرف و ثلثمائة واربعة احرف لدخول آخر القدر بلم يكن و اذا بسمل و وصل آخر السورة بالبسملة الف و ثلثمائة و خمسة لدخول آخر الرعد باول ابراهيم و آخر ابراهيم باول الحجر و اذا فصل بالسكت ولم يبسمل الف و ثلثمائة و ثلاثة و اما الادغام الصغير فهو ماكان الحرف الاول فيه ساكنا و هو واجب و ممتنع و جائز والذي جرت عادة القراء بذكره في كتب الخلاف هو الجائز لانه الذي اختلف فيه القراء و هو قسمان الاول ادغام حرف من كلمة في حروف متعددة من كلمات متفرقة و ينحصر في اذ وقد وتاء التانيث وهل وبل فاذ اختلف في ادغامها و اظهارها عند ستة احرف التاء اذ تبرأ والجيم اذ جعل والدال اذ دخلت والزاء اذ زاغت والسين اذ سمعتموه والصاد واذ صرفنا وقد اختلف فيها عند ثمانية احرف الجيم و لقد جاءكم والذال و لقد ذرأنا والزاء و لقد زينا والسين قد سألها والشين قد شغفها والصاد و لقد صرفنا والضاد قد ضلوا والظاء فقد ظلم وتاء التانيث اختلف فيها عند ستة احرف الثاء بعدت ثمود والجيم نضجت جلودهم والزاء خبت زدناهم والسين انبتت سبع والصاد لهدمت صوامع والظاء كانت ظالمة ولام هل وبل اختلف فيها عند ثمانية احرف تختص بل منها بخمسة الزاء بل زين والسين بل سولت والضاد بل ضلوا والطاء بل طبع والظاء بل ظننتم و تختص هل بالثاء هل ثوب و يشتركان في التاء والنون هل تنقمون بل تأتيهم هل نحن بل نتبع القسم الثاني ادغام حروف قربت مخارجها و هي سبعة عشر حرفا اختلف فيها احدها الباء عند الفاء في اريغلب

سبيله والصاد في قوله ما اتخذ صاحبة والراء في اللام نحو هن اطهر لكم المصير لا يكلف والنهار لآيات فان فتحت وسكن ما قبلها لم تدغم نحو والحمير لتركبوها والسين في الزاء في قوله تعالى واذا النفوس زوجت والشين في قوله تعالى الراس شيبا والشين في السين في ذى العرش سبيلا فقط والضاد في الشين في لبعض شانهم فقط والقاف في الكاف اذا تحرك ما قبلها نحو ينفق كيف يشاء وكذا اذا كانت معها في كلمة واحدة و بعدها ميم نحو خلقكم والكاف في القاف اذا تحرك ما قبلها نحو نقدس لك قال لا ان سكن نحو و تركوك قائما واللام في الراء اذا تحرك ما قبلها نحو رسل ربك او سكن وهي مضمومة او مكسورة نحو لقول رسول الى سبيل ربك لا ان فتحت نحو فيقول رب الا لام قال فانها تدغم حيث وقعت نحو قال رب قال رجلان والميم تسكن عند الباء اذا تحرك ما قبلها فتخفى بغنة نحو اعلم بالشاكرين يحكم بينهم مريم بهتانا و هذا نوع من الاخفاء المذكور في الترجمة وذكر ابن الجزري له في انواع الادغام تبع فيه بعض المتقدمين و قد قال هو في النشر انه غير صواب فان سكن ما قبلها اظهرت نحو ابراهيم بنيه والنون تدغم اذا تحرك ما قبلها في الراء و في اللام نحو تأذن ربك لن نؤمن لك فان سكن اظهرت عندهما نحو يخافون ربهم ان يكون لهم الا نون نحن فانها تدغم نحو نحن له وما نحن لك لكثرة دورها و تكرار النون فيها و لزوم حركتها و ثقلها تنبيهان الاول وافق ابا عمرو حمزة و يعقوب في احرف مخصوصة استوعبها ابن الجزري في كتابيه النشر و التقريب الثاني اجمع الائمة العشرة على ادغام مالك لا تأمنا على يوسف و اختلفوا في اللفظ به فقرأ ابو جعفر بادغامه محضا بلا اشارة و قرأ

هدى يأتي يوم و شرطه ان يلتقي المثلان خطا فلايد غم في نحو انا نذير من اجل وجود الالف خطا وان يكونا من كلمتين فان التقيا من كلمة فلايد غم الا في حرفين منا سككم فى البقرة ما سلككم فى المدثر و ان لايكون الاول تاء ضميرلتكلم اوخطاب فلايد غم نحو كنت ترابا افانت تسمع ولا مشددا فلايد غم نحو مس سقر رب بما ولا منونا فلايد غم نحو غفور رحيم سميع عليم و اما المد غم من المتجانسين والمتقاربين فهو ستة عشر حرفا يجمعها رض سنشد حجتك بذل قثم و شرطه ان لايكون الاول مشددا نحو اشد ذكرا ولا منونا نحو في ظلمات ثلاث و لا تاء ضمير نحو خلقت طينا فالباء تد غم فى الميم في يعذب من يشاء فقط والتاء في عشرة احرف الثاء بالبينات ثم والجيم الصالحات جنات والذال السيات ذلك والزاء الجنة زمرا والسين الصالحات سند خلهم ولم يد غم ولم يؤت سعة للجزم مع خفة الفتحة و الشين باربعة شهداء والصاد والملائكة صفا والضاد والعاديات ضبحا والطاء اقم الصلوٰة طرفي النهار والظاء الملائكة ظالمي والثاء في خمسة احرف التاء حيث تومرون والذال الحرث ذلك والسين و ورث سليمان والشين حيث شئتما والضاد حديث ضيف والجيم في حرفين الشين اخرج شطأه والتاء ذى المعارج تعرج والحاء فى العين في زحزح عن النار فقط والدال في عشرة احرف التاء المساجد تلك بعد توكيدها والثاء يريد ثواب والجيم داؤد جالوت والذال القلائد ذلك والزاء يكاد زيتها والسين الاصفاد سرابيلهم والشين و شهد شاهد والصاد يفقد صواع والضاد من بعد ضراء والظاء يريد ظلما ولا تد غم مفتوحة بعد ساكن الا فى التاء لقوة التجانس والذال فى السين في قوله فاتخذ

الا حرفا واحدا عشرة فانهم يجزمونه و اهل نجد يتركون التفخيم فى الكلام الا هذا الحرف فانهم يقولون عشرة بالكسر قال الداني فهذا الوجه اولى في تفسير الخبر النوع الحادي و الثلاثون فى الادغام و الاظهار و الاخفاء و الاقلاب افرد ذلك بالتصنيف جماعة من القراء الادغام هو اللفظ بحرفين حرفا كالثاني مشددا و ينقسم الى كبير وصغير فالكبير ماكان اول الحرفين فيه محركا سواء كانا مثلين ام جنسين ام متقاربين و سمي كبيرا لكثرة و قوعه اذ الحركة اكثر من السكون و قيل لتأثيره في اسكان المتحرك قبل ادغامه و قيل لما فيه من الصعوبة و قيل لشموله نوعي المثلين و الجنسين والمتقاربين و المشهور بنسبته اليه من الائمة العشرة هو ابو عمرو بن العلا و ورد عن جماعة خارج العشرة كالحسن البصري والاعمش و ابن محيصن و غيرهم و وجهه طلب التخفيف و كثير من المصنفين فى القراءآت لم يذكروه البتة كابي عبيد في كتابه و ابن مجاهد في سبعته و مكي في تبصرته و الطلمنكي في روضته و ابن سفيان في هاويه و ابن شريح في كافيه والمهدوي في هدايته و غيرهم قال في تقريب النشر و نعني بالمتماثلين ما اتفقا مخرجا وصفة و بالمتجانسين ما اتفقا مخرجا و اختلفا صفة و بالمتقاربين ما تقاربا مخرجا اوصفة فاما المدغم من المتماثلين فوقع في سبعة عشر حرفا وهي الباء والتاء والثاء والحاء و الراء والسين والعين والغين والفاء والقاف والكاف واللام والميم والنون والواو والهاء والياء نحو الكتاب بالحق الموت تحبسونهما حيث ثقفتموهم النكاح حتى شهر رمضان الناس سكارى يشفع عنده يبتغ غير الاسلام اختلف فيه افاق قال انك كنت لا قبل لهم الرحيم مالك نحن نسبح وهو وليهم فيه

يجمعها فلتنظر من كتب الفن و اما فواتح السور فامال الرفى السور الخمسة حمزة و الكسائي و خلف و ابوعمرو وابن عامر و ابو بكروبين بين ورش وامال الهاء من فاتحة مريم وطه ابو عمرو والكسائي وابوبكر و امال حمزة و خلف طه دون مريم و امال الياء من اول مريم من امال الرا الا ابا عمرو على المشهور عنه و من اول يس الثلاثة الاولون وابوبكر وامال هولاء الاربعة الطاء من طه وطسم و طس والحاء من حم فى السورالسبع ووافقهم فى الحاء ابن ذكوان خاتمة كره قوم الامالة لحديث نزل القرآن بالتفخيم واجيب عنه باوجه احدها انه نزل بذلك ثم رخص فى الامالة ثانيها ان معناه انه يقرأ على قراءة الرجال ولا يخضع الصوت فيه كلام النساء ثالثها ان معناه انزل بالشدة و الغلظة على المشركين قال في جمال القراء وهو بعيد في تفسيرالخبر لانه نزل ايضا بالرحمة والرأفة رابعها ان معناه التعظيم والتبجيل اي عظموه و بجلوه فحض بذلك على تعظيم القرآن وتبجيله خامسها ان المراد بالتفخيم تحريك اوساط الكلم بالضم والكسر فى المواضع المختلف فيها دون اسكانها لانه اشبع لها وافخم قال الداني و كذا جاء مفسرا عن ابن عباس رضي الله عنه ثم قال حدثنا ابن خاقان ثنا احمد بن محمد ثنا علي بن عبدالعزيز ثنا القاسم سمعت الكسائي يخبر عن سليمان عن الزهري قال قال ابن عباس نزل القرآن بالتثقيل والتفخيم نحو قوله الجمعة و اشباه ذلك من التثقيل ثم اورد حديث الحاكم عن زيد بن ثابت مرفوعا نزل القرآن بالتفخيم قال محمد بن مقاتل احد رواته سمعت عمارايقول عذرا نذرا والصدفين يعنى تحريك الاوسط في ذلك قال و يؤيده قول ابي عبيدة اهل الحجاز يفخمون الكلام كله

من الواوي ما كسر اوله اوضم و هوالربا كيف وقع و الضحى كيف جاء والقوى والعلى و امالوا رؤس الآي من احدى عشرة سورة جاءت على نسق وهي طه والنجم وسأل والقيمة والنازعات و عبس والاعلى والشمس والليل والضحى والعلق و وافق على هذه السور ابو عمرو وورش وامال ابو عمرو و كلما كان فيه راء بعدها الف باي وزن كان نذكرى و بشرى و اسرى و اراه و اشترى و يرى والقرى والنصارى و اسارى و سكارى و وافق على الفات فعلى كيف اتت و امال ابو عمرو و الكسائي كل الف بعدها راء متطرفة مجرورة نحو الدار والغار والقهار والغفار و الكفار والنهار و الديار والابكار و بقنطار و ابصارهم و ادبارها و حمارك سواء كانت الالف اصلية ام زائدة و امال حمزة الالف من عين الفعل الماضي من عشرة افعال وهي زاد و شاء وجاء و خاب و ران و خاف و زاغ وطاب و ضاق و حاق حيث وقعت و كيف جاءت و امال الكسائي هاء التانيث و ما قبلها وقفا مطلقا بعد خمسة عشر حرفا يجمعها قولك فجئت زينب لذود شمس فالفاء كخليفة و رافة والجيم كوليجة ولجة والثاء كثلاثة و خبيثة والتاء كبغتة والميتة والزاء كبارزة و اعزة والياء كخشيه وشيه والنون كسنة وجنة والباء كحبة والتوبة و اللام كايلة و ثلة والذال كاذة والموقوذة والواو كقسوة والمروة والدال كبلدة و عدة والشين كالفاحشة و عيشة والميم كرحمة و نعمة و السين كالخامسة و خمسة و يفتح مطلقا بعد عشرة احرف وهي جاع و حروف الاستعلاء قط خص ضغط والاربعة الباقية و هي الكهران كان قبل كل منها ياء ساكنة اوكسرة متصلة او منفصلة بساكن يميل والا يفتح وبقي احرف فيها خلف و تفصيل ولاضابط

و اما و جوهها فاربعة ترجع الى الاسباب المذكورة اصلها اثنان المناسبة و الاشعار فاما المناسبة فقسم واحد و هو فيما اميل لسبب موجود فى اللفظ و فيما اميل لامالة غيره فارادوا ان يكون عمل اللسان و مجاورة النطق بالحرف الممال وبسبب الامالة من وجه واحد و على نمط واحد و اما الاشعار فثلاثة اقسام اشعار بالاصل و اشعار بما يعرض فى الكلمة في بعض المواضع و اشعار بالشبه المشعر بالاصل و اما فائدتها فسهولة اللفظ و ذلك ان اللسان يرتفع بالفتح و ينحدر بالامالة و الانحدار اخف على اللسان من الارتفاع فلهذا امال من امال و اما من فتح فانه راعى كون الفتح امتن اوالاصل و اما من امال فكل القراء العشرة الا ابن كثير فانه لم يمل شيئا في جميع القرآن و اما ما يمال فموضع استيعابه كتب القراء آت والكتب المؤلفة فى الامالة و نذكر هنا مايدخل تحت ضابط فحمزة و الكسائي و خلف اما لواكل الف منقلبة عن ياء حيث وقعت فى القرآن في اسم او فعل كالهدى و الهوى والفتى والعمى والزنا و ابى واثى وسعى و يخشى و يرضى و اجتبى و اشترى و مثوى و مأوى وادنى و ازكى و كل الف تانيث على فعلى بضم الفاء او كسرها او فتحها كطوبى و بشرى و قصرى والقربى و الانثى و الدنيا واحدى و ذكرى و سيما و ضيزى و موتى و مرضى و السلوى و التقوى والحقوا بذلك موسى و عيسى و يحيى و كلما كان على وزن فعالى بالضم او الفتح كسكارى و كسالى واسارى ويتامى ونصارى والايامى و كلما رسم فى المصاحف بالياء نحو متى وبلى و يا اسفى و يا ويلتى و يا حسرتا و انى للاستفهام و استثني من ذلك حتى و الى و على ولدى و ما زكى فلم تمل بحال و كذلك امالوا

بالالف الممالة قال ابن الجزري وتمال ايضا بسبب كثرة الاستعمال وللفرق بين الاسم والحرف فتبلغ اثنى عشر سببا فاما الامالة لاجل الكسرة السابقة فشرطها ان يكون الفاصل بينها وبين الالف حرفا واحدا نحو كتاب وحساب وهذا الفاصل انما حصل باعتبار الالف اما الفتحة الممالة فلا فاصل بينها وبين الكسرة او حرفين اولهما ساكن نحو انسان او مفتوحتين والثاني هاء لخفائها واما الياء السابقة فاما ملاصقة كالحياة والايامى اومفصولة بحرفين احدهما الهاء كيدها واما الكسرة المتأخرة فسواء كانت لازمة نحو عابد ام عارضة نحو من الناس وفى النار واما الياء المتأخرة فنحو مبايع واما الكسرة المقدرة فنحو خاف اذ الاصل خوف واما الياء المقدرة فنحو يخشى والهدى وانى والثرى فان الالف فى كل ذلك منقلبة عن ياء تحركت وانفتح ما قبلها واما الكسرة العارضة في بعض احوال الكلمة فنحو طاب وجاء وشاء وزادان الفاء تكسر في ذلك مع ضمير الرفع المتحرك واما الياء العارضة كذلك فنحو تلا وغزا فان الفهما عن واو وانما اميلت لانقلابها ياء في تلى وغزى واما الامالة لاجل الامالة فكامالة الكسائي الالف بعد النون من انا لله لامالة الالف من لله ولم يمل وانا اليه لعدم ذلك بعده وجعل من ذلك امالة الضحى والقوى وضحاها وتلاها واما الامالة لاجل الشبه فامالة الف التانيث في نحو الحسنى والف موسى وعيسى لشبهها بالف الهدى واما الامالة لكثرة الاستعمال فكامالة الناس فى الاحوال الثلاث على ما رواه صاحب المنهج واما الامالة للفرق بين الاسم والحرف فكامالة الفواتح كما قال سيبويه ان امالة يا وتا في حروف المعجم لانها اسماء فليست مثل ما ولا وغيرهما من الحروف

اللفظين و يقال له ايضا التقليل و التلطيف و بين بين فهي قسمان شديدة و متوسطة وكلاهما جائز في القراءة و الشديدة يجتذب معها القلب الخالص والاشباع المبالغ فيه والمتوسطة بين الفتح المتوسط و الامالة الشديدة قال الداني و علماؤنا مختلفون ايهما اوجه و اولى و انا اختار الامالة الوسطى التي هي بين بين لان الغرض من الامالة حاصل بها و هوالاعلام بان اصل الالف الياء والتنبيه على انقلابها الى الياء في موضع او مشاكلتها للكسر المجاور لها اوالياء واما الفتح فهو فتح القاري فاه بلفظ الحرف و يقال له التفخيم و هو شديد و متوسط فالشديد هو نهاية فتح الشخص فاه بذلك الحرف و لا يجوز في القرآن بل هو معدوم في لغة العرب و المتوسط مابين الفتح الشديد والامالة المتوسطة قال الداني و هذا هوالذي يستعمله اصحاب الفتح من القراء و اختلفو اهل الامالة فرع عن الفتح اوكل منهما اصل برأسه و وجه الاول ان الامالة لاتكون الا لسبب فان فقد لزم الفتح و ان وجد جاز الفتح و الامالة فما من كلمة تمال الا و في العرب من يفتحها فدل اطراد الفتح على اصالته و فرعيتها والكلام في الامالة من خمسة اوجه اسبابها و وجوهها وفائدتها ومن يميل ومايمال اما اسبابها فذكرها القراء عشرة قال ابن الجزري وهي ترجع الى شيئين احدهما الكسرة والثاني الياء و كل منهما يكون متقدما على محل الامالة من الكلمة ومتأخرا عنه و يكون ايضا مقدرا في محل الامالة وقدتكون الكسرة والياء غير موجودتين في اللفظ ولا مقدرتين في محل الامالة و لكنهما مما يعرض في بعض تصاريف الكلمة و قد تمال الالف او الفتحة لاجل الف اخرى اوفتحة اخرى ممالة و تسمى هذه امالة لاجل امالة و قد تمال الالف تشبيها

القرآن بلحون العرب و اصواتها و ايانم واصوات اهل الفسق و اهل الكتابين
قال فالامالة لا شك من الاحرف السبعة و من لحون العرب واصواتها
وقال ابوبكر ابن ابي شيبه حدثنا وكيع ثنا الا عمش عن ابراهيم قال
كانوا يرون ان الالف والياء فى القراءة سواء قال يعني بالالف و الياء
التفخيم والامالة واخرج في تاريخ القراء من طريق ابي عاصم الضرير
الكوفي عن محمد بن عبيد عن عاصم عن زر بن حبيش قال قرأ رجل
على عبدالله بن مسعود طه و لم يكسر فقال عبدالله طه وكسر الطاء
والهاء فقال الرجل طه ولم يكسر فقال عبدالله طه و كسر الطاء والهاء
فقال الرجل طه ولم يكسر فقال عبدالله طه و كسر الطاء و الهاء فقال
الرجل طه ولم يكسر فقال عبدالله طه وكسر ثم قال والله لهكذا
علمني رسول الله صلى الله عليه و سلم قال ابن الجزري هذا حديث
غريب لا نعرفه الا من هذا الوجه و رجاله ثقات الا محمد بن عبيدالله
و هوالعرزمي فانه ضعيف عند اهل الحديث وكان رجلا صالحا لكن
ذهبت كتبه فكان يحدث من حفظه فاتي عليه من ذلك قلت
و حديثه هذا اخرجه ابن مردويه في تفسيره و زاد في آخره و لكذا
نزل بها جبريل و في جمال القراء عن صفوان ابن عسال انه سمع
رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ يا يحيى فقيل له يا رسول الله
تميل وليس هي لغة قريش فقال هي لغة الاخوال بني سعد واخرج
ابن اشته عن ابي حاتم قال احتج الكوفيون فى الامالة بانهم وجدوا
فى المصحف الياء آت في موضع الالفات فاتبعوا الخط و امالوا ليقربوا
من الياء آت الامالة ان ينحو بالفتحة نحو الكسرة و بالالف نحو الياء
كثيرا و هوالمحض و يقال له الاضجاع و البطح والكسر وقليلا و هو بين

القصر وقد قال ابن جرير هٰذا تأويل في الآية حسن لولم يكن في الآية اذا قال ابن الفرس و يصح مع اذا على جعل الواو زائدة قلت يعني و يكون من اعتراض الشرط على الشرط واحسن منه ان يجعل اذا زائدة بناء على قول من يجيز زيادتها و قال ابن الجوزي في كتابه النفيس قد تأتي العرب بكلمة الى جانب كلمة تأنها معها و هي غير متصلة بها و في القرآن يريدان يخرجكم من ارضكم هٰذا قول الملأ فقال فرعون فما ذا تأمرون و مثله انار اودته عن نفسه و انه لمن الصادقين انتهى كلامها فقال يوسف ذلك ليعلم اني لم اخنه بالغيب و مثله ان الملوك اذا دخلوا قرية افسدوها وجعلوا اعزة اهلها اذلة هٰذا منتهى قولها فقال تعالى وكذلك يفعلون و مثله من بعثنا من مرقدنا انتهى قول الكفار فقالت الملائكة هٰذا ما وعد الرحمٰن و اخرج ابن ابي حاتم عن قتادة في هٰذه الآية قال آية من كتاب الله اولها اهل الضلالة وآخرها اهل الهدى قالوا يا ويلنا من بعثنا من مرقدنا هٰذا قول اهل النفاق وقال اهل الهدى حين بعثوا من قبورهم هٰذا ما وعد الرحمٰن وصدق المرسلون و اخرج عن مجاهد في قوله و ما يشعركم انها اذا جاءت لايؤمنون قال و ما يدريكم انهم يؤمنون اذا جاءت ثم استقبل يخبر فقال انها اذا جاءت لا يؤمنون النوع الثلاثون في الامالة و الفتح و ما بينهما افرده بالتصنيف جماعة من القراء منهم ابن القاصح عمل كتابه قرة العين في الفتح والامالة و بين اللفظين قال الداني الفتح والامالة لغتان مشهورتان فاشيتان على السنة الفصحاء من العرب الذين نزل القرآن بلغتهم فالفتح لغة اهل الحجاز والامالة لغة عامة اهل نجد من تميم و اسد و قيس قال والاصل فيها حديث حذيفة مرفوعا اقرؤا

الاصنام و يوضح ذلك تغيير الضمير الى الجمع بعد التثنية ولوكانت القصة واحدة لقال عمايشركان كقوله دعوا الله ربهما فلما آتاهما صالحا جعلا له شركاء فيما آتاهما و كذلك الضمائر في قوله بعده ايشركون ما لا يخلق شيئا و ما بعده الى آخرالآيات و حسن التخلص والاستطراد من اساليب القرآن و من ذلك قوله تعالى و ما يعلم تأويله الا الله والراسخون الآية فانه على تقديرالوصل يكون الراسخون يعلمون تأويله و على تقدير الفصل بخلافه و قد اخرج ابن ابي حاتم عن ابي الشعثا و ابي نهيك قالا انكم تصلون هٰذه الآية و هي مقطوعة و يؤيد ذلك كون الآية دلت على ذم متبعي المتشابه و وصفهم بالزيغ و من ذلك قوله تعالى و اذا ضربتم فى الارض فليس عليكم جناح ان تقصروا من الصلٰوة ان خفتم ان يفتنكم الذين كفروا فان ظاهرالآية يقتضي ان القصر مشروط بالخوف و انه لا قصر مع الا من و قد قال به لظاهرالآية جماعة منهم عائشة رضي الله تعالى عنها لٰكن بين سبب النزول ان هٰذا من الموصول المفصول فاخرج ابن جرير من حديث علي قال سأل قوم من بني النجار رسول الله صلى الله عليه و سلم فقالوا يا رسول الله انا نضرب فى الارض فكيف نصلي فانزل الله و اذا ضربتم فى الارض فليس عليكم جناح ان تقصروا من الصلٰوة ثم انقطع الوحي فلما كان بعد ذلك بحول غزالنبي صلى الله عليه و سلم فصلى الظهر فقال المشركون لقد امكنكم محمد و اصحابه من ظهورهم هلا شددتم عليهم فقال قائل منهم ان لهم اخرى مثلها في اثرها فانزل الله بين الصلٰوتين ان خفتم ان يفتنكم الذين كفروا الى قوله عذابا مهينا فنزلت صلٰوة الخوف فتبين بهٰذا الحديث ان قوله ان خفتم شرط فيما بعده و هوصلٰوة الخوف لافي صلٰوة

في بيان الموصول لفظا المفصول معنى هو نوع مهم جديران يفرد بالتصنيف و هو اصل كبير في الوقف و لذا جعلته عقبه و به يحصل حل اشكالات وكشف معضلات كثيرة من ذلك قوله تعالى هوالذي خلقكم من نفس واحدة و جعل منها زوجها ليسكن اليها الى قوله جعلا له شركاء فيما آتاهما فتعالى الله عما يشركون فان الآية في قصة آدم وحوا كما يفهمه السياق و صرح به في حديث اخرجه احمد و الترمذي و حسنه والحاكم و صححه من طريق الحسن عن سمرة مرفوعا و اخرجه ابن ابي حاتم وغيره بسند صحيح عن ابن عباس لكن آخر الآية مشكل حيث نسب الاشراك الى آدم و حوا وآدم نبي مكلم والانبياء معصومون من الشرك قبل النبوة و بعدها اجماعا وقد جر ذلك بعضهم الى حمل الآية على غير آدم وحوا و انها في رجل و زوجته كانا في اهل الملل و تعدى الى تعليل الحديث والحكم بنكارته و ما زلت في وقفة من ذلك حتى رأيت ابن ابي حاتم قال اخبرنا احمد بن عثمان ابن حكيم ثنا احمد بن المفضل ثنا اسباط عن السدي في قوله تعالى فتعالى الله عما يشركون قال هذه فصل من آية آدم خاصة في آلهة العرب وقال عبدالرزاق بن عيينة سمعت صدقة بن عبدالله بن كثير المكي يحدث عن السدي قال هذا من الموصول المفصول وقال ابن ابي حاتم ثنا علي بن الحسين ثنا محمد بن ابي حماد ثنا مهران عن سفيان عن السدي عن ابي مالك قال هذه مفصولة اطاعاة في الولد فتعالى الله عما يشركون هذه لقوم محمد فانحلت عني هذه العقدة وانجلت لي هذه المعضلة و اتضح بذلك ان آخر قصة آدم و حوا فيما آتاهما و ان ما بعده تخلص الى قصة العرب و اشراكهم

بعد ياء او واو زائدتين فانه يوقف عليه عند حمزة ايضا بالادغام بعد ابدال الهمز من جنس ما قبله نحو النسي و بري و قرو و اما الحذف ففي الياء آت الزوائد عند من يثبتها وصلا و يحذفها وقفا و ياءآت الزوائد و هي التي لم ترسم مأية واحدى و عشرون منها خمس و ثلاثون في حشو الآي و الباقي في رؤس الآي فنافع و ابو عمرو و حمزة و الكسائي و ابو جعفر يثبتونها في الوصل دون الوقف و ابن كثير و يعقوب يثبتان في الحالين و ابن عامر و عاصم و خلف يحذفون في الحالين و ربما خرج بعضهم عن اصله في بعضها و اما الاثبات ففي الياءآت المحذوفات وصلا عند من يثبتها وقفا نحوها دوآل وواق و باق و اما الالحاق فما يلحق آخر الكلم من هاءآت السكت عند من يلحقها في عم و فيم و بم و لم و مم و النون المشددة من جمع الاناث نحو هن و مثلهن والنون المفتوحة نحو العالمين و الذين و المفلحون و المشدد المبني نحو الا تعلوا علي خلقت بيدي و مصرخي ولدي قاعدة اجمعوا على لزوم اتباع رسم المصاحف العثمانية في الوقف ابدالا و اثباتا وحذفا و وصلا و قطعا الا انه ورد عنهم اختلاف في اشياء باعيانها كالوقف با لهاء على ما كتب بالتاء و بالحاق الهاء فيما تقدم وغيره و باثبات الياء في مواضع لم ترسم بها والواو في يدع الانسان يوم يدع الداع سندع الزبانية و يمح الله الباطل و الالف في ايه المؤمنون ايه الساحر ايه الثقلان و بحذف النون في و كأين حيث وقع فان ابا عمرو يقف عليه بالياء و يوصل ايا ما في الاسراء و مال في النساء و الكهف و الفرقان و سأل و قطع و يكأن و ويكأنه والا يسجدوا ومن القراء من يتبع الرسم في الجميع النوع التاسع و العشرون

بخلاف المفتوح لان الفتحة خفيفة اذا خرج بعضها خرج سائرها فلا تقبل التبعيض و اما الاشمام فهو عبارة عن الاشارة الى الحركة من غيرتصويت و قيل ان تجعل شفتيك على صورتها و ذلاهما واحد ويختص بالضمة سواء كانت حركة اعراب ام بناء اذا كانت لازمة اما العارضة وميم الجمع عند من ضم و هاء التانيث فلاروم في ذلك ولا اشمام وقيد ابن الجزري هاء التانيث بما يوقف عليها بالهاء بخلاف ما يوقف عليها بالتاء للرسم ثم ان الوقف بالروم و الاشمام ورد عن ابي عمرو والكوفيين نصا ولم يأت عن الباقين فيه شيء و استحبه اهل الاداء في قراءتهم ايضا و فائدته بيان الحركة التي تثبت في الوصل للحرف الموقوف عليه ليظهر للسامع اوالناظر كيف تلك الحركة الموقوف عليها و اما الابدال ففي الاسم المنصوب المنون يوقف عليه بالالف بدلا من التنوين و مثله اذن و في الاسم المفرد المونث بالتاء يوقف عليه بالهاء بدلا منها و فيما آخره همزة متطرفة بعد حركة او الف فانه يوقف عليه عند حمزة بابدالها حرف مد من جنس ما قبلها ثم ان كان الفا جاز حذفها نحوا قرا و نبى و يبداوان امرو من شاطي ويشا و من السما و من ما و اما النقل ففي ما آخره همزة بعد ساكن فانه يوقف عليه عند حمزة بنقل حركتها اليه فتحرك بها ثم تحذف هي سواء كان الساكن صحيحا نحو د ف ء مثل ينظر المرء و لكل باب منهم جزء بين المرء و قلبه بين المرء و زوجه يخرج الخبء ولا تأمن لها ام يا اوا و اصليتين سواء كانتا حرف مد نحو المسيء و جيء و يضيء ان تبوء لتنوء و ما عملت من سوء ام لين نحو شيء قوم سوء مثل السوء و اما الادغام ففي ما آخره همزة

و هي ثلثة اقسام الاول ما لا يجوز الوقف عليه اجماعا لتعلق ما بعدها بما قبلها و هو سبعة مواضع فى الانعام بلى و ربنا فى النحل بلى وعدا عليه في سبا قل بلى و ربي لتأتينكم فى الزمر بلى قد جاءتك فى الاحقاف بلى و ربنا فى التغابن قل بلى و ربي فى القيمة بلى قادرين الثاني ما فيه خلاف و الاختيار المنع و ذلك خمسة مواضع فى البقرة بلى ولكن ليطمئن قلبي فى الزمر بلى ولكن حقت فى الزخرف بلى و رسلنا فى الحديد قالوا بلى في تبارك قالوا بلى قد جاءنا الثالث ما الاختيار جواز الوقف عليها و هي العشرة الباقية نعم فى القرآن فى اربعة مواضع فى الاعراف قالوا نعم فأذن والمختار الوقف عليها لان ما بعدها غير متعلق بما قبلها اذ ليس من قول اهل النار و البواقي فيها و فى الشعراء قال نعم و انكم لمن المقربين و فى الصافات قل نعم و انتم داخرون و المختار لا يوقف عليها لتعلق ما بعدها بما قبلها لاتصاله بالقول ضابط قال ابن الجزري فى النشر كلما اجازوا الوقف عليه اجازوا الابتداء بما بعده

## فصل في كيفية الوقف

على اواخر الكلم للوقف في كلام العرب اوجه متعددة والمستعمل منها عند ائمة القراءة تسعة السكون و الروم و الاشمام و الابدال و النقل و الادغام و الحذف و الاثبات و الالحاق فاما السكون فهو الاصل فى الوقف على الكلم المحركة وصلا لان معنى الوقف الترك و القطع و لانه ضد لابتداء فكما لا يبتدأ بساكن لا يوقف على متحرك و هو اختيار كثير من القراء و اما الروم فهو عند القراء عبارة عن النطق ببعض الحركة وقال بعضهم تضعيف الصوت بالحركة حتى يذهب معظمها قال ابن الجزري وكلا القولين واحد و يختص بالمرفوع و المجرور و المضموم و المكسور

الا متصلة بما قبلها و معنى لان ما قبله مشعر بتمام الكلام فى المعنى
ان قولك ما فى الدار احد هو الذي صحح الا الحمار و لوقلت الا الحمار
على انفراده كان خطأ والثالث التفصيل فان صرح بالخبر جاز لاستقلال
الجملة و استغنائها عما قبلها و ان لم يصرح به فلا لافتقارها قاله ابن
الحاجب في اماليه الوقف على الجملة الندائية جائز كما نقله ابن
الحاجب عن المحققين لانها مستقلة ومابعدها جملة اخرى وان كانت
الاولى تتعلق بها كل ما فى القرآن من القول لا يجوز الوقف عليه لان
ما بعده حكايته قاله النحو يني في تفسيره كلا فى القرآن في ثلاثة
و ثلاثين موضعا منها سبع للردع اتفاقا فيوقف عليها و ذلك عهدا
كلا عزا كلا في مريم ان يقتلون قال كلا لمدركون قال كلا فى الشعراء
شركاء كلا ان ازيد كلا اين المفر كلا والباقي منها ما هو بمعنى حقا قطعا
فلا يوقف عليه و منها ما احتمل الامرين ففيه الوجهان و قال مكي
هي اربعة اقسام الاول ما يحسن الوقف فيه عليها على معنى الردع
وهو الاختيار و يجوز الابتداء بها على معنى حقا و ذلك احد عشر
موضعا اثنان في مريم و في قد افلح و سبا و اثنان فى المعارج واثنان
فى المدثر ان ازيد كلا منشرة كلا و فى المطففين اساطير الاولين كلا
و فى الفجر اهانني كلا و فى الحطمه الثاني ما يحسن الوقف عليها
ولا يجوز الابتداء بها و هو موضعان فى الشعراء ان يقتلون قال كلا انا
لمدركون قال كلا الثالث ما لا يحسن الوقف عليها ولا الابتداء بها بل
توصل بما قبلها و بما بعدها وهو موضعان في عم والتكاثر ثم كلا سيعلمون
ثم كلا سوف تعلمون الرابع ما لا يحسن الوقف عليها ولكن يبتدأ بها
و هو الثمانية عشر الباقية بلى فى القرآن في اثنين و عشرين موضعا

و اختلفت الفاظ الائمة في التأدية عنه بما يدل على طوله و قصره فعن حمزة فى السكت على الساكن قبل الهمزة سكتة يسيرة و قال الاشناني قصيرة وعن الكسائي سكتة مختلسة من غير اشباع و قال ابن غلبون وقفة يسيرة وقال مكي وقفة خفيفة و قال ابن شريح وقيفة وعن قتيبة من غير قطع نفس و قال الداني سكتة لطيفة من غير قطع و قال الجعبري قطع الصوت زمانا قليلا اقصر من زمن اخراج النفس لانه ان طال صار وقفا في عبارات اخر قال ابن الجزري والصحيح انه مقيد بالسماع و النقل و لا يجوز الا فيما صحت الرواية به لمعنى مقصود بذاته و قيل يجوز في رؤس الآي مطلقا حالة الوصل لقصد البيان و حمل بعضهم الحديث الوارد على ذلك ضوابط كل ما فى القرآن من الذي و الذين يجوز فيه الوصل بما قبله نعتا و القطع على انه خبر الا في سبعة مواضع فانه يتعين الابتداء بها الذين آتيناهم الكتاب يتلونه فى البقرة الذين آتيناهم الكتاب يعرفونه فيها وفى الانعام الذين يأكلون الربا الذين آمنوا وهاجروا في براءة الذين يحشرون فى الفرقان الذين يحملون العرش في غافر و فى الكشاف في قوله الذي يوسوس يجوز ان يقف القارئ على الموصوف و يبتدئ الذي ان حملته على القطع بخلاف ما اذا جعلته صفة و قال الرماني الصفة ان كانت للاختصاص امتنع الوقف على موصوفها دونها و ان كانت للمدح جاز لان عاملها فى المدح غير عامل الموصوف الوقف على المستثنى منه دون المستثنى ان كان منقطعا فيه مذاهب الجواز مطلقا لانه في معنى مبتداء حذف خبره للدلالة عليه والمنع مطلقا لاحتياجه الى ما قبله لفظا لانه لم يعهد استعمال الا و ما في معناها

فى الوقف و الابتداء فنافع كان يراعي محاسنهما بحسب المعنى و ابن كثير و حمزة حيث ينقطع النفس و استثنى ابن كثير و ما يعلم تأويله الا الله و ما يشعركم انما يعلمه بشر فتعمد الوقف عليها و عاصم والكسائي حيث تم الكلام و ابو عمرو يتعمد رؤس الآي و يقول هوا حب الي فقد قال بعضهم ان الوقف عليه سنة و قال البيهقي فى الشعب وآخرون الافضل الوقف على رؤس الآيات و ان تعلقت بما بعدها اتباعا لهدي رسول الله صلى الله عليه وسلم وسنته روى ابو داؤد وغيره عن ام سملة رضي الله تعالى عنها ان النبي صلى الله عليه و سلم اذا قرأ قطع قراءته آية آية يقول بسم الله الرحمٰن الرحيم ثم يقف الحمد لله رب العالمين ثم يقف الرحمٰن الرحيم ثم يقف الثامن الوقف و القطع و السكت عبارات يطلقها المتقدمون غالبا مرادابها الوقف والمتأخرون فرقوا فقالوا القطع عبارة عن قطع القراءة رأسا فهو كالانتهاء فالقارئ به كالمعرض عن القراءة والمنتقل الى حالة اخرى غيرها و هوالذي يستعان بعده للقراءة المستأنفة ولا يكون الا على رأس آية لان رؤس الآي في نفسها مقاطع اخرج سعيد ابن منصور في سننه حدثنا ابو الاحوص عن ابي سنان عن ابن ابي الهذيل انه قال كانوا يكرهون ان يقرؤا بعض الآية و يدعو بعضها اسناده صحيح و عبدالله بن ابي الهذيل تابعي كبير و قوله كانوا يدل على ان الصحابة كانوا يكرهون ذلك و الوقف عبارة عن قطع الصوت عن الكلمة زمنا يتنفس فيه عادة بنية استيناف القراءة لابنية الاعراض و يكون في رؤس الآي و اوساطها ولا يأتي في وسط الكلمة ولا فيما اتصل رسما و السكت عبارة عن قطع الصوت زمنا هو دون زمن الوقف عادة من غير تنفس

الى علم النحو و تقديراته فلان من جعل ملة ابيكم ابراهيم منصوبا على الاغراء وقف على ماقبله او اعمل فيه ما قبله فلا و اما احتياجه الى القرآت فلما تقدم من ان الوقف قد يكون تاما على قراءة غير تام على اخرى و اما احتياجه الى التفسير فلانه اذا وقف على انها محرمة عليهم اربعين سنة كان المعنى انها محرمة عليهم هٰذة المدة و اذا وقف على عليهم كان المعنى انها محرمة عليهم ابدا و ان التيه اربعين فرجع في هٰذا الى التفسير و قد تقدم ايضا ان الوقف يكون تاما على تفسير و اعراب غير تام على تفسير و اعراب آخر و اما احتياجه الى المعنى فضرورة لان معرفة مقاطع الكلام انما يكون بعد معرفة معناه كقوله و لا يحزنك قولهم ان العزة لله فقوله ان العزة استيناف لا مقولهم و قوله فلا يصلون اليكما بآياتنا و يبتدئ انتما و قال الشيخ عزالدين الا حسن الوقف على اليكما لان اضافة الغلبة الى الآيات اولى من اضافة عدم الوصول اليها لان المراد بالآيات العصاء و صفاتها و قد غلبوبها السحرة و لم يمنع عنهم فرعون و كذا الوقف على قوله ولقد همت به و يبتدئ و هم بها على ان المعنى لولا ان رأى برهان ربه لهم بها فقدم جواب لولا و يكون همه منتفيا فعلم بذلك ان معرفة المعنى اصل في ذلك كبير السادس حكى ابن برهان النحوي عن ابي يوسف القاضي صاحب ابي حنيفة رضي الله عنه انه ذهب الى ان تقديرالموقوف عليه من القرآن بالتام و الناقص والحسن و القبيح و تسميته بذلك بدعة و متعمد الوقف على نحوه مبتدع قال لان القرآن معجز وهو كالقطعة الواحدة فكله قرآن و بعضه قرآن و كله تام حسن و بعضه تام حسن السابع لائمة القراء مذاهب

ولقد آتينا موسى الكتاب وآتينا عيسى ابن مريم البينات لقرب الوقف على بالرسل وعلى القدس وكذا يراعى فى الوقف الازدواج فيوصل ما يوقف على نظيره مما يوجد التمام عليه وانقطع تعلقه مما بعده لفظا وذلك من اجل ازدواجه نحو لها ما كسبت مع ولكم ما كسبتم ونحو فمن تعجل في يومين فلا اثم عليه ومن تأخر فلا اثم عليه ونحو يولج الليل فى النهار مع ويولج النهار فى الليل ونحو من عمل صالحا فلنفسه مع ومن اساء فعليها الرابع قد يجيزون الوقف على حرف وعلى آخر ويكون بين الوقفين مراقبة على التضاد فاذا وقف على احدهما امتنع الوقف على الآخر كمن اجاز الوقف على لاريب فانه لايجيزه على فيه والذي يجيزه على فيه لايجيزه على لا ريب وكالوقف على ولا يأب كاتب ان يكتب فان بينه وبين كما علمه الله مراقبة والوقف على وما يعلم تأويله الا الله بينه وبين والراسخون فى العلم مراقبة قال ابن الجزري واول من نبه على المراقبة فى الوقف ابو الفضل الرازي اخذه من المراقبة فى العروض الخامس قال ابن مجاهد لايقوم بالتمام فى الوقف الا نحوي عالم بالقراءآت عالم بالتفسير والقصص وتلخيص بعضها من بعض عالم باللغة التي نزل بها القرآن قال غيره وكذا علم الفقه ولهذا من لم يقبل شهادة القاذف وان تاب يقف عند قوله ولا تقبلوا لهم شهادة ابدا وممن صرح بذلك النكزاوي فقال في كتاب الوقف لا بد للقارئ من معرفة بعض مذاهب الائمة المشهورين فى الفقه لان ذلك يعين على معرفة الوقف والابتداء لان فى القرآن مواضع ينبغي الوقف على مذهب بعضهم ويمتنع على مذهب آخرين فاما احتياجه

انت والابتداء مولانا فانصرنا على معنى النداء او نحو ثم جاؤك يحلفون ويبتدئ بالله ان اردنا ونحو يا بني لا تشرك ويبتدئ بالله ان الشرك على معنى القسم ونحو ما تشاؤن الا ان يشاء ويبتدئ الله رب العالمين ونحو فلا جناح ويبتدئ عليه ان يطوف بهما فكله تعسف وتمحل وتحريف للكلم عن مواضعه الثالث يفتقر في طول الفواصل والقصص والجمل المعترضة ونحو ذلك وفي حالة جمع القراءات وقراءة التحقيق والترتيل مالا يفتقر في غيرها فربما اجيز الوقف والابتداء لبعض ما ذكر ولو كان لغير ذلك لم يبح وهذا الذي سماه السجاوندي المرخص ضرورة ومثله بقوله والسماء بناء قال ابن الجزري والاحسن تمثيله بنحو قبل المشرق والمغرب وبنحو والنبيين وبنحو واقام الصلوٰة وآتى الزكاة وبنحو عاهد واوبنحو كل من فواصل قد افلح المؤمنون الى آخر القصة وقال صاحب المستوفي النحويون يكرهون الوقف الناقص في التنزيل مع امكان التام فان طال الكلام ولم يوجد فيه وقف تام حسن الاخذ بالناقص كقوله قل اوحي الي انه استمع الى قوله فلا تدعوا مع الله احدا ان كسرت بعده ان وان فتحتها فالى قوله كادوا يكونون عليه لبدا قال ويحسن الوقف الناقص امور منها ان يكون لضرب من البيان كقوله ولم يجعل له عوجا فان الوقف هنا يبين ان قيما منفصل عنه وانه حال في نية التقديم وكقوله وبنات الاخت ليفصل به بين التحريم النسبي والسببي ومنها ان يكون الكلام مبنيا على الوقف نحو يا ليتني لم اوت كتابيه ولم ادر ما حسابيه قال ابن الجزري وكما اغتفر الوقف لما ذكر قد لا يغتفر ولا يحسن فيما قصر من الجمل وان لم يكن التعلق لفظيا نحو

كالوقف تدعو اليه ضرورة فلا يجوز الابمستقل بالمعنى موف بالمقصود وهو في اقسامه كاقسام الوقف الاربعة ويتفاوت تماما وكفاية وحسنا وقبحا بحسب التمام وعدمه وفساد المعنى واحالته نحو الوقف على ومن الناس فان الابتداء بالناس قبيح ويؤمن تام فلو وقف على من يقول كان الابتداء بيقول احسن من ابتدائه بمن وكذا الوقف على ختم الله قبيح والابتداء بالله اقبح ويختم كاف والوقف على عزيرابن الله والمسيح ابن قبيح والابتداء بابن اقبح وبعزير والمسيح اشد قبحا ولو وقف على ما وعدنا الله ضرورة كان الابتداء بالجلالة قبيحا وبوعدنا اقبح منه وبما اقبح منهما وقد يكون الوقف حسنا والابتداء به قبيحا نحو يخرجون الرسول واياكم الوقف عليه حسن والابتداء به قبيح لفساد المعنى اذ يصير تحذيرا من الايمان بالله وقد يكون الوقف قبيحا والابتداء جيدا نحو من بعثنا من مرقدنا هذا الوقف على هذا قبيح لفصله بين المبتداء وخبره ولانه يوهم ان الاشارة الى المرقد والابتداء بهذا كاف او تام لاستيناف تنبيهات الاول قولهم لايجوز الوقف على المضاف دون المضاف اليه ولا كذا قال ابن الجزري انما يريدون به الجواز الادائي وهو الذي يحسن في القراءة ويروق في التلاوة ولا يريدون بذلك انه حرام ولا مكروه اللهم الا ان يقصد بذلك تحريف القرآن وخلاف المعنى الذي اراد الله تعالى فانه يكفر فضلا عن ان يأثم الثاني قال ابن الجزري ايضا ليس كلما يتعسفه بعض المعربين او يتكلفه بعض القراء او يتأوله بعض اهل الاهواء مما يقتضي وقفا او ابتداء ينبغي ان يتعمد الوقف عليه بل ينبغي تحري المعنى الاتم والوقف الاوجه وذلك نحو الوقف على وارحمنا

من قبلك و قوله على هدى من ربهم و يتفا ضل فى الكفاية كتفاضل التام نحو في قلوبهم مرض كاف فزادهم الله مرضا اكفى منه بما كانوا يكذبون اكفى منهما و قد يكون الوقف كافيا على تفسير واعراب و قراءة غير كاف على آخر نحو يعلمون الناس السحر كاف ان جعلت ما بعده نافية حسن ان فسرت موصولة و بالآخرة هم يوقنون كاف ان اعرب ما بعده مبتدأ خبره على هدى حسن ان جعل خبره الذين يؤمنون بالغيب او خبر و الذين يؤمنون بما انزل و نحن له مخلصون كاف على قراءه ام تقولون بالخطاب تام على قراءة الغيب يحاسبكم به الله كاف على قراءة من رفع فيغفر و يعذب حسن على قراءة من جزم وان كان التعلق من جهة اللفظ فهو المسمى بالحسن لانه في نفسه حسن مفيد يجوز الوقف عليه دون الابتداء بما بعده للتعلق اللفظي الا ان يكون رأس آية فانه يجوز في اختيار اكثر اهل الاداء لمجئه عن النبي صلى الله عليه و سلم في حديث ام سلمة الآتي و قد يكون الوقف حسنا على تقدير و كافيا او تاما على آخر نحو هدى للمتقين حسن ان جعل ما بعده نعتا كاف ان جعل خبر مقدر او مفعول مقدر على القطع تام ان جعل مبتدأ خبره اولئك وان لم يتم الكلام كان الوقف عليه اضطراريا و هو المسمى بالقبيح لا يجوز تعمد الوقف عليه الا لضرورة من انقطاع نفس و نحوه لعدم الفائدة اولفساد المعنى نحو صراط الذين وقد يكون بعضه اقبح من بعض نحو فلها النصف ولابويه لايهامه انهما مع البنت شركاء فى النصف و اقبح منه نحو ان الله لا يستحيي فويل للمصلين لا تقربوا لصلوة فهذا حكم الوقف اختياريا و اضطراريا و اما الابتداء فلا يكون الا اختياريا لانه ليس

دون جزائه و المبتداء دون خبره و نحو ذلك وقال غيره الوقف في التنزيل على ثمانية اضرب تام وشبيه به و ناقص وشبيه به وحسن وشبيه به وقبيح و شبيه به و قال ابن الجزري اكثر ما ذكر الناس في اقسام الوقف غير منضبط ولا منحصر و اقرب ما قلته في ضبطه ان الوقف ينقسم الى اختياري و اضطراري لان الكلام اما ان يتم اولا فان تم كان اختياريا وكونه تا ما لايخلوا ما ان لايكون له تعلق بما بعده البتة اي لا من جهة اللفظ و لا من جهة المعنى فهو الوقف المسمى بالتام لتمامه المطلق يوقف عليه و يبتدأ بما بعده ثم مثله بما تقدم في التام قال و قد يكون الوقف تا ما في تفسير واعراب و قراءة غير تام على آخر نحو و ما يعلم تأويله الا الله تام ان كان ما بعده مستأنفا غير تام ان كان معطوفا و نحو فواتح السور الوقف عليها تام ان اعربت مبتدأ و الخبر محذوف او عكسه اي آلم هذه او هذه آلم او مفعولا بقل مقدرا غير تام ان كان ما بعدها هو الخبر و نحو مثابة للناس وامنا تام على قراءة و اتخذ و ا بكسر الخا كاف على قراءة الفتح و نحو الى صراط العزيز الحميد تام على قراءة من رفع الاسم الكريم بعدها حسن على قراة من خفض وقد يتفاضل التام نحو ما لك يوم الدين واياك نعبد و اياك نستعين كلاهما تام الا ان الاول اتم من الثاني لا شتراك الثاني فيما بعده في معنى الخطاب بخلاف الاول وهذا هو الذي سماه بعضهم شبيها بالتام ومنه ما يتأكد استحبابه لبيان المعنى المقصود و هوالذي سماه السجاوندي باللازم و ان كان له تعلق فلا يخلوا ما ان يكون من جهة المعنى فقط و هو المسمى بالكافي للاكتفاء به و استغنائه عما بعده واستغناء ما بعده عنه كقوله و مما رزقناهم ينفقون و قوله وما انزل

بمؤمنين فانتفى الخداع عنهم و تقرر الايمان خالصا عن الخداع كما تقول ما هو بمؤمن مخادع و كمافي قوله لاذ لول تثير الارض فان جملة تثير صفة لذلول داخلة في حيز النفي اي ليست ذلولا مثيرة للارض و القصد فى الآية اثبات الخداع بعد نفي الايمان و نحو سبحانه ان يكون له ولد فلو وصل به له ما فى السموات و ما فى الارض لاوهم انه صفة لولد و ان المنفي ولد موصوف بان له ما فى السموات والمراد نفي الولد مطلقا و المطلق ما يحسن الابتداء بما بعده كالاسم المبتدأ به نحو الله يجتبي و الفعل المستأنف نحو يعبد و نني لايشركون بي شيئا سيقول السفهاء سيجعل الله بعد عسر يسرا و مفعول المحذوف نحو وعد الله سنة الله و الشرط نحو من يشاء الله يضلله و الاستفهام و لومقدرا اتريدون ان تهد و اتريدون عرض الدنيا و النفي ما كان لهم الخيرة ان يريدون الافرارا حيث لم يكن كل ذلك مقولا لقول سابق و الجايز ما يجوز فيه الوصل و الفصل لتجاذب الموجبين من الطرفين نحو و ما انزل من قبلك فان واو العطف تقتضي الوصل و تقديم المفعول على الفعل يقطع النظم فان التقدير و يؤقنون بالآخرة والمجوز لوجه نحو اولئك الذين اشتروا الحيوة الدنيا بالآخرة لان الفاء في قوله فلا يخفف تقتضى التسبب والجزاء و ذلك يوجب الوصل وكون نظم الفعل على الاستيناف يجعل للفصل وجها و المرخص ضرورة ما لايستغني ما بعده عما قبله لكنه يرخص لانقطاع النفس و طول الكلام و لا يلزمه الوصل بالعود لان ما بعده جملة مفهومة كقوله والسماء بناء لان قوله و انزل لا يستغني عن سياق الكلام فان فاعله ضمير يعود الى ما قبله غيران الجملة مفهومة واما مالا يجوز الوقف عليه فكالشرط

للانسان خذولا و قد يوجد بعدها كقوله مصبحين وبالليل هذا التمام لانه معطوف على المعنى اي بالصبح و بالليل و مثله يتكئون و زخرفا رأس آية يتكئون و زخرفا هو التمام لانه معطوف على ما قبله و آخر كل قصة و ما قبل اولها و آخر كل سورة و قبل ياء النداء و فعل الامر والقسم ولامه دون القول و الشرط مالم يتقدم جوابه وكان الله و ما كان وذلك ولولا غالبهن تام مالم يتقدمهن قسم او قول اوما في معناه و الكافي منقطع في اللفظ متعلق في المعنى فيحسن الوقف عليه و الابتداء بما بعده ايضا نحو حرمت عليكم امهاتكم هذا الوقف و يبتدأ بما بعد ذلك وهكذا كل رأس آية بعدها لام كي والا بمعنى لكن وان الشديدة المكسورة و الاستفهام وبل و الا المخففة والسين وسوف للتهديد ونعم و بئيس و كيلا مالم يتقدمهن قول او قسم والحسن هو الذي يحسن الوقف عليه و لا يحسن الابتداء بما بعده كالحمد لله والقبيح هو الذي لا يفهم منه المراد كالحمد و اقبح منه الوقف على لقد كفر الذين قالوا و يبتدأ ان الله هو المسيح لان المعنى مستحيل بهذا الابتداء و من تعمده وقصد معناه فقد كفر و مثله في الوقف فبهت الذي كفر و الله فلها النصف و لابويه و اقبح من هذا الوقف على المنفي دون حرف الايجاب من نحو لا اله الا الله و ما ارسلناك الا مبشرا و نذيرا فان اضطر لاجل التنفس جاز ثم يرجع الى ما قبله حتى يصله بما بعده ولاحرج انتهى و قال السجاوندي الوقف على خمس مراتب لازم و مطلق و جائز و مجوز لوجه و مرخص ضرورة فاللازم مالو وصل طرفاه اوهم غير المراد نحو و ماهم بمؤمنين يلزم الوقف هنا اذ لو وصل بقوله يخادعون الله توهم ان الجملة صفة لقوله

الشعبي انه قال اذا قرأت كل من عليها فان فلا تسكت حتى تقرأ ويبقى وجه ربك ذوالجلال والاكرام قلت اخرجه ابن ابي حاتم

فصل اصطلح الائمة لانواع الوقف والابتداء اسماء واختلفوا في ذلك فقال ابن الانباري الوقف على ثلاثة اوجه تام وحسن وقبيح فالتام الذي يحسن الوقف عليه والابتداء بما بعده ولا يكون بعده ما يتعلق به كقوله واولئك هم المفلحون وقوله ام لم تنذرهم لايؤمنون والحسن هوالذي يحسن الوقف عليه ولا يحسن الابتداء بما بعده كقوله الحمد لله لان الابتداء برب العالمين لايحسن لكونه صفة لما قبله والقبيح هو الذي ليس بتام ولا حسن كالوقف على بسم من قوله بسم الله قال ولا يتم الوقف على المضاف دون المضاف اليه ولا المنعوت دون نعته ولا الرافع دون مرفوعه وعكسه ولا الناصب دون منصوبه وعكسه ولا الموكد دون توكيده ولا المعطوف دون المعطوف عليه ولا البدل دون مبدله ولا ان او كان او ظن واخواتها دون اسمها ولا اسمها دون خبرها ولا المستثنى منه دون الاستثناء ولا الموصول دون صلته اسميا او حرفيا ولا الفعل دون مصدره ولا حرف دون متعلقه ولا شرط دون جزائه وقال غيره الوقف ينقسم الى اربعة اقسام تام مختار وكاف جائز وحسن مفهوم وقبيح متروك فالتام هو الذي لا يتعلق بشيء مما بعده فيحسن الوقف عليه والابتداء بما بعده واكثر ما يوجد عند رؤس الآي غالبا كقوله واولئك هم المفلحون وقد يوجد في اثنائها كقوله وجعلوا اعزة اهلها اذلة هذا التمام لانه انقضاء كلام بلقيس ثم قال تعالى وكذلك يفعلون وكذا لقد اضلني عن الذكر بعد اذ جاءني هذا التمام لانه انقضى كلام الظالم ابي بن خلف ثم قال تعالى وكان الشيطان

يؤتي احدهم القرآن قبل الايمان فيقرأ مابين فاتحته الى خاتمته مايدري ما امره ولازاجره ولا ماينبغي ان يوقف عنده منه قال النحاس فهذا الحديث يدل على انهم كانوا يتعلمون الاوقاف كما يتعلمون القرآن وقول ابن عمر لقد عشنا برهة من دهرنا يدل على ان ذلك اجماع من الصحابة قلت اخرج هذا الاثر البيهقي في سننه وعن علي رضي الله عنه في قوله تعالى ورتل القرآن ترتيلا قال الترتيل تجويد الحروف ومعرفة الوقوف قال ابن الانباري من تمام معرفة القرآن معرفة الوقف والابتداء فيه وقال النكزاوي باب الوقف عظيم القدر جليل الخطر لانه لايتأتى لاحد معرفة معاني القرآن ولا استنباط الادلة الشرعية منه الا بمعرفة الفواصل وفي النشر لابن الجزري لما لم يمكن القارئ ان يقرأ السورة او القصة في نفس واحد ولم يجز التنفس بين كلمتين حالة الوصل بل ذلك كالتنفس في اثناء الكلمة وجب حينئذ اختيار وقفه للتنفس والاستراحة وتعين ارتضاء ابتداء بعده وتحتم ان لايكون ذلك مما يحيل المعنى ولا يخل بالفهم اذ بذلك يظهر الاعجاز ويحصل القصد ولذلك خص الائمة على تعلمه ومعرفته وفي كلام علي رضي الله عنه دليل على وجوب ذلك وفي كلام ابن عمر رض برهان على ان تعلمه اجماع من الصحابة وصح بل تواتر عندنا تعلمه والاعتناء به من السلف الصالح كابي جعفر يزيد بن القعقاع احد اعيان التابعين وصاحبه الامام نافع وابي عمرو ويعقوب وعاصم وغيرهم من الائمة وكلامهم في ذلك معروف ونصوصهم عليه مشهورة في الكتب ومن ثم اشترط كثير من الخلف على المجيزان لا يجيز احدا الا بعد معرفته الوقف والابتداء وصح عن

لان كلا منهما متواتر وقد حكى ابو عمر الزاهد في كتاب اليواقيت عن ثعلب انه قال اذا اختلف الاعرابان فى القرآن لم افضل اعرابا على اعراب فاذا خرجت الى كلام الناس فضلت الاقوى وقال ابو جعفر النحاس السلامة عند اهل الدين اذا صحت القراءتان ان لا يقال احدهما اجود لانهما جميعا عن النبي صلى الله عليه وسلم فيأ ثم من قال ذلك وكان رؤساء الصحابة ينكرون مثل هذا وقال ابوشامة اكثر المصنفون من الترجيح بين قراءة ملك ومالك حتى ان بعضهم يبالغ الى حد يكاد يسقط وجه القراءة الاخرى وليس هذا بمحمود بعد ثبوت القراءتين انتهى وقال بعضهم توجيه القراة الشاذة اقوى فى الصناعة من توجيه المشهورة خاتمة قال النخعي كانوا يكرهون ان يقولوا قراءة عبد الله وقراءة سالم وقراءة ابي وقراءة زيد بل يقال فلان كان يقرأ بوجه كذا وفلان كان يقرأ بوجه كذا قال النووي والصحيح ان ذلك لايكره النوع الثامن والعشرون في معرفة الوقف والابتداء افرده بالتصنيف خلائق منهم ابو جعفر النحاس وابن الانباري والزجاج والداني والعماني والسجاوندي وغيرهم وهو فن جليل به يعرف كيف اداء القرآن والاصل فيه ماخرجه النحاس قال حدثنا محمد بن جعفر الانباري ثنا هلال ابن العلاثنا ابي وعبد الله بن جعفر قالاثنا عبيد الله بن عمرو الزرقي عن زيد بن ابي انيسة عن القاسم بن عوف البكري قال سمعت عبد الله بن عمر يقول لقد عشنا برهة من دهرنا وان احدنا ليؤتي الايمان قبل القرآن وتنزل السورة على محمد صلى الله عليه وسلم فنتعلم حلالها وحرامها وما ينبغي ان يوقف عنده منها كما تتعلمون انتم اليوم القرآن ولقد رأينا اليوم رجالا

تفسير القراءة المشهورة و تبيين معانيها كقراءة عائشة و حفصة و الصلوٰة الوسطى صلوٰة العصر و قراءة ابن مسعود فاقطعوا ايمانهما و قراءة جابر فان الله من بعد اكراههن لهن غفور رحيم قال فهٰذه الحروف وما شاكلها قد صارت مفسرة للقرآن و قد كان يروى مثل هٰذا عن التابعين في التفسير فيستحسن فكيف اذا روي عن كبار الصحابة ثم صار في نفس القراءة فهو اكثر من التفسير واقوى فادنى مايستنبط من هٰذه الحروف معرفة صحة التأويل انتهى وقد اعتنيت في كتابي اسرار التنزيل ببيان كل قراءة افادت معنى زائدا على القراءة المشهورة

التنبيه الخامس اختلف في العمل بالقراءة الشاذة فنقل امام الحرمين في البرهان عن ظاهر مذهب الشافعي انه لايجوز و تبعه ابو نصر القشيري و جزم به ابن الحاجب لانه نقله على انه قرآن و لم يثبت و ذكر القاضيان ابو الطيب و الحسين و الروياني و الرافعي العمل بها تنزيلا لها منزلة خبر الآحاد و صححه ابن السبكي في جمع الجوامع و شرح المختصر و قد احتج الاصحاب على قطع يمين السارق بقراءة ابن مسعود و عليه ابو حنيفة رح ايضا و احتج على و جوب التتابع في صوم كفارة اليمين بقراءته متتابعات و لم يحتج بها اصحابنا لثبوت نسخها كما سيأتي

التنبيه السادس من المهم معرفة توجيه القرا آت وقد اعتنى به الائمة و افردوا فيه كتبا منها الحجة لابي علي الفارسي و الكشف لمكي والهداية للمهدوي و المحتسب في توجيه الشواذ لابن جني قال الكواشي و فائدته ان يكون دليلا على حسب المدلول عليه او مرجحا الا انه ينبغي التنبيه على شيء و هو انه قد ترجح احدى القراءتين على الاخرى ترجيحا يكاد يسقطها و هٰذا غير مرضي

السمرقندي في كتاب البستان قولين احدهما ان الله تعالى قال بهما جميعا والثاني ان الله تعالى قال بقراءة واحدة الا انه اذن ان تقرأ بقراءتين ثم اختار توسطا وهو انه انكان لكل قراءة تفسير يغاير الآخر فقد قال بهما جميعا وتصير القراءتان بمنزلة آيتين مثل حتى يطهرن وان كان تفسيرهما واحدا كالبيوت والبيوت فانما قال باحدهما واجاز القراءة بهما لكل قبيلة على ما تعود لسانهم قال فان قيل اذا قلتم انه قال باحدهما فاي القراءتين هي قلنا التي بلغة قريش انتهى وقال بعض المتأخرين لاختلاف القراآت وتنوعها فوائد منها التهوين والتسهيل والتخفيف على الامة ومنها اظهار فضلها وشرفها على سائر الامم اذ لم ينزل كتاب غيرهم الا على وجه واحد ومنها اعظام اجرها من حيث انهم يفرغون جهدهم في تحقيق ذلك وضبطه لفظة لفظة حتى مقادير المدات وتفاوت الامالات ثم في تتبع معاني ذلك واستنباط الحكم والاحكام من دلالة كل لفظ وامعانهم الكشف عن التوجيه والتعليل والترجيح ومنها اظهار سر الله في كتابه وصيانته له عن التبديل والاختلاف مع كونه على هذه الاوجه الكثيرة ومنها المبالغة في اعجازه بايجازه اذ تنوع القراآت بمنزلة الآيات ولو جعلت دلالة كل لفظة آية على حدة لم يخف ما كان فيه من التطويل ولهذا كان قوله وارجلكم منزلا لغسل الرجل والمسح على الخف واللفظ واحد لكن باختلاف اعرابه ومنها ان بعض القراآت يبين ما لعله يحمل في القراءة الاخرى فقراءة يطهرن بالتشديد مبينة لمعنى قراءة التخفيف وقراءة فامضوا الى ذكر الله يبين المراد بقراءة اسعوا الذهاب لا المشي السريع وقال ابو عبيد في فضائل القرآن المقصد من القراءة الشاذة

تشتهر القراءة به وانما ورد من طريق غريب لا يعول عليها وهذا يظهر المنع من القراءة به ايضا و منه ما اشتهر عند ائمة هذا الشان القراءة به قديما وحديثا فهذا لا وجه للمنع منه ومن ذلك قراءة يعقوب وغيره قال والبغوي اولى من يعتمد عليه في ذلك فانه مقرئ فقيه جامع للعلوم قال وهكذا التفصيل في شواذ السبعة فان عنهم شيئا كثيرا شاذا انتهى وقال ولده في منع الموانع انما قلنا في جمع الجوامع والسبع متواترة ثم قلنا في الشاذ والصحيح انه ماوراء العشرة ولم نقل والعشرة متواترة لان السبع لم يختلف في تواترها فذكرنا اولا موضع الاجماع ثم عطفنا عليه موضع الخلاف قال على ان القول بان القرآت الثلاث غير متواترة في غاية السقوط ولا يصح القول به عمن يعتبر قوله في الدين وهي لا تخالف رسم المصحف قال وقد سمعت ابي يشدد النكير على بعض القضاة وقد بلغه انه منع من القراءة بها واستأذنه بعض اصحابنا مرة في اقراء السبع فقال اذنت لك ان تقرئ العشر انتهى وقال في جواب سؤال سأله ابن الجزري القرآت السبع التي اقتصر عليها الشاطبي و الثلاث التي هي قراءة ابي جعفر و يعقوب وخلف متواترة معلومة من الدين بالضرورة وكل حرف انفرد به واحد من العشرة معلوم من الدين بالضرورة انه منزل على رسول الله صلى الله عليه وسلم لايكابر في شيء من ذلك الا جاهل التنبيه الرابع باختلاف القرآت يظهر الاختلاف في الاحكام ولهذا بنى الفقهاء نقض وضوء الملموس وعدمه على اختلاف القراءة في لمستم ولا مستم وجواز وطي الحائض عند الانقطاع قبل الغسل وعدمه على الاختلاف في يطهرن وقد حكوا خلافا غريبا في الآية اذا قرئت بقراءتين فحكى ابوالليث

الخمسة ومصحفا الى اليمن و مصحفا الى البحرين لكن لما لم يسمع لهذين المصحفين خبر واراد ابن مجاهد وغيره مراعاة عدد المصاحف استبدلوا من غير البحرين و اليمن قاريين كمل بهما العدد فصادف ذلك موافقة العدد الذي ورد الخبر به فوقع ذلك لمن لم يعرف اصل المسألة ولم تكن له فطنة فظن ان المراد بالاحرف السبعة القراآت السبع والاصل المعتمد عليه صحة السند في السماع و استقامة الوجه في العربية و موافقة الرسم واصح القراآت سندا نافع و عاصم و افصحها ابو عمرو و الكسائي انتهى وقال الفرات في الشافي التمسك بقراءة سبعة من القراء دون غيرهم ليس فيه اثر ولا سنة و انما هو من جمع بعض المتأخرين فانتشروا وهم انه لا تجوز الزيادة على ذلك و ذلك لم يقل به احد و قال الكواشي كلما صح سنده و استقام وجهه في العربية ووافق خط المصحف الامام فهو من السبعة المنصوصة و متى فقد شرط من الثلاثة فهو الشاذ وقد اشتد انكار ائمة هذا الشان على من ظن انحصار القراآت المشهورة في مثل ما في التيسير و الشاطبية و آخر من صرح بذلك الشيخ تقي الدين السبكي فقال في شرح المنهاج قال الاصحاب تجوز القراءة في الصلوة و غيرها بالقراآت السبع ولا تجوز بالشاذة وظاهر هذا يوهم ان غير السبع المشهورة من الشواذ وقد نقل البغوي الاتفاق على القراءة بقراءة يعقوب و ابي جعفر مع السبع المشهورة و هذا القول هو الصواب قال واعلم ان الخارج عن السبع المشهورة على قسمين منه ما يخالف رسم المصحف فهذا لا شك في انه لا تجوز قراءته لا في الصلوة ولا غيرها ومنه ما لا يخالف رسم المصحف ولم

والاشتراك في الاخذ قال ولا اعرف لهذا سببا الا ما قضي من نقص العلم وقال مكي من ظن ان قراءة هؤلاء القراء كنافع و عاصم هي الاحرف السبعة التي في الحديث فقد غلط غلطا عظيما قال و يلزم من هذا ان ماخرج عن قراءة هؤلاء السبعة مماثبت عن الائمة غيرهم و وافق خط المصحف ان لايكون قرآنا وهذا غلط عظيم فان الذين صنفوا القرا آت من الائمة المتقدمين كابي عبيد القاسم بن سلام و ابي حاتم السجستاني و ابي جعفر الطبري و اسمعيل القاضي قد ذكروا اضعاف هؤلاء وكان الناس على رأس المأتين بالبصرة على قراءة ابي عمرو و يعقوب وبالكوفة على قراءة حمزة و عاصم وبالشام على قراءة ابن عامر وبمكة على قراءة ابن كثير وبالمدينة على قراءة نافع و استمروا على ذلك فلما كان على راس الثلاثمأية اثبت ابن مجاهد اسم الكسائي وحذف يعقوب قال و السبب في الاقتصار على السبعة مع ان في ائمة القراء من هو اجل منهم قدرا و مثلهم اكثر من عددهم ان الرواة عن الائمة كانوا كثيرا جدا فلما تقاصرت الهمم اقتصروا مما توافق خط المصحف على ما يسهل حفظه وتنضبط القراءة به فنظروا الى من اشتهر بالثقة و الامامة وطول العمر في ملازمة القراءة و الاتفاق على الاخذ عنه فافردوا من كل مصرا ماما واحدا و لم يتركوا مع ذلك نقل ما كان عليه الائمة غير هؤلاء من القرا آت و لا القراءة به كقراءة يعقوب و ابي جعفر و شيبه وغيرهم قال وقد صنف ابن جبير المكي قبل ابن مجاهد كتابا في القرا آت فاقتصر على خمسة احبار من كل مصرا ماما وانما اقتصر على ذلك لان المصاحف التي ارسلها عثمان رضي الله عنه كانت خمسة الى هذه الامصار و يقال انه وجه بسبعة هذه

وقال غيره الحق ان اصل المد والامالة متواتر ولكن التقدير غير متواتر للاختلاف في كيفيته كذا قال الزركشي قال واما انواع تخفيف الهمزة فكلها متواترة وقال ابن الجزري لانعلم احدا تقدم ابن الحاجب الى ذلك وقد نص على تواتر ذلك كله ائمة الاصول كالقاضي ابي بكر وغيره وهو الصواب لانه اذا ثبت تواتر اللفظ ثبت تواتر هيئة ادائه لان اللفظ لايقوم الا به ولا يصح الا بوجوده التنبيه الثالث قال ابو شامة ظن قوم ان القراآت السبع الموجودة الآن هي التي اريدت في الحديث وهو خلاف اجماع اهل العلم قاطبة وانما يظن ذلك بعض اهل الجهل وقال ابو العباس بن عمار لقد فعل مسبع هذه السبعة مالا ينبغي له واشكل الامر على العامة بايهامه كل من قل نظره ان هذه القراآت هي المذكورة في الخبر وليته اذ اقتصر نقص من السبعة اوزاد ليزيل الشبهة ووقع له ايضا في اقتصاره عن كل امام على راويين انه صار من سمع قراءة راو ثالث غيرهما ابطلها وقد تكون هي اشهر واصح واظهر وربما بالغ من لايفهم فخطأ اوكفر وقال ابو بكر بن العربي ليست هذه السبعة متعينة للجواز حتى لا يجوز غيرها فقراءة ابي جعفر وشيبة والاعمش ونحوهم فان هؤلاء مثلهم اوفوقهم وكذا قال غير واحد منهم مكي وابو العلا الهمداني وآخرون من ائمة القراء وقال ابو حيان ليس في كتاب ابن مجاهد ومن تبعه من القراآت المشهورة الا النزر اليسير فهذا ابو عمرو بن العلاء اشتهر عنه سبعة عشر راويا ثم ساق اسمائهم واقتصر في كتاب ابن مجاهد على اليزيدي واشتهر عن اليزيدي عشرة انفس فكيف يقتصر على السوسي والدوري وليس لهما مزية على غيرهما لان الجميع مشتركون في الضبط والاتقان

المذكورة استبعد هذا الجمع قال وقد اجاب ابن الصباغ بانه لم يستقر عنده القطع بذلك ثم حصل الاتفاق بعد ذلك وحاصله انهما كانتا متواترتين في عصره لكن لم يتواترا عنده انتهى وقال ابن قتيبة في مشكل القرآن ظن ابن مسعود رضي الله تعالى عنه ان المعوذتين ليستا من القرآن لانه رأى النبي صلى الله عليه وسلم يعوذ بهما الحسن والحسين فاقام على ظنه ولا نقول انه اصاب في ذلك واخطأ المهاجرون والانصار قال واما اسقاطه الفاتحة من مصحفه فليس لظنه انها ليست من القرآن معاذ الله ولكنه ذهب الى ان القرآن انما كتب وجمع بين اللوحين مخافة الشك والنسيان والزيادة والنقصان ورأى ان ذلك مأمون في سورة الحمد لقصرها ووجوب تعلمها على كل احد قلت واسقاطه الفاتحة من مصحفه اخرجه ابو عبيد بسند صحيح كما تقدم في اوائل النوع التاسع عشر التنبيه الثاني قال الزركشي في البرهان القرآن والقراءآت حقيقتان متغايرتان فالقرآن هو الوحي المنزل على محمد صلى الله عليه وسلم للبيان والاعجاز والقراءآت اختلاف الفاظ الوحي المذكور في الحروف او كيفيتها من تخفيف وتشديد وغيرهما والقراءآت السبع متواترة عند الجمهور وقيل بل مشهورة قال الزركشي والتحقيق انها متواترة عن الائمة السبعة اما تواترها عن النبي صلى الله عليه وسلم ففيه نظر فان اسنادهم لهذه القراءآت السبعة موجود في كتب القراءآت وهي نقل الواحد عن الواحد قلت في ذلك نظر لما سيأتي واستثنى ابو شامة كما تقدم الالفاظ المختلف فيها عن القراء واستثنى ابن الحاجب ما كان من قبيل الاداء كالمد والامالة وتخفيف الهمزة

فى المصحف الا ما امر النبي صلى الله عليه و سلم باثباته فيه
و لم يجده كتب ذلك و لا سمعه امر به وقال النووي في شرح المهذب
اجمع المسلمون على ان المعوذتين و الفاتحة من القرآن و ان من
جحد منها شيئا كفر و ما نقل عن ابن مسعود باطل ليس بصحيح
و قال ابن حزم فى المحلى هذا كذب على ابن مسعود موضوع وانما
صح عنه قراءة عاصم عن زر عنه و فيها المعوذتان و الفاتحة و قال ابن
حجر في شرح البخاري قد صح عن ابن مسعود انكار ذلك فاخرج
احمد و ابن حبان عنه انه كان لا يكتب المعوذتين في مصحفه
و اخرج عبد الله ابن احمد في زيادات المسند والطبراني و ابن
مردويه من طريق الاعمش عن ابي اسحق عن عبد الرحمن بن
يزيد النخعي قال كان عبدالله ابن مسعود يحك المعوذتين من
مصاحفه و يقول انهما ليستا من كتاب الله و اخرج الطبراني و البزار
من وجه آخر عنه انه كان يحك المعوذتين من الصحف و يقول انما
امر النبي صلى الله عليه و سلم ان يتعوذ بهما و كان عبد الله لا يقرأ بهما
اسانيدها صحيحة قال البزار لم يتابع ابن مسعود على ذلك احد من
الصحابة و قد صح انه صلى الله عليه و سلم قرأهما فى الصلوة قال ابن
حجر فقول من قال انه كذب عليه مردود و الطعن فى الروايات
الصحيحة بغير مستند لايقبل بل الرواية صحيحة والتأويل محتمل قال
و قد اوله القاضي و غيره على انكار الكتابة كما سبق قال و هو تأويل
حسن الا ان الرواية الصريحة التي ذكرتها تدفع ذلك حيث جاء فيها
و يقول انهما ليستا من كتاب الله قال و يمكن حمل لفظ كتاب الله
على المصحف فيتم التأويل المذكور قال لكن من تأمل سياق الطرق

كان جبريل اذا جاءني بالوحي اول مايلقي علي بسم الله الرحمٰن الرحيم و اخرج الواحدي من وجه آخر عن نافع عن ابن عمر قال نزلت بسم الله الرحمٰن الرحيم في كل سورة و اخرج البيهقي من وجه ثالث عن نافع عن ابن عمر انه كان يقرأ في الصلوٰة بسم الله الرحمٰن الرحيم و اذا ختم السورة قرأها و يقول ماكتبت في المصحف الا لتقرأ و اخرج الدار قطني بسند صحيح عن ابي هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قرأتم الحمد فاقرؤا بسم الله الرحمٰن الرحيم انها ام القرآن و ام الكتاب والسبع المثاني و بسم الله الرحمٰن الرحيم احدى آياتها و اخرج مسلم عن انس قال بينا رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم بين اظهرنا اذا غفي اغفاة ثم رفع رأسه متبسما فقال انزلت علي آنفا سورة فقرأ بسم الله الرحمٰن الرحيم انا اعطينا ك الكوثر الحديث فهٰذه الآحاديث تعطي التواتر المعنوي بكونها قرآنا منزلا في اوائل السور ومن المشكل على هٰذا الاصل ما ذكره الامام فخر الدين قال نقل في بعض الكتب القديمة ان ابن مسعود كان ينكر كون سورة الفاتحة والمعوذتين من القرآن وهو في غاية الصعوبة لانا ان قلنا ان النقل المتواتر كان حاصلا في عصر الصحابة يكون ذلك من القرآن فانكاره يوجب الكفر وان قلنا لم يكن حاصلا في ذلك الزمان فيلزم ان القرآن ليس بمتواتر في الاصل قال والاغلب على الظن ان نقل هٰذا المذهب عن ابن مسعود نقل باطل وبه يحصل الخلاص عن هٰذه العقدة وكذا قال القاضي ابو بكر لم يصح عنه انها ليست بقرآن ولا حفظ عنه انما حكاها واسقطها من مصحفه انكار الكتابتها لاجحد الكونها قرآنا لانه كانت السنة عنده ان لايكتب

نزلت عرف ان السورة قد ختمت و استقبلت او ابتدئت سورة اخرى و اخرج الحاكم من وجه آخر عن سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال كان المسلمون لا يعلمون انقضاء السورة حتى تنزل بسم الله الرحمن الرحيم فاذا نزلت عملوا ان السورة قد انقضت اسناده على شرط الشيخين و اخرج الحاكم ايضا من وجه آخر عن سعيد عن ابن عباس رض ان النبي صلى الله عليه وسلم كان اذا جاءه جبريل فقرأ بسم الله الرحمن الرحيم علم انها سورة اسناده صحيح و اخرج البيهقي في الشعب وغيره عن ابن مسعود رض قال كنا لا نعلم فصل ما بين السورتين حتى تنزل بسم الله الرحمن الرحيم قال ابوشامة يحتمل ان يكون ذلك وقت عرضه صلى الله عليه وسلم على جبريل كان لا يزال يقرأ من السورة الى ان يأمره جبريل بالتسمية فيعلم ان السورة قد انقضت و عبر صلى الله عليه وسلم بلفظ النزول اشعارا بانها قرآن في جميع اوائل السور و يحتمل ان يكون المراد ان جميع آيات كل سورة كانت تنزل قبل نزول البسملة فاذا كملت آياتها نزل جبريل بالبسملة واستعرض السورة فيعلم النبي صلى الله عليه وسلم انها قد ختمت ولا يلحق بها شئ واخرج ابن خزيمة والبيهقي بسند صحيح عن ابن عباس قال السبع المثاني فاتحة الكتاب قيل فاين السابعة قال بسم الله الرحمن الرحيم واخرج الدار قطني بسند صحيح عن علي رض انه سئل عن السبع المثاني فقال الحمد لله رب العالمين فقيل له انما هي ست آيات فاين السابعة فقال بسم الله الرحمن الرحيم آية واخرج الدار قطني وابو نعيم والحاكم في تاريخه بسند ضعيف من نافع عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال

كاسماء السور وآمين والاعشار فلو لم يكن قرآنا لما استجازوا اثباتها بخطه من غير تمييز لان ذلك يحمل على اعتقادها فيكونون مغررين بالمسلمين حاملين لهم على اعتقاد ماليس بقرآن قرآنا وهذا مما لايجوز اعتقاده في الصحابة فان قيل لعلها اثبتت للفصل بين السور اجيب بان هذا فيه تغرير ولا يجوز ارتكابه لمجرد الفصل ولوكانت له لكتبت بين براءة والانفال ويدل لكونها قرآنا منزلا ما اخرجه احمد وابوداؤد والحاكم وغيرهما عن ام سلمة ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقرأ بسم الله الرحمن الرحيم الحمد لله رب العالمين الحديث وفيه وعد بسم الله الرحمن الرحيم آية ولم يعد عليهم واخرج ابن خزيمة والبيهقي في المعرفة بسند صحيح من طريق سعيد ابن جبير عن ابن عباس رض قال استرق الشيطان من الناس اعظم آية من القرآن بسم الله الرحمن الرحيم واخرج البيهقي في الشعب وابن مردويه بسند حسن من طريق مجاهد عن ابن عباس رض قال اغفل الناس آية من كتاب الله لم تنزل على احد سوى النبي صلى الله عليه وسلم الا ان يكون سليمان بن داؤد بسم الله الرحمن الرحيم واخرج الدارقطني والطبراني في الاوسط بسند ضعيف عن بريدة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لاخرج من المسجد حتى اخبرك بآية لم تنزل على نبي بعد سليمان غيري ثم قال باي شيء تفتتح القرآن اذا افتتحت الصلوة قلت بسم الله الرحمن الرحيم قال هي هي واخرج ابوداؤد والحاكم والبيهقي والبزار من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال كان النبي صلى الله عليه وسلم لايعرف فصل السورة حتى تنزل عليه بسم الله الرحمن الرحيم زاد البزار فاذا

على نقل جمله وتفاصيله فما نقل آحادا ولم يتواتر يقطع بانه ليس من القرآن قطعا وذهب كثير من الاصوليين الى ان التواتر شرط في ثبوت ما هو من القرآن بحسب اصله وليس بشرط في محله ووضعه وترتيبه بل يكثر فيها نقل الآحاد قيل وهو الذي يقتضيه صنع الشافعي في اثبات البسملة من كل سورة ورد هذا المذهب بان الدليل السابق يقتضي التواتر فى الجميع ولانه لو لم يشترط لجاز سقوط كثير من القرآن المكرر وثبوت كثير مما ليس بقرآن اما الاول فلانا لو لم نشترط التواتر فى المحل جاز ان لايتواتر كثير من المتكررات الواقعة فى القرآن مثل فباي الاء ربكما تكذبان واما الثاني فلانه اذا لم يتواتر بعض القرآن بحسب المحل جاز اثبات ذلك البعض فى الموضع بنقل الآحاد وقال القاضي ابوبكر فى الانتصار ذهب قوم من الفقهاء والمتكلمين الى اثبات قرآن حكما لا علما بخبر الواحد دون الاستفاضة وكره ذلك اهل الحق وامتنعوا منه وقال قوم من المتكلمين انه يسوغ اعمال الرأى والاجتهاد في اثبات قراءة وا وجه واحرف اذا كانت تلك الا وجه صوابا فى العربية وان لم يثبت ان النبي صلى الله عليه السلام قرأ بها وابى ذلك اهل الحق وانكروه وخطؤوا من قال به انتهى وقد بنى المالكية وغيرهم ممن قال بانكار البسملة قولهم على هذا الاصل وقرروه بانها لم تتواتر في اوائل السور وما لم يتواتر فليس بقرآن واجيب من قبلنا بمنع كونها لم تتواتر فرب متواتر عند قوم دون آخرين وفي وقت دون آخر ويكفي في تواترها اثباتها في مصاحف الصحابة فمن بعدهم بخط المصحف مع منعهم ان يكتب فى المصحف ما ليس منه

الراء الرابع الشاذ وهو ما لم يصح سنده وفيه كتب مؤلفة من ذلك قراءة ملك يوم الدين بصيغة الماضي ونصب اليوم اياك يعبد ببنائه للمفعول الخامس الموضوع كقراءات الخزاعي وظهرلي سادس يشبهه من انواع الحديث المدرج وهو مازيد في القراءات على وجه التفسير كقراءة سعد بن ابي وقاص وله اخ اواخت من ام اخرجها سعيد بن منصور وقراءة ابن عباس رض ليس عليكم جناح ان تبتغوا فضلا من ربكم في مواسم الحج اخرجها البخاري وقراءة ابن الزبير ولتكن منكم امة يدعون الى الخير ويأمرون بالمعروف وينهون عن المنكر ويستعينون بالله على ما اصابهم قال عمرو فما ادري اكانت قراءته ام فسربه اخرجه سعيد بن منصور واخرجه ابن الانباري وجزم بانه تفسير واخرج عن الحسن انه كان يقرأ وان منكم الاواردها الورود الدخول قال ابن الانباري قوله الورود الدخول تفسير من الحسن لمعنى الورود وغلط فيه بعض الرواة فالحقه بالقرآن قال ابن الجزري في آخر كلامه وربما كانوا يدخلون التفسير في القراءة ايضا حاو بيانا لانهم محققون لما تلقوه عن النبي صلى الله عليه وسلم قرآنا فهم امنون من الالتباس وربما كان بعضهم يكتبه معه واما من يقول ان بعض الصحابة كان يجيز القراءة بالمعنى فقد كذب انتهى وسافرو في هذا النوع اعني المدرج تأليفا مستقلا تذييلات الاول لاخلاف ان كلما هو من القرآن يجب ان يكون متواترا في اصله واجزائه واما في محله ووضعه وترتيبه فكذلك عند محققي اهل السنة للقطع بان العادة تقتضي بالتواتر في تفاصيل مثله لان هذا المعجز العظيم الذي هو اصل الدين القويم والصراط المستقيم مما تتوفر الدواعي

اما ما له اصل كذلك فانه مما يصار الى قبول القياس عليه كقياس ادغام قال رجلان على قال رب ونحوه مما لا يخالف نصاً ولا اصلا ولا يرد اجماعا مع انه قليل جدا قلت اتقن الامام بن الجزري هذا الفصل جدا وقد تحرر لي منه ان القراءآت انواع الاول المتواتر وهو ما نقله جمع لا يمكن تواطئهم على الكذب عن مثلهم الى منتهاه وغالب القراءآت كذلك الثاني المشهور وهو ما صح سنده ولم يبلغ درجة التواتر ووافق العربية والرسم واشتهر عند القراء فلم يعدوه من الغلط ولا من الشذوذ ويقرأ به على ما ذكر ابن الجزري ويفهمه كلام ابي شامة السابق ومثاله ما اختلفت الطرق في نقله عن السبعة فرواه بعض الرواة عنهم دون بعض وامثلة ذلك كثيرة في فرش الحروف من كتب القرآءات كالذي قبله ومن اشهر ما صنف في ذلك التيسير للداني وقصيدة الشاطبي واوعية النشر في القراءآت العشر وتقريب النشر كلاهما لابن الجزري الثالث الآحاد وهو ما صح سنده وخالف الرسم او العربية اولم يشتهر الاشتهار المذكور ولا يقرأ به وقد عقد الترمذي في جامعه والحاكم في مستدركه لذلك بابا اخرجا فيه شيأ كثيرا صحيح الاسناد من ذلك ما اخرجه الحاكم من طريق عاصم الجحدري عن ابي بكرة ان النبي صلى الله عليه وسلم قرأ متكئين على رفا رف خضر وعبا قري حسان واخرج من حديث ابي هريرة انه صلى الله عليه وسلم قرأ فلا تعلم نفس ما اخفي لهم من قرات اعين واخرج عن ابن عباس انه صلى الله عليه وسلم قرأ لقد جاءكم رسول من انفسكم بفتح الفاء واخرج عن عائشة رض انه صلى الله عليه وسلم قرأ فروح وريحان يعني بضم

ووافق العربية وخط المصحف وقسم صح نقله عن الآحاد وصح في العربية وخالف لفظه الخط فيقبل ولا يقرأ به لامرين مخالفته لما اجمع عليه وانه لم يؤخذ باجماع بل بخبر الآحاد ولا يثبت به قرآن ولا يكفر جاحده ولبئس ما صنع ان جحده وقسم نقله ثقة ولا وجه له في العربية او نقله غير ثقة فلا يقبل وان وافق الخط قال ابن الجزري مثال الاول كثير كمالك وملك ويخدعون ويخادعون ومثال الثاني قراءة ابن مسعود وغيره والذكر والانثى وقرأ ابن عباس وكان امامهم ملك يأخذ كل سفينة صالحة ونحو ذلك قال واختلف العلماء في القراءة بذلك والاكثر على المنع لانها لم تتواتر وان ثبتت بالنقل فهي منسوخة بالعرضة الاخيرة او باجماع الصحابة على المصحف العثماني ومثال ما نقله غير ثقة كثير مما في كتب الشواذ مما غالب اسناده ضعيف وكالقراءة المنسوبة الى الامام ابي حنيفة التي جمعها ابو الفضل محمد بن جعفر الخزاعي ونقلها عنه ابو القاسم الهذلي ومنها انما يخشى الله من عباده العلماء برفع الله ونصب العلماء وقد كتب الدار قطني وجماعة بان هذا الكتاب موضوع لا اصل له ومثال ما نقله ثقة ولا وجه له في العربية قليل لا يكاد يوجد وجعل بعضهم منه رواية خارجة عن نافع معائش بالهمز قال وبقي قسم رابع مردود ايضا وهو ما وافق العربية والرسم ولم ينقل البتة فهذا رده احق ومنعه اشد ومرتكبه مرتكب لعظيم من الكبائر وقد ذكر جواز ذلك عن ابي بكر بن مقسم وعقد له بسبب ذلك مجلس واجمعوا على منعه ومن ثم امتنعت القراءة بالقياس المطلق الذي لا اصل له يرجع اليه ولا ركن يعتمد في الاداء عليه قال

واحد وتمشيه صحة القراءة وشهرتها وتلقيها بالقبول بخلاف زيادة كلمة ونقصانها و تقديمها وتأخيرها حتى ولو كانت حرفا واحدا من حروف المعاني فان حكمه في حكم الكلمة لاتسوغ مخالفة الرسم فيه وهذا هو الحد الفاصل في حقيقة اتباع الرسم ومخالفته قال وقولنا وصح سندها نعني به ان يروي تلك القراءة العدل الضابط عن مثله وهكذا حتى تنتهي وتكون مع ذلك مشهورة عند ائمة هذا الشان غير معدودة عندهم من الغلط او مما شذ بها بعضهم قال وقد شرط بعض المتأخرين التواتر في هذا الركن ولم يكتف بصحة السند وزعم ان القرآن لايثبت الا بالتواتر وان ماجاء مجي الآحاد لايثبت به قرآن قال وهذا مما لا يخفى مافيه فان التواتر اذا ثبت لايحتاج فيه الى الركنين الاخيرين من الرسم وغيره اذ ماثبت من احرف الخلاف متواترا عن النبي صلى الله عليه وسلم وجب قبوله وقطع بكونه قرآنا سواء وافق الرسم ام لا واذا شرطنا التواتر في كل حرف من حروف الخلاف انتفى كثير من احرف الخلاف الثابت عن السبعة وقد قال ابوشامة شاع على السنة جماعة من المقرئين المتأخرين وغيرهم من المقلدين ان السبع كلها متواترة اي كل فرد فرد مماروي عنهم قالوا والقطع بانها منزلة من عند الله واجب ونحن بهذا نقول ولكن فيما اجتمعت على نقله عنهم الطرق واتفقت عليه الفرق من غير نكيرله فلا اقل من اشتراط ذلك اذا لم يتفق التواتر في بعضها وقال الجعبري الشرط واحد وهو صحة النقل ويلزم الآخران فمن احكم معرفة حال النقلة وامعن في العربية واتقن الرسم انحلت له هذه الشبهة وقال مكي ماروي في القرآن على ثلاثة اقسام قسم يقرأ به ويكفر جاحده وهو ما نقله الثقات

قالوا اتخذا الله في البقرة بغيروا و وبالزبر وبالكتاب باثبات الباء فيهما فان ذلك ثابت في المصحف الشامي وكقراءة ابن كثير تجري من تحتها الانهار في آخر براءة بزيادة من فانه ثابت في المصحف المكي ونحو ذلك فان لم يكن في شيء من المصاحف العثمانية فشاذة لمخالفتها الرسم المجمع عليه وقولنا ولو احتمالا يعني به ماوافقه ولوتقدير اكملك يوم الدين فانه كتب في الجميع بلا الف فقراءة الحذف توافقه تحقيقا وقراءة الالف توافقه تقدير الحذفها في الخط اختصار اكما كتب ملك الملك وقد يوافق اختلاف القرا آت الرسم تحقيقا نحو تعملون بالتاء والياء ونغفرلكم بالتاء والنون ونحو ذلك مما يدل تجرده عن النقط والشكل في حذفه واثباته على فضل عظيم للصحابة في علم الهجا خاصة وفهم ثاقب في تحقيق كل علم وانظر كيف كتبوا الصراط بالصاد المبدلة من السين وعدلوا عن السين التي هي الاصل لتكون قراءة السين وان خالفت الرسم من وجه قدانت على الاصل فيعتدلان وتكون قراءة الاشمام محتملة ولو كتب ذلك بالسين على الاصل لفات ذلك وعدت قراءة غير السين مخالفة للرسم والاصل ولذلك اختلف في بسطة الاعراف دون بسطة البقرة لكون حرف البقرة كتب بالسين والاعراف بالصاد على ان مخالف صريح الرسم في حرف مدغم او مبدل او ثابت او محذوف او نحو ذلك لا يعد مخالفا اذا ثبتت القراءة به ووردت مشهورة مستفاضة ولذالم يعدوا اثبات ياء الزوائد وحذف ياء تسألني في الكهف وواو واكون من الصالحين والظاء من بظنين ونحوه من مخالفة الرسم المردودة فان الخلاف في ذلك مغتفر اذ هو قريب يرجع الى معنى

هكذا الا اذا دخلت في ذلك الضابط و حينئذ لاينفرد بنقلها مصنف عن غيره ولايختص ذلك بنقلها عنهم بل ان نقلت عن غيرهم من القراء فذلك لايخرجها عن الصحة فان الاعتماد على استجماع تلك الاوصاف لاعلى من تنسب اليه فان القراءة المنسوبة الى كل قارئ من السبعة و غيرهم منقسمة الى المجمع عليه و الشاذ غيران هؤلاء السبعة لشهرتهم و كثرة الصحيح المجمع عليه في قراءتهم تركن النفس الى مانقل عنهم فوق ماينقل عن غيرهم ثم قال ابن الجزري فقولنا في الضابط ولوبوجه نريد به و جها من جوه النحو سواء كان افصح ام فصيحا مجمعا عليه ام مختلفا فيه اختلافالايضر مثله اذا كانت القراءة مما شاع وذاع وتلقاه الائمة بالاسناد الصحيح اذ هو الاصل الاعظم والركن الاقوم وكم من قراءة انكرها بعض اهل النحو اوكثير منهم ولم يعتبر انكارهم كاسكان بأرئكم و يأمركم و خفض و الارحام ونصب ليجزى قوما و الفصل بين المضافين في قتل اولادهم شركائهم وغير ذلك قال الداني وائمة القراء لاتعمل في شيء من حروف القرآن على الافشاء في اللغة والاقيس في العربية بل على الاثبت في الاثر و الاصح في النقل و اذا ثبتت الرواية لم يردها قياس عربية ولافشو لغة لان القراءة سنة متبعة يلزم قبولها و المصير اليها قلت اخرج سعيد بن منصور في سننه عن زيد بن ثابت قال القراءة سنة متبعة قال البيهقي اراد ان اتباع من قبلها في الحروف سنة متبعة لا يجوز مخالفة المصحف الذي هو امام و لا مخالفة القرا آت التي هي مشهورة وان كان غير ذلك سائغا في اللغة او اظهر منها ثم قال ابن الجزري و نعني بموافقة احد المصاحف ما كان ثابتا في بعضها دون بعض كقراءة ابن عامر

وخرجت عليه قواعد القرا آت ولم اسبق اليه ولله الحمد والمنة واذا عرفت العلو باقسامه عرفت النزول فانه ضده وحيث ذم النزول فهو مالم ينجبر بكون رجاله اعلم اوا حفظ اواتقن اواجل اواشهر اواورع اما اذا كان كذلك فليس بمذموم ولا مفضول النوع الثاني والثالث والرابع والخامس والسادس والسابع والعشرون معرفة المتواتر والمشهور والآحاد والشاذ والموضوع والمدرج اعلم ان القاضي جلال الدين البلقيني قال القراءة تنقسم الى متواتر وآحاد وشاذ فالمتواتر القرا آت السبعة المشهورة والآحاد قرآت الثلاثة التي هي تمام العشر ويلحق بها قرآت الصحابة والشاذ قرآت التابعين كالاعمش ويحيى بن وثاب و ابن جبير ونحوهم وهذا الكلام فيه نظر يعرف مما سنذكره و احسن من تكلم في هذا النوع امام القراء في زمانه شيخ شيوخنا ابو الخير بن الجزري قال في اول كتابه النشر كل قراءة وافقت العربية ولو بوجه ووافقت احدى المصاحف العثمانية ولو احتمالا وصح سندها فهي القراءة الصحيحة التي لا يجوز ردها ولا يحل انكارها بل هي من الاحرف السبعة التي نزل بها القرآن ووجب على الناس قبولها سواء كانت عن الائمة السبعة ام عن العشرة ام عن غيرهم من الائمة المقبولين ومتى اختل ركن من هذه الاركان الثلاثة اطلق عليها ضعيفة اوشاذة اوباطلة سواء كانت عن السبعة ام عن من هو اكبر منهم هذا هو الصحيح عند ائمة التحقيق من السلف والخلف صرح بذلك الداني ومكي والمهدوي و ابو شامة وهو مذهب السلف الذي لا يعرف عن احد منهم خلافه قال ابو شامة في المرشد الوجيز لا ينبغي ان يغتر بكل قراءة تعزى الى احد السبعة ويطلق عليها لفظ الصحة وانها انزلت

بن الحسن عن ابراهيم بن عمر المقري عن ابى الحسين بن بويان عن ابي بكر بن الاشعث عن ابي جعفر الربعي المعروف بابي نشيط عن قالون عن نافع ورواها ابن الجزري عن ابي محمد بن البغدادي وغيره عن الصايغ عن الكمال بن فارس عن ابي اليمن الكندي عن ابي القاسم هبة الله بن احمد الحريري عن ابي بكر الخياط عن العرضي عن ابن بويان فهذه مساواة لابن الجزري لان بينه وبين ابن بويان سبعة وهي العدد الذي بين الشاطبي وبينه وهي لمن اخذ عن ابن الجزري مصافحة للشاطبي ومما يشبه هذا التقسيم الذي لاهل الحديث تقسيم القراء احوال الاسناد الى قراءة ورواية وطريق ووجه فالخلاف ان كان لاحد الائمة السبعة اوالعشرة اونحوهم واتفقت عليه الروايات والطرق عنه فهو قراءة وان كان للراوي عنه فرواية اولمن بعده فنازلا فطريق اولا على هذه الصفة مما هو راجع الى تخيير القاري فيه فوجه الرابع من اقسام العلو تقدم وفاة الشيخ عن قرينه الذي اخذ عن شيخه فالآخذ مثلا عن التاج بن مكتوم اعلى من الآخذ عن ابى المعالي بن اللبان وعن ابن اللبان اعلى من البرهان الشامي وان اشتركوا فى الاخذ عن ابي حيان لتقدم وفاة الاول على الثاني والثاني على الثالث الخامس العلو بموت الشيخ لامع التفات الى امر آخر او شيخ آخر متى يكون قال بعض المحدثين يوصف الاسناد بالعلو اذا مضى عليه من موت الشيخ خمسون سنة وقال ابن منده ثلاثون فعلى هذا الاخذ عن اصحاب ابن الجزري عال من سنة ثلاث وستين وثمانمائه لان ابن الجزري آخر من كان سنده عاليا ومضى عليه حينئذ من موته ثلاثون سنة فهذا ماحررته من قواعد الحديث

والابدال والمساواة والمصافحات فالموافقة ان يجتمع طريقه مع احد اصحاب الكتب في شيخه وقد يكون مع علو على ما لو رواه من طريقه وقد لا يكون مثاله في هذا الفن قراءة ابن كثير رواية البزي طريق ابن بذان عن ابي ربيعة عنه يرويها ابن الجزري من كتاب المفتاح لابي منصور محمد بن عبد الملك ابن خيرون ومن كتاب المصباح لابي الكرم الشهرزوري وقرأبها كل من المذكورين على عبد السيد بن عتاب فروايته لها من احد الطريقين تسمى موافقة للآخر باصطلاح اهل الحديث والبدل ان يجتمع معه في شيخ شيخه فصاعدا وقد يكون ايضا بعلو وقد لايكون مثاله هنا قراءة ابي عمرو رواية الدوري طريق ابن مجاهد عن ابي الزعرا عنه رواها ابن الجزري من كتاب التيسير قرأبها الداني على ابى القاسم عبدالعزيز بن جعفر البغدادي وقرأ بها على ابي طاهر عن ابن مجاهد ومن المصباح قرأ بها ابوالكرم على ابى القاسم يحيى بن احمد بن الشيبي وقرأ بها على ابى الحسن الحمامي وقرأ على ابي طاهر فروايته لها من طريق المصباح تسمى بدلا للداني في شيخ شيخه والمساواة ان يكون بين الراوي والنبي صلى الله عليه وسلم او الصحابي او من دونه الى شيخ احد اصحاب الكتب كمابين احد اصحاب الكتب والنبى صلى الله عليه وسلم او الصحابي اومن دونه على ما ذكر من العدد والمصافحة ان يكون اكثر عددا منه بواحد فكأنه لقي صاحب ذلك الكتاب وصافحه واخذ عنه مثاله قراءة نافع رواها الشاطبي عن ابي عبد الله محمد بن علي التفزي عن ابي عبد الله بن غلام الفرس عن سليمان ابن نجاح وغيره عن ابي عمرو الداني عن ابى الفتح فارس بن احمد عن عبدالباقي

فصلوها فاول من صنف في القراآت ابو عبيد القاسم بن سلام ثم احمد بن جبير الكوفي ثم اسمعيل بن اسحق المالكي صاحب قالون ثم ابو جعفر بن جرير الطبري ثم ابو بكر محمد بن احمد بن عمر الداجوني ثم ابو بكر بن مجاهد ثم قام الناس في عصره وبعده بالتأليف في انواعها جامعا ومفردا وموجزا ومسهبا وائمة القراآت لا تحصى وقد صنف طبقاتهم حافظ الاسلام ابو عبد الله الذهبي ثم حافظ القراء ابو الخير ابن الجزري النوع الحادي والعشرون في معرفة العالي والنازل من اسانيده اعلم ان طلب علو الاسناد سنة فانه قرب الى الله تعالى وقد قسمه اهل الحديث الى خمسة اقسام ورأيتها تأتي هنا الاول القرب من رسول الله صلى الله عليه وسلم من حيث العدد باسناد نظيف غير ضعيف وهو افضل انواع العلو واجلها واعلى ما يقع للشيوخ في هذا الزمان اسناد رجاله اربعة عشر رجلا وانما يقع ذلك من قراءة ابن عامر من رواية ابن ذكوان ثم خمسة عشر وانما يقع ذلك من قراءة عاصم من رواية حفص وقراءة يعقوب من رواية رويس الثاني من اقسام العلو عند المحدثين القرب الى امام من ائمة الحديث كالاعمش وهشيم وابن جريج والاوزاعي ومالك ونظيره هذا القرب الى امام من الائمة السبعة فاعلى مايقع اليوم للشيوخ بالاسناد المتصل بالتلاوة الى ذفع اثنى عشر والى ابن عامر اثنى عشر الثالث عند المحدثين العلو بالنسبة الى رواية احد الكتب الستة بان يروي حديثا لو رواه من طريق كتاب من الستة وقع انزل مما لو رواه من غير طريقها ونظيره هذا العلو بالنسبة الى بعض الكتب المشهورة في القراآت كالتيسير والشاطبية ويقع في هذا النوع الموافقات

بضبط القرا أة اتم عناية حتى صاروا ائمة يقتدى بهم و يرحل اليهم فكان بالمدينة ابو جعفر يزيد بن القعقاع ثم شيبه بن نصاح ثم نافع بن ابي نعيم وبمكه عبد الله بن كثير و حميد بن قيس الاعرج ومحمد بن محيصن وبالكوفة يحيى بن وثاب و عاصم بن ابى النجود و سليمان الاعمش ثم حمزة ثم الكسائي و بالبصرة عبد الله بن ابي اسحٰق و عيسى بن عمرو ابو عمرو بن العلا و عاصم الجحدري ثم يعقوب الحضرمي وبالشام عبد الله بن عامر و عطية بن قيس الكلابي و اسمٰعيل بن عبد الله بن المهاجر ثم يحيى ابن الحٰرث الذماري ثم شريح بن يزيد الحضرمي و اشتهر من هٰؤلاء فى الآفاق الائمة السبعة نافع واخذ عن سبعين من التابعين منهم ابو جعفر وابن كثير واخذ عن عبدالله ابن السائب الصحابي و ابو عمرو و اخذ عن التابعين و ابن عامر واخذ عن ابى الدرداء واصحاب عثمان وعاصم واخذ عن التابعين وحمزه واخذ عن عاصم والاعمش و السبيعي و منصور بن المعتمر وغيرهم والكسائي واخذ عن حمزة و ابي بكر بن عياش ثم انتشرت القراء فى الاقطار وتفرقوا امما بعد امم واشتهر من رواة كل طريق من طرق السبعة راويان فعن نافع قالون و ورش عنه وعن ابن كثير قنبل و البزي عن اصحابه عنه وعن ابي عمرو الدوري و السوسي عن اليزيدي عنه وعن ابن عامر هشام و ابن ذكوان عن اصحابه عنه و عن عاصم ابوبكر بن عياش وحفص عنه وعن حمزة خلف و خلاد عن سليم عنه وعن الكسائي الدوري و ابوالحرث ثم لما اتسع الخرق وكاد الباطل يلتبس بالحق قام جهابذة الامة وبالغوا فى الاجتهاد و جمعوا الحروف و القرا آت وعزوا الوجوه والروايات و ميزوا الصحيح و المشهور و الشاذ باصول اصلوها و اركان

الشهيدة وكانت قد جمعت القرآن ان رسول الله صلى الله عليه وسلم حين غزا بدرا قالت له اتأذن لي فاخرج معك اداوي جرحاكم وامرض مرضاكم لعل الله يهدي لي شهادة قال ان الله مهدلك شهادة وكان النبي صلى الله عليه وسلم قد امرها ان تؤم اهل دارها وكان لها مؤذن فغمها غلام لها و جارية كانت دبرتهما فقتلاها في امارة عمر رض فقال عمر صدق رسول الله صلى الله عليه وسلم كان يقول انطلقوا بنا نزور الشهيدة • فصـــل المشتهرون باقراء القرآن من الصحابة سبعة عثمان وعلي وابي و زيد بن ثابت و ابن مسعود و ابو الدرداء و ابوموسى الاشعري كذا ذكرهم الذهبي في طبقات القراء قال وقد قرأ على ابي جماعة من الصحابة منهم ابو هريرة و ابن عباس و عبد الله بن السائب رضي الله عنهم واخذ ابن عباس عن زيد ايضا و اخذ عنهم خلق من التابعين فممن كان بالمدينة ابن المسيب و عروة وسالم و عمر بن عبد العزيز وسليمان و عطاء ابنا يسار و معاذ بن الحارث المعروف بمعاذ القاري وعبد الرحمن ابن هرمز الاعرج و ابن شهاب الزهري ومسلم بن جندب وزيد بن اسلم وبمكة عبيد و عطاء بن ابي رباح وطاؤس ومجاهد وعكرمة وابن ابي مليكه وبالكوفة علقمة والاسود ومسروق وعبيدة وعمرو بن شرجيل والحارث بن قيس والربيع بن حيثم وعمرو بن ميمون وابو عبد الرحمن السلمي وزربن حبيش وعبيد بن فضيلة وسعيد بن جبير والنخعي والشعبي وبالبصرة ابو العالية وابو رجا ونصربن عاصم ويحيى بن يعمر والحسن وابن سيرين وقتادة وبالشام المغيرة بن ابي شهاب المخزومي صاحب عثمان وخليفة بن سعد صاحب ابى الدرداء ثم تجرد قوم واعتنوا

الاشعري ذكره ابو عمرو الداني تنبيه ابو زيد المذكور في حديث انس اختلف في اسمه فقيل سعد بن عبيد ابن النعمان احد بني عمرو بن عوف ورد بانه اوسي وانس خزرجي وقال انه احد عمومته وبان الشعبي عده هو وابو زيد جميعا في من جمع القرآن كما تقدم فدل على انه غيره قال ابو احمد العسكري لم يجمع القرآن من الاوس غير سعد ابن عبيد وقال محمد بن حبيب في المحبر سعد بن عبيد احد من جمع القرآن في عهد النبي صلى الله عليه وسلم وقال ابن حجر قد ذكر ابن ابي داؤد فيمن جمع القرآن قيس بن ابي صعصعة وهو خزرجي يكنى ابا زيد فلعله هو وذكر ايضا سعد بن المنذر بن اوس بن زهير وهو خزرجي ايضا لكن لم ار التصريح بانه يكنى ابا زيد قال ثم وجدت عند ابن ابي داؤد ما رفع الاشكال فانه روى باسناد على شرط البخاري الى ثمامة عن انس ان ابا زيد الذي جمع القرآن اسمه قيس بن السكن قال وكان رجلا منا من بني عدي بن النجار احد عمومتي ومات ولم يدع عقبا ونحن ورثناه قال ابن ابي داؤد حدثنا انس بن خالد الانصاري قال هو قيس بن السكن بن زعوراء من بني عدي ابن النجار قال ابن ابي داؤد مات قريبا من وفات رسول الله صلى الله عليه وسلم فذهب علمه ولم يوخذ عنه وكان عقبيا بدريا ومن الاقوال في اسمه ثابت واوس ومعاذ فائدة ظفرت بامرأة من الصحابيات جمعت القرآن لم يعد ها احد ممن تكلم في ذلك فاخرج ابن سعد في الطبقات اخبرنا الفضل ابن دكين ثنا الوليد ابن عبد الله بن جميع قال حدثتني جدتي عن ام ورقة بنت عبد الله بن الحرث وكان رسول صلى الله عليه وسلم يزورها ويسميها

قال ابن حجر وقد ورد عن علي رض انه جمع القرآن على ترتيب النزول عقب موت النبي صلى الله عليه وسلم اخرجه ابن ابي داؤد واخرج النسائي بسند صحيح عن عبد الله بن عمر قال جمعت القرآن فقرأت به كل ليلة فبلغ النبي صلى الله عليه وسلم فقال اقرأه في شهر الحديث واخرج ابن ابي داؤد بسند حسن عن محمد بن كعب القرظي قال جمع القرآن على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم خمسة من الانصار معاذ بن جبل وعبادة ابن الصامت وابي بن كعب وابوالدرداء وابوايوب الانصاري واخرج البيهقي في المدخل عن ابن سيرين قال جمع القرآن على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم اربعة لايختلف فيهم معاذ بن جبل وابي ابن كعب وزيد وابوزيد واختلفوا في رجلين من ثلاثة ابى الدرداء وعثمان وقيل عثمان وتميم الداري واخرج هو وابن ابي داؤد عن الشعبي قال جمع القرآن في عهد النبي صلى الله عليه وسلم ستة ابي وزيد ومعاذ وابوالدرداء وسعد بن عبيد وابوزيد ومجمع بن جارية قد اخذه الاسورتين او ثلاثة وقد ذكر ابو عبيد في كتاب القراءات القراء من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم فعد من المهاجرين الخلفاء الاربعة وطلحة وسعد او ابن مسعود وحذيفة وسالما وابا هريرة وعبدالله بن السائب والعبادلة وعائشة وحفصة وام سلمة رضي الله عنهم ومن الانصار عبادة بن الصامت ومعاذا الذي يكنى ابا حليمة ومجمع بن جارية وفضالة بن عبيد ومسلمة بن مخلد رضي الله عنهم وصرح بان بعضهم انما اكمله بعد النبي صلى الله عليه وسلم فلا يرد على الحصر المذكور في حديث انس وعدا ابن ابي داؤد منهم تميما الداري وعقبة بن عامر وممن جمعه ايضا ابوموسى

اللهم اغفر انما جمع القرآن من سمع له واطاع قال ابن حجر و في غالب هذه الاحتمالات تكلف و لاسيما الاخير قال و قد ظهرلي احتمال آخر وهو ان المراد اثبات ذلك للخزرج دون الاوس فقط فلاينفي ذلك عن غير القبيلتين من المهاجرين لانه قال ذلك في معرض المفاخرة بين الاوس والخزرج كما اخرجه ابن جرير من طريق سعيد بن ابي عروبة عن قتادة عن انس قال افتخر الحيان الاوس و الخزرج فقال الاوس منا اربعة من اهتزله العرش سعد بن معاذ و من عدلت شهادته شهادة رجلين خزيمة بن ثابت و من غسلته الملائكة حنظلة بن ابي عامر و من حمته الدبر عاصم بن ابي ثابت فقال الخزرج منا اربعة جمعوا القرآن لم يجمعه غيرهم فذكرهم قال والذي يظهر من كثير من الاحاديث ان ابابكر كان يحفظ القرآن في حياة رسول الله صلى الله عليه وسلم ففي الصحيح انه بنى مسجدا بفناء داره فكان يقرأ فيه القرآن و هو محمول على ما كان ينزل منه اذ ذاك قال وهذا مما لا يرتاب فيه مع شدة حرص ابي بكر على تلقي القرآن من النبي صلى الله عليه وسلم و فراغ باله له وهما بمكة وكثرت ملازمة كل منهما للآخر حتى قالت عايشة رض انه صلى الله عليه وسلم كان يأتيهم بكرة وعشيا وقد صح حديث يؤم القوم اقرأهم لكتاب الله وقد قدمه صلى الله عليه وسلم في مرضه اماما للمهاجرين و الانصار فدل على انه كان اقرأهم انتهى و سبعة الى نحو ذلك ابن كثير قلت لكن اخرج ابن اشته في المصاحف بسند صحيح عن محمد بن سيرين قال مات ابوبكر ولم يجمع القرآن وقتل عمر ولم يجمع القرآن قال ابن اشته قال بعضهم يعني لم يقرأ جميع القرآن حفظا وقال بعضهم هو جمع المصاحف

من شرط التواتران يحفظ كل فرد جميعه بل اذا حفظ الكل الكل ولو على التوزيع كفى و قال القرطبي قد قتل يوم اليمامة سبعون من القراء قتل في عهد النبي صلى الله عليه و سلم ببير معونة مثل هذا العدد قال و انما خص انس الاربعة بالذكر لشدة تعلقه بهم دون غيرهما اولكونهم كانوا في ذهنه دون غيرهم و قال القاضي ابوبكر الباقلاني الجواب عن حديث انس من اوجه احدها انه لامفهوم له فلا يلزم ان لايكون غيرهم جمعه الثاني المراد لم يجمعه على جميع الوجوه والقرا أت التي نزل بها الا اولئك الثالث لم يجمع مانسخ منه بعد تلاوته و ما لم ينسخ الا اولئك الرابع ان المراد بجمعه تلقيه من في رسول الله صلى الله عليه و سلم لابواسطة بخلاف غيرهم فيحتمل ان تكون تلقي بعضه بالواسطة الخامس انهم تصد و الالقائه وتعليمه فاشتهروا به وخفي حال غيرهم عن من عرف حالهم فحصر ذلك فيهم بحسب علمه وليس الامر في نفس الامر كذلك السادس المراد بالجمع الكتابة فلاينفي ان يكون غيرهم جمعه حفظا عن ظهر قلبه و اما هولاء فجمعوه كتابة وحفظوه عن ظهر قلب السابع المراد ان احدا لم يفصح بانه جمعه بمعنى اكمل حفظه في عهد رسول الله صلى الله عليه و سلم الا اولئك بخلاف غيرهم فلم يفصح بذلك لان احدا منهم لم يكمله الا عند وفاة رسول الله صلى الله عليه و سلم حين نزلت آخر آية فلعل هذه الآية الاخيرة و ما اشبهها ماحضرها الا اولئك الاربعة ممن جمع جميع القرآن قبلها وان كان قد حضرها من لم يجمع غيرها الجمع الكثير الثامن ان المراد بجمعه السمع والطاعة له و العمل بموجبه وقد اخرج احمد في الزهد من طريق ابي الزارية ان رجلا اتى ابا الدرداء فقال ان ابني جمع القرآن فقال

ولا يلزم من ذلك ان لايكون احد في ذلك الوقت شاركهم في حفظ القرآن بل كان الذين يحفظون مثل الذي حفظوه وازيد جماعة من الصحابة وفى الصحيح في غزوة بير معونة ان الذين قتلوا بها من الصحابة كان يقال لهم القراء وكانوا سبعين رجلا وروي البخاري ايضا عن قتادة قال سألت انس بن مالك من جمع القرآن على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال اربعة كلهم من الانصار ابي بن كعب ومعاذ بن جبل وزيد بن ثابت وابوزيد قلت من ابوزيد قال احد عمومتي وروى ايضا من طريق ثابت عن انس قال مات النبي صلى الله عليه وسلم ولم يجمع القرآن غير اربعة ابو الدرداء ومعاذ بن جبل وزيد بن ثابت وابوزيد وفيه مخالفة لحديث قتادة من وجهين احدهما التصريح بصيغة الحصر فى الاربعة والآخر ذكر ابو الدرداء بدل ابي بن كعب وقد استنكر جماعة من الائمة الحصر فى الاربعة وقال المازري لا يلزم من قول انس لم يجمعه غيرهم ان يكون الواقع في نفس الامر كذلك لان التقدير انه لا يعلم ان سواهم جمعه والا فكيف الاحاطة بذلك مع كثرة الصحابة وتفرقهم فى البلاد وهذا الايتم الا ان كان لقي كل واحد منهم على انفراده واخبره عن نفسه انه لم يكمل له جمع في عهد النبي صلى الله عليه وسلم وهذا في غاية البعد فى العادة واذا كان المرجع الى ما في علمه لم يلزم ان يكون الواقع كذلك قال وقد تمسك بقول انس هذا جماعة من الملاحدة ولا متمسك لهم فيه فانا لانسلم حلمه على ظاهره سلمناه ولكن من اين لهم ان الواقع في نفس الامر كذلك سلمناه لكن لا يلزم من كون كل من الجم الغفير لم يحفظه كله ان لا يكون حفظه مجموعه الجم الغفير وليس

رجاله ثقات الا شيخ الطبراني محمد بن عبيد بن آدم بن ابي اياس تكلم فيه الذهبي لهذا الحديث وقد حمل ذلك على ما نسخ رسمه من القرآن ايضا اذا لموجود الان لا يبلغ هذا العدد فائدة قال بعض القراء القرآن العظيم له انصاف باعتبارات فنصفه بالحروف النون من نكرا في الكهف والكاف من النصف الثاني ونصفه بالكلمات الدال من قوله والجلود في الحج وقوله ولهم مقامع من النصف الثاني ونصفه بالآيات يأفكون من سورة الشعراء وقوله فالقي السحرة من النصف الثاني ونصفه على عدد السور اخر الحديد والمجادلة من النصف الثاني وهو عشرة بالاحزاب وقيل ان النصف بالحروف الكاف من نكرا وقيل الفاء من قوله وليتلطف النوع العشرون في معرفة حفاظه ورواته روى البخاري عن عبد الله بن عمرو بن العاص قال سمعت النبي صلى الله عليه وسلم يقول خذوا القرآن من اربعة من عبد الله بن مسعود وسالم ومعاذ وابي بن كعب اي تعلموا منهم والاربعة المذكورون اثنان من المهاجرين وهما المبدأ بهما واثنان من الانصار وسالم هو ابن معقل مولى ابي حذيفة ومعاذ هو ابن جبل قال الكرماني يحتمل انه صلى الله عليه وسلم اراد الاعلام بما يكون بعده اي ان هولاء الاربعة يبقون حتى ينفردوا بذلك وتعقب بانهم لم ينفردوا بل الذين مهروا في تجويد القرآن بعد العصر النبوي اضعاف المذكورين وقد قتل سالم مولى ابي حذيفة في وقعة اليمامة ومات معاذ في خلافة عمر ومات ابي وابن مسعود في خلافة عثمان وقد تأخر زيد بن ثابت وانتهت اليه الرياسة في القرأة وعاش بعدهم زمنا طويلا فالظاهر انه امر بالاخذ عنهم في الوقت الذي صدر فيه ذلك القول

القيوم و في البخاري عن ابن عباس رض اذا سرك ان تعلم جهل العرب فاقرأ مابين الثلاثين و مأية من سورة الانعام قد خسر الذين قتلوا اولادهم سفها الى قوله مهتدين و في مسند ابي يعلى عن المسور ابن مخرمة قال قلت لعبد الرحمن بن عوف يا خال اخبرنا عن قصتكم يوم احد قال اقرأ بعد العشرين و مأية من آل عمران تجد قصتنا و اذ غدوت من اهلك تبوئ المومنين مقاعد للقتال *

فصـــل وعد قوم كلمات القرآن سبعة وسبعين الف كلمة وتسعمأية واربعا وثلاثين كلمة وقيل و اربعمأته وسبع وثلاثون و قيل و مأيتان وسبع و سبعون وقيل غير ذلك قيل وسبب الاختلاف في عدد الكلمات ان الكلمة لها حقيقة و مجاز و لفظ و رسم و اعتبار كل منها جائز وكل من العلماء اعتبر احد الجوائز * فصـــل وتقدم عن ابن عباس رض عد حروفه وفيه اقوال آخر و الاشتغال باستيعاب ذلك مما لاطائل تحته و قد استوعبه ابن الجوزي في فنون الافنان و عد الانصاف والاثلاث الى الاعشار و اوسع القول في ذلك فراجعه منه فان كتابنا موضوع للمهمات لا لمثل هذه البطالات وقد قال السخاوي لا اعلم لعدد الكلمات والحروف من فائدة لان ذلك ان افاد فانما يفيد في كتاب يمكن فيه الزيادة والنقصان و القرآن لايمكن فيه ذلك ومن الاحاديث في اعتبار الحروف ما اخرجه الترمذي عن ابن مسعود مرفوعا من قرأ حرفا من كتاب الله فله به حسنة والحسنة بعشر امثالها لا اقول آلم حرف ولكن الف حرف ولام حرف وميم حرف واخرج الطبراني عن عمر بن الخطاب مرفوعا القرآن الف الف حرف و سبعة وعشرون الف حرف فمن قرأه صابرا محتسبا كان له بكل حرف زوجة من الحور العين

وعدها و فواصلها احكام فقهية منها اعتبارها فيمن جهل الفاتحة فانه يجب عليه بدلها سبع آيات و منها اعتبارها في الخطبة فانه يجب فيها قرا أة آية كاملة ولايكفي شطرها ان لم تكن طويلة و كذا الطويلة على ما اطلقه الجمهور و ههنا بحث و هو ان ما اختلف في كونه آخر آية هل تكفي القرا أة في الخطبة محل نظر و لم ار من ذكره و منها اعتبارها في السورة التي تقرأ في الصلوٰة اوما يقوم مقامها ففي الصحيح انه صلى الله عليه و سلم كان يقرأ في الصبح بالستين الى المأية و منها اعتبارها في قرا أة قيام الليل ففي احاديث من قرأ بعشر آيات لم يكتب من الغافلين ومن قرأ بخمسين آية في ليلة كتب من الحافظين و من قرأ بمأية آية كتب من القانتين و من قرأ بمأيتي آية كتب من الفائزين و من قرأ بثلثمأة آية كتب له قنطار من الاجر ومن قرأ بخمسمأية وبسبعمأته و الف آية اخرجها الدارمي في مسنده مفرقة و منها اعتبارها في الوقف عليها كما سيأتي و قال الهذلي في كامله اعلم ان قوما جهلوا العدد و ما فيه من الفوائد حتى قال الزعفراني العدد ليس بعلم و انما اشتغل به بعضهم ليروج به سوقه قال و ليس كذلك ففيه من الفوائد معرفة الوقف و لان الاجماع انعقد ان الصلوٰة لا تصح بنصف آية و قال جمع من العلماء تجزي بآية و آخرون بثلاث آيات و آخرون لابد من سبع و الاعجاز لايقع بدون آية فللعدد فائدة عظيمة في ذلك انتهى فائدة ثانية ذكر الآيات في الاحاديث و الآثار اكثر من ان يحصى كالاحاديث في الفاتحة واربع آيات من اول البقرة و آية الكرسي و الآيتين خاتمة البقرة و كحديث اسم الله الاعظم في هاتين الآيتين و الٰهكم اله واحد لا الٰه الا هو الرحمٰن الرحيم و الم الله لا الٰه الا هو الحي

وقيل خمس الطارق سبع عشرة وقيل ست عشرة الفجر ثلاثون وقيل الا آية وقيل اثنتان وثلاثون الشمس خمس عشرة وقيل ست عشرة اقرأ عشرون وقيل الا آية القدر خمس وقيل ست لم يكن ثمان وقيل تسع الزلزلة تسع وقيل ثمان القارعة ثمان وقيل عشر وقيل احدى عشرة قريش اربع وقيل خمس ارأيت سبع وقيل ست الاخلاص اربع وقيل خمس الناس سبع وقيل ست ضوابط البسملة نزلت مع السورة في بعض الاحرف السبعة من قرأ بحرف نزلت فيه عدها ومن قرأ بغير ذلك لم يعدها وعداهل الكوفة الم حيث وقع آية وكذا المص وطه وكهيعص وطسم ويس وحم وعدوا حم عسق آيتين ومن عداهم لم يعد شيئا من ذلك واجمع اهل العدد على انه لايعد الر حيث وقع آية وكذا المر وطس وص وق ون ثم منهم من علل بالاثر واتباع المنقول وانه امر لا قياس فيه ومنهم من قال لم يعدوا ص ون وق لانها على حرف واحد ولا طس لانها خالفت اخويها بحذف الميم ولانها تشبه المفرد كقابيل ويس وان كانت بهذا الوزن لكن اولها ياء فاشبهت الجمع اذ ليس لنا مفردا وله ياء ولم يعدوا المر بخلاف الم لانها اشبه بالفواصل من الر وكذلك اجمعوا على عد يا ايها المدثر آية لمشاكلته الفواصل بعده واختلفوا في يا ايها المزمل قال الموصلي وعدوا قوله ثم نظر آية وليس في القرآن اقصر منها اما مثلها فنعم والفجر والضحى * تذنيب نظم علي بن محمد الغالي ارجوزة في القرائن والاخوات ضمنها السور التي اتفقت في عدة الآي كالفاتحة والماعون كالرحمن والانفال وكيوسف والكهف والانبياء وذلك معروف مما تقدم فائدة يترتب على معرفة الآي

ست وقيل ثمان الزمر سبعون و اثنتان وقيل ثلاث وقيل خمس غافر ثمانون و اثنتان وقيل اربع وقيل خمس وقيل ست فصلت خمسون و اثنتان وقيل ثلاث وقيل اربع شورى خمسون وقيل وثلاث الزخرف ثمانون وتسع وقيل ثمان الدخان خمسون وست وقيل سبع وقيل تسع الجاثية ثلاثون وست وقيل سبع الاحقاف ثلاثون واربع وقيل خمس القتال اربعون وقيل الا آية وقيل الا آيتين الطور اربعون وسبع وقيل ثمان وقيل تسع النجم احدى وستون وقيل اثنتان الرحمن سبعون وسبع وقيل ست وقيل ثمان الواقعة تسعون وتسع وقيل سبع وقيل ست الحديد ثلاثون وثمان وقيل تسع قدسمع اثنتان وقيل احدى وعشرون الطلاق احدى وقيل ثنتا عشرة تبارك ثلاثون وقيل احدى وثلاثون بعد قالوا بلى قدجاءنا نذيرقاله الموصلي والصحيح الاول قال ابن سنبود ولايسوغ لاحد خلافه للاخبار الواردة في ذلك واخرج احمد واصحاب السنن وحسنه الترمذي عن ابي هريرة ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان سورة فى القرآن ثلاثين آية شفعت لصاحبها حتى غفرله تبارك الذي بيده الملك واخرج الطبراني بسند صحيح عن انس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم سورة فى القرآن ماهي الاثلاثون آية خاصمت عن صاحبها حتى ادخلته الجنة وهي سورة تبارك الحاقة احدى وقيل اثنتان وخمسون المعارج اربعون واربع وقيل ثلاث نوح ثلاثون وقيل الا آية وقيل الا آيتين المزمل عشرون وقيل الا آية وقيل الا آيتين المدثر خمسون وخمس وقيل ست القيمة اربعون وقيل الا آية عم اربعون وقيل وآية النازعات اربعون وخمس وقيل ست عبس اربعون وقيل وآية وقيل وآيتان الانشقاق عشرون وثلاث وقيل اربع

الرحمٰن الرحيم آية ولم يعد انعمت عليهم فاخرج الدارقطني بسند صحيح عن عبد خير قال سئل علي كرم الله وجهه عن السبع المثاني فقال الحمد الله رب العالمين فقيل له انما هي ست آيات فقال بسم الله الرحمٰن الرحيم آية البقرة مائتان وثمانون وخمس وقيل ست وقيل سبع آل عمران مائتان وقيل الا آية النساء مأية وسبعون وخمس وقيل ست وقيل سبع المائدة مائة وعشرون وقيل واثنتان وقيل وثلاث الانعام مأته وستون وخمس وقيل ست وقيل سبع الاعراف مائتان وخمس وقيل ست الانفال سبعون وخمس وقيل ست وقيل سبع براءة مأية وثلاثون وقيل الا آية يونس مأية وعشر وقيل الا آية هود مائة واحدى وعشرون وقيل اثنتان وقيل ثلاث الرعد اربعون وثلاث وقيل اربع وقيل سبع ابراهيم احدى وخمسون وقيل اثنتان وقيل اربع وقيل خمس الاسراء مائة وعشر وقيل واحدى عشرة الكهف مائة وخمس وقيل وست وقيل وعشر وقيل واحدى عشرة مريم تسعون وتسع وقيل ثمان طٰهٰ مائة وثلاثون واثنتان وقيل اربع وقيل خمس وقيل واربعون الانبياء مائة واحدى عشرة وقيل واثنتا عشرة الحج سبعون واربع وقيل وخمس وقيل وست وقيل وثمان قد افلح مائة وثمان عشرة وقيل تسع عشرة النور ستون واثنتان وقيل اربع الشعراء مائتان وعشرون وست وقيل سبع النمل تسعون واثنتان وقيل اربع وقيل خمس الروم ستون وقيل الا آية لقمان ثلاثون وثلاث وقيل اربع السجدة ثلاثون وقيل الا آية سبا خمسون واربع وقيل خمس فاطر اربعون وست وقيل خمس يٰسٓ ثمانون وثلاث وقيل اثنتان الصافات مائة وثمانون وآية وقيل اثنتان صٓ ثمانون وخمس وقيل

عشرة ق خمس واربعون الذاريات ستون القمر خمس وخمسون
الحشر اربع وعشرون الممتحنة ثلاث عشرة الصف اربع عشرة الجمعة
والمنافقون والضحى والعاديات احدى عشرة التحريم ثنتا عشرة ن
اثنتان وخمسون الانسان احدى وثلثون المرسلات خمسون التكوير
تسع وعشرون الانفطار وسبح تسع عشرة التطفيف ست وثلاثون
البروج اثنتان وعشرون الغاشية ست وعشرون البلد عشرون الليل
احدى وعشرون الم نشرح والتين والهاكم ثمان الهمزة تسع الفيل
والفلق وتبت خمس الكافرون ست الكوثر والنصر ثلاث والقسم
الثاني اربع سور القصص ثمان وثمانون عد اهل الكوفة طسم والباقون
بدلها امة من الناس يسقون العنكبوت تسع وستون عد اهل الكوفة
الم والبقرة بدلها مخلصين له الدين والشام وتقطعون السبيل الجن
ثمان وعشرون عد المكي لن يجيرني من الله احد والباقون بدلها
ولن اجد من دونه ملتحدا والعصر ثلاث عد المدني الاخير وتواصوا
بالحق دون والعصر وعكس الباقون والقسم الثالث سبعون سورة الفاتحة
الجمهور سبع فعد الكوفي والمكي البسملة دون انعمت عليهم وعكس
الباقون وقال الحسن ثمان فعدهما وبعضهم ست فلم يعدهما وآخر
تسع فعدهما واياك نعبد ويقوى الاول ما اخرجه احمد وابو داؤد
والترمذي وابن خزيمة والحاكم والدار قطني وغيرهم عن ام سلمة
ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقرأ بسم الله الرحمن الرحيم الحمد
لله رب العالمين الرحمن الرحيم مالك يوم الدين اياك نعبد واياك
نستعين اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم غير المغضوب
عليهم ولا الضالين قطعها آية آية وعدها عد الاعراب وعد بسم الله

الجنة من اهل القرآن فليس فوقه درجة قال الحاكم اسناده صحيح لكنه شاذ و اخرجه الاجري في جملة القرآن من وجه آخر عنها موقوفا قال ابو عبد الله الموصلي في شرح قصيدته ذات الرشد في العدد اختلف في عدد الآي اهل المدينة و مكة و الشام و البصرة و الكوفة و لاهل المدينة عددان عدد اول و هو عدد ابي جعفر يزيد بن القعقاع وشيبه ابن نصاح و عدد آخر و هو عدد اسمعيل بن جعفر بن ابي كثير الانصاري و اما عدد اهل مكة فهو مروي عن عبد الله بن كثير عن مجاهد عن ابن عباس عن ابي بن كعب و اما عدد اهل الشام فرواه هارون بن موسى الاخفش وغيره عن عبد الله بن ذكوان واحمد بن يزيد الحلواني و غيره عن هشام بن عمار و رواه ابن ذكوان و هشام عن ايوب بن تميم القاري عن يحيى بن الحارث الذماري قال هذا العدد الذي نعده عدد اهل الشام مما رواه المشيخة لنا عن الصحابة و رواه عبد الله ابن عامر اليحصبي لنا و غيره عن ابى الدرداء واما عدد اهل البصرة فمداره على عاصم بن العجاج الجحدري و اما عدد اهل الكوفة فهو المضاف الى حمزة بن حبيب الزيات وابى الحسن الكسائي و خلف بن هشام قال حمزة اخبرنا بهذا العدد بن ابي ليلى عن ابي عبد الرحمن السلمي عن علي بن ابي طالب رض قال الموصلي ثم سور القرآن على ثلثة اقسام قسم لم يختلف فيه لافي اجمال ولا في تفصيل و قسم اختلف فيه تفصيلا لا اجمالا و قسم اختلف فيه اجمالا وتفصيلا فالاول اربعون سورة يوسف مأية واحدى عشرة الحجر تسع و تسعون النحل مأية وثمانية وعشرون الفرقان سبع و سبعون الاحزاب ثلاثة وسبعون الفتح تسع و عشرون الحجرات و التغابن ثمان

عليه وسلم سورة من الثلاثين من آل حم قال يعني الاحقاف قال وكانت السورة اذا كانت اكثر من ثلاثين آية سميت الثلثين الحديث وقال ابن العربي ذكر النبي صلى الله عليه وسلم ان الفاتحة سبع آيات وسورة الملك ثلثون آية وصح انه قرأ العشر الآيات الخواتم من سورة آل عمران قال وتعديد الآي من معضلات القرآن ومن آياته طويل وقصير ومنه ماينقطع ومنه ما ينتهي الى تمام الكلام ومنه ما يكون في اثنائه وقال غيره سبب اختلاف السلف في عدد الآي ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يقف على روس الآي للتوقيف فاذا علم محلها وصل للتمام فيحسب السامع ح انها ليست فاصلة وقد اخرج ابن الضريس من طريق عثمان بن عطاء عن ابيه عن ابن عباس قال جميع آي القرآن ستة آلاف آية وستمأية آية وستة عشرة آية وجميع حروف القرآن ثلاثمأية الف حرف وثلاثة وعشرون الف حرف وستمأية حرف واحد وسبعون حرفان قال الداني اجمعوا على ان عدد آيات القرآن ستة آلاف آية ثم اختلفوا فيمازاد على ذلك فمنهم من لم يزد ومنهم من قال ومأيتا آية واربع آيات وقيل واربع عشرة وقيل وتسع عشرة وقيل وخمس وعشرون وقيل وست وثلاثون قلت اخرج الديلمي في مسند الفردوس من طريق الفيض بن وثيق عن فرات بن سليمان عن ميمون بن مهران عن ابن عباس مرفوعا درج الجنة على قدر آي القرآن بكل آية درجة فتلك ستة آلاف آية ومأيتا آية وست عشرة آية بين كل درجتين مقدار ما بين السماء والارض الفيض قال فيه ابن معين كذاب خبيث وفي الشعب للبيهقي من حديث عائشة رض مرفوعا عدد درج الجنة عدد آي القرآن فمن دخل

حلال ولاحرام ولافرائض ولاحدود وذكروا ان في الانجيل سورة تسمى سورة الامثال

## فصل في عدد الآي

افرده جماعة من القراء بالتصنيف قال الجعبري حد الآية قرآن مركب من جمل ولو تقديرا ذو مبدأ ومقطع مندرج في سورة واصلها العلامة ومنه ان آية ملكه لانها علامة للفضل والصدق اوالجماعة لانها جماعة كلمة وقال غيره الآية طائفة من القرآن منقطعة عما قبلها وما بعدها وقيل هي الواحدة من المعدودات في السور سميت به لانها علامة على صدق من اتى بها وعلى عجز المتحدي بها وقيل لانها علامة على انقطاع ماقبلها من الكلام وانقطاعه مما بعدها قال الواحدي وبعض اصحابنا يجوز على هذا القول تسمية اقل من الآية آية لولا ان التوقيف ورد بما هي عليه الآن وقال ابو عمرو الداني لا اعلم كلمة هي وحدها آية الا قوله مدهامتان وقال غيره بل فيه غيرها مثل والفجر والضحى والعصر وكذا فواتح السور عند من عدها قال بعضهم الصحيح ان الآية انما تعلم بتوقيف من الشارع كمعرفة السورة قال فالآية طائفة من حروف القرآن علم بالتوقيف انقطاعها يعني عن الكلام الذي بعدها في اول القرآن وعن الكلام الذي قبلها في آخر القرآن وعما قبلها وما بعدها في غيرهما غير مشتمل على مثل ذلك قال وبهذا القيد خرجت السورة وقال الزمخشري الآيات علم توقيفي لامجال للقياس فيه ولذلك عدوا آلم آية حيث وقعت وآلمص ولم يعدوا آلمر وآلر وعدوا حم آية في سورها وطه ويس ولم يعدوا طس قلت ومما يدل على انه توقيفي ما اخرجه احمد في مسنده من طريق عاصم بن ابي النجود عن زر عن ابن مسعود قال اقرأني رسول الله صلى الله

الى غير ذلك وسورت السور طوالا و اوساطا وقصارا تنبيها على ان الطول ليس من شرط الاعجاز فهذه سورة الكوثر ثلاث آيات وهي معجزة اعجاز سورة البقرة ثم ظهرت لذلك حكمة في التعليم و تدريج الاطفال من السور القصار الى ما فوقها تيسيرا من الله على عباده لحفظ كتابه قال الزركشي في البرهان فان قلت فهلا كانت الكتب السالفة كذلك قلت لوجهين احدهما انها لم تكن معجزات من جهة النظم و الترتيب و الآخر انها لم تيسر للحفظ لكن ذكر الزمخشري ما يخالفه فقال في الكشاف الفائدة في تفصيل القرآن وتقطيعه سورا كثيرة وكذلك انزل الله التوراة والانجيل و الزبور و ما اوحاه الى انبيائه سورا و بوب المصنفون في كتبهم ابوابا مرشحة الصدور بالتراجم منها ان الجنس اذا الطوت تحته انواع و اصناف كان احسن وافخم من ان يكون بابا واحدا و منها ان القارئ اذا ختم سورة او بابا من الكتاب ثم اخذ في آخر كان انشط له و ابعث على التحصيل منه لو استمر على الكتاب بطوله و مثاله المسافر اذا قطع ميلا او فرسخا نفّس ذلك منه و نشط للسير و من ثم جزي القرآن اجزاء و اخماسا و منها ان الحافظ اذا حذق السورة اعتقد انه اخذ من كتاب الله طائفة مستقلة بنفسها فيعظم عنده ما حفظه و منه حديث انس كان الرجل اذا قرأ البقرة و آل عمران جدفينا و من ثم كانت القراءة في الصلوٰة بسورة افضل و منها ان التفصيل بسبب تلا حق الاشكال و النظائر و ملائمة بعضها لبعض و بذلك تتلا حظ المعاني و النظم الى غير ذلك من الفوائد انتهى و ما ذكره الزمخشري من تسوير سائر الكتب هو الصحيح او الصواب فقد اخرج ابن ابي حاتم عن قتادة قال كنا نتحدث ان الزبور مأية و خمسون سورة كلها مواعظ و ثناء ليس فيها

وقال ابن الضريس ثنا احمد بن جميل المروزي عن عبد الله بن المبارك انبأنا الاجلح عن عبد الله بن عبد الرحمٰن عن ابيه قال في مصحف ابن عباس قراءة ابي و ابي موسى بسم الله الرحمٰن الرحيم اللّٰهم انا نستعينك و نستغفرك ونثني عليك الخير ولا نكفرك ونخلع ونترك من يفجرك وفيه اللّٰهم اياك نعبد ولك نصلي ونسجد واليك نسعى ونحفد نخشى عذابك و نرجو رحمتك ان عذابك بالكفار ملحق واخرج الطبراني بسند صحيح عن ابي اسحٰق قال امنا امية بن عبد الله بن خالد بن اسيد بخراسان فقرأ بهاتين السورتين انا نستعينك ونستغفرك واخرج البيهقي وابو داؤد في المراسيل عن خالد بن ابي عمران ان جبريل نزل بذلك على النبي صلى الله عليه وسلم وهو في الصلٰوة مع قوله ليس لك من الامر شيء الآية لما قنت يدعو على مضر تنبيه كذا نقل جماعة عن مصحف ابي انه ست عشرة سورة والصواب انه خمس عشرة فان سورة الفيل وسورة ليلاف قريش فيه سورة واحدة ونقل ذلك السخاوي في جمال القراء عن جعفر الصادق وابي نهيك ايضا قلت ويرده ما اخرجه الحاكم والطبراني من حديث ام هاني ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال فضل الله قريشا بسبع الحديث وفيه وان الله انزل فيهم سورة من القرآن لم يذكر فيها معهم غيرهم ليلاف قريش وفي كامل الهذلي عن بعضهم انه قال الضحى والم نشرح سورة واحدة نقله الامام الرازي في تفسيره عن طاؤس وعمر بن عبد العزيز فائدة قيل الحكمة في تسوير القرآن سورا تحقيق كون السورة بمجردها معجزة وآية من آيات الله والاشارة الى ان كل سورة نمط مستقل فسورة يوسف مترجمة عن قصته و سورة براءة تترجم عن احوال المنافقين واسرارهم

ابي ست عشرة لانه كتب في آخره سورتي الحفد والخلع اخرج ابوعبيد عن ابن سيرين قال كتب ابي بن كعب في مصحفه فاتحة الكتاب و المعوذتين واللّهم انا نستعينك واللّهم اياك نعبد وتركهن ابن مسعود وكتب عثمان منهن فاتحة الكتاب والمعوذتين واخرج الطبراني في الدعاء من طريق عباد بن يعقوب الاسدي عن يحيى بن يعلى الاسلمي عن ابن لهيعة عن ابي هبيرة عن عبد الله بن رزين الغافقي قال قال لي عبد الملك بن مروان لقد علمت ماحملك على حب ابي تراب الا انك اعرابي جاف فقلت والله لقد جمعت القرآن من قبل ان يجتمع ابواك ولقد علمني منه علي بن ابي طالب سورتين علمهما اياه رسول الله صلى عليه وسلم ما علمتهما انت ولا ابوك اللّهم انا نستعينك و نستغفرك ونثني عليك ولانكفرك ونخلع و نترك من يفجرك اللهم اياك نعبد ولك نصلي ونسجد واليك نسعى ونحفد و نرجو رحمتك و نخشى عذابك ان عذابك بالكفار ملحق واخرج البيهقي من طريق سفيان الثوري عن ابن جريج عن عطاء عن عبيد بن عميران عمر بن الخطاب قنت بعد الركوع فقال بسم الله الرحمٰن الرحيم اللّهم انا نستعينك و نستغفرك ونثني عليك و لانكفرك ونخلع ونترك من يفجرك بسم الله الرحمٰن الرحيم اللّهم اياك نعبد ولك نصلي و نسجد واليك نسعى ونحفد نرجو رحمتك ونخشى عذابك ان عذابك بالكافرين ملحق قال ابن جريج حكمة البسملة انهما سورتان في مصحف بعض الصحابة واخرج محمد بن نصر المروزي في كتاب الصلوٰة عن ابي بن كعب انه كان يقنت بالسورتين فذكرهما وانه كان يكتبهما في مصحفه

كورت و اذا السماء انفطرت و الغاشية وسبح و الليل و الفجر و البروج
و اذا السماء انشقت واقرأ باسم ربك و البلد و الضحى والطارق والعاديات
و ارأيت و القارعة و لم يكن و الشمس وضحاها و التين و ويل لكل همزة
و الم تر ليلاف قريش و الهاكم و انا انزلناه و اذا زلزلت و العصر واذا جاء
نصر الله والكوثر و قل يا ايها الكافرون و تبت و قل هو الله احد و الم
نشرح وليس فيه الحمد ولا المعوذتان النوع التاسع عشر في عدد سوره 19
وآياته وكلماته وحروفه اما سوره فماية واربع عشرة سورة باجماع من
يعتد به وقيل وثلاث عشرة بجعل الانفال و براءة سورة واحدة واخرج
ابو الشيخ عن ابي روق قال الانفال وبراءة سورة واحدة واخرج عن
ابي رجا قال سألت الحسن عن الانفال وبراءة اسورتان ام سورة قال
سورتان ونقل مثل قول ابي روق عن مجاهد واخرجه ابن ابي حاتم
عن سفيان واخرج ابن اشته عن ابن لهيعة قال يقولون ان براءة من
يسألونك وانما لم يكتب في براءة بسم الله الرحمن الرحيم لانها من
يسألونك وشبهتهم اشتباه الطرفين وعدم البسملة وبرده تسمية النبي
صلى الله عليه وسلم لا منهما ونقل صاحب الاقناع ان البسملة ثابتة لبراءة
في مصحف ابن مسعود قال ولا يؤخذ بهذا قال القشيري الصحيح ان
التسمية لم تكن فيها لان جبريل عليه السلام لم ينزل بها فيها وفي
المستدرك عن ابن عباس قال سألت علي ابن ابي طالب رضي الله
تعالى عنه لم لم تكتب في براءة بسم الله الرحمن الرحيم قال لانها امان
وبراءة نزلت بالسيف وعن مالك رضي الله تعالى عنه ان اولها لما سقط
سقط معه البسملة فقد ثبت انها كانت تعدل البقرة لطولها وفي مصحف
ابن مسعود ماية واثنتا عشرة سورة لانه لم يكتب المعوذتين وفي مصحف

ربك ثم الحجرات ثم المنافقون ثم الجمعة ثم لم تحرم ثم الفجر ثم لا اقسم بهذا البلد ثم والليل ثم اذا السماء انفطرت ثم والشمس وضحاها ثم والسماء والطارق ثم سبح اسم ربك ثم الغاشية ثم الصف ثم سورة اهل الكتاب وهي لم يكن ثم والضحى ثم الم نشرح ثم القارعه ثم التكاثر ثم العصر ثم سورة الخلع ثم سورة الحفد ثم ويل لكل همزة ثم اذا زلزلت ثم العاديات ثم الفيل ثم ليلاف ثم ارأيت ثم انا اعطيناك الكوثر ثم القدر ثم الكافرون ثم اذا جاء نصر الله ثم تبت ثم الصمد ثم الفلق ثم الناس قال ابن اشته ايضا واخبرنا ابو الحسن بن نافع ان ابا جعفر محمد بن عمرو بن موسى حدثهم ثنا محمد بن اسمعيل بن سالم ثنا علي بن مهران الطائي ثنا جرير بن عبد الحميد قال تأليف مصحف عبد الله بن مسعود الطول البقرة والنساء وآل عمران والاعراف والانعام والمائدة ويونس والمئين براءة والنحل وهود ويوسف والكهف وبني اسرائيل والانبياء وطه والمؤمنون والشعراء والصافات والمثاني الاحزاب والحج والقصص وطس النمل والنور والانفال ومريم والعنكبوت والروم ويس والفرقان والحجر والرعد وسبا والملائكة وابراهيم وص والذين كفروا ولقمان والزمر والحواميم حم المؤمن والزخرف والسجدة وحم عسق والاحقاف والجاثية والدخان والممتحنات انا فتحنا لك والحشر وتنزيل السجدة والطلاق ون والقلم والحجرات وتبارك والتغابن واذا جاءك المنافقون والجمعة والصف وقل اوحي وانا ارسلنا والمجادلة والممتحنة ويا ايها النبي لم تحرم المفصل الرحمن والنجم والطور والذاريات واقتربت الساعة والواقعة والنازعات وسأل سائل والمدثر والمزمل والمطففين وعبس وهل اتى والمرسلات والقيمة وعم يتساءلون واذا الشمس

ابن معين فطواله الى عم و اوساطه منها الى الضحى و منها الى آخر القرآن قصاره هذا اقرب ما قيل فيه تنبيه اخرج ابن ابي داؤد في كتاب المصاحف عن نافع عن ابن عمر انه ذكر عنده المفصل فقال واي القرآن ليس بمفصل ولكن قولوا قصار السور وصغار السور و قد استدل بهذا على جواز ان يقال سورة قصيرة اوصغيرة وقد كره ذلك جماعة منهم ابوالعالية و رخص فيه آخرون ذكره ابن ابي داؤد و اخرج عن ابن سيرين وابي العالية قالا لاتقل سورة خفيفة فانه تعالى يقول سنلقي عليك قولا ثقيلا ولكن سورة يسيرة فائدة قال ابن اشته في كتاب المصاحف انبأنا محمد بن يعقوب ثنا ابو داؤد ثنا ابو جعفر الكوفي قال هذا تأليف مصحف ابي الحمد لله ثم البقرة ثم النساء ثم آل عمران ثم الانعام ثم الاعراف ثم المائدة ثم يونس ثم الانفال ثم براءة ثم هود ثم مريم ثم الشعراء ثم الحج ثم يوسف ثم الكهف ثم النحل ثم الاحزاب ثم بني اسرائيل ثم الزمر اولها حم ثم طه ثم الانبياء ثم النور ثم المؤمنين ثم سبا ثم العنكبوت ثم المؤمن ثم الرعد ثم القصص ثم النمل ثم الصافات ثم ص ثم يس ثم الحجر ثم حمعسق ثم الروم ثم الحديد ثم الفتح ثم القتال ثم الظهار ثم تبارك الملك ثم السجدة ثم انا ارسلنا نوحا ثم الاحقاف ثم ق ثم الرحمن ثم الواقعة ثم الجن ثم النجم ثم سأل سائل ثم المزمل ثم المدثر ثم اقتربت ثم حم الدخان ثم لقمان ثم حم الجاثيه ثم الطور ثم الذاريات ثم ن ثم الحاقه ثم الحشر ثم الممتحنة ثم المرسلات ثم عم يتساءلون ثم لا اقسم بيوم القيامة ثم اذا الشمس كورت ثم يا ايها النبي اذا طلقتم ثم النازعات ثم التغابن ثم عبس ثم المطففين ثم اذا السماء انشقت ثم والتين والزيتون ثم اقرأ باسم

رواية صحيحة عند ابن ابي حاتم و غيره عن مجاهد وسعيد بن جبير انها يونس و تقدم عن ابن عباس مثله في النوع الاول وفي رواية عند الحاكم انها الكهف و المئون ما وليها سميت بذلك لان كل سورة منها تزيد على مائة آية او تقاربها و المثاني ماولي المئين لانها ثنتها اي كانت بعدها فهي لها ثوان و المئون لها اوائل وقال الفراهي السور التي آيها اقل من مأية آية لانها تثنى اكثر مما تثنى الطول والمئون وقيل لتثنية الامثال فيها بالعبر والخبر حكاه النكزاوي وقال في جمال القراء هي السور التي ثنيت فيها القصص وقد تطلق على القرآن كله وعلى الفاتحة كما تقدم والمفصل ما ولي المثاني من قصار السور سمي بذلك لكثرة الفصول التي بين السور بالبسملة وقيل لقلة المنسوخ منه و لهذا يسمى بالمحكم ايضا كما روى البخاري عن سعيد بن جبير قال ان الذي تدعونه المفصل هو المحكم و آخره سورة الناس بلا نزاع واختلف في اوله على اثنى عشر قولا احدها ق لحديث اوس السابق قريبا الثاني الحجرات وصححه النووي الثالث القتال عزاه الماوردي للاكثرين الرابع الجاثية حكاه القاضي عياض الخامس الصافات السادس الصف السابع تبارك حكى الثلاثة ابن ابي الصيف اليمني في نكته على التنبيه الثامن الفتح حكاه الكمال الدماري في شرح التنبيه التاسع الرحمن حكاه ابن السيد في اماليه على الموطأ العاشر الانسان الحادي عشر سبح حكاه ابن الفركاح في تعليقه عن المرزوقي الثاني عشر الضحى حكاه الخطابي و وجهه بان القارئ يفصل بين هذه السور بالتكبير و عبارة الراغب في مفرداته المفصل من القرآن السبع الاخير فائدة للمفصل طوال و اوساط وقصار قال

صلى الله عليه وسلم قلنا كيف تحزبون القرآن قالوا نحزبه ثلث سور وخمس سور وسبع سور وتسع سور واحدى عشرة وثلاث عشرة وحزب المفصل من ق حتى نختم قال فهذا يدل على ان ترتيب السور على ما هو في المصحف الآن كان على عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ويحتمل ان الذي كان مرتباح حزب المفصل خاصة بخلاف ماعداه قلت ومما يدل على انه توقيفي كون الحواميم رتبت ولاء وكذا الطواسين ولم ترتب المسبحات ولاء بل فصل بين سورها وفصل بين طسم الشعراء و طسم القصص بطس مع انها اقصر منهما ولو كان الترتيب اجتهاد يا لذكرت المسبحات ولاء واخرت طس عن القصص والذي ينشرح له الصدر ماذهب اليه البيهقي وهو ان جميع السور ترتيبها توقيفي الابراءة والانفال ولاينبغي ان يستدل بقراءته صلى الله عليه وسلم سور اولاء على ان ترتيبها كذلك وحينئذ فلا يرد حديث قراءته النساء قبل آل عمران لان توتيب السور في القرآن ليس بواجب فلعله فعل ذلك لبيان الجواز واخرج ابن اشته في كتاب المصاحف من طريق ابن وهب عن سليمان بن بلال قال سمعت ربيعة يسأل لم قدمت البقرة وآل عمران وقد نزل قبلهما بضع وثمانون سورة بمكة وانما انزلتا بالمدينة فقال قدمتا والف القرآن على علم ممن الفه به ومن كان معه فيه واجتماعهم على علمهم بذلك فهذا مما ينتهى اليه ولا يسأل عنه خاتمة السبع الطوال اولها البقرة وآخرها براءة كذا قاله جماعة لكن اخرج الحاكم والنسائي وغيرهما عن ابن عباس قال السبع الطوال البقرة وآل عمران والنساء والمائدة والانعام والاعراف قال الراوي وذكر السابعة فنسيتها وفي

ماسوى ذلك يمكن ان يكون قد فوض الامر فيه الى الامة بعده و قال ابو جعفر بن الزبير الآثار تشهد باكثر ممانص عليه ابن عطية و يبقى منها قليل يمكن ان يجري فيه الخلاف كقوله اقرؤا الزهر اوين البقرة وآل عمران رواه مسلم وكحديث سعيد بن خالد صلى رسول الله صلى الله عليه و سلم بالسبع الطوال في ركعة رواه ابن ابي شيبة في مصنفه وفيه انه عليه السلام كان يجمع المفصل في ركعة و روى البخاري عن ابن مسعود انه قال في بني اسرائيل والكهف و مريم وطه و الانبياء انهن من العتاق الاول و هن من تلادي فذكرها نسقا كما استقر ترتيبها و في البخاري انه صلى الله عليه و سلم كان اذا آوى الى فراشه كل ليلة جمع كفيه ثم نفث فيهما يقرأ قل هو الله احد و المعوذتين وقال ابو جعفر النحاس المختاران تأليف السور على هذا الترتيب من رسول الله عليه و سلم لحديث واثلة اعطيت مكان التوراة السبع الحديث قال فهذا الحديث يدل على ان تأليف القرآن مأخوذ عن النبي صلى الله عليه و سلم وانه من ذلك الوقت وانما جمع في المصحف على شيء واحد لانه قد جاء هذا الحديث بلفظ رسول الله صلى الله عليه وسلم على تأليف القرآن وقال ابن الحصار ترتيب السور و وضع الآيات مواضعها انما كان بالوحي وقال ابن حجر ترتيب بعض السور على بعضها او معظمها لايمتنع ان يكون توقيفيا وقال ومما يدل على ان ترتيبها توقيفي ما اخرجه احمد وابو داؤد عن اوس بن ابي اوس حذيفة الثقفي قال كنت في الوفد الذين اسلموا من ثقيف الحديث وفيه فقال لنا رسول الله صلى الله عليه و سلم طرا على حزب من القرآن فاردت ان لا اخرج حتى اقضيه فسألنا اصحاب رسول الله

ثم فرقه في بضع وعشرين فكانت السورة تنزل لامر يحدث والآية جوابا لمستخبر ويوقف جبريل النبي صلى الله عليه وسلم على موضع الآية والسورة فاتساق السور كاتساق الآيات والحروف كله عن النبي صلى الله عليه وسلم فمن قدم سورة او اخرها فقد افسد نظم القرآن وقال الكرماني في البرهان ترتيب السور هكذا هو عند الله في اللوح المحفوظ على هذا الترتيب وعليه كان النبي صلى الله عليه وسلم يعرض على جبريل كل سنة ما كان يجتمع عنده منه وعرضه عليه في السنة التي توفي فيها مرتين وكان آخر الآيات نزولا واتقوا يوما ترجعون فيه الى الله فامره جبريل ان يضعها بين آيتي الربا والدين وقال الطيبي انزل القرآن اولا جملة واحدة من اللوح المحفوظ الى السماء الدنيا ثم نزل مفرقا على حسب المصالح ثم اثبت في المصاحف على التأليف والنظم المثبت في اللوح المحفوظ قال الزركشي في البرهان والخلاف بين الفريقين لفظي لان القائل بالثاني يقول انه رمز اليهم ذلك لعلمهم باسباب نزوله ومواقع كلماته ولهذا قال مالك انما الفوا القرآن على ما كانوا يسمعونه من النبي صلى الله عليه وسلم مع قوله بان ترتيب السور باجتهاد منهم قال الخلاف الى انه هل هو بتوقيف قولي او بمجرد استناد فعلي بحيث بقي لهم فيه مجال للنظر وسبقه الى ذلك ابو جعفر بن الزبير وقال البيهقي في المدخل كان القرآن على عهد النبي صلى الله عليه وسلم مرتبا سوره وآياته على هذا الترتيب الا الانفال وبراءة لحديث عثمان السابق ومال ابن عطية الى ان كثيرا من السور كان قد علم ترتيبها في حياته صلى الله عليه وسلم كالسبع الطوال والحواميم والمفصل وان

في اللوح المحفوظ على هذا الترتيب انزله الله تعالى جملة الى السماء الدنيا ثم كان ينزله مفرقا عند الحاجة و ترتيب النزول غير ترتيب التلاوة و قال ابن الحصار ترتيب السور و وضع الآيات مواضعها انما كان بالوحي كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ضعوا آية كذا في موضع كذا و قد حصل اليقين من النقل المتواتر بهذا الترتيب من تلاوة رسول الله صلى الله عليه وسلم و مما اجمع الصحابة على وضعه هكذا في المصحف فصل واما ترتيب السور فهل هو توقيفي ايضا او باجتهاد من الصحابة خلاف فجمهور العلماء على الثاني منهم مالك والقاضي ابوبكر في آخر قوليه قال ابن فارس جمع القرآن على ضربين احدهما تأليف السور كتقديم السبع الطوال و تعقيبها بالمئين فهذا هوالذي تولته الصحابة و اما الجمع الآخر وهو جمع الآيات في السورة فهو توقيفي تولاه النبي صلى الله عليه وسلم كما اخبربه جبريل عن امر ربه و مما استدل به لذلك اختلاف مصاحف السلف في ترتيب السور فمنهم من رتبها على النزول و هو مصحف علي رضي الله تعالى عنه كان اوله اقرأ ثم المدثر ثم ن ثم المزمل ثم تبت ثم التكوير و هكذا الى آخر المكي و المدني و كان اول مصحف ابن مسعود البقرة ثم النساء ثم آل عمران على اختلاف شديد و كذا مصحف ابي و غيره واخرج ابن اشته في المصاحف من طريق اسمعيل بن عياش عن حبان بن يحيى عن ابي محمد القرشي قال امرهم عثمان ان يتابعوا الطول فجعلت سورة الانفال و سورة التوبة في السبع و لم يفصل بينهما ببسم الله الرحمن الرحيم و ذهب الى الاول جماعة منهم القاضي في احد قوليه قال ابو بكر بن الانباري انزل الله تعالى القرآن كله الى سماء الدنيا

القاضي ابوبكر ترتيب الآيات امر واجب و حكم لازم فقد كان جبريل يقول ضعوا آية كذا في موضع كذا وقال ايضا الذي نذهب اليه ان جميع القرآن الذي انزله الله وامر باثبات رسمه ولم ينسخه ولارفع تلاوته بعد نزوله هو هٰذا الذي بين الدفتين الذي حواه مصحف عثمان رض وانه لم ينقص منه شيء ولازيد فيه وان ترتيبه و نظمه ثابت على ما نظمه الله تعالى ورتبه عليه رسوله من آى السور لم يقدم من ذلك موخر ولا آخر منه مقدم وان الامة ضبطت عن النبي صلى الله عليه وسلم ترتيب آي كل سورة ومواضعها وعرفت مواقعها كما ضبطت عنه نفس القرآن وذات التلاوة وانه يمكن ان يكون الرسول صلى الله عليه وسلم قد رتب سورة و يمكن ان يكون قد وكل ذلك الى الامة بعده ولم يتول ذلك بنفسه قال وهٰذا الثاني اقرب واخرج عن ابن وهب قال سمعت مالكا يقول انما الف القرآن على ماكانوا يسمعون من النبي صلى الله عليه وسلم وقال البغوي في شرح السنة الصحابة رضي الله عنهم جمعوا بين الدفتين القرآن الذي انزله الله على رسوله من غير ان زادوا او نقصوا منه شيأ خوف ذهاب بعضه بذهاب حفظه فكتبوه كما سمعوا من رسول الله صلى الله عليه و سلم من غير ان قدموا شيئا اواخروا او وضعوا له ترتيبا لم يأخذوه من رسول الله صلى الله عليه وسلم وكان رسول الله صلى الله عليه وسلم يلقن اصحابه ويعلمهم مانزل عليه من القرآن على الترتيب الذي هو الآن في مصاحفنا بتوقيف جبريل اياه على ذلك واعلامه عند نزول كل آية ان هٰذه الآية تكتب عقب آية كذا في سورة كذا فثبت ان سعي الصحابة كان في جمعه من موضع واحد لا في ترتيبه فان القرآن مكتوب

على الجن والنجم فى الصحيح انه قرأها بمكة على الكفار وسجد في آخرها واقتربت عند مسلم انه كان يقرأها مع قٓ فى العيد والجمعة والمنافقون في مسلم انه كان يقرأهما في صلاة الجمعة والصف فى المستدرك عن عبد الله بن سلام انه صلى الله عليه وسلم قرأها عليهم حين انزلت حتى ختمها في سورتى من المفصل تدل قرأته صلى الله عليه وسلم لها بمشهد من الصحابة على ان ترتيب آيها توقيفي وما كان الصحابة ليرتبوا ترتيبا سمعوا النبي صلى الله عليه وسلم يقرأ على خلافه فبلغ ذلك مبلغ التواتر نعم يشكل على ذلك ما اخرجه ابن ابي داؤد فى المصاحف من طريق محمد بن اسحٰق عن يحيى بن عباد ابن عبد الله بن الزبير عن ابيه قال اتى الحارث بن خزيمة بهاتين الآيتين من آخر سورة براءة فقال اشهد اني سمعتهما من رسول الله صلى الله عليه وسلم ووعيتهما فقال عمر وانا اشهد لقد سمعتهما ثم قال لو كانت ثلاث آيات لجعلتها سورة على حدة فانظروا آخر سورة من القرآن فالحقوها في آخرها قال ابن حجر ظاهر هذا انهم كانوا يؤلفون آيات السور باجتهادهم وسائر الاخبار تدل على انهم لم يفعلوا شيئًا من ذلك الا بتوقيف قلت يعارضه ما اخرجه ابن ابي داؤد ايضا من طريق ابى العالية عن ابي بن كعب انهم جمعوا القرآن فلما انتهوا الى الآية التي في سورة براءة ثم انصرفوا صرف الله قلوبهم بانهم قوم لايفقهون ظنوا ان هذا آخر ما نزل فقال ابي ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرأني بعد هذا آيتين لقد جاءكم رسول الى آخر السورة وقال مكي وغيره ترتيب الآيات فى السور بامر من النبي صلى الله عليه وسلم ولما لم يأمر بذلك في اول براءة تركت بلا بسملة وقال

صلى الله عليه وسلم ولم يبين لنا انها منها فمن اجل ذلك قرنت بينهما ولم اكتب بينهما سطر بسم الله الرحمن الرحيم ووضعتها في السبع الطوال ومنها ما اخرجه احمد باسناد حسن عن عثمان بن ابي العاص قال كنت جالسا عند رسول الله صلى الله عليه وسلم اذ شخص ببصره ثم صوبه ثم قال اتاني جبريل فامرني ان اضع هذه الآية بهذا الموضع من هذه السورة ان الله يأمر بالعدل والاحسان وايتاء ذي القربى الى آخرها ومنها ما اخرجه البخاري عن ابن الزبير قال قلت لعثمان والذين يتوفون منكم ويذرون ازواجا قد نسختها الآية الاخرى فلم تكتبها او تدعها قال يا ابن اخي لا اغير شيئا منه من مكانه ومنها مارواه مسلم عن عمر رض قال ما سألت النبي صلى الله عليه وسلم عن شيء اكثر مما سألته عن الكلالة حتى طعن باصبعه في صدري وقال تكفيك آية الصيف التي في آخر سورة النساء ومنها الاحاديث في خواتيم سورة البقرة ومنها ما رواه مسلم عن ابي الدرداء مرفوعا من حفظ عشر آية من اول سورة الكهف عصم من الدجال وفي لفظ عنده من قرأ العشر الا واخر من سورة الكهف ومن النصوص الدالة على ذلك اجمالا ماثبت من قراءته صلى الله عليه وسلم لسور عديدة كسورة البقرة وآل عمران والنساء في حديث حذيفة رض والاعراف في صحيح البخاري انه قرأها في المغرب وقد افلح روى النسائي انه قرأها في الصبح حتى اذا جاء ذكر موسى وهارون اخذته سعلة فركع والروم روى الطبراني انه قرأها في الصبح والم تنزيل وهل اتى على الانسان روى الشيخان انه كان يقرأهما في صبح الجمعة وق في صحيح مسلم انه كان يقرأها في الخطبة والرحمن في المستدرك وغيره انه قرأها

فاما السابق الى جمع الجماة فهو الصديق وقد قال علي لو وليت لعملت بالمصاحف الذي عمل عثمان انتهى فائدة اختلف في عدة المصاحف التي ارسل بها عثمان الى الآفاق فالمشهور انها خمسة واخرج ابن ابي داؤد من طريق حمزة الزيات قال ارسل عثمان اربعة مصاحف قال ابن ابي داؤد سمعت ابا حاتم السجستاني يقول كتب سبعة مصاحف فارسل الى مكة و الشام والى اليمن والى البحرين والى البصرة والى الكوفة وحبس بالمدينة واحدا فصل الاجماع والنصوص المترادفة على ان ترتيب الآيات توقيفي لا شبهة في ذلك اما الاجماع فنقله غير واحد منهم الزركشي فى البرهان وابوجعفر بن الزبير في مناسباته وعبارته ترتيب الآيات في سورها واقع بتوقيفه صلى الله عليه وسلم وامره من غير خلاف في هذا بين المسلمين انتهى وسيأتي من نصوص العلماء مايدل عليه واما النصوص فمنها حديث زيد السابق كنا عند النبي صلى الله عليه وسلم نولف القرآن من الرقاع ومنها ما اخرجه احمد وابو داؤد والترمذي والنسائي وابن حبان والحاكم عن ابن عباس قال قلت لعثمان ما حملكم على ان عمدتم الى الانفال وهي من المثاني والى براءة وهي من المبين فقرنتم بينهما ولم تكتبوا بينهما سطر بسم الله الرحمن الرحيم ووضعتموها فى السبع الطوال فقال عثمان كان رسول الله صلى الله عليه وسلم ينزل عليه السور ذوات العدد فكان اذا نزل عليه الشيء دعا بعض من كان يكتب فيقول ضعوا هؤلاء الآيات فى السورة التي يذكر فيها كذا وكذا وكانت الانفال من اوائل مانزل بالمدينة وكانت براءة من آخر القرآن نزولا وكانت قصتها شبيهة بقصتها فظننت انها منها فقبض رسول الله

وهذا يكاد يكون كفرا قلنا فما ترى قال ارى ان تجمع الناس على مصحف واحد فلا يكون فرقة ولا اختلاف قلنا فنعم ما رأيت قال ابن التين وغيره الفرق بين جمع ابي بكر و جمع عثمان ان جمع ابي بكر كان لخشية ان يذهب من القرآن شيء بذهاب جملة لانه لم يكن مجموعا في موضع واحد فجمعه في صحائف مرتبا لايآت سورة على ما وقفهم عليه النبي صلى الله عليه وسلم وجمع عثمان كان لما كثر الاختلاف في وجوه القراآت حين قرؤه بلغاتهم على اتساع اللغات فادى ذلك بعضهم الى تخطية بعض فخشي من تفاقم الامر في ذلك فنسخ تلك الصحف في مصحف واحد مرتبا لسوره من سايرا للغات على لغة قريش محتجا بانه نزل بلغتهم و انكان قد وسع في قراأته بلغة غيرهم رفعا للحرج و المشقة في ابتداء الامر فرأى ان الحاجة الى ذلك انتهت فاقتصر على لغة واحدة وقال القاضي ابوبكر فى الانتصار لم يقصد عثمان قصد ابي بكر في جمع نفس القراأة بين الوحيين و انما قصد جمعهم على القراآت الثابتة المعروفة عن النبي صلى الله عليه وسلم و الغاما ليس كذلك و اخذهم بمصحف لا تقديم فيه ولا تأخير ولا تأويل اثبت مع تنزيل ولا منسوخ تلاوته كتب مع مثبت رسمه و مفروض قراأته و حفظه خشية دخول الفساد و الشبهة على من يأتي بعد و قال الحارث المحاسبي المشهور عند الناس ان جامع القرآن عثمان وليس كذلك انما حمل عثمان الناس على القراأة بوجه واحد على اختيار وقع بينه وبين من شهده من المهاجرين و الانصار لما خشي الفتنة عند اختلاف اهل العراق و الشام في حروف القراآت فاما قبل ذلك فقد كان المصاحف بوجوه من القراآت المطلقات على الحروف السبعة التي انزل بها القرآن

اسمع رسول الله صلى الله عليه و سلم يقرأبها فالتمسناها فوجدناها مع خزيمة بن ثابت الانصاري من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه فالحقناها في سورتها في المصحف قال ابن حجر وكان ذلك في سنة خمس و عشرين قال و غفل بعض من ادركناه فزعم انه كان في حدود سنة ثلاثين و لم يذكر له مستندا انتهى و اخرج ابن اشته من طريق ايوب عن ابي قلابة قال حدثني رجل من بني عامر يقال له انس بن مالك قال اختلفوا في القرأت على عهد عثمان رض حتى اقتتل الغلمان و المعلمون فبلغ ذلك عثمان بن عفان رض فقال عندي تكذبون به و تلحنون فيه فمن نأى عني كان اشد تكذيبا و اكثر لحنا يا اصحاب محمد اجتمعوا فاكتبوا للناس اماما فاجتمعوا فكتبوا فكانوا اذا اختلفوا و تداروا في آية قالوا هذه اقرؤها رسول الله صلى الله عليه و سلم فلانا فيرسل اليه وهو على راس ثلاث من المدينة فيقال له كيف اقراك رسول الله صلى الله عليه و سلم آية كذا وكذا فيقول كذا و كذا فيكتبونها و قد تركوا لذلك مكانا واخرج ابن ابي داؤد من طريق محمد بن سيرين عن كثير بن افلح قال لما اراد عثمن رض ان يكتب المصاحف جمع له اثنى عشر رجلا من قريش و الانصار فبعثوا الى الربعة التي في بيت عمر فجيء بها و كان عثمان يتعاهدهم فكانوا اذا تداروا في شيء اخروه قال محمد فظننت انما كانوا يوخرونه لينظروا احدثهم عهدا بالعرضة الاخيرة فيكتبونه على قوله و اخرج ابن ابي داؤد بسند صحيح عن سويد بن غفلة قال قال علي رض لاتقولوا في عثمان الاخيرا فوالله ما فعل الذي فعل في المصاحف الا عن ملأ منا قال فما تقولون في هذه القرأت فقد بلغني ان بعضهم يقول ان قراتي خير من قراتك

عن ابن شهاب قال لما اصيب المسلمون باليمامة فزع ابوبكر رض وخاف ان يهلك من القرآن طائفة فاقبل الناس بما كان معهم وعندهم حتى جمع على عهد ابي بكر رضي الله تعالى عنه في الورق فكان ابوبكر اول من جمع القرآن في الصحف قال ابن حجر ووقع في رواية عمارة بن عزية ان زيد بن ثابت قال فامرني ابوبكر فكتبته في قطع الاديم والعسب فلما هلك ابوبكر وكان عمر كتبت ذلك في صحيفة واحدة فكانت عنده قال والاول اصح انما كان في الاديم والعسب اولا قبل ان يجمع في عهد ابي بكر ثم جمع في الصحف في عهد ابي بكر كما دلت عليه الاخبار الصحيحة المترادفة قال الحاكم والجمع الثالث هو ترتيب السور في زمن عثمان رض روى البخاري عن انس ان حذيفة بن اليمان قدم على عثمان وكان يغازي اهل الشام في فتح ارمينية واذربيجان مع اهل العراق فافزع حذيفة اختلافهم في القراءات فقال لعثمان ادرك الامة قبل ان يختلفوا اختلاف اليهود والنصارى فارسل الى حفصة ان ارسلي الينا بالصحف ننسخها في المصاحف ثم نردها اليك فارسلت بها حفصة الى عثمان فامر زيد بن ثابت وعبد الله بن الزبير وسعيد بن العاصي وعبد الرحمن بن الحارث بن هشام فنسخوها في المصاحف وقال عثمان للرهط القرشيين الثلاثة اذا اختلفتم انتم وزيد بن ثابت في شيء من القرآن فاكتبوه بلسان قريش فانه انما انزل بلسانهم ففعلوا حتى اذا نسخوا الصحف في المصاحف رد عثمان رض الصحف الى حفصة وارسل الى كل افق بمصحف بما نسخوا وامر بما سواه من القرآن في كل صحيفة او مصحف ان يحرق قال زيد ففقدت آية من الاحزاب حين نسخنا المصحف قد كنت

عليه وسلم جعل شهادته شهادة رجلين فكتب و ان عمراتى بآية الرجم فلم يكتبها لانه كان وحده و قال الحارث المحاسبي في كتاب فهم السنن كتابة القرآن ليست بمحدثة فانه صلى الله عليه وسلم كان يأمر بكتابته و لكنه كان مفرقا فى الرقاع و الاكتاف والعسب فانما امر الصديق بنسخها من مكان الى مكان مجتمعا و كان ذلك بمنزلة اوراق و جدت في بيت رسول الله صلى الله عليه و سلم فيها القرآن منتشر فجمعها جامع و ربطها بخيط حتى لا يضيع منها شيء قال فان قيل كيف وقعت الثقة باصحاب الرقاع وصدور الرجال قيل لانهم كانوا يبدون عن تاليف معجز و نظم معروف قد شاهدوا تلاوته من النبي صلى الله عليه و سلم عشرين سنة فكان تزوير ماليس منه مامونا و انما كان الخوف من ذهاب شيء من صحيحه وقد تقدم في حديث زيد انه جمع القرآن من العسب واللخاف و في رواية و الرقاع و في اخرى وقطع الاديم و في اخرى و الاكتاف و في اخرى و الاضلاع و في اخرى و الاقتاب فالعسب جمع عسيب وهو جريد النخل كانوا يكشطون الخوص و يكتبون فى الطرف العريض واللخاف بكسر اللام وبخاء معجمة خفيفة آخره فا جمع لخفة بفتح اللام وسكون الخاء وهي الحجارة الرقاق وقال الخطابي صحائف الحجارة والرقاع جمع رقعة وقد تكون من جلد اورق او كاغذ والاكتاف جمع كتف و هو العظم الذي للبعير او الشاة كانوا اذا جف كتبوا عليه والاقتاب جمع قتب و هو الخشب الذي يوضع على ظهر البعير ليركب عليه و في موطأ ابن وهب عن مالك عن ابن شهاب عن سالم بن عبد الله بن عمر قال جمع ابوبكر القرآن في قراطيس وكان سأل زيد بن ثابت في ذلك فابى حتى استعان عليه بعمر ففعل وفي مغازي موسى بن عقبة

بامر ابي بكر و اخرج ابن ابي داؤد من طريق يحيى بن عبد الرحمٰن بن حاطب قال قدم عمر فقال من كان تلقى من رسول الله صلى الله عليه و سلم شيئًا من القرآن فليأت به وكانوا يكتبون ذلك في الصحف والالواح والعسب وكان لايقبل من احد شيئًا حتى يشهد شهيدان وهٰذا يدل على ان زيدا كان لايكتفي بمجرد وجدانه مكتوبا حتى يشهد به من تلقاه سماعا مع كون زيد كان يحفظ فكان يفعل ذلك مبالغة في الاحتياط و اخرج ابن ابي داؤد ايضا من طريق هشام بن عروة عن ابيه ان ابا بكر رض قال لعمر و لزيد اقعدا على باب المسجد فمن جاء كما بشاهدين على شيء من كتاب الله فا كتباه رجاله ثقات مع انقطاعه قال ابن حجر وكان المراد بالشاهدين الحفظ و الكتاب و قال السخاوي في جمال القراء المراد انهما يشهدان على ان ذلك المكتوب كتب بين يدي رسول الله صلى الله عليه و سلم او المراد انهما يشهدان على ان ذلك من الوجوه التي نزل بها القرآن قال ابو شامة وكان غرضهم ان لايكتب الا من عين ما كتب بين يدي النبي صلى الله عليه و سلم لا من مجرد الحفظ قال و لذلك قال في آخر سورة التوبة لم اجدها مع غيره اي لم اجدها مكتوبة مع غيره لانه كان لايكتفي بالحفظ دون الكتابة قلت او المراد انهما يشهدان على ان ذلك مما عرض على النبي صلى الله عليه و سلم عام وفاته كما يؤخذ مما تقدم اخر النوع السادس عشر وقد اخرج ابن اشته في المصاحف عن الليث بن سعد قال اول من جمع القرآن ابو بكر و كتبه زيد وكان الناس يأتون زيد بن ثابت فكان لايكتب آية الابشاهدي عدل و ان آخر سورة براءة لم توجد الا مع ابي خزيمة بن ثابت قال اكتبوها فان رسول الله صلى الله

حفظه في صدره وما تقدم من رواية عبد خير عنه اصح فهو المعتمد
قلت قد ورد من طريق اخرى فاخرجه ابن الضريس في فضائله
حدثنا بشر بن موسى ثنا هوذة بن خليفة ثنا عون عن محمد بن سيرين
عن عكرمة قال لما كان بعد بيعة ابي بكر قعد علي بن ابي طالب في
بيته فقيل لابي بكر قد كره بيعتك فارسل اليه فقال اكرهت بيعتي
قال لا والله قال ما اقعدك عني قال رأيت كتاب الله يزاد فيه فحدثت
نفسي ان لا البس ردائي الا لصلوة حتى اجمعه قال له ابوبكر فانك
نعم ما رأيت قال محمد فقلت لعكرمة الفوه كما انزل الاول فالاول قال
لو اجتمعت الانس والجن على ان يؤلفوه ذلك التأليف ما استطاعوا
واخرج ابن اشته في المصاحف من وجه آخر عن ابن سيرين
وفيه انه كتب في مصحفه الناسخ والمنسوخ وان ابن سيرين قال
فطلبت ذلك الكتاب وكتبت فيه الى المدينة فلم اقدر عليه واخرج
ابن ابي داوُد من طريق الحسن ان عمر سأل عن آية من كتاب الله
فقيل كانت مع فلان قتل يوم اليمامة فقال انا لله وامر بجمع القرآن
فكان اول من جمعه في المصحف اسناده منقطع والمراد بقوله فكان
اول من جمعه اي اشار بجمعه قلت ومن غريب ما ورد في اول
من جمعه ما اخرجه ابن اشته في كتاب المصاحف من طريق كهمس
عن بن بريدة قال اول من جمع القرآن في مصحف سالم مولى ابي
حذيفة اقسم لا ارتدي برداء حتى نجمعه فجمعه ثم ايتمروا ما يسمونه
فقال بعضهم سموه السفر قال ذلك اسم تسميه اليهود فكرهوه فقال
رأيت مثله بالحبشة يسمى المصحف فاجمع رأيهم على ان يسموه
المصحف اسناده منقطع ايضا وهو محمول على انه كان احد الجامعين

صحيحه عن زيد بن ثابت قال ارسل الى ابوبكر مقتل اهل اليمامة فاذا
عمر بن الخطاب عنده فقال ابوبكر ان عمر اتاني فقال ان القتل قد استحر
بقراء القرآن واني اخشى ان يستحر القتل بالقراء فى المواطن فيذهب
كثير من القرآن واني ارى ان تامر بجمع القرآن فقلت لعمر كيف نفعل
شيئا لم يفعله رسول الله صلى الله عليه وسلم قال عمر هذا والله خير
فلم يزل يراجعني حتى شرح الله صدري لذلك ورأيت في ذلك
الذي رأى عمر قال زيد قال ابوبكر انك شاب عاقل لا نتهمك وقد
كنت تكتب الوحي لرسول الله صلى الله عليه وسلم فتتبع القرآن
فاجمعه فوالله لو كلفوني نقل جبل من الجبال ما كان اثقل عليّ
مما امرني به من جمع القرآن قلت كيف تفعلان شيئا لم يفعله رسول
الله صلى الله عليه وسلم قال هو والله خير فلم يزل ابوبكر يراجعني
حتى شرح الله صدري للذي شرح له صدر ابي بكر وعمر فتتبعت
القرآن اجمعه من العسب واللخاف وصدور الرجال ووجدت آخر
سورة التوبة مع ابي خزيمة الانصاري لم اجدها مع غيره لقد جاءكم
رسول من انفسكم حتى خاتمة براءة فكانت الصحف عند ابي بكر
حتى توفاه الله ثم عند عمر حياته ثم عند حفصة بنت عمر واخرج
ابن ابي داؤد فى المصاحف بسند حسن عن عبد خير قال سمعت
عليا يقول اعظم الناس فى المصاحف اجرا ابو بكر رحمة الله على
ابي بكر هو اول من جمع كتاب الله لكن اخرج ايضا من طريق ابن
سيرين قال قال علي لما مات رسول الله صلى الله عليه وسلم آليت
ان لا آخذ علي ردائي الا لصلوة جمعة حتى اجمع القرآن فجمعه
قال ابن حجر هذا الاثر ضعيف لانقطاعه وبتقدير صحته فمراده بجمعة

ابن مسعود قال الحواميم ديباج القرآن قال السخاوي وقوارع القرآن الآيات التي يتعوذ بها ويتحصن سميت بذلك لانها تقرع الشيطان وتدفعه وتقمعه كآية الكرسي والمعوذتين ونحوهما قلت وفي مسند احمد من حديث معاذ بن انس مرفوعا آية العز الحمد لله الذي لم يتخذ ولدا الآية النوع الثامن عشر في جمعه وترتيبه قال الديرعاقولي في فوائده حدثنا ابراهيم بن بشار ثنا سفيان بن عيينة عن الزهري عن عبيد عن زيد بن ثابت قال قبض النبي صلى الله عليه وسلم ولم يكن القرآن جمع في شيء قال الخطابي انما لم يجمع صلى الله عليه وسلم القرآن في المصحف لما كان يترقبه من ورود ناسخ لبعض احكامه اوتلاوته فلما انقضى نزوله بوفاته الهم الله الخلفاء الراشدين ذلك وفاء بوعده الصادق بضمان حفظه على هذه الامة فكان ابتداء ذلك على يدالصديق بمشورة عمر واما ما اخرجه مسلم من حديث ابي سعيد الخدري قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تكتبوا عني شيئا غير القرآن الحديث فلاينا في ذلك لان الكلام في كتابة مخصوصة على صفة مخصوصة وقد كان القرآن كله كتب في عهد رسول الله صلى الله عليه وسلم لكن غير مجموع في موضع واحد ولا مرتب السور وقال الحاكم في المستدرك جمع القرآن ثلاث مرات احدها بحضرة النبي صلى الله عليه وسلم ثم اخرج بسند على شرط الشيخين عن زيد بن ثابت قال كنا عند رسول الله صلى الله عليه وسلم نؤلف القرآن في الرقاع الحديث قال البيهقي يشبه ان يكون المراد به تأليف ما نزل من الآيات المفرقة في سورها وجمعها فيها باشارة النبي صلى الله عليه وسلم الثانية بحضرة ابي بكر رض روى البخاري في

وحاميم و اضفت اليه سورة ام لافلك الحكاية و الاعراب ممنوعا كموازنة قابيل و هابيل وان لم يوازن فان امكن فيه التركيب كطس ميم واضفت اليه سورة فلك الحكاية و الاعراب اما مركبا مفتوح النون كحضرموت او معرب النون مضا فا لما بعده مصروفا وممنوعا على اعتقاد التذكير والتانيث وان لم تضف اليه سورة فالوقف على الحكاية و البناء كخمسة عشر والاعراب ممنوعا و ان لم يمكن التركيب فالوقف ليس الا اضفت اليه سورة ام لانحو كهيعص و حمعسق ولايجوز اعرابه لانه لانظيرله فى الاسماء المعربة ولا تركيبه مزجا لانه لا يركب ذلك اسماً كثيرة وجوز يونس اعرابه ممنوعا و ما سمي منها باسم غير حرف هجاء فان كان فيه اللام انجر نحوالانفال و الاعراف و الانعام و الامنع الصرف ان لم تضف اليه سورة نحو هذه هود و نوح و قرأت هود ونوح وان اضفت بقي على ما كان عليه فان كان فيه ما يوجب المنع منع نحو قرأت سورة يونس والاصرف نحو سورة نوح و سورة هود انتهى ملخصا خاتمة قسم القرآن الى اربعة اقسام و جعل لكل قسم منه اسم اخرج احمد وغيره من حديث واثلة بن الاسقع ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اعطيت مكان التوراة السبع الطوال واعطيت مكان الزبور المبين واعطيت مكان الانجيل المثاني وفضلت بالمفصل وسيأتي مزيد كلام في ذلك فى النوع الذي يلي هذا ان شاء الله تعالى وفي جمال القراء قال بعض السلف فى القرآن ميادين و بساتين و مقاصير و عرايس و ديابيج و رياض فميا دينه ما افتتح بالم و بساتينه ما افتتح بالر و مقاصيره الحامدات وعرائسه المسبحات و ديا بيجه آل حم و رياضه المفصل وقالوا الطواسين والطواسيم وآل حم والحواميم قلت واخرج الحاكم عن

و لم تسم به سورة الصافات و قصة داوُد ذكرت في صٓ ولم تسم به فانظر في حكمة ذلك على اني رأيت بعد ذلك في جمال القراء للسخاوى ان سورة طٰه تسمى سورة الكليم و سماها الهذلي في كامله سورة موسى وان سورة صٓ تسمى سورة داوُد و رأيت في كلام الجعبري ان سورة الصافات تسمى سورة الذبيح و ذلك يحتاج الى مستند من الاثر

فصـــل و كما سميت السورة الواحدة باسماء سميت سور باسم و احد كالسور المسماة بالٓم اوالٓر على القول بان فواتح السور اسمائها فائدة في اعراب اسماء السور قال ابوحيان في شرح التسهيل ماسمي منها بجملة تحكي نحوقل او حي و اتى امر الله او بفعل لا ضمير فيه اعرب اعراب مالا ينصرف الا ما في اوله همزة وصل فتقطع الفه و تقلب تاؤه هاءً في الوقف و تكتب بها على صورة الوقف فتقول قرأت اقتربت و في الوقف اقتربه اما الاعراب فلانها صارت اسما والاسماء معربة الاالموجب بناء واما قطع همزة الوصل فلانها لاتكون في الاسماء الا في الفاظ محفوظة لايقاس عليها و اما قلب تائها هاء فلان ذلك حكم تاء التانيث التي في الاسماء واما كتبها هاء فلان الخط تابع للوقف غالبا و ماسمي منها باسم فان كان من حروف الهجاء و هو حرف واحد و اضفت اليه سورة فعند ابن عصفور انه موقوف لا اعراب فيه و عند الشلوبين يجوز فيه وجهان الوقف و الاعراب اما الاول و يعبر عنه بالحكاية فلانها حروف مقطعة تحكى كما هي واما الثاني فعلى جعله اسما لحروف الهجاء و على هذا يجوز صرفه بناء على تذكير الحرف و منعه بناء على تانيثه وان لم تضف اليه سورة لا لفظا و لاتقديرا فلك الوقف و الاعراب مصروفا و ممنوعا و ان كان اكثر من حرف فان وازن الاسماء الاعجمية كطاسين

الى قوله ام كنتم شهداء لم يرد في غيرها كما ورد ذكر النساء في سور الا ان فيها تكرر و بسط من احكامهن لم يرد في غير سورة النساء وكذا سورة المائدة لم يرد ذكر المائدة في غيرها فسميت بما يخصها قال فان قيل قد ورد في سورة هود ذكر نوح و صالح و ابراهيم ولوط وشعيب وموسى فلم خصت باسم هود وحده مع ان قصة نوح فيها اوعب واطول قيل تكررت هذه القصص في سورة الاعراف و سورة هود والشعراء باوعب مما وردت في غيرها و لم يتكرر في واحدة من هذه السور الثلاث اسم هود كتكرره في سورته فانه تكرر فيها في اربعة مواضع والتكرار من اقوى الاسباب التي ذكرنا قال فان قيل فقد تكرر اسم نوح فيها في ستة مواضع قيل لما افردت لذكر نوح و قصته مع قومه سورة براسها فلم يقع فيها غير ذلك كانت اولى بان تسمى باسمه من سورة تضمنت قصته و قصة غيره انتهى قلت و لك ان تسأل فتقول قد سميت سور جرت فيها قصص انبياء باسمائهم كسورة نوح وسورة هود و سورة ابراهيم وسورة يونس وسورة آل عمران وسورة طس سليمان و سورة يوسف وسورة محمد وسورة مريم و سورة لقمان و سورة المؤمن وقصة اقوام كذلك كسورة بني اسرائيل و سورة اصحاب الكهف و سورة الحجر و سورة سبا وسورة الملائكة وسورة الجن و سورة المنافقين و سورة المطففين و مع هذا كله لم يفرد لموسى سورة تسمى به مع كثرة ذكره في القرآن حتى قال بعضهم كاد القرآن ان يكون كله موسى وكان اولى سورة ان تسمى به سورة طه او القصص اوالاعراف ابسط قصته في الثلاثة مالم تبسط في غيرها و كذلك قصة آدم ذكرت في عدة سور و لم تسم به سورة كأنه اكتفى بسورة الانسان و كذلك قصة الذبيح من بدائع القصص

والمعصرات لم يكن تسمى سورة اهل الكتاب وكذلك سميت في مصحف ابي وسورة البينة وسورة القيمة وسورة البرية وسورة الانفكاك ذكر ذلك في جمال القراء ارايت تسمى سورة الدين وسورة الماعون الكافرون تسمى المقشقشة اخرجه ابن ابي حاتم عن زرارة بن اوفى قال في جمال القراء وتسمى ايضا سورة العبادة قال وسورة النصر تسمى سورة التوديع لما فيها من الايماء الى وفاته صلى الله عليه وسلم قال وسورة تبت تسمى سورة المسد وسورة الاخلاص تسمى سورة الاساس لاشتمالها على توحيد الله وهو اساس الدين قال والفلق والناس يقال لهما المعوذتان بكسر الواو والمشقشقتان من قولهم خطيب مشقشق تنبيه قال الزركشي في البرهان ينبغي البحث عن تعداد الاسامي هل هو توقيفي اوبما يظهر من المناسبات فان كان الثاني فلن يعدم الفطن ان يستخرج من كل سورة معاني كثيرة تقتضي اشتقاق اسمائها وهو بعيد قال وينبغي النظر في اختصاص كل سورة بما سميت به ولاشك ان العرب تراعي في كثير من المسميات اخذ اسمائها من نادرا ومستغرب يكون في الشيء من خلق او صفة تخصه او يكون معه احكم او اكثر او اسبق لادراك الرأى للمسمى ويسمون الجملة من الكلام والقصيدة الطويلة بما هو اشهر فيها وعلى ذلك جرت اسماء سور القرآن كتسمية سورة البقرة بهذا الاسم لقرينة قصة البقرة المذكورة فيها وعجيب الحكمة فيها وسميت سورة النساء بهذا الاسم لما تردد فيها شيء كثير من احكام النساء وتسمية سورة الانعام لما ورد فيها من تفصيل احوالها وان كان قد ورد لفظ الانعام في غيرها الا ان التفصيل الوارد في قوله تعالى ومن الانعام حمولة وفرشا

عن سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس رض سورة الحشر قال قل سورة بني النضير قال ابن حجر كأنه كره تسميتها بالحشر لئلا يظن ان المراد يوم القيٰمة وانما المراد به هنا اخراج بني النضير الممتحنة قال ابن حجر المشهور في هٰذه التسمية انها بفتح الحاء و قد تكسر فعلى الاول هي صفة المرأة التي نزلت السورة بسببها و على الثاني هي صفة السورة كما قيل لبراءة الفاضحة و في جمال القراء تسمى ايضا سورة الامتحان و سورة المودة الصف تسمى ايضا سورة الحواريين الطلاق تسمى سورة النساء القصرى كذا سماها ابن مسعود اخرجه البخاري و غيره و قد انكره الداؤدي فقال لا ارى قوله القصرى محفوظا و لا يقال في سورة القرآن قصرى و لا صغرى قال ابن حجر و هو رد للاخبار الثابتة بلا مستند و القصر و الطول امر نسبي و قد اخرج البخاري عن زيد بن ثابت انه قال طولى الطوليين و اراد بذلك سورة الاعراف التحريم يقال لها سورة التحريم و سورة لم تحرم تبارك تسمى سورة الملك و اخرج الحاكم وغيره عن ابن مسعود قال هي فى التوراة سورة الملك و هي المانعة تمنع من عذاب القبر و اخرج الترمذي من حديث ابن عباس رض مرفوعا هي المانعة هي المنجية تنجيه من عذاب القبر و في مسند عبد الرزاق من حديثه انها المنجية والمجادلة تجادل يوم القيٰمة عند ربها لقارئها و في تاريخ ابن عساكر من حديث انس ان رسول الله صلى الله عليه و سلم سماها المنجية و اخرج الطبراني عن ابن مسعود قال كنا نسميها في عهد رسول الله صلى الله عليه و سلم المانعة و في جمال القراء تسمى ايضا الواقية و المناعة سأل تسمى المعارج و الواقع عم يقال انها النبأ و التساؤل

لانها بعثرت عن اسرار المنافقين و ذكر فيه ايضا من اسمائها المخزية و المنكلة و المشردة و المدمدمة النحل قال قتادة تسمى سورة النعم اخرجه ابن ابي حاتم قال ابن الفرس لما عدد الله فيها من النعم على عباده الاسراء تسمى ايضا سورة سبحان و سورة بني اسرائيل الكهف و يقال سورة اصحاب الكهف كذا في حديث اخرجه ابن مردويه و روى البيهقي من حديث ابن عباس مرفوعا انها تدعى فى التوراة الحائلة تحول بين قاريها و بين النار و قال انه منكر طه تسمى ايضا سورة الكليم ذكره السخاوي في جمال القراء الشعراء وقع في تفسير الامام مالك تسميتها بسورة الجامعة النمل تسمى ايضا سورة سليمان السجدة تسمى ايضا المضاجع فاطر تسمى سورة الملائكة يس سماها صلى الله عليه و سلم قلب القرآن اخرجه الترمذي من حديث انس و اخرج البيهقي من حديث ابي بكر مرفوعا سورة يس تدعى فى التوراة المعمة تعم صاحبها بخير الدنيا والآخرة و تدعى المدافعة القاضية تدفع عن صاحبها كل سوء و تقضي له كل حاجة و قال انه حديث منكر الزمر تسمى سورة الغرف غافر تسمى الطول والمؤمن لقوله تعالى فيها و قال رجل مؤمن فصلت تسمى السجدة و سورة المصابيح الجاثية تسمى الشريعة و سورة الدهر حكاه الكرماني فى العجائب سورة محمد تسمى القتال ق تسمى سورة الباسقات اقتربت تسمى القمر و اخرج البيهقي عن ابن عباس انها تدعى فى التوراة المبيضة تبيض وجه صاحبها يوم تسود الوجوه و قال انه منكر الرحمن سميت في حديث عروس القرآن اخرجه البيهقي عن علي رض مرفوعا المجادلة سميت في مصحف ابي الظهار الحشر اخرج البخاري

بدر برأة تسمى ايضا التوبة لقوله تعالى فيها لقد تاب الله على النبي الآية و الفاضحة اخرج البخاري عن سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس سورة التوبة قال التوبة بل هي الفاضحة ما زالت تنزل و منهم ومنهم حتى ظننا ان لا يبقى احد منا الا ذكر فيها و اخرج ابو الشيخ عن عكرمة قال قال عمر رض ما فرغ من تنزيل براءة حتى ظننا انه لم يبق منا احد الا سينزل فيه وكانت تسمى الفاضحة و سورة العذاب و اخرج الحاكم فى المستدرك عن حذيفة قال التي تسمون سورة التوبة هي سورة العذاب و اخرج ابوالشيخ عن سعيد بن جبير قال كان عمر ابن الخطاب اذا ذكرله سورة براءة فقيل سورة التوبة قال هي الى العذاب اقرب ما كادت تقلع عن الناس حتى ما كادت تبقي منهم احدا و المقشقشة اخرج ابوالشيخ عن زيد ابن اسلم ان رجلا قال لابن عمر سورة التوبة فقال وايتهن سورة التوبة فقال براءة فقال و هل فعل بالناس الافاعيل الا هي ما كنا ندعوها الا المقشقشة اي المبرئة من النفاق و المنقرة اخرج ابو الشيخ عن عبيد بن عمير قال كانت تسمى براءة المنقرة نقرت عما في قلوب المشركين و البحوث بفتح الباء اخرج الحاكم عن المقداد انه قيل له لو قعدت العام عن الغزو قال ابت علينا البحوث يعني براءة الحديث و الحافرة ذكره ابن الفرس لانها حفرت عن قلوب المنافقين و المثيرة اخرج ابن ابي حاتم عن قتادة قال كانت هذه السورة تسمى الفاضحة فاضحة المنافقين و كان يقال لها المثيرة انبأت بمثالبهم و عوراتهم و حكى ابن الفرس من اسمائها المبعثرة و اظنه تصحيف المنقرة فان صح كملت الاسماء عشرة ثم رأيت كذلك اعني المبعثرة بخط السخاوي في جمال القراء وقال

اصل القرآن و اول سورة فيه حادي عشرها النور ثاني عشرها و ثالث عشرها سورة الحمد و سورة الشكر رابع عشرها و خامس عشرها سورة الحمد الاولى وسورة الحمد القصرى سادس عشرها و سابع عشرها و ثامن عشرها الرقية و الشفاء و الشافية للاحاديث الآتية في نوع الخواص تاسع عشرها سورة الصلوٰة لتوقف الصلوٰة عليها و قيل ان من اسمائها الصلوٰة ايضا لحديث قسمت الصلوٰة بيني و بين عبدي اي السورة قال المرسي لانها من لوازمها فهو من باب تسمية الشيء باسم لازمه و هٰذا الاسم العشرون الحادي و العشرون سورة الدعاء لاشتمالها عليه في قوله اهدنا الثاني و العشرون سورة السؤال لذلك ذكره الامام فخرالدين الثالث والعشرون سورة تعليم المسألة قال المرسي لان فيها آداب السؤال لانها بدئت بالثناء قبله الرابع والعشرون سورة المناجاة لان العبد يناجي فيها ربه بقوله اياك نعبد و اياك نستعين الخامس و العشرون سورة التفويض لاشتمالها عليه في قوله واياك نستعين فهذا ما وقفت عليه من اسمائها و لم يجتمع في كتاب قبل هٰذا و من ذلك سورة البقرة كان خالد بن معد ان يسميها فسطاط القرآن و ورد في حديث مرفوع في مسند الفردوس و ذلك لعظمها و لما جمع فيها من الاحكام التي لم تذكر في غيرها و في حديث المستدرك تسميتها سنام القرآن و سنام كل شيء اعلاه و ال عمران روى سعيد بن منصور في سننه عن ابي عطاف قال اسم آل عمران في التوراة طيبة وفي صحيح مسلم تسميتها و البقرة الزهراوين و المائدة تسمى ايضا العقود و المنقذة قال ابن الفرس لانها تنقذ صاحبها من ملائكة العذاب و الانفال اخرج ابو الشيخ عن سعيد بن جبير قال قلت لابن عباس رض سورة الانفال قال تلك سورة

المثاني وهي القرآن العظيم و سميت بذلك لاشتمالها على المعاني التي فى القرآن سادسها السبع المثاني ورد تسميتها بذلك فى الحديث المذكور واحاديث كثيرة اما تسميتها سبعا فلا نها سبع آيات اخرج الدار قطني ذلك عن علي رض و قيل لان فيها سبعة آداب في كل آية ادب و فيه بعد و قيل لانها خلت من سبعة احرف الثاء والجيم والخاء والزاى والشين والظاء و الفاء قال المرسي و هذا اضعف مما قبله لان الشيء انما يسمى بشيء وجد فيه لا بشيء فقد منه و اما المثاني فيحتمل ان يكون مشتقا من الثناء لما فيها من الثناء على الله تعالى و يحتمل ان يكون من الثنيا لان الله تعالى استثناها لهذه الامة و يحتمل ان يكون من التثنية قيل لانها تثنى في كل ركعة و يقويه ما اخرجه ابن جرير بسند حسن عن عمر رض قال السبع المثاني فاتحة الكتاب تثنى في كل ركعة و قيل لانها تثنى بسورة اخرى و قيل لانها نزلت مرتين وقيل لانها على قسمين ثناء ودعاء وقيل لانها كلما قرأ العبد منها آية ثناه الله بالاخبار عن فعله كما فى الحديث وقيل لانها اجتمع فيها فصاحة المباني و بلاغة المعاني وقيل غير ذلك سابعها الوافية كان سفيان ابن عيينة يسميها به لانها وافية بما فى القرآن من المعاني قاله فى الكشاف و قال الثعلبي لانها لا تقبل التنصيف فان كل سورة من القرآن لو قرئ نصفها في كل ركعة و النصف الثاني في اخرى لجاز بخلافها و قال المرسي لانها جمعت بين ما لله و ما للعبد ثامنها الكنز لما تقدم في ام القرآن قاله فى الكشاف و ورد تسميتها بذلك في حديث انس السابق فى النوع الرابع عشر تاسعها الكافية لانها تكفي فى الصلوة عن غيرها ولا يكفي عنها غيرها عاشرها الاساس لانها

و انه في ام الكتاب و آيات الحلال و الحرام قال الله تعالى آيات محكمات هن ام الكتاب قال المرسي وقد روي حديث لا يصح لا يقولن احدكم ام الكتاب و ليقل فاتحة الكتاب قلت هذا لا اصل له في شيء من كتب الحديث و انما اخرجه ابن الضريس بهذا اللفظ عن ابن سيرين فالتبس على المرسي و قد ثبت في الاحاديث الصحيحة تسميتها بذلك فاخرج الدارقطني و صححه من حديث ابي هريرة مرفوعا اذا قرأتم الحمد فاقرؤا بسم الله الرحمن الرحيم انها ام القرآن و ام الكتاب و السبع المثاني و اختلف لم سميت بذلك فقيل لانها يبدأ بكتابتها في المصاحف و بقراءتها في الصلوٰة قبل السورة قاله ابوعبيدة في مجازه و جزم به البخاري في صحيحه و استشكل بان ذلك يناسب تسميتها فاتحة الكتاب لا ام الكتاب و اجيب بان ذلك بالنظر الى ان الام مبدأ الولد قال الماوردي سميت بذلك لتقدمها و تأخر ما سواها تبعا لها لانها امته اي تقدمته و لهذا يقال لراية الحرب ام لتقدمها و اتباع الجيش لها و يقال لما مضى من سني الانسان ام لتقدمها ولمكة ام القرى لتقدمها على سائر القرى وقيل ام الشيء اصله و هي اصل القرآن لانطوائها على جميع اغراض القرآن وما فيه من العلوم والحكم كما سيأتي تقريره في النوع الثالث و السبعين و قيل سميت بذلك لانها افضل السور كما يقال لرئيس القوم ام القوم و قيل لان حرمتها كحرمة القرآن كله و قيل لان مفزع اهل الايمان اليها كما يقال للراية ام لان مفزع العسكر اليها و قيل لانها محكمة و المحكمات ام الكتاب خاصها القرآن العظيم روى احمد عن ابي هريرة رض ان النبي صلى الله عليه وسلم قال لام القرآن هي ام القرآن و هي السبع

لا تقولوا سورة البقرة و لا سورة آل عمران و لا سورة النساء وكذلك القرآن كله ولكن قولوا السورة التي تذكرفيها البقرة و التي تذكر فيها آل عمران وكذا القرآن كله و اسناده ضعيف بل ادعى ابن الجوزي انه موضوع و قال البيهقي انما يعرف موقوفا على ابن عمر ثم اخرجه عنه بسند صحيح وقد صح اطلاق سورة البقرة وغيرها عنه صلى الله عليه وسلم وفى الصحيح عن ابن مسعود انه قال هذا مقام الذي انزلت عليه سورة البقرة ومن ثم لم يكرهه الجمهور * فصل قد يكون للسورة اسم واحد وهو كثير وقد يكون لها اسمان فاكثر من ذلك الفاتحة و قد وقفت لها على نيف وعشرين اسما و ذلك يدل على شرفها فان كثرة الاسماء دالة على شرف المسمى احدها فاتحة الكتاب اخرج ابن جرير من طريق ابن ابي ذئب عن المقبري عن ابي هريرة عن النبي صلى الله عليه وسلم قال هي ام القرآن و هي فاتحة الكتاب و هي السبع المثاني وسميت بذلك لانه يفتتح بها فى المصاحف و فى التعليم و فى القرآءة فى الصلوة وقيل لانها اول سورة نزلت و قيل لانها اول سورة كتبت فى اللوح المحفوظ حكاه المرسي و قال انه يحتاج الى نقل و قيل لان الحمد فاتحة كل كلام و قيل لانها فاتحة كل كتاب حكاه المرسي و رده بان الذي افتتح به كل كتاب هو الحمد فقط لا جميع السورة و بان الظاهر ان المراد بالكتاب القرآن لا جنس الكتاب قال لانه قد روي من اسمائها فاتحة القرآن فيكون المراد بالكتاب و القرآن واحدا ثانيها فاتحة القرآن كما اشار اليه المرسي ثالثها و رابعها ام الكتاب و ام القرآن و قد كره ابن سيرين ان تسمى ام الكتاب و كره الحسن ان تسمى ام القرآن و وافقهما بقي بن مخلد لان ام الكتاب هو اللوح المحفوظ قال الله تعالى وعنده ام الكتاب

اجد فى الالواح امة انا جيلهم في قلوبهم فاجعلهم امتي قال تلك امة احمد ففي هذين الاثرين تسمية القرآن توراة و انجيلا و مع هٰذا لا يجوز الآن ان يطلق عليه ذلك و هٰذا كما سميت التوراة فرقانا في قوله تعالى و اذ اتينا موسى الكتاب و الفرقان و سمى صلى الله عليه و سلم الزبور قرآنا في قوله خفف على داؤد القرآن فصل في اسماء السور قال القتيبي السورة تهمز و لا تهمز فمن همزها جعلها من اسأرتُ اي افضلت من السؤر و هو ما بقي من الشراب فى الاناء كأنها قطعة من القرآن و من لم يهمزها جعلها من المعنى المتقدم و سهل همزها و منهم من شبهها بسورة الذبأ اي القطعة منه اي منزلة بعد منزلة و قيل من سور المدينة لاحاطتها بآياتها و اجتماعها كاجتماع البيوت بالسور و منه السوار لاحاطته بالساعد و قيل لارتفاعها لانها كلام الله و السورة المنزلة الرفيعة قال النابغة

الم تر ان الله اعطاك سورة ترى كل ملك حولها يتذبذب

و قيل لتركيب بعضها على بعض من التسور بمعنى التصاعد و التركب و منه اذ تسوروا المحراب قال الجعبري حد السورة قرآن يشتمل على آي ذي فاتحة و خاتمة و اقلها ثلاث آيات و قال غيره السورة الطائفة المترجمة توقيفا اي المسماة باسم خاص بتوقيف من النبي صلى الله عليه و سلم و قد ثبتت جميع اسماء السور بالتوقيف من الاحاديث و الآثار و لولا خشية الاطالة لبينت ذلك و مما يدل لذلك ما اخرجه ابن ابي حاتم عن عكرمة قال كان المشركون يقولون سورة البقرة وسورة العنكبوت يستهزؤن بها فنزل انا كفيناك المستهزئين و قد كره بعضهم ان يقال سورة كذا لما روى الطبراني و البيهقي عن انس مرفوعا

فيه بيان قصص الامم الماضية فهو ثان لما تقدمه و قيل لتكرار القصص و المواعظ فيه و قيل لانه نزل مرة بالمعنى و مرة باللفظ و المعنى كقوله ان هذا لفي الصحف الاولى حكاه الكرماني في عجائبه و اما المتشابه فلانه يشبه بعضه بعضا في الحسن والصدق و اما الروح فلانه تحيى به القلوب و الانفس و اما المجيد فلشرفه و اما العزيز فلانه يعز على من يروم معارضته و اما البلاغ فلانه ابلغ به الناس ما امروا به و نهوا عنه او لان فيه بلاغا و كفاية عن غيره قال السلفي في بعض اجزائه سمعت ابا الكرم النحوي يقول سمعت ابا القاسم التنوخي يقول سمعت ابا الحسن الرماني يقول و سئل كل كتاب له ترجمة فما ترجمة كتاب الله فقال هذا بلاغ للناس و لينذروا به و ذكر ابوشامة و غيره في قوله تعالى و رزق ربك خيروا بقى انه القرآن فائدة حكى المظفري في تاريخه قال لما جمع ابو بكر القرآن قال سموه فقال بعضهم سموه انجيلا فكرهوه و قال بعضهم سموه السفر فكرهوه من يهود فقال ابن مسعود رأيت بالحبشة كتابا يدعونه المصحف فسموه به قلت اخرج ابن اشته في كتاب المصاحف من طريق موسى بن عقبة عن ابن شهاب قال لما جمعوا القرآن و كتبوه في الورق قال ابوبكر التمسوا له اسما فقال بعضهم السفر وقال بعضهم المصحف فان الحبشة يسمونه المصحف وكان ابوبكر اول من جمع كتاب الله وسماه المصحف ثم اورده من طريق آخر عن ابن بريدة و سيأتي في النوع الذي يلي هذا فائدة ثانية اخرج ابن الضريس و غيره عن كعب قال في التوراة يا محمد اني منزل عليك توراة حديثة تفتح اعينا عميا و آذانا صما و قلوبا غلفا و اخرج ابن ابي حاتم عن قتادة قال لما اخذ موسى الالواح قال يا رب اني

بمعنى الجمع و منه قرأت الماء في الحوض اي جمعته قال ابوعبيدة سمي بذلك لانه جمع السور بعضها الى بعض و قال الراغب لا يقال لكل جمع قرآن و لا لجمع كل كلام قرآن قال و انما سمي قرآنا لكونه جمع ثمرات الكتب السالفة المنزلة و قيل لانه جمع انواع العلوم كلها وحكى قطرب قولا انه انما سمي قرآنا لان القارئ يظهره و يبينه من فيه اخذا من قول العرب ما قرأت الناقة سلاقطّ اي ما رمت بولد اي ما اسقطت ولدا اي ما حملت قط و القرآن يلفظه القارئ من فيه و يلقيه فسمي قرآنا قلت والمختار عندي في هٰذه المسألة مانص عليه الشافعي واما الكلام فمشتق من الكلم بمعنى التأثير لانه يؤثر في ذهن السامع فائدة لم تكن عنده و اما النور فلانه يدرك به غوامض الحلال و الحرام و اما الهدى فلان فيه الدلالة على الحق و هو من باب اطلاق المصدر على الفاعل مبالغة واما الفرقان فلانه فرق بين الحق و الباطل وجهه بذلك مجاهد كما اخرجه ابن ابي حاتم و اما الشفاء فلانه يشفي من الامراض القلبية كالكفر والجهل والغل و البدنية ايضا واما الذكر فلما فيه من المواعظ و اخبار الامم الماضية و الذكر ايضا الشرف قال الله تعالى و انه لذكر لك و لقومك اي شرف لانه بلغتهم و اما الحكمة فلانه نزل على القانون المعتبر من وضع كل شيء في محله اولانه مشتمل على الحكمة واما الحكيم فلانه احكمت آياته بعجيب النظم وبديع المعاني و احكمت عن تطرق التبديل و التحريف والاختلاف و التباين و اما المهيمن فلانه شاهد على جميع الكتب و الامم السالفة و اما الحبل فلانه من تمسك به وصل الى الجنة او الهدى و الحبل السبب و اما الصراط المستقيم فلانه طريق الى الجنة قويم لا عوج فيه و اما المثاني فلان

بالعروة الوثقى و صدقا و الذي جاء بالصدق و عدلا و تمت كلمات ربك صدقا و عدلا و امرا ذلك امر الله انزله اليكم و مناديا سمعنا مناديا ينادي للايمان و بشرى هدى و بشرى و مجيدا بل هو قرآن مجيد و زبورا و لقد كتبنا فى الزبور و بشيرا و نذيرا كتاب فصلت آياته قرآنا عربيا لقوم يعلمون بشيرا و نذيرا وعزيزا و انه لكتاب عزيز و بلاغا هذا بلاغ للناس و قصصا احسن القصص و سماه اربعة اسماء في آية واحدة في صحف مكرمة مرفوعة مطهرة انتهى فاما تسميته كتابا فلجمعه انواع العلوم و القصص و الاخبار على ابلغ وجه و الكتاب لغة الجمع و المبين لانه ابان اي اظهر الحق من الباطل و اما القرآن فاختلف فيه فقال جماعة هو اسم علم غير مشتق خاص بكلام الله فهو غير مهموز و به قرأ ابن كثير و هو مروي عن الشافعي اخرج البيهقي و الخطيب وغيرهما عنه انه كان يهمز قرآت ولا يهمز القرآن و يقول القرآن اسم وليس بمهموز و لم يوخذ من قرأت و لكنه اسم لكتاب الله مثل التوراة و الانجيل وقال قوم منهم الاشعري هو مشتق من قرنت الشيء بالشيء اذا ضممت احدهما الى الآخر و سمي به لقران السور و الآيات و الحروف فيه وقال الفراء هو مشتق من القرائن لان الآيات منه يصدق بعضها بعضا و يشابه بعضها بعضا وهي قرائن و على القولين هو بلا همز ايضا و نونه اصلية و قال الزجاج هذا القول سهو و الصحيح ان ترك الهمز فيه من باب التخفيف و نقل حركة الهمزة الى الساكن قبلها و اختلف القائلون بانه مهموز فقال قوم منهم اللحياني هو مصدر لقرأت كالرجحان و الغفران سمي به الكتاب المقر و من باب تسمية المفعول بالمصدر و قال آخرون منهم الزجاج هو وصف على فعلان مشتق من القرء

و لذلك اعتمده ابوبكر و عمر في جمعه وولاه عثمان كتب المصاحف

النوع السابع عشر في معرفة اسمائه و اسماء سوره قال الجاحظ سمى الله كتابه اسما مخالفا لما سمى العرب كلامهم على الجمل و التفصيل سمى جملته قرآنا كما سموا ديوانا و بعضه سورة كقصيدة و بعضها آية كالبيت وآخرها فاصلة كقافية و قال ابو المعالي عزيزي بن عبد الملك المعروف بشيذ له في كتاب البرهان اعلم ان الله سمى القرآن بخمسة و خمسين اسما سماه كتابا ومبينا في قوله حم و الكتاب المبين و قرآنا و كريما انه لقرآن كريم و كلاما حتى يسمع كلام الله و نورا و انزلنا اليكم نورا مبينا وهدى و رحمة هدى و رحمة للمؤمنين و فرقانا نزل الفرقان على عبده و شفاء و ننزل من القرآن ما هو شفاء و موعظة قد جاء تكم موعظة من ربكم و شفاء لما فى الصدور و ذكرا و مباركا و هذا ذكر مبارك انزلناه و عليا و انه في ام الكتاب لدينا لعلي حكيم و حكمة حكمة بالغة و حكيما تلك آيات الكتاب الحكيم و مهيمنا مصدقا لما بين يديه من الكتاب و مهيمنا عليه و حبلا و اعتصموا بحبل الله و صراطا مستقيما و ان هذا صراطي مستقيما وقيما قيما لينذر و قولا و فصلا انه لقول فصل و نباء عظيما عم يتساءلون عن النبا العظيم و احسن الحديث و مثاني و متشابها الله نزل احسن الحديث كتابا متشابها مثاني و تنزيلا و انه لتنزيل رب العالمين و روحا او حينا اليك روحا من امرنا و وحيا انما انذركم بالوحي و عربيا قرآنا عربيا و بصائر هذا بصائر و بيانا هذا بيان للناس و علما من بعد ما جاءك من العلم و حقا ان هذا لهو القصص الحق و هاديا ان هذا القرآن يهدي و عجبا قرآنا عجبا و تذكرة و انه لتذكرة و العروة الوثقى استمسك

اجمع الصحابة على نقل المصاحف العثمانية من الصحف التي كتبها ابو بكر و اجمعوا على ترك ما سوى ذلك و ذهب جماهير العلماء من السلف و الخلف و ائمة المسلمين الى انها مشتملة على ما يحتمله رسمها من الاحرف السبعة فقط جامعة للعرضة الاخيرة التي عرضها النبي صلى الله عليه و سلم على جبريل متضمنة لها لم تترك حرفا منها قال ابن الجوزي و هذا هو الذي يظهر صوابه و يجاب عن الاول بما ذكره ابن جرير ان القراآة على الاحرف السبعة لم تكن واجبة على الامة و انما كان جائزا لهم و مرخصا لهم فيه فلما رأى الصحابة ان الامة تفترق و تختلف اذا لم يجتمعوا على حرف واحد اجتمعوا على ذلك اجتماعا شائعا و هم معصومون من الضلالة ولم يكن في ذلك ترك واجب ولا فعل حرام ولا شك ان القرآن نسخ منه فى العرضة الاخيرة وغيرها فاتفق رأى الصحابة على ان كتبوا ما تحققوا انه قرآن مستقر فى العرضة الاخيرة و تركوا ما سوى ذلك اخرج ابن اشته فى المصاحف و ابن ابي شيبه في فضائله من طريق ابن سيرين عن عبيدة السلماني قال القراآة التي عرضت على النبي صلى الله عليه و سلم فى العام الذي قبض فيه هي القراآة التي يقرؤها الناس اليوم واخرج ابن اشته عن ابن سيرين قال كان جبريل يعارض النبي صلى الله عليه و سلم كل سنة في شهر رمضان فلما كان العام الذي قبض فيه عارضه مرتين فيرون ان تكون قراأتنا هذه على العرضة الاخيرة و قال البغوي في شرح السنة يقال ان زيد بن ثابت شهد العرضة الاخيرة التي بين فيها ما نسخ و ما بقي و كتبها لرسول الله صلى الله عليه و سلم و قرأها عليه و كان يقرئ الناس بها حتى مات

عليها تدور جوامع كلام العرب الحادي و الثلاثون انها في اسماء الرب مثل الغفور الرحيم السميع البصير العليم الحكيم الثاني و الثلاثون هي آية في صفات الذات و آية تفسيرها في آية اخرى و آية بيانها في السنة الصحيحة و آية في قصة الانبياء و الرسل و آية في خلق الاشياء و آية في وصف الجنة و آية في وصف النار الثالث و الثلثون آية في وصف الصانع وآية في اثبات الوحدانية له وآية في اثبات صفاته وآية في اثبات رسله و آية في اثبات كتبه و آية في اثبات الاسلام و آية في نفي الكفر الرابع و الثلاثون سبع جهات من صفات الذات لله التي لا يقع عليها التكئيف الخامس و الثلثون الايمان بالله و مباينة الشرك و اثبات الاوامر ومجانبة الزواجر و الثبات على الايمان وتحريم ما حرم الله و طاعة رسوله قال ابن حبان فهذه خمسة و ثلاثون قولا لاهل العلم و اللغة في معنى انزل القرآن على سبعة احرف و هي اقاويل يشبه بعضها بعضا و كلها محتمله و تحتمل غيرها وقال المرسي هذه الوجوه اكثرها متداخلة ولا ادري مستندها ولا عمن نقلت ولا ادري لم خص كل واحد منهم هذه الاحرف السبعة بما ذكر مع ان كلها موجود في القرآن فلا ادري معنى التخصيص وفيها اشياء لا افهم معناها على الحقيقة و اكثرها يعارضه حديث عمر مع هشام بن حكيم الذي في الصحيح فانهما لم يختلفا في تفسيره ولا احكامه انما اختلفا في قراأة حروفه و قد ظن كثير من العوام ان المراد بها القراآت السبعة و هو جهل قبيح تنبيه اختلف هل المصاحف العثمانية مشتملة على جميع الاحرف السبعة فذهب جماعات من الفقهاء و القراء و المتكلمين الى ذلك وبنوا عليه انه لا يجوز على الامة ان تهمل نقل شيء منها و قد

و اخبار و اباحات السابع عشر امر فرض و نهي حتم و امر ندب و نهي مرشد و وعد و وعيد و قصص الثامن عشر سبع جهات لا يتعداها الكلام لفظ خاص اريد به الخاص و لفظ عام اريد به العام و لفظ عام اريد به الخاص و لفظ خاص اريد به العام و لفظ يستغني تنزيله عن تأويله و لفظ لا يعلم فقهه الا العلماء و لفظ لا يعلم معناه الا الراسخون التاسع عشر اظهار الربوبية و اثبات الوحدانية و تعظيم الالوهية والتعبد لله و مجانبة الاشراك و الترغيب في الثواب و الترهيب من العقاب العشرون سبع لغات منها خمس من هوازن و اثنتان لسائر العرب الحادي و العشرون سبع لغات متفرقة لجميع العرب كل حرف منها لقبيلة مشهورة و الثاني و العشرون سبع لغات اربع لعجز هوازن سعد بن بكر و جشم بن بكر و نصر بن معاوية و ثلاث لقريش الثالث و العشرون سبع لغات لغة لقريش و لغة لليمن و لغة لجرهم و لغة لهوازن و لغة لقضاعة و لغة لتميم و لغة لطي الرابع و العشرون لغة الكعبيين كعب ابن عمرو و كعب بن لوي و لهما سبع لغات الخامس و العشرون اللغات المختلفة لاحياء العرب في معنى واحد مثل هلم و هات وتعال واقبل السادس والعشرون سبع قرآت لسبعة من الصحابة ابي بكر و عمر و عثمان و علي و ابن مسعود و ابن عباس و ابي ابن كعب السابع و العشرون همز و امالة و فتح و كسر و تفخيم و مد و قصر الثامن و العشرون تصريف و مصادر و عروض و غريب و سجع و لغات مختلفة كلها في شيء واحد التاسع و العشرون كلمة واحدة تعرب بسبعة اوجه حتى يكون المعنى واحدا و ان اختلف اللفظ فيها الثلاثون امهات الهجاء الالف والياء والجيم و الدال و الراء و السين و العين لان

علم الانشاء و الايجاد و علم التوحيد و التنزيه و علم صفات الذات و علم صفات الفعل وعلم العفو والعذاب و علم الحشر و الحساب وعلم النبوات و قال ابن حجر ذكر القرطبي عن ابن حبان انه بلغ الاختلاف في معنى الاحرف السبعة الى خمسة وثلاثين قولا و لم يذكر القرطبي منها سوى خمسة و لم اقف على كلام ابن حبان في هذا بعد تتبعي مظانه قلت قد حكاه ابن النقيب في مقدمة تفسيره عنه بواسطة الشرف المرسي فقال قال ابن حبان اختلف اهل العلم في معنى الاحرف السبعة على خمسة و ثلاثين قولا فمنهم من قال هي زاجر و آمر و حلال و حرام و محكم و متشابه و امثال الثاني حلال و حرام و امر و نهي و زجر و خبر ما هو كائن بعد و امثال الثالث وعد و وعيد و حلال و حرام و مواعظ و امثال و احتجاج الرابع امر و نهي و بشارة و نذارة و اخبار و امثال الخامس محكم و متشابه و ناسخ و منسوخ و خصوص و عموم و قصص السادس امر و زجر و ترغيب و ترهيب و جدل و قصص ومثل السابع امر و نهي و جد و علم و سر و ظهر و بطن الثامن ناسخ و منسوخ و وعد و وعيد و رغم و تأديب و انذار التاسع حلال و حرام و افتتاح و اخبار و فضائل و عقوبات العاشر اوامر و زواجر و امثال وانباء و عتب و وعظ و قصص الحادي عشر حلال و حرام و امثال و منصوص و قصص و اباحات الثاني عشر ظهر و بطن و فرض و ندب و خصوص و عموم و امثال الثالث عشر امر و نهي و وعد و وعيد و اباحة و ارشاد و اعتبار الرابع عشر مقدم و مؤخر و فرائض و حدود و مواعظ ومتشابه و امثال الخامس عشر مفسر ومجمل و مقضي و ندب و حتم و امثال السادس عشر امر حتم و امر ندب و نهي حتم و نهي ندب

صلى الله عليه وسلم اشار الى جواز القراأة بكل واحد من الحروف وابدال حرف بحرف وقد اجمع المسلمون على تحريم ابدال آية امثال بآية احكام و قال ابو علي الاهوازي و ابو العلا الهمداني قوله فى الحديث زاجر و آمر الخ استيناف كلام آخر اي هو زاجر اي القرآن ولم يرد به تفسير الاحرف السبعة و انما توهم ذلك من جهة الاتفاق فى العدد و يؤيده ان في بعض طرقه زاجرا و آمرا بالنصب اي نزل على هذه الصفة فى الابواب السبعة و قال ابو شامة يحتمل ان يكون التفسير المذكور للابواب لا للاحرف اي هي سبعة ابواب من ابواب الكلام و اقسامه اي انزله الله على هذه الاصناف لم يقتصر منها على صنف واحد كغيره من الكتب و قيل المراد بها المطلق و المقيد و العام والخاص و النص و المأول والناسخ و المنسوخ و المجمل و المفسرو الاستثناء و اقسامه حكاه شيذ له عن الفقهاء و هذا هو القول الثاني عشر و قيل المراد بها الحذف و الصلة و التقديم و التأخير و الاستعارة و التكرار و الكناية و الحقيقة و المجاز و المجمل و المفسر و الظاهر و الغريب حكاه عن اهل اللغة و هذا هو الثالث عشر و قيل المراد بها التذكيروالتانيث والشرط و الجزاء و التصريف و الاعراب و الاقسام و جوابها و الجمع والافراد و التصغير و التعظيم و اختلاف الادوات حكاه عن النحاة وهذا هو الرابع عشر و قيل المراد بها سبعة انواع من المعاملات الزهد و القناعة مع اليقين والجزم و الخدمة مع الحياء و الكرم و الفتوة مع الفقر و المجاهدة و المراقبة مع الخوف و الرجاء و التضرع و الاستغفار مع الرضا و الشكر و الصبر مع المحاسبة و المحبة و الشوق مع المشاهدة حكاه عن الصوفية وهذا هو الخامس عشر القول السادس عشر ان المراد بها سبعة علوم

و نحن قلنا كان جبرئيل يأتي في كل عرضة بحرف الى ان تمت سبعة و بعد هذا كله رد هذا القول بان عمر بن الخطاب رض و هشام بن حكيم كلاهما قرشي من لغة واحدة و قبيلة واحدة و قد اختلفت قراأتهما و محال ان ينكر عليه عمر لغته فدل على ان المراد بالاحرف السبعة غير اللغات القول الحادي عشر ان المراد سبعة اصناف و الاحاديث السابقه ترده و القائلون به اختلفوا في تعيين السبعة فقيل امر و نهي و حلال و حرام و محكم و متشابه و امثال و احتجوا بما اخرجه الحاكم و البيهقي عن ابن مسعود رض عن النبي صلى الله عليه و سلم قال كان الكتاب الاول ينزل من باب واحد على حرف واحد و نزل القرآن من سبعة ابواب على سبعة احرف زاجر و آمر وحلال و حرام و محكم و متشا به و امثال الحديث و قد اجاب عنه قوم بانه ليس المراد بالاحرف السبعة التي تقدم ذكرها في الاحاديث الاخرى لان سياق تلك الاحاديث يأبى حملها على هذا بل هي ظاهرة في ان المراد ان الكلمة تقرأ على وجهين و ثلاثة الى سبعة تيسيرا و تهوينا و الشيء الواحد لا يكون حلالا حراما في آية واحدة قال البيهقي المراد بالسبعة الاحرف هذا الانواع التي نزل عليها و المراد بها في تلك الاحاديث اللغات التي يقرأ بها و قال غيره من اول الاحرف السبعة بهذا فهو فاسد لانه محال ان يكون الحرف منها حراما لا ما سواه او حلالا لا ما سواه و لانه لا يجوز ان يكون القرآن يقرأ على انه حلال كله او حرام كله او امثال كله و قال ابن عطية هذا القول ضعيف لان الاجماع على ان التوسعة لم تقع في تحريم حلال و لا تحليل حرام و لا في تغيير شيء من المعاني المذكورة و قال الماوردي هذا القول خطأ لانه

القرآن بلغة الكعبين كعب قريش و كعب خزاعة قيل و كيف ذاك قال لان الدار واحدة يعني ان خزاعة كانوا جيران قريش فسهلت عليهم لغتهم و قال ابو حاتم السجستاني نزل بلغة قريش و هذيل و تميم و الازد و ربيعة و هوازن و سعد بن بكر و استنكر ذلك ابن قتيبة و قال لم ينزل القرآن الا بلغة قريش و احتج بقوله تعالى وما ارسلنا من رسول الا بلسان قومه فعلى هذا تكون اللغات السبع في بطون قريش وبذلك جزم ابو علي الاهوازي و قال ابو عبيد ليس المراد ان كل كلمة تقرأ على سبع لغات بل اللغات السبع مفرقة فيه فبعضه بلغة قريش و بعضه بلغة هذيل و بعضه بلغة هوازن وبعضه بلغة اليمن وغيرهم و قال وبعض اللغات اسعد بها من بعض و اكثر نصيبا و قيل نزل بلغة مضر خاصة لقول عمر رض نزل القرآن بلغة مضر وعين بعضهم فيما حكاه ابن عبد البر السبع من مضر انهم هذيل و كنانة و قيس و ضبة و تيم الرباب و اسد ابن خزيمة و قريش فهذه قبائل مضر تستوعب سبع لغات و نقل ابو شامة عن بعض الشيوخ انه قال انزل القرآن اولا بلسان قريش و من جاورهم من العرب الفصحاء ثم ابيح للعرب ان يقرؤه بلغاتهم التي جرت عادتهم باستعمالها على اختلافهم فى الالفاظ و الاعراب و لم يكلف احد منهم الانتقال عن لغته الى لغة اخرى للمشقة و لما كان فيهم من الحمية ولطلب تسهيل فهم المراد و زاد غيره ان الاباحة المذكورة لم تقع بالتشهي بان يغير كل احد الكلمة بمرادفها في لغته بل المرعي في ذلك السماع من النبي صلى الله عليه و سلم واستشكل بعضهم هذا بانه يلزم عليه ان جبرئيل كان يلفظ باللفظ الواحد سبع مرات و اجيب بانه انما يلزم هذا لو اجتمعت الاحرف السبعة في لفظ واحد

عليما حكيما غفورا رحيما و عنده ايضا من حديث عمر ان القول كله صواب ما لم يجعل مغفرة عذابا او عذابا مغفرة اسانيدها جياد قال ابن عبد البر انما اراد بهذا ضرب المثل للحروف التي نزل القرآن عليها انها معان متفق مفهومها مختلف مسموعها لا يكون في شيء منها معنى وضده و لا وجه يخالف معنى وجه خلافا ينفيه و يضاده كالرحمة التي هي خلاف العذاب و ضده ثم اسند عن ابي بن كعب انه كان يقرأ كلما اضاء لهم مشوا فيه مروا فيه سعوا فيه وكان ابن مسعود رض يقرأ للذين امنوا انظرونا امهلونا اخرونا قال الطحاوي و انما كان ذلك رخصة لما كان يتعسر على كثير منهم التلاوة بلفظ واحد لعدم علمهم بالكتابة و الضبط و اتقان الحفظ ثم نسخ بزوال العذر و تيسر الكتابة و الحفظ وكذا قال ابن عبد البر والباقلاني و آخرون و في فضائل ابي عبيد من طريق عون بن عبد الله ان ابن مسعود رض اقرأ رجلا ان شجرة الزقوم طعام الاثيم فقال الرجل طعام اليتيم فردها عليه فلم يستقم بها لسانه فقال اتستطيع ان تقول طعام الفاجر قال نعم قال فافعل القول العاشر ان المراد سبع لغات و الى هذا ذهب ابو عبيد و ثعلب والازهري و آخرون و اختاره ابن عطية و صححه البيهقي في الشعب و تعقب بان لغات العرب اكثر من سبعة و اجيب بان المراد افصحها فجاء عن ابي صالح عن ابن عباس قال نزل القرآن على سبع لغات منها خمس بلغة العجز من هوازن قال و العجز سعد بن بكر و جشم بن بكر و نصر بن معاوية و ثقيف و هؤلاء كلهم من هوازن و يقال لهم عليا هوازن و لهذا قال ابو عمر و ابن العلا افصح العرب عليا هوازن و سفلى تميم يعني بني دارم و اخرج ابو عبيد من وجه آخر عن ابن عباس قال نزل

و ذلك اما في الحركات بلاتغير في المعنى و الصورة نحو البخل باربعة ويحسب بوجهين او يتغير في المعنى فقط نحو فتلقى ادم من ربه كلمات و اما في الحروف بتغير المعنى لا الصورة نحو تبلوا وتتلوا وعكس ذلك نحو الصراط والسراط وبتغيرهما نحو فامضوا فاسعوا واما في التقديم والتأخير نحو فيقتلون و يقتلون او في الزيادة والنقصان نحو اوصى و وصى فهذه سبعة لايخرج الاختلاف عنها قال واما نحو اختلاف الاظهار و الادغام و الروم و الاشمام والتحقيق و التسهيل و النقل و الابدال فهذا ليس من الاختلاف الذي يتنوع فيه اللفظ او المعنى لان هذه الصفات المتنوعة في ادائه لاتخرجه عن ان يكون لفظا واحدا انتهى و هذا هو القول الثامن و من امثلة التقديم و التأخير قراأة الجمهور كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار وقرأ ابن مسعود على قلب كل متكبر التاسع ان المراد سبعة اوجه من المعاني المتفقة بالفاظ مختلفة نحو اقبل وتعال و هلم و عجل و اسرع و الى هذا ذهب سفيان بن عيينة و ابن جرير و ابن وهب و خلائق و نسبه ابن عبد البر الى اكثر العلماء و يدل له ما اخرجه احمد و الطبراني من حديث ابي بكرة ان جبرئيل قال يا محمد اقرأ القرآن على حرف قال ميكائيل استزده حتى بلغ سبعة احرف قال كل شاف كاف ما لم يختم آية عذاب برحمة او رحمة بعذاب نحو قولك تعال و اقبل و هلم واذهب و اسرع وعجل هذا لفظ رواية احمد و اسناده جيد و اخرج احمد والطبراني ايضا عن ابن مسعود رض نحوه و عند ابي داوُد عن ابي قلت سميعا عليما عزيزا حكيما ما لم تخلط آية عذاب برحمة او آية رحمة بعذاب و عند احمد من حديث ابي هريرة انزل القرآن على سبعة احرف

الخامس ان المراد بها الاوجه التي يقع بها التغاير ذكره ابن قتيبة قال فاولها ما يتغير حركته و لا يزول معناه و لا صورته مثل و لا يضار كاتب بالرفع و الفتح وثانيها ما يتغير بالفعل مثل بعّد وباعد بلفظ الطلب و الماضي وثالثها ما يتغير بالنقط مثل ننشزها وننشرها و رابعها ما يتغير بابدال حرف قريب المخرج مثل طلح منضود وطلع وخامسها ما يتغير بالتقديم والتأخير مثل و جاءت سكرة الموت بالحق و سكرة الحق بالموت و سادسها ما يتغير بزيادة او نقصان مثل و الذكر و الانثى و ما خلق الذكر و الانثى و سابعها ما يتغير بابدال الكلمة باخرى مثل كالعهن المنفوش و كالصوف المنفوش وتعقب هذا قاسم بن ثابت بان الرخصة وقعت و اكثرهم يومئذ لا يكتب ولايعرف الرسم و انما كانوا يعرفون الحروف و مخارجها و اجيب بانه لايلزم من ذلك توهين ما قاله ابن قتيبة لاحتمال ان يكون الانحصار المذكور في ذلك وقع اتفاقا و انما اطلع عليه بالاستقراء و قال ابوالفضل الرازي في اللوائح الكلام لا يخرج عن سبعة اوجه فى الاختلاف الاول اختلاف الاسماء من افراد وتثنية و جمع و تذكير و تانيث الثاني اختلاف تصريف الافعال من ماض و مضارع و امر الثالث وجوه الاعراب الرابع النقص و الزيادة الخامس التقديم والتأخير السادس الابدال السابع اختلاف اللغات كالفتح و الامالة و الترقيق و التفخيم و الادغام و الاظهار ونحو ذلك و هذا هو القول السادس و قال بعضهم المراد بها كيفية النطق بالتلاوة من ادغام و اظهار وتفخيم وترقيق و امالة و اشباع ومد و قصر وتشديد و تخفيف و تليين و تحقيق و هذا هوالقول السابع و قال ابن الجزري قد تتبعت صحيح القرآت و شاذها وضعيفها و منكرها فاذاهي يرجع اختلافها الى سبعة اوجه لايخرج عنها

اليه فاقول اختلف في معنى هذا الحديث على نحو اربعين قولا
احدها انه من المشكل الذي لايدرى منعاه لان الحرف يصدق لغة
على حرف الهجاء و على الكلمة و على المعنى و على الجهة قاله ابن
سعد ان النحوي الثاني انه ليس المراد بالسبعة حقيقة العدد بل
المراد به التيسير و التسهيل و السعة و لفظ السبعة يطلق على ارادة
الكثرة فى الآحاد كما يطلق السبعون في العشرات و السبعمأية فى
المئين ولايراد العدد المعين و الى هذا جنح عياض و من تبعه و يرده
ما في حديث ابن عباس رض فى الصحيحين ان رسول الله صلى
الله عليه وسلم قال اقرأني جبريل عليه السلام على حرف فراجعته
فلم ازل استزيده و يزيدني حتى انتهى الى سبعة احرف وفي حديث
ابي عند مسلم ان ربي ارسل الي ان اقرأ القرآن على حرف فرددت
اليه ان هوّن على امتي فارسل الي ان اقرأ على حرفين فرددت اليه
ان هوّن على امتي فارسل اليّ ان اقرأه على سبعة احرف و في
لفظ عنه عند النسائي ان جبرئيل و مكائيل اتياني فقعد جبرئيل عن
يميني و ميكائيل عن يساري فقال جبرئيل اقرأ القرآن على حرف
فقال ميكائيل استزده حتى بلغ سبعة احرف و في حديث ابي بكرة
عنه فنظرت الى ميكائيل فسكت فعلمت انه قد انتهت العدة فهذا
يدل على ارادة حقيقة العدد و انحصاره الثالث ان المراد بها سبع
قرا آت و تعقب بانه لا يوجد فى القرآن كلمة تقرأ على سبعة اوجه الا
القليل مثل عبد الطاغوت و لا تقل لهما اف و اجيب بان المراد ان
كل كلمة تقرأ بوجه او وجهين او ثلاثة او اكثر الى سبعة و يشكل على
هذا ان فى الكلمات ما قرئ على اكثر و هذا يصلح ان يكون قولا رابعا

لانه كان امين الله الى رسله فائدة ثانية اخرج الحاكم و البيهقي عن زيد بن ثابت ان النبي صلى الله عليه وسلم قال انزل القرآن بالتفخيم كهيئة عذرا او نذرا و الصدفين و الاله الخلق و الامر و اشباه هذا قلت اخرجه ابن الانباري في كتاب الوقف و الابتداء فبين ان المرفوع منه انزل القرآن بالتفخيم فقط و ان الباقي مدرج من كلام عمار بن عبدالملك احد رواة الحديث فائدة اخرى اخرج ابن ابي حاتم عن سفيان الثوري قال لم ينزل وحي الا بالعربية ثم ترجم كل نبي لقومه فائدة اخرى اخرج ابن سعد عن عائشة رض قالت كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا نزل عليه الوحي يغط في راسه و يستربد وجهه و يجد بردا في ثناياه و يعرق حتى ينحدر منه مثل الجمان المسئلة الثالثة فى الاحرف السبعة التي نزل القرآن عليها قلت ورد حديث نزل القرآن على سبعة احرف من رواية جمع من الصحابة ابي بن كعب وانس و حذيفة بن اليمان و زيد بن ارقم و سمرة بن جندب و سليمان بن صرد و ابن عباس و ابن مسعود و عبدالرحمن بن عوف و عثمان بن عفان و عمربن الخطاب و بن ابي سلمة و عمرو بن العاص و معاذ بن جبل و هشام بن حكيم و ابي بكرة و ابي جهم و ابي سعيد الخدري و ابي طلحة الانصاري و ابي هريرة و ام ايوب رضوان الله عليهم اجمعين فهولاء احد وعشرون صحابيا و قد نص ابوعبيد على تواتره و اخرج ابو يعلى في مسنده ان عثمان رض قال على المنبر اذكر الله رجلا سمع النبي صلى الله عليه وسلم قال ان القرآن انزل على سبعة احرف كلها شاف كاف لما قام فقاموا حتى لم يحصوا فشهدوا بذلك فقال و انا اشهد معهم و ساهوق من رواياتهم ما يحتاج

نعم يمكن ان يعد منه آخر سورة البقرة لما تقدم و بعض سورة الضحى والم نشرح فقد اخرج ابن ابي حاتم من حديث عدي بن ثابت قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم سألت ربي مسئلة وددت اني لم اكن سألته قلت اي رب اتخذت ابراهيم خليلا وكلمت موسى تكليما فقال يا محمد الم اجدك يتيما فآويت وضالا فهديت وعائلا فاغنيت وشرحت لك صدرك وحططت عنك وزرك ورفعت لك ذكرك فلا اذكر الا ذكرت معي فائدة اخرج الامام احمد في تاريخه من طريق داؤد بن ابي هند عن الشعبي قال انزل على النبي صلى الله عليه وسلم النبوة وهو ابن اربعين سنة فقرن بنبوته اسرافيل ثلاث سنين فكان يعلمه الكلمة والشئ ولم ينزل عليه القرآن على لسانه فاما مضت ثلاث سنين قرن بنبوته جبريل فنزل عليه القرآن على لسانه عشرين سنة قال ابن عسكر والحكمة في توكيل اسرافيل به انه الموكل بالصور الذي فيه هلاك الخلق وقيام الساعة ونبوته صلى الله عليه وسلم موذنة بقرب الساعة وانقطاع الوحي كما وكل بذي القرنين ريانيل الذي يطوى الارض وبخالد بن سنان مالك خازن النار واخرج ابن ابي حاتم عن ابن سابط قال في ام الكتاب كل شئ هو كائن الى يوم القيمة فوكل ثلاثة بحفظه من الملائكة فوكل جبريل بالكتب والوحي الى الانبياء وبالنصر عند الحروب وبالهلكات اذا اراد الله ان يهلك قوما ووكل ميكائيل بالقطر والنبات ووكل ملك الموت بقبض الانفس فاذا كان يوم القيمة عارضوا بين حفظهم وبين ما كان في ام الكتاب فيجدونه سواء واخرج ايضا عن عطا بن السائب قال اول من يحاسب جبريل

الى نبي من انبيائه فيثبته من قلبه فيتكلم به ويكتبه وهوكلام الله ومنه ما لايتكلم به ولايكتبه لاحد ولايأمر بكتابته ولكنه يحدث به الناس حديثا ويبين لهم ان الله امره ان يبينه للناس ويبلغهم اياه فصل وقد ذكر العلماء رح للوحي كيفيات احدها ان يأتيه الملك في مثل صلصلة الجرس كما فى الصحيح وفي مسند احمد عن عبد الله بن عمر سألت النبي صلى الله عليه وسلم هل تحس بالوحي فقال اسمع صلاصل ثم اسكت عند ذلك فما من مرة يوحى اليّ الا ظننت ان نفسي تقبض قال الخطابي والمراد انه صوت متدارك يسمعه ولايتبينه اول ما يسمعه حتى يفهمه بعد وقيل هو صوت خفق اجنحة الملك والحكمة في تقدمه ان يقرع سمعه الوحي فلا يبقي فيه مكانا لغيره وفى الصحيح ان هذه الحالة اشد حالات الوحي عليه وقيل انه انما كان ينزل هكذا اذا نزلت آية وعيد او تهديد الثانية ان ينفث في روعه الكلام نفثا كما قال صلى الله عليه وسلم ان روح القدس نفث في روعي اخرجه الحاكم وهذا قد يرجع الى الحالة الاولى او التي بعدها بان يأتيه في احدى الكيفيتين وينفث في روعه الثالثة ان يأتيه في صورة الرجل فيكلمه كما فى الصحيح واحيانا يتمثل لي الملك رجلا فيكلمني فاعي ما يقول زاد ابو عوانه في صحيحه وهو اهونه عليّ الرابعة ان يأتيه الملك فى النوم وعد من هذا قوم سورة الكوثر وقد تقدم ما فيه الخامسة ان يكلمه الله اما فى اليقظة كما في ليلة الاسراء او فى النوم كما في حديث معاذ اتاني ربي فقال فيم يختصم الملأ الاعلى الحديث وليس فى القرآن من هذا النوع شئ فيما اعلم

كلام الله المنزل قسمان قسم قال الله تعالى لجبريل قل للنبي الذي انت مرسل اليه ان الله يقول افعل كذا وكذا وامر بكذا وكذا ففهم جبريل ما قاله ربه ثم نزل على ذلك النبي وقال له ما قال ربه ولم تكن العبارة تلك العبارة كما يقول الملك لمن يثق به قل لفلان يقول لك الملك اجتهد في الخدمة واجمع جندك للقتال فان قال الرسول يقول الملك لاتتهاون في خدمتي ولاتترك الجند تتفرق وحثهم على المقاتلة لا ينسب الى كذب ولا تقصير في اداء الرسالة وقسم آخر قال الله تعالى لجبريل اقرأ على النبي هذا الكتاب فنزل جبريل بكلمة الله من غير تغيير كما يكتب الملك كتابا ويسلمه الى امين ويقول اقرأه على فلان فهو لا يغير منه كلمة ولا حرفا انتهى قلت القرآن هو القسم الثاني والقسم الاول هو السنة كما ورد ان جبريل كان ينزل بالسنة كما ينزل بالقرآن ومن هنا جاز رواية السنة بالمعنى لان جبريل اداه بالمعنى ولم تجز القرأة بالمعنى لان جبريل ادّاه باللفظ ولم يبح له ايحاؤه بالمعنى والسر في ذلك ان المقصود منه التعبد بلفظه والاعجاز به فلايقدر احد ان يأتي بلفظ يقوم مقامه وان تحت كل حرف منه معاني لا يحاط بها كثرة فلايقدر احد ان يأتي بدله بما يشتمل عليه والتخفيف على الامة حيث جعل المنزل اليهم على قسمين قسم يروونه بلفظه الموحى به وقسم يروونه بالمعنى ولوجعل كله مما يروى باللفظ لشق اوبالمعنى لم يؤمن التبديل والتحريف فتأمل وقد رأيت عن السلف ما يعضد كلام الجويني واخرج ابن ابي حاتم من طريق عقيل عن الزهري انه سئل عن الوحي فقال الوحي مايوحي الله

بالعربية ثم انه نزل به كذلك بعد ذلك وقال البيهقي في معنى قوله تعالى انا انزلناه في ليلة القدر يريد و الله اعلم انا اسمعنا الملك و افهمناه اياه و انزلناه بما سمع فيكون الملك منتقلا به من علو الى سفل قال ابوشامة هذا المعنى مطرد في جميع الفاظ الانزال المضافة الى القرآن او الى شئ منه يحتاج اليه اهل السنة المعتقدون قدم القرآن و انه صفة قائمة بذات الله تعالى قلت ويؤيد ان جبريل تلقفه سماعا من الله تعالى ما اخرجه الطبراني من حديث النواس بن سمعان مرفوعا اذا تكلم الله بالوحي اخذت السماء رجفة شديدة من خوف الله تعالى فاذا سمع بذلك اهل السماء صعقوا و خروا سجدا فيكون اولهم برفع رأسه جبريل فيكلمه الله تعالى من وحيه بما اراد فينتهي به على الملائكة كلما مر بسماء سأله اهلها ما ذا قال ربنا قال الحق فينتهي به حيث امر واخرج ابن مردويه من حديث ابن مسعود رفعه اذا تكلم الله بالوحي يسمع اهل السموات صلصلة كصلصلة السلسلة على الصفوان فيفزعون و يرون انه من امر الساعة و اصل الحديث في الصحيح و في تفسير علي بن سهل النيسابوري قال جماعة من العلماء نزل القرآن جملة في ليلة القدر من اللوح المحفوظ الى بيت يقال له بيت العزة فحفظه جبريل وغشي على اهل السموات من هيبة كلام الله فمر بهم جبريل و قد افاقوا فقالوا ما ذا قال ربكم قالوا الحق يعني القرآن و هو معنى قوله حتى اذا فزع عن قلوبهم فاتى به جبريل الى بيت العزة فاملاه على السفرة الكتبة يعني الملائكة و هو معنى قوله بايدي سفرة كرام بررة وقال الجويني

لعل نزول القرآن على الرسول صلى الله عليه و سلم ان يتلقفه الملك من الله تلقفا روحانيا او يحفظه من اللوح المحفوظ فينزل به الى الرسول و يلقيه عليه و قال القطب الرازي في حواشي الكشاف الانزال لغة بمعنى الايواء و بمعني تحريك الشيء من علو الى سفل وكلاهما لايتحققان فى الكلام فهو مستعمل فيه في معنى مجازي فمن قال القرآن معنى قائم بذات الله تعالى فانزاله ان يوجد الكلمات و الحروف الدالة على ذلك المعنى و يثبتها فى اللوح المحفوظ و من قال القرآن هوالالفاظ فانزاله مجرد اثباته فى اللوح المحفوظ و هذا المعنى مناسب لكونه منقولا عن اول المعنيين اللغويين و يمكن ان يكون المراد بانزاله اثباته فى السماء الدنيا بعد الاثبات فى اللوح المحفوظ و هذا مناسب للمعنى الثاني و المراد بانزال الكتب على الرسل ان يتلقفها الملك من الله تلقفا روحانيا او يحفظها من اللوح المحفوظ و ينزل بها فيلقيها عليهم انتهى و قال غيره فى المنزل على النبي صلى الله عليه وسلم ثلاثة اقوال احدها انه اللفظ والمعنى و ان جبريل عليه السلام حفظ القرآن من اللوح المحفوظ و نزل به و ذكر بعضهم ان احرف القرآن فى اللوح المحفوظ كل حرف منها بقدر جبل قاف و ان تحت كل حرف منها معان لايحيط بها الا الله تعالى و الثاني ان جبريل عليه السلام انما نزل بالمعاني خاصة و انه صلى الله عليه و سلم علم تلك المعاني و عبر عنها بلغة العرب و تمسك قائل هذا بظاهر قوله تعالى نزل به الروح الامين على قلبك و الثالث ان جبريل عليه السلام القى عليه المعنى وانه عبر بهذه الالفاظ بلغة العرب و ان اهل السماء يقرؤنه

و الآيتين و الثلاث و الاربع و اكثر من ذلك و اما ما اخرجه البيهقي في الشعب من طريق ابي خلدة عن عمر رض قال تعلموا القرآن خمس آيات خمس آيات فان جبريل كان ينزل بالقرآن على النبي صلى الله عليه و سلم خمسا خمسا و من طريق ضعيف عن علي قال انزل القرآن خمسا خمسا الا سورة الانعام ومن حفظ خمسا خمسا لم ينسه و ما اخرجه ابن عساكر من طريق ابي نضرة قال كان ابو سعيد الخدري رض يعلمنا القرآن خمس آيات بالغداة و خمس آيات بالعشي و يخبران جبريل نزل بالقرآن خمس آيات خمس آيات فالجواب ان معناه ان صح القاءه الى النبي صلى الله عليه و سلم هذا القدر حتى يحفظه ثم يلقي اليه الباقي لانزاله بهذا القدر خاصة و يوضح ذلك ما اخرجه البيهقي ايضا عن خالد ابن دينار قال قال لنا ابو العالية تعلموا القرآن خمس آيات خمس آيات فان النبي صلى الله عليه و سلم كان يأخذه من جبريل خمسا خمسا المسئلة الثانية في كيفية الانزال و الوحي قال الاصفهاني في اوائل تفسيره اتفق اهل السنة و الجماعة على ان كلام الله منزل و اختلفوا في معنى الانزال فمنهم من قال اظهار القراءة و منهم من قال ان الله تعالى الهم كلامه جبريل و هو في السماء و هو عال عن المكان و علمه قراءته ثم جبريل اداه الى الارض و هو يهبط في المكان و في التنزيل طريقان احدهما ان النبي صلى الله عليه و سلم انخلع من الصورة البشرية الى الصورة الملكية و اخذه من جبريل و الثاني ان الملك انخلع الى البشرية حتى يأخذه الرسول منه و الاول اصعب الحالين انتهى و قال الطيبي

من الوظائف فثقلت عليهم وابوا ان يقروا بها حتى نتق الله عليهم الجبل كأنه ظلة ودنا منهم حتى خافوا ان يقع عليهم فاقروا بها واخرج ابن ابي حاتم عن ثابت ابن الحجاج قال جاء تهم التوراة جملة واحدة فكبر عليهم فابوا ان يأخذوه حتى ظلل الله عليهم الجبل فاخذوه عند ذلك فهذه آثار صحيحة صريحة في انزال التوراة جملة ويؤخذ من الاثر الاخير منها حكمة اخرى لانزال القرآن مفرقا فانه ادعى الى قبوله اذا انزل على التدريج بخلاف ما لو نزل جملة واحدة فانه كان ينفر من قبوله كثير من الناس لكثرة ما فيه من الفرائض والمناهي ويوضح ذلك ما اخرجه البخاري عن عائشه رض قالت انما نزل اول ما نزل منه سورة من المفصل فيها ذكر الجنة والنار حتى اذا تاب الناس الى الاسلام نزل الحلال والحرام ولو نزل اول شيء لاتشربوا الخمر لقالوا لاندع الخمر ابدا ولو نزل لاتزنوا لقالو الاندع الزنا ابدا ثم رأيت هذه الحكمة مصرحا بها فى الناسخ والمنسوخ لمكي فرع الذي استقرئ من الاحاديث الصحيحة وغيرها ان القرآن كان ينزل بحسب الحاجة خمس آيات وعشرا واكثر واقل وقد صح نزول العشر الآيات في قصة افك جملة وصح نزول عشرآيات من اول المؤمنين جملة وصح نزول غير اولى الضرر وحدها وهي بعض آية وكذا قوله وان خفتم عيلة الى آخر الآية نزل بعد نزول اول الآية كما حررناه في اسباب النزول وذلك بعض آية واخرج ابن اشته في كتاب المصاحف عن عكرمة في قوله بمواقع النجوم قال انزل الله القرآن نجوما ثلاث آيات واربع آيات وخمس آيات وقال النكزاوي في كتاب الوقف كان القرآن ينزل مفرقا الآية

لكان يكفي فى الرد عليهم ان يقول ان ذلك سنة الله فى الكتب التي انزلها على الرسل السابقة كما اجاب بمثل ذلك قولهم و قالوا مالهذا الرسول يأ كل الطعام و يمشي فى الاسواق فقال وما ارسلنا قبلك من المرسلين الا انهم ليأ كلون الطعام و يمشون فى الاسواق وقولهم اجعل الله بشرا رسولا فقال و ما ارسلنا قبلك الا رجالا يوحى اليهم وقولهم كيف يكون رسولا و لاهم له الا النساء فقال و لقد ارسلنا رسلا من قبلك و جعلنا لهم ازواجا و ذرية الى غير ذلك و من الادلة على ذلك ايضا قوله تعالى في انزال التوراة على موسى عليه السلام يوم الصعقة فخذ ما آتيتك و كتبنا له فى الالواح من كل شئ موعظة و تفصيلا لكل شئ فخذها بقوة والقى الالواح ولما سكت عن موسى الغضب اخذ الالواح و في نسختها هدى و رحمة واذ نتقنا الجبل فوقهم كأنه ظلة وظنوا انه واقع بهم خذوا ما آتيناكم بقوة فهذه الآيات كلها دالة على ايتائه التوراة جملة و اخرج ابن ابي حاتم من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال اعطي موسى التوراة في سبعة الواح من زبرجد فيها تبيان لكل شيء و موعظة فلما جاء بها فرأى بني اسرائيل عكوفا على عبادة العجل رمى بالتوراة من يده فتحطمت فرفع الله منها ستة اسباع و بقى سبعا و اخرج من طريق جعفر ابن محمد عن ابيه عن جده رفعه قال الالواح التي انزلت على موسى كانت من سدر الجنة كان طول اللوح اثنى عشر ذراعا و اخرج النسائى و غيره عن ابن عباس رض في حديث الفتون قال اخذ موسى الالواح بعد ماسكت عنه الغضب فامرهم بالذى امر الله ان يبلغهم

وقيل معنى لنثبت به فوادك اي لنحفظه فانه عليه السلام كان اميا لايقرأ ولايكتب ففرق عليه ليثبت عنده حفظه بخلاف غيره من الانبياء فانه كان كاتبا قارئا فيمكنه حفظ الجميع قال ابن فورك قيل انزلت التوراة جملة لانها نزلت على نبي يقرأ ويكتب وهو موسى عليه السلام وانزل الله القرآن مفرقا لانه انزل غير مكتوب على نبي امي وقال غيره انما لم ينزل جملة واحدة لان منه الناسخ والمنسوخ ولايتاتى ذلك الا فيما انزل مفرقا ومنه ماهو جواب لسؤال ومنه ما هو انكار على قول قيل او فعل فُعِل وقد تقدم ذلك في قول ابن عباس رض ونزّله جبريل عليه السلام بجواب كلام العباد واعمالهم وفسربه قوله ولايأتونك بمثل الاجئناك بالحق اخرجه عنه ابن ابي حاتم فالحاصل ان الآية تضمنت حكمتين لانزاله مفرقا تذنيب ما تقدم في كلام هولاء من ان سائر الكتب انزلت جملة هو مشهور في كلام العلماء وعلى السنتهم حتى كاد ان يكون اجماعا وقد رأيت بعض فضلاء العصر انكر ذلك وقال انه لا دليل عليه بل الصواب انها نزلت مفرقة كالقرآن واقول الصواب الاول ومن الادلة على ذلك آية الفرقان السابقة اخرج ابن ابي حاتم من طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال قالت اليهود يا ابا القاسم لولا انزل هٰذا القرآن جملة واحدة كما انزلت التوراة على موسى عليه السلام فنزلت واخرجه من وجه آخر عنه بلفظ قال المشركون واخرج نحوه عن قتادة والسدي فان قلت ليس في القرآن التصريح بذلك وانما هو على تقدير ثبوته قول الكفار قلت سكوته تعالى عن الرد عليهم في ذلك وعدوله الى بيان حكمته دليل على صحته ولوكانت الكتب كلها نزلت مفرقة

اراد تعالى ان يسلم هٰذه الرحمة التي كانت حظ هٰذه الامة من الله الى الامة وقال السخاوي في جمال القراء في نزوله الى السماء جملة تكريم بني آدم وتعظيم شانهم عند الملائكة وتعريفهم عناية الله بهم ورحمته لهم ولهذا المعنى امر سبعين الفا من الملائكة ان تشيع سورة الانعام وزاد سبحانه وتعالى في هٰذا المعني بان امر جبريل باملائه على السفرة الكرام وانساخهم اياه وتلاوتهم له قال وفيه ايضا التسوية بين نبينا صلى الله عليه وسلم وبين موسى عليه السلام في انزال كتابه جملة والتفضيل لمحمد في انزاله عليه منجما ليحفظه قال ابوشامة فان قلت فقوله تعالى انا انزلناه في ليلة القدر من جملة القرآن الذي نزل جملة ام لا فان لم يكن منه فما نزل جملة وان كان منه فما وجه صحة هٰذه العبارة قلت له وجهان احدهما ان يكون معنى الكلام انا حكمنا بانزاله في ليلة القدر وقضينا به وقدرناه في الازل والثاني ان لفظه لفظ الماضي ومعناه الاستقبال اي ننزله جملة في ليلة القدر انتهى الثالث قال ابوشامة ايضا فان قيل ما السر في نزوله منجما وهلا نزل كسائر الكتب جملة قلنا هٰذا سؤال قد تولى الله جوابه فقال الله تعالى وقال الذين كفروا لولا نزل عليه القرآن جملة واحدة يعنون كما انزل على من قبله من الرسل فاجابهم تعالى بقوله كذلك اي انزلناه كذلك مفرقا لنثبت به فوادك اي لنقوي به قلبك فان الوحي اذا كان يتجدد في كل حادثة كان اقوى للقلب واشد عناية بالمرسل اليه ويستلزم ذلك كثرة نزول الملك اليه وتجديد العهد به وبما معه من الرسالة الواردة من ذلك الجناب العزيز فيحدث له من السرور ما تقصر عنه العبارة ولهذا كان اجود ما يكون في رمضان لكثرة لقائه جبريل عليه السلام

قلت وممن قال بقول مقاتل الحليمي و الماوردي ويوافقه قول ابن شهاب آخر القرآن عهدا بالعرش آية الدين القول الثالث انه ابتدي انزاله في ليلة القدر ثم نزل بعد ذلك منجما في اوقات مختلفة من سائر الاوقات وبه قال الشعبي قال ابن حجر في شرح البخاري والاول هو الصحيح المعتمد قال و حكى الماوردي قولا رابعا انه نزل من اللوح المحفوظ جملة واحدة وان الحفظة نجمته على جبريل في عشرين ليلة وان جبريل نجمه على النبي صلى الله عليه وسلم في عشرين سنة وهذا ايضا غريب و المعتمد ان جبريل كان يعارضه في رمضان بما ينزل به عليه في طول السنة و قال ابوشامة كأن صاحب هذا القول اراد الجمع بين القولين قلت هذا الذي حكاه الماوردي اخرجه ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس رض قال نزل القرآن جملة واحدة من عند الله من اللوح المحفوظ الى السفرة الكرام الكاتبين فى السماء الدنيا فنجمته السفرة على جبريل عشرين ليلة و نجمه جبريل على النبي صلى الله عليه و سلم عشرين سنة تنبيهات الاول قيل السر في انزاله جملة الى السماء تفخيم امره و امر من نزل عليه و ذلك باعلام سكان السموات السبع ان هذا آخر الكتب المنزلة على خاتم الرسل لا شرف الامم قد قربناه اليهم لننزله عليهم ولولا ان الحكمة الالهية اقتضت وصوله اليهم منجما بحسب الوقائع لهبط به الى الارض جملة كسائر الكتب المنزلة قبله ولكن الله باين بينه وبينها فجعل له الامرين انزاله جملة ثم انزاله مفرقا تشريفا للمنزل عليه ذكر ذلك ابوشامة فى المرشد الوجيز الثاني قال ابوشامة ايضا الظاهر ان نزوله جملة الى السماء الدنيا قبل ظهور نبوته صلى الله

رأى برهان ربه قال رأى آية من كتاب الله نهته مثلت له في جدار الحايط النوع السادس عشر في كيفية انزاله فيه مسائل الاولى قال الله تعالى شهر رمضان الذي انزل فيه القرآن وقال انا انزلناه في ليلة القدر اختلف في كيفية انزاله من اللوح المحفوظ على ثلاثة اقوال احدها وهو الاصح الا شهر انه نزل الى سماء الدنيا ليلة القدر جملة واحدة ثم نزل بعد ذلك منجما في عشرين سنة او ثلاث و عشرين او خمس و عشرين على حسب الخلاف في مدة اقامته صلى الله عليه وسلم بمكة بعد البعثة اخرج الحاكم والبيهقي وغيرهما من طريق منصور عن سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال انزل القرآن في ليلة القدر جملة واحدة الى سماء الدنيا وكان بمواقع النجوم وكان الله ينزله على رسوله صلى الله عليه وسلم بعضه في اثر بعض واخرج الحاكم والبيهقي ايضا والنسائي من طريق داؤد بن ابي هند عن عكرمه عن ابن عباس رض قال انزل القرآن جملة واحدة الى السماء الدنيا ليلة القدر ثم انزل بعد ذلك بعشرين سنة ثم قرأ ولا يأتونك بمثل الاجئناك بالحق واحسن تفسيرا وقرآنا فرقناه لتقرآه على الناس على مكث ونزلناه تنزيلا واخرجه ابن ابي حاتم من هذا الوجه وفي آخره فكان المشركون اذا احدثوا شيئا احدث الله لهم جوابا واخرج الحاكم وابن ابي شيبه من طريق حسّان بن حريث عن سعيد بن جبير عن ابن عباس رض قال فصل القرآن من الذكر فوضع في بيت العزة من السماء الدنيا فجعل جبريل ينزل به على النبي صلى الله عليه وسلم اسانيدها كلها صحيحة واخرج الطبراني من وجه آخر عن ابن عباس قال انزل القرآن في ليلة القدر في شهر رمضان الى السماء الدنيا

الذي خلق السمٰوات و الارض و جعل الظلمات و النور و خاتمة التوراة خاتمة هود فاعبده و توكل عليه و ما ربک بغافل عما تعملون و اخرج من وجه آخر عنه قال اول ما انزل فی التوراة عشر آيات من سورة الانعام قل تعالوا اتل ما حرم ربكم عليكم الیٰ آخرها و اخرج ابو عبيد عنه قال اول ما انزل الله فی التوراة بسم الله الرحمٰن الرحيم قل تعالوا اتل آلايات قال بعضهم يعني ان هٰذه الآيات اشتملت على الآيات العشر التي كتبها الله لموسیٰ فی التوراة اول ماكتب وهي توحيد الله والنهي عن الشرک و اليمين الكاذبة و العقوق والقتل و الزنا والسرقة والزور و مد العين الیٰ ما في يد الغير و الامر بتعظيم السبت واخرج الدار قطني من حديث بريدة ان النبي صلیٰ الله عليه و سلم قال لاعلمنک آية لم تنزل علیٰ نبي بعد سليمان غيري بسم الله الرحمٰن الرحيم و روى البيهقي عن ابن عباس رض قال اغفل الناس آية من كتاب الله لم تنزل على احد سوى النبي صلیٰ الله عليه و سلم الا ان يكون سليمان بن داؤد بسم الله الرحمٰن الرحيم و اخرج الحاكم عن ابي ميسرة ان هذه الآية مكتوبة فی التوراة بسبعمائة آية يسبح لله ما فی السمٰوات و ما فی الارض الملك القدوس العزيز الحكيم اول سورة الجمعة فائدة يدخل في هٰذا النوع ما اخرجه ابن ابي حاتم عن محمد بن كعب القرظي قال البرهان الذي ارى يوسف عم ثلاث آيات من كتاب الله و ان عليكم لحافظين كراما كاتبين يعلمون ما تفعلون و قوله و ما تكون في شان و ما تتلوا منه من قرآن الآية وقوله افمن هو قائم علیٰ كل نفس بما كسبت زاد غيره آية اخرى و لاتقربوا الزنا واخرج ابن ابي حاتم ايضا عن ابن عباس رض في قوله لولا ان

الاول ما اخرجه الحاكم عن ابن عباس رض قال لما نزلت سبح اسم ربك الاعلى قال صلى الله عليه وسلم كلها في صحف ابراهيم وموسى فلما نزلت والنجم اذا هوى فبلغ وابراهيم الذي وفى قال وفى الا تزر وازرة وزر اخرى الى قوله هذا نذير من النذر الاولى وقال سعيد بن منصور حدثنا خالد بن عبد الله عن عطا بن السائب عن عكرمة عن ابن عباس رض قال هذه السورة في صحف ابراهيم وموسى واخرجه ابن ابي حاتم بلفظ نسخ من صحف ابراهيم وموسى واخرج عن السدي قال ان هذه السورة في صحف ابراهيم وموسى مثل ما نزلت على النبي صلى الله عليه وسلم وقال الغريابي حدثنا سفيان عن ابيه عن عكرمة ان هذا لفى الصحف الاولى قال هؤلاء الآيات واخرج الحاكم من طريق القاسم عن ابي امامة قال انزل الله على ابراهيم مما انزل على محمد صلى الله عليه وسلم التايبون العابدون الى قوله وبشر المؤمنين وقد افلح المؤمنون الى قوله فيها خالدون وان المسلمين والمسلمات الآية والتي في سأل الذين هم على صلوتهم دائمون الى قوله قائمون فلم يف بهذه السهام الا ابراهيم ومحمد صلى الله عليه وسلم واخرج البخاري عن عبد الله بن عمرو بن العاص قال انه يعني النبي صلى الله عليه وسلم لموصوف فى التوراة ببعض صفته فى القرآن يا ايها النبي انا ارسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا وحرزا للاميين الحديث واخرج ابن الضريس وغيره عن كعب قال فتحت التوراة بالحمد لله الذي خلق السموات والارض وجعل الظلمات والنور ثم الذين كفروا بربهم يعدلون وختمت بالحمد لله الذي لم يتخذ ولدا الى قوله وكبره تكبيرا واخرج ايضا عنه قال فاتحة التوراة فاتحة الانعام الحمد لله

)

، و لم يعطها احد قبل نبي

ك وقول ابي امامة في ذ

يخ وبن حبان و الديلمي

ي عن يزيد بن هارون باس

س عشر ما انزل منه

بل النبي صلى الله :

مة البقرة كما تقدم ف

، رض اتى النبي ص

تيتهما لم يوتهما نبي

ج الطبراني عن :

البقرة آمن الرسول

ليه وسلم و اخرج

الله عليه وسلم ا

، آية لم يعطها

لسموات و ما في

ي و الآية التي

صنا منه من

مد و الارض و

قي في الش

الا النبي

رج الطبرا

طه احد م

فائدة قال ابن الضريس اخبرنا محمود بن غيلان عن يزيد بن هارون اخبرني الوليد يعني ابن جميل عن القاسم عن ابي امامة قال اربع آيات نزلت من كنز العرش لم ينزل منه شيء غيرهن ام الكتاب و آية الكرسي و خاتمة سورة البقرة و الكوثر قلت اما الفاتحة فاخرج البيهقي في الشعب من حديث انس رض مرفوعا ان الله اعطاني فيما منّ به عليّ اني اعطيتك فاتحة الكتاب و هي من كنوز عرشي و اخرج الحاكم عن معقل بن يسار مرفوعا اعطيت فاتحة الكتاب و خواتيم سورة البقرة من تحت العرش و اخرج ابن راهويه في مسنده عن عليّ رض انه سئل عن فاتحة الكتاب فقال حدثنا نبي الله صلى الله عليه وسلم انها انزلت من كنز تحت العرش و اما آخر البقرة فاخرج الدارمي في مسنده عن ايفع الكلاعي قال قال رجل يا رسول الله اي آية تحب ان تصيبك و امتك قال آخر سورة البقرة فانها من كنز الرحمة من تحت عرش الله و اخرج احمد و غيره من حديث عقبة بن عامر مرفوعا اقرؤا هاتين الآيتين فان ربيّ اعطانيهما من تحت العرش و اخرج من حديث حذيفة اعطيت هذه الآيات من آخر سورة البقرة من كنز تحت العرش لم يعطها نبي قبلي و اخرج من حديث ابي ذر رض اعطيت خواتيم سورة البقرة من كنز تحت العرش لم يعطهن نبي قبلي وله طرق كثيرة عن عمر و علي و ابن مسعود و غيرهم رض و اما آية الكرسي فتقدمت في حديث معقل ابن يسار السابق و اخرج ابن مردوية عن ابن عباس رض قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا قرأ آية الكرسي ضحك و قال انها من كنز الرحمن تحت العرش و اخرج ابو عبيد عن عليّ قال آية الكرسي اعطيها نبيكم من كنز تحت

عن انس رض مرفوعا نزلت سورة الانعام و معها موكب من الملائكة يسد ما بين الخافقين لهم زجل بالتسبيح و التقديس و الارض ترتج واخرج الحاكم و البيهقي من حديث جابر رض قال لما نزلت سورة الانعام سبح رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم قال لقد شيع هذه السورة من الملايكة ما سد الافق قال الحاكم صحيح على شرط مسلم لكن قال الذهبي فيه انقطاع و اظنه موضوعا و اما الفاتحه و سورة يونس و اسأل من ارسلنا فلم اقف على حديث فيها بذلك ولا اثر واما آية الكرسي نقد ورد فيها و في جميع آيات البقرة حديث اخرج احمد في مسنده عن معقل بن يساران رسول الله صلى الله عليه و سلم قال البقرة سنام القرآن وذروته نزل مع كل آية منها ثمانون ملكا و استخرجت الله لا اله الا هوالحي القيوم من تحت العرش فوصلت بها و اخرج سعيد بن منصور في سننه عن الضحاك بن مزاحم قال خواتيم سورة البقرة جاء بها جبريل و معه من الملائكة ما شاء الله تعالى وبقي سور اخرى منها سورة الكهف قال ابن الضريس في فضائله اخبرنا يزيد بن عبدالعزيز الطيالسي حدثنا اسمعيل بن عياش عن اسمعيل بن رافع قال بلغنا ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال الا اخبركم بسورة ملأ عظمتها ما بين السماء و الارض شيعها سبعون الف ملك سورة الكهف تنبيه لينظر في التوفيق بين ما مضى و بين ما اخرجه ابن ابي حاتم بسند صحيح عن سعيد بن جبير قال ما جاء جبريل بالقرآن الى النبي صلى الله عليه وسلم الا ومعه اربعة من الملائكة حفظة واخرج ابن جرير عن الضحاك قال كان النبي صلى الله عليه و سلم اذا بعث اليه الملك بعث ملائكة يحرسونه من بين يديه و من خلفه ان يتشبه الشيطان على صورة الملك

واخرج الطبراني من طريق يوسف بن عطية الصفار وهو متروك عن ابن عون عن نافع عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نزلت علي سورة الانعام جملة واحدة يشيعها سبعون الف ملك واخرج البيهقي فى الشعب بسند فيه من لايعرف عن علي رض قال انزل القرآن خمسا خمسا الا سورة الانعام فانها نزلت جملة في الف يشيعها من كل سماء سبعون ملكا حتى ادّوها الى النبي صلى الله عليه وسلم واخرج ابوالشيخ عن ابي بن كعب مرفوعا انزلت عليّ سورة الانعام جملة واحدة يشيعها سبعون الف ملك واخرج عن مجاهد قال نزلت الانعام كلها جملة معها خمسماية ملك واخرج عن عطا قال انزلت الانعام جميعا ومعها سبعون الف ملك فهذه شواهد يقوي بعضها بعضا وقال ابن الصلاح في فتاواه الحديث الوارد في انها نزلت جملة رويناه من طريق ابي بن كعب وفي اسناده ضعف ولم نرله اسنادا صحيحا وقد روي ما يخالفه فروي انها لم تنزل جملة واحدة بل نزلت آيات منها بالمدينة اختلفوا في عددها فقيل ثلاث وقيل ست وقيل غيرذلك انتهى والله اعلم النوع الرابع عشر مانزل مشيعا ومانزل مفردا قال ابن حبيب وتبعه ابن النقيب من القرآن ما نزل مشيعا وهو سورة الانعا شيعها سبعون الف ملك وفاتحة الكتاب نزلت ومعها ثمانون الف ملك وآية الكرسي نزلت ومعها ثلاثون الف ملك وسورة يونس نزلت ومعها ثلاثون الف ملك واسأل من ارسلنا من قبلك من رسلنا نزلت ومعها عشرون الف ملك وسائر القرآن نزل به جبريل مفردا بلا تشييع قلت اما سورة الانعام فقد تقدم حديثها بطرقه ومن طرقه ايضا ما اخرجه البيهقي فى الشعب والطبراني بسند ضعيف

قلت يرده الاجماع على ان الآية مدنية ومن امثلته ايضا آية الجمعة فانها مدنية و الجمعة فرضت بمكة و قول ابن الفرس ان اقامة الجمعة لم تكن بمكة قطّ يرده ما اخرجه ابن ماجة عن عبد الرحمٰن ابن كعب بن مالك قال كنت قائد ابي حين ذهب بصره فكنت اذا خرجت به الى الجمعة فسمع الاذان يستغفر لابي امامة اسعد بن زرارة فقلت يا ابتاه ارأيت صلاتك على اسعد بن زرارة كلما سمعت النداء بالجمعة لم هٰذا قال اي بُنيّ كان اول من صلى بنا الجمعة قبل مقدم رسول الله صلى الله عليه و سلم من مكة ومن امثلته قوله تعالى انما الصّدقات للفقراء الآية فانها نزلت سنة تسع و قد فرضت الزكاة قبلها في اوائل الهجرة قال ابن الحصار فقد يكون مصرفها قبل ذلك معلوما ولم يكن فيه قرآن متلو كما كان الوضوء معلوما قبل نزول الآية ثم نزلت تلاوة القرآن به تاكيدا النوع الثالث عشر ما نزل مفرقا و ما نزل جمعا الاول غالب القرآن ومن امثلته فى السور القصار اقرأ اول ما نزل منها الى قوله مالم يعلم والضحى اول ما نزل منها الى قوله فترضى كما في حديث الطبراني ومن امثلة الثاني سورة الفاتحة و الاخلاص و الكوثر وتبت ولم يكن والنصر و المعوذتان نزلتا معا و منه فى السور الطوال المرسلات ففى المستدرك عن ابن مسعود رض قال كنا مع النبي صلى الله عليه و سلم في غار فنزلت عليه والمرسلات عرفا فاخذتها من فيه وان فاه رطب بها فلا ادري بايها ختم فباي حديث بعده يومنون او و اذا قيل لهم اركعوا لا يركعون و منه سورة الصف لحديثها السابق فى النوع الاول ومنه سورة الانعام فقد اخرج ابو عبيد والطبراني عن ابن عباس رض قال نزلت سورة الانعام بمكة ليلا جملة حولها سبعون الف ملك

و ستون نصبا فجعل يطعنها بعود كان في يده ويقول جاء الحق و زهق الباطل ان الباطل كان زهوقا جاء الحق وما يبدئ الباطل وما يعيد و قال ابن الحصار قد ذكر الله الزكاة فى السور المكيات كثيرا تصريحا و تعريضا بان الله تعالى سينجز وعده لرسوله و يقيم دينه و يظهره حتى تفرض الصلوٰة و الزكاة و سائر الشرائع ولم توخذ الزكاة الا بالمدينة بلا خلاف واورد من ذلك قوله تعالى وأتوا حقه يوم حصاده وقوله في سورة المزمل و اقيموا الصلوٰة وآتوا الزكاة و من ذلك قوله تعالى فيها وآخرون يقاتلون في سبيل الله و من ذلك قوله تعالى و من احسن قولا ممن دعا الى الله وعمل صالحا فقد قالت عائشة رض و ابن عمر و عكرمه وجماعة انها نزلت فى المؤذنين والآية مكية ولم يشرع الاذان الا بالمدينة ومن امثلة ما تأخر نزوله عن حكمه آية الوضوء ففي صحيح البخاري عن عائشة رضي الله عنها قالت سقطت قلادة لي بالبيدا و نحن داخلون المدينة فاناخ رسول الله صلى الله عليه وسلم و نزل فثنى راسه في حجري راقدا و اقبل ابوبكر فلكزني لكزة شديدة و قال حبست الناس في قلادة ثم ان النبي صلى الله عليه و سلم استيقظ و حضرت الصبح فالتمس الماء فلم يوجد فنزلت يا ايها الذين آمنوا اذا قمتم الى الصلاة الى قوله لعلكم تشكرون فالآية مدنية اجماعا و فرض الوضوء كان بمكة مع فرض الصلوٰة قال ابن عبد البر معلوم عند جميع اهل المغازي انه صلى الله عليه و سلم لم يصل منذ فرضت عليه الصلوٰة الا بوضوء ولا يدفع ذلك الا جاهل او معاند قال و الحكمة في نزول آية الوضوء مع تقدم العمل به ليكون فرضه متلوا بالتنزيل وقال غيره يحتمل ان يكون اول الآية نزل مقدما مع فرض الوضوء ثم نزل بقيتها و هو ذكر التيمم في هذه القصة

بنزولها مرتين ان جبريل نزل حين حولت القبلة فاخبر الرسول صلى الله عليه وسلم ان الفاتحة ركن في الصلوٰة كما كانت بمكة فظن ذلك نزولا لها مرة اخرى او اقرأه فيها قرأة لم يقرئهاله بمكة فظن ذلك انزالا لها انتهى النوع الثاني عشر ما تأخر حكمه عن نزوله وما تأخر نزوله عن حكمه قال الزركشي في البرهان قد يكون النزول سابقا على الحكم كقوله تعالى قد افلح من تزكى و ذكر اسم ربه فصلى فقد روى البيهقي وغيره عن ابن عمر انها نزلت في زكاة الفطر واخرج البزار نحوه مرفوعا وقال بعضهم لا ادري ما وجه هذا التأويل لان السورة مكية ولم يكن بمكة عيد ولا زكاة ولا صوم واجاب البغوي بانه يجوزان يكون النزول سابقا على الحكم كما قال الله تعالى لا اقسم بهذا البلد و انت حل بهذا البلد فالسورة مكية و قد ظهر اثر الحل يوم فتح مكة حين قال عليه السلام احلت لي ساعة من نهار وكذلك نزل بمكة سيهزم الجمع ويولون الدبر قال عمر بن الخطاب رض فقلت اي جمع فلما كان يوم بدر و انهزمت قريش نظرت الى رسول الله صلى الله عليه وسلم في آثارهم مصلتا بالسيف يقول سيهزم الجمع ويولون الدبر فكانت ليوم بدر اخرجه الطبراني في الاوسط وكذا قوله جند ما هنالك مهزوم من الاحزاب قال قتادة وعده الله وهو يومئذ بمكة انه سيهزم جندا من المشركين فجاء تأويلها يوم بدر اخرجه ابن ابي حاتم ومثله ايضا قوله تعالى قل جاء الحق وما يبدى الباطل وما يعيد اخرج ابن ابي حاتم عن ابن مسعود رض في قوله جاء الحق قال السيف والآية مكية متقدمة على فرض القتال ويؤيد تفسير ابن مسعود ما اخرجه الشيخان من حديثه ايضا قال دخل النبي صلى الله عليه وسلم مكة يوم الفتح وحول الكعبة ثلثمائة

نزلتا بالمدينة و لهذا اشكل ذلك على بعضهم ولا اشكال لانها نزلت مرة بعد مرة قال و كذلك ما ورد في سورة الاخلاص من انها جواب للمشركين بمكة و جواب لاهل الكتاب بالمدينة و كذلك قوله تعالى ما كان للنبي والذين آمنوا الآية قال و الحكمة في هذا كله انه قد يحدث سبب من سؤال او حادثة يقتضي نزول آية و قد نزل قبل ذلك ما يتضمنها فيوحى الى النبي صلى الله عليه و سلم تلك الآية بعينها تذكيرا لهم بها وبانها تتضمن هذه تنبيه قد يجعل من ذلك الا حرف التي تقرأ على وجهين فاكثر و يدل له ما اخرجه مسلم من حديث ابي ان ربي ارسل اليّ ان اقرأ القرآن على حرف فرددت اليه ان هوّن على امتي فارسل الي ان اقرأ على حرفين فرددت اليه ان هوّن على امتي فارسل الي ان اقرأه على سبعة احرف فهذا الحديث يدل على ان القرآت لم تنزل من اول وهلة بل مرة بعد اخرى و في جمال القراء للسخاوي بعد ان حكى القول بنزول الفاتحة مرتين فان قيل فما فائدة نزولها مرة ثانية قلت يجوزان يكون نزلت اول مرة على حرف و احد ونزلت في الثانية ببقية وجوهها نحو ملك ومالك و السراط و الصراط و نحو ذلك انتهى تنبيه انكر بعضهم كون شيء من القرآن تكرر نزوله كذا رأيته في كتاب الكفيل بمعاني التنزيل و علله بان تحصيل ما هو حاصل لا فايدة فيه و هو مردود بما تقدم من فوائده و بانه يلزم منه ان يكون كلما نزل بمكة نزل بالمدينة مرة اخرى فان جبريل عم كان يعارضه القرآن كل سنة و رد بمنع الملازمة و بانه لا معنى للانزال الا ان جبريل كان ينزل على رسول الله صلى الله عليه و سلم بقرآن لم يكن نزل به من قبل فيقرئه اياه و رد بمنع اشتراط قوله لم يكن نزل به من قبل ثم قال و لعلهم يعنون

يوم أحد فقطعت يده اليمنى فاخذ اللواء بيده اليسرى و هو يقول وما محمد الا رسول قد خلت من قبله الرسل افأن مات او قتل انقلبتم على اعقابكم ثم قطعت يده اليسرى فحنا على اللواء وضمه بعضديه الى صدره وهو يقول وما محمد الا رسول الآية ثم قتل فسقط اللواء قال محمد بن شرحبيل و ما نزلت هذه الآية وما محمد الا رسول يومئذ حتى نزلت بعد ذلك تذنيب يقرب من هذا ما ورد فى القرآن على لسان غير الله كالنبي صلى الله عليه و سلم و جبريل و الملائكة غير مصرح باضافته اليهم ولا محكي بالقول كقوله قد جاءكم بصائر من ربكم الآية فان هذا وارد على لسانه صلى الله عليه وسلم لقوله آخرها و ما انا عليكم بحفيظ و قوله افغير الله ابتغي حكما الآية فانه وارد ايضا على لسانه صلى الله عليه و سلم و قوله و ما نتنزل الا بامر ربك الآية وارد على لسان جبريل وقوله وما منا الا له مقام معلوم و انا لنحن الصافون و انا لنحن المسبحون وارد على لسان الملائكة و كذا اياك نعبد و اياك نستعين وارد على السنة العباد الا انه يمكن هنا تقدير القول اي قولوا و كذا الآيتان الاوليان يصح ان يقدر فيهما قل بخلاف الثالثة و الرابعة النوع الحادي عشر ما تكرر نزوله صرح جماعة من المتقدمين والمتأخرين بان من القرآن ما تكرر نزوله قال ابن الحصار قد يتكرر نزول الآية تذكيرا و موعظة وذكر من ذلك خواتيم سورة النحل و اول سورة الروم و ذكر ابن كثير منه آية الروح و ذكر قوم منه الفاتحة و ذكر بعضهم منه قوله ما كان للنبي و الذين آمنوا الآية و قال الزركشي فى البرهان قد ينزل الشئ مرتين تعظيما لشانه و تذكيرا عند حدوث سببه خوف نسيانه ثم ذكر منه آية الروح وقوله اقم الصلوة طرفي النهار الآية قال فان سورة الاسراء و هود مكيتان و سبب نزولهما يدل على انهما

ان يحتجبن فنزلت آية الحجاب و اجتمع على رسول الله صلى الله عليه و سلم نساءه فى الغيرة فقلت لهن عسى ربه ان طلقكن ان يبدله ازواجا خيرا منكن فنزلت كذلك و اخرج مسلم عن ابن عمر رض عن عمر رض قال وافقت ربي في ثلاث فى الحجاب وفي اسارى بدر وفي مقام ابراهيم و اخرج ابن ابي حاتم عن انس رض قال قال عمر رض و افقت او وافقني ربي في اربع نزلت هذه الآية و لقد خلقنا الانسان من سلالة من طين الآية فلما نزلت قلت انا فتبارك الله احسن الخالقين فنزلت فتبارك الله احسن الخالقين و اخرج عبد الرحمٰن بن ابي ليلى ان يهوديا لقي عمر بن الخطاب فقال ان جبريل الذي يذكر صاحبكم عدو لنا فقال عمر من كان عدوا لله و ملائكته و رسله و جبريل و ميكال فان الله عدو للكافرين قال فنزلت على لسان عمر و اخرج سنيد في تفسيره عن سعيد بن جبير ان سعد بن معاذ لما سمع ماقيل في امر عائشة رض قال سبحانك هذا بهتان عظيم فنزلت كذلك و اخرج ابن اخي ميمي في فوائده عن سعيد بن المسيب قال كان رجلان من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم اذا سمعا شيئا من ذلك قالا سبحانك هذا بهتان عظيم زيد بن حارثه و ابو ايوب فنزلت كذلك و اخرج ابن ابي حاتم عن عكرمة قال لما ابطأ على النساء الخبر في احد خرجن يستخبرن فاذا رجلان مقبلان على بعير فقالت امرأة ما فعل رسول الله صلى الله عليه و سلم قالا حي قالت فلا ابالي يتخذ الله من عباده الشهداء فنزل القرآن على ما قالت و يتخذ منكم شهداء وقال ابن سعد فى الطبقات انبأنا الواقدي حدثني ابراهيم ابن محمد بن شرحبيل العبدري عن ابيه قال حمل مصعب بن عمير اللواء

عن زيد بن ثابت ايضا قال كنت اكتب لرسول الله صلى الله عليه وسلم فاني لواضع القلم على اذني اذا مر بالقتال فجعل رسول الله صلى الله عليه وسلم ينظر ما ينزل عليه اذ جاء اعمى فقال كيف بي يا رسول الله وانا اعمى فنزلت ليس على الضعفاء ومن امثلته ما اخرجه ابن جرير عن ابن عباس رض قال كان رسول الله صلى الله عليه وسلم جالسا في ظل حجرة فقال انه سيأتيكم انسان ينظر بعيني شيطان فطلع رجل ازرق فدعاه رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال علام تشتمني انت واصحابك فانطلق الرجل فجاء باصحابه فحلفوا بالله ما قالوا حتى تجاوز عنهم فانزل الله تعالى يحلفون بالله ما قالوا الآية واخرجه الحاكم واحمد بهذا اللفظ وآخره فانزل الله تعالى يوم يبعثهم الله جميعا فيحلفون له كما يحلفون لكم الآية تنبيه تأمل ما ذكرته لك في هذه المسئلة واشدد به يديك فاني حررته واستخرجته بفكري من استقراء صنيع الائمة ومتفرقات كلامهم ولم اسبق اليه النوع العاشر فيما نزل من القرآن على لسان بعض الصحابة هو في الحقيقة نوع من اسباب النزول والاصل فيه موافقات عمر وقد افردها بالتصنيف جماعة واخرج الترمذي عن ابن عمر ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الله جعل الحق على لسان عمر وقلبه قال ابن عمر وما نزل بالناس امر قط فقالوا وقال الا نزل القرآن على نحو ما قال عمر واخرج ابن مردويه عن مجاهد قال كان عمر يرى الرأي فينزل به القرآن واخرج البخاري وغيره عن انس رض قال قال عمر وافقت ربي في ثلاث قلت يا رسول الله لو اتخذنا من مقام ابراهيم مصلى فنزلت واتخذوا من مقام ابراهيم مصلى وقلت يا رسول الله ان نساءك يدخل عليهن البر والفاجر فلو امرتهن

ومن امثلته ايضا ما اخرجه البخاري عن انس رض قال سمع عبد الله بن سلام مقدم رسول الله صلى الله عليه و سلم فاتاه فقال اني سائلك عن ثلاث لايعلمهن الانبي ما اول اشراط الساعة و ما اول طعام اهل الجنة و ما ينزع الولد الى ابيه او الى امه قال اخبرني جبريل بهن آنفا قال جبريل قال نعم قال ذلك عدو اليهود من الملائكة فقرأ هذه الآية من كان عدوا لجبريل فانه نزله على قلبك قال ابن حجر في شرح البخاري ظاهر السياق ان النبي صلى الله عليه و سلم قرأ الآية ردا على قول اليهود ولا يستلزم ذلك نزولها حينئذ قال و هذا هو المعتمد فقد صح في سبب نزول الآية قصة غير قصة بن سلام تنبيه عكس ما تقدم ان يذكر سبب واحد في نزول آيات متفرقة ولا اشكال في ذلك فقد ينزل في الواقعة الواحدة آيات عديدة في سورتين مثاله ما اخرجه الترمذي و الحاكم عن ام سلمة رض انها قالت يا رسول الله لا اسمع الله ذكر النساء في الهجرة بشئ فانزل الله فاستجاب لهم ربهم اني لا اضيع عمل عامل الى آخر الآية و اخرج الحاكم عنها ايضا انها قالت قلت يا رسول الله يذكر الرجال ولا لا تذكر النساء فانزلت ان المسلمين و المسلمات و انزلت اني لا اضيع عمل عامل منكم من ذكر او انثى و اخرج ايضا عنها انها قالت يغزوا الرجال ولا تغزوا النساء و انما لنا نصف الميراث فانزل الله ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض و انزل ان المسلمين و المسلمات و من امثلته ايضا ما اخرجه البخاري من حديث زيد بن ثابت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم املى عليه لا يستوى القاعدون من المومنين و المجاهدون في سبيل الله فجاء ابن ام مكتوم فقال يا رسول الله لو استطيع الجهاد لجاهدت و كان اعمى فانزل الله غير اولى الضرر و اخرج ابن ابي حاتم

قال خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم يوما الى المقابر فجلس الى قبر منها فنا جاه طويلا ثم بكى فقال ان القبر الذي جلست عنده قبر امي و اني استأذنت ربي فى الدعاء لها فلم يأذن لي فانزل عليّ ما كان للنبي و الذين آمنوا ان يستغفروا للمشركين فجمع بين هٰذه الاحاديث بتعدد النزول و من امثلته ايضا ما اخرجه البيهقي و البزار عن ابي هريرة رض ان النبي صلى الله عليه و سلم وقف على حمزة حين استشهد و قد مثل به فقال لا مثلن بسبعين منهم مكانك فنزل جبريل و النبي صلى الله عليه و سلم واقف بخواتيم سورة النحل و ان عاقبتم فعاقبوا بمثل ما عوقبتم به الى آخر السورة و اخرج الترمذي و الحاكم عن ابي بن كعب قال لما كان يوم احد اصيب من الانصار اربعة وستون و من المهاجرين ستة منهم حمزة رض فمثلوا بهم فقالت الانصار لئين اصبنا منهم يوما مثل هٰذا لنربين عليهم فلما كان يوم فتح مكة انزل الله و ان عاقبتم الآية فظاهره تأخير نزولها الى الفتح و فى الحديث الذي قبله نزولها باحد * قال ابن الحصار و يجمع بانها نزلت اولا بمكة قبل الهجرة مع السورة لانها مكية ثم ثانيا باحد ثم ثالثا يوم الفتح تذكيرا من الله تعالى لعباده و جعل ابن كثير من هٰذا القسم آية الروح تنبيه قد يكون في احدى القصتين فتلا فيهم الراوي فيقول فنزل مثاله ما اخرجه الترمذي و صححه عن ابن عباس رض قال مر يهودي بالنبي صلى الله عليه و سلم فقال كيف تقول يا ابا القاسم اذا وضع الله السموات على ذه و الارضين على ذه و الماء على ذه و الجبال على ذه وسائر الخلق على ذه فانزل الله تعالى و ما قدروا الله حق قدره الآية و الحديث فى الصحيح بلفظ فتلا رسول الله صلى الله عليه و سلم و هو الصواب فان الآية مكية

قال جاء عويمر الى عاصم بن عدي فقال اسئل رسول الله صلى الله عليه و سلم ارأيت رجلا وجد مع امرأته رجلا فقتله ايقتل به ام كيف يصنع فسأل عاصم رسول الله صلى الله عليه و سلم فغاب السائل فاخبر عاصم عويمرا فقال و الله لآتين رسول الله صلى الله عليه وسلم فلا سئلنه فاتاه فقال انه قد انزل فيك و في صاحبتك الحديث جمع بينهما بان اول من وقع له ذلك هلال و صادف مجيء عويمر ايضا فنزلت في شانهما معا و الى هذا جنح النووي و سبقه الخطيب فقال لعلهما اتفق لهما ذلك في وقت واحد و اخرج البزار عن حذيفة رض قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم لابي بكر لو رأيت مع ام رومان رجلا ما كنت فاعلا به قال شرا قال فانت يا عمر قال كنت اقول لعن الله الاعجز وانه لخبيث فنزلت قال ابن حجر لا مانع من تعدد الاسباب الحال السادس ان لا يمكن ذلك فيحمل على تعدد النزول و تكرره مثاله ما اخرجه الشيخان عن المسيب قال لما حضر ابا طالب الوفاة دخل عليه رسول الله صلى الله عليه و سلم وعنده ابو جهل و عبد الله بن ابي امية فقال اي عم قل لا اله الا الله احاج لك بها عند الله فقال ابوجهل و عبد الله يا ابا طالب اترغب عن ملة عبد المطلب فلم يزالا يكلمانه حتى قال هو على ملة عبدالمطلب فقال النبي صلى الله عليه وسلم لاستغفرن لك مالم انه عنك فنزلت ما كان للنبي و الذين آمنوا ان يستغفروا للمشركين الآية و اخرج الترمذي و حسنه عن علي رض قال سمعت رجلا يستغفر لابويه و هما مشركان فقلت اتستغفر لابويك و هما مشركان فقال استغفر ابراهيم عليه السلام لابيه و هو مشرك فذكرت ذلك لرسول الله صلى الله عليه و سلم فنزلت و اخرج الحاكم و غيره عن ابن مسعود رض

للنبي صلى الله عليه وسلم اجلناسنة حتى يهدى لآلهتنا فاذا قبضنا الذي يهدى لها احرزناه ثم اسلمنا فهمّ ان يوجلهم فنزلت هٰذا يقتضي نزولها بالمدينة و اسناده ضعيف و الاول يقتضي نزولها بمكة واسناده حسن وله شاهد عند ابى الشيخ عن سعيد بن جبير يرتقي به الى درجة الصحيح فهو المعتمد الحال الرابع ان يستوي الاسناد ان فى الصحة فيرجح احدهما بكون راويه حاضر القصة او نحو ذلك من وجوه الترجيحات مثاله ما اخرجه البخاري عن ابن مسعود رض قال كنت امشي مع النبي صلى الله عليه وسلم بالمدينة و هو يتوكأ على عسيب فمر بنفر من اليهود فقال بعضهم لوسألتموه فقالوا حدثنا عن الروح فقام ساعة و رفع راسه فعرفت انه يوحى اليه حتى صعد الوحي ثم قال الروح من امر ربي و ما اوتيتم من العلم الا قليلا و اخرج الترمذي صححه عن ابن عباس رض قال قالت قريش لليهود اعطونا شيئا نسأل هذا الرجل فقالوا سلوه عن الروح فسألوه فانزل الله تعالى و يسألونك عن الروح الآية فهذا يقتضي انها نزلت بمكة و الاول خلافه وقد رجح بان ما رواه البخاري اصح من غيره و بان ابن مسعود كان حاضر القصة الحال الخامس ان يمكن نزولها عقيب السببين اوالاسباب المذكورة بان لا تكون معلومة التباعد كما فى الآيات السابقة فيحمل على ذلك مثاله ما اخرجه البخاري من طريق عكرمة عن ابن عباس ان هلال بن امية قذف امرأته عند النبي صلى الله عليه وسلم بشريك بن سحماء فقال النبي صلى الله عليه و سلم البينة اوحد في ظهرك فقال يا رسول الله اذا رأى احدنا مع امرأته رجلا ينطلق يلتمس البينة فانزل عليه و الذين يرمون ازواجهم حتى بلغ ان كان من الصادقين و اخرج الشيخان عن سهل بن سعد

قبلة ابراهيم فكان يدعو الله و ينظر الى السماء فانزل الله فولوا وجوهكم شطره فارتاب من ذلك اليهود و قالوا ما ولّاهم عن قبلتهم التي كانوا عليها فانزل الله تعالى قل لله المشرق و المغرب و قال فاينما تولوا فثم وجه الله واخرج الحاكم وغيره عن ابن عمر رض قال انزلت اينما تولوا فثم وجه الله ان تصلي حيثما توجهت بك راحلتك في التطوع و اخرج الترمذي و ضعّفه من حديث عامر بن ربيعة قال كنا في سفر في ليلة مظلمة فلم ندر اين القبلة فصلى كل رجل منا على حياله فلما اصبحنا ذكرنا ذلك لرسول الله صلى الله عليه وسلم فنزلت و اخرج الدار قطني نحوه من حديث جابر بسند ضعيف ايضا و اخرج ابن جرير عن مجاهد قال لما نزلت ادعوني استجب لكم فقالوا الى اين فنزلت مرسل و اخرج عن قتادة ان النبي صلى الله عليه وسلم قال ان اخا لكم قد مات فصلوا عليه فقالوا انه كان لا يصلي الى القبلة فنزلت معضل غريب جدا فهذه خمسة اسباب مختلفة و اضعفها الاخير لاعضا له ثم ما قبله لارساله ثم ما قبله لضعف راويه و الثاني صحيح لكنه قال انزلت في كذا ولم يصرح بالسبب والاول صحيح الاسناد و صرح فيه بذكر السبب فهو المعتمد و من امثلته ايضاً ما اخرجه ابن مردويه و ابن ابي حاتم من طريق ابن اسحق عن محمد بن ابي محمد عن عكرمة او سعيد عن ابن عباس قال خرج امية بن خلف و ابوجهل ابن هشام و رجال من قريش فاتوا رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالوا يا محمد تعال فتمسح بآلهتنا و ندخل معك في دينك و كان يحب اسلام قومه فرق لهم فانزل الله تعالى و ان كادوا ليفتنونك عن الذي اوحينا اليك الآيات و اخرج ابن مردويه من طريق العوفي عن ابن عباس ان ثقيفا قالوا

اتيان النساء في ادبارهن وتقدم عن جابر التصريح بذكر سبب خلافه فالمعتمد حديث جابر لانه نقل وقول ابن عمر استنباط منه وقد وهمه فيه ابن عباس وذكر مثل حديث جابر كما اخرجه ابو داؤد والحاكم وان ذكر واحد سببا وآخر سببا غيره فان كان اسناد احدهما صحيحا دون الآخر فالصحيح المعتمد مثاله ما اخرجه الشيخان وغيرهما عن جندب قال اشتكى النبي صلى الله عليه وسلم فلم يقم ليلة او ليلتين فاتته امرأة فقالت يا محمد ما ارى شيطانك الا قد تركك فانزل الله والضحى والليل اذا سجى ما ودعك ربك وما قلى واخرج الطبراني وابن ابي شيبه عن حفص بن ميسرة عن امه عن امّها وكانت خادم رسول الله صلى الله عليه وسلم ان جروا دخل بيت النبي صلى الله عليه وسلم فدخل تحت السرير فمات فمكث النبي صلى الله عليه وسلم اربعة ايام لاينزل عليه الوحي فقال يا خولة ما حدث في بيت رسول الله صلى الله عليه وسلم جبريل لايأتيني فقلت في نفسي لوهيأت البيت وكنسته فاهويت بالمكنسة تحت السرير فاخرجت الجرو فجاء النبي صلى الله عليه وسلم ترعد لحيته وكان اذا نزل عليه اخذته الرعدة فانزل الله تعالى والضحى والليل الى قوله فترضى قال ابن حجر في شرح البخاري قصة ابطاء جبريل بسبب الجرو مشهورة لكن كونها سبب نزول الآية غريب وفي اسناده من لايعرف فالمعتمد مافي الصحيح * ومن امثلته ايضا ما اخرجه ابن جرير وابن ابي حاتم من طريق علي ابن ابي طلحة عن ابن عباس رض ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لماهاجر الى المدينة امره الله ان يستقبل بيت المقدس ففرحت اليهود فاستقبلها بضعة عشر شهرا وكان يحب

احمد وغيره بخلاف ما اذا ذكر سببا نزلت عقبه فانهم كلهم يدخلون مثل هذا في المسند انتهى وقال الزركشي في البرهان قد عرف من عادة الصحابة والتابعين ان احدهم اذا قال نزلت هذه الآية في كذا فانه يريد بذلك انها تتضمن هذا الحكم لا ان هذا كان السبب في نزولها فهو من جنس الاستدلال على الحكم بالآية لا من جنس النقل لما وقع قلت والذي يتحرر في سبب النزول انه ما نزلت الآية ايام وقوعه ليخرج ما ذكره الواحدي في سورة الفيل من ان سببها قصة قدوم الحبشة به فان ذلك ليس من اسباب النزول في شيء بل هو من باب الاخبار عن الوقائع الماضية كذكر قصة قوم نوح وعاد و ثمود وبناء البيت و نحو ذلك وكذلك ذكره في قوله تعالى واتخذ الله ابراهيم خليلا سبب اتخاذه خليلا فليس ذلك من اسباب نزول القرآن كما لا يخفى تنبيه ماتقدم انه من قبيل المسند من الصحابي اذا وقع من تابعي فهو مرفوع ايضا لكنه مرسل فقد يقبل اذا صح السند اليه وكان من ائمة التفسير الآخذين عن الصحابة كمجاهد و عكرمة وسعيد بن جبيرا واعتضد بمرسل آخر و نحو ذلك المسئلة الخامسة كثيرا ما يذكر المفسرون لنزول الآية اسبابا متعددة و طريق الاعتماد في ذلك ان تنظر الى العبارة الواقعة فان عبر احدهم بقوله نزلت في كذا والآخر نزلت في كذا وذكر امرا آخر فقد تقدم ان هذا يراد به التفسير لا ذكر سبب النزول فلا منافاة بين قولهما اذا كان اللفظ يتناو لهما كما سيأتي تحقيقه في النوع الثامن والسبعين وان عبر واحد بقوله نزلت في كذا وصرح الآخر بذكر سبب خلافه فهو المعتمد و ذالك استنباط مثاله ما اخرجه البخاري عن ابن عمر قال انزلت نساؤكم حرث لكم في

و سلم بوضعها فى المواضع التي علم من الله تعالى انها مواضعها المسلة الرابعة قال الواحدي لا يحل القول في اسباب نزول الكتاب الا بالرواية و السماع ممن شاهدوا التنزيل و وقفوا على الاسباب و بحثوا عن علمها و قد قال محمد بن سيرين سألت عبيدة عن آية من القرآن فقال اتق الله وقل سدادا ذهب الذين يعلمون فيما انزل القرآن و قال غيره معرفة سبب النزول امر يحصل للصحابة بقرائن تحتف بالقضايا و ربما لم يجزم بعضهم فقال احسب هذه الآية نزلت في كذا كما اخرجه الائمة الستة عن عبد الله بن الزبير قال خاصم الزبير رجلا من الانصار في شراح الحرة فقال النبي صلى الله عليه وسلم اسق يا زبير ثم ارسل الماء الى جارك فقال الانصاري يا رسول الله ان كان ابن عمتك فتلوّن وجهه الحديث قال الزبير فما احسب هذه الآيات الا نزلت في ذلك فلا و ربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم و قال الحاكم في علوم الحديث اذا اخبر الصحابي الذي شهد الوحي و التنزيل عن آية من القرآن انها نزلت في كذا فانه حديث مسند و مشى على هذا ابن الصلاح وغيره و مثلوه بما اخرجه مسلم عن جابر رض قال كانت اليهود تقول من اتى امرأته من دبرها في قبلها جاء الولد احول فانزل الله تعالى نساء كم حرث لكم الآية و قال ابن تيمية قولهم نزلت الآية في كذا يراد به تارة سبب النزول و يراد به تارة ان ذلك داخل فى الآية و ان لم يكن السبب كما تقول عُنِيَ بهذه الآية كذا و قد تنازع العلماء في قول الصحابي نزلت هذه الآية في كذا هل يجري مجرى المسند كما لو ذكر السبب الذي انزلت لاجله او يجري مجرى التفسير منه الذي ليس بمسند فالبخاري يدخله فى المسند وغيره لا يدخله فيه و اكثر المسانيد على هذا الاصطلاح كمسند

قطعي الدخول فى العام كما اختار السبكي انه رتبة متوسطة دون السبب وفوق المجرد مثاله قوله تعالى الم ترالى الذين اوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت الى آخره فانها اشارة الى كعب بن الاشرف ونحوه من علماء اليهود لما قدموا مكة و شاهدوا قتلى بدر حرضوا المشركين على الاخذ بثارهم ومحاربة النبي صلى الله عليه و سلم فسألوهم من اهدى سبيلا محمد و اصحابه ام نحن فقالوا انتم مع علمهم بما في كتابهم من نعت النبي صلى الله عليه و سلم المنطبق عليه واخذ المواثيق عليهم ان لا يكتموه فكان ذلك امانة لازمة لهم ولم يؤدوها حيث قالوا للكفار انتم اهدى سبيلا حسدا للنبي صلى الله عليه وسلم فقد تضمنت هذه الآية مع هذا القول التوعد عليه المفيد للامر بمقابلة المشتمل على اداء الامانة التي هي بيان صفة النبي صلى الله عليه و سلم بافادة انه الموصوف في كتابهم و ذلك مناسب لقوله تعالى ان الله يأمركم ان تؤدوا الامانات الى اهلها فهذا عام في كل امانة و ذاك خاص بامانة هي صفة النبي صلى الله عليه و سلم بالطريق السابق والعام تال للخاص فى الرسم متراخ عنه فى النزول و المناسبة تقتضي دخول مادل عليه الخاص فى العام ولذا قال ابن العربي في تفسيره وجه النظم انه اخبر عن كتمان اهل الكتاب صفة محمد صلى الله عليه و سلم و قولهم ان المشركين اهدى سبيلا فكان ذلك خيانة منهم فانجر الكلام الى ذكر جميع الامانات انتهى قال بعضهم ولا يرد تأخر نزول آية الامانات عن التي قبلها بنحو ست سنين لان الزمان انما يشترط في سبب النزول لا فى المناسبة لان المقصود منها وضع آية في موضع بنا سببها والآيات كانت تنزل على اسبابها و يأمر النبي صلى الله عليه

على الاطلاق والناس وان تنازعوا في اللفظ العام الوارد على سبب هل يختص بسببه فلم يقل احدان عمومات الكتاب والسنة تختص بالشخص المعين وانما غاية مايقال انها تختص بنوع ذلك الشخص فتعم مايشبهه ولا يكون العموم فيها بحسب اللفظ والآية التي لها سبب معين ان كانت امرا اونهيا فهي متناولة لذلك الشخص ولغيره ممن كان بمنزلته وان كانت خبرا بمدح اوذم فهي متناولة لذلك الشخص ولمن كان بمنزلته انتهى تنبيه قدعلمت مما ذكران فرض المسئلة في لفظ له عموم اما آية نزلت في معين ولا عموم للفظها فانها تقصر عليه قطعا كقوله تعالى وسيجنبها الاتقى الذي يؤتي ماله يتزكى فانها نزلت في ابي بكر الصديق رض بالاجماع وقد استدل بها الا مام فخرالدين الرازي مع قوله تعالى ان اكرمكم عندالله اتقاكم على انه افضل الناس بعد رسول الله صلى الله عليه وسلم ووهم من ظن ان الآية عامة في كل من عمل عمله اجراءله على القاعدة و هذا غلط فان هذه الآية ليس فيها صيغة عموم اذالالف واللام انما تفيد العموم اذاكانت موصولة اومعرفة في جمع زاد قوم اومفرد بشرط ان لايكون هناك عهد واللام في الاتقى ليست موصوله لانها لا توصل بافعل التفضيل اجماعا والاتقى ليس جمعا بل هو مفرد والعهد موجود خصوصا مع ما تفيده صيغة افعل من التمييز وقطع المشاركة فبطل القول بالعموم وتعين القطع بالخصوص والقصر على من نزلت فيه رضي الله عنه. المسائله الثالثة تقدم ان صورة السبب قطعية الدخول في العام وقد تنزل الآيات على الاسباب الخاصة و توضع مع مايناسبها من الآي العامة رعاية لنظم القرآن وحسن السياقة فيكون ذلك الخاص قريبا من صورة السبب في كونه

وقلوبهم امر من الصبر لبسوا لباس مسوك الضان من اللين يختدرون الدنيا بالدين فقال محمد بن كعب هذا في كتاب الله و من الناس من يعجبك قوله فى الحيوة الدنيا الآية فقال سعيد قدعرفت فيمن انزلت فقال محمد بن كعب ان الآيه تنزل فى الرجل ثم تكون عامة بعد فان قلت فهذا ابن عباس رض لم يعتبر عموم قوله تعالى لاتحسبن الذين يفرحون الآية بل قصرها على ما انزلت فيه من قصة اهل الكتاب قلت اجيب عن ذلك بانه لايخفى عليه ان اللفظ اعم من السبب لكنه بين ان المراد باللفظ خاص ونظيره تفسير النبي صلى الله عليه وسلم الظلم في قوله تعالى ولم يلبسوا ايمانهم بظلم بالشرك من قوله ان الشرك لظلم عظيم مع فهم الصحابة رض العموم في كل ظلم وقد ورد عن ابن عباس رض ما يدل على اعتبار العموم فانه قال به في آية السرقة مع انها نزلت في امرأة سرقت قال ابن ابي حاتم حدثنا علي بن الحسين حدثنا محمد بن ابي حماد حدثنا ابو تميلة ابن عبد المؤمن عن نجدة الحنفي قال سألت ابن عباس رض عن قوله تعالى والسارق والسارقة فاقطعوا ايديهما اخاص ام عام قال بل عام وقال ابن تيمية قديجيء كثيرا من هذا الباب قولهم هذه الآية نزلت في كذا لاسيما انكان المذكور شخصا كقولهم ان آية الظهار نزلت في امرأة ثابت ابن قيس وان آية الكلالة نزلت في جابر بن عبدالله وان قوله وان احكم بينهم نزلت في بني قريظة والنضير و نظائر ذلك مما يذكرون انه نزل في قوم من المشركين بمكة اوفي قوم من اليهود والنصارى اوفي قوم من المؤمنين فالذين قالوا ذلك لم يقصدوا ان حكم الآية يختص باولئك الاعيان دون غيرهم فان هذا لا يقوله مسلم ولا عاقل

نازلا منزلة من يقول لاتأكل اليوم حلاوة فيقول لا اكل اليوم الا الحلاوة والغرض المضادة لا النفي والاثبات على الحقيقة فكأنه تعالى قال لا حرام الا ما احللتموه من الميتة والدم ولحم الخنزير وما اهل لغير الله به ولم يقصد حل ما وراء اذا لقصد اثبات التحريم لا اثبات الحل قال امام الحرمين وهذا في غاية الحسن ولولا سبق الشافعي رح الى ذلك لما كنا نستجيز مخالفة مالك رح في حصر المحرمات فيما ذكرته الآية ومنها معرفة اسم النازل فيه الآية وتعيين المبهم فيها وقد قال مروان في عبدالرحمن بن ابي بكر انه الذي انزل فيه والذي قال لوالديه اف لكما حتى ردت عليه عائشه رض وبينت له سبب نزولها المسئلة الثانية اختلف اهل الاصول هل العبرة بعموم اللفظ اوبخصوص السبب والاصح عندنا الاول وقد نزلت آيات في اسباب واتفقوا على تعديتها الى غير اسبابها كنزول آية الظهار في سلمة بن صخر وآية اللعان في شان هلال بن امية وحد القذف في رماة عائشة رض ثم تعدى الى غيرهم ومن لم يعتبر عموم اللفظ قال خرجت هذه الآيات ونحوها لدليل آخر كما قصرت آيات على اسبابها اتفاقا لدليل قام على ذلك قال الزمخشري في سورة الهمزة يجوزان يكون السبب خاصا والوعيد عاما ليتناول كل من باشر ذلك القبيح وليكون جاريا مجرى التعريض قلت ومن الادلة على اعتبار عموم اللفظ احتجاج الصحابة رض وغيرهم في وقائع بعموم آيات نزلت على اسباب خاصة شائعا ذائعا بينهم قال ابن جرير حدثني محمد بن ابي معشر انبأنا ابو معشر نجيح سمعت سعيد المقبري رح يذاكر محمد بن كعب القرظي فقال سعيد ان في بعض كتب الله ان لله عبادا السنتهم احلى من العسل

كيف بمن قتلوا في سبيل الله و ما توا وكانوا يشربون الخمر وهي رجس فنزلت اخرجه احمد والنسائي وغيرهما ومن ذلك قوله تعالى و اللائي يئسن من المحيض من نسائكم ان ارتبتم فعدتهن ثلثة اشهر فقد اشكل معنى هذا الشرط على بعض الائمة حتى قال الظاهرية بان الآيسة لا عدة عليها اذا لم ترتب وقد بين ذلك سبب النزول و هو انه لما نزلت الآية التي في سورة البقرة في عدد النساء قالوا قد بقي عدد من عدد النساء لم يذكرن الصغار والكبار فنزلت اخرجه الحاكم عن ابيّ فعلم بذلك ان الآية خطاب لمن لم يعلم ما حكمهن في العدة و ارتاب هل عليهن عدة اولا وهل عدتهن كاللاتي في سورة البقرة اولا فمعنى ان ارتبتم ان اشكل عليكم حكمهن وجهلتم كيف يعتددن فهذا حكمهن ومن ذلك قوله تعالى فاينما تولوا فثم وجه الله فانالو تركنا و مدلول اللفظ لاقتضى ان المصلي لايجب عليه استقبال القبلة سفرا ولا حضرا وهو خلاف الاجماع فلما عرف سبب نزولها علم انها في نافلة السفر او فيمن صلى بالاجتهاد و بان له الخطأ على اختلاف الرواية في ذلك ومن ذلك قوله تعالى ان الصفا والمروة من شعائر الله الآية فان ظاهر لفظها لايقتضي ان السعي فرض وقد ذهب بعضهم الى عدم فرضيته تمسكا بذلك وقد ردت عائشة رض على عروة في فهمه ذلك بسبب نزولها وهو ان الصحابة رض تأثموا من السعي بينهما لانه من عمل الجاهلية فنزلت ومنها دفع توهم الحصر قال الشافعي رح ما معناه في قوله تعالى قل لا اجد فيما أوحي اليّ محرما الآية ان الكفار لما حرموا ما احل الله واحلوا ما حرم الله وكانوا على المضادة والمحادة فجاءت الآية مناقضة لغرضهم فكأنه قال لاحلال الا ما حرمتموه ولاحرام الا ما احللتموه

"لباب النقول في اسباب النزول" قال الجعبري نزول القرآن على قسمين قسم نزل ابتداء و قسم نزل عقيب واقعة او سؤال و في هذا النوع مسائل الاولى زعم زاعم انه لاطائل تحت هذا الفن لجريانه مجرى التاريخ و اخطأ في ذلك بل له فوائد منها معرفة وجه الحكمة الباعثة على تشريع الحكم و منها تخصيص الحكم به عند من يرى ان العبرة بخصوص السبب و منها ان اللفظ قد يكون عاما و يقوم الدليل على تخصيصه فاذا عرف السبب قصر التخصيص على ماعدا صورته فان دخول سورة السبب قطعي و اخراجها بالاجتهاد ممنوع كما حكى الاجماع عليه القاضي ابوبكر في التقريب ولا التفات الى من شذّ فجوز ذلك و منها الوقوف على المعنى و ازالة الاشكال قال الواحدي لايمكن معرفة تفسير الآية دون الوقوف على قصتها و بيان نزولها و قال ابن دقيق العيد بيان سبب النزول طريق قوي في فهم معاني القرآن و قال ابن تيمية معرفة سبب النزول يعين على فهم الآية فان العلم بالسبب يورث العلم بالمسبب و قد اشكل على مروان بن الحكم معنى قوله تعالى لا تحسبن الذين يفرحون بما اتوا الآية و قال لئين كان كل امرئ فرح بما اتى واحبّ ان يحمد بمالم يفعل معذ بالنعذبّن اجمعون حتى بيّن له ابن عباس رض ان الآية نزلت في اهل الكتاب حين سألهم النبي صلى الله عليه و سلم عن شيء فكتموه اياه و اخبروه بغيره واروه انهم اخبروه بما سألهم عنه و استحمدوا بذلك اليه اخرجه الشيخان و حكي عن عثمان بن مظعون و عمرو بن معدي كرب انهما كانا يقولان الخمر مباحة و يحتجان بقوله تعالى ليس على الذين آمنوا و عملوا الصالحات جناح فيما طعموا الآية و لو علما سبب نزولها لم يقولا ذلك و هو ان ناسا قالوا لما حرمت الخمر

على الاخلاص لله وحده و عبادته لاشريك له و اقام الصلوٰة آتى الزكاة فارقها و الله عنه راض قال انس وتصديق ذلك في كتاب الله في آخر ما نزل فان تابواواقا موا الصلوٰة و آتوا الزكوٰة الآية قلت يعني في آخر سورة نزلت و في البرهان لامام الحرمين ان قوله تعالى قل لا اجد فيما اوحي اليّ محرما الآية من آخرما نزل و تعقبه ابن الحصار بان السورة مكية باتفاق و لم يرد نقل بتأخر هذه الآية عن نزول السورة بل هي في محاجة المشركين و مخاصمتهم و هم بمكة انتهى تنبيه من المشكل على ما تقدم قوله تعالى اليوم اكملت لكم دينكم فانها نزلت بعرفة عام حجة الوداع و ظاهرها اكمال جميع الفرائض و الاحكام قبلها و قد صرح بذلك جماعة منهم السدي فقال لم ينزل بعدها حلال ولا حرام مع انه ورد في آية الربا والدين و الكلالة انها نزلت بعد ذلك وقد استشكل ذلك ابن جرير و قال الاولى ان يتأول على انه اكمل لهم دينهم با فرادهم بالبلد الحرام و اجلاء المشركين عنه حتى حجّه المسلمون لايخا لطهم المشركون ثم ايده بما اخرجه من طريق ابن ابي طلحة عن ابن عباس رض قال كان المشركون والمسلمون يحجون جميعا فلما نزلت براءة نفي المشركون عن البيت و حج المسلمون لايشاركهم في البيت الحرام احد من المشركين فكان ذلك من تمام النعمة و اتممت عليكم نعمتي النوع التاسع معرفة سبب النزول افرده بالتصنيف جماعة اقدمهم علي بن المديني شيخ البخاري و من اشهرها كتاب الواحدي على ما فيه من اعواز و قد اختصره الجعبري فحذف اسانيده و لم يزد عليه شيئا و الف فيه شيخ الاسلام ابوالفضل ابن حجر كتابا مات عنه مسودة فلم نقف عليه كاملا وقد الفت فيه كتابا حافلا موجزا محررا لم يؤلف مثله في هذا النوع سميته

القرآن نزولا قال البيهقي يجمع بين هذه الاختلافات ان صحت بان كل واحد اجاب بما عنده و قال القاضي ابوبكر فى الانتصار هذه الاقوال ليس فيها شيء مرفوع الى النبي صلى الله عليه و سلم وكل قاله بضرب من الاجتهاد و غلبة الظن و يحتمل ان كلا منهم اخبر عن آخر ما سمعه من النبي صلى الله عليه و سلم فى اليوم الذي مات فيه او قبل مرضه بقليل وغيره سمع منه بعد ذلك وان لم يسمعه هو و يحتمل ايضا ان تنزل الآية التي هي آخر آية تلاها الرسول صلى الله عليه و سلم مع آيات نزلت معها فيؤمر برسم مانزل معها بعد رسم تلك فيظن انه آخر مانزل فى الترتيب انتهى و من غريب ما ورد في ذلك ما اخرجه ابن جرير عن معاوية بن ابي سفيان انه تلا هذه الآية فمن كان يرجو لقاء ربه الآية و قال انها آخر آية نزلت من القرآن قال ابن كثير هذا اثر مشكل و لعله اراد انه لم ينزل بعدها آية تنسخها ولا تغير حكمها بل هي مثبتة محكمة قلت و مثله ما اخرجه البخاري و غيره عن ابن عباس رض قال نزلت هذه الآية و من يقتل مومنا متعمدا فجزاءه جهنم هي آخر مانزلت و ما نسخها شيء و عند احمد و النسائي عنه لقد نزلت في آخر ما نزل ما نسخها شيء و اخرج ابن مردويه من طريق مجاهد عن ام سلمة قالت آخر آية نزلت هذه الآية فاستجاب لهم ربهم اني لا اضيع عمل عامل الى آخرها قلت و ذلك انها قالت يا رسول الله ارى الله يذكر الرجال ولا يذكر النساء فنزلت ولا تتمنوا ما فضل الله به بعضكم على بعض و نزلت ان المسلمين و المسلمات الآية و نزلت هذه الآية فهي آخر الثلاثة نزولا او آخر ما نزل بعد ما كان ينزل فى الرجال خاصة و اخرج ابن جرير عن انس رض قال قال رسول الله صلى الله عليه و سلم من فارق الدنيا

الآيتين نزلتا جميعا فيصدق ان كلا منهما آخر بالنسبة لما عدا هما و يحتمل ان تكون الآخرية في آية النساء مقيدة بما يتعلق بالمواريث بخلاف آية البقرة و يحتمل عكسه و الاول ارجح لما في آية البقرة من الاشارة الى معنى الوفاة المستلزمة لخاتمة النزول انتهى وفى المستدرك عن ابيّ بن كعب قال آخر آية نزلت لقد جاءكم رسول من انفسكم الى آخر السورة و روى عبد الله بن احمد في زوائد المسند و ابن مردويه عن ابيّ انهم جمعوا القرآن في خلافة ابي بكر رض وكان رجال يكتبون فلما انتهوا الى هٰذه الآية من سورة براءة ثم انصرفوا صرف الله قلوبهم بانهم قوم لايفقهون ظنوا ان هذا آخر مانزل من القرآن فقال لهم ابيّ بن كعب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم اقرأني بعدها آيتين لقد جاءكم رسول من انفسكم الى قوله و هو رب العرش العظيم قال هذا آخر ما نزل من القرآن قال فختم بما فتح به بالله الذي لا اله الا هو و هو قوله وما ارسلنا من قبلك من رسول إلّا يوحى اليه انه لا آله الا انا فاعبدون و آخرج ابن مردويه عن ابيّ ايضا قال آخر القرآن عهدا بالله هاتان الآيتان لقد جاءكم رسول من انفسكم و اخرجه ابن الانباري بلفظ اقرب القرآن بالسماء عهدا و اخرج ابو الشيخ في تفسيره من طريق علي بن زيد عن يوسف المكي عن ابن عباس رض قال آخر آية نزلت لقد جاءكم رسول من انفسكم و اخرج مسلم عن ابن عباس رض قال آخر سورة نزلت اذا جاء نصر الله و الفتح و اخرج الترمذي و الحاكم عن عائشة رض قالت آخر سورة نزلت المائدة فما وجدتم فيها من حلال فاستحلوه الحديث و اخرجا ايضا عن عبد الله بن عمرو قال آخر سورة نزلت سورة المائدة و الفتح قلت يعني اذا جاء نصر الله و في حديث عثمان المشهور براءة من آخر

من طريق عكرمة عن ابن عباس رض قال آخر شيء نزل من القرآن
و اتقوا يوما ترجعون فيه الى الله الآية و اخرج ابن مردويه نحوه من
طريق سعيد بن جبير عن ابن عباس رض بلفظ آخر آية نزلت و اخرجه
ابن جرير من طريق العوفي و الضحاك عن ابن عباس رض و قال
الفريابي في تفسيره حدثنا سفيان عن الكلبي عن ابي صالح عن ابن
عباس رض قال آخر آية نزلت و اتقوا يوما ترجعون فيه الى الله الآيه
و كان بين نزولها و بين موت النبي صلى الله عليه و سلم احد و ثمانون
يوما و اخرج ابن ابي حاتم عن سعيد بن جبير قال آخر ما نزل من
القرآن كله و اتقوا يوما ترجعون فيه الى الله الآية و عاش النبي صلى
الله عليه و سلم بعد نزول هذه الآية تسع ليال ثم مات يوم الاثنين لليلتين
خلتا من ربيع الاول و اخرج ابن جرير مثله عن ابن جريج و اخرج
من طريق عطية عن ابي سعيد قال آخر آية نزلت و اتقوا يوما ترجعون
الآية و اخرج ابو عبيد في الفضائل عن ابن شهاب قال آخر القرآن عهدا
بالعرش آية الربا و آية الدين و اخرج ابن جرير من طريق ابن شهاب
عن سعيد بن المسيب انه بلغه ان احدث القرآن عهدا بالعرش آية
الدين مرسل صحيح الاسناد قلت ولا منافاة عندي بين هذه الروايات
في آية الربا و اتقوا يوما و آية الدين لان الظاهر انها نزلت دفعة واحدة
كترتيبها في المصحف و لانها في قصة واحدة فاخبر كل عن بعض ما
نزل بانه آخر و ذلك صحيح و قول البراء آخر ما نزل يستفتونك اي
في شان الفرائض و قال ابن حجر في شرح البخاري طريق الجمع بين
القولين في آية الربا و اتقوا يوما ان هذه الآية هي ختام الآيات المنزلة
في الربا اذ هي معطوفة عليهن و يجمع بين ذلك و بين قول البراء بان

ثم آية النحل فكلوا مما رزقكم الله حلالا طيبا الى آخرها وبالمدينة آية البقرة انما حرم عليكم الميتة الآية ثم آية المائدة حرمت عليكم الميتة الآية قاله ابن الحصار و روى البخارى عن ابن مسعود رض قال اول سورة انزلت فيها سجدة النجم قال الفريابي حدثنا ورقا عن ابن ابي نجيح عن مجاهد في قوله لقد نصركم الله في مواطن كثيرة قال هي اول ما انزل الله تعالى من سورة براءة وقال ايضا حدثنا اسرائيل حدثنا سعيد بن مسروق عن ابى الضحى قال اول ما نزل من براءة انفروا خفافا وثقالا ثم نزل اولها ثم آخرها و اخرج ابن اشته في كتاب المصاحف عن ابي مالك قال كان اول براءة انفروا خفافا وثقالا سنوات ثم انزلت براءة اول السورة فالفت بها اربعون آية و اخرج ايضا من طريق داؤد عن عامر في قوله انفروا خفافا وثقالا قال هي اول آية نزلت في براءة في غزوة تبوك فلما رجع من تبوك نزلت براءة الاثمان و ثلاثين آية من اولها و اخرج من طريق سفيان و غيره عن حبيب بن ابي عمرة عن سعيد بن جبير قال اول ما نزل من آل عمران هذا بيان للناس وهدى و موعظة للمتقين ثم انزلت بقيتها يوم احد النوع الثامن معرفة آخر ما نزل فيه اختلاف فروى الشيخان عن البراء ابن عازب قال آخر آية نزلت يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة و آخر سورة نزلت براءة و اخرج البخاري عن ابن عباس رض قال آخر آية نزلت آية الربا و روى البيهقي عن عمر مثله و المراد بها قوله تعالى يا ايها الذين آمنوا اتقوا الله و ذروا ما بقي من الربا و عند احمد و ابن ماجه عن عمر من آخر ما نزل آية الربا وعند ابن مردوية عن ابي سعيد الخدري قال خطبنا عمر فقال ان من آخر القرآن نزولا آية الربا و اخرج النسائي

و بطيبة عشرون ثم ثمان الطولى و عمران و انفال جلا
لاحزاب مائدة امتحان و النساء مع زلزلت ثم الحديد تأملا
و محمد و الرعد و الرحمن الا نسان الطلاق و لم يكن حشر ملا
نصر و نور ثم حج و المنا فق مع مجادلة و حجرات ولا
تحريمها مع جمعة و تغابن صف و فتح توبة ختمت اولا
اما الذي قد جاءنا سفرية عرفي اكملت لكم قد كملا
لكن اذا قمتم فجيشي بدا و اسأل من ارسلنا الشامي اقبلا
ان الذي فرض انتمى جحفيها و هو الذي كف الحديبي انجلا

فرع في اوائل مخصوصة اول ما نزل فى القتال روى الحاكم فى المستدرك عن ابن عباس رض قال اول آية نزلت فى القتال اذن للذين يقاتلون بانهم ظلموا و اخرج ابن جرير عن ابى العالية قال اول آية نزلت فى القتال بالمدينة و قاتلوا في سبيل الله الذين يقاتلونكم و فى الاكليل للحاكم ان اول آية نزلت فى القتال ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم و اموالهم اول ما نزل في شان القتل آية الاسراء و من قتل مظلوما الآية اخرجه ابن جرير عن الضحاك اول ما نزل فى الخمر روى الطيالسي في مسنده عن ابن عمر قال نزل فى الخمر ثلاث آيات فاول شئ يسألونك عن الخمر و الميسر الآية فقيل حرمت الخمر فقالوا يا رسول الله دعنا ننتفع بها كما قال الله تعالى فسكت عنهم ثم نزلت هذه الآية لا تقربوا الصلوة و انتم سكارى فقيل حرمت الخمر فقالوا يا رسول الله لا نشربها قرب الصلاة فسكت عنهم ثم نزلت يا ايها الذين آمنوا انما الخمر و الميسر فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم حرمت الخمر اول آية نزلت فى الاطعمة بمكة آية الانعام قل لا اجد فيما اوحي اليّ محرما

ثم المؤمنون ثم تبارك ثم الحاقة ثم سأل ثم عم يتساءلون ثم والنازعات ثم اذا السماء انفطرت ثم اذا السماء انشقت ثم الروم ثم العنكبوت ثم ويل للمطففين فذاك ما انزل بمكة وانزل بالمدينة سورة البقرة ثم آل عمران ثم الانفال ثم الاحزاب ثم المائدة ثم الممتحنة ثم اذا جاء نصر الله ثم النور ثم الحج ثم المنافقون ثم المجادلة ثم الحجرات ثم التحريم ثم الجمعة ثم التغابن ثم سبح الحواريين ثم الفتح ثم التوبة خاتمة القرآن قلت هذا سياق غريب وفي هذا الترتيب نظر وجابر بن زيد من علماء التابعين بالقرآن وقد اعتمد البرهان الجعبري على هذا الاثر في قصيدته التي سماها "تقريب المأمول في ترتيب النزول" فقال •

مكيّها ست ثمانون اعتلت نظمت على وفق النزول لمن تلا
اقرأ ونون مزمل مدثر والحمد تبت كورت لا على علا
ليل وفجر والضحى نشرح وعصر العاديات و كوثر الهاكم تلا
ارأيت قل يا الفيل مع فلق كذا ناس وقل هو نجمها عبس جلا
قدر وشمس والبروج و تينها ليلاف قارعة قيامة اقبلا
ويل لكل المرسلات وقاف مع بلد وطارقها مع اقتربت كلا
صاد واعراف وجن ثم يا سين وفرقان وفاطر اعتلا
كاف وطه ثلة الشعرا ونمل قص الاسرا يونس هود ولا
قل يوسف حجر وانعام وذبح ثم لقمان سبا زمر جلا
مع غافر مع فصلت مع زخرف ودخان جاثية و احقاف ملا
ذرو وغاشية و كهف ثم شورى و الخليل و الانبياء نحل حلا
و معارج نوح و طور و الفلا ح الملك واعيه وسأل وعم لا
غرق مع انفطرت و كدح ثم رو م العنكبوت و طففت فتكملا

براءة و اول سورة اعلنها رسول الله صلى الله عليه وسلم بمكة النجم و في شرح البخاري لابن حجرا تفقوا على ان سورة البقرة اول سورة انزلت بالمدينة و في دعوى الاتفاق نظر لقول علي بن الحسين المذكور و في تفسير النسفي عن الواقدي ان اول سورة نزلت بالمدينة سورة القدر و قال ابوبكر محمد بن الحارث بن ابيض في جزئه المشهور حدثنا ابوالعباس عبيد الله بن محمد بن اعين البغدادي حدثنا حسّان بن ابراهيم الكرماني حدثنا امية الازدي عن جابر بن زيد قال اول ما انزل الله تعالى من القرآن بمكة اقرأ باسم ربک ثم نٓ و القلم ثم يا ايها المزمل ثم يا ايها المدثر ثم الفاتحة ثم تبت يدا ابي لهب ثم اذا الشمس كورت ثم سبح اسم ربک الاعلى ثم و الليل اذا يغشى ثم و الفجر ثم و الضحى ثم الم نشرح ثم و العصر ثم و العاديات ثم الكوثر ثم الهاكم ثم ارأيت الذي يكذب ثم الكافرون ثم الم تركيف ثم قل اعوذ برب الفلق ثم قل اعوذ برب الناس ثم قل هو الله احد ثم و النجم ثم عبس ثم انا انزلناه ثم و الشمس وضحاها ثم البروج ثم و التين ثم لايلاف ثم القارعة ثم القيامة ثم و يل لكل همزة ثم و المرسلات ثم قٓ ثم البلد ثم الطارق ثم اقتربت الساعة ثم صٓ ثم الاعراف ثم الجن ثم يٓسٓ ثم الفرقان ثم الملائكة ثم كٓهٓيٓعٓصٓ ثم طٰهٰ ثم الواقعة ثم الشعراء ثم طٓسٓ سليمان ثم طٓسٓمٓ القصص ثم بني اسرائيل ثم التاسعة يعني يونس ثم هود ثم يوسف ثم الحجر ثم الانعام ثم الصافات ثم لقمٰن ثم سبا ثم الزمر ثم حٰمٓ المؤمن ثم حٰمٓ السجدة ثم حٰمٓ الزخرف ثم حٰمٓ الدخان ثم حٰمٓ الجاثية ثم حٰمٓ الاحقاف ثم الذاريات ثم الغاشية ثم الكهف ثم حٰمٓعٓسٓقٓ ثم تنزيل السجدة ثم الانبياء ثم النحل اربعين و بقيتها بالمدينة ثم انا ارسلنا نوحا ثم الطور

فانطلقا فقصا عليه فقال اذا خلوت وحدي سمعت نداء خلفي يا محمد يا محمد فانطلق هاربا فى الارض فقال لاتفعل اذا اتاك فاثبت حتى تسمع ما يقول ثم ائتني فاخبرني فلما خلا ناداه يا محمد قل بسم الله الرحمن الرحيم الحمد لله رب العالمين حتى بلغ ولا الضالين الحديث هذا مرسل رجاله ثقات قال البيهقي ان كان محفوظا فيحتمل ان يكون خبرا عن نزولها بعد ما نزلت عليه اقرأ و المدثر القول الرابع بسم الله الرحمن الرحيم حكاه ابن النقيب في مقدمة تفسيره قولا زائدا و اخرج الواحدي باسناده عن عكرمة و الحسن قالا اول ما نزل من القرآن بسم الله الرحمن الرحيم واول سورة اقرأ باسم ربك و اخرج ابن جرير وغيره من طريق الضحاك عن ابن عباس قال اول ما نزل جبرئيل على النبي صلى الله عليه وسلم قال يا محمد استعذ ثم قل بسم الله الرحمن الرحيم وعندي ان هذا لايعد قولا براسه فانه من ضرورة نزول السورة نزول البسملة معها فهي اول آية نزلت على الاطلاق و ورد في اول مانزل حديث آخر روى الشيخان عن عائشة رض قالت ان اول مانزل سورة من المفصل فيها ذكر الجنة والنار حتى اذا ثاب الناس الى الاسلام نزل الحلال والحرام وقد استشكل هذا بان اول مانزل اقرأ و ليس فيها ذكر الجنة والنار و اجيب بان من مقدرة اي من اول مانزل او المراد سورة المدثر فانها اول مانزل بعد فترة الوحي و في آخرها ذكر الجنة و النار فلعل آخرها نزل قبل نزول بقية اقرأ فرع اخرج الواحدي من طريق الحسين بن واقد قال سمعت علي بن الحسين يقول اول سورة نزلت بمكة اقرأ باسم ربك و آخر سورة نزلت بها المؤمنون و يقال العنكبوت واول سورة نزل بالمدينة ويل للمطففين و آخر سورة نزلت بها

السماء فرفعت راسي فاذا الملك الذي جاءني بحراء جالس على
كرسي بين السماء و الارض فرجعت فقلت زملوني زملوني فدثروني
فانزل الله يا ايها المدثر فقوله الملك الذي جاءني بحراء يدل على
ان هذه القصة متأخرة عن قصة حراء التي نزل فيها اقرأ باسم ربك
ثانيها ان مراد جابر بالاولية اولية مخصوصة بما بعد فترة الوحي لا اولية
مطلقة ثالثها ان المراد اولية مخصوصة بالامر بالانذار و عبر بعضهم عن
هذا بقوله اول ما نزل للنبوة اقرأ باسم ربك و اول مانزل للرسالة يا ايها
المدثر رابعها ان المراد اول ما نزل بسبب متقدم و هو ما وقع من
التدثر الناشي عن الرعب واما اقرأ فنزلت ابتداء بغير سبب متقدم
ذكره ابن حجر خامسها ان جابرا استخرج ذلك باجتهاده وليس هو
من روايته فيقدم عليه ما روته عائشة رض قاله الكرماني و احسن هذه
الاجوبة الاول و الاخير القول الثالث سورة الفاتحة قال فى الكشاف
ذهب ابن عباس ومجاهد رض الى ان اول سورة نزلت اقرأ واكثر المفسرين
الى ان اول سورة نزلت فاتحة الكتاب قال ابن حجر و الذي ذهب اليه
اكثر الامة هو الاول و اما الذي نسبه الى الاكثر فلم يقل به الا عدد اقل
من القليل بالنسبة الى من قال بالاول وحجته ما اخرجه البيهقي
فى الدلائل و الواحدي من طريق يونس بن بكير عن يونس بن عمرو
عن ابيه عن ابي ميسرة عمرو بن شرحبيل ان رسول الله صلى الله عليه
و سلم قال لخديجة اني اذا خلوت وحدي سمعت نداء فقد و الله
خشيت ان يكون هذا امرا فقالت معاذ الله ما كان الله ليفعل بك
فو الله انك لتؤدي الامانة و تصل الرحم و تصدق الحديث فلما دخل
ابوبكر ذكرت خديجة حديثه له و قالت اذهب مع محمد الى ورقة

ابن منصور في سننه حدثنا سفيان عن عمرو بن دينار عن عبيد بن
عمير قال جاء جبرئيل الى النبي صلى الله عليه وسلم فقال له اقرأ قال
وما اقرء فوالله ما انا بقارئ فقال اقرأ باسم ربك الذي خلق فكان يقول هو
اول ما انزل و قال ابوعبيد في فضائله حدثنا عبد الرحمن عن سفيان عن
ابن ابي نجيح عن مجاهد قال ان اول مانزل من القرآن اقرأ باسم ربك و ن
والقلم واخرج ابن اشته في كتاب المصاحف عن عبيد بن عمير قال جاء
جبرئيل الى النبي صلى الله عليه وسلم بنمط فقال اقرأ قال ما انا بقارئ قال
اقرأ باسم ربك فيرون انها اول سورة نزلت من السماء واخرج عن الزهري
ان النبي صلى الله عليه و سلم كان بحراء اذا تى ملك بنمط من ديباج فيه
مكتوب اقرأ باسم ربك الذي خلق الى مالم يعلم القول الثاني يا ايها المدثر
روى الشيخان عن ابي سلمة بن عبد الرحمن قال سألت جابر بن
عبد الله اي القرآن انزل قبل قال يا ايها المدثر قلت او اقرأ باسم ربك
قال احدثكم ما حدثنا به رسول الله صلى الله عليه و سلم قال رسول الله
صلى الله عليه و سلم اني جاورت بحراء فلما قضيت جواري نزلت
فاستبطنت الوادي فنظرت امامي و خلفي وعن يميني وعن شمالي
ثم نظرت الى السماء فاذا هو يعني جبرئيل فاخذتني رجفة فاتيت
خديجة فامرتهم فدثروني فانزل الله يا ايها المدثر قم فانذر و اجاب
الاول عن هذا الحديث باجوبة احدها ان السؤال كان عن نزول سورة
كاملة فبين ان سورة المدثر نزلت بكمالها قبل نزول تمام سورة اقرأ فانها
اول ما نزل منها صدرها و يؤيد هذا ما في الصحيحين ايضا عن ابي
سلمة عن جابر سمعت رسول الله صلى الله عليه و سلم و هو يحدث
عن فترة الوحي فقال في حديثه فبينا انا امشي سمعت صوتا من

المنتهى الحديث وفيه فاعطي رسول الله صلى الله عليه وسلم منها ثلاثا اعطي الصلوات الخمس واعطي خواتيم سورة البقرة وغفرلمن لا يشرك من امته بالله شيأ المقحمات وفي الكامل للهذلي نزلت آمن الرسول الى آخرها بقاب قوسين النوع السابع معرفة اول مانزل اختلف في اول مانزل من القرآن على اقوال احدها وهو الصحيح اقرأ باسم ربك روى الشيخان وغيرهما عن عائشة رض قالت اول مابدئ به رسول الله صلى الله عليه وسلم من الوحي الرؤيا الصادقة في النوم فكان لايرى رؤيا الاجاءت مثل فلق الصبح ثم حبب اليه الخلاء فكان يأتي حراء فيتحنث فيه الليالي ذوات العدد ويتزود لذلك ثم يرجع الى خديجة رض فتزوده لمثلها حتى فجئه الحق وهو في غار حراء فجاءه الملك فيه فقال اقرأ قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت ما انا بقارئ فاخذني فغطني حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فغطني الثانية حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ فقلت ما انا بقارئ فغطني الثالثة حتى بلغ مني الجهد ثم ارسلني فقال اقرأ باسم ربك الذي خلق حتى بلغ مالم يعلم فرجع بها رسول الله صلى الله عليه وسلم ترجف بوادره الحديث واخرج الحاكم في المستدرك والبيهقي في الدلائل وصححاه عن عائشة رض قالت اول سورة نزلت من القرآن اقرأ باسم ربك واخرج الطبراني في الكبير بسند على شرط الصحيح عن ابي زجاء العطاردي قال كان ابو موسى يقرئنا فيجلسنا حلقا عليه ثوبان ابيضان فاذا تلى هذه السورة اقرأ باسم ربك الذي خلق قال هذه اول سورة انزلت على محمد رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال سعيد

الاغفاة و قالوا من الوحي ما كان يأتيه فى النوم لان رؤيا الانبياء وحي قال و هذا صحيح لكن الاشبه ان يقال ان القرآن كله نزل فى اليقظة و كأنه خطرله فى النوم سورة الكوثر المنزلة فى اليقظة او عرض عليه الكوثر الذي و ردت فيه السورة فقرأها عليهم و فسرها لهم قال و ورد في بعض الروايات انه اغمي عليه و قد يحمل ذلك على الحالة التي كانت تعتريه عند نزول الوحي و يقال لها برحاء الوحي انتهى قلت الذي قاله الرافعي في غاية الاتجاه و هو الذي كنت اميل اليه قبل الوقوف عليه و التأويل الاخير اصح من الاول لان قوله انزل عليّ آنفاً يدفع كونها نزلت قبل ذلك بل نقول نزلت تلك الحالة و ليس الاغفاة اغفاة نوم بل الحالة التي كانت تعتريه عند الوحي فقد ذكر العلماء انه كان يوخذ عن الدنيا النوع السادس الارضي والسمائي تقدم قول ابن العربي ان من القرآن سمائيا و ارضيا و ما نزل بين السماء والارض وما نزل تحت الارض فى الغار قال واخبرنا ابوبكر الفهري انبأنا التميمي انبأنا هبة الله المفسر انه قال نزل القرآن بين مكة و المدينة الاست آيات نزلت لا فى الارض و لا فى السماء ثلاث في سورة الصافات وما منا الا له مقام معلوم الآيات الثلاث و واحدة فى الزخرف و اسأل من ارسلنا من قبلك من رسلنا الآية و الآيتان من اخر سورة البقرة نزلت ليلة المعراج قال ابن العربي ولعله اراد فى الفضا بين السماء و الارض قال و اما ما نزل تحت الارض فى الغار فسورة المرسلات لما فى الصحيح عن ابن مسعود رض قلت اما الآيات المتقدمة فلم اقف على مستند لما ذكره فيها الا آخر البقرة فيمكن ان يستدل بما اخرجه مسلم عن ابن مسعود رض لما اسري برسول الله صلى الله عليه وسلم انتهى الى سدرة

شات والآيات التي في غزوة الخندق من سورة الاحزاب فقد كانت في البرد ففي حديث حذيفة رض تفرق الناس عن رسول الله صلى الله عليه وسلم ليلة الاحزاب الا اثنى عشر رجلا فاتاني رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال قم فانطلق الى عسكر الاحزاب قلت يا رسول الله والذي بعثك بالحق ما قمت لك الاحياء من البرد الحديث و فيه فانزل الله يا ايها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم اذ جاء تكم جنود الى آخرها اخرجه البيهقي في الدلائل النوع الخامس الفراشي والنومي من امثلة الفراشي قوله والله يعصمك من الناس كما تقدم وآية الثلاثة الذين خلفوا ففي الصحيح انها نزلت و قد بقي من الليل ثلثه وهو صلى الله عليه وسلم عند ام سلمة واستشكل الجمع بين هذا وقوله صلى الله عليه وسلم في حق عائشة رض ما نزل عليّ الوحي في فراش امرأة غيرها قال القاضي جلال الدين ولعل هذا كان قبل القصة التي نزل الوحي فيها في فراش ام سلمة رض قلت ظفرت بما يوخذ منه جواب احسن من هذا فروى ابو يعلى في مسنده عن عائشة رض قالت اعطيت تسعا الحديث وفيه وان كان الوحي لينزل عليه وهو في اهله فينصرفون عنه وان كان لينزل عليه وانا معه في لحافه وعلى هذا لامعارضة بين الحديثين كما لايخفى واما النومي فمن امثلته سورة الكوثر لما روى مسلم عن انس رض قال بينا رسول الله صلى الله عليه وسلم بين اظهرنا اذا غفي اغفاة ثم رفع راسه متبسما فقلنا ما اضحكك يا رسول الله فقال أُنزِلَ عليّ آنفاً سورة فقرأ بسم الله الرحمن الرحيم انا اعطيناك الكوثر فصل لربك وانحر ان شانئك هو الابتر وقال الامام الرافعي في اماليه فهم فاهمون من الحديث ان السورة نزلت في تلك

والاخرى فى الصيف وهي التي في آخرها وفي صحيح مسلم عن عمر رضي الله تعالى عنه ما راجعت رسول الله صلى الله عليه و سلم في شيء ما راجعته فى الكلالة و ما اغلظ لي في شيء ما اغلظ لي فيه حتى طعن باصبعه في صدري و قال يا عمر الاتكفيك آية الصيف التي في آخر سورة النساء وفى المستدرك عن ابي هريرة رض ان رجلا قال يا رسول الله ما الكلالة قال اما سمعت الآية التي نزلت فى الصيف يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة وقد تقدم ان ذلك في سفر حجة الوداع فيعد من الصيفي ما نزل فيها كاول المائدة وقوله اليوم اكملت لكم دينكم واتقوا يوما ترجعون وآية الدين وسورة النصر ومنه الآيات النازلة في غزوة تبوك فقد كانت في شدة الحر اخرج البيهقي فى الدلائل من طريق ابن اسحق عن عاصم بن عمرو بن قتادة وعبد الله بن ابي بكر بن حزم ان رسول الله صلى الله عليه وسلم ما كان يخرج في وجه من مغازيه الا اظهر انه يريد غيره غير انه في غزوة تبوك قال يا ايها الناس اني اريد الروم فاعلمهم وذلك في زمان البأس وشدة من الحر وجدب البلاد فبينما رسول الله صلى الله عليه وسلم ذات يوم في جهازه اذ قال للجد ابن قيس هل لك في بنات بنى الاصفر قال يا رسول الله لقد علم قومي انه ليس احد اشد عجبا بالنساء مني واني اخاف ان رأيت نساء بنى الاصفران يفتنني فأذن لي فانزل الله ومنهم من يقول ايذن لي الآية وقال رجل من المنافقين لا تنفروا فى الحر فانزل الله قل نار جهنم اشد حرا ومن امثلة الشتائي قوله ان الذين جاؤا بالافك الى قوله ورزق كريم ففى الصحيح عن عايشة رض انها نزلت في يوم

ليلة الاسراء و منها اول الفتح ففي البخاري من حديث عمر لقد انزلت عليّ الليلة سورة هي احب اليّ مما طلعت عليه الشمس فقرأ انا فتحنا لك فتحا مبينا الحديث و منها سورة المنافقين كما اخرجه الترمذي عن زيد بن ارقم و منها سورة والمرسلات قال السخاوي في جمال القراء روي عن ابن مسعود انها نزلت ليلة الجن بحراء قلت هذا اثر لا يعرف ثم رأيت في صحيح الاسماعيلي وهو مستخرجه على البخاري انها نزلت ليلة عرفة بغار منى و هو فى الصحيحين بدون قوله ليلة عرفة و المراد بها ليلة التاسع من ذى الحجة فانها التي كان صلى الله عليه و سلم يبيتها بمنى و منها المعوذتان فقد قال ابن اشته فى المصاحف حدثنا محمد بن يعقوب حدثنا ابو داؤد حدثنا عثمان بن ابي شيبه حدثنا جرير عن بيان عن قيس عن عقبة بن عامر الجهني قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انزلت الليلة آيات لم يرمثلهن قل اعوذ برب الفلق و قل اعوذ برب الناس فرع ومنه ما نزل بين الليل و النهار في وقت الصبح وذلك آيات منها آية التيمم فى المائدة ففي الصحيح عن عايشة رض وحضرت الصبح فالتمس الماء فلم يوجد فنزلت يا ايها الذين آمنوا اذا قمتم الى الصلاة الى قوله لعلكم تشكرون و منها ليس لك من الامر شيء ففى الصحيح انها نزلت و هو فى الركعة الاخيرة من صلاة الصبح حين اراد ان يقنت يدعو على ابي سفيان و من ذكر معه تنبيه فان قلت فما تصنع بحديث جابر مرفوعا اصدق الرويا ما كان نهارا لان الله خصّني بالوحي نهارا اخرجه الحاكم في تاريخه قلت هذا الحديث منكر لايحتج به النوع الرابع الصيفي و الشتائي قال الواحدي انزل الله فى الكلالة آيتين احدٰهما فى الشتاء وهي التي في اول النسا

با لليل حتى نزلت فترك الحرس ومنها سورة الانعام اخرج الطبراني وابو عبيد في فضائله عن ابن عباس رض قال نزلت سورة الانعام بمكة ليلا جملة حولها سبعون الف ملك يجأرون بالتسبيح ومنها آية الثلاثة الذين خلفوا ففى الصحيح من حديث كعب فانزل الله توبتنا حين بقي الثلث الاخير من الليل ومنها سورة مريم روى الطبراني عن ابي مريم الغساني قال اتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم فقلت ولدت لي الليلة جارية فقال والليلة انزلت عليّ سورة مريم سمها مريم ومنها اول الحج ذكره ابن حبيب ومحمد بن بركات السعيدي في كتابه الناسخ والمنسوخ وجزم به السخاوي في جمال القراء وقد يستدل له بما اخرجه ابن مردويه عن عمران بن حصين انها نزلت والنبي صلى الله عليه وسلم في سفر وقد نعس بعض القوم وتفرق بعضهم فرفع بها صوته الحديث ومنها آية الاذن في خروج النسوة فى الاحزاب قال القاضي جلال الدين والظاهر انها يا ايها النبي قل لازواجك وبناتك الآية ففى البخاري عن عايشة رض خرجت سودة بعد ما ضرب الحجاب لحاجتها وكانت امرأة جسيمة لا تخفى على من يعرفها فرآها عمر فقال يا سودة اما والله ما تخفين علينا فانظري كيف تخرجين قالت فانكفأت راجعة الى رسول الله صلى الله عليه وسلم وانه ليتعشى وفي يده عرق فقلت يا رسول الله خرجت لبعض حاجتي فقال لي عمر كذا وكذا فاوحى الله اليه وان العرق في يده ما وضعه فقال انه قد آذن لكُنّ ان تخرجن لحاجتكن قال القاضي جلال الدين وانما قلنا ان ذلك كان ليلا لانهن انما كن يخرجن للحاجة ليلا كما فى الصحيح عن عايشة رض في حديث الافك ومنها واسأل من ارسلنا من قبلك من رسلنا على قول ابن حبيب انها نزلت

يقتضي انها نزلت نهارا بين الظهر و العصر قال القاضي جلال الدين و الارجح بمقتضى الاستدلال نزو لها بالليل لان قضية اهل قباء كانت فى الصبح وقباء قريبة من المدينة فيبعد ان يكون رسول الله صلى الله عليه وسلم اخّر البيان لهم من العصر الى الصبح وقال ابن حجر الاقوى ان نزولها كان نهارا و الجواب عن حديث ابن عمر ان الخبر وصل وقت العصر الى من هو داخل المدينة و هم بنو حارثه و وصل وقت الصبح الى من هو خارج المدينة وهم بنو عمرو بن عوف اهل قباء وقوله قد انزل عليه الليلة مجاز من اطلاق الليلة على بعض اليوم الماضي والتي تليه قلت ويؤيد هذا ما اخرجه النسائي عن ابي سعيد بن المعلى قال مررنا يوما و رسول الله صلى الله عليه وسلم قاعد على المنبر فقلت لقد حدث امر فجلست فقرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم هذه الآية قد نرى تقلب وجهك فى السماء حتى فرغ منها ثم نزل فصلى الظهر ومنها او اخر آل عمران اخرج ابن حبان في صحيحه و ابن المنذر وابن مردويه وابن ابى الدنيا في كتاب التفكر عن عايشه رض ان بلا لا اتى النبي صلى الله عليه و سلم يوذنه لصلاة الصبح فوجده يبكي فقال يا رسول الله مايبكيك قال وما يمنعنى ان ابكي وقد انزل علّي هذه الليلة ان في خلق السمٰوات والارض واختلاف الليل والنهار لآيات لاُولى الالباب ثم قال ويل لمن قرأها ولم يتفكر ومنها والله يعصمك من الناس اخرج الترمذي والحاكم عن عايشه رض قالت كان النبي صلى الله عليه و سلم يحرس حتى نزلت فاخرج راسه من القبة فقال يا ايها الناس انصرفوا فقد عصمني الله واخرج الطبراني عن عصمة ابن مالك الخطمي قال كنا نحرس رسول الله صلى الله عليه وسلم

مع النبي صلى الله عليه وسلم في غار بمنى اذ نزلت عليه والمرسلات الحديث ومنها سورة المطففين او بعضها حكى النسفي وغيره انها نزلت في سفر الهجرة قبل دخوله صلى الله عليه وسلم المدينة ومنها اول سورة اقرأ نزل بغار حرا كما في الصحيحين ومنها سورة الكوثر اخرج ابن جرير عن سعيد بن جبير انها نزلت يوم الحديبية وفيه نظر ومنها سورة النصر اخرج البزار والبيهقي في الدلائل عن ابن عمر قال انزلت هذه السورة اذا جاء نصر الله والفتح على رسول الله صلى الله عليه وسلم اوسط ايام التشريق فعرف انه الوداع فامر بناقته القصوى فرحلت ثم قام فخطب الناس فذكر خطبته المشهورة النوع الثالث معرفة النهاري والليلي امثلة النهاري كثيرة قال ابن حبيب نزل اكثر القرآن نهارا واما الليلي فتتبعت له امثلة منها آية تحويل القبلة ففي الصحيحين من حديث ابن عمر بينما الناس بقباء في صلاة الصبح اذا تاهم آت فقال ان النبي صلى الله عليه وسلم قد انزل عليه الليلة قرآن وقد أُمِرَ ان يستقبل القبلة وروى مسلم عن انس ان النبي صلى الله عليه وسلم كان يصلي نحو بيت المقدس فنزلت قد نرى تقلب وجهك في السماء الآية فمر رجل من بني سلمة وهم ركوع في صلوٰة الفجر وقد صلوا ركعة فنادى الا ان القبلة قد حولت فمالوا كلهم نحو القبلة لكن في الصحيحين عن البراء ان النبي صلى الله عليه وسلم صلى قِبَل بيت المقدس ستة عشرا وسبعة عشر شهرا وكان يعجبه ان تكون قبلته قبل البيت وانه اول صلاة صلاها العصر وصلى معه قوم فخرج رجل ممن صلى معه فمر على اهل المسجد وهم راكعون فقال اشهد بالله لقد صليت مع رسول الله صلى الله عليه وسلم قِبَل الكعبة فدار وكما هم قِبَل البيت فهذا

ومنها سورة الفتح اخرج الحاكم وغيره عن المسور بن مخرمه ومروان بن الحكم قالا نزلت سورة الفتح بين مكة والمدينة في شان الحديبية من اولها الى اخرها وفي المستدرك ايضا من حديث مجمع بن جارية ان اولها نزل بكراع الغميم ومنها يا ايها الناس انا خلقناكم من ذكر وانثى الآية اخرج الواحدي عن ابن ابي مليكة انها نزلت بمكة يوم الفتح لما رقا بلال على ظهر الكعبة واذن فقال بعض الناس اهذا العبد الاسود يوذن على ظهر الكعبة ومنها سيهزم الجمع الآية قيل انها نزلت يوم بدر حكاه ابن الفرس وهو مردود لما سيأتي في النوع الثاني عشر ثم رأيت عن ابن عباس رض ما يؤيده ومنها قال النسفي قوله ثلة من الاولين وقوله افبهذا الحديث انتم مدهنون نزلتا في سفره صلى الله عليه وسلم الى المدينة ولم اقف له على مستند ومنها وتجعلون رزقكم انكم تكذبون اخرج ابن ابي حاتم من طريق يعقوب بن مجاهد عن ابي حرزة قال نزلت في رجل من الانصار في غزوة تبوك لما نزلوا الحجر فامرهم رسول الله صلى الله عليه وسلم ان لايحملوا من مائها شيئا ثم ارتحل ثم نزل منزلا آخر وليس معهم ماء فشكوا ذلك فدعا فارسل الله سبحانه وتعالى سحابة فامطرت عليهم حتى استقوا منها فقال رجل من المنافقين انما مطرنا بنوء كذا فنزلت ومنها آية الامتحان يا ايها الذين امنوا اذا جاءكم المؤمنات مهاجرات الآية اخرج ابن جرير عن الزهري انها نزلت باسفل الحديبية ومنها سورة المنافقين اخرج الترمذي عن زيد بن ارقم انها نزلت ليلا في غزوة تبوك واخرج عن سفيان انها نزلت في غزوة بني المصطلق وبه جزم ابن اسحق وغيره ومنها سورة المرسلات اخرج الشيخان عن ابن مسعود قال بينما نحن

من الارض ليخرجوك منها اخرج ابو الشيخ والبيهقي في الدلائل من طريق شهر بن جوشب عن عبدالرحمن بن غنم انها نزلت في تبوك ومنها اول الحج اخرج الترمذي والحاكم عن عمران بن حصين قال لما انزلت على النبي صلى الله عليه وسلم يا ايها الناس اتقوا ربكم ان زلزلة الساعة شيء عظيم الى قوله ولكن عذاب الله شديد انزلت عليه هذه وهو في سفر الحديث وعند ابن مردوية من طريق الكلبي عن ابي صالح عن ابن عباس رض انها نزلت في مسيره في غزوة بني المصطلق ومنها هذان خصمان الآيات قال القاضي جلال الدين البلقيني الظاهر انها نزلت يوم بدر وقت المبارزة لما فيه من الاشارة بهذان ومنها اذن للذين يقاتلون الآية اخرج الترمذي عن ابن عباس رض قال لما اخرج النبي صلى الله عليه وسلم من مكة قال ابوبكر رض اخرجوا نبيهم ليهلكن فنزلت قال ابن الحصار استنبط بعضهم من هذا الحديث انها نزلت في سفر الهجرة ومنها الم تر الى ربك كيف مد الظل الآية قال ابن حبيب نزلت بالطايف ولم اقف له على مستند ومنها ان الذي فرض عليك القرآن نزل بالجحفة في سفر الهجرة كما اخرجه ابن ابي حاتم عن الضحاك ومنها اول الروم روى الترمذي عن ابي سعيد قال لما كان يوم بدر ظهرت الروم على فارس فاعجب ذلك المومنين فنزلت آلم غلبت الروم الى قوله بنصر الله قال الترمذي غلبت يعني بالفتح ومنها واسأل من ارسلنا من قبلك من رسلنا الآية قال ابن حبيب نزلت ببيت المقدس ليلة الاسراء ومنها وكأيّن من قرية هي اشد قوة الآية قال السخاوي في جمال القراء قيل ان النبي صلى الله عليه وسلم لما توجه مهاجرا الى المدنية وقف ونظر الى مكة وبكى فنزلت

وقال ابو عبيد البكري البيداء هو الشرف الذي قدام ذى الحليفة من طريق مكة قال وذات الجيش من المدينة على بريد ومنها يا ايها الذين آمنوا اذكروا نعمة الله عليكم اذ همّ قوم الآية اخرج ابن جرير عن قتادة قال ذكرلنا انها انزلت على رسول الله صلى الله عليه و سلم وهو ببطن نخل فى الغزوة السابعة حين اراد بنوا ثعلبة وبنو محارب ان يفتكوا به فاطّلعه الله على ذلك ومنها والله يعصمك من الناس في صحيح ابن حبان عن ابي هريرة انها نزلت فى السفر و اخرج ابن ابي حاتم و ابن مردويه عن جابر انها نزلت في ذات الرقاع باعلى نخل في غزوة بني انمار ومنها اول الانفال نزلت ببدر عقب الوقعة كما اخرجه احمد عن سعد بن ابي وقاص ومنها اذ تستغيثون ربكم الآية نزلت ببدر ايضا كما اخرجه الترمذي عن عمر ومنها والذين يكنزون الذهب الآية نزلت في بعض اسفاره كما اخرجه احمد عن ثوبان ومنها قوله لوكان عرضا قريبا الآيات نزلت في غزوة تبوك كما اخرجه ابن جرير عن ابن عباس ومنها ولئن سألتهم ليقولن انما كنا نخوض ونلعب نزلت في غزوة تبوك كما اخرجه ابن ابي حاتم عن ابن عمر ومنها ما كان للنبي والذين آمنوا معه الآية اخرج الطبراني وابن مردويه عن ابن عباس رض انها نزلت لما خرج النبي صلى الله عليه وسلم معتمرا وهبط من ثنية عسفان فزار قبر امّه واستأذن فى الاستغفار لها ومنها خاتمة النحل اخرج البيهقي فى الدلائل والبزار عن ابي هريرة رض انها نزلت باحد والنبي صلى الله عليه وسلم واقف على حمزة حين استشهد واخرج الترمذي والحاكم عن أبيّ بن كعب انها نزلت يوم فتح مكة ومنها وان كادوا ليستفزونك

ومنها ان الله يأمركم ان تؤدوا الامانات الى اهلها نزلت يوم الفتح في جوف الكعبة كما اخرجه سُنَيدٌ في تفسيره عن ابن جريج واخرجه ابن مردويه عن ابن عباس رض ومنها واذا كنت فيهم فاقمت لهم الصلوٰة الآية نزلت بعسفان بين الظهر والعصر كما اخرجه احمد عن ابي عياش الزرقي ومنها يستفتونك قل الله يفتيكم فى الكلالة اخرج البزار وغيره عن حذيفة انها نزلت على النبي صلى الله عليه وسلم في مسيره ومنها اول المائدة اخرج البيهقي في شعب الايمان عن اسماء بنت يزيد انها نزلت بمنى واخرج فى الدلائل عن ام عمرو عن عمها انها نزلت في مسيره واخرج ابوعبيد عن محمد بن كعب قال نزلت سورة المائدة في حجة الوداع فيمابين مكة والمدينة ومنها اليوم اكملت لكم دينكم فى الصحيح عن عمر رض انها نزلت عشية عرفة يوم الجمعة عام حجة الوداع وله طرق كثيرة لكن اخرج ابن مردويه عن ابي سعيد الخدري انها نزلت يوم غديرخم واخرج مثله من حديث ابي هريرة وفيه انه اليوم الثامن عشر من ذى الحجة مرجعه من حجة الوداع وكلاهما لايصح ومنها آية التيمم فيها فى الصحيح عن عايشة رض انها نزلت بالبيداء وهم داخلون المدينة وفي لفظ بالبيداء او بذات الجيش قال ابن عبد البر فى التمهيد يقال انه كان في غزوة بنى المصطلق جزم به فى الاستذكار وسبقه الى ذلك ابن سعد وابن حبان وغزوة بنى المصطلق هي غزوة المريسيع واستبعد ذلك بعض المتأخرين قال لان المريسيع من ناحية مكة بين قديد والساحل وهذه القصة من ناحية خيبر لقول عايشه رض بالبيداء اوبذات الجيش وهما بين المدينة وخيبر كما جزم به النووي لكن جزم ابن المتين بان البيداء هي ذوالحليفة

معرفة الحضري والسفري امثلة الحضري كثيرة واما السفري فله امثلة تتبعتها منها واتخذوا من مقام ابراهيم مصلى نزلت بمكة عام حجة الوداع فاخرج ابن ابي حاتم وابن مردويه عن جابر قال لما طاف النبي صلى الله عليه وسلم قال له عمر هذا مقام ابينا ابراهيم قال نعم قال افلاتتخذه مصلى فنزلت واخرج ابن مردويه من طريق عمرو بن ميمون عن عمر بن الخطاب رض انه مربمقام ابراهيم فقال يا رسول الله اليس تقوم مقام خليل ربنا قال بلى قال افلا تتخذه مصلى فلم يلبث الا يسيرا حتى نزلت وقال ابن الحصار نزلت اما في عمرة القضاء اوفي غزوة الفتح او حجة الوداع ومنها وليس البربان تأتوا البيوت من ظهورها الاية روى ابن جرير عن الزهري انها نزلت في عمرة الحديبية وعن السدي انها نزلت في حجة الوداع ومنها واتموا الحج والعمرة لله فاخرج ابن ابي حاتم عن صفوان بن امية قال جاء رجل الى النبي صلى الله عليه وسلم متضمخ بالزعفران عليه جبة فقال كيف تأمرني في عمرتي فنزلت فقال اين السايل عن العمرة الق عنك ثيابك ثم اغتسل الحديث ومنها فمن كان منكم مريضا او به اذى من راسه الآية نزلت بالحديبية كما اخرجه احمد عن كعب بن عجرة الذي نزلت فيه و الواحدي عن ابن عباس رض ومنها امن الرسول الآية قيل نزلت يوم فتح مكة ولم اقف له على دليل ومنها واتقوا يوما ترجعون الآية نزلت بمنى عام حجة الوداع فيما اخرجه البيهقي في الدلائل ومنها الذين يستجابو الله والرسول الآية واخرج الطبراني بسند صحيح عن ابن عباس انها نزلت بحمراء الاسد ومنها آية التيمم في النساء اخرج ابن مردوية عن الاسلع بن شريك انها نزلت في بعض اسفار النبي صلى الله عليه وسلم

اوجه تتعلق بهذا النوع ذكرهو امثلتها فنذكره مثال ما نزل بمكة وحكمه مدني يا ايها الناس انا خلقناكم من ذكر وانثى الآية نزل بمكة يوم الفتح وهي مدنية لانها نزلت بعد الهجرة وقوله اليوم اكملت لكم دينكم كذلك قلت وكذا قوله ان الله يأمركم ان تؤدوا الامانات الى اهلها في آيات أخر ومثال ما نزل بالمدينة وحكمه مكي سورة الممتحنة فانها نزلت بالمدينة مخاطبة لاهل مكة وقوله فى النحل والذين هاجروا فى الله الى آخرها نزل بالمدينة مخاطبابه اهل مكة وصدر برآة نزل بالمدينة خطابا لمشركي اهل مكة ومثال ما يشبه تنزيل المدني فى السور المكية قوله فى النجم الذين يجتنبون كباير الا ثم والفواحش الا اللمم فان الفواحش كل ذنب فيه حد والكبائر كل ذنب عاقبة النار واللمم ما بين الحدين من الذنوب ولم يكن بمكة حد ولا نحوه ومثال ما يشبه تنزيل مكة فى السور المدنية قوله والعاديات ضبحا وقوله فى الانفال واذ قالوا اللهم ان كان هذا هوالحق الآية ومثال ما حمل من مكة الى المدنية سورة يوسف والاخلاص قلت وسبح كما تقدم في حديث البخاري ومثال ما حمل من المدينة الى مكة يسألونك عن الشهر الحرام قتال فيه وآية الربا وصدر برأة وقوله ان الذين توفا هم الملايكه ظالمي انفسهم الآيات ومثال ما حمل الى الحبشة قل يا اهل الكتاب تعالوا الى كلمة سوآء الآيات قلت صح حملها الى الروم وينبغي ان يمثل لما حمل الى الحبشة بسورة مريم فقد صح ان جعفر بن ابي طالب رض قرأها على النجاشي اخرجه احمد في مسنده واما مانزل بالجحفة والطايف وبيت المقدس والحديبية فسيأتي فى النوع الذي يلي هذا ويضم اليه ما نزل بمنى وعرفات وعسفان وتبوك وبدر وأحد وحرا وحمراء الاسد النوع الثاني

مكة او المدينة وقال القاضي ان كان الرجوع في هذا الى النقل فمسلم و ان كان السبب فيه حصول المؤمنين بالمدينة على الكثرة دون مكة فضعيف اذ يجور خطاب المؤمنين بصفتهم وباسمهم وجنسهم و يؤمر غير المؤمنين بالعبادة كما يؤمر المؤمنين بالاستمرار عليها والازدياد منها نقله الامام فخر الدين في تفسيره و اخرج البيهقي فى الدلائل من طريق يونس بن بكير عن هشام بن عروة عن ابيه قال كل شيء نزل من القرآن فيه ذكر الامم و القرون فانما نزل بمكة وما كان من الفرائض والسنن فانما نزل بالمدينة وقال الجعبري لمعرفة المكي والمدني طريقان سماعي وقياسي فالسماعي ما وصل الينا نزوله باحدهما والقياسي كل سورة فيها يا ايها الناس فقط او كلا او اولها حرف تهج سوى الزهراوين والرعد او فيها قصة ادم و ابليس سوى البقرة فهي مكية و كل سورة فيها قصص الانبياء و الامم الخالية مكية وكل سورة فيها فريضة او حد فهي مدنية انتهى وقال مكي كل سورة فيها ذكر المنافقين فمدينة زاد غيره سوى العنكبوت و في كامل الهذلي كل سورة فيها سجدة فهي مكية وقال الديرينى * وما نزلت كلا بيثرب فاعلمن * ولم تأت فى القرآن في نصفه الاعلى * و حكمة ذلك ان النصف الاخير نزل اكثره بمكة واكثرها جبابرة فتكررت فيه على وجه التهديد و التعنيف لهم والانكار عليهم بخلاف النصف الاول وما نزل منه في اليهود لم يحتج الى ايرادها فيه لذلهم وضعفهم ذكره العماني فائدة اخرج الطبراني عن ابن مسعود قال نزل المفصل بمكة فمكثنا حججا نقرؤه لاينزل غيره تنبيه قد تبين مما ذكرناه من الاوجه التي ذكرها ابن حبيب المكي و المدني وما اختلف فيه و ترتيب نزول ذلك و الآيات و المدنيات فى السور المكية والآيات المكيات فى السور المدنية وبقي

وقوله ان ربك يعلم الى آخر السورة حكاه ابن الفرس و يرده ما اخرجه الحاكم عن عايشة رض انه نزل بعد نزول صدر السورة بسنة وذلك حين فرض قيام الليل في اول الاسلام قبل فرض الصلوٰت الخمس الانسان استثنى منها فاصبر لحكم ربك المرسلات استثنى منها و اذا قيل لهم اركعوا لايركعون حكاه ابن الفرس و غيره المطففين قيل مكية الا ست آيات من اولها البلد قيل مدنية الا اربع ايات من اولها الليل قيل مكية الا اولها ارأيت قيل نزل ثلاث من اولها بمكة و الباقي بالمدينة ضوابط اخرج الحاكم في مستدركه والبيهقي فى الدلائل والبزار في مسنده من طريق الاعمش عن ابراهيم عن علقمة عن عبدالله قال ماكان يا ايها الذين آمنوا انزل بالمدينة وما كان يا ايها الناس فبمكة واخرجه ابو عبيد فى الفضائل عن علقمة مرسلا واخرج عن ميمون بن مهران قال ماكان فى القرآن يا ايها الناس او يا بني آدم فانه مكي وما كان يا ايها الذين آمنوا فانه مدني قال ابن عطية و ابن الفرس وغيرهما هو في يا ايها الذين امنوا صحيح واما يا ايها الناس فقد يأتي فى المدني وقال ابن الحصار قد اعتنى المتشاغلون بالنسخ بهذا الحديث واعتمدوه على ضعفه وقد اتفق الناس على ان النساء مدنية و اولها يا ايها الناس وعلى ان الحج مكية وفيها يا ايها الذين آمنوا اركعوا و اسجدوا وقال غيره هذا القول ان اخذ على اطلاقه فيه نظر فان سورة البقرة مدنية وفيها يا ايها الناس اعبدوا ربكم يا ايها الناس كلوا مما فى الارض وسورة النساء مدنية و اولها يا ايها الناس وقال مكي هذا انما هو فى الاكثر وليس بعام و في كثير من السور المكية يا ايها الذين آمنوا و قال غيره الاقرب حمله على انه خطاب المقصود به او جل المقصود به اهل

من عند الله الآية فقد اخرج الطبراني بسند صحيح عن عوف بن مالك الاشجعي انها نزلت بالمدينة في قصة اسلام عبد الله بن سلام وله طرق اخرى لكن اخرج ابن ابي حاتم عن مسروق قال انزل هذه الآية بمكة وانما كان اسلام بن سلام بالمدينة وانما كانت خصومة خاصم بها محمد صلى الله عليه وسلم واخرج عن الشعبي قال ليس بعبد الله بن سلام وهذه الآية مكية واستثنى بعضهم ووصينا الانسان الآيات الاربع وقوله فاصبر كما صبر اولو العزم الآية حكاه في جمال القراء ق استثنى منها ولقد خلقنا السموات الى لغوب فقد اخرج الحاكم وغيره انها نزلت في اليهود النجم استثنى منها الذين يجتنبون كبائر الاثم الى اتقى وقيل افرأيت الذي تولّى الآيات التسع القمر استثنى منها سيهزم الجمع الآية وهو مردود لما سيأتي في النوع الثاني عشر وقيل ان المتقين الآيتين الرحمن استثنى منها يسأله الآية حكاه في جمال القراء الواقعة استثنى منها ثلّة من الاولين وثلّة من الآخرين وقوله فلا اقسم بمواقع النجوم الى تكذبون لما اخرجه مسلم في سبب نزولها الحديد يُستثنى منها على القول بانها مكية آخرها المجادلة استثنى منها ما يكون من نجوى ثلاثة الآية حكاه ابن الفرس وغيره التغابن استثنى منها على انها مكية آخرها لما اخرجه الترمذي والحاكم في سبب نزوله التحريم تقدم عن قتادة ان المدني منها الى راس العشر والباقي مكي تبارك اخرج جويبر في تفسيره عن الضحاك عن ابن عباس رض قال انزلت تبارك الملك في اهل مكة الاثلاث آيات ن استثنى منها انا بلوناهم الى يعلمون ومن فاصبر الى الصالحين فانه مدني حكاه السخاوي في جمال القراء المزمل استثنى منها واصبر على مايقولون الآيتين حكاه الاصبهاني

الا اقاتل من ادبر من قومي الحديث و فيه و انزل في سبا ما انزل فقال رجل يا رسول الله و ما سبا الحديث قال ابن الحصار هذا يدل على ان هذه القصة مدنية لان مهاجرة فروة بعد اسلام ثقيف سنة تسع قال ويحتمل ان يكون قوله و انزل حكاية عما تقدم نزوله قبل هجرته يس استثني منها انا نحن نحيي الموتى الآية لما اخرجه الترمذي والحاكم عن ابي سعيد قال كانت بنوسلمة في ناحية المدينة فارادوا النقلة الى قرب المسجد فنزلت هذه الآية فقال النبي صلى الله عليه وسلم ان آثاركم تكتب فلم ينتقلوا و استثنى بعضهم واذا قيل لهم انفقوا الآية قيل نزلت في المنافقين الزمر استثنى منها قل يا عبادي الآيات الثلاث كما تقدم عن ابن عباس واخرج الطبراني من وجه آخر عنه انها نزلت في وحشي قاتل حمزة رض وزاد بعضهم قل يا عبادي الذين آمنوا اتقوا ربكم الآية ذكره السخاوي في جمال القراء وزاد غيره الله نزل احسن الحديث الآية حكاه ابن الجوزي غافر استثنى منها ان الذين يجادلون الى قوله لايعلمون فقد اخرج ابن ابي حاتم عن ابي العالية وغيره انها نزلت في اليهود لما ذكروا الدجال و اوضحته في اسباب النزول شورى استثنى منها ام يقولون افترى الى قوله بصير قلت يدل له ما اخرجه الطبراني والحاكم في سبب نزولها فانها نزلت في الانصار و قوله ولو بسط الله الرزق الآية نزلت في اصحاب الصفة واستثنى بعضهم والذين اذا اصابهم البغي الى قوله من سبيل حكاه ابن الفرس الزخرف استثنى منها واسأل من ارسلنا الآية قيل نزلت بالمدينة وقيل في السماء الجاثية استثنى منها قل للذين امنوا الآية حكاه في جمال القراء عن قتادة الاحقاف استثنى منها قل ارأيتم ان كان

رافع قال اضاف النبي صلى الله عليه وسلم ضيفا فارسلني الى رجل من اليهود ان اسلفني دقيقا الى هلال رجب فقال لا الا برهن فاتيت النبي صلى الله عليه وسلم فاخبرته فقال اما والله اني لامين في السماء امين في الارض فلم اخرج من عنده حتى نزلت هذه الآية لاتمدن عينيك الى ما متعنا به ازواجا منهم الانبياء استثنى منها افلايرون انا تاتي الارض الآية الحج تقدم ما يستثنى منها المؤمنون استثنى منها حتى اذا اخذنا مترفيهم الى قوله مبلسون الفرقان استثنى منها والذين لايدعون الى رحيما الشعراء استثنى ابن عباس منها والشعراء الى آخرها كما تقدم زاد غيره وقوله اولم يكن لهم آية ان يعلمه علماء بني اسرائيل حكاه ابن الفرس القصص استثنى منها الذين آتيناهم الكتاب الى قوله الجاهلين فقد آخرج الطبراني عن ابن عباس رض انها نزلت هي وآخر الحديد في اصحاب النجاشي الذين قدموا وشهدوا وقعة احد وقوله ان الذي فرض عليك القرآن الآية لما سياتي العنكبوت استثنى من اولها الى وليعلمن المنافقين لما اخرجه ابن جرير في سبب نزولها قلت ويضم اليه وكأين من دابة الآية لما اخرجه ابن ابي حاتم في سبب نزولها لقمان استثنى منها ابن عباس ولو ان ما في الارض الآيات الثلاث كما تقدم السجدة استثنى منها ابن عباس افمن كان مومنا الآيات الثلث كما تقدم وزاد غيره تتجا في جنوبهم ويدل له ما اخرجه البزار عن بلال قال كنا نجلس في المجلس وناس من الصحابة يصلون بعد المغرب الى العشاء فنزلت سبا استثنى منها ويرى الذين اوتوا العلم الآية وروى الترمذي عن فروة بن مسيك المرادي قال اتيت النبي صلى الله عليه وسلم فقلت يا رسول الله

بالله اي قوم اتعلمون اني الذي انزلت فيه و من عنده علم الكتاب قالوا اللهم نعم ابراهيم اخرج ابو الشيخ عن قتادة قال سورة ابراهيم مكية غير آيتين مدنيتين الم تر الى الذين بدلوا نعمة الله كفرًا الى فبئس القرار الحجر استثنى بعضهم منها ولقد آتيناك سبعا الآية قلت و ينبغي استثناء قوله ولقد علمنا المستقدمين الآية لما اخرجه الترمذي و غيره في سبب نزولها و انها في صفوف الصلوٰة النحل تقدم عن ابن عباس رض انه استثنى اخرها و سياتي فى السفري مايؤيده و اخرج ابو الشيخ عن الشعبي قال نزلت النحل كلها بمكة الا هولاء الآيات وان عاقبتم الى آخرها و اخرج عن قتادة قال سورة النحل من الذين هاجروا في الله من بعد ما ظلموا الى آخرها مدني و ما قبلها الى آخر السورة مكي و سياتي في اول مانزل عن جابربن زيد ان النحل نزل منها بمكة اربعون و بقيتها بالمدينة ويرد ذلك ما اخرجه احمد عن عثمان ابن ابي العاص في نزول ان الله يامر بالعدل و الا حسان و سياتي في نوع الترتيب الاسراء استثنى منها ويسأ لونك عن الروح الآية لما اخرج البخارى عن ابن مسعود انها نزلت بالمدينة في جواب سوال اليهود عن الروح و استثنى منها ايضا و ان كادوا ليفتنونك الى قوله انّ الباطل كان زهوقا و قوله قل لئن اجتمعت الانس والجن الآية وقوله وما جعلنا الرؤيا الآية وقوله ان الذين اوتوا العلم من قبله لما اخرجناه في اسباب النزول الكهف استثنى من اولها الى جرزا و قوله واصبر نفسك الآية و ان الذين آمنوا الى آخر السورة مريم استثنى منها آية السجدة وقوله و ان منكم الاواردها طه استثنى منها فاصبر على مايقولون الآية قلت ينبغي ان تستثنى آية اخرى فقد اخرج البزار وابو يعلى عن ابي

قال الانعام مكية الا قل تعالوا اتل والاية التي بعدها الاعراف اخرج ابو الشيخ ابن حيان عن قتادة قال الاعراف مكية الا آية و اسألهم عن القرية و قال غيره من هنا الى و اذاخذ ربك مدني الانفال استثنى منها و اذ يمكربک الذين كفروا الآية قال مقاتل نزلت بمكة قلت يرده ماصح عن ابن عباس رض ان هذه الآية بعينها نزلت بالمدينة كما اخرجناه في اسباب النزول واستثنى بعضهم قوله يا ايها النبي حسبک الله الآية و صححه ابن العربي و غيره قلت يؤيده ما اخرجه البزار عن ابن عباس انها نزلت لما اسلم عمر براءة قال ابن الفرس مدنية الا آيتين لقد جاء كم رسول الى اخرها قلت غريب كيف وقد ورد انها اخر ما نزل واستثنى بعضهم ماكان للنبي الآية لما ورد انها نزلت في قوله عليه الصلواة والسلام لابي طالب لاستغفرن لک مالم انه عنک يونس استثنى منها فان كنت في شك الآيتين وقوله ومنهم من يؤمن به الآية وقيل انها نزلت فى اليهود وقيل من اولها الى راس اربعين مكي والباقي مدني حكاه ابن الفرس والسخاوي في جمال القرا هود استثنى منها ثلاث آيات فلعلك تارك افمن كان على بينة من ربه اقم الصلوة طرفى النهار قلت دليل الثالثة ما صح من عدة طرق انها نزلت بالمدينة في حق ابى اليسر يوسف استثنى منها ثلاث آيات من اولها حكاه ابوحيان وهو واه جدا لايلتفت اليه الرعد اخرج ابوالشيخ عن قتادة قال سورة الرعد مدنية الا آية قوله و لايزال الذين كفروا تصيبهم بما صنعوا قارعة وعلى القول بانها مكية يستثنى قوله الله يعلم الى قوله شديد المحال كما تقدم والآية اخرها فقد اخرج ابن مردوية عن جندب قال جاء عبدالله بن سلام حتى اخذ بعضادتي باب المسجد قال انشدكم

اخرجه البيهقي فى الدلائل فصـــل قال البيهقي فى الدلائل في بعض السور التي نزلت بمكة آيات نزلت بالمدينة فالحقت بها وكذا قال ابن الحصار كل نوع من المكي والمدني منه آيات مستثناة قال الا ان من الناس من اعتمد فى الاستثناء على الا جتهاد دون النقل و قال ابن حجر في شرح البخاري قد اعتنى بعض الايمة ببيان ما نزل من الايات بالمدينة فى السور المكية قال و اما عكس ذلك و هو نزول شيء من سورة بمكة تاخر نزول تلك السورة الى المدينة فلم اره الانادراً قلت وها انا اذكر ما وقفت على استثنايهٔ من النوعين مستوعبا مارأيته من ذلك على الاصطلاح الاول دون الثاني واشير الى ادلة الاستثناء لاجل قول ابن الحصار السابق ولا اذكر الادلة بلفظها اختصارا و احالة على كتابنا اسباب النزول الفاتحة تقدم قول ان نصفها نزل بالمدينة و الظاهر انه النصف الثاني ولا دليل لهذا القول البقرة استثنى منها ايتان فاعفوا و اصفحوا ليس عليك هداهم الانعام قال ابن الحصار استثنى منها تسع آيات ولايصح به نقل خصوصا قدورد انها نزلت جملة قلت قدصح النقل عن ابن عباس رض باستثناء قل تعالوا الايات الثلاث كما تقدم والبواقي و ماقدروا الله حق قدره لما اخرجه ابن ابي حاتم انها نزلت في مالك بن الضيف وقوله ومن اظلم ممن افترى على الله كذبا الا يتين نزلتا في مسيلمة وقوله الذين آتينا هم الكتاب يعرفونه وقوله والذين آتينا هم الكتاب يعلمون انه منزل من ربك بالحق و اخرج ابو الشيخ عن الكلبي قال نزلت الانعام كلها بمكة الا ايتين نزلتا بالمدينه في رجل من اليهود وهو الذي قال ما انزل الله على بشر من شيء وقال الفريابي حدثنا سفيان عن ليث عن شهر

يأمرك ان تقريها أبيا الحديث وقد جزم ابن كثير بانها مدنية و استدل
به سورة الزلزلة فيها قولان و يستدل لكونها مدنية بما اخرجه ابن ابي
حاتم عن ابي سعيد الخدري قال لما نزلت فمن يعمل مثقال ذرة
خيرايره الآية قلت يا رسول الله اني لراء عملي الحديث و ابو سعيد
لم يكن الا بالمدنية ولم يبلغ الا بعد أحد سورة العاديات فيها قولان ويستدل
لكونها مدنية بما اخرجه الحاكم وغيره عن ابن عباس رض قال بعث
رسول الله صلى الله عليه وسلم خيلا فلبثت شهرا لا ياتيه منها خبرفنزلت
والعاديات الحديث سورة الهاكم الاشهر انها مكية و يدل لكونها مدنية وهو
المختار ما اخرجه ابن ابي حاتم عن ابن بريدة انها نزلت في قبيلتين
من قبائل الامصار تفاخروا الحديث و اخرج عن قتادة انها نزلت في
اليهود و اخرج البخاري عن ابي بن كعب قال كنا نرى هذا من
القرآن يعني لوكان لابن آدم و ادمن ذهب حتى نزلت الهاكم التكاثر
و اخرج الترمذي عن علي رض قال ما زلنا نشك في عذاب القبر
حتى نزلت وعذاب القبر لم يذكر الا بالمدينة كما في الصحيح في
قصة اليهودية سورة ارايت فيها قولان حكاهما ابن الفرس سورة الكوثر
الصواب انها مدنية و رجحه النووي في شرح مسلم لما اخرجه مسلم
عن انس قال بينا رسول الله صلى الله عليه وسلم بين اظهرنا اذا غفى
اغفاة فرفع راسه متبسما فقال انزلت عليّ انفا سورة فقرأ بسم الله الرحمن
الرحيم انا اعطيناك الكوثر حتى ختمها الحديث سورة الاخلاص فيها
قولان لحديثين في سبب نزولها متعارضين و جمع بعضهم بينهما بتكرر
نزولها ثم ظهرلي ترجيح انها مدنية كما بيّنة في اسباب النزول المعوذتان
المختار انهما مدنيتان لانهما نزلتا في قصة سحر لبيد بن الا عصم كما

بين مكة والمدنية انتهى قلت اخرج النسائي وغيره بسند صحيح عن ابن عباس رض قال لما قدم النبي صلى الله عليه وسلم المدينة كانوا من اخبث الناس كيلا فانزل الله تعالى ويل للمطففين فاحسنوا الكيل سورة الاعلى الجمهور على انها مكية قال ابن الفرس وقيل انها مدنية لذكر صلاة العيد وزكاة الفطر فيها قلت ويرده ما اخرجه البخاري عن البراء بن عازب قال اول من قدم علينا من اصحاب النبي صلى الله عليه وسلم مصعب بن عمير وابن ام مكتوم فجعلا ويقرأننا القران ثم جاء عمار وبلال وسعد ثم جاء عمر بن الخطاب رض في عشرين ثم جاء النبي صلى الله عليه وسلم فما رايت اهل المدينة فرحوا بشئ فرحهم به فما جاء حتى قرأ سبح اسم ربك الا على في سورة مثلها سورة الفجر فيها قولان حكاهما ابن الفرس قال ابو حيان والجمهور انها مكية سورة البلد حكى ابن الفرس فيها ايضا قولين وقوله بهذا البلد يرد القول بانها مدنية سورة الليل الاشهر انها مكية وقيل مدنية لما ورد في سبب نزولها من قصة النخلة كما اخرجناه في اسباب النزول وقيل فيها مكي ومدني سورة القدر فيها قولان والاكثر على انها مكية ويستدل لكونها مدنية بما اخرجه الترمذي والحاكم عن الحسن بن علي رض ان النبي صلى الله عليه وسلم أُرِيَ بني امية على منبره فساءه ذلك فنزلت انا اعطيناك الكوثر ونزلت انا انزلناه في ليلة القدر الحديث قال المزني هو حديث منكر سورة لم يكن قال ابن الفرس الاشهر انها مكية قلت ويدل لمقابله ما اخرجه احمد عن ابي حبة البدري قال لما نزلت لم يكن الذين كفروا من اهل الكتاب الى اخرها قال جبرئيل يا رسول الله ان ربك

عن عمر انه دخل على اخته قبل ان يسلم فاذا صحيفة فيها اول سورة الحديد فقرأها وكان سبب اسلامه واخرج الحاكم وغيره عن ابن مسعود قال لم يكن بين اسلامهم وبين ان نزلت هذه الآية يعاتبهم الله تعالى بها الا اربع سنين ولا تكونوا كالذين اوتوا الكتاب من قبل فطال عليهم الامد الآية سورة الصف المختار انها مدنية ونسبه ابن الفرس الى الجمهور ورجحه ويدل له ما اخرجه الحاكم وغيره عن عبد الله بن سلام قال قعدنا فقرأ من اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم فتذاكرنا فقلنا لو نعلم اى الاعمال احب الي الله لعملناه فانزل الله سبح لله ما فى السموات وما فى الارض وهو العزيز الحكيم يا ايها الذين امنوا لم تقولون ما لا تفعلون حتى ختمها قال عبد الله فقرأها علينا رسول الله صلى الله عليه وسلم حتى ختمها سورة الجمعة الصحيح انها مدنية لما روى البخاري عن ابي هريرة رض قال كنا جلوسا عند النبي صلى الله عليه وسلم فانزلت عليه سورة الجمعة وآخرين منهم لما يلحقوا بهم قلت من هم يا رسول الله الحديث ومعلوم ان اسلام ابي هريرة رض بعد الهجرة بمدة وقوله قل يا ايها الذين هادوا خطاب لليهود وكانوا بالمدينة وآخر السورة نزل في انفضاضهم حال الخطبة لما قدمت العير كما فى الاحاديث الصحيحة فثبت انها مدنية كلها سورة التغابن قيل مدنية وقيل مكية الا اخرها سورة الملك فيها قول غريب انها مدنية سورة الانسان قيل مدنية وقيل مكية الا آية واحدة ولا تطع منهم آثما او كفورا سورة المطففين قال ابن الفرس قيل انها مكية لذكر الاساطر فيها وقيل مدنية لان اهل المدينة كانوا اشد الناس فسادا فى الكيل وقيل نزلت بمكة الا قصة التطفيف وقال قوم نزلت

في احكام القرآن قيل انها مكية الا هذان خصمان الآيات و قيل الا عشر ايات وقيل مدنية الا اربع آيات وما ارسلنا من قبلك من رسول الى عقيم قاله قتادة و غيره وقيل كلها مدنية قاله الضحاك وغيره و قيل هي مختلطة فيها مدني ومكى و هو قول الجمهور انتهي ويويد ما نسبه الى الجمهور انه ورد في آيات كثيرة منها انه نزل بالمدينه كما حررناه في اسباب النزول سورة الفرقان قال ابن الفرس الجمهور على انها مكية وقال الضحاك مدنية سورة يس حكى ابو سليمان الدمشقي قولا انها مدنية قال و ليس بالمشهور سورة ص حكى الجعبري قولا انها مدنية خلاف حكاية جماعة الاجماع على انها مكية سورة محمد حكى النسفى قولا غريبا انها مكية سورة الحجرات حكي قول شاذ انها مكية سورة الرحمن الجمهور على انها مكية وهو الصواب ويدل له ما رواه الترمذي و الحاكم عن جابر قال لما قرأ رسول الله صلى الله عليه وسلم على اصحابه سورة الرحمن حتى فرغ قال مالى اراكم سكوتا للجن كانوا احسن منكم ردا ما قرأت عليهم من مرة فباى الاى ربكما تكذبان الا قالوا ولا بشيء من نعمك ربنا نكذب فلك الحمد قال الحاكم صحيح على شرط الشيخين و قصة الجن كانت بمكة و اصرح منه فى الدلالة ما اخرجه احمد في مسنده بسند جيد عن اسماء بنت ابي بكر قالت سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم وهو يصلى نحو الركن قبل ان يصدع بما يومر و المشركون يسمعون فباى الاء ربكما تكذبان و في هذا دليل على تقدم نزولها على سورة الحجر سورة الحديد قال ابن الفرس الجمهور على انها مدنية وقال قوم انها مكية ولا خلاف ان فيها قرآنا مدنيا لكن يشبه صدرها ان يكون مكيا قلت الامر كما قال ففي مسند البزار وغيره

فتقدم فى الآثار السابقة عنه انها مكية و اخرجه ابن مردويه من طريق العوفي عنه ومن طريق ابن جريج عن عطا عنه ومن طريق خصيف عن مجاهد عن ابن الزبير واخرج من طريق عثمان بن عطا عن ابيه عن ابن عباس رض انها مدنية ويؤيّد المشهور ما اخرجه ابن ابي حاتم من طريق الضحاك عن ابن عباس رض قال لما بعث الله محمدا رسولا صلعم انكرت العرب ذلك اومن انكر ذلك منهم فقالوا الله اعظم من ان يكون رسوله بشرا فانزل الله اكان للناس عجبا الآية سورة الرعد تقدم من طريق مجاهد عن ابن عباس رض وعن علي بن ابي طلحة انها مكية وفي بقية الآثار انها مدنية واخرج ابن مردويه الثاني من طريق العوفي عن ابن عباس رض ومن طريق ابن جريج وعثمان بن عطا عن عطا عن ابن عباس و من طريق مجاهد عن ابن الزبير و اخرج ابو الشيخ مثله عن قتادة واخرج الاول عن سعيد بن جبير وقال سعيد بن منصور في سننه حدثنا ابو عوانة عن ابي بشر قال سألت سعيد بن جبير عن قوله تعالى ومن عنده علم الكتاب اهو عبد الله بن سلام فقال كيف و هذه السورة مكية و يويد القول بانها مدنية ما اخرجه الطبراني وغيره عن انس ان قوله الله يعلم ما تحمل كل انثى الى قوله و هو شديد المحال نزل في قصة اربد بن قيس و عامر بن الطفيل حين قدما المدنية على رسول الله صلى الله عليه وسلم والذي يجمع به بين الاختلاف انها مكية الا آيات منها سورة الحج تقدم من طريق مجاهد عن ابن عباس انها مكية الا الايات التي استثناها وفى الآثار الباقية وانها مدنية اخرج ابن مردوية من طريق العوفي عن ابن عباس ومن طريق ابن جريج وعثمان عن عطا عن ابن عباس ومن طريق مجاهد عن ابن الزبير انها مدنية قال ابن الفرس

ولم يحفظ انه كان فى الاسلام صلاة بغير الفاتحة ذكره ابن عطية وغيره وقد روى الواحدي والثعلبي من طريق العلا ابن المسيب عن الفضل بن عمرو عن على بن ابي طالب رض قال نزلت فاتحة الكتاب بمكة من كنز تحت العرش واشتهر عن مجاهد القول بانها مدنية اخرجه الفريابي في تفسيره وابو عبيد فى الفضائل بسند صحيح عنه قال الحسين بن الفضل هذه هفوة من مجاهد لان العلماء على خلاف قوله وقد نقل ابن عطية القول بذلك عن الزهري وعطاء وسوادة بن زياد وعبد الله بن عبيد بن عمير وورد عن ابي هريرة رض باسناد جيد قال الطبراني فى الاوسط حدثنا عبيد بن غنام حدثنا ابوبكر بن ابي شيبه حدثنا ابو الاخوص عن منصور عن مجاهد عن ابي هريرة رض ان ابليس رنّ حين انزلت فاتحة الكتاب وانزلت بالمدينة ويحتمل ان الجملة الاخيرة مدرجة من قول مجاهد وذهب بعضهم الى انها نزلت مرتين مرة بمكة ومرة بالمدينة مبالغة في تشريفها وفيها قول رابع انها نزلت نصفين نصفها بمكة ونصفها بالمدينة حكاه ابو الليث السمرقندي سورة النساء زعم النحاس انها مكية مستندا الى ان قوله ان الله يأمركم الآية نزلت بمكة اتفاقا في شان مفتاح الكعبة وذلك مستند واه لانه لا يلزم من نزول آية او آيات من سورة طويلة نزل معظمها بالمدينة ان تكون مكية خصوصا ان الارجح ان ما نزل بعد الهجرة مدني ومن راجع اسباب نزول آياتها عرف الرد عليه ومما يرد عليه ايضا ما اخرجه البخاري عن عايشة رضى الله عنها قالت ما نزلت سورة البقرة والنساء الا وانا عنده ودخولها عليه كان بعد الهجرة اتفاقا وقيل نزلت عند الهجرة سورة يونس المشهور انها مكية وعن ابن عباس رض روايتان

وبعد هجرة خير الناس قد نزلت عشرون من سور القرآن في عشر
فاربع من طوال السبع اولها وخامس الخمس في الانفال ذي العبر
وتوبة الله ان عددت سادسة وسورة النور والاحزاب ذي الذكر
و سورة لنبي الله محكمة و الفتح و الحجرات الغر في غرر
ثم الحديد و يتلوها مجادلة و الحشر ثم امتحان الله للبشر
وسورة فضح الله النفاق بها و سورة الجمع تذكار المدكر
و للطلاق و للتحريم حكمهما و النصر والفتح تبينها على العمر
هذا الذي اتفقت فيه الرواة له وقد تعارضت الاخبار في أُخَر
فالرعد مختلف فيهامتي نزلت و اكثر الناس قالوا الرعد كالقمر
و مثلها سورة الرحمن شاهدها مماتضمن قول الجن فى الخبر
و سورة للحواريين قد علمت ثم التغابن و التطفيف ذوالنذر
وليلة القدر قد خصت بملتنا ولم يكن بعدها الزلزال فاعتبر
وقل هوالله من اوصاف خالقنا و عوذتان ترد الباس بالقدر
وذا الذي اختلفت في الرواة له وربما استثنيت أي من السور
و ما سوا ذاك مكي تنزله فلاتكن من خلاف الناس في حصر
فليس كل خلاف جاء معتبرا الا خلاف له حظ من النظر

فصل في تحرير السور المختلف فيها سورة الفاتحه الاكثرون على انها مكية بل ورد انها اول ما نزل كماسياتي فى النوع الثامن واستدل لذلك بقوله تعالى ولقد اتيناك سبعا من المثاني وقد فسرها صلى الله عليه و سلم بالفاتحة كما فى الصحيح و سورة الحجر مكية باتفاق وقد امتن الله على رسوله فيها بها فدل على تقدم نزول الفاتحة عليه اذ يبعد ان يمتن عليه بمالم ينزل بعد و بانه لاخلاف ان فرض الصلاة كان بمكة

وقال ابوعبيد في فضائل القرآن حدثنا عبدالله ابن صالح عن معوية بن صالح عن علي بن ابي طلحة قال نزلت بالمدينة سورة البقرة و آل عمران والنساء والمائدة والانفال والتوبة والحج والنور والاحزاب والذين كفروا والفتح والحديد والمجادلة والحشر والممتحنة والحواريين يريد الصف والتغابن ويا ايها النبي اذا طلقتم النساء ويا ايها النبي لم تحرم والفجر والليل وانا انزلناه في ليلة القدر ولم يكن واذا زلزلت واذا جاء نصر الله وساير ذلك بمكة * وقال ابوبكر بن الانباري حدثنا اسمعيل بن اسحق القاضي حدثنا حجاج بن منهال حدثنا همام عن قتادة قال نزل في المدينة من القرآن البقرة وآل عمران والنساء والمايدة وبراءة والرعد والنحل والحج والنور والاحزاب ومحمد والفتح والحجرات والحديد والرحمن والمجادلة والحشر والممتحنة والصف والجمعة والمنافقون والتغابن والطلاق ويا ايها النبي لم تحرم الى راس العشر واذا زلزلت واذا جاء نصر الله وساير القرآن نزل بمكة * قال ابوالحسن بن الحصار في كتابه الناسخ والمنسوخ المدني باتفاق عشرون سورة والمختلف فيها اثنا عشر سورة وماعدا ذلك مكي باتفاق ثم نظم في ذلك ابياتا فقال *

يا سائلي عن كتاب الله مجتهدا ... وعن ترتب مايتلي من السور
وكيف جاء بها المختار من مضر ... صلى الاله على المختار من مضر
وما تقدم منها قبل هجرته ... وما تاخر في بدو وفي حضر *
ليعلم الناسخ والتخصيص مجتهد ... يؤيد الحكم بالتاريخ والنظر
تعارض النقل في ام الكتاب وقد ... تولت الحجر تبيينها لمعتبر
ام القرآن وفي ام القري نزلت ... ماكان للخمس قبل الحمد من اثر *

يا ايها المدثر ثم تبت يدا ابي لهب ثم اذا الشمس كورت ثم سبح
اسم ربك الاعلى ثم والليل اذا يغشى ثم والفجر ثم والضحى ثم الم
نشرح ثم والعصر ثم والعاديات ثم انا عطيناك الكوثر ثم الهاكم التكاثر ثم
ارايت الذي يكذب ثم قل يا ايها الكافرون ثم الم تر كيف فعل ربك ثم
قل اعوذ برب الفلق ثم قل اعوذ برب الناس ثم قل هو الله احد ثم
والنجم ثم عبس ثم انا انزلناه في ليلة القدر ثم والشمس وضحاها ثم
والسماء ذات البروج ثم والتين ثم لايلاف قريش ثم القارعة ثم لااقسم بيوم
القيمة ثم ويل لكل همزة ثم والمرسلات ثم ق ثم لا قسم بهذا البلد ثم والسماء
والطارق ثم اقتربت الساعة ثم ص ثم الاعراف ثم قل اوحي ثم يس
ثم الفرقان ثم الملائكة ثم كهيعص ثم طه ثم الواقعة ثم طسم الشعراء ثم طس
ثم القصص ثم بني اسرائيل ثم يونس ثم هود ثم يوسف ثم الحجر ثم
الانعام ثم الصافات ثم لقمان ثم سبا ثم الزمر ثم حم المومن ثم حم السجدة
ثم حمعسق ثم حم الزخرف ثم الدخان ثم الجاثيه ثم الاحقاف ثم
الذاريات ثم الغاشية ثم الكهف ثم النحل ثم انا ارسلنا نوحا ثم سورة
ابراهيم ثم الانبياء ثم المومنين ثم تنزيل السجدة ثم الطور ثم تبارك
الملك ثم الحاقه ثم سال ثم عم يتساء لون ثم النازعات ثم اذا السماء
انفطرت ثم اذا السماء انشقت ثم الروم ثم العنكبوت ثم ويل للمطففين
فهذا ما انزل الله بمكة * ثم انزل بالمدينة سورة البقرة ثم الانفال ثم ال
عمران ثم الاحزاب ثم الممتحنة ثم النساء ثم اذا زلزلت ثم الحديد ثم
القتال ثم الرعد ثم الرحمن ثم الانسان ثم الطلاق ثم لم يكن ثم الحشر ثم
اذا جاء نصر الله ثم النور ثم الحج ثم المنافقون ثم المجادلة ثم الحجرات
ثم التحريم ثم الجمعة ثم التغابن ثم الصف ثم الفتح ثم المايده ثم براءة *

والزمر وحم المومن وحم الدخان وحم السجدة وحمعسق وحم الزخرف والجاثية والاحقاف والذاريات والغاشية و اصحاب الكهف والنحل ونوح وابراهيم والانبياء والمومنون والم السجدة والطور و تبارك والحاقه وسال وعم يتساء لون و النازعات واذا السماء انشقت و اذا السماء انفطرت و الروم والعنكبوت * وما نزل بالمدينة ويل للمطففين والبقرة وال عمران والانفال والاحزاب و المايدة والممتحنة و النساء و اذا زلزلت و الحديد ومحمد والرعد و الرحمن و هل اتى على الانسان و الطلاق ولم يكن و الحشر و اذا جاء نصرالله والنور و الحج والمنافقون والمجادلة والحجرات ويا ايها النبي لم تحرم و الصف والجمعة و التغابن والفتح و برآءة * قال البيهقي و السابعة يريد بها سورة يونس * قال وقد سقط من هذه الرواية الفاتحة والاعراف وكهيعص فيما نزل بمكة * قال وقد اخبرنا علي بن احمد بن عبدان انبأنا احمد بن عبيد الصفار حدثنا محمد بن الفضل حدثنا اسمعيل بن عبد الله بن زرارة الرقي حدثنا عبد العزيز بن عبد الرحمن القرشي حدثنا خصيف عن مجاهد عن ابن عباس انه قال ان اول ما انزل الله على نبيه من القران "اقرأ باسم ربك" فذكر معني هذا الحديث وذكر السور التي سقطت من الرواية الاولى في ذكر ما نزل بمكة قال وللحديث شاهد في تفسير مقاتل وغيره مع المرسل الصحيح الذي تقدم * وقال ابن الضريس في فضائل القرآن حدثنا محمد بن عبد الله بن ابي جعفر الرازي حدثنا عمر بن هارون حدثنا عثمان ابن عطاء الخراساني عن ابيه عن ابن عباس قال كانت اذا نزلت فاتحة سورة بمكة كتبت بمكة ثم يزيد الله فيها ماشاء وكان اول ما نزل من القرآن اقرا باسم ربك (٩٦) ثم ن (٦٨) ثم يا ايها المزمل (٧٣) ثم

الآيات الثلاث و الحواميم السبع وق والذريات والطور و النجم و القمر والرحمن و الواقعة و الصف والتغابن الا آيات من اخرها نزلن بالمدينة و الملك و نون والحاقه و سال وسورة نوح و الجن و المزمل الا آيتين "ان ربک يعلم انك تقوم" و المدثر الى اخر القرآن الا " اذا زلزلت" و اذا جاء نصر الله و قل هو الله احد و قل اعوذ برب الفلق وقل اعوذ برب الناس فانهن مدنيات ونزل بالمدينة سورة الانفال و براة و الذور و الاحزاب و سورة محمد و الفتح والحجرات و الحديد وما بعدها الى التحريم * هكذا اخرجه بطوله و اسناده جيّد رجاله كلهم ثقات من علماء العربية المشهورين و قال البيهقي في دلايل النبوة اخبرنا ابو عبد الله الحافظ انبأنا ابو محمد بن زياد العدل حدثنا محمد بن اسحٰق نبأنا يعقوب بن ابراهيم الدورقي حدثنا احمد بن نصر بن مالك الخزاعي حدثنا على بن الحسين بن واقد عن ابيه حدثني يزيد النحوي عن عكرمة و الحسن بن ابى الحسن قالا ما انزل الله من القرآن بمكة اقرأ باسم ربک ونٓ و المزمل و المدثر و تبت يدا ابي لهب و اذا الشمس كورت وسبح اسم ربک الاعلى والليل اذا يغشى والفجر والضحى والم نشرح والعصر والعاديات والكوثر والهاكم و ارايت وقل يا ايها الكافرون و اصحاب الفيل والفلق وقل اعوذ برب الناس و قل هو الله احد والنجم و عبس و انا انزلناه و الشمس وضحاها والسماء ذات البروج والتين والزيتون ولايلاف قريش والقارعة ولااقسم بيوم القيٰمة و الهمزة و المرسلات وقٓ ولا اقسم بهذا البلد و السماء والطارق و اقتربت الساعة وصٓ والجن ويٰسٓ و الفرقان و الملائكة وطٰهٰ والواقعة وطسم وطس وطسم وبنى اسرائيل و السابعة وهود و يوسف و اصحاب الحجر والانعام والصافات ولقمن وسبا

لي من ذلك ثم اعقبه بتحرير ما اختلف فيه * قال ابن سعد في الطبقات انبأنا الواقدي حدثني قدامة بن موسى عن ابي سلمة الحضرمي سمعت ابن عباس قال سالت أُبيّ ابن كعب عما نزل من القرآن بالمدينة فقال نزل بها سبع و عشرون سورة و سايرها بمكة * وقال ابو جعفر النحاس في كتابه الناسخ و المنسوخ حدثني يموتُ بن المزرع نبأنا ابو حاتم سهل بن محمد السجستاني نبأنا ابو عبيدة معمر بن المُثنّي نبأنا يونس بن حبيب سمعت ابا عمرو بن العلا يقول سالت مجاهدًا عن تلخيص آي القرآن المدني من المكي فقال سالت ابن عباس عن ذلك فقال سورة الانعام نزلت بمكة جملة واحدة فهي مكية الاثلاث آيات منها نزلت بالمدينة " قل تعالو" الى تمام الآيات الثلاث وما تقدم من السور مدينات و نزلت بمكة سورة الاعراف و يونس و هود ويوسف والرعد و ابراهيم والحجر والنحل سوي ثلاث آيات من اخرها فانهن نزلن بين مكة والمدينة في منصرفه من أُحد وسورة بني اسرائيل و الكهف و مريم و طه و الانبياء و الحج سوي ثلاث آيات " هذان خصمان" الى تمام الآيات الثلث فانهن نزلن بالمدينة وسورة المومنين و الفرقان وسورة الشعراء سوي خمس آيات من آخرها نزلن بالمدينة " و الشعراء يتبعهم الغاوون" الى اخرها وسورة النمل و القصص و العنكبوت و الروم و لقمان سوي ثلاث آيات منها نزلن بالمدينة " و لو ان ما في الارض من شجرة اقلام " الى تمام الآيات الثلاث وسورة السجدة سوي ثلاث ايات " افمن كان مومنا " الى تمام الآيات الثلاث و سورة سبا وفاطر ويس و الصافات وص و الزمر سوي ثلاث آيات نزلن بالمدينة في وحشي قاتل حمزة يا عبادي الذين اسرفوا " الى تمام

المكي وما نزل على النبي صلى الله عليه وسلم في اسفاره بعد ما قدم المدنية فهو من المدني * ،، وهذا اثر لطيف يوخذ منه ان ما نزل في سفر الهجرة مكي اصطلاحا الثاني ان المكي ما نزل بمكة ولو بعد الهجرة والمدني ما نزل بالمدينة وعلي هذا تثبت الواسطة فما نزل بالاسفار لايطلق عليه مكي ولا مدني * وقد اخرج الطبراني في الكبير من طريق الوليد بن مسلم عن عفير بن معدان عن سليم بن عامر عن ابي أمامة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انزل القرآن في ثلثة امكنة مكة والمدينة والشام * قال الوليد يعني بيت المقدس * قال الشيخ عماد الدين بن كثير بل تفسيره بتبوك احسن * قلت ويدخل في مكة ضواحيها كالمنزل بمنى وعرفات والحديبية وفي المدينة ضواحيها كالمنزل ببدر واُحد وسلع * الثالث ان المكي ما وقع خطا بالاهل مكة والمدني ما وقع خطا بالاهل المدينة وحمل على هذا قول ابن مسعود الآتي * قال القاضي ابوبكر في الانتصار انما يرجع في معرفة المكي والمدني لحفظ الصحابة والتابعين ولم يرد عن النبي صلى الله عليه وسلم في ذلك قول لانه لم يومر به ولم يجعل الله علم ذلك من فرائض الامة * وان وجب في بعضه على اهل العلم معرفة تاريخ الناسخ والمنسوخ فقد يعرف ذلك بغير نص الرسول * انتهي * وقد اخرج البخاري عن ابن مسعود انه قال والذي لا اله غيره ما نزلت اية من كتاب الله الا وانا اعلم فيمن نزلت واين نزلت * وقال ايوب سال رجل عكرمة عن آية من القرآن فقال نزلت في سفح ذلك الجبل واشار الى سلع * اخرجه ابو نُعَيْم في الحُلية *

وقد ورد عن ابن عباس وغيره عد المكي والمدني وانا اسوق ما وقع

بالمدينة و حكمه مكي و ما نزل بمكة في اهل المدينة و ما نزل بالمدينة في اهل مكة وما يشبه نزول المكي فى المدني وما يشبه نزول المدني فى المكي وما نزل بالجحفة وما نزل ببيت المقدس وما نزل بالطائف وما نزل بالحديبية وما نزل ليلا وما نزل نهارا وما نزل مشيعا وما نزل مفردا و الآيات المدينات فى السور المكية و الآيات المكيات فى السور المدنية وما حمل من مكة الى المدينة وما حمل من المدينة الى مكة وما حمل من المدينة الى ارض الحبشة وما نزل مجملا وما نزل مفسرا وما اختلفوا فيه فقال بعضهم مدني و بعضهم مكي فهذه خمسة وعشرون وجها من لم يعرفها ويميز بينها لم يحل له ان يتكلم في كتاب الله تعالى *" انتهى *

قلت وقد اشبعت الكلام على هذه الاوجه فمنها ما افردته بنوع و منها ما تكلمت عليه في ضمن بعض الانواع * وقال ابن العربي في كتابه الناسخ و المنسوخ الذي عامناه على الجملة من القرآن ان منه مكيا و مدينا و سفريا و حضريا و ليليا و نهاريا و سمائيا و ارضيا و ما نزل بين السماء والارض وما نزل تحت الارض فى الغار * وقال ابن النقيب في مقدمة تفسيره المنزل من القرآن على اربعة اقسام مكي ومدني و ما بعضه مكي و بعضه مدني و ما ليس بمكي ولا مدني * اعلم ان للناس فى المكي و المدني اصطلاحات ثلاثة اشهرها ان المكي ما نزل قبل الهجرة والمدني ما نزل بعدها سواء نزل بالمدينة ام بمكة عام الفتح او عام حجة الوداع ام بسفر من الاسفار * اخرج عثمان بن سعيد الدارمي بسنده الى يحيى بن سلام قال " ما نزل بمكة وما نزل في طريق المدينة قبل ان يبلغ النبي صلى الله عليه و سلم المدينة فهو من

للقاضي بدرالدين بن جماعة ، اسماء من نزل فيهم القرآن لاسمٰعيل الضرير ، ذات الرشد في عدد الآي وشرحها للموصلي ، شرح آيات الصفات لابن اللبان ، الدر النظيم في منافع القرآن العظيم لليافعي •

ومن كتب الرسم المقنع للداني ، شرح الرائية للسخاوي ، شرحها لابن جبارة •

و من الكتب الجامعة بدائع الفوائد لابن القيم ، كنز الفوائد للشيخ عزالدين ابن عبدالسلام ، الغرر والدرر للشريف المرتضى ، تذكرة البدر بن الصاحب ، جامع الفنون لابن شبيب الحنبلي ، النفيس لابن الجوزي ، البستان لابي الليث السمرقندي •

ومن تفاسير غير المحدثين الكشاف ، وحاشيته للطيبي ، تفسير الامام فخرالدين ، تفسير الاصبهاني و الخوبي وابي حيان وابن عطية و القشيري والمرسي وابن الجوزي وابن عقيل وابن رزين والواحدي والكواشي والماوردي وسليم الرازي وامام الحرمين وابن برجان وابن بزيزة و ابن المنير ، امالي الرافعي على الفاتحة ، مقدمة تفسير ابن النقيب ، الغرائب و العجائب للكرماني ، قواعد في التفسير لابن تيمية • و هذا اوان الشروع في المقصود بعون الملك المعبود •

النوع الاول معرفة المكي و المدني افرده بالتصنيف جماعة ، منهم مكي و العز الديريني • ومن فوائد معرفة ذلك العلم بالمتاخر ، فيكون ناسخا او مخصصا على رأى من يرى تأخير المخصص • قال ابوالقاسم الحسن بن محمد ابن حبيب النيسا بوري في كتاب التنبيه على فضل علوم القرآن ، " من اشرف علوم القرآن علم نزوله وجهاته و ترتيب ما نزل بمكة والمدينة ، و ما نزل بمكة و حكمه مدني و ما نزل

القاهر الجرجاني ، و للامام فخرالدين ، و لابن ابى الاصبع و اسمه البرهان ، و للزملكاني واسمه البرهان ايضا ، و مختصره له واسمه المجيد ، مجاز القرآن لابن عبد السلام ، الايجاز فى المجاز لابن القيم ، نهاية التأميل في اسرار التنزيل للزملكاني ، التبيان فى البيان له ، المنهج المفيد في احكام التوكيد له ، بدائع القرآن لابن ابي الاصبع ، التحبير له ، الخواطر السوانح في اسرار الفواتح له ، اسرار التنزيل للشرف البارزي ، الاقصى القريب للتنوخي ، منهاج البلغاء لحازم ، العمدة لابن رشيق ، الصناعتين للعسكري ، المصباح لبدرالدين بن مالك ، التبيان للطيبي ، الكنايات للجرجاني ، الاغريض فى الفرق بين الكناية والتعريض للشيخ تقي الدين السبكي ، الاقتناص فى الفرق بين الحصر والاختصاص له ، عروس الافراح لولده بهاء الدين ، روض الافهام في اقسام الاستفهام للشيخ شمس الدين بن الصائغ ، نشر العبير في اقامة الظاهر مقام الضمير له ، المقدمة في سر الالفاظ المقدمة له ، احكام الرأى في احكام الآي له ، مناسبات ترتيب السور لابي جعفر بن الزبير ، فواصل الآيات للطوفي ، المثل السائر لابن الاثير ، الفلك الدائر على المثل السائر ، كنز البراعة لابن الاثير ، شرح بديع قدامه للموفق عبد اللطيف *

ومن الكتب فيماسوى ذلك من الانواع ، البرهان في متشابه القرآن للكرماني ، درة التنزيل وغرة التأويل فى المتشابه لابي عبدالله الرازي ، كشف المعاني فى المتشابه المثاني للقاضي بدرالدين بن جماعة ، امثال القرآن للماوردي ، اقسام القرآن لابن القيم ، جواهر القرآن للغزالي ، التعريف و الاعلام فيما وقع فى القرآن من الاسماء والاعلام للسهيلي ، الذيل عليه لابن عسكر ، التبيان في مبهمات القرآن

العشر للواسطي ، الشواذ لابن غلبون ، الوقف و الابتداء لابن الانباري و للسجاوندي و للنحاس و للداني و للعُماني و لابن النكزاوي ، قرة العين فى الفتح و الامالة بين اللفظين لا بن القاصح *

و من كتب اللغات و الغريب والعربية والاعراب ، مفردات القرآن للراغب ، غريب القرآن لابن قتيبة وللعزيزي ، الوجوه و النظائر للنيسابوري و لابن عبد الصمد ، الواحد والجمع فى القرآن لابى الحسن الاخفش الاوسط ، الزاهر لابن الانباري ، شرح التسهيل والارتشاف لابي حيان ، المغني لابن هشام ، الجني الداني في حروف المعاني لابن ام قاسم ، اعراب القرآن لابى البقا و للسمين و للسفاقسي و لمنتجب الدين ، المحتسب في توجيه الشواذ لابن جني ، الخصائص له ، الخاطريات له ، ذا القدله ، امالي ابن الحاجب ، المعرب للجواليقي ، مشكل القرآن لابن قتيبة ، اللغات التي نزل بها القرآن لابى القاسم محمد بن عبد الله *

ومن كتب الاحكام وتعلقاتها ، احكام القرآن لاسماعيل القاضي ، ولبكر بن العلا ، و لابي بكر الرازي ، و لالكيا الهراسي ، و لابن العربي ، و لابن الفرس ، ولابن خويز منداد ، الناسخ و المنسوخ لمكي ، و لابن الحصار ، و للسعيدي ، ولابي جعفر النحاس ، ولابن العربي ، ولابي داؤد السجستاني ، ولابي عبيد القاسم بن سلام ، و لابي منصور عبد القاهر بن طاهر التميمي ، الامام في ادلة الاحكام للشيخ عزالدين بن عبد السلام *

ومن الكتب المتعلقة بالاعجاز وفنون البلاغة ، اعجاز القرآن للخطابي ، و للرماني ، و لابن سراقه ، وللقاضي ابي بكر ابن الباقلاني ، ولعبد

والسبعون في غرائب التفسير * الثمانون في طبقات المفسرين *

فهذه ثمانون نوعا على سبيل الادماج ولو نوعت باعتبار ما ادمجته في ضمنها لزادت على الثلثمائة * وغالب هذه الانواع فيها تصانيف مفردة ، وقفت على كثير منها و من المصنفات في مثل هذا النمط ، و ليس في الحقيقة مثله و لا قريبا منه و انما هي طائفة يسيرة ونبذة قصيرة * فنون الافنان في علوم القرآن لابن الجوزي ، وجمال القرّاء للشيخ عَلَم الدين السخاوي ، و المرشد الوجيز في علوم تتعلق بالقرآن العزيز لابي شامة ، و البرهان في مشكلات القرآن لابي المعالي عزيزي بن عبد الملك المعروف بشيدلة * وكلها بالنسبة الى نوع من هذا الكتاب كحبة رمل في جنب رمل عالج ونقطة قطر في حيال بحر زاخر ، و هذه اسماء الكتب التي نظرتها على هذا الكتاب و لخّصته منها ، فمن الكتب النقلية ، تفسير ابن جرير ، و ابن ابي حاتم ، و ابن مردويه ، و ابى الشيخ بن حبان ، و الفريابي ، و عبدالرزاق ، و ابن المنذر ، وسعيد بن منصور وهو جزء من سننه ، و الحاكم و هو جزء من مستدرك ، تفسير الحافظ عماد الدين بن كثير ، فضائل القرآن لابي عبيد ، فضائل القرآن لابن الضريس ، و فضائل القرآن لابن ابي شيبة ، المصاحف لابن ابي داؤد ، المصاحف لابن اشته ، الرد على من خالف مصحف عثمان لابي بكر بن الانباري ، اخلاق حملة القرآن للآجري ، التبيان في آداب حملة القرآن للنووي ، شرح البخاري لابن حجر * و من جوامع الحديث والمسانيد ما لا يحصى *

و من كتب القراآت و تعلقات الاداء ، جمال القرّاء للسخاوي ، النشر و التقريب لابن الجوزي ، الكامل للهذلي ، الارشاد في القراآت

والاربعون في قواعد مهمة يحتاج المفسر الى معرفتها * الثالث[٤٣] والاربعون في المحكم والمتشابه * الرابع[٤٤] و الاربعون في مقدمه ومؤخره * الخامس[٤٥] والاربعون في عامه وخاصه * السادس[٤٦] والاربعون في مجمله و مبينه * السابع[٤٧] و الاربعون في ناسخه ومنسوخه * الثامن[٤٨] و الاربعون في مشكله و موهم الاختلاف و التناقض * التاسع[٤٩] و الاربعون في مطلقه و مقيده * الخمسون[٥٠] في منطوقه و مفهومه * الحادي[٥١] و الخمسون في وجوه مخاطباته * الثاني[٥٢] والخمسون في حقيقته ومجازه * الثالث[٥٣] والخمسون في تشبيهه واستعاراته * الرابع[٥٤] والخمسون في كناياته وتعريضه * الخامس[٥٥] و الخمسون في الحصر والاختصاص * السادس[٥٦] و الخمسون في الايجاز و الاطناب * السابع[٥٧] و الخمسون في الخبر و الانشاء * الثامن[٥٨] والخمسون في بدائع القرآن * التاسع[٥٩] و الخمسون في فواصل الآي * الستون[٦٠] في فواتح السور * الحادي[٦١] و الستون في خواتم السور * الثاني[٦٢] والستون في مناسبة الآيات والسور * الثالث[٦٣] والستون في الآيات المتشابهات * الرابع[٦٤] و الستون في اعجاز القرآن * الخامس[٦٥] و الستون في العلوم المستنبطة من القرآن * السادس[٦٦] والستون في امثاله * السابع[٦٧] والستون في اقسامه * الثامن[٦٨] والستون في جدله * التاسع[٦٩] والستون في الاسماء و الكنى والالقاب السبعون[٧٠] في مبهماته * الحادي[٧١] والسبعون في اسماء من نزل فيهم القرآن * الثاني[٧٢] والسبعون في فضائل القرآن * الثالث[٧٣] والسبعون في افضل القرآن و فاضله * الرابع[٧٤] والسبعون في مفردات القرآن * الخامس[٧٥] والسبعون في خواصه * السادس[٧٦] والسبعون في مرسوم الخط و آداب كتابته * السابع[٧٧] والسبعون في معرفة تأويله وتفسيره وبيان شرفه والحاجة اليه * الثامن[٧٨] و السبعون في شروط المفسر وآدابه * التاسع[٧٩]

والشتائي * الخامس الفراشي والنومي ٥ السادس الارضي والسمائي ٦ * السابع اول ما نزل ٧ * الثامن آخر ما نزل ٨ * التاسع اسباب النزول ٩ * العاشر ما نزل على لسان بعض الصحابة ١٠ * الحادي عشر ما تكرر نزوله ١١ * الثاني عشر ما تأخر حكمه عن نزوله وما تأخر نزوله عن حكمه ١٢ * الثالث عشر معرفة ما نزل مفرقا وما نزل جمعا ١٣ * الرابع عشر ما نزل مشيعا وما نزل مفردا ١٤ * الخامس عشر ما انزل منه على بعض الانبياء وما لم ينزل منه على احد قبل النبي صلى الله عليه وسلم ١٥ * السادس عشر في كيفية انزاله ١٦ * السابع عشر معرفة اسمائه واسماء سوره ١٧ * الثامن عشر في جمعه وترتيبه ١٨ * التاسع عشر في عدد سوره وآياته وكلماته وحروفه ١٩ * العشرون في حفاظه ورواته ٢٠ * الحادي والعشرون في العالي والنازل ٢١ * الثاني والعشرون معرفة المتواتر ٢٢ * الثالث والعشرون في المشهور ٢٣ * الرابع والعشرون في الآحاد ٢٤ * الخامس والعشرون في الشاذ ٢٥ * السادس والعشرون الموضوع ٢٦ * السابع والعشرون المدرج ٢٧ * الثامن والعشرون في معرفة الوقف والابتداء ٢٨ * التاسع والعشرون في بيان الموصول لفظا المفصول معنى ٢٩ * الثلثون في الامالة والفتح وما بينهما ٣٠ * الحادي والثلثون في الادغام والاظهار والاخفاء والاقلاب ٣١ * الثاني والثلثون في المد والقصر ٣٢ * الثالث والثلثون في تخفيف الهمزة ٣٣ * الرابع والثلثون في كيفية تحمله ٣٤ * الخامس والثلثون في آداب تلاوته ٣٥ * السادس والثلثون في معرفة غريبه ٣٦ * السابع والثلثون فيما وقع فيه بغير لغة الحجاز ٣٧ * الثامن والثلثون فيما وقع فيه بغير لغة العرب ٣٨ * التاسع والثلثون في معرفة الوجوه والنظائر ٣٩ * الاربعون في معرفة معاني الادوات التي يحتاج اليها المفسر ٤٠ * الحادي والاربعون في معرفة اعرابه ٤١ * الثاني

والتعريض الخامس والاربعون في اقسام معنى الكلام السادس والاربعون في ذكر ما تيسر من اساليب القرآن السابع والاربعون في معرفة الادوات *

واعلم انه ما من نوع من هذه الانواع الا ولو اراد الانسان استقصاءه لاستفرغ عمره ، ثم لم يحكم امره ، ولكن اقتصرنا من كل نوع على اصوله والرمز الى بعض فصوله فان الصناعة طويلة والعمر قصير ، وما ذا عسى ان يبلغ لسان التقصير * هذا آخر كلام الزركشي في خطبته * ولما وقفت على هذا الكتاب ازددت به سرورا ، وحمدت الله كثيرا ، وقوي العزم على ابراز ما اضمرته ، وشددت الحزم في انشاء التصنيف الذي قصدته * فوضعت هذا الكتاب العلي الشان الجلي البرهان الكثير الفوائد والاتقان ورتبت انواعه ترتيبا انسب من ترتيب البرهان وادمجت بعض الانواع في بعض وفصلت ما حقه ان يبان وزدته على ما فيه من الفوائد والفرائد والقواعد والشوارد ما يشنف الآذان

وسميته بالاتقان في علوم القرآن وستري في كل نوع منه ان شاء الله تعالى ما يصلح ان يكون بالتصنيف مفردا ، وستروى من مناهله العذبة ريًّا لا ظمأ بعده ابدا * وقد جعلته مقدمة للتفسير الكبير الذي شرعت فيه وسميته بمجمع البحرين ومطلع البدرين الجامع لتحرير الرواية وتقرير الدراية * ومن الله استمد التوفيق والهداية والمعونة والرعاية ، انه قريب مجيب ، وما توفيقي الا بالله عليه توكلت واليه انيب * وهذه فهرست انواعه * النوع الاول معرفة المكي والمدني * الثاني معرفة الحضري والسفري * الثالث النهاري والليلي * الرابع الصيفي

ماخصصت فيه السنة الكتاب * ٥٨ الثامن و الخمسون المأول *
٥٩ التاسع و الخمسون المفهوم * ٦٠ الستون و ٦١ الحادي والستون المطلق
و المقيد * ٦٢ الثاني و ٦٣ الثالث و الستون الناسخ و المنسوخ *
٦٤ الرابع و الستون ما عمل به واحد ثم نسخ ٦٥ الخامس والستون
ما كان واجبا على واحد * ٦٦ السادس و ٦٧ السابع و ٦٨ الثامن و الستون
الايجاز و الاطناب و المساواة ٦٩ التاسع والستون الاشباه * ٧٠ السبعون
و ٧١ الحادي والسبعون الفصل والوصل * ٧٢ الثاني والسبعون القصر *
٧٣ الثالث والسبعون الاحتباك ٧٤ الرابع و السبعون القول بالموجب *
٧٥ الخامس و ٧٦ السادس و ٧٧ السابع والسبعون المطابقة و المناسبة والمجانسة *
٧٨ الثامن و ٧٩ التاسع * و السبعون التورية والاستخدام * ٨٠ الثمانون اللف
والنشر * ٨١ الحادي و الثمانون الالتفات * ٨٢ الثاني والثمانون الفواصل
و الغايات * ٨٣ الثالث و ٨٤ الرابع و ٨٥ الخامس و الثمانون افضل القرآن
و فاضله و مفضوله * ٨٦ السادس و الثمانون مفردات القرآن *
٨٧ السابع والثمانون الامثال * ٨٨ الثامن و ٨٩ التاسع والثمانون آداب القارى
و المقري * ٩٠ التسعون آداب المفسر * ٩١ الحادي و التسعون من
يقبل تفسيره ومن يرد * ٩٢ الثاني والتسعون غرائب التفسير *
٩٣ الثالث و التسعون معرفة المفسرين * ٩٤ الرابع و التسعون كتابة
القرآن * ٩٥ الخامس و التسعون تسمية السور * ٩٦ السادس والتسعون
ترتيب الآي والسور * ٩٧ السابع و ٩٨ الثامن و ٩٩ التاسع و التسعون الاسماء
و الكنى و الالقاب * ١٠٠ المائة المبهمات * ١٠١ الاول بعد المائة اسماء
من نزل فيهم القرآن * ١٠٢ الثاني بعدالمأية التاريخ هذا آخر ما ذكرته
في خطبة التحبير و قد تم هذا الكتاب ولله الحمد من سنة اثنين

الخامس[١٥] عشر ما أنزل فيه ولم ينزل على احد من الانبياء *
السادس[١٦] عشر ما انزل على الانبياء * السابع[١٧] عشر ما تكرر نزوله *
الثامن[١٨] عشر ما نزل مفرقا * التاسع[١٩] عشر ما نزل جمعا *
العشرون[٢٠] كيفية انزاله وهذه كلها متعلقة بالنزول * الحادي[٢١] والعشرون
المتواتر * الثاني[٢٢] والعشرون الآحاد * الثالث[٢٣] والعشرون الشاذ *
الرابع[٢٤] والعشرون قرا آت النبي صلى الله عليه وسلم * الخامس[٢٥]
والسادس[٢٦] والعشرون الرواة والحفاظ * السابع[٢٧] والعشرون كيفية
التحمل * الثامن[٢٨] والعشرون العالي والنازل * التاسع[٢٩] والعشرون
المسلسل وهذه متعلقة بالسند * الثلثون[٣٠] الابتداء * الحادي[٣١]
والثلثون الوقف * الثاني[٣٢] والثلثون الامالة * الثالث[٣٣] والثلثون
المد * الرابع[٣٤] والثلثون تخفيف الهمزة * الخامس[٣٥] والثلثون
الادغام * السادس[٣٦] والثلثون الاخفاء * والسابع[٣٧] والثلثون الاقلاب *
الثامن[٣٨] والثلثون مخارج الحروف وهذه متعلقة بالاداء * التاسع[٣٩]
والثلثون الغريب * الاربعون[٤٠] المعرب * الحادي[٤١] والاربعون المجاز *
الثاني[٤٢] والاربعون المشترك * الثالث[٤٣] والاربعون المترادف *
الرابع[٤٤] والخامس[٤٥] والاربعون المحكم والمتشابه * السادس[٤٦]
والاربعون المشكل * السابع[٤٧] والثامن[٤٨] والاربعون المجمل والمبين *
التاسع[٤٩] والاربعون الاستعارة * الخمسون[٥٠] التشبيه * الحادي[٥١]
والثاني[٥٢] والخمسون الكناية والتعريض * الثالث[٥٣] والخمسون العام
الباقي على عمومه * الرابع[٥٤] والخمسون العام المخصوص *
الخامس[٥٥] والخمسون العام الذي اريد به الخصوص * السادس[٥٦]
والخمسون ما خصص فيه الكتاب السنة * السابع[٥٧] والخمسون

باحسن زينة علم التفسير الذي هو كمصطلح الحديث ، فلم يدونه احد لا فى القديم ولا فى الحديث ، حتى جاء شيخ الاسلام ، عمدة الانام ، علامة العصر قاضى القضاة جلال الدين البلقيني رحمه الله ، فعمل فيه كتابه مواقع العلوم من مواقع النجوم فنقّحه و هذّبه ، وقسم انواعه ورتبه ، ولم يسبق الى هذه المرتبة :: فانه جعله نيفا و خمسين نوعا منقسمة الى ستة اقسام وتكلم في كل نوع منها بالمتين من الكلام لكن كما قال الامام ابو السعادات بن الاثير في مقدمة نهايته "كل مبتدِئ بشيء لم يسبق اليه ، و مبتدع امرا لم يتقدم فيه عليه ، فانه يكون قليلا ثم يكثر، وصغيرا ثم يكبر ، * فظهر لي استخراج انواع لم يسبق اليها ، و زيادة مهمات لم يستوف الكلام عليها ، فجردت الهمة الى وضع كتاب في هذا العلم اجمع فيه انشاء الله تعالى شوارده ، و اضم اليه فوائده ، و انظم في سلكه فرائده ، لاكون في ايجاد هذا العلم ثاني اثنين ، و واحدا في جمع الشتيت منه كألف او كألفين ، و مصيّرا فنّي التفسير و الحديث في استكمال التقاسيم الفين ، و اذا برز زهر كمامه و فاح ، و طلع بدر كماله و لاح ، و آذن فجره بالصباح ، و نادى داعيه بالفلاح ، سميته بالتحبير في علوم التفسير و هذه فهرست الانواع بعد المقدمة النوع الاول والثاني المكي و المدني * الثالث و الرابع الحضري والسفري * الخامس و السادس النهاري و الليلي * السابع و الثامن الصيفي و الشتائي * التاسع و العاشر الفراشى والنومى * الحادي عشر اسباب النزول * الثاني عشر اول ما نزل * الثالث عشر آخر ما نزل * الرابع عشر ما عرف وقت نزوله *

الالفاظ وهو سبعة انواع ، الغريب ، المعرّب ، المجاز ، المشترك ، المترادف ، الاستعارة ، التشبيه * الامر الخامس المعاني المتعلقة بالاحكام وهو اربعة عشر نوعا ، العام الباقي على عمومه ، العام المخصوص ، العام الذي اريد به الخصوص ، ما خصّص فيه الكتابُ السنةَ ، ما خصصت فيه السنةُ الكتابَ ، المجمل ، المبين ، المأول ، المفهوم ، المطلق ، المقيد ، الناسخ ، المنسوخ ، نوع من الناسخ والمنسوخ ، وهو ما عمل به من الاحكام مدة معينة والعامل به واحد من المكلفين * الامر السادس المعاني المتعلقة بالالفاظ وهو خمسة انواع ، الفصل ، الوصل ، الايجاز ، الاطناب ، القصر * وبذلك تكملت الانواع خمسين * ومن الانواع ما لا يدخل تحت الحصر الاسماء ، الكنى ، الالقاب ، المبهمات * فهذا نهاية ما حضر من الانواع * هذا آخر ما ذكره القاضي جلال الدين فى الخطبة ثم تكلم في كل نوع منها بكلام مختصر يحتاج الى تحرير وتتمات ، وزوائد مهمات *

فصنفت في ذلك كتابا سميته " التحبير في علوم التفسير " ضمّنته ما ذكره البلقيني من الانواع مع زيادة مثلها * واضفت اليه فوائد سمحت القريحة بنقلها * وقلت في خطبته اما بعد فان العلوم وان كثر عددها وانتشر فى الخافقين مددها فغايتها بحر قعره لا يدرك ونهايتها طود شامخ لا يستطاع الى ذروته ان يسلك ، ولهذا يفتح لعالم بعد آخر من الابواب ما لم يتطرق اليه من المتقدمين الاسباب * وان مما اهمل المتقدمون تدوينه حتى تجلى في آخر الزمان

في ذكر معنى التفسير و التأويل و القرآن و السورة و الآية و الثاني في شروط القول فيه بالرأى و بعدهما خاتمة في آداب العالم و المتعلم فلم يشف لي ذلك غليلا ، و لم يهدني الى المقصود سبيلا * ثم اوقفني شيخنا شيخ الاسلام قاضي القضاة خلاصة الانام حامل لواء المذهب المُطّلبي عَلم الدين البلقيني رحمه الله تعالى على كتاب في ذلك لاخيه قاضي القضاة جلال الدين سماه "مَواقع العلوم من مواقع النجوم" فرأيته تأليفا لطيفا و مجموعا ظريفا ، ذا ترتيب و تقرير و تنويع و تحبير * قال في خطبته قد اشتهرت عن الامام الشافعي رضي الله عنه مخاطبة لبعض خلفاء بني العباس :: فيها ذكر بعض انواع القرآن يحصل منها لمقصدنا الاقتباس :: و قد صنف في علوم الحديث جماعة في القديم و الحديث * و تلك الانواع في سنده دون متنه ، و في مُسنديه و اهل فنه * و انواع القرآن شاملة و علومه كاملة ، فاردت ان اذكر في هذا التصنيف ، ما وصل الى علمي مما حواه القران الشريف ، من انواع علمه المنيف ، و ينحصر في امور ، الاول مواطن النزول و اوقاته و وقائعه و في ذلك اثنى عشر نوعا المكي ، المدني ، السفري ، الحضري ، الليلي ، النهاري ، الصيفي ، الشتائي ، الفراشي ، اسباب النزول ، اول مانزل ، آخر ما نزل * الامر الثاني السند وهو ستة انواع ، المتواتر ، الآحاد ، الشاذ ، قراءات النبي صلى الله عليه وسلم ، الرواة ، الحفاظ * الامر الثالث ، الاداء وهو ستة انواع ، الوقف ، الابتداء ، الامالة ، المد ، تخفيف الهمزة ، الادغام * الامر الرابع

و بعد فان العلم بحر زخار ، لا يدرك له من قرار ، و طود شامخ لايُسلَك الى قلته ولا يصار * من اراد السبيل الى استقصائه لم يبلغ الى ذلك وصولا ، و من رام الوصول الى احصائه لم يجد الى ذلك سبيلا * كيف ؟ و قد قال تعالى مخاطبا لخلقه "وما اوتيتم من العلم الا قليلا * و ان كتابنا القرآن لهو مفجر العلوم و منبعها ، و دائرة شمسها و مطلعها" * اودع فيه سبحانه وتعالى علم كل شيء ، و ابان فيه كل هدى و غيّ * فترى كل ذي فن منه يستمد ، و عليه يعتمد * فالفقيه يستنبط منه الاحكام ، و يستخرج علم الحلال و الحرام * والنحوي يبني منه قواعد اعرابه ، و يرجع اليه في معرفة خطأ القول من صوابه * و البياني يهتدي به الى حسن النظام ، و يعتبر مسالك البلاغة في صوغ الكلام * و فيه من القصص و الاخبار ما يُذكّر اولى الالباب و الابصار * و من المواعظ و الامثال ما يزدجر به اولو الفكر و الاعتبار الى غير ذلك من علوم لا يقدر قدرها ، الا من علم حصرها * هذا مع فصاحة لفظ و بلاغة اسلوب تبهر العقول وتسلب القلوب ، و اعجاز نظم لا يقدر عليه الا علام الغيوب * و لقد كنت في زمان الطلب اتعجب من المتقدمين اذ لم يدونوا كتابا في انواع علوم القرآن كما وضعوا ذلك بالنسبة الى علم الحديث ، فسمعت شيخنا استاذ الاستاذين وانسان عين الناظرين خلاصة الوجود علامة الزمان فخر العصر وعين الاوان ابا عبد الله محي الدين الكافيجي ، مد الله في اجله واسبغ عليه ظله ، يقول قد دونت في علوم التفسير كتابا لم أسبق اليه * فكتبة عنه فاذا هو صغير الحجم جدا و حاصل ما فيه بابان الاول

# بسم الله الرحمن الرحيم

---

قال الشيخ الامام العالم العلامة الحبر البحر الفهامة الرُّحلة المحقق المدقق الحجة الحافظ المجتهد الامة شيخ الاسلام و المسلمين وارث علوم سيد المرسلين جلال الدين اوحد المجتهدين ابو الفضل عبد الرحمٰن ابن سيدنا العبد الفقير الى الله تعالى الشيخ المرحوم كمال الدين عالم المسلمين ابى المناقب ابي بكر السيوطي الشافعي ، متّع الله بحياته و اعاد على المسلمين من علومه و بركاته و رحم سلفه ، الحمد لله الذي انزل على عبده الكتاب تبصرة لاولى الالباب و اودعه من فنون العلوم و الحكم العجب العجاب و جعله اجل الكتب قدرا و اغزرها علما و اعذبها نظما و ابلغها فى الخطاب قرآنا عربيا غير ذي عوج ولا مخلوق ولا شبهة فيه ولا ارتياب • و اشهد ان لا اله الا اللّه وحده لا شريك له رب الارباب ، الذي عنت لقيوميته الوجوه و خضعت لعظمته الرقاب :: و اشهد ان سيدنا محمدا عبده و رسوله المبعوث من اكرم الشعوب و اشرف الشعاب الى خير امة بافضل كتاب ، صلى الله و سلم عليه و على آله و صحبه الانجاب ، صلوٰة و سلاما دائمين الى يوم المآب •